श्रीरामचन्द्राय नमः

श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण

आठो काण्ड



प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

भार्गव बुकडिपो, चौक, बनारस।

पुस्तक मिलने का पता—रामनारायण लाल बुक्सेलर, मूल्य ८)

शकरकन्द गली, बनारस।

श्रीरामचन्द्राय नमः

श्री १०८ श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण

आठो काण्ड

८ तीनरंगा चित्र सहित

तुलसीदास जी का जीवन-चरित्र, माहात्म्य, रामकलेवा, क्षेपक, तथा लवकुश काण्ड सहित।

प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस।

पुस्तक मिलने का पता—रामनारायण लाल बुकसेलर,

सकरकन्द गली, बनारस।

सन् १९४७

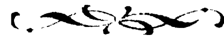
सोल डिस्ट्रीब्यूटर
श्री गंगा पुस्तकालय,
गायघाट, बनारस

प्रथमावृत्ति ७,०००

मुद्रक व प्रकाशक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

※ श्रीगणेशाय नमः ※

अथ रामायणविषयानुक्रमणिका ।



बालकाण्ड (१)

अयोध्याकाण्ड (२)

विषयानुक्रमणिका

अरण्यकाण्ड (३)

किष्किन्धा काण्ड (४)

सुन्दर काण्ड (५)

विषयानुक्रमणिका

बंदउँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुगपानि ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ।
बंदउँ किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥७॥
आकर चारि लाख चौरासी ❀ जाति जीव जल-थल-नभ-बासी ॥
सीय-राम-मय सब जग जानी ❀ करउँ प्रनाम जोरि जुगपानी ॥
जानि कृपा कर किंकर मोहू ❀ सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू ॥
निज बुधिबल भरोस मोहि नाहीं ❀ तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥
करन चहउँ रघुपति-गुन-गाहा ❀ लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ ❀ मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अति नीच ऊँच रुचि आछी ❀ चहिय अमिय जग जुरइ न छाछी ॥
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥
जौं बालक कह तोतरि बाता ❀ सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता ॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी ❀ जे पर–दूषन–भूषन—धारी ॥
निज कबित्त केहि लाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अति फीका ॥
जे परभनिति सुनत हरषाहीं ❀ ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सुर-सरि-सम भाई ❀ जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृत–सिंधु–सम कोई ❀ देखि पूर बिधु बाढइ जोई ॥
दो०-भाग छोट अभिलाषु बड़, करउँ एक बिस्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब, खल करिहहिं उपहास ॥८॥
खलपरिहास होइ हित मोरा ❀ काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥
हंसहि बक दादुर चातकही ❀ हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
कबित रसिक न राम–पद–नेहू ❀ तिन कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषाभनिति भोरि मति मोरी ❀ हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभु-पद-प्रीति न सामुझि नीकी ❀ तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
हरि-हर-पद-रति मति न कुतरकी ❀ तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबरकी ॥

राम-भगति-भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
कबि न होउँ नहिं बचनप्रबीनू ❀ सकल कला सब बिद्याहीनू ॥
आखर अरथ अलंकृति नाना ❀ छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा ❀ कबित-दोष-गुन बिबिध प्रकारा ॥
कबित बिबेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहउँ लिखि कागज कोरे ॥

दो०--भनिति मोरि सब गुन-रहित, बिस्वबिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके बिमल बिबेक ॥९॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुरान-श्रुति-सारा ॥
मंगल-भवन अमंगल-हारी ❀ उमासहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति विचित्र सु-कबि-कृत जोऊ ❀ रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी ❀ सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुन-रहित कुकबि-कृत बानी ❀ राम-नाम-जस-अंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही ❀ मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
जदपि कबित रस एकउ नाहीं ❀ रामप्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुआई ❀ अगरुप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी ❀ रामकथा जग मंगलकरनी ॥

छंद--मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥
प्रभु-सुजस-संगति भनिति भलि होइहि सुजन-मन-भावनी।
भवअंग भूति मसान की सुमिरत सोहावनि पावनी ॥

दो०--प्रिय लागिहि अति सबहि मम, भनिति राम-जस-संग।
दारु बिचारु कि करइ कोउ, बंदिय मलय प्रसंग ॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कृत

❀ रामशलाका प्रश्नावली ❀

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रं	बस	है	मं	लं	न	ल	य	न	अ
जसु	सा	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जा	म	रि	र	र	आ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सो	जे	ई	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
लि	र	त	र	स	ई	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हा	ा	जू
ता	रा	रे	री	हृ	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	प	म	खि	जि	मनि	त	जं
सि	मु	ध	न	का	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	हू	सु	म्ह	रा	र	स	हि	र	त	न	खा	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	ही	षा	जू	ई	रा	रे

दोहा—श्री गणेश को सुमिरि के, शारद को धरि ध्यान।
लिखित प्रश्न की रीति सो, उत्तर लीजो जान॥ १॥

इसके प्रश्न करने की यह रीति है कि प्रश्नकर्ता श्रीरामचन्द्रजी का हृदय में ध्यान कर के किसी कोष्ठक में अँगूली धरे फिर उस अक्षरको किसी कागज अथवा पट्टी पर लिखे और फिर उस अक्षर से दसवाँ २ अक्षर यहाँ तक लेकर लिखे जिस कोष्ठक परउँगली धरी थी। ऐसा करने से एक चौपाई बनेगी उसी से अपना प्रश्न का फल जानना चाहिये परन्तु इतना ध्यान रहे कि कहीं चौपाई ठीक निकलती है और कहीं अक्षर ऊपर के नीचे और नीचे के ऊपर भी हो जाते हैं सो यथा योग्य मिला लेने चाहिये उसमें कुछ कठिनता नहीं है पढ़ने से स्पष्ट दीख पड़ते हैं और कोष्ठक में जहाँ " ा " ऐसा संकेत है वह दीर्घ का है, यदि बीच की गणना में आ पड़े तो कुछ काम नहीं, परन्तु जिस अक्षर से दसवीं संख्या पर हो उस अक्षर को दीर्घ करना चाहिये।

उदाहरण (१) पहिले कोष्ठक पर हाथ धरा तो प्रथम "सु" आया फिर दशम २ अक्षर लेने से यह चौपाई बनी "सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहिं मन कामना तुम्हारी॥" अब इस चौपाई में "हमारी" का मकार और "तुम्हारी" का म्हकार कोष्ठक में ह्रस्व है इनसे १० वीं संख्या पर "ा" है इसलिए दीर्घ कर दिए।

श्रीगणेशाय नमः

रामायण माहात्म्य

प्रारम्भः

दोहा—गुरु हरिहर गुण ईशधी, सुमिरौं तुलसीदास ।
रचत गोपाल माहात्म्य शुचि, रामायण सुखरास ॥ १ ॥

रामायण सुरतरु की छाया ❀ दुख भये दूरि निकट जो आयौ ॥
सप्त काण्ड स्तम्भ सुहाई ❀ दोहा लघु शाखा छबि छाई ॥
शुचि सोरठा सटीका कोई ❀ पत्री बहु चौपाई जोई ॥
छन्दन की शोभा अति रूरी ❀ जनु नवीन अंकुर छबि पूरी ॥
अक्षर सुमन रहे गहगाई ❀ अति अद्भुत सुगन्ध कबिताई ॥
बिबिध प्रकार अर्थ सोई फल ❀ श्रोता सुमति स्वादु जाने भल ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस रस ❀ बीज दोय निर्गुण सगुण अस ॥
मुनि भुशुंडि शिव प्रथमहिं गाई ❀ सोइ गाई जगहेतु गोसाईं ॥

दोहा—तुलसीदास रामायण, नहिं करते परचार ।
कलिके कुटिल जीव ये, को करतो निस्तार ॥ २ ॥

रामायण सुरधेनु समाना ❀ दायक अभिमत फल कल्याना ॥
गुणसमूह कबि सकै कौन गनि ❀ जासु प्रभाव सरिस चिंतामनि ॥
रामअयन रामायण आही ❀ बर्णि पार पावै को ताही ॥
रामायण अद्भुत फुलवारी ❀ राम भ्रमर भूषित रुचि भारी ॥
श्री रामायण जेहि घरमाहीं ❀ भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं ॥
नहिं गति तहाँ दरिद्रहु केरी ❀ जहँ श्री महावीर की फेरी ॥
यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती ❀ रामायण महँ जानिय तेती ॥
प्रीति करै रामायण माहीं ❀ तेहि सम भाग्यवन्त कोउ नाहीं ॥

दोहा—रामायण सम नहिं कोऊ, सब उपमा उपमेय ।
उपमा भाषा और की, कैसे कोउ कवि देय ॥ ३ ॥

त्रेता महँ भयो वालमीकि मुनि ❀ तेकलियुग भये तुलसिदास पुनि ॥
शत करोरि रामायण भाषी ❀ इन मथि सार सुसूक्षम राखी ॥
प्रथम काण्ड है बाल रसीला ❀ जन्म विवाह राम की लीला ॥
द्वितिय अयोध्या कांड प्रकासा ❀ पितु आज्ञा रघुवर बनवासा ॥
पुनि अरण्य किष्किधा भाष्यो ❀ तहँ सुग्रीव शरण महँ राख्यो ॥
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन ❀ युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन ॥
सप्तम उत्तर परम अनूपा ❀ उत्सव प्रभु कौशलपुर भूपा ॥
तुलसीकृत रामायण येती ❀ विविध प्रकार कथा है केती ॥

दोहा-जग वारिध को पार नहिं, ऐसो है फैलाव ।
तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाव ॥ ४ ॥

श्री रामायण स्वर्ग निसेनी ❀ भक्तजनन कहँ आनँद देनी ॥
श्री रामायण सतगुण माता ❀ यज्ञ जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता ॥
पाप समूह तूल की रासी ❀ रामायण धनंज्य कनकासी ॥
मोहपुंज तमकिरणि तमारी ❀ काम अग्निकहँ शीतल वारी ॥
रामायण शशि किरणि सुहाई ❀ सन्त चकोरन कहँ सुखदाई ॥
धन्य धन्य श्री तुलसिदास धनि ❀ जगहित रामायण राखी भनि ॥
नीच ऊँच जेते नरनारी ❀ श्रीरामायण सबकहँ प्यारी ॥
रामायण सो नेह लगावै ❀ अधन अपत्य सो वित सुत पावै ॥

दोहा--रामायण सो नेह किय, सिद्ध होत सब काम ।
है सबको कल्याणदा, पढ़ सुन लहु विश्राम ॥ ५ ॥

निगमादिक ते ब्रह्म कमंडल ❀ रामायण स्थित गंगाजल ॥
भागीरथ सम तुलसिदास पुनि ❀ भाषा प्रचुर कीन जनु सुरधुनि ॥
होति रहै यक ठाँव रामायण ❀ तेहि मग आवत पाप परायण ॥
कछुक कानमहँ पड़ि गइ बाता ❀ चलत पंथ कहुँ भयो प्रपाता ॥
गिरतहिं तुरत छूटि तनु गयऊ ❀ तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ ॥
ताहि लेन आये यमदूता ❀ निज पाशन बाँध्यो मजबूता ॥
अति आतुर हरिजन तहँ आये ❀ छीन लीन बहु त्रास दिखाये ॥
रामायण पै सुनि यह काना ❀ लै जैहैं बैठारि बिमाना ॥

दोहा--रामायण परताप सो, गयो पारषद साथ।
दूत चले यमके सदन, खीझत मीजत हाथ ॥ ६ ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता ❀ पूछा भानुतनय कुशलाता ॥
किन तुमकहँ दीन्हों दुख भाई ❀ चार चतुर तुम देहु बताई ॥
कहा कहौं तुमसों महराजा ❀ पूछत तुमहि न आवत लाजा ॥
कोउ यक मृत्यु लोक बड़ भागी ❀ तुलसीदास भयो बैरागी ॥
रामकथा रामायण भाखी ❀ सो लोगन घर घर धरि राखी ॥
जे जे बिबिध भाँति के पापी ❀ मांसाहारी और सुरापी ॥
ते सब मिलि रामायण सुनिहैं ❀ कहिहैं लिखिहैं पढ़िहैं गुनिहैं ॥
ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे ❀ सत्य सत्य नृप बचन हमारे ॥

दोहा--लेहु पाश ये आपने, राखहु अपने पास।
अमल तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास ॥ ७ ॥

अपनी व्यथा कहन नहिं पाये ❀ तब लगि दूत और तहँ आये ॥
कहन लगे रविसुत सो रोई ❀ अब चाकरी न हमसो होई ॥
जगमें कहूँ न हुक्म तिहारो ❀ यह सुनि यम जकिरहेउ विचारो ॥
अहो दूत मोहिं कहो बुझाई ❀ किन दीन्हों मम हुकुम उठाई ॥
कहा कहौं कछु कही न जाई ❀ तुलसिदास इक भयो गोसाईं ॥
तिनकी रामायण जग व्यापी ❀ तेइ कीन्हें पवित्र सब पापी ॥
गे हम एक अधम गृह माहीं ❀ अति दुख भयो जात कहि नाहीं ॥
तहँ देखेउ इक कपि बलवाना ❀ उग्ररूप सदृश हनुमाना ॥

दोहा--प्राणन को गाहक भयो, तब हम भये अति दीन।
शरण शरण तव शरण हैं, अस्तुति बहुबिधि कीन ॥८॥

तबतो है प्रसन्न कपिराई ❀ हम सन पुनि परतीति कराई ॥
धरी होय रामायण जहवाँ ❀ कबहूँ भूलि न जायउ तहवाँ ॥
जे श्रोता वक्ता रामायण ❀ कबहूँ मति जायहु तेहि आयन ॥
अस हमसों कपि शपथ कराई ❀ तब छूटन पायो सुनु राई ॥
सुनि यमराज बहुत घबराए ❀ निकट बुलाय दूत समझाए ॥
नाम रूप गुण कथा रामकी ❀ कियउ न फेरी तौन धामकी ॥
अजामील की सुरति करौजू ❀ और न कछु चितमाँझ धरौजू ॥

थकि सो रहे दूत सुनि बानी ❀ धनि श्रीरामायण महरानी ॥

दोहा--रामायण तेजश्वरी, सत भाषा शिर मौर ।
यमपुर जाको शोर है, समताको नहिं और ॥ ९ ॥

पातक महा लग्यो किन होई ❀ रामायण सुनि रह्यो न कोई ॥
चाहै चारो फल का साधन ❀ करु रामायण को आराधन ॥
रामायण सुनि पाप परानें ❀ जिमि हिम ऋतु महँ मशकनसाने ॥
कलियुग तरन उपाय न कोई ❀ राम भजन रामायण सोई ॥
कथा रामायण की जहँ होई ❀ सो गृह गृह मति जानै कोई ॥
सो घर तीर्थ रूप सम भासै ❀ तहाँ गये सब पातक नासै ॥
पाप बास देही महँ तब लग ❀ श्रीरामायण सुनै न जब लग ॥
उदय पुरानी पुण्य होय जब ❀ रामायण महँ मन लागे तब ॥

दोहा--रामायण के सुनतही, छूटि जाय प्रेतत्व ।
जाके पढ़े सुने ते, सूझत है परतत्व ॥ १० ॥

को जाने रामायण को रस ❀ यह तो है सन्तन को सरबस ॥
बनज सनेही अलिगण जैसे ❀ भक्तन प्रिय रामायण तैसे ॥
त्यागि भक्तजन ग्रन्थ अनेकू ❀ धारण किये रामायण एकू ॥
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा ❀ रसिक जनन कहँ है रस रूपा ॥
ज्ञान मयी तिन कहँ जे ज्ञानी ❀ तुलसी तारण तरण बखानी ॥
काम क्रोध रुज बश संसारा ❀ औषधि रामायण अनुसारा ॥
रामायण महँ नेह न जाको ❀ जीवत शवसम जानिय ताको ॥
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं ❀ वृथा जन्म ताको जगमाहीं ॥

दोहा--रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद ।
तिनको निश्चय जानिये, हैं पूरे दनुजाद ॥११॥

रामायण बिधि कहौ विशारद ❀ सनत्कुमार सो भाषी नारद ॥
सहित विधान सुनै जो कोई ❀ सहज मुक्ति पावै नर सोई ॥
कार्तिक माघ चैत चितलाई ❀ नवदिन कहै कथा सुखदाई ॥
ब्रह्ममुहूर्त समय हो जबहीं ❀ कर्म करै शौचादिक तबहीं ॥
करै दन्तधावन लट जीरा ❀ मज्जन करै धरै मन धीरा ॥

पुनि रामायण पुस्तक अरचै ❀ प्रेम सहित गंधादिक चरचै ॥
ॐनमो नारायण मंत्र भनीजै ❀ तीन आहुती होम करीजै ॥
मन बच कर्म पाप तनु केरे ❀ छूटि जात नहिं आवत नेरे ॥

दोहा--यहि विधि रामायण विधिहि, जे करिहहिं चितलाय ।
राम धाम ते जाइहैं, संश्रित दुखहिं मिटाय ॥१२॥

जो कछु कारज कहँ कोई जाई ❀ सुमिरि चले सो यह चौपाई ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
जो विदेश चाहे कुशलाई ❀ तो यह सुमिरि चलै चौपाई ॥
रथ चढ़ि सीय सहित दोउ भाई ❀ चले बनहिं अवधहिं शिरनाई ॥
भूत पिशाच जाहि जब लागे ❀ यह सोरठा पढ़ै सो भागे ॥

सोरठा-- बन्दौं पवनकुमार, खल बन पावक ज्ञानघन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचाप धर ॥१॥

शत्रु निवारण चहौ जो भाई ❀ भावसहित जपु यह चौपाई ॥
जाके सुमिरण ते रिपुनाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥
यह चौपाई जपै जो कोई ❀ अन्न आदि दुख ताहि न होई ॥
विश्व भरण पोषण कर जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई ॥
जो उत्सव चह विविध प्रकारा ❀ करु यह चौपाई अनुसारा ॥
जबते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नव मंगल मोद बधाये ॥
जो चाहौ जगमहँ जय भाई ❀ स्थिर ह्वै जपु यह चौपाई ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
है सबभाँति कार्य जगमाहीं ❀ रामायण सो सब है जाहीं ॥

दोहा--सकल भाँति मनकामना, यह दोहा दातार ।
रामायण महँ खोजकरि, करु या को अनुसार ॥१३॥
वह शोभा सु समाज सुख, कहत न बनै खगेश ।
बरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥१४॥

बरणौं एक रुचिर इतिहासा ❀ तुलसीदास जो कीन्ह तमासा ॥
द्राविड़ अरु काशी महिपाला ❀ कहुँ एकत्र रहे कछु काला ॥
अतिशय प्रीति बढ़ी दुहुँ माहीं ❀ मनमें कपट लेश कछु नाहीं ॥

गर्भवती दोऊ नृपरानी ❀ चली बात दुहुँहुन कहि डारी ॥
द्राविड़ कही बात सुखरासी ❀ सुनहु नृपति काशी के बासी ॥
जन्मै तव सुत सुता हमारे ❀ अथवा मम सुत सुता तिहारे ॥
अस संयोग होइ जो नाहू ❀ हम तुम करहिं विवाह उछाहू ॥
सौहैं करि यह बात दृढ़ाई ❀ संतत प्रीति रही अब भाई ॥
सुखद समय आयो जब कोऊ ❀ निज २ भवन गये नृप दोऊ ॥

सोरठा--कन्या भइ दुहुँओर, जानो जात न दैवगति ।
कहि पठयो सुत मोर, द्रविड़ दूत काशी गये ॥ २ ॥

यह छल होत भयो जिहिलाई ❀ सो वह हेतु कहौं मैं गाई ॥
द्राविड़ पति निज गृह आओ जब ❀ रानीसो अस कहत भयो तब ॥
जो होई कन्या दुहुँ ओरा ❀ तो मैं प्राण तजब बरजोरा ॥
सुनि रानी राजा मुख बानी ❀ मनमहँ बहुत भाँति भयमानी ॥
उपरोहित को लिहिसि बुलाई ❀ नृप दुराय यह बात बुझाई ॥
मम अहिवात तुम्हारे हाथा ❀ नहिं तो प्रभु मैं होब अनाथा ॥
रानी द्रव्य दीन नहिं थोरी ❀ भइ मायाबस द्विज मति भोरी ॥
सेवक सेवकायन वश कीन्हेसि ❀ आदर मान दान बहु दीन्हेसि ॥

दोहा--सेवक एक दिन तो तेहि, बाराणसी बसाय ।
तेहिते पाइसि खबरि सब, तब यह किहिसि उपाय ॥१५॥

पुत्र नाम धरि गुप्त रखायो ❀ द्वादश वर्ष न द्वारे आयो ॥
विदुषण कहेउ न कोऊ पेखे ❀ ब्याह समय सब कोऊ देखे ॥
मित्र मिलन हित चित अनुराग्यो ❀ नेगी पठै ब्याह पुनि माग्यो ॥
अति आनन्द चल्यो मग बेगी ❀ काशी नृप पहँ आयो नेगी ॥
नृप मन मुदित पत्रिका बाँची ❀ लै आवो बरात रँगराँची ॥
आयो ब्याहन द्राविड़ राजा ❀ खुली बात उपजी अति लाजा ॥
क्रोधातुर काशी अवनीशा ❀ कह कटिहौं द्राविड़ कर शीशा ॥
यह सुनि द्राविड़ अधिक डेराने ❀ निज छल समझि २ पछिताने ॥

दोहा--अति सभीत अति दीन ह्वै, गये जहँ तुलसीदास ।
पाहिं पाहि कहि पाँय परि, कहेउ करो दुख नास ॥१६॥

तब काशी नृप कहँ बुलवायो ❀ तुलसिदास हित करि समुझायो ॥
सुत कहि सुता जो ब्याहन आयो ❀ होय पुत्र तो होय बधायो ॥
जो यह पुत्र होय महराजा ❀ करहिं विवाह साजि सब साजा ॥
तुलसीदास बेदि बिरचाई ❀ तहँ गणेश गौरी पधराई ॥
सिंहासन पै धरि रामायण ❀ नव दिन भर कीन्ही पारायण ॥
जो कन्या वर वेष बतायो ❀ ताही को सन्मुख बैठायो ॥
वक्ता आप सो श्रोता भई ❀ दुनियाँ तहँ देखन सब गई ॥
कथा सकल जब बाँचि सुनाई ❀ तासु शीश कर धरेउ गोसाईं ॥

दोहा–अरु यह चौपाई पढ़ी, रामहिं सुमिरि प्रसन्न ।
तिहि अवसर वर ह्वै गयो, श्रीरामायण धन्य ॥१७॥

मंत्र महामणि विषय व्यालके ❀ मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
रामायण जब कही गुसाईं ❀ प्रगटन हित काशी फिरि आई ॥
आदर कीन्ह न पंडित काऊ ❀ कहें जो हम सो करौं उपाऊ ॥
जेहि स्थान कहौं तहँ जाहू ❀ पोथी अब न देखावहु काहू ॥
श्री आनन्द कान्ह ब्रह्मचारी ❀ हम शिर मौर सुमहिमा भारी ॥
जो याको वे आदर करिहैं ❀ तो हम सब लै शीशहिं धरिहैं ॥
गये आनन्द कान्ह पहँ तत्पर ❀ करत प्रशंसा प्रसन्न परस्पर ॥
पोथी की चर्चा पुनि कीन्ही ❀ देखन हेतु सो लै धरि लीन्ही ॥
कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन ❀ गये गुसाईं पोथी माँगन ॥

दोहा–पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदर लोक ।
निजप्रमाण करि लिखि दियो, यह अद्भुत श्लोक ॥ १८ ॥

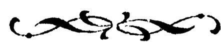
श्लोक–आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः ।
कविता मंजरी यस्य रामभ्रमरभूषितः ॥ १ ॥

छन्द–धनि धन्य तुलसीदास जिन जग हेतु रामायण भनी ।
माहात्म्य अमित न कहि सकौ रस विषय महँ मो मतिसनी ॥

निज बुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सब गुरु की दया।
रघुबीर यशकी अधिकता श्रीसन्त जन करिहहिं मया॥

दोहा--श्रीमत तुलसीदासजी, ह्वै प्रसन्न वर देहु।
रामायण माहात्म्य सो, हरिजन करहिं सनेहु॥१९॥

❀ इति रामायण माहात्म्य समाप्त ❀



आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्री रामायण जी की। कीरति कलित ललित सियपीकी॥ टेक॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिज्ञान विशारद॥
शुक सनकादि शेष अरु सारद। वरणि पवनसुत कीरति नीकी॥ १॥
संतत गावत शंभु भवानी। औघट सम्भव मुनिवर ज्ञानी॥
व्यास आदि कविपुंग बखानी। काग भुशुण्ड गरुड़ के ही की॥ २॥
चारिउ बेद पुराण अष्टदस। छइउ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस॥
तन मन धन संतन को सर्वस। सार अंश सम्मत सबही की॥ ३॥
कलिमलहरणि विषय रसफीकी। सुभग सिंगार भक्ति युवती की॥
हरणि रोग भव भूरि अमीकी। तात मात सब बिधि तुलसी की॥ ४॥

राम कलेवा

छंद—भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये ॥
सुनिके पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेसू ॥
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्री अवध नरेसू ॥
विनय सुनाय राय दशरथ सो पाय रजाय सचेतू ॥
आनहु चारिउ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ॥
सखन समेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा ॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ॥
मृदु मुसुकात बतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरंग ते मिथिलापति के बारे ॥
चारिहु सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुखनिधि लक्ष्मीनिधिको लखि सखनसहित सतकारे ॥
रघुकुलदीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिक्षण सानुज निरखि रामछवि सखन सहित सुखमाने ॥
लक्ष्मीनिधि मुख दरस पायके रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि कर जोरि भूप सों कोमल बैन उचारे ॥
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदु बचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ॥
चारिहु कुँवर बुलाय वेगही बिदा किये सुखसाने ॥
जनक नगर की जान तयारी सेवक सब सुख पागे ॥
निज निज प्रभुहिं सँवारन लागे लै भूषण बरबागे ॥
रघुनन्दन शिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी ॥
तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रुचिरुचि पेचनि साधी ॥

कनककलित अतिललित मनिनिकी मंजुल मौर बिराजी ॥
सिंधुरमनि के सजे सेहरा जोहिं होत मन राजी ॥
ताके कोर कोर चहुँ ओरन लगीं रतन की पाँती ॥
जग मग जोत होत चहुँदेसिते लखि अँखिया न अघाती ॥
कुण्डल लोलैं हलैं कपोलैं लगी अमोलैं मोती ॥
जोबदार जगमगहिं जराऊ जुगल जँजीरन जोती ॥
जालिम जोर जेहरी जुलफें जुवतिन जोबन हारी ॥
छूटीं अलकैं दुहुँहिसि झलकैं मनहुँ मैन तरवारी ॥
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखें ॥
रसवारी बरबस बसकारी प्यारी आनन राखें ॥
अति अवरंगी रतिरसरंगी चढ़ी त्रिभंगी भौंहें ॥
मनहु मदनके जुगधनु सोहें जिहि जोहें सोइ मोहें ॥
तिलक रसाल बिशाल भालपर किमि बरनौं छबि ताकी ॥
जनु नव घन पर रीझ दामिनी नेम लियो थिरताकी ॥
अरुन अधर बिच दामिनि द्युतिवर दमके दसनन पाँती ॥
सन्मुख मुखकर जेहिदिशि बोले अजब छटा छहराती ॥
जगमगात अति श्यामगात पर जरतारिन को जामा ॥
ताके कोर कोर चहुँ ओरन जड़े रतन मनि ग्रामा ॥
पीत सुफेटा सुछबि समेटा कमर लपेटा राजै ॥
नवल पट्टको करन लट्टको काँधे पटुका भ्राजै ॥
मनिमय कंकन सुखप्रद रंकन बंकन कर बिच बाँधे ॥
जनु पुर जुवतिन मन जीतन को जंत्र बसी कर साधे ॥

दोहा—बरणि सकै को रामको, अनुपम दूलह वेष ।
जेहिलखि शिवसनकादिको, रहत न तनुहिं सरेष ॥

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारिहु राजदुलारे ॥
बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन सँवारे ॥
जे रघुबंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे ॥

चढ़े तुरंग संग तेउ गमने रामरंग मतवारे ॥
बोले चोबदार लै नामन बिरदावली अलापें ॥
चंचल चमर चलै दुहुँ दिसिते छत्र सखा सिर ढापें ॥
रामबाम दिसि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं ॥
चंचल बागे किये तुरंग की बातें करत हँसोहैं ॥
जग बंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को बाजी ॥
ताको गुण छबि कहँ लौं बरणौं जोहि होत मन राजी ॥
भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन हय लखि लाजै ॥
चोटिन तनियाँ गुथी सुमनियाँ पगु पैजनियाँ बाजै ॥
जड़ित जवाहिर जीन जरी को जरबीली अति सोहैं ॥
पूंजि पटाको छटा कहै को काम लटा मन मोहैं ॥
ललित लगाम दाम बहुकेरी अंकित नाम बिराजै ॥
सुछबि उमंगी झुकी त्रिभंगी मनिन कलंगी छाजै ॥
जित रुख पावै तित पहुँचावै छन आवै छन जावै ॥
जमि जमि थमि थमि थिरकि भूमि पर गतिनत तिन दरसावै ॥
खीनी कटि पीनी खुरथालै बँधी नवीनी नालैं ॥
लेत उतालैं सिंह उछालैं करैं समुद्र इक फालैं ॥
धावल पावन पावत पीछू गरुड़हु गर्व गँवावै ॥
रघुनन्दन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला दिखावै ॥
नाम समुद मुद देत जनन को तापर भरत बिराजै ॥
श्रीरघुनन्दन के दहिने दिसि चलत चपल गति साजै ॥
रोकत बागैं अति रिसि रागैं गरबित फुरकन लागैं ॥
झमक झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुभ पागैं ॥
कहुँ नभ जावै सुरन झँकावै कहुँ महि मोद मचावै ॥
अवनी ते अरु आसमान लो जनु सोपान बनावै ॥
फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपलाहू चख झापै ॥
भरत कुँवर को तुरँग रँगीलो बरनि जाय कहु कापै ॥

चंपा नाम चाल चटकीलो जेहि पर रिपुहन भाये ॥
सब समाज के आगे निरतत मोर कुरंग लजाये ॥
जो कछु नेकहु हाथ उठावत कई हाथ उठ जातो ॥
बार बार चुचुकार दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
लक्खी घोड़ा लखन लाल को बाँको निपट चलाको ॥
उड़ि उड़ि जात वायुमंडल को परत न महि पग ताको ॥
तरफराय उड़िजात परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ॥
उचित बिचारि हँसे रघुबंशी रामहिं मृदु मुसकाहीं ॥
तोपें तुपच जुटै जहँ छुटै तहें जाय सो टूटै ॥
रनरस घूटै बीरन कूटै बीरन में जस लूटै ॥
फुलझरियासो झरत धरत पग करत अनेक तमासो ॥
ढुरकन मुरकन थुरकन थरकन बरनि जाय कहु कासो ॥
तकि तुरङ्ग की चंचलताई लषन कि देखि चढ़ाई ॥
निमिबंसी रघुबंशी सिगरे ठगिसो रहे बिकाई ॥
राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहें ॥
रीझि रीझि तहँ लषनलाल को बारहिं बार सराहें ॥
इमि मग होत विलास बिविध बिधि विपुल बाजने बाजे ॥
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
कोउ तिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमहँ सो पागी ॥
भरी सनेह देह सुधि भूली रामरूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला ॥
फूला नैंन मैंन मन भूला लागि प्रीति को हूला ॥
कोउ घूँघट पट खोल सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी ॥
देखत दूलह रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा–कोउ सूरति लखि साँवरो, तोरति तृण सुख पाग ।
मधुरी मूरति में पगी, निज मूरति सुख त्याग ॥

कोउ रघुनंदन छबि बिलोकि कै बोली सुनु सखि बयना ॥

राजकुँवर ये करन कलेऊ जात जनक के अयना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारिहु बेटा ॥
रँगभीने रघुबंशी छैला दशरथ राज दुल्हेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारी प्यारी निज भरि नैन निहारे ॥
नतु दरसन दुर्लभ दूलह के रविकुल प्रान पियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेश कि बेटी ॥
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति निज निज भुज भर भेटी ॥
बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई ॥
हमहु चलें सब जनक महल को हँसिये इन्हें हँसाई ॥
इमि मृदु बातें करत परसपर भई प्रेमबश बामा ॥
सुनत जात मुसुकात अनुज जुत कृपासिन्धु श्रीरामा ॥
तुरँग नचावत मग छबि छावत बाजत बिपुल नगारे ॥
चोपदार जागरें अलापत जनक नगर पगु धारे ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मनिमय चौक सँवारे ॥
राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उतर जाय लहि सीयमातु पहँ नगर सुवासिन नारी ॥
कंचन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर करले कंचन थारी ॥
परछन चलीं हेतु रघुवर को बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि रामछबि दृग आनँद जल बाढ़ी ॥
छकित रहीं वर बदन बिलोकत चकित रहीं तहँ ठाढ़ी ॥
रामरूप रँसि रंग गईं रँगीली लखि दूलह सुख सारा ॥
तन मन रह्यो सरेख न काहू को करै मंगलाचारा ॥
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ॥
परछन अली भलीबिधि कीन्हो रोकि बिलोचन बारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँग ते चारिउ कुँवर उतारे ॥
पाणि पकरि रघुनन्दन जी को भीतर महल सिधारे ॥

द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप बिराजे ॥
बैठ सभा सकल निमिबंसी सुर अंसी इव छाजे ॥
रघुनन्दन तहँ अनुज सखन युत सादर जाय जुहारे ॥
देखत उठे सकल निमिबंसी जनक निकट बैठारे ॥
कर गजरा कजरा दृगमें सेहरायुत मौर बिराजी ॥
दूलह भेष बिलोकि रामको भई सभा सब राजी ॥
तहँ कर कछु दरबार जनक ढिग दशरथ राज दुलारे ॥
लैके राय रजाय नाय शिर सासु समीप सिधारे ॥
जहँ पिक बयनी सब सुख ऐनी बैठि सुनयना रानी ॥
इन्द्रानी की कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
चन्द्रमुखी चहुँ ओर विराजै कोउ कर चमर डुलावै ॥
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावै ॥
तेहि छन तहाँ गये रघुनन्दन मन फंदन बर बेषा ॥
देखत उठी सकल रनिवासें रह्यो न तनुहिं सरेषा ॥
करि आरती बारि मनिभूषन सादर पाँव पखारे ॥
चारि रङ्ग के चारि सिंहासन चारिहु बर बैठारे ॥
लखि छबि ऐना सासु सुनैना नैना पलक तजैना ॥
भूली चैना बोलि सकैना कहत बनै ना बैना ॥
तकि तकि रहीं तनक नहिं डोलैं मगन महा मुद माहीं ॥
राम रूप रँगि रही रँगीली आँसु बहे दृग जाहीं ॥
इमि तहँ दशा बिलोकि सासु की राम गुनत मनमाहीं ॥
काह भयो यह आजु रानि को पूछन में सकुचाहीं ॥
चतुर सखी चित चरचि राम सों बोली मधुरी बानी ॥
यह तुम्हार गुन है सब लालन और न कछु उर आनी ॥
सुनत बचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी ॥
बार बार बहु लीन्ह बलैया चूमि कपोलन पानी ॥
माधुरि मूरति सावलि सूरत तकि तृण तोरति रानी ॥

रीझि रीझि तहँ राम रूप पै बिनही मोल बिकानी ॥
पुनि कर जोरि राम सों रानी बोली अति मृदु मोई ॥
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारहु राज दुलारे ॥
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पाय पखारे ॥
रचना अधिक पदक के पीढ़न बैठारे सब भाई ॥
कंचन थारी मृदुल सुहारी परसी बिबिध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूपसुत जेंवत पवन डुलावैं सासू ॥
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसे बरणि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये ॥
बैठे पहिरि पोशाक सखनयुत बिबिध सुगन्ध लगाये ॥

दोहा–राज अयन सब चैन युत, राजैं राजकुमार ।
जिनको हास बिलास लखि, लाजहिं लाखनमार ॥

छन्द–तेहि अवसर सुधि पाय सखी मुख लक्ष्मीनिधि की नारी ॥
नाम सिद्ध परसिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दरि नव योवन मतवारी ॥
रसिकन रीति प्रीति परबीनी रतिहि लजावन हारी ॥
अतिगुनवान निधान रूपकी सबबिधि सुभग सयानी ॥
लक्ष्मीनिधि की प्राणपियारी निमि कुल की महरानी ॥
अलबेली सरहज रघुबर की बड़ी सनेह शृँगारी ॥
प्रीतम प्रीति निवाहन हारी रामरूप रिझवारी ॥
चंचल चपल चहूँ दिशि चितवति देखन को अतुराई ॥
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई ॥
बदन चंद अरविन्द लिये कर बिहँसत मन्दिर सोहे ॥
राजकुँवर कर पकड़ि लाड़िली बोली तकि तिरछोहे ॥
ऐ चितचोर किशोर भूप के वड़ चोर तुम प्यारे ॥
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ॥

उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई ॥
तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमारि अवाई ॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई ॥
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाइ समाई ॥
सुनत राम के बचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई ॥
तुमरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई ॥
सासु सुनयना के समीप महँ देत जवाब बनयना ॥
पानि पकरि रघुनन्दनजी को गइ लिवाय निज अयना ॥
चारि सिंहासन दै तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ॥
बारहिं बार निहारि बदन छबि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकंठ मालती माला बसननि अतर लगायो ॥
अंचल सो मुख पोंछि रामको निजकर पान खवायो ॥
जहँ रति रंभा सरिस सुन्दरी बैठीं किये शृंगारैं ॥
कोउ कुसुमन की करनफूल रच कोउ कलँगी कोउ हारैं ॥
ललित लवंग कपूर संग धरि कोउ सखि पान लगावैं ॥
कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ी कोउ सखि चमर डुलावैं ॥
निज निज साज सजे सब प्यारी रघुबर सन्मुख भावैं ॥
कोउ जल तुरही तार तमूरा कोउ करताल बजावैं ॥
कोउ सितार लै तार तार प्रति गूढ़ गतिन दरसावैं ॥
कोउ उपंग मुरचंग मिलावै दे मृदङ्ग सुख थापै ॥
कोउ लै बीन नवीन सुरनते मनहु बसीकर जापै ॥
कोउ मृगनैनी कोकिल बयनी पंचम राग अलापै ॥
परत कानमें मधुर तान निज बिरहिन के जिय काँपै ॥
इमि अभिराम धाम शोभा लखि रामकुँअर अनुरागे ॥
बातें करत सिद्धि सरहज सो परम प्रेमरस पागे ॥
जे निमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी ॥
राममिलन की बड़ी लालसा कहि न सकैं सुकुमारी ॥

तिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहु भाई ॥
तुरतहिं तहँ पहुँची सब प्यारी जानि समय सुखदाई ॥
देखि राजकुँवरी सब आई रामदरस की प्यासी ॥
अति सन्मान कियो सबही को सिद्धि सदन सुभरासी ॥
राम सुछबि देखन ते लागीं दृग आनँदजल बाढ़े ॥
चष झषपरे रूप सागर में कढहिं नहीं अब काढ़े ॥
मनिन मोर पर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहैं ॥
राजतियन की कौन चलैहैं मुनियन को मन मोहैं ॥
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकें मुखपर छूटी ॥
जोहत जहर चढ़त जुवतिन को जड़ी न लागत बूटी ॥
लखि छबिबरकी श्याम सुन्दर की भई मौन सुख सरकी ॥
तरकी तनी कंचुकी करकी दरकी चूरी करकी ॥

दोहा–मन लोभा सोभा निरखि, भईं विवश सुकुमारि ।
चकित छकित सब रह गईं, तनमनदसा बिसारि ॥

छं०–जे तिय मान अनूप रूप निज रही स्वरूप गुमानी ॥
ते लखि रामबदन की सुखमा बिनही मोल बिकानी ॥
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ॥
तहँ प्यारी गारी रघुबरको देन दिवावन लागी ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ॥
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई ॥
एक बात तुमसों हम पूछैं लाल ना राखहु गोई ॥
होत व्याह संबन्ध सबन को अपने जातिहि माँही ॥
निज बहिनी शृंगी ऋषि को तुम कैसे दियो बिवाही ॥
की उनको मुनीश लै भाग्यो की वोई सँग लागी ॥
एती बात बतावहु लालन तुम रघुबंश अदागी ॥
लषण कह्यो यह सुनो लाड़िलो जेहि विधि जहँ लिखि दीना ॥

तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुँवर रघुबंशी कहँ बिदेह बैरागी ॥
भयो हमार ब्याह तुम्हरे घर बिधिगत गनै को भागी ॥
औरो एक हाँस उर आवै अचरज है सब काहू ॥
तुम तो हौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारि भो ब्याहू ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकै को जीती ॥
जाहिर अहै सकल जग माहीं तुम्हरे घर की रीती ॥
अति उदार करतूतिदार सब अवधपुरी की बामा ॥
खीर खाय पैदा सुत करतीं पति कर कछु नहिं कामा ॥
सखी बचन सुनि तब रघुनन्दन बोले मृदु मुसुकाते ॥
आपन चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बातें ॥
कोउ नहिं जन्मै मात पिता बिन बँधी वेद की नीती ॥
तुम्हरे तौ महिते सब उपजैं अस हमरे नहिं रीती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी ॥
सिद्धि कुँवरि की लहुरी भनिगी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥
लरिकाई ते रह्यो लालजी तुम तपसिन सँग माहीं ॥
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥
की मुनि नारिन के सँग सीखे की निज भगिनी पासे ॥
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहिं भासे ॥
बोले भरत भली कहि सजनी तुमहुँ तो आवै कुमारी ॥
बर्णहुँ पुरुष संग की बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखन को सो सब सिखे सिखाये ॥
कामिनि काम कला अब सिखन हम तुम्हरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसी तुम न बखानौ ॥
तुमरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानौ ॥
भरत कह्यो तुम साँची कहत हो हम साध परकाजी ॥
ऐसी सेवा करो लाड़िली जाते हों हम राजी ॥

आये अयन अपूरब योगी अस निज मन गुन लीजै ॥
अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहि पूजन कीजै ॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ॥
ऋषि मख राखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधि पाई ॥
इनको सुन्दर देखि काम बस तिया ताड़का आई ॥
सो करतूति न भई लाल सो मारेहु तेहि खिसिआई ॥
बोले रिपुहन सुनो भामिनी नाहक दोष न दीजै ॥
जो करतूति बनी नहिं उनते सो हमसे भरि लीजै ॥
बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो ब्याहू ॥
सोउ पछिताव रहै नहिं प्यारी अब करि लेहु समाहू ॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो मति करहु उपाई ॥
बैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई ॥
सुनि बाणी रिपुदमन लालकी बोली कोउ सुकुमारी ॥
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल बिचारी ॥
कीकहुँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन सँग कीन्हो ॥
तीनों भाइन ते तुम्हरे महँ लखियतु चिन्ह नवीनो ॥
रिपुसन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहिं जानैं ॥
गणिका नारिनहू ते सौगुण तुम्हें अधिक हम मानैं ॥
हमरो तुमरो चिन्ह लाडिली एकै भाँति लखाई ॥
ताते सखी हमारि तुम्हारी चाही अवशि सगाई ॥
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातैं बोली सिधि सुकुमारी ॥
सुनिये रसिक राय रघुनन्दन आनँद कन्द बिहारी ॥
अति अभिराम कामहूँ मोहत मूरति देखि तुम्हारी ॥
कसे बची होयँगी तुमते अवधपुरी की नारी ॥
यों कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धिकुँवर सुख अयना ॥
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु बयना ॥

दोहा– जस मर्यादा जगत की, बाँध दियो करतार ।
राजा रंक यती सती, करत सोइ व्यवहार ॥

छन्द–अनुचित उचित बिचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ ॥
तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ ॥
यह सुनि भरत लषन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भईं सुखारी ॥
यहि बिधि हँसी हँसाय रघुबर सों दै दिवाय मृदुगारी ॥
नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सब प्यारी ॥
कोउ सखि राम समीप जायके कहत कछुक लगि कानैं ॥
करन कपोल परसि के प्यारी जन्म सुफल करि मानैं ॥
कोइ निज कोमल कमल करन ते चरन कमल प्रभु चापैं ॥
बार बार हिय लाय लाड़ली दूर करैं तन तापैं ॥
रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी ॥
जस जाके हिय रही लालसा तस तेहिकी रुचि राखी ॥
रघुनन्दन तब कह्यो सिद्धि से जो तुम देहु निदेसू ॥
तो अब हम गवनैं जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू ॥
सुनि यह बानी राजकुँवर की काँपि उठी उर आली ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह बिहाली ॥
नेह बढ़ाय छकाय रूपरस आपु अवध अब जैहैं ॥
हम बिरहिन के प्रान लाड़िले कहो कवन बिधि रहिहैं ॥
सुनि इमि आरत बेन तियन के तब करुना रस साने ॥
कोमल चित कृपालु रघुनन्दन प्रीति रीति भल जाने ॥
बोले बचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहुँ सब कोई ॥
अब मैं कहौं सुभाव आपनो तुम्हें न राखहुँ गोई ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी ॥
तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी ॥
जो कोउ प्रीति करै मोरे पर होय सुजान अजानो ॥
प्रान समान सदा तेहि राखौं औगुन एक न मानौं ॥
जिन जिन प्रेमिन केरि जगत में सुनियत बड़ी बड़ाई ॥

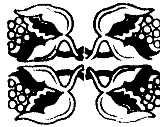
तिन तिन में बिचार जो देखहु सब में एक खुटाई ॥
कर्म धर्म अरु धीर वीरता जोग सिद्धि चतुराई ॥
ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुनाई ॥
इतने जीति सकैं नहिं मोहीं कोटिन करै उपाई ॥
हार जाउँ प्रेमी प्रानी ते तहाँ न मोर बसाई ॥
तुम तो सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिं प्रानहु ते प्यारी ॥
तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भाँति पुजैहौं ॥
लौकिक लाज बचाय लाड़िली तुमते बिलग न ह्वैहौं ॥
हम सब भाँति तुम्हारि साँवली तुम सब भाँति हमारी ॥
सत्य सत्य ये सत्य बचन मम मानहु राजकुमारी ॥

दोहा–रघुनंदनके बचन सुनि, खुलिगे कपट किंवार ।
बढ्योप्रेम सब तियन के, तनिक न तनहिं सँभार ॥

छंद–पुनि धरि धीरज अली भलीविधि जोरि पंकरुह पानी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुबानी ॥
धन्य भाग हमरो रघुनन्दन हमते कोउ बड़ नाहीं ॥
बूड़त रहीं जगत सागर महँ राखि लीन्ह गहि बाहीं ॥
हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुदमोई ॥
राजकुमार रावरे के सम कीन्ह कृपा नहिं कोई ॥
प्रति उपकार होत नहिं हमते जस तुम्ह कीन्हें प्यारे ॥
चन्द्र समान होहिं नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे ॥
जेहिं जेहिं जोनि करम बस हमको जन्म बिधाता देहीं ॥
तहँ तहँ रसिक राय रघुनन्दन तुमहीं मिलहु सनेही ॥
बरु बिधि कोटिन करै जातना या तन छन छन छूटै ॥
हमरी तुम्हरी लगन लाडिले कौनहु जन्म न टूटै ॥
सुनि बानी करुनारस सानी रघुवर अंतर जानी ॥
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी ॥

सबसों बिदा माँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगुधारे ॥
निकसे मानहु सिद्धि महल ते चारि चन्द्र छबिवारे ॥
रोहिनि पान खवावत साथहिं चली सिद्धि सुख ऐना ॥
आये राजमहल महँ सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना ॥
चरन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन जोरि सरोरुह पानो ॥
बिदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बानी ॥
सुनि ये बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना ॥
रहौ कि जाहु न कछु कहि आवै भूल गई सब बैना ॥
पुनि धरि धीर अभूषण सुन्दर जे बड़ मोलके जानी ॥
अनुज सखन जुत रामकुँवर को दीन्ह सुनैना रानी ॥
सब सन बिदा माँगि रघुनन्दन चले जनक ढिग आये ॥
यथाजोग करि मान बड़ाई बहुबिधि आनँद छाये ॥

दोहा—अस सब कहँ आनन्द दै, गये अवधनृप पास ।
कथा सुनाई नृपहिं सब, सुनि अति भयो हुलास ॥



आरती बजरंगबली की

आरती कीजे हनुमान ललाकी। दुष्ट दलन रघुनाथ ललाकी।
जाके बलसे गिरवर कांपे। रोगदोष जाके निकट न झांके॥ टेक॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥ १॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंकाजारि, सिया सुधि लाये॥ २॥
लंका ऐसे कोट समुद्र ऐसी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ ३॥
लंका जारि असुर सब मारे। सीताराम के काज सँवारे॥ ४॥
लक्ष्मण मुरछि परे धरणी में। लाय सजीवन प्राण उबारे॥ ५॥
पैठी पताल तोरि यमकातर। अहिरावण के भुजा उखारे॥ ६॥
बाँए भुजा असुर संहारे। दहिने भुजा सब संत उबारे॥ ७॥
सुरनर मुनिजन आरती उतारें। जैजैजै हनुमानजी उचारें॥ ८॥

श्री गणेशाय नमः

अथ संकटमोचन हनुमानाष्टक।

स०—बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि ते त्रास भई सबको यह संकट काहु ते जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें यह संकटमोचन नाम तिहारो॥ १॥
बालि के त्रास कपीस बसै तहँ जात महा प्रभु पंथ निवारो।
चौंकि महामुनि श्राप दियो दिशिचारि फिरै न सुपास विचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दासको शोक निवारो॥को०॥ २॥
अंगद के संग कीश अनेक गये सिय खोज कपीश पुकारो।
जीवत ना बचिहौ हमसो जु बिना सुध लै इतको पग धारो॥
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लै सियकी सुधि प्राण उबारो॥को०॥ ३॥
रावण त्रास दई सियको तब राक्षसि सोकहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महा प्रभु जाइ सबै रजनीचर मारो॥
माँगत सीय अशोक सो आगि तो दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो॥को०॥४॥
रावण युद्ध अचानक कीन्ह सु नाग के फाँस सबै शिर डारो।
श्री रघुबीर समेत सबै दल मोह भयो तब संकट भारो॥
आनि खगेशहिं कौ हनुमान सो बंधन काटि के फाँस निवारो॥को०॥५॥
बाण लगे उर लक्ष्मण के प्रभु प्राण तजो सुत रावण मारो।
लै गृह बैद्य सुषेण समेत तबै गिरि द्रोण सुबीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो॥को०॥ ६॥
बन्धु समेत जबै महिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देवहिं पूजि भली विधि सो बलि देन दोऊ कर मन्त्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तबही महिरावण सेन समेत संहारो॥को०॥ ७॥
काज किये बड़ लोगन के तुम बीर महा प्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोहिं गरीब को सो तुमसो नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो॥को०॥ ८॥

इति श्रीसंकटमोचनहनुमानाष्टक समाप्त।

रामायण की प्रशंसा

कवित्त—रामायण मानस विचित्र त्यों पवित्र चारु गायो दास तुलसी निसारि मारि वंदनै। जाको यश छायो लोक लोकन प्रवेश केस मंजुल सुवेस पुंज ताप तीनि छेदनै ॥ भाग्यवन्त दानी खल चारी जो प्रसिद्ध आजु सुखमा समृद्ध हार विश्व जीव खेदनै। नौमि नौमि नौमि श्रीरामायण जु मार्त्तण्ड जाके उर उदित सो जात राम भेदनै ॥ १ ॥ पाव केहि पार कौन महिमा महान महा मानस रामायण की छाय रही जगमें। जाके पढ़े सुने गुने होत हैं सकल काम पूरण श्रीरामभक्ति पाव राम संग में ॥ साँचे करि नेम प्रेम बाँचे यहि नित्य जौन अवसो न ताप तीनि राचे राम रंगमें। भाग्यवंत ताहि जग दुर्लभ न लाभ कछु काय मन वचन चलैं जो याके मगमें ॥ २ ॥ भाग्यवंत भूपदेश द्राविड़ नरेश काशी करि कविताई बात दोऊ ठाक यों ठयो। होत सुत एक दिशि दूसरी जो कन्या का सु कीजियो विवाह विधि योग सुता ह्वै जयो। कीन छल द्राविड़ सुपुत्र कहि ब्याहिबे को आयो लै बरात बात खुलिजात त्यों भयो। तुलसी प्रसाद महा महिमा रामायण को सात दिन सुन सोई सुत ह्वै गयो ॥ ३ ॥ देखि यमदूत गये जगमें प्रचार महामानस रामायण को गावै नरनारियो। जाय यमराज पे रिसाय निज दंड फाँस दीन्ह डारि सवन दुखारियो पुकारियो ॥ महाराज राज अब जगमें न आपु रह्यो भयो एक तुलसी सो हाल ऐसो करियो। भाग्यवन्त विरचित रामायण जु ताहि सब पढ़ि २ पापी वैकुण्ठ ही सिधारियो ॥ ४ ॥ अरे मेरे दूतो यह सब मेरी कान करो भूलिहू न जाइये सु ऐसे कबौं धामको। होय जहाँ मानस विचित्र यश रामजी को कीन्हों दास तुलसी को दानिमन कामको ॥ जोरि हाथ सादर नवाय पद-पद्म माथ बार २ दूरहिते कीजियो प्रणाम को। भाग्यवंत बात यह साँची में पुकारि कहौं जानियो रामायण के धाम सीताराम को ॥ ५ ॥ दलिजातो दापन कराल कलिकाल युग अबलौं न नाम कहूँ धर्मका रहावतो। पटि जातो नरक निकाय महा पापिन सो घटि जातो दान दया भक्ति ना सुहावतो। वेद और पुराण सद्ग्रन्थ सबै लोप होत भूलिहू न रामयश कोऊ कहूँ गावतो। भाग्यवन्त जोपै दास तुलसी न करि कृपा रामयश मानस रामायण बनावतो ॥ ६ ॥ खनिके पहार वेद शास्त्र और पुराण कौन रामयश माणिक अमोल खोजि लावतो। देश २ ग्राम २ घर २ कान २ अमृत समान रामयश कौन नावतो ॥ चारिहु बरन सब आश्रम सुपन्थ नाम राम सीय कथन को कौन छवि छावतो। भाग्यवन्त जो पै दास-तुलसी दयालु ह्वै न रामयश मानस विचित्र यश गावतो ॥ ७ ॥ चाहे फल जौन मन ताको है सकल यामें कल्पतरु रूप यह कलिमें प्रधान है। याकी छाँह सुखद सराहैं सब साधु सन्त भाग्यवन्त सेवक प्रकाशे उर ज्ञान हैं। करिके सुनेम प्रेम गाव नित्य याहि जौन ताके रक्षक सुजान हनुमान हैं। आजु कलिकाल में कल्यान करि जीवन का मानस समान कछु दूसरो न आन है ॥ ८ ॥ जैसी कविताई श्री गोसाईं जूकी तैसी न उपाई कवि कोऊ भरि भूरि है। भाग्यवन्त जाकी गति अद्भुत न जानी जात बरन २ रहे आनन्द सो पूरि है। मानत प्रमाण जाकी राउ रंक आजु सब देवगण धारत सुमाथ जाकी धूरि है। धन्य धन्य श्रीरामायण प्रतापवन्त कलिजीव जीवन के जीवनको मूरि है ॥ ९ ॥ धन्य धन्य धन्य श्रीगोसाईं दास तुलसी छायो यश जाको लोक लोकन अपार है। देखिके कराल कलिकाल की करालताई आई दौरि दाया हरिमाया की पसार है ॥ रामयश मानस कठोर धारि लिये कर भाग्यवन्त जनु हेत आपु अवतार है। दापि कील भूपको सुथापि महि धर्म सेतु राजयश रामभक्ति कीन्हें विस्तार है ॥ १० ॥ छूटिगई त्रास कलिकाल की कराल जात बानिपरी गानकी सुरामयश बरके। भाग्यवन्त फैल रही धरा में सुभक्त चारु मानस प्रभाव पे न जात कोऊ नरके। प्रगटी सुरीति एक अद्भुत अनोखी और बरन २ माहि रामनाम रटके। घर २ आजु नरनारि के कर २ तुलसी प्रसाद माला खरखर सरके ॥ ११ ॥ भागु भागु रे कलंकी कूर ह्वांसो कलि मोसो अब नेकहू न तेरो जोर चलैगो। आजलौं तु कीन्ह मनमानी निज राज काज अबना कछु चाहू नरु तेरो फूलि फलैगो। भाग्यवन्त प्रबल प्रताप तुलसी के जगको छलनहार तूही आप छलैगो। रामयश मानस को रक्षक है महावीर मेरी ओर ह्वैके लेखे ताको सोई दलैगो ॥ १२ ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

बालकाण्ड

श्लोकाः

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि। मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम्। यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ। वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्। सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः। यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि। स्वान्तःसुखाय तुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०--जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिबरबदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभ-गुन-सदन ॥१॥
मूक होइ बाचाल, पंगु चढइ गिरिबर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल-कलि-मल-दहन ॥२॥
नील-सरोरुह-स्याम, तरुन--अरुन--बारिज--नयन।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीर-सागर-सयन ॥३॥

कुंद--इंदु--सम देह, उमारमन करुनाअयन ।
जाहि दीन पर नेह, करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदउँ गुरु-पद--कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि ।
महा-मोह-तम--पुंज, जासु बचन रवि-कर-निकर ॥ ५ ॥

बंदउँ गुरु–पद–पदुम–परागा ❀ सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
अमिय–मूरि–मय चूरन चारू ❀ समन सकल–भव–रुज–परिवारू ॥
सुकृत संभुतन बिमलबिभूती ❀ मंजुल मंगल–मोदप्रसूती ॥
जन–मन–मंजु–मुकुर–मल–हरनी ❀ किए तिलक गुन-गन-बस-करनी ॥
श्रीगुरु--पद–नख--मनि–गन-जोती ❀ सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥
दलन मोहतम सोसुप्रकासू ❀ बड़े भाग उर आवइ जासू ॥
उघरहिं बिमलबिलोचन ही के ❀ मिटहिं दोष दुख भवरजनी के ॥
सूझहिं रामचरित मनिमानिक ❀ गुपुत प्रकट जहँ जो जेहि खानिक॥

दो०--जथा सुअंजन अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं सैल बन, भूतल भूरि निधान ॥१॥

गुरु–पद–रज–मृदु–मंजुल--अंजन ❀ नयन अमिय दृग-दोष–विभंजन ॥
तेहि करि बिमल बिबेक बिलोचन ❀ बरनउँ रामचरित भवमोचन ॥
बंदउँ प्रथम मही–सुर–चरना ❀ मोह–जनित–संसय सब हरना ॥
सुजनसमाज सकल-गुन-खानी ❀ करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥
साधुचरित सुभ सरिस कपासू ❀ निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ बंदनीय जेहि जग जसु पावा ॥
मुद--मङ्गल–मय संत–समाजू ❀ जो जग जंगम तीरथराजू ॥
रामभगति जहँ सुरसरि - धारा ❀ सरसइ ब्रह्मबिचार प्रचारा ॥
बिधि-निषेध-मय कलि - मल-हरनी ❀ करमकथा रबि-नंदिनि बरनी ॥
हरि–हर–कथा बिराजति बेनी ❀ सुनत सकल-मुद-मंगल-देनी ॥

बट बिस्वासु अटल निज धर्मा ❀ तीरथराज समाज सुकर्मा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा ❀ सेवत सादर समन कलेसा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥

दो०-सुनि समुझहिं जन मुदितमन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु, साधुसमाज प्रयाग ॥२॥

मज्जनफल देखिय ततकाला ❀ काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करइ जनि कोई ❀ सत-संगति-महिमा नहिं गोई ॥
बालमीकि नारद घटजोनी ❀ निज निज मुखनि कही निज होनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना ❀ जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई ❀ जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई ॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❀ लोकहु बेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई ❀ रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद-मंगल-मूला ❀ सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ❀ पारस परसि कुधातु सोहाई ॥
बिधिबस सुजन कुसंगति परहीं ❀ फनि-मनि-सम निजगुनअनुसरहीं ॥
बिधि-हरिहर-कबि-कोबिद बानी ❀ कहत साधुमहिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ❀ साकबनिक मनि-गन-गुन जैसे ॥

दो०--बंदउँ संत समानचित, हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजुलिगत सुभ सुमन जिमि, सम सुगंध कर दोउ ॥
संत सरलचित जगत हित, जानि सुभाउ सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा, राम-चरन-रति देहु ॥३॥

बहुरि बंदि खलगन सतिभाये ❀ जे बिनु काज दाहिनेहु बाये ॥
पर-हित-हानि लाभ जिन्ह केरे ❀ उजरे हरष बिषाद बसेरे ॥
हरि-हर-जस राकेस राहु से ❀ परअकाज भट सहसबाहु से ॥

जे परदोष लखहिं सहसाखी ❀ परहित घृत जिनके मन माखी ॥
तेज कृसानु रोष महिषेसा ❀ अघ-अवगुन-धन-धनी धनेसा ॥
उदय केतुसम हित सबही के ❀ कुंभकरन सम सोवत नीके ॥
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं ❀ जिमि हिम उपल कृषीदल गरहीं ॥
बंदउँ खल जस सेष सरोषा ❀ सहसबदन बरनइ परदोषा ॥
पुनि प्रनवउँ पृथुराजसमाना ❀ परअघ सुनइ सहसदस काना ॥
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही ❀ संतत सुरानीक हित जेही ॥
बचन बज्र जेहि सदा पियारा ❀ सहसनयन परदोष निहारा ॥

दो०--उदासीन-अरि-मीत-हित, सुनत जरहिं खलरीति ।
जानि पानिजुग जोरि जन, बिनती करइ सप्रीति ॥४॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा ❀ तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पलिअहि अतिअनुरागा ❀ होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
बंदउँ संत असज्जन चरना ❀ दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं ❀ मिलत एक दारुन दुख देहीं ॥
उपजहिं एक संग जल माहीं ❀ जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❀ जनक एक जग जलधि अगाधू ॥
भल अनभल निज-निज करतूती ❀ लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ❀ गरल अनल कलि-मल सरि व्याधू ॥
गुन अवगुन जानत सब कोई ❀ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दो०-भलो भलाइहि पै लहइ, लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीचु ॥ ५ ॥

खल-अघ-अगुन साधु-गुन-गाहा ❀ उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने ❀ संग्रह त्याग न बिन पहिचाने ॥
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये ❀ गनि गुन दोष बेद बिलगाये ॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना ❀ बिधि प्रपंच गुन-अवगुन-साना ॥

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती ❀ साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू ❀ अमिय सजीवनु माहुर मीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा ❀ लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा ❀ मरु मारव महिदेव गवासा ॥
सरग नरक अनुराग बिरागा ❀ निगम अगम गुन-दोष-बिभागा ॥

दो०-जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारिबिकार ॥ ६ ॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता ❀ तब तजि दोष गुनहि मनु राता ॥
कालसुभाउ करम बरिआई ❀ भलेउ प्रकृतिबस चुकइ भलाई ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं ❀ दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू ❀ मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ ❀ बेषप्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू ❀ कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
किएहु कुबेष साधु सनमानू ❀ जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ❀ लोकहु बेद बिदित सब काहू ॥
गगन चढ़इ रज पवनप्रसंगा ❀ कीचहिं मिलइ नीच-जल-संगा ॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं ❀ सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं ॥
धूम कुसंगति कारिख होई ❀ लिखिय पुरान मंजु मसि सोई ॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता ❀ होइ जलद जग-जीवन-दाता ॥

दो०-ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग ॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ, नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससि पोषक सोषक समुझि, जग जस अपजस दीन्ह ॥
जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि ।

बंदउँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुगपानि ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्ब ।
बंदउँ किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्ब ॥७॥

आकर चारि लाख चौरासी ❀ जाति जीव जल-थल-नभ-बासी ॥
सीय-राम-मय सब जग जानी ❀ करउँ प्रनाम जोरि जुगपानी ॥
जानि कृपा कर किंकर मोहू ❀ सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू ॥
निज बुधिबल भरोस मोहि नाहीं ❀ तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥
करन चहउँ रघुपति-गुन-गाहा ❀ लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ ❀ मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अति नीच ऊँच रुचि आछी ❀ चहिय अमिय जग जुरइ न छाछी ॥
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥
जौं बालक कह तोतरि बाता ❀ सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता ॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी ❀ जे पर-दूषन-भूषन-धारी ॥
निज कवित्त केहि लाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अति फीका ॥
जे परभनिति सुनत हरषाहीं ❀ ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सुर-सरि-सम भाई ❀ जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृत-सिंधु-सम कोई ❀ देखि पूर बिधु बाढइ जोई ॥

दो०-भाग छोट अभिलाषु बड़, करउँ एक बिस्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब, खल करिहहिं उपहास ॥८॥

खलपरिहास होइ हित मोरा ❀ काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥
हंसहि बक दादुर चातकही ❀ हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
कबित रसिक न राम-पद-नेहू ❀ तिन कहँ सुखद हास रस एहू ॥
भाषाभनिति भोरि मति मोरी ❀ हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभु-पद-प्रीति न सामुझि नीकी ❀ तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
हरि-हर-पद-रति मति न कुतरकी ❀ तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबरकी ॥

राम-भगति-भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
कबि न होउँ नहिं बचनप्रबीनू ❀ सकल कला सब बिद्याहीनू ॥
आखर अरथ अलंकृति नाना ❀ छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा ❀ कबित-दोष-गुन बिबिध प्रकारा ॥
कबित बिबेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहउँ लिखि कागज कोरे ॥

दो०--भनिति मोरि सब गुन-रहित, बिस्वबिदित गुन एक ।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके बिमल बिबेक ॥९॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुरान-श्रुति-सारा ॥
मंगल-भवन अमंगल-हारी ❀ उमासहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति बिचित्र सु-कबि-कृत जोऊ ❀ रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी ❀ सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुन-रहित कुकबि-कृत बानी ❀ राम-नाम-जस-अंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही ❀ मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
जदपि कबित रस एकउ नाहीं ❀ रामप्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुआई ❀ अगरुप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी ❀ रामकथा जग मंगलकरनी ॥

छंद--मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥
प्रभु-सुजस-संगति भनिति भलि होइहि सुजन-मन-भावनी ।
भवअंग भूति मसान की सुमिरत सोहावनि पावनी ॥

दो०--प्रिय लागिहि अति सबहि मम, भनिति राम-जस-संग ।
दारु बिचारु कि करइ कोउ, बंदिय मलय प्रसंग ॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान ।

गिराग्राम्य सिय-राम-जस, गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०॥

मनि-मानिक-मुकुता-छबि जैसी ❀ अहि-गिरि-गज-सिर सोह न तैसी ॥
नृपकिरीट तरुनीतनु पाई ❀ लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥
तैसेहि सु-कबि-कबित बुध कहहीं ❀ उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ॥
भगति हेतु बिधिभवन बिहाई ❀ सुमिरत सारद आवति धाई ॥
राम-चरित-सर बिनु अन्हवायें ❀ सो स्रम जाइ न कोटि उपायें ॥
कबि कोबिद अस हृदय बिचारी ❀ गावहिं हरिजस कलि-मल-हारी ॥
कीन्हे प्राकृत-जन-गुन-गाना ❀ सिर धुनि गिरा लगति पछिताना ॥
हृदय सिंधु मति सीपि समाना ❀ स्वाती सारद कहहिं सुजाना ॥
जौं बरखइ बरबारि बिचारू ❀ होहिं कबित मुकुतामनि चारू ॥

दो०--जुगुति बेधि पुनि पोहिअहि, रामचरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर, सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब बायस बेष मराला ॥
चलत कुपंथ बेदमग छाँड़े ❀ कपट कलेवर कलिमल भाँड़े ॥
बंचक भगत कहाइ राम के ❀ किंकर कंचन कोह काम के ॥
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी ❀ धिग धरमध्वज धंधक धोरी ॥
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ ❀ बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ ॥
तातें मैं अति अलप बखाने ❀ थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझि बिबिध बिधि बिनती मोरी ❀ कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥
एतेहु पर करिहहिं जे संका ❀ मोहिं तें अधिक ते जड़ मति रंका ॥
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावौं ❀ मति-अनुरूप रामगुन गावौं ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा ❀ कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं ❀ कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित रामप्रभुताई ❀ करत कथा मन अति कदराई ॥

दो०--सारद सेष महेस बिधि, आगम निगम पुरान ।

नेति नेति कहि जासु गुन, करहिं निरंतर गान ॥१२॥

सब जानत प्रभुप्रभुता सोई ❀ तदपि कहे बिनु रहा न कोई ॥
तहाँ बेद अस कारन राखा ❀ भजनप्रभाउ भाँति बहु भाखा ॥
एक अनीह अरूप अनामा ❀ अज सच्चिदानंद परधामा ॥
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना ❀ तेहि धरि देह चरित कृत नाना ॥
सो केवल भगतन्ह हित लागी ❀ परमकृपाल प्रनत - अनुरागी ॥
जेहि जन पर ममता अति छोहू ❀ जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
गई बहोर गरीब नेवाजू ❀ सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुध बरनहिं हरिजस अस जानी ❀ करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥
तेहि बल मैं रघुपति-गुन-गाथा ❀ कहिहउँ नाइ रामपद माथा ॥
मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गाई ❀ तेहि मग चलत सुगम मोहिं भाई ॥

दो०-अति अपार जे सरित बर, जौं नृप सेतु कराहिं ।
चढ़ि पिपीलिकउ परमलघु, बिनु स्रम पारहि जाहिं ॥१३॥

एहि प्रकार बल मनहिं देखाई ❀ करिहौं रघुपतिकथा सुहाई ॥
ब्यास आदि कबिपुंगव नाना ❀ जिन्ह सादर हरिसुजस बखाना ॥
चरन-कमल बंदौं तिन्ह केरे ❀ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलि के कबिन्ह करौं परनामा ❀ जिन्ह बरने रघुपति-गुन-ग्रामा ॥
जे प्राकृत कबि परम सयाने ❀ भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहहिं आगे ❀ प्रनवौं सबहिं कपट छल त्यागे ॥
होहु प्रसन्न देहु बरदानू ❀ साधुसमाज भनिति सनमानू ॥
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं ❀ सो स्रम बादि बालकबि करहीं ॥
कीरति भनिति भूति भलि सोई ❀ सुर-सरि-सम सब कहँ हित होई ॥
राम-सुकीरति भनिति भदेसा ❀ असमंजस अस मोहिं अँदेसा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे ❀ सिअनि सोहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जिय जानी ❀ बिमल जसहिं अनुहरै सुबानी ॥

दो०--सरल कवित कीरति बिमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान॥
सो न होइ बिनु बिमल मति, मोंहि मतिबल अतिथोर।
करहु कृपा हरि जस कहउँ, पुनि पुनि करउँ निहोर॥
कबिकोबिद रघुबर चरित, मानस - मंजु - मराल।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि, मोपर होहु कृपाल॥
सो०--बंदौं मुनि-पद कंजु, रामायन जेहि निरमयेउ।
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषन - सहित॥
बंदौं चारिउ बेद, भव-बारिधि-बोहित सरिस।
जिन्हहिं न सपनेहु खेद, बरनत रघुबर बिसद जस॥
बंदौं बिधि-पद-रेनु, भवसागर जेहि कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु, प्रगटे खल बिष बारुनी॥
दो०--बिबुध-बिप्र-बुध-ग्रह-चरन, बंदि कहौं करजोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि॥१४॥

पुनि बंदौं सारद सुरसरिता ❀ जुगल पुनीत मनोहरचरिता॥
मज्जन पान पाप हर एका ❀ कहत सुनत एक हर अबिबेका॥
गुर पितु मातु महेस भवानी ❀ प्रनवौं दीनबंधु दिनदानी॥
सेवक स्वामि सखा सिय-पी के ❀ हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के॥
कलि बिलोकि जगहित हरगिरिजा ❀ साबर-मंत्र-जाल जिन्ह सिरिजा॥
अनमिल आखर अरथन जापू ❀ प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू॥
सो महेस मोहिं पर अनुकूला ❀ करहिं कथा मुद-मंगल-मूला॥
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ ❀ बरनउँ रामचरित चितचाऊ॥
भनिति मोरि सिवकृपा बिभाती ❀ ससिसमाज मिलि मनहुँ सुराती॥

जे एहि कथहिं सनेह समेता ❀ कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥
होइहहिं राम-चरन-अनुरागी ❀ कलि-मल-रहित सुमंगल-भागी ॥

दो०--सपनेहुँ साचेहु मोहि पर, जौं हरगौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब, भाषा भनिति प्रभाउ ॥१५॥

बंदौं अवधपुरी अतिपावनि ❀ सरजूसरि कलि-कलुष-नसावनि ॥
प्रनवौं पुर-नर-नारि बहोरी ❀ ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥
सियनिंदक अघओघ नसाये ❀ लोक बिसोक बनाइ बसाये ॥
बंदौं कौसल्या दिसि प्राची ❀ कीरति जासु सकल जग माँची ॥
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू ❀ बिस्वसुखद खल-कमल-तुसारू ॥
दसरथराउ सहित सब रानी ❀ सुकृत-सुमंगल-मूरति मानी ॥
करौं प्रनाम करम मन बानी ❀ करहु कृपा सुतसेवक जानी ॥
जिन्हहिं बिरचि बड़ भयउ बिधाता ❀ महिमा- अवधि राम-पितु-माता ॥

सो०--बंदौं अवधभुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥१६॥

प्रनवौं परिजनसहित बिदेहू ❀ जाहि रामपद गूढ़ सनेहू ॥
जोग भोग महँ राखेउ गोई ❀ राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रनवौं प्रथम भरत के चरना ❀ जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥
राम-चरन-पंकज मन जासू ❀ लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥
बंदौं लछिमन-पद-जल-जाता ❀ सीतल-सुभग-भगत-सुख-दाता ॥
रघुपतिकीरति बिमल पताका ❀ दंड समान भयउ जस जाका ॥
सेष सहस्रसीस जगकारन ❀ जो अवतरेउ भूमि- भय- टारन ॥
सदा सो सानुकूल रह मोपर ❀ कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥
रिपु-सूदन-पद-कमल नमामी ❀ सूर सुसील भरतअनुगामी ॥
महाबीर बिनवौं हनुमाना ❀ राम जासु जस आपु बखाना ॥

सो०--प्रनवौं पवनकुमार, खल-बन-पावक ज्ञानघन।

जासु हृदयआगार, बसहिं राम सर-चाप-धर ॥१७॥

कपिपतिरीछ - निसाचर - राजा ❀ अंगदादि जे कीससमाजा ॥
बंदौं सब के चरन सोहाए ❀ अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥
रघुपति - चरन - उपासक जेते ❀ खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
बंदौं पदसरोज सब केरे ❀ जे बिनु काम राम के चेरे ॥
सुकसनकादि भगत मुनि नारद ❀ जे मुनिबर बिज्ञानबिसारद ॥
प्रनवौं सबहिं धरनि धरि सीसा ❀ करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
जनकसुता जगजननि जानकी ❀ अतिसय प्रिय करुनानिधान की ॥
ताके जुग- पद- कमल मनावौं ❀ जासु कृपा निरमल मति पावौं ॥
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक ❀ चरन कमल बंदौं सब लायक ॥
राजिवनयन धरे धनुसायक ❀ भगत-बिपति-भंजन सुखदायक ॥

दो०--गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ।
बंदौं सीतारामपद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥१८॥

बंदौं रामनाम रघुबर को ❀ हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥
बिधि - हरि - हर - मय बेदप्रान सो ❀ अगुन अनूपम गुननिधान सो ॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू ❀ कासी मुकुति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ ❀ प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥
जान आदिकबि नामप्रतापू ❀ भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस-नाम-सम सुनि सिवबानी ❀ जपि जेईं पिय संग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को ❀ किय भूषन तियभूषन ती को ॥
नामप्रभाउ जान सिव नीको ❀ कालकूट फल दीन्ह अमी को ॥

दो०--बरषा रितु रघुपतिभगति, तुलसी सालि सुदास ।
रामनाम बर बरनजुग, सावन भादवँ मास ॥१९॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ ❀ बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ❀ लोकलाहु पर-लोक-निबाहू ॥

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके ❀ रामलखन सम प्रिय तुलसी के ॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती ❀ ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता ❀ जगपालक बिसेपि जनत्राता ॥
भगति–सु–तिय कल करनबिभूषन ❀ जग–हित–हेतु बिमल बिधुपूषन ॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के ❀ कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥
जन–मन–मंजु–कंज–मधुकर से ❀ जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो०--एक छत्र एक मुकुटमनि, सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबरनाम के, बरन बिराजत दोउ ॥२०॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी ❀ प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईसउपाधी ❀ अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू ❀ सुनि गुनभेद समुझिहहिं साधू ॥
देखिअहिं रूप नामआधीना ❀ रूपज्ञान नहिं नामबिहीना ॥
रूप बिसेष नाम बिनु जानें ❀ करतलगत न परहिं पहिचानें ॥
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे ❀ आवत हृदय सनेह बिसेखे ॥
नाम-रूप-गति अकथ कहानी ❀ समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी ❀ उभयप्रबोधक चतुर दुभाखी ॥

दो०--राम-नाम-मनि-दीप धरु, जीह देहरीद्वार ।
तुलसी भीतर बाहरहुँ, जौं चाहसि उँजियार ॥२१॥

नाम जीह जपि जागहिं जोगी ❀ बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा ❀ अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ ❀ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लउ लाए ❀ होहिं सिद्ध अनिमादिक पाए ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी ❀ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
रामभगत जग चारि प्रकारा ❀ सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा ❀ ज्ञानी प्रभुहि बिसेषि पियारा ॥

चहुँ जुग चहुँ स्रुति नामप्रभाऊ ❀ कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥

दो०--सकल-कामना-हीन जे, राम-भगति-रस-लीन ।
नाम सुप्रेम-पियूष-ह्रद, तिनहुँ किए मन मीन ॥२२॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्मसरूपा ❀ अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते ❀ किय जेहि जुग निजबस निजबूते ॥
प्रौढ़सुजन जनि जानहिं जन की ❀ कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एक दारुगत देखिय एकू ❀ पावक सम जुग ब्रह्मबिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें ❀ कहेउँ नाम बड़ ब्रह्म राम तें ॥
ब्यापक एक ब्रह्म अबिनासी ❀ सत चेतन घन आनँदरासी ॥
अस प्रभु हृदय अछत अबिकारी ❀ सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपन नामजतन तें ❀ सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥

दो०--निरगुन तें एहि भाँति बड़, नामप्रभाउ अपार ।
कहउँ नाम बड़ राम तें, निज बिचार अनुसार ॥२३॥

राम भगत हित नरतनु-धारी ❀ सहि संकट किय साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा ❀ भगत होहिं मुद-मंगल-बासा ॥
राम एक तापसतिय तारी ❀ नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की ❀ सहित सेन-सुत कीन्ह बिबाकी ॥
सहित दोष-दुख दास दुरासा ❀ दलइ नाम जिमि रबि निसि नासा ॥
भंजेउ राम आपु भवचापू ❀ भव-भय-भंजन नामप्रतापू ॥
दंडकबन प्रभु कीन्ह सोहावन ❀ जनमन अमित नाम किय पावन ॥
निसि-चर-निकर दले रघुनंदन ❀ नाम सकल कलि-कलुष-निकंदन ॥

दो०--सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल, बेदबिदित गुनगाथ ॥२४॥

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ ❀ राखे सरन जान सब कोऊ ॥

नाम गरीब अनेक नेवाजे ❀ लोक बेद बर बिरद बिराजे ॥
राम भालु-कपि-कटक बटोरा ❀ सेतुहेतु स्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं ❀ करहु बिचार सुजन मन माहीं ॥
राम सकुल रन रावनु मारा ❀ सीय सहित निजपुर पगु धारा ॥
राजा राम अवध रजधानी ❀ गावत गुन सुर मुनि बरबानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिनु स्रम प्रबल मोहदल जीती ॥
फिरत सनेहमगन सुख अपने ❀ नामप्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दोहा—ब्रह्म राम तें नाम बड़, बर-दायक बर-दानि ।
राम चरित सत कोटि महँ, लिय महेस जिय जानि ॥२५॥

नामप्रसाद संभु अबिनासी ❀ साजअमंगल मंगलरासी ॥
सुकसनकादि सिद्ध-मुनि-जोगी ❀ नामप्रसाद ब्रह्म-सुख-भोगी ॥
नारद जानेउ नामप्रतापू ❀ जगप्रिय हरि हरि-हर-प्रिय आपू ॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भगतसिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ ❀ पाएउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ❀ अपने बस करि राखे रामू ॥
अपत अजामिल गज गनिकाऊ ❀ भये मुकुत हरि-नाम-प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई ❀ राम न सकहिं नामगुन गाई ॥

दोहा—नाम राम को कलपतरु, कलि कल्याननिवासु ।
जो सुमिरत भये भाँग तें, तुलसी तुलसीदासु ॥२६॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका ❀ भये नाम जपि जीव बिसोका ॥
बेद - पुरान - संत - मत एहू ❀ सकल-सुकृत-फल रामसनेहू ॥
ध्यान प्रथमजुग मखबिधि दूजे ❀ द्वापर परितोषन प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मल-मूल-मलीना ❀ पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला ❀ सुमिरत समन सकल जगजाला ॥
रामनाम कलि अभिमतदाता ❀ हित परलोक लोक पितुमाता ॥

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू ❀ राम-नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपटनिधानू ❀ नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दोहा-राम नाम नर केसरी, कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल ॥२७॥

भाय कुभाय अनख आलसहूँ ❀ नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥
सुमिरि सो नाम राम-गुन-गाथा ❀ करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती ❀ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
राम सुस्वामि कुसेवक मो सो ❀ निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥
लोकहुँ वेद सुसाहिबरीती ❀ बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर ❀ पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकबि कुकबि निज-मति-अनुहारी ❀ नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुसील नृपाला ❀ ईस-अंश-भव परमकृपाला ॥
सुनि सनमानहिं सबहिं सुजानी ❀ भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
यह प्राकृत - महिपाल - सुभाऊ ❀ जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥
रीझत रामसनेह निसोतें ❀ को जग मंद मलिनमति मो तें ॥

दोहा--सठ सेवक की प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु ।
उपल किये जलजान जेहिं, सचिव सुमति कपिभालु ॥
हौंहु कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ सो, सेवक तुलसीदास ॥२८॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ❀ सुनि अघ नरकहुँ नाक सिकोरी ॥
समुझि सहम मोहिं अपडर अपने ❀ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने ॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही ❀ भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥
कहत नसाइ होइ हिय नीकी ❀ रीझत राम जानि जन जी की ॥
रहति न प्रभुचित चूक किये की ❀ करत सुरति सयबार हिये की ॥

जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली ❀ फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली ॥
सोइ करतूति बिभीषन केरी ❀ सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहिं भेंटत सनमाने ❀ राजसभा रघुबीर बखाने ॥

दोहा-प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किय आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सीलनिधान ॥
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक ।
जौं यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसी क ॥
एहि बिधि निज गुन दोष कहि, सबहि बहुरि सिरु नाइ ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु, सुनि कलिकलुष नसाइ ॥२९॥

जागवलिक जो कथा सुहाई ❀ भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी ❀ सुनहु सकल सज्जन सुख मानी ॥
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा ❀ बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा ॥
सोइ सिव कागभुसुण्डिहि दीन्हा ❀ रामभगत अधिकारी चीन्हा ॥
तेहि सन जागवलिक पुनि पावा ❀ तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥
ते स्रोता बकता समसीला ❀ सवदरसी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना ❀ कर-तल-गत आमलक-समाना ॥
औरौ जे हरिभगत सुजाना ❀ कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधिनाना ॥

दो०-मैं पुनि निजगुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन, तब अति रहेउँ अचेत ॥
स्रोता बकता ज्ञाननिधि, कथा राम कै गूढ़ ।
किमि समुझौं मैं जीव जड़, कलि-मल-ग्रसित बिमूढ़ ॥३०॥

तदपि कही गुरु बारहिं बारा ❀ समुझि परी कछु मति अनुसारा ॥
भाषाबद्ध करबि मैं सोई ❀ मोरें मन प्रबोध जेहि होई ॥

जस कछु बुधि-बिबेक-बल मेरें ❀ तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरें ॥
निज-सन्देह-मोह-भ्रम-हरनी ❀ करौं कथा भव-सरिता-तरनी ॥
बुधबिस्राम सकल-जन-रंजनि ❀ रामकथा कलि-कलुष-बिभंजनि ॥
रामकथा कलि-पन्नग-भरनी ❀ पुनि बिबेकपावक कहँ अरनी ॥
रामकथा कलि कामद गाई ❀ सुजन-सजीवनि-मूरि सोहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि ❀ भयभंजनि भ्रम-भेक-भुअंगिनि ॥
असुर-सेन-सम नरकनिकंदिनि ❀ साधु-बिबुध-कुल-हित-गिरि-नंदिनि ॥
संत-समाज-पयोधि-रमा सी ❀ बिस्व-भार-भर अचल छमा सी ॥
जम-गन-मुँह-मसि जग जमुना सी ❀ जीवन-मुकुति-हेतु जनु कासी ॥
रामहिं प्रिय पावनि तुलसी सी ❀ तुलसिदास-हित हिय हुलसी सी ॥
सिवप्रिय मेकल सैल-सुता सी ❀ सकल-सिद्धि-सुख-संपति-रासी ॥
सद-गुन-सुर-गन-अंब अदिति सी ❀ रघुबर-भगति-प्रेम परमिति सी ॥

दो०--रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभगसनेह बन, सिय-रघुबीर-बिहारु ॥३१॥

राम-चरित-चिंतामनि चारू ❀ संत-सुमति-तिय सुभग सिंगारू ॥
जगमंगल गुनग्राम राम के ❀ दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
सदगुरु ज्ञान बिराग जोग के ❀ बिबुधबैद भव भीम रोग के ॥
जननिजनक सिय-राम-प्रेम के ❀ बीज सकल ब्रत-धरम-नेम के ॥
समन पाप-संताप-सोक के ❀ प्रिय पालक पर-लोक-लोक के ॥
सचिव सुभट भूपतिबिचार के ❀ कुंभज-लोभ-उदधि अपार के ॥
काम-कोह-कलि-मल-करि-गन के ❀ केहरि सावक जन-मन-बन के ॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के ❀ कामद घन दारिद दवारि के ॥
मंत्र-महा-मनि बिषयब्याल के ❀ मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरन मोहतम दिनकरकर से ❀ सेवक-सालि-पाल जलधर से ॥
अभिमतदानि देव-तरु-बर से ❀ सेवत सुलभ सुखद हरिहर से ॥

सुकबि-सरद-नभ मन उडगन से ❀ राम - भगत-जन जीवनधन से ॥
सकल सुकृतफल भूरि भोग से ❀ जग हित निरुपधि साधुलोग से ॥
सेवक - मन - मानस - मराल से ❀ पावन गंग - तरंग - माल से ॥

दो०--कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम-गुन-ग्राम जिमि, इंधन अनल प्रचंड ॥
रामचरित राकेस-कर-सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित बिसेषि बड़ लाहु ॥३२॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी ❀ जेहि बिधि संकर कहा बखानी ॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❀ कथा प्रबंध बिचित्र बनाई ॥
जेहि यह कथा सुनी नहिं होई ❀ जनि आचरज करै सुनि सोई ॥
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी ❀ नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥
रामकथा कै मिति जग नाहीं ❀ असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥
नाना भाँति रामअवतारा ❀ रामायन सतकोटि अपारा ॥
कलपभेद हरिचरित सुहाए ❀ भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥
करिय न संसय अस उर आनी ❀ सुनिय कथा सादर रति मानी ॥

दो०--राम अनंत अनंत गुन, अमित कथाबिस्तार ।
सुनि आचरजु न मानिहहिं, जिनके बिमल बिचार ॥३३॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी ❀ सिर धरि गुरु-पद-पंकज-धूरी ॥
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी ❀ करत कथा जेहि लाग न खोरी ॥
सादर सिवहि नाइ अब माथा ❀ बरनौं बिसद राम-गुन-गाथा ॥
संबत सोरह सै इकतीसा ❀ करौं कथा हरिपद धरि सीसा ॥
नौमी भौमबार मधुमासा ❀ अवधपुरी यह चरित प्रकासा ॥
जेहि दिन रामजनम श्रुति गावहिं ❀ तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा ❀ आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥

जनम-महोत्सव रचहिं सुजाना ❀ करहिं राम कल कीरति गाना ॥

दो०--मज्जहिं सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नीर ।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुंदर स्याम सरीर ॥३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना ❀ हरै पाप कह बेद पुराना ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति ❀ कहि न सकै सारदा बिमलमति ॥
राम-धाम-दा पुरी सुहावनि ❀ लोक समस्त बिदित जगपावनि ॥
चारि खानि जग जीव अपारा ❀ अवध तजे तन नहिं संसारा ॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी ❀ सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी ॥
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा ❀ सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥
राम-चरित-मानस एहि नामा ❀ सुनत स्रवन पाइय बिस्रामा ॥
मन-करि विषय अनलबन जरई ❀ होइ सुखी जौं एहि सर परई ॥
राम-चरित-मानस मुनिभावन ❀ बिरचेउ संभु सुहावन पावन ॥
त्रिबिध दोष दुखदारिद दावन ❀ कलिकुचालि कुलि-कलुष-नसावन ॥
रचि महेस निज मानस राखा ❀ पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा ॥
तातें राम-चरित-मानस बर ❀ धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ❀ सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

दो०-जस मानस जेहिं बिधि भयउ, जग प्रचार जेहि हेतु ।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमाबृषकेतु ॥३५॥

संभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी ❀ राम-चरित-मानस कवि तुलसी ॥
करइ मनोहर मति अनुहारी ❀ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू ❀ बेद पुरान उदधि घन साधू ॥
बरषहिं राम सुजस बर बारी ❀ मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुन जो कहहिं बखानी ❀ सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥
प्रेम भगति जो बरनि न जाई ❀ सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥
सो जलसुकृत सालि हित होई ❀ रामभगतजन जीवन सोई ॥

मेधा महिगत सो जल पावन ❀ सकिलि स्रवनमग चलेउ सुहावन ॥
भरेउ सुमानस सुथल थिराना ❀ सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥

दो०--सुठि सुन्दर संवाद वर, बिरचे बुद्धि बिचारि ।
तेइ एहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ॥३६॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना ❀ ज्ञान नयन निरखत मनमाना ॥
रघुपति महिमा अगुन अबाधा ❀ बरनब सोइबर बारि अगाधा ॥
रामसीय जस सलिल सुधासम ❀ उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❀ जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥
छंद सोरठा सुंदर दोहा ❀ सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥
अरथ अनूप सुभाव सुभासा ❀ सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥
सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला ❀ ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥
धुनि अवरेब कवित गुन जाती ❀ मीन मनोहर ते बहु भाँती ॥
अरथ धरम कामादिक चारी ❀ कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी ॥
नव रस जप तप जोग बिरागा ❀ ते सब जलचर चारु तडागा ॥
सुकृती साधु नाम गुन गाना ❀ ते बिचित्र जल बिहग समाना ॥
संत सभा चहुँ दिसि अँवराई ❀ स्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥
भगति निरूपन बिबिध बिधाना ❀ छमा दया द्रुम लता बिताना ॥
सम जम नियम फूल फल ज्ञाना ❀ हरिपद रस बर बेद बखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा ❀ तेइ सुक पिक बहु बरन बिहंगा ॥

दो०–पुलक बाटिका बाग बन, सुख सुबिहंग बिहारु ।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु ॥३७॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❀ तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❀ तेइ सुर बर मानस अधिकारी ॥
अति खल जे बिषई बक कागा ❀ एहि सर निकट न जाहिं अभागा ॥

संबुक भेक सेवार समाना ❀ इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥
तेहि कारन आवत हिय हारे ❀ कामी काक बलाक बिचारे ॥
आवत एहि सर अति कठिनाई ❀ राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❀ तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥
गृहकारज नाना जंजाला ❀ तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला ॥
बन बहु विषम मोह मद माना ❀ नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो०--जे स्रद्धा-संबल-रहित, नहिं संतन्ह कर साथ ।
तिन कहँ मानस अगम अति, जिनहिं न प्रिय रघुनाथ ॥३८॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई ❀ जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा ❀ गएहु न मज्जन पाव अभागा ॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना ❀ फिरि आवै समेत अभिमाना ॥
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा ❀ सरनिंदा करि ताहि बुझावा ॥
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही ❀ राम सुकृपा बिलोकहिं जेही ॥
सोइ सादर सर मज्जन करई ❀ महाघोर त्रयताप न जरई ॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ ❀ जिन्ह के रामचरन भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह एहि सर भाई ❀ सो सतसंग करै मन लाई ॥
अस मानस मानस चख चाही ❀ भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही ॥
भयेउ हृदय आनंद उछाहू ❀ उमगेउ प्रेम—प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कबिता सरिता सो ❀ राम बिमल जस जलभरिता सो ॥
सरजू नाम सुमंगलमूला ❀ लोक-बेद-मत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि ❀ कलि-मल-त्रिन-तरु-मूल-निकंदिनि ॥

दो०--स्रोत त्रिबिध समाज पुर, ग्राम नगर दुहुँ कूल ।
संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगलमूल ॥३९॥

रामभगति सुरसरितहि जाई ❀ मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥
सानुज राम-समर-जस पावन ❀ मिलेउ महानद सोन सुहावन ॥

जुग बिच भगति देव-धुनि-धारा ❀ सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥
त्रिबिध ताप-त्रासक तिमुहानी ❀ रामसरूप सिंधु समुहानी ॥
मानस मूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजनमन पावन करिही ॥
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा ❀ जनु सरितीर तीर बन बागा ॥
उमा -- महेस -- बिवाह -- बराती ❀ ते जलचर अगनित बहु भाँती ॥
रघुबर -- जनम -- अनंद -- बधाई ❀ भवँर तरंग मनोहरताई ॥

दो०--बालचरित चहुँ बंधु के, बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर बारिबिहंग ॥४०॥

सीयस्वयंबर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका ❀ केवट कुसल उतर सबिबेका ॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई ❀ पथिकसमाज सोह सरि सोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥
सानुज राम - बिवाह - उछाहू ❀ सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥
रामतिलक हित मंगल साजा ❀ परब जोग जनु जुरे समाजा ॥
काई कुमति केकई केरी ❀ परी जासु फल बिपति घनेरी ॥

दो०--समन अमित उतपात सब, भरतचरित जपजाग ।
कलिअघ खलअवगुन कथन, ते जलमलबककाग ॥४१॥

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी ❀ समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम--हिमसैल-- सुता -- सिवब्याहू ❀ सिसिर सुखद प्रभु--जनम--उछाहू ॥
बरनब राम - बिबाह - समाजू ❀ सो मुदमंगलमय रितुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम - बन - गवनू ❀ पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
बरखा घोर निसाचररारी ❀ सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥
राम राजसुख बिनय बड़ाई ❀ बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥
सती सिरोमनि सिय-गुन-गाथा ❀ सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥

भरतसुभाउ सुसीतलताई ❀ सदा एकरस बरनि न जाई ॥

दो०--अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परसपर हास ।
भायप भलि चहुँ बंधु की, जल माधुरी सुवास ॥४२॥

आरति विनय दीनता मोरी ❀ लघुता ललित सुवारि न थोरी ॥
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी ❀ आस पिआस मनोमलहारी ॥
राम सुप्रेमहि पोपत पानी ❀ हरत सकल कलि-कलुप-गलानी ॥
भव स्रम सोपक तोपक तोपा ❀ समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
काम कोह मद मोह नसावन ❀ विमल विवेक विराग बढ़ावन ॥
सादर मज्जन पान किए तें ❀ मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥
जिन्ह एहिं वारि न मानस धोए ❀ ते कायर कलिकाल बिगोए ॥
त्रिषित निरखि रविकरभववारी ❀ फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥

दो०--मति अनुहारि सुबारि गुन, गन गनि मन अन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी संकरहि, कह कवि कथा सुहाइ ॥
अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाइ प्रसाद ।
कहौं जुगल मुनिवर्य कर, मिलन सुभग संवाद ॥४३॥

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ❀ तिन्हहिं राममद अति अनुरागा ॥
तापस सम - दम-दया - निधाना ❀ परमारथपथ परम सुजाना ॥
माघ मकरगत रवि जब होई ❀ तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥
देव दनुज किन्नर नरस्रेनी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी ॥
पूजहिं माधव - पद - जलजाता ❀ परसि अखय बटु हरषहिं गाता ॥
भरद्वाज आस्रम अतिपावन ❀ परमरम्य मुनिवर - मनभावन ॥
तहाँ होइ मुनि - रिषय समाजा ❀ जाहि जे मज्जन तीरथ राजा ॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परसपर हरि-गुन-गाहा ॥

दो०--ब्रह्मनिरूपन--धर्म बिधि, बरनहिं तत्त्व-बिभाग ।

कहहिं भगति भगवंत कै, संजुत-ज्ञान-बिराग ॥४४॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं ❀ पुनि सब निज निज आस्रम जाहीं ॥
प्रति संवत अति होइ अनंदा ❀ मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृन्दा ॥
एक बार भरि मकर नहाए ❀ सब मुनीस आस्रमन्ह सिधाए ॥
जागबलिक मुनि परम बिबेकी ❀ भरद्वाज राखे पद टेकी ॥
सादर चरनसरोज पखारे ❀ अतिपुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुजस बखानी ❀ बोले अतिपुनीत मृदु-बानी ॥
नाथ एक संसउ बड़ मोरें ❀ करगत बेदतत्त्व सब तोरें ॥
कहत सो मोहि लागत भय लाजा ❀ जौं न कहौं बड़ होइ अकाजा ॥

दो०--संत कहहिं अस नीति प्रभु, स्रुति पुरान मुनि गाव ।
होइ न बिमल बिबेक उर, गुरु सन कियें दुराव ॥४५॥

अस बिचारि प्रगटौं निज मोहू ❀ हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥
रामनाम कर अमित प्रभावा ❀ संत - पुरान - उपनिषद गावा ॥
संतत जपत संभु अबिनासी ❀ सिव भगवान ज्ञान-गुन-रासी ॥
आकर चारि जीव जग अहहीं ❀ कासी मरत परम पद लहहीं ॥
सोपि राममहिमा मुनिराया ❀ सिव उपदेस करत करि दाया ॥
रामु कवन प्रभु पूछौं तोही ❀ कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
एक राम अवधेसकुमारा ❀ तिन्ह कर चरित बिदित संसारा ॥
नारि बिरह दुख लहेउ अपारा ❀ भयउ रोष रन रावन मारा ॥

दोहा-प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्बज्ञ तुम्ह, कहहु बिबेक बिचारि ॥४६॥

जैसें मिटै मोर भ्रम भारी ❀ कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी ॥
जागबलिक बोले मुसुकाई ❀ तुम्हहि बिदित रघुपतिप्रभुताई ॥
रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥

चाहहु सुनै रामगुन गूढ़ा ❀ कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अतिमूढ़ा ॥
तात सुनहु सादर मन लाई ❀ कहहुँ राम कै कथा सुहाई ॥
महा मोह महिषेस बिसाला ❀ रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा ससिकिरन समाना ❀ संत-चकोर करहिं जेहि पाना ॥
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी ॥

दोहा-कहौं सो मतिअनुहारि अब, उमा-संभु-संवाद ।
भयउसमयजेहिहेतुजेहि, सुनुमुनिमिटिहिबिषाद ॥४७॥

एक बार त्रेता जुग माहीं ❀ संभु गये कुम्भज रिषि पाहीं ॥
संग सती जगजननि भवानी ❀ पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी ॥
रामकथा मुनिबर्ज बखानी ❀ सुनी महेस परम सुख मानी ॥
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई ❀ कही संभु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति-गुन-गाथा ❀ कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
मुनि सन बिदा माँगि त्रिपुरारी ❀ चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा ❀ हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा ॥
पिता बचन तजि राज उदासी ❀ दंडकबन बिचरत अबिनासी ॥

दोहा-हृदय बिचारत जात हर, केहि बिधि दरसनु होइ ।
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सबु कोइ ॥
सो०-संकर उर अति छोभु, सती न जानइ मरमु सोइ ।
तुलसी दरसन-लोभु, मन डरु लोचन लालची ॥४८॥

रावन मरन मनुज-कर जाँचा ❀ प्रभु बिधिबचनु कीन्ह चह साँचा ॥
जौं नहिं जाउँ रहै पछितावा ❀ करत बिचारु न बनत बनावा ॥
एहि बिधि भये सोचबस ईसा ❀ तेही समय जाइ दससीसा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा ❀ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥
करि छल मूढ़ हरी बैदेही ❀ प्रभुप्रभाउ तस बिदित न तेही ॥

मृग बधि बंधु सहित हरि आये ❀ आस्रमु देखि नयन जल छाए ॥
बिरह बिकल नर इव रघुराई ❀ खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई ॥
कबहूँ जोग बियोग न जाकें ❀ देखा प्रगट बिरहदुख ताकें ॥

दोहा-अतिबिचित्र रघुपतिचरित, जानहिं परम सुजान ।
जे मतिमंद बिमोहबस, हृदय धरहिं कछु आन ॥४९॥

संभु समय तेहि रामहि देखा ❀ उपजा हिय अतिहरषु बिसेखा ॥
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी ❀ कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी ॥
जय सच्चिदानंद जगपावन ❀ अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥
चले जात सिव सतीसमेता ❀ पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥
सती सो दसा संभु कै देखी ❀ उर उपजा संदेहु बिसेखी ॥
संकर जगतबंद्य जगदीसा ❀ सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥
तिन्ह नृपसुतहिं कीन्ह परनामा ❀ कहि सच्चिदानंद परधामा ॥
भये मगन छबि तासु बिलोकी ❀ अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दोहा-ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज, अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत बेद ॥५०॥

बिष्णु जो सुर हित नरतनु धारी ❀ सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी ॥
खोजइ सो कि अग्य इव नारी ❀ ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥
संभुगिरा पुनि मृषा न होई ❀ सिव सर्बग्य जान सबु कोई ॥
अस संसय मन भयउ अपारा ❀ होइ न हृदय प्रबोधप्रचारा ॥
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी ❀ हर अंतरजामी सब जानी ॥
सुनहि सती तव नारिसुभाऊ ❀ संसय अस न धरिय उर काऊ ॥
जासु कथा कुम्भज रिषि गाई ❀ भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई ॥
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ❀ सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छंद--मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन-निकाय-पति मायाधनी ।
अवतरेउ अपने भगत-हित निजतंत्र नित रघु-कुल-मनी ॥

सो०-लाग न उर उपदेसु, जदपि कहेउ सिव बार बहु ।
बोले बिहँसि महेसु, हरि-माया-बलु जानि जिय ।५१॥

जौ तुम्हरे मन अति सन्देहू ❀ तौ किन जाइ परीछा लेहू ॥
तब लगि बैठ अहउँ बट छाहीं ❀ जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं ॥
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करेहु सो जतन बिबेक बिचारी ॥
चलीं सती सिव आयसु पाई ❀ करहिं बिचारु करौं का भाई ॥
इहाँ सम्भु अस मन अनुमाना ❀ दच्छसुता कहँ नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहे न संसय जाहीं ❀ बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ॥
होइहि सोइ जो राम रचि राखा ❀ को करि तरक बढ़ावै साखा ॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा ❀ गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

दो०--पुनि पुनि हृदय बिचार करि, धरि सीता कर रूप ।
आगे होइ चलि पंथ तेहि, जेहि आवत नरभूप ॥५२॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा ❀ चकित भये भ्रम हृदय बिसेषा ॥
कहि न सकत कछु अति गंभीरा ❀ प्रभुप्रभाउ जानत मतिधीरा ॥
सतीकपटु जानेउ सुरस्वामी ❀ सबदरसी सबअन्तरजामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ❀ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहहुं दुराऊ ❀ देखहु नारि - सुभाउ - प्रभाऊ ॥
निज मायाबल हृदय बखानी ❀ बोले बिहँसि राम मृदुबानी ॥
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू ❀ पितासमेत लीन्ह निज नामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू ❀ बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो०--रामबचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोचु ।

सती सभीत महेस पहिं, चलीं हृदय बड़ सोचु ॥५३॥

मैं संकर कर कहा न माना ❀ निज अज्ञान राम पर आना ॥
जाइ उतरु अब देइहौं काहा ❀ उर उपजा अतिदारुन दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा ❀ निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता ❀ आगे राम सहित श्रीभ्राता ॥
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा ❀ सहित बंधु सिय सुन्दर बेखा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना ❀ सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥
देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका ❀ अमितप्रभाउ एक तें एका ॥
बन्दत चरन करत प्रभु सेवा ❀ बिबिध बेष देखे सब देवा ॥

दो०--सती बिधात्री इंदिरा, देखीं अमित अनूप ।
जेहि जेहि बेष अजादि सुर, तेहि तेहि तन अनुरूप ॥५४॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❀ सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥
जीव चराचर जो संसारा ❀ देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बेखा ❀ रामरूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❀ सीतासहित न बेष घनेरे ॥
सोइ रघुबर सोइ लछिमन सीता ❀ देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं ❀ नयन मूँदि बैठीं मग माहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी ❀ कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा ❀ चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥

दो०--गईं समीप महेस तब, हँसि पूछी कुसलात ।
लीन्हि परीछा कवन बिधि, कहहु सत्य सब बात ॥५५॥

सती समुझि रघुबीरप्रभाऊ ❀ भयबस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं ❀ कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाईं ॥
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई ❀ मोरें मन प्रतीति अति सोई ॥

तब सङ्कर देखेउ धरि ध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥
बहुरि राममायहि सिरु नावा ❀ फेरि मतिहि जेहि झूठ कहावा ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदय बिचारत सम्भु सुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कर वेषा ❀ सिव-उर भयउ बिषाद बिसेषा ॥
जौं अब करौं सती मन प्रीती ❀ मिटै भगति-पथु होइ अनीती ॥

दो०--परम पुनीत न जाइ तजि, किये प्रेम बड़ पापु ।
प्रगटि न कहत महेस कछु, हृदय अधिक संतापु ॥५६॥

तब सङ्कर प्रभुपद सिरु नावा ❀ सुमिरत राम हृदय अस आवा ॥
एहि तन सतिहि भेट मोहि नाहीं ❀ सिव सङ्कल्प कीन्ह मन माहीं ॥
अस बिचारि सङ्कर मति धीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुबीरा ॥
चलत गगन भै गिरा सुहाई ❀ जय महेस भलि भगति दृढ़ाई ॥
असपन तुम्ह बिनु करै को आना ❀ रामभगत समरथ भगवाना ॥
सुनि नभ गिरा सती उर सोचा ❀ पूछा सिवहिं समेत सकोचा ॥
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
जदपि सती पूछा बहु भाँती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दो०--सती हृदय अनुमान किय, सब जानेउ सर्बज्ञ ।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन, नारि सहज जड़ अज्ञ ॥

सो०--जल पय सरिस बिकाइ, देखहु प्रीति की रीति भलि ।
बिलग होइ रसु जाइ, कपटु खटाई परत पुनि ॥५७॥

हृदय सोचु समुझत निज करनी ❀ चिंता अमित जाइ नहिं बरनी ॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधा ❀ प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
सङ्कररुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी ॥
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई ❀ तपै अवाँ इव उर अधिकाई ॥
सतिहिं ससोच जानि बृषकेतू ❀ कहीं कथा सुन्दर सुखहेतू ॥
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा ❀ बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥

तहँ पुनि सम्भु समुझि पन आपन ❀ बैठे बट तर करि कमलासन ॥
सङ्कर सहज सरूप सम्हारा ❀ लागि समाधि अखंड अपारा ॥

दो०--सती बसहिं कैलास तब, अधिक सोच मन माहिं ।
मरमु न कोऊ जान कछु, जुग सम दिवस सिराहिं ॥५८॥

नित नव सोच सती उर भारा ❀ कब जैहौं दुख-सागर-पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपतिअपमाना ❀ पुनि पतिबचन मृषा करि जाना ॥
सो फल मोहिं बिधाता दीन्हा ❀ जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोही ❀ सङ्करबिमुख जिआवसि मोही ॥
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी ❀ मन महँ रामहिं सुमिरि सयानी ॥
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा ❀ आरतिहरन बेद जसु गावा ॥
तौ मैं बिनय करौं कर जोरी ❀ छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥
जौं मोरे सिवचरन सनेहू ❀ मन क्रम बचन सत्य ब्रत एहू ॥

दो०--तौ सबदरसी सुनिय प्रभु, करौ सो बेगि उपाइ ।
होइ मरन जेहि बिनहिं स्रम, दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥५९॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी ❀ अकथनीय दारुन दुख भारी ॥
बीते सम्बत सहस सतासी ❀ तजी समाधि सम्भु अबिनासी ॥
रामनाम सिव सुमिरन लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ सम्भुपद बंदन कीन्हा ❀ सन्मुख सङ्कर आसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला ❀ दच्छ प्रजेस भये तेहि काला ॥
देखा बिधि बिचारि सब लायक ❀ दच्छहिं कीन्ह प्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा ❀ अति अभिमान हृदय तब आवा ॥
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं ❀ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०--दच्छ लिये मुनि बोलि सब, करन लगे बड़ जाग ।
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मख-भाग ॥६०॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा ❀ बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा ॥
बिष्णु बिरंचि महेस बिहाई ❀ चले सकल सुर जान बनाई ॥
सती बिलोकि ब्योम बिमाना ❀ जात चले सुंदर बिधि नाना ॥
सुरसुंदरी करहिं कल गाना ❀ सुनत स्रवन छूटहिं मुनिध्याना ॥
पूछेउ तब सिव कहेउ बखानी ❀ पिताजग्य सुनि कछु हरषानी ॥
जौं महेस मोहि आयसु देहीं ❀ कछु दिन जाइ रहउँ मिस एहीं ॥
पतिपरित्याग हृदय दुखु भारी ❀ कहइ न निज अपराध बिचारी ॥
बोलीं सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेम रस सानी ॥

दो०--पिताभवन उत्सव परम, जौं प्रभु आयसु होइ ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥६१॥

कहेहु नीक मोरेहु मन भावा ❀ यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥
दच्छ सकल निज सुता बोलाई ❀ हमरें बयर तुम्हउ बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हम सन दुखु माना ❀ तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना ॥
जौं बिनु बोले जाहु भवानी ❀ रहइ न सीलु सनेहु न कानी ॥
जदपि मित्र-प्रभु-पितु-गुरु गेहा ❀ जाइय बिनु बोलेहु न संदेहा ॥
तदपि बिरोध मान जहँ कोई ❀ तहाँ गये कल्यान न होई ॥
भाँति अनेक सम्भु समुझावा ❀ भावीबस न ज्ञान उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाये ❀ नहिं भलि बात हमारे भाये ॥

दो०--कहि देखा हर जतन बहु, रहइ न दच्छकुमारि ।
दिये मुख्य गन संग तब, बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥६२॥

पिताभवन जब गई भवानी ❀ दच्छत्रास काहु न सनमानी ॥
सादर भलेहि मिली एक माता ❀ भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता ॥
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता ❀ सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ॥
सती जाइ देखेउ तब जागा ❀ कतहुँ न दीख संभु कर भागा ॥
तब चित चढ़ेउ जो सङ्कर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ ॥

पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा ❀ जस यह भयउ महा परितापा ॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना ❀ सब तें कठिन जातिअवमाना ॥
समुझि सो सतिहि भयउ अतिक्रोधा ❀ बहुबिधि जननीं कीन्ह प्रबोधा ॥

दोहा–सिवअपमान न जाइ सहि, हृदय न होइ प्रबोध ।
सकल सभहिं हठि हटकि तब, बोलीं बचन सक्रोध ॥६३॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा ❀ कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥
सो फलु तुरत लहब सब काहू ❀ भली भाँति पछिताब पिताहू ॥
संत - संभु - श्रीपति - अपबादा ❀ सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥
काटिअ तासु जीभ जो बसाई ❀ स्रवन मूँदि नत चलिअ पराई ॥
जगदातमा महेस पुरारी ❀ जगतजनक सब के हितकारी ॥
पिता मंदमति निंदत तेही ❀ दच्छ-सुक्र-संभव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❀ उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू ॥
अस कहि जोगअगिनि तनु जारा ❀ भयउ सकल मख हाहाकारा ॥

दोहा--सतीमरन सुनि संभुगन, लगे करन मख खीस ।
जग्यबिधंस बिलोकि भृगु, रच्छा कीन्हि मुनीस ॥६४॥

समाचार सब संकर पाए ❀ बीरभद्र करि कोप पठाए ॥
जग्यबिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा ❀ सकल सुरन्ह बिधिवत फल दीन्हा ॥
भै जगबिदित दच्छगति सोई ❀ जसि कछु संभु बिमुख कै होई ॥
यह इतिहास सकल जग जाना ❀ तातें मैं संछेप बखाना ॥
सतीं मरत हरि सन बर माँगा ❀ जनम जनम सिवपद अनुरागा ॥
तेहि कारन हिमगिरिगृह जाई ❀ जनमीं पारबती तनु पाई ॥
जब तें उमा सैलगृह जाई ❀ सकल सिद्धि संपति तहँ छाई ॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआस्रम कीन्हे ❀ उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥

दोहा--सदा सुमन-फल-सहित सब, द्रुम नव नाना जाति ।
प्रगटीं सुन्दर सैलपर, मनिआकर बहु भाँति ॥६५॥

सरिता सब पुनीत जल बहहीं ❀ खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥
सहज बयर सब जीवन्ह त्यागा ❀ गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ ❀ जिमि जन रामभगति के पाएँ ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू ❀ ब्रह्मादिक गावहिं जस जासू ॥
नारद समाचार सब पाए ❀ कौतुकहीं गिरिगेह सिधाए ॥
सैलराज बड़ आदर कीन्हा ❀ पद पखारि बर आसनु दीन्हा ॥
नारिसहित मुनिपद सिरु नावा ❀ चरनसलिल सब भवनु सिंचावा ॥
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना ❀ सुता बोलि मेली मुनिचरना ॥

दोहा--त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह, गति सर्बत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुन, मुनिवर हृदय बिचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदु बानी ❀ सुता तुम्हारि सकल गुनखानी ॥
सुंदर सहज सुसील सयानी ❀ नाम उमा अंबिका भवानी ॥
सब लच्छनसंपन्न कुमारी ❀ होइहि संतत पियहि पियारी ॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता ❀ एहि तें जसु पइहहिं पितु माता ॥
होइहि पूज्य सकल जग माहीं ❀ एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
एहि कर नाम सुमिरि संसारा ❀ तिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा ॥
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी ❀ सुनहुँ जे अब अवगुन दुइ चारी ॥
अगुन अमान मातुपितुहीना ❀ उदासीन सब संसय छीना ॥

दोहा--जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमंगलबेख ।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि, परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी ❀ दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहू यह भेदु न जाना ❀ दसा एक समुझब बिलगाना ॥
सकल सखी गिरजा गिरि मैना ❀ पुलक सरीर भरे जल नैना ॥
होइ न मृषा देवरिषि भाखा ❀ उमा सो बचनु हृदय धरि राखा ॥
उपजेउ सिवपदकमल सनेहू ❀ मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥

जानि कुअवसरु प्रीति दुराई ❀ सखि उछंग बैठी पुनि जाई ॥
झूठि न होइ देवरिषिबानी ❀ सोचहिं दंपति सखी सयानी ॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ ❀ कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥

दोहा--कह मुनीस हिमवंत सुनु, जो बिधि लिखा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार ॥६८॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई ❀ होइ करै जौं दैउ सहाई ॥
जस बर मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं ❀ मिलिहि उमहिं तस संसय नाहीं ॥
जे जे बर के दोष बखाने ❀ ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने ॥
जौं बिबाहु संकर सन होई ❀ दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥
जौं अहिसेज सयन हरि करहीं ❀ बुध कछु तिन्हकर दोषु न धरहीं ॥
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं ❀ तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई ❀ सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
समरथ कहुँ नहि दोषु गोसाईं ❀ रबि पावक सुरसरि की नाईं ॥

दोहा--जौं अस हिसिषा करहिं नर, जड़ बिबेक अभिमान ।
परहिं कलप भरि नरक महँ, जीव कि ईस समान ॥६९॥

सुरसरिजलकृत बारुनि जाना ❀ कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें ❀ ईस अनीसहि अंतरु तैसें ॥
संभु सहज समरथ भगवाना ❀ एहि बिबाह सब बिधि कल्याना ॥
दुराराध्य पै अहहिं महेसू ❀ आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥
जद्यपि बर अनेक जग माहीं ❀ एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥
बरदायक प्रनतारति - भंजन ❀ कृपासिंधु सेवक - मन - रंजन ॥
इच्छित फल बिनु सिव अवराधें ❀ लहिअ न कोटि जोग जप साधें ॥

दोहा--अस कहि नारद सुमिरि हरि, गिरिजहि दीन्हि असीस ।
होइहि यह कल्यान अब, संसय तजहु गिरीस ॥७०॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ ❀ आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ॥
पतिहि एकांत पाइ कह मैना ❀ नाथ न मैं समुझे मुनिबैना ॥
जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा ❀ करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा ॥
नत कन्या बरु रहउ कुआँरी ❀ कंत उमा मम प्रानपियारी ॥
जौं न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू ❀ गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू ॥
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू ❀ जेहि न बहोरि होइ उर दाहू ॥
अस कहि परी चरन धरि सीसा ❀ बोले सहित सनेह गिरीसा ॥
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं ❀ नारदबचनु अन्यथा नाहीं ॥

दोहा--प्रिया सोचु परिहरहु सब, सुमिरहु श्रीभगवान ।
पारबतिहि निरमएउ जेहिं, सोइ करिहि कल्यान ॥७१॥

अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू ❀ तौ अस जाइ सिखावनु देहू ॥
करै सो तपु जेहि मिलहिं महेसू ❀ आन उपाय न मिटिहि कलेसू ॥
नारदबचन सगर्भ सहेतू ❀ सुंदर सब गुन-निधि बृषकेतू ॥
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका ❀ सबहि भाँति संकर अकलंका ॥
सुनि पतिबचन हरषि मन माहीं ❀ गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
उमहि बिलोकि नयन भरि बारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहिं बार लेति उर लाई ❀ गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥
जगतमातु सर्बज्ञ भवानी ❀ मातुसुखद बोलीं मृदुबानी ॥

दोहा--सुनहि मातु मैं दीख अस, सपन सुनावौं तोहिं ।
सुन्दर गौर सुबिप्रबर, अस उपदेसेउ मोहिं ॥७२॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥
मातुपितहि पुनि यह मत भावा ❀ तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥
तपबल रचै प्रपंचु बिधाता ❀ तपुबल बिष्नु सकल-जग-त्राता ॥
तपबल संभु करहिं संघारा ❀ तपुबल सेष धरैं महिभारा ॥
तपअधार सब सृष्टि भवानी ❀ करहि जाइ तपु अस जिय जानी ॥
सुनत बचन बिसमित महतारी ❀ सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥

मातुपितहि बहु बिधि समुझाई ❀ चली उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❀ भये बिकल मुख आव न बाता ॥

दोहा--बेदसिरा मुनि आइ तब, सबहिं कहा समुझाइ ।
पारबतीमहिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥

उर धरि उमा प्रान - पति-चरना ❀ जाइ बिपिन लागीं तप करना ॥
अतिसुकुमार न तनु तपजोगू ❀ पतिपद सुमिरि तजेउ सबु भोगू ॥
नित नव चरन उपज अनुरागा ❀ बिसरी देह तपहि मन लागा ॥
संबत सहस मूल फल खाए ❀ सागु खाइ सत बरष गवाँए ॥
कछु दिन भोजनु बारि बतासा ❀ किए कठिन कछु दिन उपवासा ॥
बेलपाति महि परै सुखाई ❀ तीनि सहस संबत सोइ खाई ॥
पुनि परिहरे सुखानेउ परना ❀ उमहि नामु तब भएउ अपरना ॥
देखि उमहिं तप खीनसरीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥

दोहा--भयउ मनोरथ सुफल तव, सुनु गिरिराजकुमारि ।
परिहरु दुसह कलेस सब, अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥७४॥

अस तपु काहु न कीन्ह भवानी ❀ भए अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी ❀ सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥
आवहिं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं ॥
मिलहिं तुम्हहिं जब सप्तरिषीसा ❀ जानेहु तब प्रमान बागीसा ॥
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी ❀ पुलकगात गिरिजा हरषानी ॥
उमाचरित सुंदर मैं गावा ❀ सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥
जब तें सती जाइ तनु त्यागा ❀ तब तें सिवमन भयउ बिरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायकनामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं राम--गुन--ग्रामा ॥

दोहा--चिदानंद सुखधाम सिव, बिगत-मोह-मद-काम ।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि, सकल-लोक-अभिराम॥७५॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ज्ञाना ❀ कतहुँ रामगुन करहिं बखाना ॥
जदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भगत बिरह दुख दुखित सुजाना ॥

एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती ❀ नित नै होइ रामपद प्रीती ॥
नेमु प्रेमु संकर कर देखा ❀ अबिचल हृदय भगति कै रेखा ॥
प्रगटे रामु कृतज्ञ कृपाला ❀ रूप–सील–निधि तेज बिसाला ॥
बहु प्रकार संकरहि सराहा ❀ तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा ॥
बहु बिधि राम सिवहिं समुझावा ❀ पारबती कर जनमु सुनावा ॥
अतिपुनीत गिरिजा कै करनी ❀ बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥

दोहा--अब बिनती मम सुनहु सिव, जौं मो पर निज नेहु ।
जाइ बिबाहहु सैलजहिं, यह मोहि माँगे देहु ॥७६॥

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं ❀ नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं ॥
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा ❀ परम धरमु यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभु कै बानी ❀ बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ॥
तुम्ह सब भाँति परम–हित-कारी ❀ अज्ञा सिर पर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि संकरबचना ❀ भगति बिबेक धरमजुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ ❀ अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ॥
अंतरधान भये अस भाखी ❀ संकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आये ❀ बोले प्रभु अति बचन सुहाये ॥

दोहा--पारबती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेमपरिच्छा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयेहु भवन, दूरि करेहु संदेहु ॥७७॥

तब रिषि तुरत गौरि पहँ गयऊ ❀ देखि दसा मुनि बिसमय भयऊ ॥
रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी ❀ मूरतिवंत तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी ❀ करहु कवन कारन तप भारी ॥
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू ❀ हम सन सत्य मरमु किन कहहू ॥
कहत बचन मनु अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जडताई ॥
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा ❀ चहत बारि पर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन्ह हम चहहिं उडाना ॥
देखहु मुनि अबिबेकु हमारा ❀ चाहिय सदा सिवहि भरतारा ॥

दोहा--सुनत बचन बिहँसे रिषय, गिरिसंभव तव देह ।

नारद कर उपदेसु सुनि, कहहु बसेउ को गेह ॥७८॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई ❀ तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ॥
चित्रकेतु कर घरु उन घाला ❀ कनककसिपु कर पुनि अस हाला ॥
नारदसिष जे सुनहिं नर नारी ❀ अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा ❀ आपु सरिस सबही चह कीन्हा ॥
तेहि के बचन मानि बिस्वासा ❀ तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥
निर्गुन निलज कुबेष कपाली ❀ अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥
कहहु कवन सुखु अस बर पाये ❀ भल भूलिहु ठग के बौराये ॥
पंच कहे सिव सती बिबाही ❀ पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥

दोहा--अब सुख सोवत सोचु नहिं, भीख माँगि भव खाहिं ।
सहज एकाकिन्ह के भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥७९॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा ❀ हम तुम्ह कहँ बर नीक बिचारा ॥
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला ❀ गावहिं बेद जासु जसलीला ॥
दूषनरहित सकल-गुन-रासी ❀ श्रीपति पुर बैकुंठ-निवासी ॥
अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी ❀ सुनत बिहँसि कह बचन भवानी ॥
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा ❀ हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकउ पुनि पषान तें होई ❀ जारेहु सहजु न परिहर सोई ॥
नारदबचन न मैं परिहरऊँ ❀ बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥
गुरु के बचन प्रतीति न जेही ❀ सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दोहा--महादेव अवगुन भवन, बिष्णु सकलगुनधाम ।
जेहि कर मनु रम जाहि सन, तेहि तेही सन काम ॥८०॥

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथममुनीसा ❀ सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥
अब मैं जनमु संभु हित हारा ❀ को गुन दूषन करै बिचारा ॥
जौं तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी ❀ रहि न जाइ बिनु किए बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं ❀ बर कन्या अनेक जग माहीं ॥
जनम कोटि लगि रगरि हमारी ❀ बरउँ संभु नतु रहउँ कुआँरी ॥

तजउँ न नारद कर उपदेसू ❀ आपु कहहिं सतबार महेसू ॥
मैं पाँ परउँ कहइ जगदंबा ❀ तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥
देखि प्रेमु बोले मुनि ज्ञानी ❀ जय जय जगदंबिके भवानी ॥

दोहा--तुम्ह माया भगवान सिव, सकलजगतपितु मातु ।
नाइ चरन सिर मुनि चले, पुनि पुनि हरषत गातु ॥८१॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाये ❀ करि बिनती गिरिजहिं गृह ल्याये ॥
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाई ❀ कथा उमा कै सकल सुनाई ॥
भए मगन सिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तरिषि गवने गेहा ॥
मनु थिरु करि तब संभु सुजाना ❀ लगे करन रघुनायकध्याना ॥
तारकु असुर भयउ तेहि काला ❀ भुजप्रताप बल तेज बिसाला ॥
तेइ सब लोक लोकपति जीते ❀ भए देव सुख संपति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई ❀ हारे सुर करि बिबिध लराई ॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे ❀ देखे बिधि सब देव दुखारे ॥

दोहा--सब सन कहा बुझाइ बिधि, दनुजनिधन तब होइ ।
संभु - सुक्र - संभूत सुत, एहि जीतै रन सोइ ॥८२॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥
सती जो तजी दच्छमख देहा ❀ जनमी जाइ हिमाचलगेहा ॥
तेइ तपु कीन्ह संभु पति लागी ❀ सिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
जदपि अहइ असमंजस भारी ❀ तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं ❀ करै छोभ संकर मन माहीं ॥
तब हम जाइ सिवहिं सिर नाई ❀ करवाउब बिबाह बरिआई ॥
एहि बिधि भलेहिं देवहित होई ❀ मत अतिनीक कहइ सब कोई ॥
अस्तुति सुरन कीन्हि अतिहेतू ❀ प्रगटेउ बिषमबान झखकेतू ॥

दोहा--सुरन्ह कही निज बिपति सब, सुनि मन कीन्ह बिचार ।
संभु बिरोध न कुसल मोहि, बिहँसि कहेउ अस मार ॥८३॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा ❀ स्रुति कह परम धरम उपकारा ॥
परहित लागि तजै जो देही ❀ संतत संत प्रसंसहिं तेही ॥
अस कहि चलेउ सबहिं सिरु नाई ❀ सुमनधनुष कर सहित सहाई ॥
चलत मार अस हृदय बिचारा ❀ सिवबिरोध ध्रुव मरन हमारा ॥
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा ❀ निजबस कीन्ह सकल संसारा ॥
कोपेउ जबहिं बारि-चर-केतू ❀ छन महुँ मिटे सकल स्रुतिसेतू ॥
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना ❀ धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना ॥
सदाचार जप जोग बिरागा ❀ सभय बिबेक कटक सब भागा ॥
छंद—भागेउ बिबेकु सहाइ सहित सो सुभट संजुग महि मुरे ।
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा ।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि करधनुसर धरा ॥

दोहा--जे सजीव जग चर अचर, नारि पुरुष अस नाम ।
ते निजनिज मरजाद तजि, भए सकल बस काम ॥८४॥

सबके हृदय मदन अभिलाखा ❀ लता निहारि नवहिं तरुसाखा ॥
नदी उमँगि अंबुधि कहुँ धाई ❀ संगम करहिं तलाव तलाई ॥
जहँ असि दसा जड़न की बरनी ❀ को कहि सकइ सचेतन्ह करनी ॥
पसु पच्छी नभजलथलचारी ❀ भए कामबस समय बिसारी ॥
मदनअंध ब्याकुल सब लोका ❀ निसिदिनु नहिं अवलोकहिं कोका ॥
देव दनुज नर किन्नर ब्याला ❀ प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥
इन्हकी दसा न कहेउँ बखानी ❀ सदा काम के चेरे जानी ॥
सिद्ध बिरक्त महा मुनि जोगी ❀ तेपि कामबस भये बियोगी ॥
छंद—भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्ह की को कहै ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयम ।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयम ॥

सोरठा--धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महँ ॥८५॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ ❀ जब लगि काम संभु पहँ गयऊ ॥
सिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू ❀ भयउ जथाथिति सब संसारू ॥
भए तुरत जग जीव सुखारे ❀ जिमि मद उतरि गए मतवारे ॥
रुद्रहिं देखि मदन भय माना ❀ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई ❀ मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा ❀ कुसुमित नव तरुराजि बिराजा ॥
बन उपबन बापिका तड़ागा ❀ परम सुभग सब दिसाबिभागा ॥
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा ❀ देखि मुएहु मन मनसिज जागा ॥

छंद--जागइ मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा ॥

दोहा--सकल कला करि कोटि बिधि, हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधि सिव, कोपेउ हृदय निकेत ॥८६॥

देखि रसाल बिटपबरसाखा ❀ तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा ॥
सुमनचाप निज सर संधाने ❀ अतिरिसि ताकि स्रवन लगि ताने ॥
छाड़ेउ बिषम बान उर लागे ❀ छूटि समाधि संभु तब जागे ॥
भयउ ईस मन छोभ बिसेषी ❀ नयन उघारि सकल दिसि देखी ॥
सौरभपल्लव मदनु बिलोका ❀ भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥
तब सिव तीसर नयन उघारा ❀ चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥
हाहाकार भयउ जग भारी ❀ डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी ❀ भये अकंटक साधक जोगी ॥

छंद--जोगी अकंटक भए पतिगति सुनति रति मुरछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई ॥

अतिप्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सनमुख रही ।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥

दोहा--अब तें रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग ।
बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग ॥८७॥

जब जदुबंस कृष्णअवतारा ❀ होइहि हरन महा महिभारा ॥
कृष्णतनय होइहिं पति तोरा ❀ बचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि संकर बानी ❀ कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन समाचार सब पाये ❀ ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये ॥
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता ❀ गये जहाँ सिव कृपानिकेता ॥
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा ❀ भये प्रसन्न चंद्रअवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु बृषकेतू ❀ कहहु अमर आये केहि हेतू ॥
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी ❀ तदपि भगति बस बिनवौं स्वामी ॥

दोहा--सकल सुरन्ह के हृदय अस, संकर परम उछाहु ।
निज नयनन्हि देखा चहहिं, नाथ तुम्हार बिबाहु ॥८८॥

यह उत्सव देखिय भरि लोचन ❀ सोइ कछु करहु मदन-मद-मोचन ॥
काम जारि रति कहँ बरु दीन्हा ❀ कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ ❀ नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥
पारबती तप कीन्ह अपारा ❀ करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभुबानी ❀ ऐसेइ होउ कहा सुख मानी ॥
तब देवन दुंदुभी बजाई ❀ बरषि सुमन जय जय सुरसाई ॥
अवसर जानि सप्तरिषि आए ❀ तुरतहि बिधि गिरिभवन पठाए ॥
प्रथम गये जहँ रही भवानी ❀ बोले मधुर बचन छलसानी ॥

दोहा--कहा हमार न सुनेहु तब, नारद के उपदेस ।
अब भा झूठ तुम्हार पन, जारेउ कामु महेस ॥८९॥

सुनि बोली मुसुकाइ भवानी ❀ उचित कहेहु मुनिबर बिज्ञानी ॥

तुम्हरे जान कामु अब जारा ❀ अब लगि संभु रहे सबिकारा ॥
हमरे जान सदा सिव जोगी ❀ अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥
जौं मैं सिव सेयउँ अस जानी ❀ प्रीति समेत करम मन बानी ॥
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा ❀ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा ❀ सो अति बड़ अबिबेकु तुम्हारा ॥
तात अनल कर सहज सुभाऊ ❀ हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥
गए समीप सो अवसि नसाई ❀ असि मनमथ महेस कै नाई ॥

दोहा--हिय हरषे मुनि बचन सुनि, देखि प्रीति बिस्वास ।
चले भवानी नाइ सिर, गए हिमाचल पास ॥९०॥

सब प्रसंगु गिरिपतिहिं सुनावा ❀ मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना ❀ सुनि हिमवंत बहुत सुख माना ॥
हृदय बिचारि संभु प्रभुताई ❀ सादर मुनिबर लिए बोलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सोचाई ❀ बेगि बेदबिधि लगन धराई ॥
पत्री सप्तरिषिन्ह सोइ दीन्ही ❀ गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही ॥
जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती ❀ बाँचत प्रीति न हृदय समाती ॥
लगन बाँचि अज सबहि सुनाई ❀ हरषे सुनि सब सुरसमुदाई ॥
सुमनबृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥

दोहा--लगे सवाँरन सकल सुर, बाहन बिबिध बिमान ।
होहिं सगुन मंगल सुखद, करहिं अपछरा गान ॥९१॥

सिवहिं संभुगन करहिं सिंगारा ❀ जटामुकुट अहिमौरु सँवारा ॥
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला ❀ तन बिभूति पट केहरिछाला ॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा ❀ नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर-सिर-माला ❀ असिव बेष सिवधाम कृपाला ॥
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा ❀ चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा ॥
देखि सिवहिं सुरतिय मुसुकाहीं ❀ बरलायक दुलहिनि जग नाहीं ॥
बिष्णु बिरंचि आदि सुरब्राता ❀ चढ़ि चढ़ि बाहन चले बराता ॥

सुरसमाज सब भाँति अनूपा ❀ नहिं बरात दूलहअनुरूपा ॥

दोहा--बिष्णु कहा अस बिहँसि तब, बोलि सकल दिसिराज ।
बिलग बिलग होइ चलहु सब, निज निज सहित समाज ॥९२॥

बर अनुहारि बरात न भाई ❀ हँसी करैहहु परपुर जाई ॥
बिष्णु बचन सुनि सुर मुसुकाने ❀ निज निज सेन सहित बिलगाने ॥
मनहीं मन महेस मुसुकाहीं ❀ हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं ॥
अतिप्रिय बचन सुनत प्रिय केरे ❀ भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥
सिव अनुसासन सुनि सब आए ❀ प्रभु पदजलज सीस तिन्ह नाए ॥
नाना बाहन नाना बेखा ❀ बिहँसे सिव समाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन बिपुलमुख काहू ❀ बिनु पद कर कोउ बहु-पद बाहू ॥
बिपुलनयन कोउ नयनबिहीना ❀ रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना ॥

छन्द--तनखीन कोउ अतिपीन पावन कोउ अपावन गति धरे ।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरे ॥
खर-स्वान-सुअर-सृगाल-मुख गन बेष अगनित को गनै ।
बहु जिनि सप्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै ॥

सोरठा--नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ।
देखत अति बिपरीत, बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ॥९३॥

जस दूलह तसि बनी बराता ❀ कौतुक बिबिध होहिं मग जाता ॥
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना ❀ अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना ॥
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं ❀ लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं ॥
बन सागर सब नदीं तलावा ❀ हिम गिरि सब कहँ नेवति पठावा ॥
काम रूप सुंदर तनु-धारी ❀ सहित समाज सोह बर नारी ॥
आए सकल हिमाचल गेहा ❀ गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सवँराये ❀ जथाजोग जहँ तहँ सब छाये ॥
पुर सोभा अवलोकि सुहाई ❀ लागइ लघु बिरंचिनिपुनाई ॥

छंद--लघु लागि बिधि की निपुनता अवलोकि पुरसोभा सही ।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥

मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं॥

दोहा--जगदंबा तहँ अवतरी, सो पुर बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाइ॥९४॥

नगर निकट बरात सुनि आई ❀ पुर खरभर सोभा अधिकाई॥
करि बनाव सब बाहन नाना ❀ चले लेन सादर अगवाना॥
हिय हरषे सुरसेन निहारी ❀ हरिहिं देखि अति भये सुखारी॥
सिवसमाज जब देखन लागे ❀ बिडरि चले बाहन सब भागे॥
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❀ बालक सब लै जीव पराने॥
गये भवन पूछहिं पितु माता ❀ कहहिं बचन भय कंपित गाता॥
कहिय कहा कहि जाइ न बाता ❀ जम कर धारि किधौं बरिआता॥
बर बौराह बरद असवारा ❀ ब्याल कपाल बिभूषन छारा॥

छंद—तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकटमुख रजनीचरा॥
जो जियत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमाबिबाह घर घर बात असि लरिकन्ह कही॥

दोहा--समुझि महेस समाज सब, जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाये बिबिध बिधि, निडर होहु डर नाहिं॥९५॥

लै अगवान बरातहिं आये ❀ दिये सबहि जनवास सुहाये॥
मैना सुभ आरती सवाँरी ❀ संग सुमंगल गावहिं नारी॥
कंचनथार सोह बरपानी ❀ परिछन चली हरहिं हरषानी॥
बिकटबेष रुद्रहिं जब देखा ❀ अबलन्ह उर भय भयउ बिसेखा॥
भागि भवन पैठीं अतित्रासा ❀ गये महेस जहाँ जनवासा॥
मैना हृदय भयउ दुख भारी ❀ लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी॥
अधिक सनेह गोद बैठारी ❀ स्यामसरोज नयन भरि बारी॥
जेहि बिधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा ❀ तेहि जड़ बर बाउर कस कीन्हा॥

छंद—कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहि तुम्हहिं सुंदरता दई।
जो फलु चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई॥
तुम्ह सहित गिरि ते गिरउँ पावक जरउँ जलनिधि महँ परउँ।
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाह न हौं करउँ॥

दोहा-भईं बिकल अबला सकल, दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलाप रोदति बदति, सुता सनेह सँभारि॥९६॥

नारद कर मैं काह बिगारा ❀ भवन मोर जिन्ह बसत उजारा॥
अस उपदेसु उमहिं जिन्ह दीन्हा ❀ बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा॥
साँचेहु उन्हके मोह न माया ❀ उदासीन धन धाम न जाया॥
पर-घर-घालक लाज न भीरा ❀ बाँझ कि जान प्रसव की पीरा॥
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी ❀ बोली जुत बिबेक मृदुबानी॥
अस बिचारि सोचहि मति माता ❀ सो न टरै जो रचै बिधाता॥
करम लिखा जौं बाउर नाहू ❀ तौ कत दोषु लगाइय काहू॥
तुम्हसन मिटिहि कि बिधिके अंका ❀ मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका॥

छन्द—जिनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाव जहँ पाउब तहीं॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥

दोहा—तेहि अवसर नारद सहित, अरु रिषिसप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गवने तुरित निकेत॥९७॥

तब नारद सबही समुझावा ❀ पूरब-कथा-प्रसंग सुनावा॥
मैना सत्य सुनहु मम बानी ❀ जगदंबा तव सुता भवानी॥
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि ❀ सदा संभु अरधंग निवासिनि॥
जग-संभव-पालन-लय--कारिनि ❀ निज इच्छा लीला-बपु-धारिनि॥
जनमीं प्रथम दच्छगृह जाई ❀ नाम सती सुंदर तनु पाई॥

तहउँ सती संकरहि बिबाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एक बार आवत सिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल-कमल-पतंगा ॥
भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रम बस बेष सीय कर लीन्हा ॥
छन्द–सियबेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरी ।
हरबिरह जाइ बहोरि पितु के जग्य जोगानल जरी ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुन तपु किया ।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्वदा संकरप्रिया ॥

दोहा–सुनि नारद के बचन तब, सब कर मिटा बिषाद ।
छिन महँ ब्यापेउ सकल पुर, घर घर यह संवाद ॥९८॥

तब मैना हिमवंत अनंदे ❀ पुनि पुनि पारबतीपद बंदे ॥
नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबहि हाटकघट नाना ॥
भाँति अनेक भई जेवनारा ❀ सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी ॥
सादर बोले सकल बराती ❀ बिष्णु बिरंचि देव सब जाती ॥
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुन सुआरा ॥
नारिवृंद सुर जेवँत जानी ❀ लगीं देन गारीं मृदुबानी ॥
छन्द–गारी मधुर सुर देहिं सुंदरि ब्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचुपावहीं ॥
जेंवत जो बढ्यो अनन्द सो मुख कोटिहू न परै कह्यो ।
अँचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥

दोहा–बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ ।
समय बिलोकि बिबाह कर, पठए देव बोलाइ ॥९९॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ❀ सबहिं जथोचित आसन दीन्हे ॥
बेदी बेदबिधान सवाँरी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अतिदिब्य सुहावा ❀ जाइ न बरनि बिचित्र बनावा ॥

बैठे सिव बिप्रन्ह सिर नाई ❀ हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई ❀ करि सिंगार सखी लेइ आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहे ❀ बरनै छबि अस जग कवि कोहे ॥
जगदंबिका जानि भवबामा ❀ सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥
सुन्दरता मरजाद भवानी ❀ जाइ न कोटिन बदन बखानी ॥

छन्द—कोटिहु बदन नहिं बनइ बरनत जग-जननि-सोभा महा ।
सकुचहिं कहत स्रुति सेष सारद मन्दमति तुलसी कहा ॥
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मण्डप सिव जहाँ ।
अवलोकि सकइ न सकुचि पति-पद-कमल मनमधुकर तहाँ ॥

दोहा--मुनि अनुसासन गनपतिहिं, पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करइ जनि, सुर अनादि जिय जानि॥१००॥

जसि बिवाह कै बिधि स्रुति गाई ❀ महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी ❀ भवहि समरपी जानि भवानी ॥
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा ❀ हिय हरषे तब सकल सुरेसा ॥
बेदमन्त्र मुनिबर उच्चरहीं ❀ जय जय जय संकर सुर करहीं ॥
बाजहिं बाजनि बिबिध बिधाना ❀ सुमनबृष्टि नभ भइ बिधि नाना ॥
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू ❀ सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥
दासी दास तुरग रथ नागा ❀ धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा ॥
अन्न कनक भाजन भरि जाना ❀ दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥

छंद—दाइज दियो बहुभाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो ।
का देउँ पूरनकाम संकर चरनपंकज गहि रह्यो ॥
सिव कृपासागर ससुर कर संतोष सब भाँतिहि कियो ।
पुनि गहे पदपाथोज मैना प्रेमपरिपूरन हियो ॥

दोहा--नाथ उमा मम प्रान सम, गृहकिंकरी करेहु ।
छमेहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न बरदेहु ॥१०१॥

बहु बिधि संभु सासु समुझाई ❀ गवनी भवन चरन सिर नाई ॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही ❀ लेइ उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥
करेहु सदा संकर-पद पूजा ❀ नारिधरम पति देव न दूजा ॥
बचन कहत भरि लोचन बारी ❀ बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥
कत बिधि सृजी नारि जग माहीं ❀ पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ॥
भइ अति प्रेम बिकल महतारी ❀ धीरज कीन्ह कुसमय बिचारी ॥
पुनिपुनि मिलति परति गहिचरना ❀ परम प्रेम कछु जाइ न बरना ॥
सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी ❀ जाइ जननिउर पुनि लपटानी ॥

छंद—जननी बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहू दई ।
फिरि फिरि बिलोकति मातुतनतब सखी लेइ सिव पहँ गई ॥
जाचक सकल संतोषि संकर उमा सहित भवन चले ।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले ॥

दोहा-चले संग हिमवंत तब, पहुँचावन अति हेतु ।
बिबिध भाँति परितोष करि, बिदा कीन्ह बृषकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन आये गिरिराई ❀ सकल शैल सर लिये बोलाई ॥
आदर दान बिनय बहु माना ❀ सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं संभु कैलासहि आये ❀ सुर सब निज निज लोक सिधाये ॥
जगतमातुपितु संभु भवानी ❀ तेहि सिंगारु न कहौं बखानी ॥
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा ❀ गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥
हर-गिरिजा - बिहार नित नयऊ ❀ एहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ॥
तब जनमेउ षट-बदन-कुमारा ❀ तारकु असुरु समर जेहि मारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ षणमुख जनम सकल जगु जाना ॥

छंद—जगु जान षणमुखजनमु करम प्रताप पुरुषारथ महा ।
तेहि हेतु मैं बृष-केतु-सुत कर चरित संछेपहि कहा ॥
यह उमा-संभु-बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं ।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥

दोहा--चरितसिंधु गिरिजा रमन, बेद न पावहिं पारु ।
बरनइ तुलसीदास किमि, अति-मति-मन्द गवाँरु ॥१०३॥

संभुचरित सुनि सरस सुहावा ❀ भरद्वाज मुनि अतिसुख पावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ❀ नयनु नीरु रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेमबिबस मुख आव न बानी ❀ दसा देखि हरषे मुनि ज्ञानी ॥
अहो धन्य तव जनम मुनीसा ❀ तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥
सिव-पद-कमल जिन्हहिं रति नाहीं ❀ रामहि ते सपनेहुँ न सुहाहीं ॥
बिनु छल बिस्व—नाथ—पद नेहू ❀ रामभगत कर लच्छन एहू ॥
सिव सम को रघु-पति-ब्रत-धारी ❀ बिनु अघ तजी सती असि नारी ॥
पन करि रघुपति भगति दृढ़ाई ❀ को सिव सम रामहिं प्रिय भाई ॥

दोहा--प्रथमहिं मैं कहि सिवचरित, बूझा मरमु तुम्हार ।
सुचि सेवक तुम्ह राम के, रहित समस्त बिकार ॥१०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला ❀ कहौं सुनहु अब रघु-पति-लीला ॥
सुनु मुनि आजु समागम तोरे ❀ कहि न जाइ जस सुख मन मोरे ॥
रामचरित अति अमित मुनीसा ❀ कहि न सकहिं सतकोटि अहीसा ॥
तदपि जथासुत कहौं बखानी ❀ सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥
सादर दारुनारि सम स्वामी ❀ राम सूत्रधर अंतरजामी ॥
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी ❀ कबि-उर-अजिर नचावहिं बानी ॥
प्रनवौं सोइ कृपालु रघुनाथा ❀ बरनौं बिसद तासु गुनगाथा ॥
परमरम्य गिरिबर कैलासू ❀ सदा जहाँ सिव-उमा-निवासू ॥

दोहा--सिद्ध तपोधन जोगिजन, सुर किन्नर मुनिबृंद ।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहिं सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि-हर-बिमुख धरमरति नाहीं ❀ ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला ❀ नित नूतन सुंदर सब काला ॥
त्रिबिध समीर सुसीतल छाया ❀ सिव-बिस्राम-बिटप स्रुति गाया ॥
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ ❀ तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ ॥

निज कर डासि नाग-रिपु-छाला ❀ बैठे सहजहिं संभु कृपाला ॥
कुंद - इंदु - दर - गौर - सरीरा ❀ भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥
तरुन - अरुन - अंबुज-सम चरना ❀ नखदुति भगत-हृदय-तम-हरना ॥
भुजग - भूति - भूषन त्रिपुरारी ❀ आनन सरद - चंद - छबि - हारी ॥

दोहा--जटामुकुट सुरसरित सिर, लोचननलिन बिसाल ।
नीलकंठ लावन्यनिधि, सोह बालबिधु भाल ॥१०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे ❀ धरे सरीर सांतरस जैसे ॥
पारवती भल अवसरु जानी ❀ गईं संभु पहँ मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा ❀ बामभाग आसन हर दीन्हा ॥
बैठीं सिवसमीप हरषाई ❀ पूरब - जनम - कथा चित आई ॥
पति-हिय-हेतु अधिक अनुमानी ❀ बिहँसि उमा बोलीं प्रियबानी ॥
कथा जो सकल-लोक-हितकारी ❀ सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी ❀ त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ॥
चर अरु अचर नाग नर देवा ❀ सकल करिहिं पद-पंकज-सेवा ॥

दोहा--प्रभु समरथ सर्वज्ञ सिव, सकल--कला--गुन--धाम ।
जोग-ज्ञान-बैराग्य-निधि, प्रनतकलपतरु नाम ॥१०७॥

जौं मोपर प्रसन्न सुखरासी ❀ जानिय सत्य मोहि निज दासी ॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ❀ कहि रघुनाथकथा बिधि नाना ॥
जासु भवन सुरतरु तर होई ❀ सह कि दरिद्रजनित दुख सोई ॥
ससिभूषन अस हृदय बिचारी ❀ हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथबादी ❀ कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी ॥
सेष सारदा बेद पुराना ❀ सकल करहिं रघुपति-गुन-गाना ॥
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती ❀ सादर जपहु अनंगअराती ॥
राम सो अवध-नृपति-सुत सोई ❀ की अज अगुन अलखगति कोई ॥

दोहा--जौं नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारिबिरह मतिभोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि ॥१०८॥

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ ❀ कहहु बुझाइ नाथ मोंहि सोऊ ॥
अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहू ❀ जेहि बिधि मोह मिटइ सोइ करहू ॥
मैं बन दीख रामप्रभुताई ❀ अति-भय-बिकल न तुम्हहिं सुनाई ॥
तदपि मलिनमन बोध न आवा ❀ सो फलु भली भाँति हम पावा ॥
अजहूँ कछु संसय मन मोरे ❀ करहु कृपा बिनवउँ करजोरे ॥
प्रभु तब मोंहि बहुभाँति प्रबोधा ❀ नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥
तब कर अस बिमोह अब नाहीं ❀ रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥
कहहु पुनीत राम-गुन-गाथा ❀ भुजग - राज - भूषन सुरनाथा ॥

दोहा--बंदौं पद धरि धरनि सिरु, बिनय करौं करजोरि ।
बरनहु रघुबर-बिसद-जसु, स्रुतिसिद्धांत निचोरि ॥१०९॥

जदपिजोषितानहिं अधिकारी ❀ दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥
गूढ़उ तत्त्व न साधु दुरावहिं ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥
अतिआरति पूछउँ सुरराया ❀ रघुपतिकथा कहहु करि दाया ॥
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी ❀ निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा ❀ बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥
कहहु जथा जानकी बिबाही ❀ राज तजा सो दूषन काही ॥
बन बसि कीन्हे चरित अपारा ❀ कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥
राज बैठि कीन्ही बहु लीला ❀ सकल कहहु संकर सुखसीला ॥

दोहा--बहुरि कहहु करुनायतन, कीन्ह जो अचरज राम ।
प्रजा सहित रघु-बंस-मनि, किमि गवने निजधाम ॥११०॥

पुनिप्रभुकहहु सो तत्त्व बखानी ❀ जेहि बिज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा ❀ पुनि सब बरनहु सहित बिभागा ॥
औरौ रामरहस्य अनेका ❀ कहहु नाथ अतिबिमल बिबेका ॥
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई ❀ सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
तुम्ह त्रिभुवनगुरु बेद बखाना ❀ आन जीव पावँर का जाना ॥
प्रस्न उमा के सहज सुहाई ❀ छलबिहीन सुनि सिवमन भाई ॥

हरहिय रामचरित सब आये ❀ प्रेम पुलक लोचन जल छाये ॥
श्री-रघुनाथ-रूप उर आवा ❀ परमानंद अमित सुख पावा ॥

दोहा—मगन ध्यानरस दंड जुग, पुनि मन बाहेर कीन्ह ।
रघुपतिचरित महेस तब, हरहित बरनइ लीन्ह ॥१११॥

झूठउ सत्य जाहि बिनु जाने ❀ जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई ❀ जागे जथा सपनभ्रम जाई ॥
बंदौं बालरूप सोइ रामू ❀ सबसिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥
मंगलभवन अमंगलहारी ❀ द्रवउ सो दसरथ-अजिर-बिहारी ॥
करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी ❀ हरषि सुधासम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरि-राज-कुमारी ❀ तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥
पूछेहु रघुपति-कथा-प्रसंगा ❀ सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम्ह रघुबीर-चरन-अनुरागी ❀ कीन्हिहु प्रस्न जगतहित लागी ॥

दोहा--रामकृपा तें पारबति, सपनेहु तव मन माहिं ।
सोक मोह संदेह भ्रम, मम बिचार कछु नाहिं ॥११२॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई ❀ कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना ❀ स्रवनरंध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन्हि संतदरस नहिं देखा ❀ लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते सिर कटुतुंबरि सम तूला ❀ जे न नमत हरि-गुरु-पद-मूला ॥
जिन्ह हरिभगति हृदय नहिं आनी ❀ जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥
जो नहिं करइ राम-गुन-गाना ❀ जीह सो दादुरजीह समाना ॥
कुलिसकठोर निठुर सोइ छाती ❀ सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम कै लीला ❀ सुरहित दनुज-बिमोहन-सीला ॥

दोहा--रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब-सुख-दानि ।
सतसमाज सुरलोक सब, को न सुनइ अस जानि ॥११३॥

रामकथा सुंदर करतारी ❀ संसयबिहँग उड़ावनहारी ॥

रामकथा कलि - बिटप - कुठारी ❀ सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥
राम - नाम - गुन - चरित सुहाये ❀ जनमु करमु अगनित स्रुति गाये ॥
जथा अनंत राम भगवाना ❀ तथा कथा कीरति गुन नाना ॥
तदपि जथास्रुत जसि मति मोरी ❀ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई ❀ सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥
एक बात नहिं मोहि सुहानी ❀ जदपि मोहबस कहेहु भवानी ॥
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना ❀ जेहि स्रुतिगाव धरहिं मुनि ध्याना ॥

दोहा--कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जे मोहपिसाच ।
पाखंडी हरि-पद-बिमुख, जानहिं झूठ न साच ॥११४॥

अग्य अकोबिद अंध अभागी ❀ काई बिषय मुकुरमन लागी ॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेखी ❀ सपनेहु संतसभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते बेद असंमत बानी ❀ जिन्ह के सूझ लाभ नहिं हानी ॥
मुकुर मलिन अरु नयनबिहीना ❀ रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
जिन्ह के अगुन न सगुन बिबेका ❀ जल्पहिं कल्पित बचन अनेका ॥
हरि–माया–बस जगत भ्रमाहीं ❀ तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं ॥
बातुल भूत बिबस मतवारे ❀ ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे ॥
जिन्ह कृत महा-मोह मद-पाना ❀ तिन्ह कर कहा करिय नहिं काना ॥

सोरठा--असनिज हृदयबिचारि, तजुसंसय भजुरामपद ।
सुनुगिरि-राज-कुमारि, भ्रम-तम-रबि-कर बचनमम ॥११५॥

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा ❀ गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई ❀ भगत-प्रेम-बस सगुन सो होई ॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे ❀ जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे ॥
जासु नाम भ्रम - तिमिर - पतंगा ❀ तेहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा ॥
राम सच्चिदानंद दिनेसा ❀ नहिं तहँ मोह निसा - लव - लेसा ॥
सहज प्रकासरूप भगवाना ❀ नहिं तहँ पुनि बिग्यानबिहाना ॥
हरष बिषाद ग्यान अग्याना ❀ जीव धरम अहमिति अभिमाना ॥

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ❀ परमानंद परेस पुराना ॥

दोहा--पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि, प्रगट परावरनाथ।
रघु-कुल-मनिममस्वामिसोइ, कहिसिव नायउमाथ ।११६।

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी ॥
जथा गगन घनपटल निहारी ❀ झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी ॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाये ❀ प्रगट जुगल ससि तेहि के भाये ॥
उमा रामविषयक अस मोहा ❀ नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
बिषय करन सुर जीव समेता ❀ सकल एक तें एक सचेता ॥
सब कर परम प्रकासक जोई ❀ राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू ❀ मायाधीस ज्ञान-गुन-धामू ॥
जासु सत्यता तें जड़ माया ❀ भास सत्य इव मोहसहाया ॥

दोहा-रजत सीप महुँ भास जिमि, जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ, भ्रमनसकइ कोउ टारि ।।११७।।

एहिबिधि जग हरि आस्रित रहई ❀ जदपि असत्य देत दुख अहई ॥
जों सपने सिर काटइ कोई ❀ बिनु जागे न दूरि दुख होई ॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई ❀ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा ❀ मति अनुमान निगम अस गावा ॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ❀ कर बिनु करम करइ बिधि नाना ॥
आननरहित सकल-रस-भोगी ❀ बिनु बानी बकता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा ❀ ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेखा ॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी ❀ महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

दोहा-जेहि इमि गावहिं बेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथसुत भगत हित, कोसलपति भगवान ।।११८।।

कासी मरत जंतु अवलोकी ❀ जासु नामबल करौं बिसोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❀ रघुबर सब उर अंतरजामी ॥
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं ❀ जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥

श्रीशिवपार्वती–सम्बाद



गिरजा सुनहु राम कै लीला। सुरहित दनुज विमोहन शीला ॥

सादर सुमिरन जे नर करहीं ❀ भवबारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी ❀ तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥
अस संसय आनत उर माहीं ❀ ज्ञान बिराग सकल गुन जाहीं ॥
सुनि सिव के भ्रमभंजन बचना ❀ मिटि गइ सब कुतरक कै रचना ॥
भइ रघुपति-पद-प्रीति प्रतीति ❀ दारुन असंभावना बीती ॥

दोहा-पुनिपुनि प्रभु-पद-कमल गहि, जोरि पंकरुहपानि ।
बोलीं गिरिजा बचन बर, मनहुँ प्रेमरस सानि ॥११९॥

ससिकरसम सुनि गिरा तुम्हारी ❀ मिटा मोह सरदातप भारी ॥
तुम्ह कृपालु सबु संसय हरेऊ ❀ रामसरूप जानि मोहिं परेऊ ॥
नाथ कृपा अब गयउ बिषादा ❀ सुखी भइउँ प्रभु-चरन-प्रसादा ॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी ❀ जदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू ❀ जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी ❀ सर्ब रहित सब-उर-पुर-बासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू ❀ मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥
उमाबचन सुनि परम बिनीता ❀ रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

दोहा--हिय हरषे कामारि तब, संकर सहज सुजान ।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि, बोले कृपानिधान ॥

सोरठा--सुनु सुभ कथा भवानि, रामचरित मानस बिमल ।
कहा भुसुंडि बखानि, सुना बिहगनायक गरुड़ ॥
सो संबाद उदार, जेहि बिधि भा आगे कहब ।
सुनहु रामअवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥
हरिगुन नाम अपार, कथारूप अगनित अमित ।
मैं निज-मति-अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु ॥१२०॥

सुनु गिरजा हरिचरित सुहाये ❀ बिपुल बिसद निगमागम गाये ॥
हरिअवतार हेतु जेहि होई ❀ इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी ❀ मत हमार अस सुनहि सयानी ॥
तदपि संत मुनि बेद पुराना ❀ जसकछु कहहिं स्व-मति-अनुमाना ॥
तस मैं सुमुखि सुनावौं तोही ❀ समुझि परइ जस कारन मोही ॥
जब जब होइ धरम कै हानी ❀ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी ❀ सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥

दोहा--असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज-स्रुति-सेतु ।
जग बिस्तारहिं बिसद जसु, रामजनमु कर हेतु ॥१२१॥

सोइ जस गाइ भगत भवतरहीं ❀ कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥
रामजनम के हेतु अनेका ❀ परम बिचित्र एक तें एका ॥
जनम एक दुइ कहउँ बखानी ❀ सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ ❀ जय अरु बिजय जान सब कोऊ ॥
बिप्रस्राप तें दूनउँ भाई ❀ तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥
कनककसिपु अरु हाटक लोचन ❀ जगत बिदित सुर-पति-मद-मोचन ॥
बिजई समर बीर बिख्याता ❀ धरि बराह बपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा ❀ जन प्रहलादसुजस बिस्तारा ॥

दोहा--भये निसाचर जाइ तेइ, महाबीर बलवान ।
कुम्भकरन रावन सुभट, सुरबिजई जग जान ॥१२२॥

मुकुत न भये हते भगवाना ❀ तीनि जनम द्विजबचन प्रमाना ॥
एक बार तिन्ह के हित लागी ❀ धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता ❀ दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥
एक कलप एहि बिधि अवतारा ❀ चरित पवित्र किए संसारा ॥
एक कलप सुर देखि दुखारे ❀ समर जलंधर सन सब हारे ॥
संभु कीन्ह संग्राम अपारा ❀ दनुज महाबल मरइ न मारा ॥
परम सती असुराधिपनारी ❀ तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी ॥

दोहा-छल करि टारेउ तासु ब्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह ।

जब तेहि जानेउ मरमु तब, साप कोप करि दीन्ह ॥१२३॥

तासु साप हरि दीन्ह प्रवाना ❀ कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥
तहाँ जलंधर रावन भयऊ ❀ रन हति राम परम पद दयऊ ॥
एक जनम कर कारन एहा ❀ जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
प्रतिअवतार कथा प्रभु केरी ❀ सुनु मुनि बरनी कविन्ह घनेरी ॥
नारद साप दीन्ह एक बारा ❀ कलप एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी ❀ नारद बिष्णुभगत मुनि ज्ञानी ॥
कारन कवन साप मुनि दीन्हा ❀ का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी ❀ मुनिमन मोह आचरज भारी ॥

दोहा--बोले बिहँसि महेस तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि छन होइ ॥

सोरठा--कहौं राम-गुन-गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४॥

हिम-गिरि - गुहा एक अति पावनि ❀ बह समीप सुरसरी सुहावनि ॥
आस्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देवरिषि मन अति भावा ॥
निरखि सैल सरि बिपिनबिभागा ❀ भयउ रमा - पति - पद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहि सापगति बाधी ❀ सहज बिमल मन लागि समाधी ॥
मुनिगति देखि सुरेस डेराना ❀ कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना ॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू ❀ चलेउ हरषि हिय जल-चर-केतू ॥
सुनासीर मन महँ असि त्रासा ❀ चहत देवरिषि मम पुर बासा ॥
जे कामी लोलुप जग माहीं ❀ कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥

दोहा--सूख हाड़ लेइ भाग सठ, स्वान निरखि मृगराज ।
छीन लेइ जनि जानि जड़, तिमि सुरपतिहि न लाज॥१२५॥

तेहि आस्रमहि मदन जब गयऊ ❀ निज माया बसंत निरमयऊ ॥
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा ❀ कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
चली सुहावनि त्रिबिध बयारी ❀ कामकृसानु बढ़ावनिहारी ॥

रंभादिक सुरनारि नबीना ❀ सकल असम-सर - कला - प्रबीना ॥
करहिं गान बहु तान तरंगा ❀ बहु विध क्रीड़हिं पानि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना ❀ कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥
कामकला कछु मुनिहि न व्यापी ❀ निज भय डरेउ मनोभव पापी ॥
सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू ❀ बड़ रखवार रमापति जासू ॥

दोहा--सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन ।
गहेसि जाइ मुनिचरन तब, कहि सुठि आरत बैन ॥१२६॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा ❀ कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥
नाइ चरन सिरु आयसु पाई ❀ गयउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुसीलता आपनि करनी ❀ सुर - पति - सभा जाइ सब बरनी ॥
सुनि सब के मन अचरज आवा ❀ मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥
तब नारद गवने सिव पाहीं ❀ जिता काम अहमिति मन माहीं ॥
मारचरित संकरहि सुनाये ❀ अतिप्रिय जानि महेस सिखाये ॥
बार बार बिनवौं मुनि तोही ❀ जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥
तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूँ ❀ चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूँ ॥

दोहा--संभु दीन्ह उपदेस हित, नहिं नारदहि सुहान ।
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान ॥१२७॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई ❀ करइ अन्यथा अस नहिं कोई ॥
संभुवचन मुनि मन नहिं भाये ❀ तब बिरंचि के लोक सिधाये ॥
एक बार करतल बर बीना ❀ गावत हरिगुन गानप्रबीना ॥
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा ❀ जहँ बस श्रीनिवास स्रुतिमाथा ॥
हरषि मिलेउ उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन रिषिहि समेता ॥
बोले बिहँसि चराचरराया ❀ बहुते दिनन्ह कीन्हि मुनि दाया ॥
कामचरित नारद सब भाखे ❀ जद्यपि प्रथम बरजि सिवराखे ॥
अतिप्रचंड रघुपति कै माया ❀ जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

दोहा--रूख बदन करि बचन मृदु, बोले श्रीभगवान ।

तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं, मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके ❀ ज्ञान बिराग हृदय नहिं जाके ॥
ब्रह्मचरज - ब्रत - रत मतिधीरा ❀ तुम्हहिं कि करइ मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना ❀ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ।
करुनानिधि मन दीख बिचारी ❀ उर अंकुरेउ गर्बतरु भारी ॥
बेगि सो मैं डारिहौं उखारी ❀ पन हमार सेवकहितकारी ॥
मुनि कर हित मम कौतुक होई ❀ अवसि उपाय करबि मैं सोई ॥
तब नारद हरिपद सिरु नाई ❀ चले हृदय अहमिति अधिकाई ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❀ सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

दोहा--बिरचेउ मग महुँ नगर तेहि, सतजोजन बिस्तार ।
श्री-निवास-पुरतें अधिक, रचना बिबिध प्रकार ॥१२९॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी ❀ जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा ❀ अगनित हय गय सेन समाजा ॥
सत सुरेस सम बिभव बिलासा ❀ रूप तेज बल नीति निवासा ॥
बिस्वमोहनी तासु कुमारी ❀ श्री बिमोह जेहि रूप निहारी ॥
सोइ हरि माया सब-गुन-खानी ❀ सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करइ स्वयंबर सो नृपबाला ❀ आये तहँ अगनित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ ❀ पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूपगृह आये ❀ करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥

दोहा--आनि देखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब, एहि के हृदय बिचारि ॥१३०॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी ❀ बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने ❀ हृदय हरष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो एहि बरइ अमर सोइ होई ❀ समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही ❀ बरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥
लच्छन सब बिचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूप मन भाखे ॥

सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं ❀ नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी ❀ जेहि प्रकार मोहि बरइ कुमारी ॥
जप तप कछु न होइ तेहि काला ❀ हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला ॥

दोहा--एहि अवसर चाहिय परम, सोभा रूप बिसाल ।
जो बिलोकि रीझइ कुअँरि, तब मेलइ जयमाल ॥१३१॥

हरि मन माँगौं सुंदरताई ❀ होइहि जाति गहरु अति भाई ॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ ❀ एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥
बहुबिधिबिनय कीन्हि तेहि काला ❀ प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुडाने ❀ होइहि काजु हिये हरषाने ॥
अति आरति कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा करि होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही ❀ आन भाँति नहिं पावौं ओही ॥
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा ❀ करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥
निज मायाबल देखि बिसाला ❀ हिय हँसि बोले दीनदयाला ॥

दोहा--जेहि बिधि होइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हम करब न आन कछु, बचन न मृपा हमार ॥१३२॥

कुपथ माँग रुजब्याकुल रोगी ❀ बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥
मायाबिबस भये मुनि मूढा ❀ समुझी नहिं हरिगिरा निगूढा ॥
गवने तुरत तहाँ रिषिराई ❀ जहाँ स्वयंबरभूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा ॥
मुनिमन हरष रूप अति मोरे ❀ मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरे ॥
मुनिहित कारन कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा ❀ नारद जानि सबहि सिरु नावा ॥

दोहा--रहे तहाँ दुइ रुद्रगन, ते जानहिं सब भेउ ।
बिप्रबेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ ॥१३३॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदय रूप अहमिति अधिकाई ॥

तहँ बैठे महेसगन दोऊ ❀ बिप्रबेष गति लखइ न कोऊ ॥
करहिं कूटि नारदहि सुनाई ❀ नीकि दीन्ह हरि सुंदरताई ॥
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी ❀ इनहिं बरिहि हरि जानि बिसेखी ॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराये ❀ हँसहिं संभुगन अति सचुपाये ॥
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी ❀ समुझि न परइ बुद्धि भ्रमसानी ॥
काहु न लखा सो चरित बिसेखा ❀ सो सरूप नृपकन्या देखा ॥
मर्कटबदन भयंकर देही ❀ देखत हृदय क्रोध भा तेही ॥

दोहा--सखी संग लेइ कुअँरि तब, चलि जनु राजमराल ।
देखत फिरइ महीप सब, करसरोज जयमाल ॥१३४॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली ❀ सो दिसि तेह न बिलोकी भूली ॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ❀ देखि दसा हरगन मुसुकाहीं ॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला ❀ कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥
दुलहिन लेइ गे लच्छिनिवासा ❀ नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥
मुनि अतिबिकल मोहमति नाँठी ❀ मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥
तब हरगन बोले मुसुकाई ❀ निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥
अस कहि दोउ भागे भय भारी ❀ बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥
बेष बिलोकि क्रोध अति बाढा ❀ तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढा ॥

दोहा--होहु निसाचर जाइ तुम्ह, कपटी पापी दोउ ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥१३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदय संतोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं ❀ सपदि चले कमलापति पाहीं ॥
देइहौं साप कि मरिहौं जाई ❀ जगत मोरि उपहास कराई ॥
बीचहि पंथ मिले दनुजारी ❀ संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाईं ❀ मुनि कहँ चले बिकल की नाईं ॥
सुनत बचन उपजा अतिक्रोधा ❀ मायाबस न रहा मन बोधा ॥
परसंपदा सकहु नहिं देखी ❀ तुम्हरे इरिषा कपट बिसेखी ॥

मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु ❀ सुरन्ह प्रेरि बिषपान करायहु ॥

दोहा--असुर सुरा बिष संकरहि, आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह, सदा कपट व्यवहारु ॥१३६॥

परमस्वतंत्र न सिर पर कोई ❀ भावइ मनहिं करहु तुम्ह सोई ॥
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू ❀ बिसमय हरष न हिय कछु धरहू ॥
डहँकि डहँकि परिचेहु सब काहू ❀ अतिअसंक मन सदा उछाहू ॥
करम सुभासुभ तुम्हहिं न बाधा ❀ अब लगि तुम्हहिं न काहू साधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा ❀ पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा ❀ सोइ तनु धरहु साप मम एहा ॥
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी ❀ करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी ❀ नारि बिरह तुम्ह होब दुखारी ॥

दोहा--साप सीस धरि हरषि हिय, प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।
निज माया कै प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्हि ॥१३७॥

जब हरिमाया दूर निवारी ❀ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ।
तब मुनि अतिसभीत हरिचरना ❀ गहे पाहि प्रनतारतिहरना ॥
मृषा होउ मम साप कृपाला ❀ मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे ❀ कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ॥
जपहु जाइ संकर - सत - नामा ❀ होइहि हृदय तुरत बिस्रामा ॥
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे ❀ असि परतीति तजहु जनि भोरे ॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी ❀ सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥
अस उर धरि महि बिचरहु जाई ❀ अब न तुम्हहि माया नियराई ॥

दोहा--बहु बिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतरधान ।
सत्यलोक नारद चले, करत राम - गुन-गान ॥१३८॥

हरगन मुनिहि जात पथ देखी ❀ बिगत मोह मन हरष बिसेखी ॥
अतिसभीत नारद पहिं आये ❀ गहि पद आरत बचन सुनाये ॥
हरगन हम न बिप्र मुनिराया ❀ बड़ अपराध कीन्ह फलु पाया ॥

साप अनुग्रह करहु कृपाला ❀ बोले नारद दीनदयाला ॥
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ ❀ बैभव बिपुल तेज बल होऊ ॥
भुजबल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ ❀ धरिहहिं बिष्णु मनुजतनु तहिआ ॥
समर मरन हरिहाथ तुम्हारा ❀ होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥
चले जुगल मुनिपद सिरु नाई ❀ भये निसाचर कालहि पाई ॥

दोहा--एक कलप एहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार।
सुररंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन-भुवि-भार ॥१३९॥

एहि बिधि जनम करम हरि केरे ❀ सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं ❀ चारु चरित नाना बिधि करहीं ॥
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई ❀ परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने ❀ करहिं न सुनि आचरजु सयाने ॥
हरि अनंत करिकथा अनंता ❀ कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता ॥
रामचंद्र के चरित सुहाये ❀ कलप कोटि लगि जाहिं न गाये ॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी ❀ हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु कौतुकी प्रनत-हितकारी ❀ सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥

सोरठा--सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माहिं. भजिय महा-माया-पतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी ❀ कहउँ बिचित्र कथा बिस्तारी ॥
जेहि कारन अज अगुन अरूपा ❀ ब्रह्म भयउ कोसल - पुर - भूपा ॥
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा ❀ बंधु समेत धरे मुनिबेखा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी ❀ सती सरीर रहिहु बौरानी ॥
अजहुं न छाया मिटति तुम्हारी ❀ तासु चरित सुनु भ्रम-रुज-हारी ॥
लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा ❀ सो सब कहिहौं मति अनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि संकर बानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥
लगे बहुरि बरनइ बृषकेतू ❀ सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दोहा--सो मैं तुम्ह सन कहउँ सब, सुनु मुनीस मन लाइ।
रामकथा कलि-मल-हरनि, मंगल करनि सुहाइ ॥१४१॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा ❀ जिन्ह तें भइ नरसृष्टि अनूपा ॥
दंपति धरम आचरन नीका ❀ अजहुं गाव स्रुति जिन्ह कै लीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू ❀ ध्रुव हरिभगत भयउ सुत जासू ॥
लघुसुत नाम प्रियव्रत ताही ❀ बेद पुरान प्रसंसहिं जाही ॥
देवहूति पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥
आदि देव प्रभु दीनदयाला ❀ जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥
सांख्यसास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना ❀ तत्त्वबिचार निपुन भगवाना ॥
तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला ❀ प्रभुआयसु सब बिधि प्रतिपाला ॥

सोरठा--होइ न बिषय बिराग, भवन बसत भा चौथपनु ।
हृदय बहुत दुख लाग, जनम गयउ हरिभगति बिनु ॥१४२॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा ❀ नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता ❀ अतिपुनीत साधक-सिधि-दाता ॥
बसहिं तहाँ मुनि-सिद्ध-समाजा ❀ तहँ हिय हरषि चलेउ मनु राजा ॥
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा ❀ ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनु-मति-तीरा ❀ हरषि नहाने निरमल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी ❀ धरमधुरंधर नृपरिषि जानी ॥
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये ❀ मुनिन्ह सकल सादर करवाये ॥
कृससरीर मुनिपट परिधाना ❀ सतसमाज नित सुनहिं पुराना ॥

दोहा--द्वादस अच्छर मंत्र पुनि, जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेव-पद-पंकरुह, दंपति मन अति लाग ॥१४३॥

करहिं अहार साक फल कंदा ❀ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❀ बारिअधार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई ❀ देखिय नयन परम प्रभु सोई ॥
अगुन अखंड अनंत अनादी ❀ जेहि चिंतहिं परमारथबादी ॥
नेति नेति जेहि बेद निरूपा ❀ चिदानंद निरुपाधि अनूपा ॥
संभु बिरंचि बिष्णु भगवाना ❀ उपजहिं जासु अंस तें नाना ॥
ऐसेउ प्रभु सेवकबस अहई ❀ भगत हेतु लीला तनु गहई ॥

जौ यह वचन सत्य स्रुति भाषा ❀ तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥

दोहा--एहि बिधि बीते बरष षट्, सहस बारि आहार ।
संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीरअधार ॥१४४॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ ❀ ठाढ़े रहे एक पग दोऊ ॥
बिधि-हरि-हर तप देखि अपारा ❀ मनु समीप आये बहु बारा ॥
माँगहु बर बहु भाँति लोभाये ❀ परम धीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा ❀ तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥
प्रभु सर्बज्ञ दास निज जानी ❀ गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
माँगु माँगु बर भइ नभबानी ❀ परम गँभीर कृपामृत सानी ॥
मृतकजिआवनि गिरा सुहाई ❀ स्रवनरंध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाये ❀ मानहु अबहिं भवन तें आये ॥

दोहा--स्रवन-सुधा-सम बचन सुनि, पुलक प्रफुल्लित गात ।
बोले मनु करि दंडवत, प्रेम न हृदय समात ॥१४५॥

सुनु सेवक-सुर-तरु सुरधेनू ❀ बिधि-हरि-हर-बंदित-पद-रेनू ॥
सेवत सुलभ सकल-सुख-दायक ❀ प्रनतपाल स-चराचर-नायक ॥
जौं अनाथहित हम पर नेहू ❀ तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ॥
जो सरूप बस सिवमन माहीं ❀ जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुसुंडि-मन मानस-हंसा ❀ सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ❀ कृपा करहु प्रनतारतिमोचन ॥
दंपतिबचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल बिनीत प्रेम-रस-पागे ॥
भगतबछल प्रभु कृपानिधाना ❀ बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥

दोहा--नीलसरोरुह नीलमनि, नील-नीर-धर-स्याम ।
लाजहिं तनुसोभा निरखि, कोटि कोटि सत काम ॥१४६॥

सरद-मयंद-बदन छबिसींवाँ ❀ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवाँ ॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा ❀ बिधु-कर-निकर-बिनिंदक हासा ॥
नव-अंबुज-अंबक-छबि नीकी ❀ चितवनि ललित भावती जी की ॥
भृकुटि मनोज-चाप-छबि हारी ❀ तिलक ललाटपटल दुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा ❀ कुटिल केस जनु मधुपसमाजा ॥

उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला ❀ पदिक हार भूषन मनिजाला ॥
केहरिकंधर चारु जनेऊ ❀ बाहुबिभूषन सुंदर तेउ ॥
करि-कर-सरिस सुभग भुजदंडा ❀ कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥

दोहा--तडितबिनिंदक पीतपट, उदर रेख बर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु, जमुन-भवँर-छबिछीनि॥१४७॥

पदराजीव बरनि नहिं जाहीं ❀ मुनि-मन-मधुपबसहिं जिन्हमाहीं ॥
बामभाग सोभति अनुकूला ❀ आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला ॥
जासु अंस उपजहिं गुनखानी ❀ अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥
भृकुटिबिलास जासु जग होई ❀ राम बामदिसि सीता सोई ॥
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी ❀ एकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनुसतरूपा ॥
हरषबिबस तनुदसा भुलानी ❀ परे दंड इव गहि पद पानी ॥
सिर परसे प्रभु निज-कर-कंजा ❀ तुरत उठाये करुनापुंजा ॥

दोहा--बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहि जानि।
माँगहु बर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि॥१४८॥

सुनि प्रभुबचन जोरि जुग पानी ❀ धरि धीरज बोले मृदुबानी ॥
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे ❀ अब पूरे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बडि उर माहीं ❀ सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं ॥
तुम्हहिं देत अति सुगम गोसाईं ❀ अगम लाग मोहि निज कृपनाईं ॥
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई ❀ बहु संपति माँगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाउ जान नहिं सोई ❀ तथा हृदय मम संसय होई ॥
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी ❀ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोही ❀ मोरे नहिं अदेय कछु तोही ॥

दोहा--दानिसिरोमनि कृपानिधि, नाथ कहौं सतभाउ॥
चाहौं तुम्हहिं समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ॥१४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले ❀ एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई ❀ नृप तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहि बिलोकि करजोरे ❀ देबि माँगु बरु जो रुचि तोरे ॥

जो बरु नाथ चतुर नृप माँगा ❀ सोइ कृपाल मोहि अतिप्रिय लागा ॥
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई ❀ जदपि भगतहित तुम्हहिं सुहाई ॥
तुम्ह ब्रह्मादिजनक जगस्वामी ❀ ब्रह्म सकल-उर-अंतरजामी ॥
अस समुझत मन संसय होई ❀ कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥
जे निज भगत नाथ तव अहहीं ❀ जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥

दोहा--सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निज चरन सनेहु ॥
सोइ बिबेकु सोइ रहनि प्रभु, हमहिं कृपा करि देहु ॥१५०॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बचरचना ❀ कृपासिंधु बोले मृदुबचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं ❀ मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥
मातु बिबेक अलौकिक तोरे ❀ कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी ❀ अउर एक बिनती प्रभु मोरी ॥
सुत बिषयक तव पद रति होऊ ❀ मोहि बड़ मूढ़ कहइ किन कोऊ ॥
मनिबिनु फनि जिमिजलबिनुमीना ❀ ममजीवन तिमि तुम्हहिं अधीना ॥
अस बरु माँगि चरन गहि रहेऊ ❀ एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी ❀ बसहु जाइ सुर-पति-रजधानी ॥

सोरठा--तहँ करि भोग बिसाल, तात गये कछु काल पुनि ॥
होइहहु अवधभुआल, तब मैं होब तुम्हार सुत ॥१५१॥

इच्छामय नरबेष सवाँरे ❀ होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥
अंसन्ह सहित देह धरि ताता ❀ करिहउँ चरित भगत-सुख-दाता ॥
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी ❀ भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥
आदिसक्ति जेहि जग उपजाया ❀ सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❀ सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना ❀ अंतरधान भये भगवाना ॥
दंपति उर धरि भगति कृपाला ❀ तेहि आस्रमनि बसे कछु काला ॥
समय पाइ तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह अमरावतिबासा ॥

दोहा--यह इतिहास पुनीति अति, उमहि कहा वृषकेतु ॥
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, राजजनम कर हेतु ॥१५२॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ❀ जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥

बिस्वबिदित एक कैकय देसू ❀ सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥
धरमधुरंधर नीतिनिधाना ❀ तेज प्रताप सील बलवाना ॥
तेहि के भये जुगलसुत बीरा ❀ सब-गुन-धाम महारन-धीरा ॥
राजधनी जो जेठ सुत आही ❀ नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा ❀ भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम समीती ❀ सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥
जेठ सुतहि राज नृप दीन्हा ❀ हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥

दोहा--जब प्रतापरबि भयउ नृप, फिरी दोहाई देस ॥
प्रजा पाल अति बेद बिधि, कतहुँ नहीं अघलेस ॥१५३॥

नृप - हित - कारकसचिवसयाना ❀ नाम धरमरुचि सुक्र समाना ॥
सचिव सयान बंधु बलबीरा ❀ आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा ❀ अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
सेन बिलोकि राउ हरषाना ❀ अरु बाजे गहगहे निसाना ॥
बिजय हेतु कटकई बनाई ❀ सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ॥
जहँ तहँ परी अनेक लराई ❀ जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे ❀ लेइ लेइ दंड छाँड़ि नृप दीन्हे ॥
सकल-अवनि-मंडल तेहि काला ❀ एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दोहा--स्ववस बिस्व करि बाहुबल, निज पुर कीन्ह प्रबेसु ॥
अरथ-धरम-कामादि सुख, सेवइ समय नरेसु ॥१५४॥

भूप - प्रतापभानु - बल पाई ❀ कामधेनु भइ भूमि सुहाई ॥
सब-दुख-बरजित प्रजा सुखारी ❀ धरमसील सुंदर नर नारी ॥
सचिव धरमरुचि हरि-पद-प्रीती ❀ नृप-हित-हेतु सिखव नित नीती ॥
गुरु सुर संत पितर महिदेवा ❀ करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥
भूप धरम जे बेद बखाने ❀ सकल करइ सादर सुख माने ॥
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना ❀ सुनइ सास्त्रबर बेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा ❀ सुमनबाटिका सुंदर बागा ॥
बिप्रभवन सुरभवन सुहाये ❀ सब तीरथन्ह बिचित्र बनाये ॥

दोहा--जहँ लगि कहे पुरान स्रुति, एक एक सब जाग ॥
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥१५५॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना ❀ भूप बिबेकी परमसुजाना ॥
करइ जे धरम करम मन बानी ❀ बासुदेव अरपित नृप ज्ञानी ॥
चढ़ि बरबाजि बार एक राजा ❀ मृगया कर सब साजि समाजा ॥
बिंध्याचल गँभीर बन गयऊ ❀ मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू ❀ जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू ॥
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं ❀ मनहुं क्रोधबस उगिलत नाहीं ॥
कोल-कराल-दसन-छबि गाई ❀ तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये ❀ चकित बिलोकत कान उठाये ॥

दोहा--नील महीधर सिखर सम, देखि बिसाल बराहु ॥
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप, हाँकि न होइ निबाहु १५६

आवत देखि अधिक रव बाजी ❀ चलेउ बराह मरुगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप सरसंधाना ❀ महि मिलि गयउ बिलोकत बाना ॥
तकि तकि तीर महीस चलावा ❀ करि छल सुअर सरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा ❀ रिसबस भूप चलेउ सँग लागा ॥
गयउ दूरि घन गहन बराहू ❀ जहँ नाहिं न गज-बाजि-निबाहू ॥
अति अकेल बन बिपुल कलेसू ❀ तदपि न मृगमग तजइ नरेसू ॥
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा ❀ भागि पैठ गिरगुहा गँभीरा ॥
अगम देखि नृप अति पछिताई ❀ फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥

दोहा--खेद खिन्न छुद्धिततृषित, राजा बाजिसमेत ॥
खोजत ब्याकुलसरितसर, जलबिनु भयउअचेत १५७

फिरत बिपिन आस्रम एक देखा ❀ तहँ बस नृपति कपट-मुनि-बेखा ॥
जासु देस नृप लीन्ह छुड़ाई ❀ समर सेन तजि गयउ पराई ॥
समय प्रतापभानु कर जानी ❀ आपन अति असमय अनुमानी ॥
गयउ न गृह मन बहुत गलानी ❀ मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥
रिस उर मारि रंक जिमि राजा ❀ बिपिन बसइ तापस के साजा ॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा ❀ यह प्रतापरबि तेहि तब चीन्हा ॥

राउ तृषित नहिं सो पहिचाना ❀ देखि सुबेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा ❀ परम चतुर न कहेउ निजनामा ॥

दोहा--भूपति तृषित बिलोकि तेहि, सरवर दीन्ह देखाइ ॥
मज्जनपान समेत हय, कीन्ह नृपति हरपाइ ॥१५८॥

गे स्रम सकल सुखी नृप भयऊ ❀ निजआस्रम तापस लेइ गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्तरबि जानी ❀ पुनि तापस बोलेउ मृदुबानी ॥
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेले ❀ सुंदर जुवा जीव परहेले ॥
चक्रबर्त्ति के लच्छन तोरे ❀ देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अवनीसा ❀ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरे परेउँ भुलाई ❀ बड़ भाग देखेउँ पद आई ॥
हम कहँ दुरलभ दरस तुम्हारा ❀ जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा ❀ जोजन सत्तरि नगर तुम्हारा ॥

दोहा--निसा घोर गंभीर बन, पंथ न सुनहु सुजान ।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह, जायहु होत बिहान ॥
तुलसी जसि भवितव्यता, तैसी मिलइ सहाइ ।
आपु न आवइ ताहि पहिं, ताहि तहाँ लेइ जाइ ॥१५९॥

भलेहि नाथ आयसु धरि सीसा ❀ बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही ❀ चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदुगिरा सुहाई ❀ जानि पिता प्रभु करउँ ढिठाई ॥
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी ❀ नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना ❀ भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा ❀ छल बल कीन्ह चहइ निज काजा
समुझि राजसुख दुखित अराती ❀ अवाँ अनल इव सुलगइ छाती ॥
सरल बचन नृप के सुनि काना ❀ बयर सँभारि हृदय हरषाना ॥

दोहा--कपट बोरि बानी मृदुल, बोलेउ जुगुति समेत ।
नाम हमार भिखारि अब, निर्धन रहित निकेत ॥१६०॥

कह नृप जे बिज्ञान निधाना ❀ तुम्ह सारिखे गलितअभिमाना ॥
रहहिं अपनपौ सदा दुराये ❀ सब बिधि कुसल कुबेष बनाये ॥

तेहि तें कहहिं संत स्रुति टेरे ❀ परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा ❀ होत बिरंचि सिवहि संदेहा ॥
जोऽसि सोऽसि तव चरन नमामी ❀ मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति कै देखी ❀ आपु बिषय बिस्वास बिसेखी ॥
सब प्रकार राजहि अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला ❀ इहाँ बसत बीते बहु काला ॥

दोहा--अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ, मैं न जनावउँ काहु ।
लोकमान्यता अनलसम, कर तपकानन दाहु ॥

सोरठा--तुलसी देखि सुबेखु, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ।
सुन्दरकेकिहिपेखु,बचनसुधासमअसनअहि॥१६१॥

तातें गुपुत रहउँ जग माहीं ❀ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
प्रभु जानत सब बिनहि जनाये ❀ कहहु कवन सिधि लोक रिझाये ॥
तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरे ❀ प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे ॥
अब जौं तात दुरावउँ तोही ❀ दारुन दोष घटइ अति मोही ॥
जिमि जिमि तापस कथइ उदासा ❀ तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥
देखा स्वबस करम-मन-बानी ❀ तब बोला तापस बगध्यानी ॥
नाम हमार एकतनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाइ ॥
कहहु नाम कर अरथ बखानी ❀ मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दोहा--आदि सृष्टि उपजी जबहि, तब उतपति भइ मोरि ।
नाम एकतनु हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनि आचरजु करहु मन माहीं ❀ सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तपबल तें जग सृजइ बिधाता ❀ तपबल बिष्णु भये परित्राता ॥
तपबल संभु करहिं संहारा ❀ तप तें अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा ❀ कथा पुरातन कहइ सो लागा ॥
करम धरम इतिहास अनेका ❀ करइ निरूपन बिरति बिबेका ॥
उद्भव–पालन – प्रलय – कहानी ❀ कहेसि अमित आचरज बखानी ॥
सुनि महीप तापसबस भयऊ ❀ आपन नाम कहन तब लयऊ ॥
कह तापस नृप जानउँ तोही ❀ कीन्हेउ कपट लाग भल मोही ॥

सोरठा--सुनु महीस असि नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहि तोहिपर अतिप्रीति, सोइ चतुरता बिचारि तव ॥१६३॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेसा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥
गुरुप्रसाद सब जानिअ राजा ❀ कहिअ न आपन जानि अकाजा ॥
देखि तात तव सहज सुधाई ❀ प्रीतिप्रतीति नीति निपुनाई ॥
उपजि परी ममता मन मोरे ❀ कहउँ कथा निज पूछे तोरे ॥
अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं ❀ माँगु जो भूप भाव मन माहीं ॥
सुनि सुबचन भूपति हरषाना ❀ गहि पद बिनय कीन्हि बिधिनाना ॥
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे ❀ चारि पदारथ करतल मोरे ॥
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी ❀ माँगि अगम बरु होउँ असोकी ॥

दोहा--जरा मरन दुख रहित तनु, समर जितइ जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि, राज कलप सत होउ ॥१६४॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ ❀ कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥
कालउ तव पद नाइहि सीसा ❀ एक बिप्रकुल छाँड़ि महीसा ॥
तपबल बिप्र सदा बरिआरा ❀ तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा ❀ तौ तव बस बिधि बिष्णु महेसा ॥
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई ❀ सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥
बिप्रस्राप बिनु सुनु महिपाला ❀ तोर नास नहिं कवनेहुँ काला ॥
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू ❀ नाथ न होइ मोर अब नासू ॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❀ मो कहँ सर्बकाल कल्याना ॥

दोहा--एवमस्तु कहि कपटमुनि, बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज, कहहु त हमहिं न खोरि ॥१६५॥

तातें मैं तोहि बरजउँ राजा ❀ कहे कथा तव परम अकाजा ॥
छठें स्रवन यह परत कहानी ❀ नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥
यह प्रगटे अथवा द्विजसापा ❀ नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
आन उपाय निधन तव नाहीं ❀ जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥
सत्य नाथ पद गहि नृप भाखा ❀ द्विज-गुरु-कोप कहहु को राखा ॥
राखइ गुरु जौं कोप बिधाता ❀ गुरुबिरोध नहिं कोउ जगत्राता ॥

जौं न चलब हम कहे तुम्हारे ❀ होउ नास नहिं सोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा ❀ प्रभु महि-देव-स्राप अतिघोरा ॥

दोहा-होहिं बिप्र बस कवन बिधि, कहहु कृपा करि सोउ ।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज, हितू न देखउँ कोउ ॥१६६॥

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं ❀ कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥
अहइ एक अति सुगम उपाई ❀ तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥
मम आधीन जुगुति नृप सोई ❀ मोर जाब तव नगर न होई ॥
आजु लगे अरु जब तें भयऊँ ❀ काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥
जौं न जाउँ तव होइ अकाजू ❀ बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी ❀ नाथ निगम असि नीति बखानी ॥
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं ❀ गिरि निज सिरन्हि सदा तृन धरहीं ॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू ❀ संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥

दोहा--अस कहि गहे नरेस पद, स्वामी होहु कृपाल ।
मोहि लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयाल ॥१६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना ❀ बोला तापस कपट प्रबीना ॥
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही ❀ जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥
अवसि काज मैं करिहउँ तोरा ❀ मन तन बचन भगत तैं मोरा ॥
जोग जुगुति तप मंत्रप्रभाऊ ❀ फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ ॥
जौं नरेस मैं करउँ रसोई ❀ तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई ॥
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई ❀ सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जोऊ ❀ तव बस होइ भूप सुनु सोऊ ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू ❀ संबत भरि संकलप करेहू ॥

दोहा--नित नूतन द्विज सहस सत, बरेहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकलप लगि, दिनहिं करब ज्योंनार ॥१६८॥

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें ❀ होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें ॥
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा ❀ तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा ॥
अउर एक तोहि कहउँ लखाऊ ❀ मैं एहि बेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया ❀ हरि आनब मैं करि निज माया ॥

तपबल तेहि करि आपु समाना ❀ रखिहउँ इहाँ बरष परवाना ॥
मैं धरि तासु बेष सुनु राजा ❀ सब बिधि तोर सवाँरब काजा ॥
गइ निसि बहुत सयन अब कीजे ❀ मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपबल तोहि तुरग समेता ❀ पहुँचइहउँ सोवतहिं निकेता ॥

दोहा--मैं आउब सोइ बेष धरि, पहिचानेउ तब मोहि ।
जब एकांत बुलाइ सब, कथा सुनावउँ तोहि ॥१६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी ❀ आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
स्रमित भूप निद्रा अति आई ❀ सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवा ❀ जेहि सूकर होइ नृपहि भुलावा ॥
परममित्र तापसनृप केरा ❀ जानइ सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के सत सुत अरु दस भाई ❀ खल अति अजय देव-दुख-दाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❀ बिप्र संत सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा ❀ तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ ❀ भावी बस न जानु कछु राऊ ॥

दोहा--रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु ।
अजहुँ देत दुख रबिससिहि, सिर अवसेषित राहु ॥१७०॥

तापस नृपनिज सखहिं निहारी ❀ हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई ❀ जातुधानु बोला सुख पाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा ❀ जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
परिहरि सोचि रहहु तुम्ह सोई ❀ बिनु औषध बिआधि बिधि खोई ॥
कुलसमेत रिपुमूल बहाई ❀ चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापसनृपहि बहुत परितोषी ❀ चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि बाजिसमेता ❀ पहुँचायेसि छन माँझ निकेता ॥
नृपहि नारि पहिं सयन कराई ❀ हयगृह बाँधेसि बाजि बनाई ॥

दोहा--राजा के उपरोहितहि, हरि लेइ गयउ बहोरि ।
लेइ राखेसि गिरिखोह महँ, माया करि मति भोरि ॥१७१॥

आपु बिरचि उपरोहितरूपा ❀ परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनभये बिहाना ❀ देखि भवन अति अचरजु माना ॥

मुनिमहिमा मन महँ अनुमानी ❀ उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही ❀ पुर नरनारि न जानेउ केही ॥
गये जामजुग भूपति आवा ❀ घर घर उत्सव बाज बधावा ॥
उपरोहितहि देख जब राजा ❀ चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा ॥
जुगसम नृपहि गये दिन तीनी ❀ कपटी मुनिपद रहि मति लीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥

दोहा--नृप हरषेउ पहिचानि गुरु, भ्रमवस रहा न चेत ।
बरे तुरत सतसहस बर, बिप्र कुटुंब समेत ॥१७२॥

उपरोहित जेवनार बनाई ❀ छ रस चारि बिधि जसि स्रुति गाई ॥
मायामय तेहि कीन्ह रसोई ❀ बिंजन बहु गनि सकइ न कोई ॥
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा ❀ तेहि महँ बिप्रमासु खल साँधा ॥
भोजन कहँ सब बिप्र बोलाये ❀ पग पषारि सादर बैठाये ॥
परुसन जबहिं लाग महिपाला ❀ भइ अकासबानी तेहि काला ॥
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू ❀ है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू ॥
भयउ रसोईं भू - सुर - मासू ❀ सब द्विज उठे मानि बिस्वासू ॥
भूप बिकल मति मोह भुलानी ❀ भावी बस न आव मुख बानी ॥

दोहा--बोले बिप्र सकोप तब, नहिं कछु कीन्ह बिचारु ।
जाइ निसाचर होहु नृप, मूढ़ सहित परिवारु ॥१७३॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई ❀ घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धरम हमारा ❀ जइहसि तैं समेत परिवारा ॥
संवत मध्य नास तव होऊ ❀ जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥
नृप सुनि साप बिकल अति त्रासा ❀ भइ बहोरि बरगिरा अकासा ॥
बिप्रहु साप बिचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी ❀ भूप गयउ जहँ भोजनखानी ॥
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा ❀ फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई ❀ त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई ॥

दोहा--भूपति भावी मिटइ नहिं, जदपि न दूपन तोर ।
किये अन्यथा होइ नहिं बिप्रसाप अतिघोर ॥१७४॥

अथ क्षेपक

जो करि कपट छलै जग काहू ❀ देइहि ईश अधम गति वाहू ॥
विप्र वचन सुनि नृप अकुलाना ❀ उठिपुनि विनयकीन्ह विधिनाना ॥
पुनि पुनि पद गहि कहेउ भुआला ❀ शाप अनुग्रह करहु कृपाला ॥
जब तुम होब निशाचर जाई ❀ ब्रह्म वंश तामस तनु पाई ॥
अजर अमर अतुलित प्रभुताई ❀ जग विख्यात वीर दोउ भाई ॥
होइहिं जबहिं पराभव चारी ❀ तब तुम सेउब देव पुरारी ॥
शिव प्रसाद बर पाइ बहोरी ❀ होइहैं सब जग प्रभुता तोरी ॥
मिलहिं तोहिं तब सनत कुमारा ❀ तब तुम समुझब शाप हमारा ॥

दोहा—तुम पूछब विस्तार निज, सादर सुनहु नरेश ।
सब परिवार उधार तब, होइहैं मुनि उपदेश ॥

इति क्षेपक

अस कहि सब महिदेव सिधाये ❀ समाचार पुरलोगन्ह पाये ॥
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं ❀ विचरत हंस काग किय जेहीं ॥
उपरोहितहि भवन पहुँचाई ❀ असुर तापसहि खबरि जनाई ॥
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये ❀ सजि सजि सेन भूप सब धाये ॥
घेरेन्हि नगर निसान बजाई ❀ विविधभाँति नित होइ लराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करनी ❀ बंधुसमेत परेउ नृप धरनी ॥
सत्य-केतु-कुल कोउ नहिं बाँचा ❀ विप्रसाप किमि होइ असाँचा ॥
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई ❀ निज पुर गवने जय जस पाई ॥

दोहा--भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता वाम ।
धूरि मेरुसम जनक जम, ताहि ब्यालसम दाम ॥१७५॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा ❀ भयउ निसाचर सहित समाजा ॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा ❀ रावन नाम बीर बरिबंडा ॥
भूपअनुज अरि - मर्दन - नामा ❀ भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू ❀ भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥
नाम बिभीषन जेहि जगु जाना ❀ बिष्णुभगत बिज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ❀ भये निसाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिस अनेका ❀ कुटिल भयंकर बिगतबिबेका ॥

कृपारहित हिंसक सब पापी ❀ बरनि न जाइ बिस्वपरितापी ॥

दोहा--उपजे जदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर-साप-बस, भये सकल अघरूप ॥१७६॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिउँ भाई ❀ परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता ❀ माँगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि बिनती पद गहि दससीसा ❀ बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥
हम काहू के मरहिं न मारे ❀ बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा ❀ मैं ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ ❀ तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥
जौं एहि खल नित करब अहारू ❀ होइहि सब उजारि संसारू ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी ❀ माँगेसि नींद मास षट केरी ॥

दोहा--गए बिभीषन पास पुनि, कहेउ पुत्र बर माँगु ॥
तेहि माँगेउ भगवंत-पद, कमल अमल अनुरागु ॥१७७॥

तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये ❀ हरषित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मंदोदरिनामा ❀ परमसुंदरी नारिललामा ॥
सोइ मय दीन्हि रावनहि आनी ❀ होइहि जातुधानपति जानी ॥
हरषित भयउ नारि भलि पाई ❀ पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मँझारी ❀ बिधिनिर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मयदानव बहुरि सवाँरा ❀ कनकरचित मनिभवन अपारा ॥
भोगावति जस अहि-कुल-बासा ❀ अमरावति जसि सक्रनिवासा ॥
तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका ❀ जगबिख्यात नाम तेहि लंका ॥

दोहा--खाईं सिंधु गँभीर अति, चारिहु दिसि फिरि आव ।
कनककोट मनिखचित दृढ़, बरनि न जाइ बनाव ॥
हरिप्रेरित जेहि कलप जोइ, जातुधानपति होइ ।
सूर प्रतापी अतुलबल, दलसमेत बस सोइ ॥१७८॥

रहे तहाँ निसिचर भट भारे ❀ ते सब सुरन्ह समर संघारे ॥
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे ❀ रच्छक कोटि जच्छपति केरे ॥
दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई ❀ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥

देखि बिकट भट बड़ि कटकाई ❀ जच्छ जीव लेइ गयउ पराई ॥
फिरि सब नगर दसानन देखा ❀ गयउ सोच सुख भयउ बिसेखा ॥
सुंदर सहज अगम अनुमानी ❀ कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥
जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे ❀ सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
एक बार कुबेर पर धावा ❀ पुष्पकजान जीति लेइ आवा ॥

दोहा--कौतुकही कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥
मनहुँ तौलि निज बाहुबल, चला बहुत सुख पाइ ॥१७९॥

सुख संपति सुत सेन सहाई ❀ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुम्भकरन अस भ्राता ❀ जेहि कहँ नहिं प्रतिभट जग जाता ॥
करइ पान सोवइ षटमासा ❀ जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा ॥
जौं दिन प्रति अहार कर सोई ❀ बिस्व बेगि सब चौपट होई ॥
समरधीर नहिं जाइ बखाना ❀ तेहि सम अमित बीर बलवाना ॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू ❀ भट महँ प्रथम लीक जग जासू ॥
जेहि न होइ रन सनमुख कोई ❀ सुरपुर नितहि परावन होई ॥

दोहा--कुमुख अकंपन कुलिसरद, धूमकेतु अतिकाय ।
एक एक जग जीति सक, ऐसे सु-भट-निकाय॥१८०॥

कामरूप जानहिं सब माया ❀ सपनेहुँ जिन्ह के धरम न दाया ॥
दसमुख बैठ सभा एक बारा ❀ देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुतसमूह जन परिजन नाती ❀ गनइ को पार निसाचरजाती ॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला बचन क्रोध-मद-सानी ॥
सुनहु सकल रजनी-चर-जूथा ❀ हमरे बैरी बिबुधबरूथा ॥
ते सनमुख नहिं करहिं लराई ❀ देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥
तिन्ह कर मरन एक बिधि होई ❀ कहउँ बुझाई सुनहु अब सोई ॥
द्विजभोजन मख होम सराधा ❀ सब कै जाइ करहु तुम बाधा ॥

दोहा--छुधाछीन बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिं आइ ।
तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ, भली भाँति अपनाइ ॥१८१॥

मेघनाथ कहँ पुनि हँकरावा ❀ दीन्ही सिख बल बैयरु बढ़ावा ॥

जे सुर समरधीर बलवाना ❀ जिन्हके लरिबे कर अभिमाना ॥
तिन्हहिं जीति रन आनेसु बाँधी ❀ उठि सुत पितुअनुसासन काँधी ॥
एहि बिधि सबहीं आज्ञा दीन्ही ❀ आपुनि चलेउ गदा कर लीन्ही ॥
चलत दसानन डोलति अवनी ❀ गर्जत गर्भ स्रवहिं सुररवनी ॥
रावन आवत सुनेउ सकोहा ❀ देवन्ह तके मेरु-गिरि-खोहा ॥
दिगपालन्ह के लोक सुहाये ❀ सूने सकल दसानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी ❀ देइ देवतन्ह गारि प्रचारी ॥
रन-मद-मत्त फिरइ जग धावा ❀ प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥
रबि ससि पवन बरुन धनधारी ❀ अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❀ हठि सबही के पंथहि लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी ❀ दस-मुख-बस बर्ती नर नारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता ❀ नवहिं आइ नित चरन बिनीता ॥

दोहा--भुजबल बिस्व बस्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र ।
मंडलीकमनि रावन, राज करइ निजमंत्र ॥
देव-जच्छ-गंधर्व-नर-किन्नर-नाग-कुमारि ।
जीति बरीं निज-बाहु-बल, बहु-सुंदर-बर-नारि ॥१८२॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ ❀ सो सब जनु पहिलेहि करि रहेऊ ॥
प्रथमहिं जिन्हकहँ आयसु दीन्हा ❀ तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
देखत भीमरूप सब पापी ❀ निसि - चर - निकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुरनिकाया ❀ नानारूप धरहि करि माया ॥
जेहि बिधि होइ धरम निर्मूला ❀ सो सब करहिं बेदप्रतिकूला ॥
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं ❀ नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥
सुभ आचरनु कतहुँ नहिं होई ❀ देव बिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभगति जग्य जप दाना ❀ सपनेहुँ सुनिय न बेद पुराना ॥

छंद—जप जोग बिरागा तप मखभागा स्रवन सुनइ दससीसा ।
आपुन उठि धावइ रहइ न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धरम सुनिय नहिं काना ।
तेहि बहु बिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना ॥

सोरठा--बरनि न जाइ अनीति, घोर निसाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति, तिन्ह के पापहिं कवनि मिति॥१८३॥

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ❀ जे लंपट पर-धन पर-दारा॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ❀ साधुन्ह सन करवावहिं सेवा॥
जिन्ह के यह आचरन भवानी ❀ ते जानहु निसिचर सब प्रानी॥
अतिसय देखि धरम कै ग्लानी ❀ परमसभीत धरा अकुलानी॥
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही ❀ जस मोहि गरुअ एक परद्रोही॥
सकलधरम देखइ बिपरीता ❀ कहि न सकइ रावन भयभीता॥
धेनुरूप धरि हृदय बिचारी ❀ गई तहाँ जहँ सुर-मुनि-झारी॥
निजसंताप सुनाएसि रोई ❀ काहू तें कछु काज न होई॥

छंद—सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका।
सँग गो-तनु-धारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई।
जा करि तें दासी सो अबिनासी हमरउ तोर सहाई॥

सोरठा--धरनि धरहि मन धीर, कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर, प्रभु भंजहिं दारुन बिपति॥१८४॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा ❀ कहँ पाइय प्रभु करिअ पुकारा॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई ❀ कोउ कह पयनिधि महँ बस सोई॥
जा के हृदय भगति जसि प्रीती ❀ प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती॥
तेहि समाज गिरजा मैं रहेऊँ ❀ अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना ❀ प्रेम तें प्रकट होहिं मैं जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं ❀ कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥
अग-जग-मय सब रहित बिरागी ❀ प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी॥
मोर बचन सबके मन माना ❀ साधु साधु करि ब्रह्म बखाना॥

दोहा--सुनि बिरंचि मन हरष तन, पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोर कर, सावधान मतिधीर॥१८५॥

छंद—जय जय सुरनायक जन-सुख-दायक प्रनतपाल भगवंता।
गो-द्विज-हित-कारी जय असुरारी सिंधु-सुता-प्रिय-कंता॥

पालन सुर धरनी अद्भुतकरनी मरमु न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥
जय जय अबिनासी सब-घट-बासी व्यापक परमानंदा ।
अबिगत गोतीतं चरितपुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अतिअनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा ।
निसिबासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव-भय-भंजन मुनि-मन-रंजन खंडन बिपतिबरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल-सुर-जूथा ॥
सारद स्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव-बारिधि-मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा ॥

दोहा--जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह ।
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरनि सोकसंदेह ॥१८६॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा ❀ तुम्हहि लागि धरिहउँ नरबेसा ॥
अंसन्ह सहित मनुजअवतारा ❀ लेइहउँ दिन - कर-बंस-उदारा ॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिन्ह कहँ मैं पूरब बर दीन्हा ॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा ❀ कोसलपुरी प्रगट नरभूपा ॥
तिन्ह के गृह अवतरिहौं जाई ❀ रघु-कुल-तिलक सो चारिउ भाई ॥
नारदबचन सत्य सब करिहौं ❀ परम सक्तिसमेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमिगरुआई ❀ निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा ❀ अभय भई भरोस जिय आवा ॥

दोहा--निज लोकहि बिरंचि गे, देवन्ह इहइ सिखाइ ।
बानरतनु धरि धरनि महँ, हरिपद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित मन कहँ बिस्रामा ॥

जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ❀ हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥
बन-चर-देह धरी छिति माहीं ❀ अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥
गिरि-तरु-नख-आयुध सब बीरा ❀ हरिमारग चितवहिं मतिधीरा ॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी ❀ रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥

अथ क्षेपक

यह चरित्र दशकन्धर जाना ❀ सूर्य बंश से हानि न माना ॥
नाम दिलीप भूप जब भयऊ ❀ तिन समीप रावण तब गयऊ ॥
विप्ररूप धरि रावण आवा ❀ पूजा करि रानिन बैठावा ॥
तब रावण प्रगिटिसि निज देहा ❀ रानिन उर भा अति सन्देहा ॥
भाजि गई सब मंदिर माहीं ❀ पुनि सो आवा भूपति पाहीं ॥
देखा नृप हरि ध्यान लगावा ❀ इक चरित्र तहँ भूप दिखावा ॥
उत्तर दिशि इक कानन जाई ❀ घेरेसि सिंह धेनु बरिआई ॥
कियो भाँति जब धेनु लवाई ❀ निज मुख आरति कूक सुनाई ॥

दोहा--धर्मधुरंधर नीति युत, सुनु दिलीप महिपाल ।
रक्षा मम तुम करहु अब, सिंहमार तत्काल ॥

सुनि महीप यह आरति बानी ❀ तंदुल इक मार्यो शर तानी ॥
मंत्र पढ़ा तंदुल शर आवा ❀ तुरत सिंह कहँ मार गिरावा ॥
धरि बटुरूप पूछ सब काहू ❀ उत्तर दिशि गा निशिचर नाहू ॥
मरा सिंह लखि निज गृह आवा ❀ देखि अमित बल मन भय पावा ॥
जब दिलीप निज मंदिर आये ❀ रानिन ने निज वचन सुहाये ॥
अमित क्रोध करि कर लै पानी ❀ मंत्र पढ़ा मन यह अनुमानी ॥
गिरी त्रिकूट सह लंका सारी ❀ बोरेहु सब कहँ सिन्धु मझारी ॥
दक्षिण दिशि नृप जलहिं चलावा ❀ बहुसर होइ लंका कहँ आवा ॥

दोहा--तोड़ फोड़ तिहि लंक को, कछुक छुड़ाइस आय ।
मन्दोदरिअति दीन ह्वै, बचन कहेसि बिलखाय ॥

अवधि नृपति की खैंचि दुहाई ❀ लंका कहँ उन लीन्ह बचाई ॥
तब शर निकर नृपति तिहि ठामा ❀ बीर धुरीण महा बलधामा ॥
पुनि बहु दिवस गये रघुराजा ❀ प्रगटे अवध कीन्ह यह काजा ॥

पवन मंत्र पढ़ बाण चलावा ❀ लंकागढ़ कहँ कछुक गिरावा ॥
मयतनया बिनती बहु कीन्हा ❀ भइ बकसीस छाँड़ि शर दीन्हा ॥
पुनि अज भये नृपति तिहि ठामा ❀ बीर धुरीण महा बलधामा ॥
कछु लंका उन फोरि ढहाई ❀ मयतनया पुनि फेरि चलाई ॥
अज सुत दशरथ भये नृपाला ❀ रावण उर भा शोच कराला ॥

दोह--लग्यो तपस्या करन अति, बिनु अहार बिनु वारि ।
बिधिलख तप तिहि असुर कर, बोले बचन सँभारि ॥

पुत्र माँगु मोसो बरदाना ❀ जो तेरे चित महँ अनुमाना ॥
रावण तब बोला मुसुकाई ❀ देहु मोहिं बरदान सुहाई ॥
दशरथ अंश नाहिं सुत होई ❀ धाता तुम राखहु जनि गोई ॥
तब ब्रह्मा निज मन दुख पावा ❀ एवमस्तु कह ताहि सुनावा ॥
हुइ प्रसन्न रावण गृह आवा ❀ कोशलपुर कहँ पुनि किय धावा ॥
पहुँचि तहाँ बहु कीन उपाई ❀ कौशिल्या कहँ लीन चुराई ॥
गयो सिंधु पहँ मच्छ बुलायो ❀ सौंपि ताहि निज घर पुनि आयो ॥
बिधि रखि देह तुरत रावण कर ❀ कन्या जाय लीन्ह तेहिते वर ॥

दोहा--मंजूषा में बन्द करि, गे बिरंचि निज लोक ।
रोदन इमि कन्या करै, जिमि बन कूकै कोक ॥

तब सुमन्त बन में चलि आवा ❀ रोदन शब्द सुना तिहि ठावा ॥
बलकर खोलेसि जाय किवारी ❀ कौशल्या यह गिरा उचारी ॥
मोहि लै चलहु पिता के धामा ❀ तब सुमन्त लै गयउ ललामा ॥
देख सुमन्तहिं नृपति उचारे ❀ को हौ तुम कहु भेद दुलारे ॥
अवधपुरी दशरथ भूपाला ❀ मंत्री तिनकर हौं भूआला ॥
सुनि दशरथहिं नृपति बुलवायो ❀ कन्या दे निज मन सुख पायो ॥

इति क्षेपक

यह सब रुचिर चरित मैं भाषा ❀ अब सो सुनहु जो बाचहिं राषा ॥
अवधपुरी रघु-कुल-मनि-राऊ ❀ वेदबिदित तेहि दसरथ नाऊ ॥
धरम-धुरंधर गुननिधि ज्ञानी ❀ हृदय भगति मति सारँगपानी ॥

दोहा--कौसल्यादि नारि प्रिय, सब आचरन पुनीत ।

पतिअनुकूल प्रेम दृढ़, हरि-पद-कमल बिनीत ॥१८८॥

एक बार भूपति मन माहीं ❀ भइ गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गयेउ तुरत महिपाला ❀ चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥
निज दुख सुख सब गुरुहि सुनायउ ❀ कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी ❀ त्रि-भुवन-बिदित भगत-भय-हारी ॥
सृंगीरिषिहि बसिष्ठ बोलावा ❀ पुत्रकाम सुभ जज्ञ करावा ॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे ❀ प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे ॥
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा ❀ सकलकाज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई ❀ जथाजोग जेहि भाग बनाई ॥

दोहा--तब अदृश्य भये पावक, सकल सभहि समुझाइ।
परमानंदमगन नृप, हरष न हृदय समाइ ॥१८९॥

तबहि राय प्रियनारि बोलाई ❀ कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥
अरधभाग कौसल्यहि दीन्हा ❀ उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ ❀ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
कौसल्या कैकई हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
एहि बिधि गर्भसहित सब नारी ❀ भई हृदय हरषित सुख भारी ॥
जा दिन तें हरि गर्भहि आये ❀ सकललोक सुख संपति छाये ॥
मंदिर महँ सब राजहिं रानी ❀ सोभा सील तेज की खानी ॥
सुखजुत कछुक काल चलि गयऊ ❀ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

दोहा--जोग लगन ग्रह बार तिथि, सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हरषजुत, रामजनम सुखमूल ॥१९०॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीता ❀ सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्य दिवस अति सीत न घामा ❀ पावन काल लोकबिस्रामा ॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ ❀ हरषित सुर संतन्ह मन चाऊ ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा ❀ स्रवहिं सकल सरितामृतधारा ॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुर साजि बिमाना ॥
गगन बिमल संकुल सुरजूथा ❀ गावहिं गुन गन्धर्बबरूथा ॥
बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी ❀ गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥

अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहु बिधि लावहिं निज-निज-सेवा ॥

दोहा--सुर समूह बिनती करि, पहुँचे निज-निज-धाम ।
जगनिवास प्रभु प्रगटे, अखिल-लोक-बिस्राम ॥१९१॥

छन्द—भये प्रगट कृपाला परम दयाला कौसल्या-हित-कारी ।
हरषित महतारी मुनि-मन-हारी अद्भुतरूप बिचारी ॥
लोचनअभिरामं तनुघनस्यामं निजआयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयनबिसाला सोभासिंधु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहिं बिधि करउँ अनंता ।
माया-गुन-ज्ञानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
करुना-सुख-सागर सब-गुन-आगर जेहिं गावहिं स्रुति संता ।
सो मम हित लागी जनअनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुतबिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजिय सिसुलीला अति-प्रिय-सीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दोहा--बिप्र-धेनु-सुर-संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज-इच्छा-निर्मित-तन, माया-गुन-गो-पार ॥१९२॥

सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी ❀ संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी ❀ आनँदमगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजनम सुनि काना ❀ मानहुँ ब्रह्मानन्दसमाना ॥
परमप्रेम मन पुलक सरीरा ❀ चाहत उठन करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई ❀ मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानन्द पूरि मन राजा ❀ कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ❀ आये द्विजन्ह सहित नृप द्वारा ॥

अनुपम बालक देखिन्हि जाई ❀ रूपरासि गुन कहि न सिराई ॥
दोहा--तब नंदीमुख स्राद्ध करि, जातकरम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि, नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥१९३॥
ध्वज पताक तोरन पुर छावा ❀ कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥
सुमन बृष्टि अकास तें होई ❀ ब्रह्मानन्दमगन सब लोई ॥
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाई ❀ सहज सिंगार किये उठि धाई ॥
कनककलस मङ्गल भरि थारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरति नेवछावरि करहीं ❀ बार बार सिसुचरननिह परहीं ॥
मागध सुत बन्दि गुनगायक ❀ पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सरबस दान दीन्ह सब काहू ❀ जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृग मद-चन्दन-कुंकुम-कीचा ❀ मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ॥
दोहा--गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रगटे सुखमाकंद ॥
हरषवंत सब जहँ तहँ, नगर नारि-नर-बृंद ॥१९४॥
कैकयसुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुंदर सुत जनमत भइँ ओऊ ॥
वोह सुख संपति समय समाजा ❀ कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥
अवध पुरी सोहइ एहि भाँति ❀ प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥
अगरधूप बहु जनु अँधियारी ❀ उडहि अबीर संध्या अनुमानी ॥
मंदिर-मनि-समूह जनु तारा ❀ नृप-गृह-कलस सो इंदु उदारा ॥
भवन-बेद-धुनि अति मृदु बानी ❀ जनु खग-मुखर-समय जनु सानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना ❀ एक मास तेइ जात न जाना ॥
दोहा--मासदिवस कर दिवस भा, मरम न जानइ कोइ ॥
रथसमेत रबि थाकेउ, निसा कवन बिधि होइ ॥१९५॥
यह रहस्य काहू नहिं जाना ❀ दिनमनि चले करत गुनगाना ॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❀ चले भवन बरनत निज भागा ॥
अउरउ एक कहउँ निज चोरी ❀ सुनुगिरिजा अतिदृढ़ मति तोरी ॥
काकभुसुंडि संग हम दोऊ ❀ मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥
परमानंद प्रेम-सुख-फूले ❀ बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥

यह सुभ चरित जान पै सोई ❀ कृपा राम कै जापर होई ॥
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा ❀ दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा ❀ दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा ॥

दोहा--मन संतोष सबन्हि के जँह तहँ देहिं असीस ॥
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस ॥१९६॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँति ❀ जात न जानिय दिन अरु राती ॥
नामकरन कर अवसर जानी ❀ भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाखा ❀ धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा ॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा ❀ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥
जो आनंदसिंधु सुखरासी ❀ सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा ❀ अखिललोक दायक बिस्रामा ॥
बिस्वभरन पोषन कर जोई ❀ ता कर नाम भरत अस होई ॥
जा के सुमिरन तें रिपुनासा ❀ नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥

दोहा--लच्छन धाम रामप्रिय, सकल-जगत-आधार ॥
गुरु बसिष्ठ तेहि राखा, लछिमन नाम उदार ॥१९७॥

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी ❀ बेदतत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिधन जनसरबस सिव प्राना ❀ बाल-केलि-रस तेहि सुख माना ॥
बारेहि तें निज हित पति जानी ❀ लछिमन राम-चरन-रति मानी ॥
भरत सत्रुहन दूनउ भाई ❀ प्रभुसेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी ❀ निरखहिं छवि जननी तृन तोरी ॥
चारिउ सील-रूप-गुन-धामा ❀ तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा ❀ सूचत किरन मनोहर हासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बरपलना ❀ मातु दुलारहिं कहि प्रिय ललना ॥

दोहा--ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन बिगतबिनोद ॥
सो अज प्रेम-भगति-बस, कौसल्या के गोद ॥१९८॥

काम-कोटि-छवि स्यामसरीरा ❀ नील कंज बारिद गंभीरा ॥
अरुन-चरन-पंकज-नखजोती ❀ कमलदलन्हि बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहइ ❀ नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहइ ॥

कटि किंकिनि उदर त्रय रेखा ❀ नाभि गँभीर जान जिन्ह देखा ॥
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी ❀ हिय हरिनख अति सोभा रूरी ॥
उर मनिहार पदिक की सोभा ❀ बिप्रचरन देखत मन लोभा ॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमित-मदन - छवि छाई ॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे ❀ नासा तिलक को बरनइ पारे ॥
सुंदर स्रवन सुचारु कपोला ❀ अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे ❀ बहु प्रकार रचि मातु सवाँरे ॥
पीत झंगुलिया तनु पहिराई ❀ जानु-पानि-बिचरनि मोहि भाई ॥
रूप सकहिं नहिं कहि स्रुति सेखा ❀ सो जानहिं सपनेहुँ जिन्ह देखा ॥

दोहा--सुखसंदोह मोहपर, ग्यान-गिरा-गोतीत ।
दंपति परम प्रेमबस, कर सिसुचरित पुनीत ॥१९९॥

एहि बिधि राम जगत-पितु-माता ❀ कोसल-पुर-बासिन्ह सुखदाता ॥
जिन्ह रघुनाथचरन रति मानी ❀ तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
रघुपतिबिमुख जतन कर कोरी ❀ कवन सकइ भवबंधन छोरी ॥
जीव चराचर बस कै राखे ❀ सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
भृकुटिबिलास नचावइ ताही ❀ अस प्रभु छाड़ि भजिय कहु काही ॥
मन क्रम बचन छाडि चतुराई ❀ भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥
एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा ❀ सकल-नगर-बासिन्ह सुख दीन्हा ॥
लेइ उछंग कबहुँक हलरावइ ❀ कबहुँ पालने घालि झुलावइ ॥

दोहा--प्रेममगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान ।
सुत-सनेह-बस माता, बालचरित कर गान ॥२००॥

एक बार जननी अन्हवाये ❀ करि सिंगार पलना पौढ़ाये ॥
निज-कुल - इष्ट-देव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह असनाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढावा ❀ आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई ❀ भोजन करत देख सुत जाई ॥
गइ जननी सिसु पहिं भयभीता ❀ देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई ❀ हृदय कंप मन धीर न होई ॥
इहा उहाँ दुइ बालक देखा ❀ मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा ॥

देखि राम जननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

दोहा--दिखरावा मातहि निज, अदभुत रूप अखंड ।
रोम रोम प्रति लागे, कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥२०१॥

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन ❀ बहुगिरि सरितसिंधु महिकानन ॥
काल करम गुन ग्यान सुभाऊ ❀ सोउ देखा जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सब बिधि गाढी ❀ अतिसुभीत जोरे कर ठाढी ॥
देखा जीव नचावइ जाही ❀ देखी भगति जो छोरइ ताही ॥
तन पुलकित बचन मुख न आवा ❀ नयन मूँदि चरनहि सिरु नावा ॥
बिसमयवंति देखि महतारी ❀ भये बहुरि सिसुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाइ भय माना ❀ जगतपिता मैं सुत करि जाना ॥
हरि जननी बहुबिधि समुझाई ❀ यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई ॥

दोहा--बार बार कौसल्या, बिनय करइ कर जोरि ।
अब जनि कबहूँ ब्यापइ, प्रभु मोहि माया तोरि ॥२०२॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा ❀ अति आनँद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥
कछुक काल बीते सब भाई ❀ बड़े भये परिजन-सुख-दाई ॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई ❀ बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥
परम मनोहर चरित अपारा ❀ करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन-क्रम-बचन-अगोचर जोई ❀ दसरथअजिर बिचर प्रभु सोई ॥
भोजन करत बोल जब राजा ❀ नहिं आवत तजि बालसमाजा ॥
कौसल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई ॥
निगम नेति सिव अंत न पावा ❀ ताहि धरइ जननी हठि धावा ॥
धूसर धूरि भरे तनु आये ❀ भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥

दोहा--भोजन करत चपल चित, इत उत अवसरु पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख, दधिओदन लपटाइ ॥२०३॥

बालचरित अतिसरल सुहाये ❀ सारद सेष संभु स्रुति गाये ॥
जिन्ह कर मनइन्ह सन नहिंराता ❀ ते जन बंचित किए बिधाता ॥
भए कुमार जबहिं सब भ्राता ❀ दीन्ह जनेऊ गुरु-पितु-माता ॥
गुरुगृह गए पढ़न रघुराई ❀ अलप काल बिद्या सब आई ॥

जाकी सहज स्वास स्रुति चारी ❀ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
बिद्या-विनय-निपुन गुनसीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
करतल बान धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा ॥
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई ❀ थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥

दोहा--कोसल-पुर-बासी नर, नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ तें प्रिय लागत, सब कहँ राम कृपाल ॥२०४॥

अथ क्षेपक

एक दिन एक सलूका आयउ ❀ भूपति द्वारे कपिहिं नचायउ ॥
देख राम मचलाई ठानी ❀ मोकहँ कीश मँगावहु आनी ॥
तब नरेश बहु कीश मँगाये ❀ एकहु रघुपति मनहिं न भाये ॥
तब बसिष्ठ कह दूत पठावहु ❀ पंपहि से हनुमंत बुलावहु ॥
सुनि गुरु बचन दूत पठवाये ❀ तिन जा बचन सुकंठ सुनाये ॥
सुन सँदेश हनुमन्त हँकारी ❀ कहेउ अवधपुर जाउ सुखारी ॥
रघुपति निरखि पवन सुत आये ❀ कण्ठ लाय निज सखा बनाये ॥
राम एक दिन चंग उड़ाई ❀ इन्द्रलोक में पहुँची जाई ॥
सुर पति सुत बधु चंग निहारी ❀ पकड़ी तिन्ह अस हृदय विचारी ॥
इहां राम पकड़ी चंग जानी ❀ कहेउ जाइ देखहु कपि मानी ॥
सुरपुर पहुँचि नारि के हाथा ❀ बोले देखि छांड़ु हरिनाथा ॥
बिहँसि कह्यो बिन दरशन पाये ❀ छांड़ब नाहिं राम मन भाये ॥
प्रेम बिबस तिहि लखि हनुमाना ❀ जाइ सकल प्रभु पास बखाना ॥
जाइ कहेउ बोले भगवाना ❀ चित्रकूट दर्शन मनमाना ॥

दोहा--प्रभुकी वाणी सुनतही, जाय कह्यो हनुमान।
चित्रकूटमें जाहु तुम, दरशन निश्चय जान॥
तिन तब करते तुरत ही, दीन्ही छोड़ पतंग।
खैंचलई प्रभु बेगही, खेलत बालक संग॥

इति क्षेपक

बंधु सखा संग लेहिं बुलाई ❀ बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥
पावन मृग मारहिं जिय जानी ❀ दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी ॥

जे मृग रामबान के मारे ❀ ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखा सँग भोजन करहीं ❀ मातु पिता अज्ञा अनुसरहीं ॥
जेहि बिधि सुखी होहिं पुरलोगा ❀ करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥
बेद पुरान सुनहिं मन लाई ❀ आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ❀ मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसु माँगि करहिं पुरकाजा ❀ देखि चरित हरषै मन राजा ॥

दोहा--ब्यापक अकल अनीह अज, निर्गुन नाम न रूप ।
भगत-हेतु नाना बिधि, करत चरित्र अनूप ॥२०५॥

यह सब चरित कहा मैं गाई ❀ आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❀ बसहिं बिपिन सुभ आस्रम जानी ॥
जहँ जप जज्ञ जोग मुनि करहीं ❀ अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत जज्ञ निसाचर धावहिं ❀ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
गाधि-तनय-मन चिंता ब्यापी ❀ हरि बिनु मरिहि न निसिचर पापी ॥
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा ❀ प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा ॥
एहू मिस देखौं पद जाई ❀ करि बिनती आनौं दोउ भाई ॥
ज्ञान-बिराग-सकल-गुन-अयना ❀ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥

दोहा--बहु बिधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरजूजल, गए भूप दरबार ॥२०६॥

मुनि आगमन सुना जब राजा ❀ मिलन गएउ लै बिप्र समाजा ॥
करि दंडवत मुनिहिं सनमानी ❀ निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥
चरन पखारि कीन्ह अति पूजा ❀ मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥
बिबिध भाँति भोजन करवावा ❀ मुनिबर हृदय हरष अति पावा ॥
पुनि चरनन्हि मेले सुत चारी ❀ राम देखि मुनि देह बिसारी ॥
भये मगन देखत मुख सोभा ❀ जनु चकोर पूरनससि लोभा ॥
तब मन हरषि बचन कह राऊ ❀ मुनि अस कृपा न कीन्हेहु काऊ ॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा ❀ कहहु सो करत न लावौं बारा ॥
असुरसमूह सतावहिं मोही ❀ मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥
अनुजसमेत देहु रघुनाथा ❀ निशि-चर-बध मैं होब सनाथा ॥

दोहा--देहु भूप मन हरषित, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम कहँ, इन्ह कहँ अति कल्यान ॥२०७॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी ❀ हृदय कंप मुखदुति कुम्हिलानी ॥
चौथेपन पायउँ सुत चारी ❀ बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोसा ❀ सरबस देउँ आजु सह रोसा ॥
देह प्रानतें प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं ॥
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं ❀ राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा ❀ कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥
सुनि नृपगिरा प्रेम-रस-सानी ❀ हृदय हरष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब बसिष्ठ बहु बिधि समुझावा ❀ नृप संदेह नास कहँ पावा ॥
अति आदर दोउ तनय बुलाये ❀ हृदय लाइ बहुभाँति सिखाये ॥
मेरे प्राननाथ सुत दोऊ ❀ तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दोहा--सौंपे भूप रिषिहि सुत, बहुबिधि देइ असीस।
जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस ॥

सोरठा--पुरुषसिंह दोउ बीर, हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ॥२०८॥

अरुन नयन उर बाहु बिसाला ❀ नीलजलज तनु स्याम तमाला ॥
कटि पट पीत कसे बर भाथा ❀ रुचिर-चाप-सायक दुहुं हाथा ॥
स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ बिश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मन्य देव मैं जाना ❀ मोहि निति पिता तजेउ भगवाना ॥
चले जात मुनि दीन्हि देखाई ❀ सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा ❀ दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥
तब रिषि निज नाथहि जिय चीन्ही ❀ बिद्यानिधि कहँ बिद्या दीन्हीं ॥
जातें लागि न छुधा पिपासा ❀ अतुलित बल तन तेज प्रकासा ॥

दोहा--आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्हि भगति हित जानि ॥२०९॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई ❀ निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई ॥

होम करन लागे मुनिझारी ❀ आपु रहे मख की रखवारी ॥
सुनि मारीच निसाचर कोही ❀ लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा ❀ सत जोजन गा सागरपारा ॥
पावकसर सुबाहु पुनि मारा ❀ अनुज निसाचर कटकु संघारा ॥
मारि असुर द्विज-निर्भय-कारी ❀ अस्तुति करहिं देव-मुनि-झारी ॥
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥
भगति हेतु बहु कथा पुराना ❀ कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई ❀ चरित एक प्रभु देखिय जाई ॥
धनुषजज्ञ सुनि रघु-कुल-नाथा ❀ हरषि चले मुनिवर के साथा ॥
आस्रम एक दीख मग माहीं ❀ खग मृग जीव जंतु कोउ नाहीं ॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी ❀ सकल कथा मुनि कही बिसेखी ॥

दोहा--गौतम नारि साप बस उपल देह धरि धीर ।
चरन कमल निज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ २१० ॥

छंद—परसत पदपावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।
देखत रघुनायक जन-सुख-दायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवै बचन कही ।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगुल नयन जलधार बही ॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपतिकृपा भगति पाई ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जन-सुख-दाई ।
राजीवविलोचन भव-भय-मोचन पाहि पाहि सरनहि आई ॥
मुनि साप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न मांगों बर आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जेहि पद सुरसरिता परमपुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।
सोई पदपंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो वर पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥

दोहा--अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ ताहि भजु, छाड़ि कपट जंजाल ॥२११॥

चले राम लछिमन मुनि संगा ❀ गए जहाँ जगपावनि गंगा ॥

अथ क्षेपक

अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ बहु प्रकार सुख पायउ रामा ॥
पुनि सुरसरि उत्पति रघुराई ❀ कौशिक सन पूछा सिर नाई ॥
कह मुनि प्रभु तव कुल इकराजा ❀ नाम सगर तिहुँ लोक विराजा ॥
तिहिके युग भामिनि सुकुमारी ❀ केशिनिज्येष्ठ सुमति लघु प्यारी ॥
सब प्रकार संपति गुण भ्राजा ❀ सुत विहीन मन विस्मय राजा ॥
एक समय भामिनि दोउ साथा ❀ गये वन तनय हेतु रघुनाथा ॥
सघन सुफल तरु सुन्दर नाना ❀ तहँ भृगु मुनि तपतेज निधाना ॥

दोहा--सहित नारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शत एक ।
कीन्हे तप बल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक ॥

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा ❀ दै अशीश तब मुनिवर दीन्हा ॥
नृप नारी सन पुनि अस भाषा ❀ लेहु सो वर जो जेहि अभिलाषा ॥
सुनि मुनि वचन शीश तिन्ह नावा ❀ देहु नाथ तुम कहँ जो भावा ॥
एकहि कहा एक सुत होना ❀ दूसरि सहस साठि सुत लोना ॥
हर्षित भयउ सुभग वर पाई ❀ हाथ जोरि चरणनि शिर नाई ॥
सहित भामिनिन्हि अवधहिं आयउ ❀ हर्ष सहित कछु दिवस गँवायउ ॥
जानि सुधरि सुनखत सुखदाई ❀ तब केशिनि असमंजस जोई ॥
सुमति प्रसव तुम्बरि इक सोई ❀ भए सुत प्रगट कहे मुनि जाई ॥
घृतघट सुन्दर तुरत मँगाए ❀ ते सब सुतनृप तिन्ह महँ नाए ॥

दोहा--इहिविधि भए सकल सुत, पूजे सब मन काम ।
जाइदिवसनिशिहर्षवश, सुनहुराम घनश्याम ॥

होहिं सुकाल सकल मन चीते ❀ इहिसुख बसत बहुत दिन वीते ॥
सरयू नदी अवध जो अहई ❀ बिमल सलिल उत्तर तट बहई ॥

प्रजालोक के बालक नाना ❀ नित उठि तहाँ करैं अस्नाना ॥
असमंजस तहँ तरणी आनी ❀ तिनहिं चढ़ाइ बोरि निजपानी ॥
भये प्रजा सब परम दुखारी ❀ बालकबध सुनि सुनहु खरारी ॥
सकल गये जहँ बैठ नृपाला ❀ बोले बचन नाइ पद भाला ॥
तुम नृप चहहु प्रजा प्रति पाला ❀ सुत तुम्हार भा सबकर काला ॥
तजब देश तव सुनहु नरेशू ❀ बिना तजे नहिं मिटै कलेशू ॥

दोहा--तव सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक बृन्द ।
तुमकहँप्राणसमान यह, सकलप्रजनकहँमन्द ॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा ❀ सुतहिं देशते बाहर कीन्हा ॥
तासु तनय जगविदित प्रभाऊ ❀ गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ ॥
गये प्रजा सब निज निज धामा ❀ भये बिलोकि मनहिं विश्रामा ॥
बहुरि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❀ आइ गयउ पन चौथ हमारा ॥
द्विज मंत्रिन गुरु सुतहु बुलाये ❀ हिमगिरिविंध्यमध्य तब आये ॥
रुचिर बेदिका एक बनाई ❀ देखत बनै बरनि नहिं जाई ॥
मख अरम्भ छाड़े तब तुरगा ❀ बेगवन्त जिमि देखिय उरगा ॥

दोहा--सुरपति सुनिभय दारुणहिं, मनमहँ करि अनुमान ।
आनतुरँग तिन्ह लीन्हेउ, मर्म न काहू जान ॥

राखे आनि कपिल मुनि पाहीं ❀ कोउ न जान काहु गति नाहीं ॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने ❀ लेत तुरंग तिनहु नहिं जाने ॥
तिन सब आय कहा नृप पाहीं ❀ महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरंग को जान न कोई ❀ कहा करिय जो आयसु होई ॥
सुनत वचन नृप बिस्मय पाये ❀ सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये ॥
जाहु तुरँग तुम हेरहु जाई ❀ सकल चले चरणन शिरनाई ॥
सुमन बाटिका उपवन बागा ❀ सरित कूप बाटिका तड़ागा ॥
नगर गाँव मुनीश थल नाना ❀ गिरि कन्दर कानन अस्थाना ॥

सोरठा-इहिबिधि शोधेउ जाइ, आये सब मिलि भूपपहिं ।
चरणन माथहि नाइ, बोले प्रभु कहुँ अश्व नहिं ॥

खोदहु महि सुत फेरि पठाए ❀ चले सकल पूरब दिशि आए ॥

तिनके कर जनु बज्र समाना ❀ योजन भरि खोदहिं बलवाना ॥
शोधत महि पताल सब आए ❀ दिग्गज देखि सबन शिरनाए ॥
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा ❀ अतिउत्तम गुण बिमल बिशेषा ॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्हा ❀ पुनि उत्तर दिशि शोधन लीन्हा ॥
दिग्गज श्वेत देखि सुखपाए ❀ सकलकपिल मुनि पहँ चलिआए ॥

दोहा--देखिन आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास ।
बोले बचन सक्रुद्ध हुइ, भा चह सबकर नास ॥

खोदी महि हम चारिउ कोधा ❀ रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा ॥
सुनत बचन मुनि चितवा जबहीं ❀ भये भस्म क्षणमहँ सब तबहीं ॥
यहाँ नृपति अंशुमान बुलाए ❀ नहिं आए सुत तिन्हहिं पठाए ॥
चलेउ नाइ पद शीश कुमारा ❀ विष्णुभक्त दुहुकुल उजियारा ॥
जहँतहँ निरखि मुनिनके धामा ❀ पूछि खबरि करि दंड प्रणामा ॥
इहिविधि खोजत मग महँ जाता ❀ मिलेउ गरुड़ सुमतीकर भ्राता ॥
चरण परत तब आशिष दयऊ ❀ जरे सकल जिहिविधि सो कहेऊ ॥
बहुरि गरुड़ बोले सुनु ताता ❀ मैं तोहिं कहौं सुनो इक बाता ॥

सोरठा--करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि महँ ।
दरशन ते अघ जाइ, मज्जन कीन्हे परम हित ॥

षष्टिसहस सुत तरिहहिं यहि बिधि ❀ गंगा पाइ परम पावनि निधि ॥
सुनि अस बचन हृदय अति भाये ❀ सहित गरुड़ मुनिवर पहँ आये ॥
भूप गरुड़ मुनि चरणन नायउ ❀ पूर्वकथा भूपतिहिं सुनायउ ॥
आशिष देइ तुरंग मुनि दीन्हा ❀ हर्षित हृदय गवन तब कीन्हा ॥
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई ❀ गयउ भवन तब निज रघुराई ॥
इहाँ तुरंग लै नृप शिरनाई ❀ षष्टिसहस सुत मरण सुनाई ॥
विस्मय हर्ष बिबस नृप भयऊ ❀ कीन्हे यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुबिधि नृपति राज तब कीन्हा ❀ प्रजा लोग कहँ अतिसुखदीन्हा ॥

दोहा--अंशुमान कहँ राज दे, निज मन हरि पद लाग ।
गयउ सरगतपकाज बन, हृदय अधिक अनुराग ॥

तासु तनय दिलीप नृप भयऊ ❀ बन तपहेतु उत्तर दिशि गयऊ ॥

अतिहि अगम तप कीन्ह नृपाला ❀ भए कालवश गये कछु काला ॥
केहि बिधि कहुँ दिलीप प्रभुताई ❀ सेवहिं सकल नृपति तिहिं आई ॥
भागीरथ अस सुत भये जासू ❀ पितु सम नीति अधिक उरतासू ॥
तिन्हहि बोलि नृप दीन्हेउ राजू ❀ आपु चले उठि तप के काजू ॥
मनमँह करत पंथ अनुमाना ❀ सुरसरि आव तजौं तनु प्राना ॥
इहिबिधि करत विचार भुआला ❀ जाइ कीन्ह तप परम बिशाला ॥

सोरठा--करत बिचार भुआल, जाइ कीन्ह बन परम तप ।
बीते कछु इक काल, देह तजी कोउ प्रगट नहिं ॥

इहाँ भगीरथ मन अस भयऊ ❀ पितु न आव बहु दिनचलिगयऊ ॥
काकुत्स्थ नाम तासु सुत रहेऊ ❀ दीन्हा राजनीति बहु कहेऊ ॥
कहि सब पूर्व कथा सुत पाहाँ ❀ दीन्ह अशीश चलेउ नर नाहाँ ॥
अतिहि निबिड़ बन तहँ नृप आए ❀ सुरसरि हेतु तपहिं मन लाए ॥
एक चरण दोउ भुजा उठाए ❀ रबि सम्मुख चितवहिं मन लाए ॥
देखि उग्र तप बिधि चलि आए ❀ बोले नृपसन बचन सुहाए ॥
चाहहु नृप सु लेहु बरदाना ❀ बोले नृप करि अजहिं प्रणामा ॥
जो माँगौं सो जानत अहहू ❀ मोसन माँगन प्रभु किमि कहहू ॥

सोरठा--तदपि कहौं प्रभु देहु, बर शुभ संतति बृद्धकर ।
दूसर करहु सनेहु, गंगा आवहि अवनि पर ॥

एवमस्तु कहि पुनि बिधि कहहीं ❀ सुरसरि देउँ राखिको सकहीं ॥
छूट जाइ पुनि तुरत रसातल ❀ फिरहिंन नृपति सुनिय पुनिभूतल ॥
तेहिते कहुँ इक तोहि उपाहीं ❀ अति दयालु शंकर मनमाहीं ॥
सोइ सक राखि देवसरि आजू ❀ ताहि जप सब होइहिं काजू ॥
असकहि बिधि अंतरहित भयऊ ❀ बहुरि भगीरथ शिव तप ठयऊ ॥
बिबुध वर्ष अंगुष्ठ अहारा ❀ बार बार शिव नाम उचारा ॥
शिव कृपालु प्रगटे तब आई ❀ हाथ जोरि नृप कह शिरनाई ॥
मैं राखब सुरसरि दै आशा ❀ बहुरि उमापति गै कैलाशा ॥

दोहा--उहाँ देवसरि शिव बचन, सुनि मन कीन्ह बिचार ।
जात रसातल शिव सहित, जात न लावौं बार ॥

अंतरयामी शिवहिं उपाई ❀ निज शिर जटा सुअगम बनाई ॥
इहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्हा ❀ मुनिमृदु गिरा छाँड़ि विधि दीन्हा ॥
छूटत सोर भयउ अति भारी ❀ चकित देव अहि दिग्गज चारी ॥
सुरसरि पुनि शिव जटा समानी ❀ एक वर्ष तहँ रही भुलानी ॥
कौतुक देखि सकल सुर हर्ष ❀ कहि जय जयति सुमन तिहि वर्ष ॥
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा ❀ शिव तब डारि बुन्द इक दीन्हा ॥
तिहते भई तीन जल धारा ❀ एक गई नभ एक पतारा ॥
गइ नभ सो भइ अघकर नाशिनि ❀ देवन धरा नाम मंदाकिनि ॥

सोरठा--दुसरी गई पताल, नाम प्रभावति हरन दुख ।
तिसरी गंग बिशाल, सुर संतन कहँ करन सुख ॥

आइ भगीरथ तब शिरनावा ❀ बोली सुरसरि बचन सुहावा ॥
बेगवंत नृप रथ तें आनू ❀ तुरग मरुत गति जिमि रथ भानू ॥
तिहिंरथ चढ़ि नृप चलु मम आगे ❀ चलिहौं मैं तव पीछे लागे ॥
सुनि नृप तुरत दिव्य रथ आना ❀ चढ़ेउ हृदय सुमिरत भगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहिं सुरसरी ❀ देवन मुदित सुमन झर करी ॥
चलत तेज कछु बरणि न जाई ❀ टूटहिं तरु गिरि शिला सुहाई ॥
करहिं कुलाहल बहु जिवजाती ❀ कमठनक्र व्याकुल बहु भाँती ॥
मज्जन करहिं देवता आई ❀ मुनि गण सिद्ध रहे तहँ छाई ॥

सोरठा--तर्पण कर मन लाइ, हर्ष हृदय नहिं जात कहि ।
दरशन ते अघ जाइ, तरहिं सकल सुर मुनि कहहिं ॥

करि जो मज्जन तप मनलाई ❀ तिनकी महिमा कहि न सिराई ॥
स्यंदनपर नृप सोहत कैसे ❀ तेजवन्त रवि देखिय जैसे ॥
लाँघत शैल सुहावन देशा ❀ पाछे सुरसरि अग्र नरेशा ॥
हरिद्वार समीप जब आई ❀ तीर्थ देखि सुरसरि मन भाई ॥
तीरथहू मन भा सुख भारी ❀ आदि प्रयाग पहुँचि अघहारी ॥
तहँ मज्जन कीन्हें दुख जाई ❀ बहुरि देवसरि काशी आई ॥
सो शिवपुरी सहज सुखदाई ❀ वरणि न जाइ मनोहरताई ॥
औरो तीर्थ विविध विधि जानी ❀ गई तहाँ किमि कहौं बखानी ॥

मगलोगन कहँ करत सनाथा ❀ जाइ चली इहि बिधि रघुनाथा ॥

दोहा--मिली जाइ पुनि उदधि महँ, उदधि हृदय सुखमान ।
लगे कहन भागीरथहिं, तुम सम धन्य न आन ॥

कीन्हों अस जस करहिं न कोई ❀ तप महिमा बल कम नहिं होई ॥
सगर तनय तारे ततकाला ❀ हर्षवंत तब भयो नृपाला ॥
औरो रहे जे कुल महँ कोऊ ❀ तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
सकल सुरन सँग तहाँ विधाता ❀ नृप सन आय कही अति बाता ॥
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ ❀ तुम समान नृप और न भयऊ ॥
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ ❀ संवत बेद जनन सुख दयऊ ॥
गंगासागर सब कोइ कहहीं ❀ अघ उलूक देखत रबि डरहीं ॥
भागीरथी नाम अस कहहीं ❀ मुनिसुर सिद्धनाग यशलहहीं ॥
अस बिधि कहि निज लोकहि धाये ❀ यहाँ भागीरथ अति सुख पाये ॥

छन्द–पाये अमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइकै ।
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप गये सुख पाइकै ॥
इहि भाँति सुनि गंगाकथा तब रामऋषि चरणन नये ।
कह दासतुलसी रामलषणहिं महामुनि आशिष दये ॥

दोहा--कौशिक आशिष अमियसम, पाय हर्ष रघुनाथ ।
प्रभु सुखपाइ कहा बहुरि, बेगि चलो मुनिनाथ ॥

इति क्षेपक

गाधिसूनु सब कथा सुनाई ❀ जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाये ❀ बिबिध दान महिदेवन्ह पाये ॥
हरषि चले मुनि-बृंद-सहाया ❀ बेगि विदेह नगर नियराया ॥
पुररम्यता राम जब देखी ❀ हरषे अनुज - समेत बिसेखी ॥
बापी कूप सरित सर नाना ❀ सलिल सुधासम मनिसोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ❀ कूजत कल बहुबरन बिहंगा ॥
बरन बरन बिकसे बनजाता ❀ त्रिबिध समीर सदा सुखदाता ॥

दोहा--सुमनबाटिका बाग बन, बिपुल बिहंगनिवास ॥

फूलत फलत सुपल्लवत, सोहत पुर चहुँ पास ॥२१२॥

बनै न बरनत नगरनिकाई ❀ जहाँ जाइ मन तहँ लोभाई ॥
चारु बजार बिचित्र अँबारी ❀ मनिमय बिधि जनु स्वकर सवाँरी ॥
धनिक बनिक बर धनद समाना ❀ बैठ सकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गली सुहाई ❀ संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरें ❀ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
पुर - नर - नारि सुभग सुचि संता ❀ धरमसील ज्ञानी गुनवंता ॥
अति अनूप जहँ जनकनिवासू ❀ बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥
होत चकित चित कोट बिलोकी ❀ सकल-भुवन-सोभा जनु रोकी ॥

दोहा--धवलधाम मनि-पुरट-पट, सुघटित नाना भाँति ।
सियनिवास सुंदर सदन, सोभा किमि कहि जाति॥२१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा ❀ भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिसाल बाजि - गज - साला ❀ हय - गय - रथ - संकुल सब काला ॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे ❀ नृपगृहसरिस सदन सब केरे ॥
पुर बाहिर सर सरित समीपा ❀ उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अँबराई ❀ सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥
कौसिक कहेउ मोर मनु माना ❀ इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता ❀ उतरे तहँ मुनि - बृंद - समेता ॥
बिस्वामित्र महामुनि आए ❀ समाचार मिथिलापति पाए ॥

दोहा--संग सचिव सुचि भूरिभट, भूसुर बर गुरु ज्ञाति ।
चले मिलन मुनिनायकहि, मुदित राउ एहि भाँति॥२१४॥

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा ❀ दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे ❀ जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥
कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा ❀ बिस्वामित्र नृपहिं बैठारा ॥
तेहि अवसर आए दोउ भाई ❀ गए रहे देखन फुलवाई ॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा ❀ लोचन सुखद बिस्व-चित-चोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आए ❀ बिस्वामित्र निकट बैठाए ॥
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता ❀ बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥

मूरति मधुर मनोहर देखी ❀ भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेखी ॥

दोहा--प्रेममगन मन जानि नृपु, करि बिबेकु धरि धीर ।
बोलेउ मुनिपद नाइ सिरु, गदगद गिरा गँभीर ॥२१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक ❀ मुनि-कुल-तिलक कि नृप-कुल-पालक॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा ❀ उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥
सहज बिरागरूप मन मोरा ❀ थकित होत जिमि चंदचकोरा ॥
तातें प्रभु पूछौं सतिभाऊ ❀ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा ❀ बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥
कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका ❀ बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी ❀ मन मुसुकाहिं राम सुनि बानी ॥
रघुकुल-मनि दसरथ के जाए ❀ मम हित लागि नरेस पठाए ॥

दोहा--राम लखन दोउ बंधु बर, रूप - सील - बल - धाम ।
मख राखेउ सब साखि जगु, जिते असुर संग्राम॥२१६॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ ❀ कहि न सकौं निज पुन्यप्रभाऊ ॥
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनन्दहू के आनन्ददाता ॥
इन्ह कै प्रीति परस्पर पावनि ❀ कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू ❀ ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू ❀ पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू ❀ चलेउ लिवाइ नगर अवनीसू ॥
सुंदर सदन सुखद सब काला ❀ तहाँ बास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब बिधि सेवकाई ❀ गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥

दोहा--रिषय संग रघु-बंस-मनि, करि भोजन बिस्रामु ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरि जामु ॥२१७॥

लषनहृदय लालसा बिसेखी ❀ जाइ जनकपुर आइय देखी ॥
प्रभुभय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं ❀ प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥
राम अनुजमन की गति जानी ❀ भगतबछलता हिय हुलसानी ॥
परमबिनीत सकुचि मुसुकाई ❀ बोले गुरुअनुसासन पाई ॥
नाथ लषन पुर देषन चहहीं ❀ प्रभुसकोच डर प्रगट न कहहीं ॥

जौं राउर आयसु मैं पावउँ ❀ नगर देखाइ तुरत लै आवउ ॥
सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती ❀ कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥
धरम-सेतु-पालक तुम्ह ताता ❀ प्रेमबिबस सेवक-सुख-दाता ॥

दोहा--जाइ देखि आवहु नगरु, सुखनिधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सब के नयन, सुन्दर बदन देखाइ ॥ २१८ ॥

मुनि-पद-कमल-बंदि दोउ भ्राता ❀ चले लोक-लोचन-सुख-दाता ॥
बालकबृंद देखि अति सोभा ❀ लगे संग लोचन मनु लोभा ॥
पीतबसन परिकर कटि भाथा ❀ चारु चाप सर सोहत हाथा ॥
तन अनुहरत सुचन्दन खोरी ❀ स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरिकंधर बाहु बिसाला ❀ उर अति रुचिर नाग-मनि-माला ॥
सुभग सोन सरसी-रुह-लोचन ❀ बदन मयंक ताप-त्रय-मोचन ॥
कानन्हि कनकफूल छबिदेहीं ❀ चितवत चितहिं चोरि जनु लेहीं ॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी ❀ तिलक-रेख-सोभा जनु चाकी ॥

दोहा--रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुंचित केस।
नख-सिख-सुंदर बंधु दोउ, सोभा सकल सुदेस॥२१९॥

देखन नगर भूपसुत आए ❀ समाचार पुरबासिन्ह पाए ॥
धाए धाम काम सब त्यागी ❀ मनहुँ रंक निधि लूटन लागी ॥
निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ❀ होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥
जुबती भवनझरोखन्हि लागीं ❀ निरखहिं रामरूप अनुरागीं ॥
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती ❀ सखि इन्ह कोटि-काम-छबि जीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ❀ सोभा असि कहुँ सुनियत नाहीं ॥
बिष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी ❀ बिकटबेख मुख पंच पुरारी ॥
अपर देव अस कोउ न आही ❀ यह छबि सखी पटतरिय जाही ॥

दोहा--बयकिसोर सुखमासदन, स्यामगौर सुखधाम।
अंग अंग पर वारिअहि, कोटि कोटिसत काम॥२२०॥

कहहु सखी अस को तनु धारी ❀ जो न मोह अस रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ❀ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
ए दोऊ दसरथ के ढोटा ❀ बालमरालन्हि के कल जोटा ॥

मुनि-कौसिक-मख के रखवारे ❀ जिन्ह रनअजिर निसाचर मारे ॥
स्यामगात कल कंजविलोचन ❀ जो मारीच-सुभुज-मद-मोचन ॥
कौसल्यासुत सो सुखखानी ❀ नामु रामु धनुसायक पानी ॥
गौर किसोर बेष बर काछे ❀ कर सर चाप राम के पाछे ॥
लछमनु नामु राम-लघु-भ्राता ❀ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दोहा--बिप्रकाजु करि बंधु दोउ, मग मुनिबधू उधारि ॥
आए देखन चापमख, सुनि हरषीं सब नारि ॥२२१॥

देखि रामछबि कोउ एक कहई ❀ जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥
जो सखि इन्हहिं देख नरनाहू ❀ पन परिहरि हठि करै बिबाहू ॥
कोउ कह ए भूपति पहिचाने ❀ मुनिसमेत सादर सनमाने ॥
सखि परंतु पन राउ न तजई ❀ बिधिबस हठि अबिबेकहि भजई ॥
कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता ❀ सब कहँ सुनिय उचित-फल-दाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू ❀ नाहिं न आलि इहाँ संदेहू ॥
जौं बिधिबस अस बनै सँजोगू ❀ तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे आरति अति ताते ❀ कबहुँक ए आवहिं एहि नाते ॥

दोहा--नाहिं त हम कहँ सुनहु सखि, इन्ह कर दरसन दूरि ॥
यह संघट तब होइ जब, पुन्य पुराकृत भूरि ॥२२२॥

बोली अपर कहेहु सखि नीका ❀ एहि बिवाह अतिहित सबहीका ॥
कोउ कह संकरचाप कठोरा ❀ ए स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
सब असमंजस अहइ सयानी ❀ यह सुनि अपर कहै मृदुबानी ॥
सखि इन्ह कहँ कोउकोउ असकहहीं ❀ बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पद-पंकज-धूरी ❀ तरी अहिल्या कृत-अघ-भूरी ॥
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें ❀ यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें ॥
जेहि बिरंचि रचि सीय सवाँरी ❀ तेहि स्यामल बरु रचेउ बिचारी ॥
तासु वचन सुनि सब हरषानी ❀ ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी ॥

दोहा--हिय हरषहिं बरषहिं सुमन, सुमुखि-सुलोचनि-बृंद ॥
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ, तहँ तहँ परमानंद ॥२२३॥

पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई ❀ जहँ धनु-मख-हित भूमि बनाई ॥

अतिबिस्तार चारु गच ढारी ❀ बिमलबेदिका रुचिर सवाँरी ॥
चहुँ दिसि कंचनमंच बिसाला ❀ रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा ❀ अपर मंचमंडली बिलासा ॥
कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥
तिन्हके निकट बिसाल सुहाए ❀ धवलधाम बहुबरन बनाए ॥
जहँ बैठे देखहिं सब नारी ❀ जथाजोग निजकुल अनुहारी ॥
पुर बालक कहि कहि मृदुबचना ❀ सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥

दोहा--सब सिसु एहि मिस प्रेमबस, परसि मनोहर गात ॥
तन पुलकहिं अति हरष हिय, देखि देखि दोउ भ्रात ॥२२४॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने ❀ प्रीतिसमेत निकेत बखाने ॥
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई ❀ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥
रामु देखावहिं अनुजहि रचना ❀ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥
लवनिमेष महुँ भुवननिकाया ❀ रचै जासु अनुसासन माया ॥
भगति हेतु सोइ दीन-दयाला ❀ चितवत चकित धनुष-मख-साला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❀ जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डर कहँ डर होई ❀ भजनप्रभाउ देखावत सोई ॥
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई ❀ किए बिदा बालक बरिआई ॥

दोहा--सभय सप्रेम बिनीत अति-सकुच-सहित दोउ भाइ ॥
गुरु-पद-पंकज नाइ सिर, बैठे आयसु पाइ ॥२२५॥

निसिप्रवेस मुनि आयसु दीन्हा ❀ सबही संध्याबंदन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी ❀ रुचिर रजनि जुगजाम सिरानी ॥
मुनिबर सयन कीन्ह तब जाई ❀ लगे चरन चाँपन दोउ भाई ॥
जिन्हके चरनसरोरुह लागी ❀ करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते ❀ गुरु-पद-कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही ❀ रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥
चाँपत चरन लषन उर लायें ❀ सभय सप्रेम परम सचुपायें ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता ❀ पौढ़े धरि उर पदजलजाता ॥

दोहा--उठे लषन निसि बिगत सुनि, अरुन-सिखा-धुनि कान ।

गुरु तें पहिलेहि जगतपति, जागे रामु सुजान ॥२२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए ❀ नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥
समय जानि गुरुआयसु पाई ❀ लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूपबागु बर देखेउ जाई ❀ जहँ बसन्तरितु रही लोभाई ॥
लागे बिटप मनोहर नाना ❀ बरन बरन बर बेलिबिताना ॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाए ❀ निज सम्पति सुररूख लजाए ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा ❀ कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥
मध्य बाग सर सोह सुहावा ❀ मनिसोपान बिचित्र बनावा ॥
बिमलसलिल सरसिज बहुरङ्गा ❀ जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥

दोहा--बागुतडागु बिलोकि प्रभु, हरषे बन्धु समेत ।
परमरम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत ॥२२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूछि मालीगन ❀ लगे लेन दल फूल मुदितमन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी ॥
सर समीप गिरिजागृह सोहा ❀ बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥
मज्जन करि सर सखिन्ह समेता ❀ गईं मुदितमन गौरिनिकेता ॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभग बर माँगा ॥
एक सखी सिय संग बिहाई ❀ गई रही देखन फुलवाई ॥
तेहि दोउ बन्धु बिलोके जाई ❀ प्रेमबिबस सीता पहिं आई ॥

दोहा--तासु दसा देखी सखिन्ह, पुलक गात जल नयन ।
कहु कारन निजहरष कर, पूछहिं सब मृदु बयन ॥२२८॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए ❀ बयकिसोर सब भाँति सुहाए ॥
स्याम गौर किमि कहउँ बखानी ❀ गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी ❀ सियहिय अति उतकंठा जानी ॥
एक कहइ नृप सुत तेइ आली ❀ सुने जे मुनि सँग आए काली ॥
जिन्ह निजरूप मोहनी डारी ❀ कीन्हे स्वबस नगर-नर-नारी ॥
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवसि देखिअहि देखन जोगू ॥
तासु बचन अति सियहि सुहाने ❀ दरस लागि लोचन अकुलाने ॥

चली अग्र करि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातनि लखै न कोई ॥

दोहा--सुमिरि सीय नारदबचन, उपजी प्रीति पुनीत ।
चकितबिलोकतिसकलदिसि, जनु सिसु मृगी सभीत॥२२९॥

कंकन-किंकिनि-नूपुर-धुनि सुनि ❀ कहत लषन मन राम हृदय गुनि ॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही ❀ मनसा बिस्वबिजय कहँ कीन्ही ॥
अस कहि फिर चितये तेहि ओरा ❀ सिय-मुख-ससि भये नयन चकोरा ॥
भये बिलोचन चारु अचंचल ❀ मनहुँ सकुचि निमि तजे दृगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुख पावा ❀ हृदय सराहत बचनु न आवा ॥
जनु बिरंचि सब निजनिपुनाई ❀ बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥
सुंदरता कहँ सुन्दर करई ❀ छबिगृह दीपसिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

दोहा--सियसोभा हिय बरनि प्रभु, आपनि दसा बिचारि ।
बोले सुचि मन अनुज सन, बचन समय अनुहारि॥२३०॥

तात जनकतनया यह सोई ❀ धनुषजज्ञ जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई ❀ करत प्रकास फिरइ फुलवाई ॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा ❀ सहज पुनीत मोर मन छोभा ॥
सो सब कारन जान बिधाता ❀ फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ ❀ मनु कुपंथ पगु धरैं न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी ❀ जेहि सपनेहु परनारि न हेरी ॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी ❀ नहिं लावहिं परतिय मन डीठी ॥
मंगल लहहिं न जिन्ह कै नाहीं ❀ ते नरबर थोरे जग माहीं ॥

दोहा--करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान ।
मुख-सरोज-मकरंद-छबि, करै मधुप इव पान ॥२३१॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता ❀ कहँ गये नृपकिसोर मन चिंता ॥
जहँ बिलोकि मृग-सावक-नयनी ❀ जनु तहँ बरिस कमल-सीत स्रेनी ॥
लता ओट तब सखिन लखाए ❀ स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हरषे जनु निजनिधि पहिचाने ॥
थके नयन रघु-पति-छबि देखे ❀ पलकन्हिहू परिहरीं निमेखे ॥

अधिक सनेह देह भइ भोरी ❀ सरदससिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचनमग रामहिं उर आनी ❀ दिन्हे पलककपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानीं ❀ कहि न सकहिं कछु मन सकुचानीं ॥

दोहा--लताभवनतें प्रगट भये, तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग बिमलबिधु, जलदपटल बिलगाइ ॥२३२॥

सोभासीवँ सुभग दोउ बीरा ❀ नील-पीत जलजाभ-सरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके ❀ गुच्छा बिच बिच कुसुमकली के ॥
भाल तिलक स्रमबिंदु सुहाये ❀ स्रवन सुभग भूषन छबि छाये ॥
बिकट भृकुटि कच घूँघरवारे ❀ नवसरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला ❀ हासबिलास लेत मन मोला ॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं ❀ जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनिमाल कंबुकल ग्रीवाँ ❀ काम-कलभ-कर भुज बलसींवाँ ॥
सुमनसमेत बामकर दोना ❀ साँवर कुअँर सखी सुठि लोना ॥

दोहा--केहरिकटि पट पीत धर, सुखमा-सील-निधान ।
देखि भानु-कुल-भूषनहि, बिसरा सखिन्ह अपान ॥२३३॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी ❀ सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ❀ भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे ॥
नखसिख देखि राम कै सोभा ❀ सुमिरि पितापनु मन अति छोभा ॥
परबस सखिन्ह लखी जब सीता ❀ भये गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब एहि बिरियाँ काली ❀ अस कहि मन बिहँसी एक आली ॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भएउ बिलंब मातुभय मानी ॥
धरि बड़ि धीर राम उर आने ❀ फिरि आपनपउ पितुबस जाने ॥

दोहा--देखन मिस मृग बिहँग तरु, फिरइ बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुबीरछबि, बाढ़ै प्रीति न थोरि ॥२३४॥

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति ❀ चली राखि उर स्यामल मूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥
परम-प्रेम-मय मृदुमसि कीन्ही ❀ चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्हीं ॥

गई भवानी भवन बहोरी ❀ बंदि चरन बोली करजोरी ॥
जय जय गिर-बर-राज-किसोरी ❀ जय महेस-मुख-चंद-चकोरी ॥
जय गज-बदन-षडानन-माता ❀ जगतजननि दामिनि-दुति-गाता ॥
नहिं तव आदि अन्त अवसाना ❀ अमितप्रभाउ बेद नहिं जाना ॥
भव-भव- बिभव- पराभव- कारिनि ❀ बिस्व बिमोहिनि स्व-बस-बिहारिनि॥

दोहा--पतिदेवता सुतीय महुँ, मातु प्रथम तव रेख ।
महिमा अमित न सकहिं कहि, सहस सारदा सेख ॥२३५॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी ❀ बरदायिनी त्रिपुरारि पियारी ॥
देबि पूजि पदकमल तुम्हारे ❀ सुर नरमुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके ❀ बसहु सदा उरपुर सबही के ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेही ❀ अस कहि चरन गहे बैदेही ॥
बिनय-प्रेम-बस भई भवानी ❀ खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सियप्रसाद सिर धरेऊ ❀ बोली गौरि हरषु उर भरेऊ ॥
सुनु सिय सत्य असीस हमारी ❀ पूजहि मनकामना तुम्हारी ॥
नारदबचन सदा सुचि साँचा ❀ सो बर मिलिहि जाहि मन राँचा ॥

छंद—मन जाहि राँचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो ।
करुनानिधान सुजान सीलसनेहु जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सियसहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदितमन मंदिर चली ॥

सोरठा--जानि गौरि अनुकूल, सिय-हिय-हरष न जात कहि ।
मंजुल-मंगल-मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

हृदय सराहत सीय लोनाई ❀ गुरुसमीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौसिक पाहीं ❀ सरल सुभाव छुआ छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही ❀ पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे ❀ राम लषन सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर बिज्ञानी ❀ लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगतदिवस गुरु आयसु पाई ❀ संध्या करन चले दोउ भाई ॥
प्राचीदिसि ससि उयेउ सुहावा ❀ सिय-मुख-सरिस देखि सुख पावा ॥

बहुरि बिचार कीन्ह मन माहीं ❀ सीय-बदन-सम हिमकर नाहीं ॥

दो०--जनम सिंधु पुनि बंधु बिष, दिन मलीन सकलंकु ।
सिय-मुख समता पाव किमि, चंद बापुरो रंकु॥२३७॥

घटै बढ़ै बिरहिनि-दुख-दाई ❀ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक-सोक-प्रद पंकजद्रोही ❀ अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेही-मुख-पटतर दीन्हे ❀ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सिय-मुख-छबि बिधुब्याज बखानी ❀ गुरु पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥
करि मुनि-चरन-सरोज प्रनामा ❀ आयसु पाइ कीन्ह बिस्रामा ॥
बिगतनिसा रघुनायक जागे ❀ बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उयेउ अरुन अवलोकहु ताता ❀ पंकज - लोक - कोक - सुख-दाता ॥
बोले लषन जोरि जुग पानी ❀ प्रभु - प्रभाव - सूचक मृदुबानी ॥

दो०--अरुनउदय सकुचे कुमुद, उडु-गन-जोति मलीन ।
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन॥२३८॥

नृप सब नखत करहिं उँजियारी ❀ टारि न सकहिं चापतम भारी ॥
कमल कोक मधुकर खग नाना ❀ हरषे सकल निसा अवसाना ॥
ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे ❀ होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उयेउ भानु बिन स्रम तम नासा ❀ दुरे नखत जग तेज प्रकासा ॥
रबि निज-उदय-ब्याज रघुराया ❀ प्रभुप्रताप सब नृपन्ह दिखाया ॥
तव भुज-बल-महिमा उदघाटी ❀ प्रगटी धनु बिघटनपरिपाटी ॥
बंधुबचन सुनि प्रभु मुसुकाने ❀ होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आये ❀ चरनसरोज सुभग सिर नाये ॥
सतानंद तब जनक बोलाये ❀ कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाये ॥
जनकबिनय तिन्ह आनि सुनाई ❀ हरषे बोलि लिये दोउ भाई ॥

दोहा--सतानंदपद बंदि प्रभु, बैठे गुरु पहिं जाइ ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बोलाइ ॥२३९॥

सीयस्वयंबर देखिअ जाई ❀ ईस काहि धौं देइ बड़ाई ॥
लषन कहा जसभाजन सोई ❀ नाथ कृपा तव जा पर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनि बरबानी ❀ दीन्ह असीस सबहि सुखु मानी ॥

पुनि मुनि-बृंद-समेत कृपाला ❀ देखन चले धनुष-मख-साला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई ❀ असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई ॥
चले सकल गृहकाज बिसारी ❀ बाल जुवान जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी ❀ सुचि सेवक सब लिये हँकारी ॥
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू ❀ आसन उचित देहु सब काहू ॥

दोहा--कहि मृदुबचन बिनीत तिन्ह, बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि ॥२४०॥

राजकुअँर तेहि अवसर आये ❀ मनहुँ मनोहरता तन छाये ॥
गुनसागर नागर बरबीरा ❀ सुंदर स्यामल - गौर - सरीरा ॥
राजसमाज बिराजत रूरे ❀ उडुगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ॥
जिन्ह कै रही भावना जैसी ❀ प्रभुमूरति तिन्ह देखी तैसी ॥
देखहिं भूप महा रनधीरा ❀ मनहुँ बीररस धरे सरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी ❀ मनहुँ भयानकमूरति भारी ॥
रहे असुर छल छोनिप बेखा ❀ तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई ❀ नरभूषन लोचन - सुख - दाई ॥

दोहा--नारि बिलोकहिं हरषि हिय, निज-निज-रुचि अनुरूप ।
जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥२४१॥

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा ❀ बहु-मुख-कर–पग–लोचन–सीसा ॥
जनकजाति अवलोकहिं कैसे ❀ सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी ❀ सिसुसम प्रीति न जाइ बखानी ॥
जोगिन्ह परम–तत्त्व–मय भासा ❀ सांत - सुद्ध - सम सहज प्रकासा ॥
हरिभगतन देखे दोउ भ्राता ❀ इष्टदेव इव सब - सुख - दाता ॥
रामहिं चितव भाव जेहि सीया ❀ सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ ❀ कवन प्रकार कहइ कबि कोऊ ॥
जेहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ ❀ तेहि तस देखेउ कोसलराऊ ॥

दोहा–राजत राजसमाज महँ, कोसल - राज - किसोर ।
सुन्दर-स्यामल-गौर-तनु, बिस्व-बिलोचन - चोर ॥२४२॥

सहज मनोहरमूरति दोउ ❀ कोटि-काम-उपमा लघु सोउ ॥

सरद-चंद-निंदक मुख नीके ❀ नीरजनयन भावते जी के ॥
चितवनि चारु मार-मद-हरनी ❀ भावत हृदय जात नहिँ बरनी ॥
कलकपोल स्रुतिकुण्डल लोला ❀ चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥
कुमुद-बंधु-कर-निंदक हासा ❀ भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥
भालबिसाल तिलक झलकाहीं ❀ कच बिलोकि अलिअवलि लजाहीं ॥
पीत चौतनी सिरन्ह सुहाई ❀ कुसुमकली बिच बीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कंबु कलग्रीवाँ ❀ जनु त्रिभुवन सोभा की सीवाँ ॥

दोहा--कुंजर-मनि-कंठाकलित, उरन्हि तुलसिकामाल ।
वृषभकंध केहरिठवनि, बलनिधि बाहु बिसाल ॥२४३॥

कटि तूनीर पीन पट बाँधे ❀ कर सर धनुष बाम बर काँधे ॥
पीत-जग्य-उपबीत सोहाये ❀ नखसिख मंजु महा छवि छाये ॥
देखि लोग सब भये सुखारे ❀ एक टक लोचन चलत न तारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई ❀ मुनि-पद-कमल गहे तब जाई ॥
करि बिनती निजकथा सुनाई ❀ रंगअवनि सब मुनिहि देखाई ॥
जहँ जहँ जाहिं कुअँरवर दोऊ ❀ तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ ॥
निज निज रुख रामहिं सब देखा ❀ कोउ न जान कछु मरम बिसेखा ॥
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ ❀ राजा मुदित महासुख लहेऊ ॥

दोहा--सब मंचन्ह तें मंच एक, सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनिसमेत दोउ बंधु तहँ, बैठारे महिपाल ॥२४४॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे ❀ जनु राकेस उदय भये तारे ॥
अस प्रतीति सबके मन माहीं ❀ राम चाप तोरब सक नाहीं ॥
बिनु भंजेहु भवधनुष बिसाला ❀ मेलिहि सीय रामउर माला ॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई ❀ जसु प्रतापु बल तेज गवाँई ॥
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी ❀ जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥
तोरेहु धनुष ब्याहु अवगाहा ❀ बिनु तोरे को कुअँरि बियाहा ॥
एक बार कालहु किन होऊ ❀ सियहित समर जितब हम सोऊ ॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धरमसील हरिभगत सयाने ॥

सोरठा--सीय बियाहब राम, गरब दूरि करि नृपन्ह को ।

जीति को सक संग्राम, दसरथ के रनबाँकुरे ॥२४५॥

बृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मनमोदकन्हि कि भूख बुताई ॥
सिख हमारि सुनि परम पुनीता ❀ जगदंबा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी ❀ भरि लोचन छबि लेहु निहारी ॥
सुंदर सुखद सकल-गुन-रासी ❀ ए दोउ बंधु संभु-उर-बासी ॥
सुधासमुद्र समीप बिहाई ❀ मृगजल निरखि मरहु कत धाई ॥
करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा ❀ हम तौ आजु जनमफलु पावा ॥
अस कहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना ❀ बरषहिं सुमन करहिं कल गाना ॥

दोहा--जानि सुअवसर सीय तब, पठई जनक बोलाइ ।
चतुर सखी सुंदर सकल, सादर चलीं लेवाइ ॥२४६॥

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदंबिका रूप-गुन-खानी ॥
उपमा सकल मोहि लघु लागी ❀ प्राकृत-नारि-अंग-अनुरागी ॥
सिय बरनिअ तेहि उपमा देई ❀ कुकबि कहाइ अजस को लेई ॥
जौं पटतरिअ तीय महँ सीया ❀ जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥
गिरा मुखर तनुअरध भवानी ❀ रति अतिदुखित अतनु पति जानी ॥
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही ❀ कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥
जौं छबि-सुधा-पयो-निधि होई ❀ परम-रूप-मय कच्छप सोई ॥
सोभा रजु मंदरु सिंगारू ❀ मथै पानिपंकज निज मारू ॥

दोहा--एहि बिधि उपजै लच्छि जब, सुंदरता-सुख-मूल ।
तदपि सकोचसमेत कबि, कहहिं सीय सम तूल ॥२४७॥

चलीं सङ्ग लै सखी सयानी ❀ गावति गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवलतनु सुंदर सारी ❀ जगतजननि अतुलित छबि भारी ॥
भूषन सकल सुदेस सुहाये ❀ अंग अंग रचि सखिन्ह बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ❀ बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥
पानिसरोज सोह जयमाला ❀ अवचट चितये सकल भुआला ॥
सीय चकितचित रामहि चाहा ❀ भये मोहबस सब नरनाहा ॥

मुनिसमीप देखे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥

दोहा--गुरु-जन-लाज समाज बड़, देखि सीय सकुचानी ।
लगी बिलोकन सखिन्ह तन, रघुबीरहि उर आनि ॥२४८॥

रामरूप अरु सियछबि देखी ❀ नरनारिन्ह परिहरी निमेखी ॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ❀ बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं ॥
हरु बिधि बेगि जनकजड़ताई ❀ मति हमार असि देहि सुहाई ॥
बिनु बिचार पन तजि नरनाहू ❀ सीय राम कर करै बियाहू ॥
जग भल कहिहि भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हें अंतहु उर दाहू ॥
एहि लालसा मगन सब लोगू ❀ बर साँवरो जानकी जोगू ॥
तब बंदीजन जनक बोलाये ❀ बिरदावली कहत चलि आये ॥
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा ❀ चले भाट हिय हरष न थोरा ॥

दोहा--बोले बंदी बचनबर, सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ बिसाल ॥२४९॥

नृप-भुज-बल-बिधु सिवधनु राहू ❀ गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥
रावन बान महाभट भारे ❀ देखि सरासन गवहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारिकोदंड कठोरा ❀ राजसमाज आजु जेइ तोरा ॥
त्रि-भुवन-जय-समेत बैदेही ❀ बिनहिं बिचार बरै हठि तेही ॥
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे ❀ भट मानी अतिसय मन माखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन्ह सिरु नाई ॥
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं ❀ उठइ न कोटि भाँति बल करहीं ॥
जिन्ह के कछु बिचार मन माहीं ❀ चापसमीप महीप न जाहीं ॥

दोहा--तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहिं लजाइ ॥
मनहुँ पाइ भट-बाहु-बल, अधिक अधिक गरुआइ ॥२५०॥

भूप सहसदस एकहिं बारा ❀ लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगै न संभुसरासन कैसे ❀ कामीबचन सतीमन जैसे ॥
सब नृप भये जोग उपहासी ❀ जैसे बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी ❀ चले चापकर बरबस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हिय राजा ❀ बैठे निज निज जाइ समाजा ॥

नृपन्ह बिलोकि जनक अकुलाने ❀ बोले बचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना ❀ आये सुनि हम जो पन ठाना ॥
देव दनुज धरि मनुजसरीरा ❀ बिपुलबीर आये रनधीरा ॥

दोहा--कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि, कीरति अतिकमनीय ।
पावनिहार बिरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय ॥२५१॥

कहहु काहि यह लाभु न भावा ❀ काहु न संकरचाप चढ़ावा ॥
रहे चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिल भरि भूमि न सके छुड़ाई ॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी ❀ बीरबिहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज-निज-गृह जाहू ❀ लिखा न बिधि बैदेहिबिबाहू ॥
सुकृत जाइ जौं पन परिहरऊँ ❀ कुअँरि कुआँरि रहउ का करऊँ ॥
जौं जनतेउँ बिनु भट भुबि भाई ❀ तौ पन करि होतेउँ न हँसाई ॥
जनकबचन सुनि सब नरनारी ❀ देखि जानकिहि भये दुखारी ॥
माखे लषन कुटिल भइँ भौंहें ❀ रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥

दोहा--कहि न सकत रघु-बीर-डर, लगे बचन जनु बान ।
नाइ राम-पद-कमल सिर, बोले गिरा प्रमान ॥२५२॥

रघुबंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहि समाज अस कहै न कोई ॥
कही जनक जसि अनुचित बानी ❀ बिद्यमान रघु-कुल-मनि जानी ॥
सुनहु भानु-कुल-पंकज-भानू ❀ कहौं सुभाउ न कछु अभिमानू ॥
जौं तुम्हार अनुसासन पावौं ❀ कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥
काँचे घट जिमि डारौं फोरी ❀ सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रतापमहिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ ❀ कौतुक करौं बिलोकिअ सोऊ ॥
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं ❀ जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥

दोहा--तोरौं छत्रकदण्ड जिमि, तव प्रतापबल नाथ ।
जौं न करौं प्रभु-पद-सपथ, कर न धरौं धनु भाथ ॥२५३॥

लषन सकोप बचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोक सब भूप डेराने ❀ सियहिय हरष जनक सकुचाने ॥
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं ❀ मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥

सयनहिं रघुपति लषन निवारे ❀ प्रेमसमेत निकट बैठारे ॥
बिस्वामित्र समय सुभ जानी ❀ बोले अति-सनेह-मय बानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापा ❀ मेटहु तात जनकपरितापा ॥
सुनि गुरुबचन चरन सिरु नावा ❀ हरष बिषाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये ❀ ठवनि जुबा मृगराज लजाये ॥

दोहा--उदित उदय-गिरि-मंच पर, रघुबर बालपतंग ।
बिगसे संतसरोज सब, हरषे लोचनभृंग ॥२५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी ❀ बचन नखतअवली न प्रकासी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिसोक कोक मुनि देवा ❀ बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरुपद बंदि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिन्ह सन आयसु माँगा ॥
सहजहि चले सकल-जग-स्वामी ❀ मत्त - मंजु - बर - कुंजर - गामी ॥
चलत राम सब पुर - नर - नारी ❀ पुलक - पूरि - तन भये सुखारी ॥
बंदि पितर सब सुकृत सँभारे ❀ जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं ❀ तोरहिं राम गनेस गोसाईं ॥

दोहा--रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीतामातु सनेहबस, बचन कहै बिलखाइ ॥२५५॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे ❀ जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं ❀ ए बालक असि हठ भल नाहीं ॥
रावन बान छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राज-कुअँर-कर देहीं ❀ बालमराल कि मंदर लेहीं ॥
भूपसयानप सकल सिरानी ❀ सखि बिधिगति कछिजातिनजानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी ❀ तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा ❀ सोखेउ सुजस सकल संसारा ॥
रबिमंडल देखत लघु लागा ❀ उदय तासु त्रि-भुवन-तम भागा ॥

दोहा--मंत्र परमलघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्ब ।
महा-मत्त-गज-राज कहुँ, बस कर अंकुस खर्ब ॥२५६॥

काम कुसुम-धनु-सायक लीन्हे ❀ सकलभुवन अपने बस कीन्हे ॥

देवि तजिय संसय अस जानी ❀ भंजब धनुष राम सुनु रानी ॥
सखीबचन सुनि भइ परतीती ❀ मिटा बिषाद बढ़ी अतिप्रीती ॥
तब रामहिं बिलोकि बैदेही ❀ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही ॥
मनहीं मन मनाव अकुलानी ❀ होउ प्रसन्न महेस भवानी ॥
करहु सुफल आपन सेवकाई ❀ करि हित हरहु चापगरुआई ॥
गननायक बरदायक देवा ❀ आजु लगे कीन्हिउँ तव सेवा ॥
बार बार सुनि बिनती मोरी ❀ करहु चापगरुता अति थोरी ॥

दोहा--देखि देखि रघु-बीर-तन, सुर मानव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेमजल, पुलकावली सरीर ॥२५७॥

नीके निरखि नयन भरि सोभा ❀ पितुपनु सुमिरि बहुरि मन छोभा ॥
अहह तात दारुनहठ ठानी ❀ समुझत नहिं कछु लाभ न हानी ॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई ❀ बुधसमाज बड़ अनुचित होई ॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा ❀ कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा ❀ सिरिस-सुमन-कन बेधिय हीरा ॥
सकल सभा कै मति भइ भोरी ❀ अब मोहि संभु-चाप-गति तोरी ॥
निजजड़ता लोगन्ह पर डारी ❀ होहु हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अतिपरिताप सीयमन माहीं ❀ लवनिमेष जुगसय सम जाहीं ॥

दोहा--प्रभुहि चितइ पुनि चितवमहि, राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज-मीन-जुग, जनु बिधुमंडल डोल ॥२५८॥

गिराअलिनि मुखपंकज रोकी ❀ प्रगट न लाजनिसा अवलोकी ॥
लोचनजल रह लोचनकोना ❀ जैसे परम कृपन कर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी ❀ धरि धीरज प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पन साँचा ❀ रघु-पति-पद-सरोज चितु राँचा ॥
तौ भगवान सकल-उर-बासी ❀ करिहहिं मोहि रघुबर कै दासी ॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू ❀ सो तेहि मिलै न कछु संदेहू ॥
प्रभुतन चितइ प्रेमपन ठाना ❀ कृपानिधान रामु सब जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे ❀ चितव गरुड़ लघुब्यालहि जैसे ॥

दोहा--लषन लखेउ रघु-बंस-मनि, ताकेउ हरकोदंड ।

पुलकि गात बोले बचन, चरन चापि ब्रह्मंड ॥२५९॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला ❀ धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं संकरधनु तोरा ❀ होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चापसमीप रामु जब आये ❀ नरनारिन्ह सुर सुकृत मनाये ॥
सब कर संसय अरु अज्ञानू ❀ मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गरब गरुआई ❀ सुर-मुनि-बरन्ह केरि कदराई ॥
सिय कर सोच जनकपछितावा ❀ रानिन्ह कर दारुन-दुख-दावा ॥
संभुचाप बड़ बोहित पाई ❀ चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
राम-बाहु-बल-सिंधु अपारू ❀ चाहत पार नहिं कोउ कनहारू ॥

दोहा--राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन, जानी बिकल बिसेखि ॥२६०॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही ❀ निमिष बिहात कलपसम तेही ॥
तृषित बारि बिनु जो तन त्यागा ❀ मुए करइ का सुधा तड़ागा ॥
का बरषा जब कृषी सुखाने ❀ समय चुके पुनि का पछिताने ॥
अस जिय जानि जानकी देखी ❀ प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेखी ॥
गुरुहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा ❀ अतिलाघव उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ ❀ पुनि नभ-धनु-मंडल-सम भयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े ❀ काहु न लखा देख सब ठाढ़े ॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा ❀ भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छंद—भरे भुवन घोर कठोर रव रबिबाजि तजि मारग चले ॥
चिक्करहिं दिग्गज डोलि महि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं ॥
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

सोरठा--संकरचाप जहाज, सागर रघुबर-बाहु-बल ।
बूड़ सो सकल समाज, चढ़े जो प्रथमहिं मोहबस ॥२६१॥

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे ❀ देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौसिक-रूप पयोनिधि पावन ❀ प्रेमबारि अवगाह सुहावन ॥
राम - रूप - राकेस निहारी ❀ बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ॥

बाजे नभ गहगहे निसाना ❀ देवबधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा ❀ प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥
बरषहिं सुमन रंग बहु माला ❀ गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
रही भुवन भरि जय जय बानी ❀ धनुष-भंग-धुनि जात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी ❀ भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥

दोहा--बंदी मागध सूतगन, बिरद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब, हय गय धन मनि चीर ॥२६२॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई ❀ भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❀ जहँ तहँ जुबतिन मंगल गाये ॥
सखिन्ह सहित हरषीं सब रानी ❀ सूखत धानु परा जनु पानी ॥
जनक लहेउ सुख सोच बिहाई ❀ पैरत थके थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे ❀ जैसे दिवस दीपछबि छूटे ॥
सीयसुखहि बरनिय केहि भाँती ❀ जनु चातकी पाइ जलस्वाती ॥
रामहि लषन बिलोकत कैसे ❀ ससिहि चकोरकिसोरकु जैसे ॥
सतानंद तब आयसु दीन्हा ❀ सीता गमन राम पहिं कीन्हा ॥

दोहा--संग सखी सुंदर चतुर, गावहिं मंगलचार ।
गवनी बाल-मराल-गति, सुखमा अङ्ग अपार ॥२६३॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी ❀ छबि-गन-मध्य महाछबि जैसी ॥
करसरोज जयमाल सुहाई ❀ बिस्व-बिजय-सोभा जनु छाई ॥
तन सकोचु मन परमउछाहू ❀ गूढ़प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाइ समीप राम छबि देखी ❀ रहि जनु कुअँरि चित्रअवरेखी ॥
चतुर सखी लखि कहा बुझाई ❀ पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत जुगल कर माल उठाई ❀ प्रेमबिबस पहिराइ न जाई ॥
सोहत जनु जुगजलज सनाला ❀ ससिहि सभीत देत जयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली ❀ सिय जयमाल रामउर मेली ॥

सोरठा--रघुबर उर जयमाल, देखि देव बरषहिं सुमन ।
सकुचे सकलभुआल, जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ॥२६४॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे ❀ खल भये मलिन साधु सब राजे ॥

सुर किन्नर नर नाग मुनीसा ❀ जय जय जय कहि देहिं असीसा ॥
नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी ❀ बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं ❀ बंदी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पातालु नाक जसु ब्यापा ❀ राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
करहिं आरती पुर-नर-नारी ❀ देहिं निछावर बित्त बिसारी ॥
सोहति सीय राम कै जोरी ❀ छबि सृंगार मनहुँ एक ठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता ❀ करत न चरनपरस अतिभीता ॥

दोहा—गौतम-तिय-गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि ।
मन बिहँसे रघु-बंस-मनि, प्रीति अलौकिक जानि ॥२६५॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❀ कूर कपूत मूढ़ मन माषे ॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ❀ जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छँड़ाय सीय कह कोऊ ❀ धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष चाँड़ नहिं सरई ❀ जीवत हमहिं कुअँरि को बरई ॥
जौं बिदेहु कछु करै सहाई ❀ जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
साधुभूप बोले सुनि बानी ❀ राजसमाजहिं लाज लजानी ॥
बलु प्रतापु बीरता बड़ाई ❀ नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई ❀ असि बुधि तौ बिधि मुँह मसि लाई ॥

दोहा--देखहु रामहिं नयन भरि, तजि इरषा मद कोहु ।
लषन-रोष-पावक-प्रबलु, जानि सलभ जनि होहु ॥२६६॥

बैनतेयबलि जिमि चह कागू ❀ जिमि सस चहै नाग-अरि-भागू ॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही ❀ सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई ❀ अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरि-पद-बिमुख परमगति चाहा ❀ तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी ❀ सखी लेवाइ गईं जहँ रानी ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं ❀ सियसनेहु बरनत मन माहीं ॥
रानिन्ह सहित सोचबस सीया ❀ अब धौं बिधिहि काह करनीया ॥
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं ❀ लषन रामडर बोलि न सकहीं ॥

दोहा--अरुन नयन भृकुटीकुटिल, चितवन नृपन्ह सकोप ।

मनहुं मत्त-गज-गन निरखि, सिंहकिसोरहि चोप ॥२६७॥

खरभर देखि बिकल पुरनारी ❀ सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी ॥
तेहि अवसर मुनि सिव-धनु-भंगा ❀ आये भृगु-कुल-कमल-पतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गोर सरीर भूति भलि भ्राजा ❀ भालबिसाल त्रिपुंड बिराजा ॥
सीस जटा ससिवदन सुहावा ❀ रिसिबस कछुक अरुन होइ आवा ॥
भृकुटीकुटिल नयन रिस राते ❀ सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला ❀ चारु जनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनि बसन तून दुइ बाँधे ❀ धनु सर कर कुठार कल काँधे ॥

दोहा--संत बेष करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप ।
धरि मुनितनु जनु बीररस, आयेउ जहँ सब भूप॥२६८॥

देखत भृगु-पति-बेषु कराला ❀ उठे सकल भयबिकल भुआला ॥
पितुसमेत कहि निज निज नामा ❀ लगे करन सब दंडप्रनामा ॥
जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी ❀ सो जानै जनु आइ खुटानी ॥
जनक बहोरि आइ सिरुनावा ❀ सीय बोलाइ प्रनाम करावा ॥
आसिष दीन्हि सखी हरषानी ❀ निज समाज लै गईं सयानी ॥
बिस्वामित्र मिले पुनि आई ❀ पद सरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषन दसरथ के ढोटा ❀ देखि असीस दीन्ह भल जोटा ॥
रामहिं चितइ रहे भरि लोचन ❀ रूप अपार मार-मद-मोचन ॥

दोहा--बहुरि बिलोकि बिदेह सन, कहहु काह अति भीर ।
पूछत जानि अजान जिमि, ब्यापेउ कोपु सरीर ॥२६९॥

समाचार कहि जनक सुनाये ❀ जेहि कारन महीप सब आये ॥
सुनत बचन तब अनत निहारे ❀ देखे चापखंड महि डारे ॥
अति रिस बोले बचन कठोरा ❀ कहु जड़ जनक धनुस केइ तोरा ॥
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू ❀ उलटौं महि जहँ लगि तव राजू ॥
अतिडर उतर देत नृप नाहीं ❀ कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥
सुर मुनि नाग नगर-नर-नारी ❀ सोचहिं सकल त्रास उर भारी ॥
मन पछिताति सीयमहतारी ❀ बिधि अब सवरी बात बिगारी ॥

भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता ❀ अर्धनिमेष कलपसम बीता ॥

दोहा--सभय विलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु ।
हृदय न हरष विषाद कछु, बोले श्रीरघुवीरु ॥२७०॥

नाथ संभु-धनु-भंजनि-हारा ❀ होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥
आयसु काह कहिअ किन मोही ❀ सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवक सो जो करै सेवकाई ❀ अरिकरनी करि करिय लराई ॥
सुनहु राम जेइ सिव धनु तोरा ❀ सहस-बाहु-सम सो रिपु मोरा ॥
सो विलगाउ विहाइ समाजा ❀ नत मारे जइहैं सब राजा ॥
सुनि मुनिवचन लषन मुसुकाने ❀ बोले परसुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं ❀ कबहुँ न असि रिस कीन्ह गोसाईं ॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू ❀ सुनि रिसाइ कह भृगु-कुल-केतू ॥

दोहा--रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार ।
धनुहीं सम त्रि-पुरारि-धनु, विदित सकल संसार ॥२७१॥

लषन कहा हँसि हमरे जाना ❀ सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभु जून धनु तोरे ❀ देखा राम नयन के भोरे ॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोषू ❀ मुनि बिनु काज करिय कत रोषू ॥
बोले चितइ परसु की ओरा ❀ रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
बालक बोलि बधौं नहिं तोही ❀ केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बालब्रह्मचारी अतिकोही ❀ विस्वविदित छत्रिय कुल-द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही ❀ बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहस - बाहु - भुज - छेदनि - हारा ❀ परसु विलोकु महीपकुमारा ॥

दोहा--मातुपितहि जनि सोचवस, करसि महीपकिसोर ।
गरभन के अरभकदलन, परसु मोर अति घोर ॥२७२॥

विहँसि लषन बोले मृदुबानी ❀ अहो मुनीस महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू ❀ चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं ❀ जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठार सरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी ❀ जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ॥

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ❀ हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ॥
बध पाप अपकीरति हारे ❀ मारतहू पा परिय तुम्हारे ॥
कोटि-कुलिस-सम बचन तुम्हारा ❀ व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥

दोहा--जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महामुनि धीर ॥
सुनि सरोष भृगु-बंस-मनि, बोले गिरा गँभीर ॥२७३॥

कौसिक सुनहु मंद यह बालक ❀ कुटिल कालबस निज-कुल-घालक ॥
भानु - बंस राकेस - कलंकू ❀ निपट निरंकुस अबुध असंकू ॥
कालकवलु होइहि छन माहीं ❀ कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा ❀ कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा ❀ तुम्हहिं अछत को बरनै पारा ॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी ❀ बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिसि रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा ❀ गारी देत न पावहु सोभा ॥

दोहा--सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ।
विद्यमान रिपु पाइ रन, कायर करहिं प्रलापु ॥२७४॥

तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा ❀ बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
सुनत लषन के बचन कठोरा ❀ परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
अब जनि देइ दोष मोहि लोगू ❀ कटुबादी बालक बधजोगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा ❀ अब यह मरनहार भा साँचा ॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू ❀ बाल-दोष-गुन गनहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरनकोही ❀ आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
उतर देत छाँड़उँ बिनु मारे ❀ केवल कौसिक सील तुम्हारे ॥
न तु एहि काटि कुठार कठोरे ❀ गुरुहि उरिन होतेउँ स्रम थोरे ॥

दोहा--गाधिसूनु कह हृदय हँसि, मुनिहि हरिअरे सूझ ।
अयमय खाँड न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥२७५॥

कहेउ लषन मुनि सील तुम्हारा ❀ को नहिं जान बिदित संसारा ॥
माता पितहि उरिन भये नीके ❀ गुरु रिन रहा सोच बड़ जीके ॥
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा ❀ दिन चढ़ि गयेउ ब्याज बहु बाढ़ा

अब आनिअ व्यवहरिया बोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली ॥
सुनि कटुबचन कुठार सुधारा ❀ हाय हाय सब सभा पुकारा ॥
भृगुबर परसु देखावहु मोही ❀ बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े ❀ द्विज देवता घरहिं के बाढ़े ॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सैनहिं लषन निवारे ॥

दोहा-लषनउतर आहुतिसरिस, भृगु-बर-कोप कृसानु ।
बढ़त देखि जलसम बचन, बोले रघु-कुल-भानु ॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर छोहू ❀ सूध दूधमुख करिय न कोहू ॥
जौं पै प्रभुप्रभाउ कछु जाना ❀ तौ कि बराबरि करत अयाना ॥
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं ❀ गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
करिअ कृपा सिसु सेवकु जानी ❀ तुम्हसम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥
रामबचन सुनि कछुक जुड़ाने ❀ कहि कछु लषन बहुरि मुसुकाने ॥
हँसत देखि नखसिख रिस व्यापी ❀ राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
गौर सरीर स्याम मन माहीं ❀ काल-कूट-मुख पयमुख नाहीं ॥
सहज टेढ़ अनुहरै न तोही ❀ नीच मीचसम देख न मोही ॥

दोहा--लषन कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पाप कर मूल ।
जेहि बसजन अनुचित करहिं, होहिं बिस्वप्रतिकूल ॥२७७॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया ❀ परिहरि कोप करिअ अब दाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने ❀ बैठिअ होइहहिं पाय पिराने ॥
जौं अतिप्रिय तौ करिअ उपाई ❀ जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ॥
बोलत लषनहिं जनकु डेराहीं ❀ मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥
थर थर काँपहिं पुर-नर-नारी ❀ छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥
भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बानी ❀ रिस तन जरै होइ बलहानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा ❀ बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा ॥
मन मलीन तनु सुंदर कैसे ❀ बिष-रस-भरा कनकघट जैसे ॥

दोहा--सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि, नैन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी बाम ॥२७८॥

अतिबिनीत मृदु सीतल बानी ❀ बोले राम जोरि जुगपानी ॥

सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना ❀ बालकबचन करिअ नहिं काना ॥
बररै बालक एक सुभाऊ ❀ इन्हहिं न संत बिदूषहिं काऊ ॥
तेहि नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बंध गोसाईं ❀ मो पर करिअ दास की नाईं ॥
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिसि जाई ❀ मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे ❀ अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे ॥
एहि के कंठ कुठार न दीन्हा ❀ तौ मैं काह कोप करि कीन्हा ॥

दोहा--गर्भ स्रवहिं अवनिपरवँनि, सुनि कुठारगति घोर ।
परसु अछत देखेउँ जियत, बैरी भूपकिसोर ॥२७९॥

बहै न हाथ दहै रिस छाती ❀ भा कुठार कुंठित नृपघाती ॥
भयेउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कसि काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्र बहुरि सिरु नावा ॥
बाउकृपा मूरति अनुकूला ❀ बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता ❀ क्रोध भये तनु राखु बिधाता ॥
देखु जनक हठि बालक एहू ❀ कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ॥
बेगि करहु किन आँखिन ओटा ❀ देखत छोट खोट नृपढोटा ॥
बिहँसे लषन कहा मुनि पाहीं ❀ मूँदे आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥

दोहा-परसुराम तब राम प्रति, बोले उर अति क्रोधु ।
संभुसरासन तोरि सठ, करसि हमार प्रबोधु ॥२८०॥

बंधु कहै कटु संमत तोरे ❀ तूँ छल बिनय करसि कर जोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा ❀ नाहिंत छाँडु कहाउब रामा ॥
छल तजि करहि समर सिवद्रोही ❀ बंधुसहित न त मारौं तोही ॥
भृगुपति बकहिं कुठार उठाये ❀ मन मुसुकाहिं राम सिरु नाए ॥
गुनहु लषन कर हम पर रोषू ❀ कतहुँ सुधाइहु तें बड़ दोषू ॥
टेढ़ जानि बंदइ सब काहू ❀ बक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू ॥
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा ❀ कर कुठार आगे यह सीसा ॥
जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी ❀ मोहि जानिअ आपन अनुगामी ॥

दोहा--प्रभु सेवकहिं समरु कस, तजहु बिप्रबर रोसु ।

बेष बिलोकें कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोसु॥२८१॥

देखि कुठार-बान-धनु-धारी ❀ भइ लरिकहि रिस बीरु बिचारी॥
नामु जान पै तुम्हहिं न चीन्हा ❀ बंससुभाय उतरु तेइ दीन्हा॥
जौं तुम्ह अवतेहु मुनि की नाईं ❀ पदरज सिर सिसु धरत गोसाईं॥
छमहु चूक अनजानत केरी ❀ चहिअ बिप्रउर कृपा घनेरी॥
हमहिं तुम्हहिं सरबरि कस नाथा ❀ कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा॥
राम मात्र लघु नाम हमारा ❀ परसुसहित बड़ नाम तुम्हारा॥
देव एकगुन धनुष हमारे ❀ नवगुन परम पुनीत तुम्हारे॥
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे ❀ छमहु बिप्र अपराध हमारे॥

दोहा--बार बार मुनि बिप्रबर, कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष हँसि, तहूँ बंधुसम बाम॥२८२॥

निपटहि द्विज करि जानहि मोही ❀ मैं जस बिप्र सुनावौं तोही॥
चाप स्रुवा सर आहुति जानू ❀ कोपु मोर अतिघोर कृसानू॥
समिध सेन चतुरंग सुहाई ❀ महामहीप भये पसु आई॥
मैं यह परसु काटि बलि दीन्हे ❀ समरजग्य जग कोटिक कीन्हे॥
मोर प्रभाउ बिदित नहिं तोरे ❀ बोलसि निदरि बिप्र के भोरे॥
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा ❀ अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढ़ा॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी ❀ रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना ❀ मैं केहि हेतु करौं अभिमाना॥

दोहा--जौं हम निदरहिं बिप्र बदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभट जेहि, भयबस नावहिं माथ॥२८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना ❀ समबल अधिक होउ बलवाना॥
जौं रन हमहिं पचारै कोऊ ❀ लरहिं सुखेन काल किन होऊ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना ❀ कुलकलंक तेहि पाँवर जाना॥
कहौं सुभाउ न कुलहि प्रसंसी ❀ कालहु डरहिं न रन रघुबंसी॥
बिप्रबंस कै असि प्रभुताई ❀ अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई॥
सुनि मृदु बचन गूढ़ रघुपति के ❀ उघरे पटल परसु-धर-मति के॥
राम रमापति कर धनु लेहू ❀ खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥

देत चाप आपुहि चलि गयेऊ ❀ परसुराम मन बिसमय भयेऊ ॥

दोहा--जाना रामप्रभाउ तब, पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेम समात ॥२८४॥

जय रघुबंस - बनज - बन - भानू ❀ गहन-दनुज-कुल-दहन कृसानू ॥
जय सुर - बिप्र - धेनु - हित - कारी ❀ जय मद-मोह-कोह-भ्रम-हारी ॥
बिनय-सील - करुना - गुन - सागर ❀ जयति बचनरचना अतिनागर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा ❀ जय सरीरछबि कोटिअनंगा ॥
करौं काह मुख एक प्रसंसा ❀ जय महेस - मन - मानस - हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता ❀ छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ॥
कहि जय जय जय रघु-कुल-केतू ❀ भृगुपति गये बनहिं तप हेतू ॥
अपभय सकल महीप डेराने ❀ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने ॥

दोहा-देवन दीन्ही दुंदुभी, प्रभु पर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर-नर-नारि सब, मिटा मोहमय सूल ॥२८५॥

अति गहगहे बाजने बाजे ❀ सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ❀ करहिं गान कल कोकिलबयनी ॥
सुख बिदेह कर बरनि न जाई ❀ जनमदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥
बिगतत्रास भइ सीय सुखारी ❀ जनु बिधु उदय चकोरकुमारी ॥
जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा ❀ प्रभुप्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई ❀ अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं ॥
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना ❀ रहा बिबाह चापआधीना ॥
टूटत ही धनु भयेउ बिबाहू ❀ सुर नर नाग बिदित सब काहू ॥

दोहा-तदपि जाइ तुम्ह करहु अब, जथा-बंस-ब्यवहारु ।
बूझि बिप्र कुलबृद्धगुरु, बेदबिदित आचारु ॥२८६॥

दूत अवध पुर पठवहु जाई ❀ आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला ❀ पठये दूत बोलि तेहि काला ॥
बहुरि महाजन सकल बोलाये ❀ आइ सबन्हि सादर सिरु नाये ॥
हाट बाट मंदिर सुरबासा ❀ नगर सवाँरहु चारिहु पासा ॥
हरषि चले निज निज गृह आये ❀ पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥

रचहु बिचित्र बितान बनाई ❁ सिर धरि बचन चले सचुपाई ॥
पठये बोलि गुनी तिन्ह नाना ❁ जे बितान-बिधि-कुसल सुजाना ॥
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा ❁ बिरचे कनककदलि के खंभा ॥

दोहा--हरितमनिन्ह के पत्र फल, पदुमराग के फूल।
रचना देखि बिचित्र अति, मन बिरंचि कर भूल ॥२८७॥

बेनु हरित-मनि-मय सब कीन्हे ❁ सरल सपरन परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनककलित अहिबेलि बनाई ❁ लखि नहिं परै सपरन सुहाई ॥
तेहि के रचि पचि बंध बनाये ❁ बिच बिच मुकुता दाम सुहाये ॥
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा ❁ चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहुरंग बिहंगा ❁ गुंजहिं कूजहिं पवनप्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खंभन्हि गढ़ि काढ़ी ❁ मंगलद्रव्य लिये सब ठाढ़ी ॥
चौकें भाँति अनेक पुराई ❁ सिंधुर-मनि-मय सहज सुहाई ॥

दोहा--सौरभपल्लव सुभग सुठि, किये नील-मनि-कोरि।
हेमबौर मरकत घवरि, लसत पाटमय डोरि ॥२८८॥

रचे रुचिर बर बंदनवारे ❁ मनहुँ मनोभव फंद सवाँरे ॥
मंगल कलस अनेक बनाये ❁ ध्वजपताक पट चँवर सुहाये ॥
दीप मनोहर मनिमय नाना ❁ जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही ❁ सो बरनै अस मति कबि केही ॥
दूलह राम रूप—गुन—सागर ❁ सो बितान तिहुँ लोक उजागर ॥
जनकभवन कै सोभा जैसी ❁ गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी ❁ तेहि लघु लगत भुवन दस चारी ॥
जो संपदा नीचगृह सोहा ❁ सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥

दोहा-बसै नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि बर बेषु।
तेहि पुर कै सोभा कहत, सकुचहिं सादर सेषु ॥२८९॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन ❁ हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन्ह खबर जनाई ❁ दसरथ नृप सुनि लिये बोलाई ॥
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही ❁ मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥
बारि बिलोचन बाँचत पाती ❁ पुलक गात आई भरि छाती ॥

राम लषन उर कर बर चीठी ❀ रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ❀ हरषी सभा बात सुनि साँची ॥
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई ❀ आये भरत सहित हित भाई ॥
पूछत अतिसनेह सकुचाई ❀ तात कहाँ तें पाती आई ॥

दोहा–कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस।
सुनि सनेहसाने बचन, बाँची बहुरि नरेस ॥ २९० ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरत के देखी ❀ सकलसभा सुख लहेउ बिसेखी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कहहु कुसल दोउ बारे ❀ तुम्ह नीके निजनयन निहारे ॥
स्यामल गौर धरे धनुभाथा ❀ बय किसोर कौसिकमुनि साथा ॥
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ ❀ प्रेमबिबस पुनि पुनि कह राऊ ॥
जा दिन तें मुनि गये लेवाई ❀ तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने ❀ सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥

दोहा-सुनहु मही-पति-मुकुट-मनि, तुम्ह सम धन्य न कोउ।
राम लषन जिन्ह के तनय, बिस्वबिभूषन दोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोग न तनय तुम्हारे ❀ पुरुषसिंह तिहुँ पुर उँजियारे ॥
जिन के जस प्रताप के आगे ❀ ससि मलीन रबि सीतल लागे ॥
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे ❀ देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ॥
सीयस्वयंबर भूप अनेका ❀ सिमिटे सुभट एक तें एका ॥
संभुसरासन काहु न टारा ❀ हारे सकल बीर बरियारा ॥
तीनि लोक महँ जे भट मानी ❀ सब कै सकति संभुधनु भानी ॥
सकै उठाइ सुरासुर मेरू ❀ सोउ हिय हारि गयेउ करि फेरू ॥
जेहि कौतुक सिवसैल उठावा ❀ सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥

दोहा-तहाँ राम रघु-बंस-मनि, सुनिअ महामहिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकजनाल ॥ २९२ ॥

सुनि सरोष भृगुनायक आये ❀ बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाये ॥
देखि रामबलु निजधनु दीन्हा ❀ करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा ॥

राजन रामु अतुलबल जैसे ❀ तेजनिधान लषन पुनि तैसे ॥
कंपहिं भूप बिलोकत जा के ❀ जिमि गज हरिकिसोर के ताके ॥
देव देखि तव बालक दोऊ ❀ अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥
दूत - बचन - रचना प्रिय लागी ❀ प्रेम - प्रताप - वीर - रस - पागी ॥
सभासमेत राउ अनुरागे ❀ दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥
कहि अनीति ते मूँदहिं काना ❀ धरमु बिचारि सबहिं सुख माना ॥

दोहा—तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ, दीन्हि पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरुहि सब, सादर दूत बोलाइ ॥२६३॥

सुनि बोले गुरु अति सुख पाई ❀ पुन्यपुरुष कहँ महि सुख छाई ॥
जिमि सरिता सागर महँ जाहीं ❀ जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाये ❀ धरमसील पहिं जाहिं सुभाये ॥
तुम्ह गुरु -बिप्र -धेनु -सुर - सेवी ❀ तसि पुनीत कौसल्या देवी ॥
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं ❀ भयेउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥
तुम्ह तें अधिक पुन्य बड़ का के ❀ राजन राम-सरिस सुत जा के ॥
बीर बिनीत धरम -व्रत - धारी ❀ गुनसागर बर बालक चारी ॥
तुम्ह कहँ सर्बकाल कल्याना ❀ सजहु बरात बजाइ निसाना ॥

दोहा—चलहु बेगि सुनि गुरुबचन, भलेहि नाथ सिरु नाइ ।
भूपति गवने भवन तब, दूतन्ह बास देवाइ ॥२६४॥

राजा सब रनिवास बोलाई ❀ जनकपत्रिका बाँचि सुनाई ॥
सुनि संदेह सकल हरषानि ❀ अपरकथा सब भूप बखानी ॥
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी ❀ मनहुँ सिखिनि सुनि बारिदबानी ॥
मुदित असीस देहिं गुरुनारी ❀ अति - आनंद - मगन महतारी ॥
लेहिं परसपर अतिप्रिय पाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषन कै कीरति करनी ❀ बारहिं बार भूपबर बरनी ॥
मुनिप्रसाद कहि द्वार सिधाये ❀ रानिन्ह तब महिदेव बोलाये ॥
दिये दान आनंदसमेता ❀ चले बिप्रबर आसिष देता ॥

सोरठा--जाचक लिये हँकारि, दीन्हि निछावरि कोटि बिधि ।
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रबर्ति दसरत्थ के ॥२६५॥

कहत चले पहिरें पट नाना ❀ हरषि हने गहगहे निसाना ॥
समाचार सब लोगन्ह पाये ❀ लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारि दस भरा उछाहू ❀ जनक - सुता - रघुबीर - बिबाहू ॥
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे ❀ मग गृह गली सवाँरन लागे ॥
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❀ रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीति कै रीति सुहाई ❀ मंगलरचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू ❀ छावा परमबिचित्र बजारू ॥
कनककलस तोरन मनिजाला ❀ हरद दूब दधि अच्छत माला ॥

दोहा--मंगलमय निज-निज-भवन, लोगन्ह रचे बनाइ ।
बीथी सींची चतुरसम, चौकें चारु पुराइ ॥२९६॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि ❀ सजि नवसप्त सकल-दुति-दामिनि ॥
बिधुबदनीं मृग - सावक - लोचनि ❀ निजसरूप रति-मान-बिमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल बानी ❀ सुनि कलरव कलकंठ लजानी ॥
भूपभवन किमि जाइ बखाना ❀ बिस्वबिमोहन रचेउ बिताना ॥
मंगलद्रव्य मनोहर नाना ❀ राजत बाजत बिपुल निसाना ॥
कतहुँ बिरद बंदी उच्चरहीं ❀ कतहुँ बेदधुनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुंदरि मंगलगीता ❀ लेइ लेइ नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाहु भवन अति थोरा ❀ मानहु उमगि चला चहुँ ओरा ॥

दोहा--सोभा दसरथ भवन कै, को कबि बरनै पार ।
जहाँ सकल-सुर-सीस-मनि, राम लीन्ह अवतार ॥२९७॥

भूप भरत पुनि लिये बोलाई ❀ हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥
चलहु बेगि रघुबीर - बराता ❀ सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बोलाये ❀ आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे ❀ बरन बरन बरबाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी ❀ अय इव जरत धरत पग धरनी ॥
नाना जाति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने ॥
तिन्ह सब छैल भये असवारा ❀ भरतसरिस बय राजकुमारा ॥
सब सुंदर सब भूषनधारी ❀ कर सरचाप तून कटि भारी ॥

दोहा--छरे छबीले छैल सब, सूर सुजान नबीन ।
जुग-पद-चर असवार प्रति, जे असि-कला-प्रबीन ॥२९८॥

बाँधे बिरद बीर रनगाढ़े ❀ निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना ❀ हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना ॥
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाये ❀ ध्वज पताक मनि भूषन लाये ॥
चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं ❀ भानु - जानु - सोभा अपहरहीं ॥
स्यामकरन अगनित हय होते ❀ ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहे ❀ जिन्हहिं बिलोकत मुनिमन मोहे ॥
जे जल चलहिं थलहि की नाईं ❀ टाप न बूड़ बेग अधिकाईं ॥
अस्त्र सस्त्र सब साज बनाई ❀ रथी सारथिन्ह लिये बोलाई ॥

दोहा--चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर, लागी जुरन बरात ।
होत सगुन सुंदर सबन्हि, जो जेहि कारज जात ॥२९९॥

कलित करिबरन्हि परी अँबारी ❀ कहि न जाइ जेहि भाँति सवाँरी ॥
चले मत्तगज घंट बिराजी ❀ मनहुँ सुभग सावन-घन-राजी ॥
बाहन अपर अनेकबिधाना ❀ सिबिका सुभग सुखासन जाना ॥
तिन्ह चढ़ि चले बिप्र-बर-बृंदा ❀ जनु तनु धरे सकल-स्रुति-छंदा ॥
मागध सूत बंदि गुनगायक ❀ चले जान चढ़ि जो जेहि लायक ॥
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती ❀ चले बस्तु भरि अगनित भाँती ॥
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा ❀ बिबिधबस्तु को बरनै पारा ॥
चले सकल - सेवक - समुदाई ❀ निज-निज-साधु-समाजु बनाई ॥

दोहा--सब के उर निर्भर हरषु, पूरित पुलक सरीर ।
कबहि देखिबइ नयनभरि, रामलषन दोउ बीर ॥३००॥

गरजहिं गज घंटाधुनि घोरा ❀ रथरव बाजिहिंस चहुँ ओरा ॥
निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना ❀ निज पराइ कछु सुनिअ न काना ॥
महाभीर भूपति के द्वारे ❀ रज होइ जाइ पषान पबारे ॥
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी ❀ लिये आरती मंगलथारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अतिआनंद न जाइ बखाना ॥
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी ❀ जोते रबि - हय - निंदक बाजी ॥

दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने ❀ नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥
राजसमाज एक रथ साजा ❀ दूसर तेजपुंज अतिभ्राजा ॥

दोहा–तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहँ, हरषि चढ़ाइ नरेसु ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि, हर गुरु गौरि गनेसु ॥३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसे ❀ सुर-गुरु-संग पुरंदर जैसे ॥
करि कुलरीति वेदविधि राऊ ❀ देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई ❀ चले महीपति संख बजाई ॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता ❀ बरखहिं सुमन सु-मंगल-दाता ॥
भयेउ कोलाहल हय गय गाजे ❀ ब्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नाग सुमंगल गाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घंट-घंटि-धुनि बरनि न जाहीं ❀ सरव करहिं पायक फहराहीं ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना ❀ हासकुसल कलगान सुजाना ॥

दोहा--तुरग नचावहिं कुअँर बर, अकनि मृदंग निसान ।
नागर नट चितवहिं चकित, डगहिं न ताल बँधान॥३०२॥

बनै न बरनत बनी बराता ❀ होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥
चारा चाषु बाम दिसि लेई ❀ मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा ❀ नकुलदरस सब काहू पावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी ❀ सघट सवाल आव बरनारी ॥
लोवा फिर फिरि दरस देखावा ❀ सुरभी सनमुख सिसुहि पियावा ॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आई ❀ मंगलगन जनु दीन्ह देखाई ॥
छेमकरी कह छेम बिसेखी ❀ स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सनमुख आयेउ दधि अरु मीना ❀ करपुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥

दोहा--मंगलमय कल्यानमय, अभिमत-फल-दातार ।
जनु सब साँचे होन हित, भये सगुन एक बार ॥३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताके ❀ सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके ॥
रामसरिस बर दुलहिनि सीता ❀ समधी दसरथ जनक पुनीता ॥
सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे ❀ अब कीन्हे बिरंचि हम साचे ॥
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना ❀ हय गय गाजहिं हने निसाना ॥

आवत जानि भानु - कुल - केतू ❀ सरितन्हि जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच बरबासु बनाये ❀ सुर - पुर - सरिस संपदा छाये ॥
असन सयन बर बसन सुहाये ❀ पावहिं सब निज निज मन भाये ॥
नित नूतन सुख लखि अनुकूले ❀ सकल बरातिन्ह मंदिर भूले ॥

दोहा--आवत जानि बरातबर, सुनि गहगहे निसान ।
सजि गज रथ पदचर तुरग, लेन चले अगवान ॥३०४॥

कनककलस भरि कोपर थारा ❀ भाजन ललित अनेकप्रकारा ॥
भरे सुधासम सब पकवाने ❀ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने ॥
फल अनेक बरबस्तु सुहाई ❀ हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषन बसन महामनि नाना ❀ खग मृग हय गय बहुबिधि जाना ॥
मंगल सगुन सुगंध सुहाये ❀ बहुत भाँति महिपाल पठाये ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा ❀ भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥
अगवानन्ह जब दीखि बराता ❀ उर आनंद पुलक भर गाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना ❀ मुदित बरातिन्ह हने निसाना ॥

दोहा--हरषि परसपर मिलनहित, कछुक चले बगमेल ।
जनु आनंदसमुद्र दुइ, मिलत बिहाइ सुबेल ॥३०५॥

बरषि सुमन सुरसुंदरि गावहिं ❀ मुदित देव दुंदुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखीं नृप आगे ❀ बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागे॥
प्रेमसमेत राय सब लीन्हा ❀ भइ बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❀ जनवासे कहँ चले लेवाई ॥
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं ❀ देखि धनद धनमद परिहरहीं ॥
अतिसुंदर दीन्हेउ जनवासा ❀ जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई ❀ कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाई ❀ भूपपहुनई करन पठाई ॥

दोहा--सिधि सब सियआयसु अकनि, गईं जहाँ जनवास ।
लिये संपदा सकलसुख, सुर-पुर-भोग-बिलास ॥३०६॥

निजनिज बास बिलोकि बराती ❀ सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती ॥
बिभवभेद कछु कोउ न जाना ❀ सकल जनक कर करहिं बखाना ॥

सियमहिमा रघुनायक जानी ❀ हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितुआगमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदय न अति आनंदु अमाई ॥
सकुचन्ह कहि न सकत गुरुपाहीं ❀ पितु-दरसन-लालच मनु माहीं ॥
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी ❀ उपजा उर संतोष बिसेखी ॥
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाये ❀ पुलक अंग अंबक जल छाये ॥
चले जहाँ दसरथ जनवासे ❀ मनहुँ सरोबर तकेउ पियासे ॥

दोहा--भूप बिलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन्ह समेत ।
उठेउ हरषि सुखसिंधु महुँ, चले थाह सी लेत ॥३०७॥

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीसा ❀ बार बार पदरज धरि सीसा ॥
कौसिक राउ लिये उर लाई ❀ कहि असीस पूछी कुसलाई ॥
पुनि दंडवत करत दोउ भाई ❀ देखि नृपति उर सुख न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे ❀ मृतकसरीर प्रान जनु भेंटे ॥
पुनि वसिष्ठपद सिर तिन्ह नाये ❀ प्रेममुदित मुनिबर उर लाये ॥
बिप्रबृंद बंदे दुहुँ भाई ❀ मनभावती असीसें पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा ❀ लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषन देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम-परि-पूरित गाता ॥

दोहा--पुरजन परिजन जातिजन, जाचक मंत्री मीत ।
मिले जथाबिधि सबहि प्रभु, परमकृपालु बिनीत ॥३०८॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❀ प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुत चारी ❀ जनु धनधरमादिक तनुधारी ॥
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी ❀ मुदित नगर-नर-नारि बिसेखी ॥
सुमन बरषि सुर हनहिं निसाना ❀ नाकनटी नाचहिं करि गाना ॥
सतानंद अरु बिप्र सचिवगन ❀ मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना ❀ आयसु माँगि फिरे अगवाना ॥
प्रथम बरात लगन तें आई ❀ ता तें पुर प्रमोद अधिकाई ॥
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं ❀ बढ़इ दिवसनिसि बिधि सन कहहीं ॥

दोहा--रामु सीय सोभाअवधि, सुकृतअवधि दोउ राज ।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नर-नारि-समाज॥३०९॥

जनक - सुकृत - मूरति बैदेही ❀ दसरथसुकृत रामु धरे देही ॥
इन्ह सम काहु न सिव अवराधे ❀ काहु न इन्ह समान फल लाधे ॥
इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं ❀ है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं ॥
हम सब सकल सुकृत कै रासी ❀ भये जग जनमि जनक-पुर-बासी ॥
जिन्ह जानकी-राम-छबि देखी ❀ को सुकृती हम सरिस बिसेखी ॥
पुनि देखब रघु-बीर-बिबाहू ❀ लेब भली बिधि लोचन लाहू ॥
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी ❀ एहि बिबाह बड़ लाभ सुनयनी ॥
बड़े भाग बिधि बात बनाई ❀ नयनअतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥

दोहा--बारहिं बार सनेहबस, जनक बोलाउब सीय ।
लेन आइहहिं बंधु दोउ, कोटि-काम-कमनीय ॥३१०॥

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई ❀ प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥
तब तब राम लषनहिं निहारी ❀ होइहहिं सब पुरलोग सुखारी ॥
सखि जस राम लषन कर जोटा ❀ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
स्याम गौर सब अंग सुहाये ❀ ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
कहा एक मैं आजु निहारे ❀ जनु बिरंचि निजहाथ सँवारे ॥
भरतु रामही की अनुहारी ❀ सहसा लखि न सकहिं नरनारी ॥
लषन सत्रुसूदन एकरूपा ❀ नख सिख तें सब अंग अनूपा ॥
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं ❀ उपमा कहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छंद—उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुँ कबिकोबिद कहहिं ।
बल-बिनय-बिद्या-सील-सोभा-सिंधु इन्ह से एइ अहहिं ॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं ।
ब्याहिअहु चारिउ भाइ एहि पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सोरठा—कहहिं परस्पर नारि, बारिबिलोचन पुलक तन ।
सखि सब करब पुरारि, पुन्य-पयो-निधि भूप दोउ ॥३११॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं ❀ आनँद उमगि उमगि उर भरहीं ॥
जे नृप सीयस्वयंबर आये ❀ देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाये ॥
कहत रामजसु बिसद बिसाला ❀ निज निज भवन गये महिपाला ॥
गये बीति कछु दिन एहि भाँती ❀ प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥

मंगलमूल लगनदिन आवा ❀ हिमरितु अगहनमासु सुहावा ॥
ग्रह तिथि नखत जोगु बर बारू ❀ लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू ॥
पठै दीन्हि नारद सन सोई ❀ गनी जनक के गनकन्ह जोई ॥
सुनी सकल लोगन यह बाता ❀ कहहिं जोतिषी आहि बिधाता ॥

दोहा–धेनु-धूलि-बेला बिमल, सकल-सुमंगल-मूल ।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन, जानि सगुन अनुकूल ॥३१२॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ❀ अब बिलंब कर कारन काहा ॥
सतानंद तब सचिव बोलाये ❀ मंगल सकल साजि सब ल्याये ॥
संख निसान पनव बहु बाजे ❀ मंगलकलस सगुन सुभ साजे ॥
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता ❀ करहिं बेदधुनि बिप्र पुनीता ॥
लेन चले सादर एहि भाँती ❀ गये जहाँ जनवास बराती ॥
कोसलपति कर देखि समाजू ❀ अति लघु लाग तिन्हहिं सुरराजू ॥
भयेउ समउ अब धारिय पाऊ ❀ यह सुनि परा निसानहिं घाऊ ॥
गुरुहि पूछि करि कुलबिधि राजा ❀ चले संग मुनि-साधु-समाजा ॥

दोहा–भाग्यबिभव अवधेस कर, देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहसमुख, जानि जनम निज बादि ॥३१३॥

सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना ❀ बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा ❀ चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा ॥
प्रेम-पुलक-तन हृदय उछाहू ❀ चले बिलोकन रामबिआहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे ❀ निजनिज लोक सबहि लघु लागे ॥
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना ❀ रचना सकल अलौकिक नाना ॥
नगर - नारि - नर रूपनिधाना ❀ सुघर सुधरम सुसील सुजाना ॥
तिन्हहिं देखि सब सुर-सुर-नारी ❀ भये नखत जनु बिधु उँजियारी ॥
बिधिहि भयेउ आचरजु बिसेखी ❀ निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥

दोहा–सिव समझाये देव सब, जनि आचरज भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धीर धरि, सिय-रघु-बीर-बिआहु ॥३१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं ❀ सकल-अमंगल-मूल नसाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी ❀ तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥

एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा ❀ पुनि आगे बरबसह चलावा ॥
देवन्ह देखे दसरथ जाता ❀ महामोदु मन पुलकित गाता ॥
साधु समाजु संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपबरग सकल तनुधारी ॥
मरकत-कनक-बरन बर जोरी ❀ देखि सुरन्ह भइ प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे ❀ नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥

दोहा—रामरूप नख-सिख-सुभग, बारहिं बार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल, उमासमेत पुरारि ॥३१५॥

केकि-कंठ-दुति स्यामल अंगा ❀ तड़ितबिनिंदक बसन सुरंगा ॥
ब्याहबिभूषन बिबिध बनाये ❀ मंगलमय सब भाँति सुहाये ॥
सरद-बिमल-बिधु-बदन सुहावन ❀ नयन नवल—राजीव—लजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई ❀ कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥
बंधु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राजकुअँर बरबाजि देखावहिं ❀ बंसप्रसंसक बिरद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे ❀ गति बिलोकि खगनायकु लाजे ॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ❀ बाजिबेषु जनु काम बनावा ॥

छंद—जनु बाजिबेषु बनाइ मनसिजु रामहित अतिसोहई ।
आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ॥
जगमगत जीन जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे ।
किंकिनि ललामु लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दोहा—प्रभुमनसहिं लयलीन मनु, चलत बाजि छबि पाव ।
भूषितउडुगन तड़ितघनु, जनु बर बरहि नचाव ॥३१६॥

जेहि बर बाजि रामु असवारा ❀ तेहि सारदहु न बरनै पारा ॥
संकर राम – रूप – अनुरागे ❀ नयन पंचदस अतिप्रिय लागे ॥
हरि हितसहित रामु जब जोहे ❀ रमासमेत रमापति मोहे ॥
निरखि रामछबि बिधि हरषाने ❀ आठै नयन जानि पछिताने ॥
सुर - सेनप - उर बहुत उछाहू ❀ बिधि तें डेवढ़ सु-लोचन-लाहू ॥
रामहिं चितव सुरेस सुजाना ❀ गौतमसाप परमहित माना ॥

देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं ❀ आजु पुरंदरसम कोउ नाहीं ॥
मुदित देवगन रामहिं देखी ❀ नृपसमाज दुहुँ हरष बिसेखी ॥

छंद–अतिहरष राजसमाजु दुहुँ दिसि दुंदुभी बाजहिं घनी ।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जयजयति जय रघु-कुल-मनी ॥
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥

दोहा--सजि आरती अनेक बिधि, मंगल सकल सवाँरि ।
चलीं मुदित परिछन करन, गजगामिनि बरनारि ॥३१७॥

बिधुबदनी सब सब मृगलोचनि ❀ सब निज तनछबिरति-मद-मोचनि ॥
पहिरे बरन बरन बर चीरा ❀ सकल बिभूषन सजे सरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये ❀ करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं ❀ चाल बिलोकि काम गज लाजहिं ॥
बाजहिं बाजन बिबिधप्रकारा ❀ नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
सची सारदा रमा भवानी ❀ जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥
कपट - नारि - बर - बेष बनाई ❀ मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥
करहिं गान कल मंगलबानी ❀ हरषबिबस सब काहु न जानी ॥

छंद–को जान केहि आनंदबस सब ब्रह्म बर परिछन चलीं ।
कलगान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भलीं ॥
आनंदकंज बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई ।
अंभोज–अंबक–अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

दोहा–जो सुख भा सिय-मातु-मन, देखि राम-बर-बेषु ।
सो न सकहिं कहिकलप-सत, सहस सारदा सेषु ॥३१८॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी ❀ परिछन करहिं मुदित मन रानी ॥
बेदबिहित अरु कुलआचारू ❀ कीन्ह भली बिधि सब व्यवहारू ॥
पंच सबद सुनि मंगल गाना ❀ पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अरघ तिन्ह दीन्हा ❀ राम गवन मंडप तब कीन्हा ॥
दसरथ सहित समाज बिराजे ❀ बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥
समय समय सुर बरषहिं फूला ❀ सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥

नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपन पर कछु सुनै न कोई ॥
एहि बिधि रामु मंडपहिं आये ❀ अरघु देइ आसन बैठाये ॥

छंद—बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुख पावहीं ।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुरबर बिप्रबेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघु-कुल-कमल-रबि-छबि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दोहा--नाऊ बारी भाट नट, रामनिछावरि पाइ ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर, हरषु न हृदय समाइ ॥३१९॥

मिले जनकु दसरथु अतिप्रीती ❀ करि वैदिक लौकिक सब रीती ॥
मिलत महा दोउ राज बिराजे ❀ उपमा खोजि खोजि कबि लाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हिय मानी ❀ इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥
सामध देखि देव अनुरागे ❀ सुमन बरषि जसु गावन लागे ॥
जगु बिरंचि उपजावा जब तें ❀ देखे सुने ब्याह बहु तब तें ॥
सकल भाँति सम साजु समाजू ❀ सम समधी देखे हम आजू ॥
देवगिरा सुनि सुंदर साँची ❀ प्रीति अलौकिक दुहुँ दिसि माँची ॥
देत पाँवड़े अरघु सुहाये ❀ सादर जनकु मंडपहिं ल्याये ॥

छन्द--मंडप बिलोकि बिचित्ररचना रुचिरता मुनिमन हरे ।
निजपानि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे ॥
कुल-इष्ट-सरिस बसिष्ट पूजे बिनय करि आसिष लही ।
कौसिकहिं पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ॥

दोहा--बामदेव आदिक रिषय, पूजे मुदित महीस ।
दिये दिव्य आसन सबहि, सब सन लही असीस ॥३२०॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा ❀ जानि ईससम भाव न दूजा ॥
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई ❀ कहि निज भाग्य बिभव बहुताई ॥
पूजे भूपति सकलबराती ❀ समधीसम सादर सब भाँती ॥
आसन उचित दिये सब काहू ❀ कहउँ कहा मुख एक उछाहू ॥
सकलबरात जनक सनमानी ❀ दान मान बिनती बर बानी ॥
बिधि हरिहर दिसिपति दिनराऊ ❀ जे जानहिं रघु-बीर-प्रभाऊ ॥

कपट - बिप्र - बर - बेषु बनाये ❀ कौतुक देखहिं अति सचुपाये ॥
पूजे जनक देवसम जाने ❀ दिये सुआसन बिनु पहिचाने ॥

छन्द--पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई ।
आनंदकंद बिलोकि दूलह उभय दिसि आनँदमई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ।
अवलोकि सील सुभाउ प्रभु को बिबुधमन प्रमुदित भये ॥

दोहा--रामचंद्र-मुख-चन्द्र-छवि, लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोदु न थोर ॥३२१॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाये ❀ सादर सतानंद सुनि आये ॥
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई ❀ चले मुदित मुनिआयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥
बिप्रबधू कुलबृद्ध बोलाई ❀ करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारिबेष जे सुर - बर - बामा ❀ सकल सुभाय सुन्दरी स्यामा ॥
तिन्हहिं देखि सुख पावहिं नारी ❀ बिनु पहिचानि प्रान तें प्यारी ॥
बार बार सनमानहिं रानी ❀ उमा-रमा - सारद - सम जानी ॥
सीय सवाँरि समाज बनाई ❀ मुदित मंडपहिं चलीं लेवाई ॥

छन्द--चलि ल्याइ सीतहि सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी ।
नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त - कुंजर - गामिनी ॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकन तालगति बर बाजहीं ॥

दोहा--सोहति बनितावृन्द महुँ, सहज सुहावनि सीय ।
छबि-ललना-गन मध्य जनु, सुखमा तिय कमनीय ॥३२२॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई ❀ लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवत दीखि बरातिन्ह सीता ❀ रूपरासि सब भाँति पुनीता ॥
सबहि मनहिं मन किये प्रनामा ❀ देखि राम भये पूरनकामा ॥
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता ❀ कहि न जाइ उर आनँद जेता ॥
सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला ❀ मुनि-असीस-धुनि मंगलमूला ॥
गान - निसान - कोलाहलु भारी ❀ प्रेम - प्रमोद - मगन नरनारी ॥

एहि विधि सीय मण्डपहिं आई ❀ प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू ❀ दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ॥
छन्द–आचार करि गुरु गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं ।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अतिसुख पावहीं ॥
मधुपर्क मंगलद्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महँ चहैं ।
भरे कनककोपर कलस सो तब लिये परिचारक रहैं ॥
कुलरीति प्रीतिसमेत रवि कहि देत सबु सादर किये ।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥
सिय-राम-अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै ।
मन–बुद्धि–बर–बानी–अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥
दोहा--होम समय तनु धरि अनलु, अतिसुख आहुति लेहिं ।
विप्रवेष धरि बेद सब, कहि विवाहविधि देहिं ॥३२३॥
जनक-पाट-महिषी जग जानी ❀ सीयमातु किमि जाइ बखानी ॥
सुजस सुकृत सुख सुंदरताई ❀ सब समेटि विधि रची बनाई ॥
समउ जानि मुनिवरन्ह बोलाई ❀ सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥
जनक-बाम-दिसि सोह सुनयना ❀ हिमगिरि संग बनी जनु मयना ॥
कनककलस मनिकोपर रूरे ❀ सुचि--सुगंध – मंगल -- जल – पूरे ॥
निजकर मुदित राय अरु रानी ❀ धरे राम के आगे आनी ॥
पढ़हिं बेद मुनि मंगलबानी ❀ गगन सुमन झरि अवसर जानी ॥
बर बिलोकि दंपति अनुरागे ❀ पाय पुनीत पखारन लागे ॥
छन्द–लागे पखारन पायपंकज प्रेम तनु पुलकावली ।
नभ नगर गान-निसान-जय-धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली ॥
जे पद सरोज मनोज-अरि-उर-सर सदैव बिराजहीं ।
जे सुकृत सुमिरत विमलता मन सकल कलिमल भाजहीं ॥
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई ।
मकरंद जिन्ह को संभुसिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥
करि मधुप मुनि मन जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ॥

वर-कुअँरि-करतल जोरि साखोचार दोउ कुलगुरु करैं ।
भयो पानिगहनु बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥
सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलक तनु हुलस्यो हिये ।
करि लोक-बेद-बिधान कन्यादान नृपभूषन किये ॥
हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई ।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई ॥
क्यों करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति सावँरी ।
करि होम बिधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी ॥

दोहा--जयधुनि बंदी-बेद धुनि, मंगलगान निसान ।
सुनि हरषहिं बरसहिं बिबुध, सुर-तरु-सुमन सुजान ॥३२४॥

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं ❀ नयनलाभ सब सादर लेहीं ॥
जाइ न बरनि मनोहर जोरी ❀ जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥
राम सीय सुन्दर प्रतिछाहीं ❀ जगमगाति मनिखंभन्ह माहीं ॥
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा ❀ देखत राम बिवाह अनूपा ॥
दरसलालसा सकुच न थोरी ❀ प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भये मगन सब देखनिहारे ❀ जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी ❀ नेगसहित सब रीति निबेरी ॥
राम सीयसिर सेंदुर देहीं ❀ सोभा कहि न जात बिधि केहीं ॥
अरुन पराग जलजु भरि नीके ❀ ससिहि भूष अहि लोभ अमी के ॥
बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन ❀ बर दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छन्द–बैठ बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथु भये ।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत-सुर-तरु-फल नये ॥
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबही कहा ।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याहसाज सवाँरिकै ।
मांडवी स्रुतिकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारिकै ॥
कुस-केतु-कन्या प्रथम जो गुन-सील-सुख-सोभा-मई ।
सब रीति-प्रीति-समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई ॥

जानकी-लघु-भगिनी सकल सुंदर सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लषनहि सकल बिधि सनमानि कै॥
जेहि नाम स्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुनआगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी॥
अनुरूप बर दुलहिनि परसपर लखि सकुचि हिय हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं॥
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं॥

दोहा—मुदित अवधपति सकलसुत, बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाये महि-पाल-मनि, क्रियन्ह सहित फल चारि॥३२५॥

जसि रघुबीर ब्याहबिधि बरनी ❀ सकलकुअँर ब्याहे तेहि करनी॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ❀ रहा कनकमनि मंडप पूरी॥
कंबल बसन बिचित्र पटोरे ❀ भाँति भाँति बहुमोल न थोरे॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी ❀ धेनु अलंकृत कामदुहा सी॥
बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा ❀ कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❀ लीन्ह अवधपति सब सुख माने॥
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा ❀ उबरा सो जनवासेहिं आवा॥
तब करि जोरि जनक मृदुबानी ❀ बोले सब बरात सनमानी॥

छंद—सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनिबृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै॥
सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किये।
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जलअंजलि दिये॥
कर जोरि जनक बहोरि बंधुसमेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों॥
सनबंध राजन रावरे हम बड़े अब सबबिधि भये।
येहि राज साज समेत सेवकु जानिबी बिनु गथ लये॥
ए दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामई।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठ्यो कई॥

पुनि भानु-कुल-भूषन सकल-सनमान-निधि समधी किये।
कहि जात नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिये॥
बृंदारकागन सुमन बरषहिं राउ जनवासेहिं चले।
दुंदुभी जयधुनि वेदधुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखी मंगलगान करत मुनीसआयसु पाइ के।
दूलह दुलहिनिन्हि सहित सुंदर चलीं कोहबर ल्याइ के॥

दोहा—पुनि पुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मन सकुचैन।
हरत मनोहर-मीन-छवि प्रेम पियासे नैन॥३२६॥

स्याम सरीर सुभाय सुहावन ❀ सोभा कोटि—मनोज—लजावन॥
जावकजुत पदकमल सुहाये ❀ मुनि-मन-मधुप रहत जिन्ह छाये॥
पीत पुनीत मनोहर धोती ❀ हरत बाल-रवि-दामिनि-जोती॥
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर ❀ बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर॥
पीत जनेउ महाछवि देई ❀ करमुद्रिका चोरि चित लेई॥
सोहत ब्याहसाज सब साजे ❀ उर आयत भूषन उर राजे॥
पियर उपरना काँखा सोती ❀ दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती॥
नयन कमल कल कुंडल काना ❀ बदन सकल सौंदर्जनिधाना॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा ❀ भालतिलकु रुचिरता निवासा॥
सोहत मौरु मनोहर माथे ❀ मंगलमय मुकुतामनि गाथे॥

छन्द—गाथे महामनि मौरु मंजुल अंग सब चितचोरहीं।
पुरनारि सुरसुन्दरी बरहिं बिलोकि सब तृन तोरहीं॥
मनि बसन भूषन बारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं॥
कोहबरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्हि सुख पाइ के।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ के॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं।
रनिवासु हास-बिलास-रस-बस जनम को फल सब लहैं॥
निज-पानि-मनि महुँ देखि प्रतिमूरति सु-रूप-निधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि-बिरह-भय-बस जानकी॥

कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ।
बर कुअँरि सुन्दर सकल सखी लिवाइ जनवासेहिं चलीं ॥
तेहि समय सुनिय असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँद महा ।
चिरजिअहु जोरी चारु चारयो मुदितमन सबही कहा ॥
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज-निज-लोक जय जय जय भनी ॥

दोहा--सहित बधूटिन्ह कुअँर सब, तब आये पितु पास ।
सोभा मंगल मोद भरि, उमगेउ जनु जनवास ॥३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती ❀ पठये जनक बोलाइ बराती ॥
परत पाँवड़े बसन अनूपा ❀ सुतन्ह समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सब के पाय पखारे ❀ जथाजोग पीढ़न्ह बैठारे ॥
धोये जनक अवध - पति - चरना ❀ सील सनेहु जाइ नहिं बरना ॥
बहुरि राम-पद-पंकज धोये ❀ जे हर हृदयकमल महँ गोये ॥
तीनिउ भाइ रामसम जानी ❀ धोये चरन जनक निजपानी ॥
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे ❀ बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे ❀ कनककील मनिपान सँवारे ॥

दोहा--सूपोदन सुरभी सरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत ।
छन महँ सब के परुसि गे, चतुर सुआर बिनीत ॥३२८॥

पंचकवल करि जेवन लागे ❀ गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भाँति अनेक परे पकवाने ❀ सुधासरिस नहिं जाहिं बखाने ॥
परुसन लगे सुआर सुजाना ❀ बिंजन बिबिध नाम को जाना ॥
चारि भाँति भोजन बिधि गाई ❀ एक एक बिधि बरनि न जाई ॥
छ रस रुचिर बिंजन बहु जाती ❀ एक एक रस अगनित भाँती ॥
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी ❀ लेइ लेइ नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावनि गारि बिराजा ❀ हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥
एहि बिधि सबही भोजन कीन्हा ❀ आदर सहित आचमन दीन्हा ॥

दोहा--देइ पान पूजे जनक, दसरथ सहित समाज ।
जनवासेहि गवने मुदित, सकल-भूप-सिरताज ॥३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं ❀ निमिषसरिसदिनजामिनि जाहीं ॥
बड़े भोर भू-पति-मनि जागे ❀ जाचक गुनगन गावन लागे ॥
देखि कुअँर वर बधुन्ह समेता ❀ किमि कहि जात मोद मन जेता ॥
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं ❀ महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥
करि प्रनामु पूजा कर जोरी ❀ बोले गिरा अमिअ जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा ❀ भयेउँ आजु मैं पूरनकाजा ॥
अब सब विप्र बोलाइ गुसांई ❀ देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनिबृंद बोलाई ॥

दोहा--बामदेव अरु देवरिषि, बालमीकि जाबालि ।
आये मुनि-वर-निकर तब, कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥

दण्ड प्रनामु सबहि नृप कीन्हे ❀ पूजि सप्रेम वरासन दीन्हे ॥
चारि लच्छ वरधेनु मँगाई ❀ काम--सुरभि--सम सील सुहाई ॥
सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं ❀ मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्ही ॥
करत विनय बहुविधि नरनाहू ❀ लहेउ आजु जग जीवनलाहू ॥
पाइ असीसु महीस अनंदा ❀ लिये बोलि पुनि जाचकबृंदा ॥
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन ❀ दिये बूझि रुचि रवि-कुल-नंदन ॥
चले पढ़त गावत गुनगाथा ❀ जय जय जय दिन-कर-कुल-नाथा ॥
एहि बिधि राम-बिआह-उछाहू ❀ सकै न बरनि सहसमुख जाहू ॥

दोहा--बार बार कौसिक चरन, सीसु नाइ कह राउ ।
यह सबु सुखु मुनिराज तव, कृपा-कटाच्छ-प्रभाउ ॥३३१॥

जनक सनेह सीलु कर तूती ❀ नृपु सब भाँति सराह बिभूती ॥
दिन उठि बिदा अवधपति माँगा ❀ राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई ❀ दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनंद उछाहू ❀ दसरथ गवँन सुहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते एहि भाँती ❀ जनु सनेहरजु बँधे बराती ॥
कौसिक सतानंद तब जाई ❀ कहा बिदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दसरथ कहँ आयसु देहू ❀ जद्यपि छाँड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाये ❀ कहि जय जीव सीस तिन्ह नाये ॥

दोहा-अवधनाथु चाहत चलन, भीतर करहु जनाउ।
भये प्रेमबस सचिव सुनि, बिप्र सभासद राउ ॥३३२॥

पुरबासी सुनि चलिहि बराता ❀ पूछत बिकल परसपर बाता ॥
सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ साझ सरसिज सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सिद्ध चला बहुभाँती ॥
बिबिधि भाँति मेवा पकवाना ❀ भोजनसाज न जाइ बखाना ॥
भरि भरि बसह अपार कहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा ❀ सकल सवाँरे नख अरु सीसा ॥
मत्त सहस दस सिंधुर साजे ❀ जिन्हहिं देखि दिसकुंजर लाजे ॥
कनक बसन मनि भरि भरि जाना ❀ महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना ॥

दोहा--दाइज अमित न सकिअ कहि, दीन्ह बिदेह बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति, लोक-संपदा थोरि ॥३३३॥

सब समाज एहि भाँति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सब रानी ❀ बिकल मीनगन जनु लघु पानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं ❀ देइ असीस सिखावन देहीं ॥
होयेहु संतत पियहि पियारी ❀ चिर अहिवात असीस हमारी ॥
सासु-ससुर-गुरु-सेवा करेहू ❀ पतिरुख लखि आयसु अनुसरेहू ॥
अति-सनेह-बस सखी सयानी ❀ नारिधरमु सिखवहिं मृदुबानी ॥
सादर सकल कुअँरि समुझाई ❀ रानिन्ह बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी ❀ कहहिं बिरंचि रची कत नारी ॥

दोहा--तेहि अवसर भाइन्ह सहित, राम भानु-कुल-केतु।
चले जनकमंदिर मुदित, बिदा करावन हेतु ॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये ❀ नगर-नारि-नर देखन धाये ॥
कोउ कह चलन चहतहहिं आजू ❀ कीन्ह बिदेह बिदा कर साजू ॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥
को जानै केहि सुकृत सयानी ❀ नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी ॥
मरनसील जिमि पाव पियूखा ❀ सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥
पाव नारकी हरिपदु जैसे ❀ इन्ह कर दरसन हम कहँ तैसे ॥

निरखि रामसोभा उर धरहू ❀ निज-मन-फनि-मूरति-मनि करहू ॥
एहि बिधि सबहि नयनफल देता ❀ गये कुअँर सब राजनिकेता ॥

दोहा--रूपसिंधु सब बंधु लखि, हरषि उठेउ रनिवासु ।
करहिं निछावरि आरती, महा मुदित मन सासु ॥३३५॥

देखि राम छबि अति अनुरागीं ❀ प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागीं ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई ❀ सहज सनेह बरनि किमि जाई ॥
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाये ❀ छरस असन अति हेतु जेंवाये ॥
बोले रामु सुअवसर जानी ❀ सील-सनेह-सकुच-मय बानी ॥
राउ अवध पुर चहत सिधाये ❀ बिदा होन हम इहाँ पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू ❀ बालक जानि करब नित नेहू ॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू ❀ बोलि न सकहिं प्रेम बस सासू ॥
हृदय लगाइ कुअँरि सब लीन्हीं ❀ पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्हीं ॥

छंद—करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।
बलि जाउँ तात सुजान तुम कहँ बिदित गति सब की अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी ।
तुलसी सुसील सनेह लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥

सोरठा--तुम परिपूरनकाम, जान सिरोमनि भाव प्रिय ।
जन-गुन-गाहक राम, दोष-दलन करुनायतन ॥३३६॥

अस कहि रही चरन गहि रानी ❀ प्रेमपंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेहसानी बरबानी ❀ बहु बिधि राम सासु सनमानी ॥
राम बिदा माँगा करजोरी ❀ कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी ॥
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई ❀ भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥
मंजु-मधुर-मूरति उर आनी ❀ भई सनेह सिथिल सब रानी ॥
पुनि धीरज धरि कुअँरि हँकारी ❀ बार बार भेटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनि मिलति सखिन्ह बिलगाई ❀ बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥

दोहा--प्रेम बिबस नरनारि सब, सखिन्ह सहित रनिवासु ।
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर, करुना-बिरह-निवासु ॥३३७॥

सुक सारिका जानकी ज्याये ❀ कनकपिंजरन्हि राखि पढ़ाये ॥
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही ❀ सुनि धीरजु परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग मृग एहि भाँती ❀ मनुजदसा कैसे कहि जाती ॥
बंधुसमेत जनकु तब आये ❀ प्रेम उमगि लोचन जल छाये ॥
सीय बिलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम बिरागी ॥
लीन्हि राय उर लाइ जानकी ❀ मिटी महामरजाद ज्ञान की ॥
समुझावत सब सचिव सयाने ❀ कीन्ह बिचारु अनवसर जाने ॥
बारहिंबार सुता उर लाई ❀ सजि सुंदर पालकी मँगाई ॥

दोहा–प्रेम बिबस परिवार सबु, जानि सुलगन नरेस ।
कुअँरि चढ़ाई पालकिन्ह, सुमिरे सिद्ध गनेस ॥३३८॥

बहुबिधि भूप सुता समुझाई ❀ नारिधरम कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे ❀ सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी ❀ होहिं सगुन सुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा ❀ संग चले पहुँचावन राजा ॥
समय बिलोकि बाजने बाजे ❀ रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे ❀ दान मान परिपूरन कीन्हे ॥
चरन-सरोज-धूरि धरि सीसा ❀ मुदित महीपति पाइ असीसा ॥
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना ❀ मंगलमूल सगुन भये नाना ॥

दोहा–सुर प्रसून बरषहिं हरषि, करहिं अपछरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निसान ॥३३९॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे ❀ सादर सकल माँगने टेरे ॥
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार बिरदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं ❀ जनक प्रेमबस फिरै न चहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाये ❀ फिरिअ महीप दूरि बड़ि आये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े ❀ प्रेमप्रबाह बिलोचन बाढ़े ॥
तब बिदेहु बोले कर जोरी ❀ बचन सनेहसुधा जनु बोरी ॥
करौं कवन बिधि बिनय बनाई ❀ महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥

दोहा–कोसलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति ।
मिलनि परसपर विनय अति, प्रीति न हृदय समाति ॥३४०॥

मुनिमंडलिहि जनक सिरु नावा ❀ आसिरवाद सबहि मन पावा ॥
सादर पुनि भेंटे जामाता ❀ रूप-सील-गुन-निधि सब भ्राता ॥
जोरि पंक-रुह-पानि सुहाये ❀ बोले बचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा ❀ मुनि–महेस–मन—मानस–हंसा ॥
करहिं जोग जोगी जेहि लागी ❀ कोह मोह ममता मद त्यागी ॥
व्यापक ब्रह्म अलख अबिनासी ❀ चिदानंद निरगुन गुनरासी ॥
मनसमेत जेहि जान न बानी ❀ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥
महिमा निगम नेति कहि कहई ❀ जो तिहुँ काल एकरस अहई ॥

दोहा--नयनबिषय मो कहुँ भयेउ, सो समस्त-सुख-मूल ।
सबहि लाभ जगजीव कहँ, भये ईस अनुकूल ॥३४१॥

सबहिं भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई ❀ निज निज जानि लीन्ह अपनाई ॥
होहिं सहस दस सारद सेखा ❀ करहिं कलपकोटिक भरि लेखा ॥
मोर भाग्य राउर गुनगाथा ❀ कहिं न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ❀ तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बारबार माँगौं कर जोरे ❀ मनु परिहरै चरन जनि भोरे ॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे ❀ पूरनकाम रामु परितोषे ॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने ❀ पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही ❀ मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही ॥

दोहा–मिले लषन रिपुसूदनहिं, दीन्हि असीस महीस ।
भये परसपर प्रेमबस, फिरि फिरि नावहिं सीस ॥३४२॥

बार बार करि बिनय बड़ाई ❀ रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौसिकपद जाई ❀ चरनरेनु सिर नयनन्हि लाई ॥
सुनु मुनीसवर दरसन तोरे ❀ अगम न कछु प्रतीति मन मोरे ॥
जो सुख सुजस लोकपति चहहीं ❀ करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी ❀ सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥
कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई ❀ फिरे महीस आसिषा पाई ॥

चली बरात निसान बजाई ❀ मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्राम-नर-नारी ❀ पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥

दोहा--बीच बीच बर बास करि, मगलोगन्ह सुख देत ।
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आइ जनेत ॥३४३॥

हने निसान पवन बर बाजे ❀ भेरि-संख-धुनि हय गय गाजे ॥
झाँझि बिरव डिंडिमी सुहाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता ❀ मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
निज निज सुंदर सदन सवाँरे ❀ हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजा सिंचाई ❀ जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥
बना बजारु न जाइ बखाना ❀ तोरन केतु पताक बिताना ॥
सफल पूगफल कदलि रसाला ❀ रोपे बकुल कदंब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरनी ❀ मनिमय आलबाल कल करनी ॥

दोहा--बिबिध भाँति मंगलकलस, गृह गृह रचे सवाँरि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघु-बर-पुरी निहारि ॥३४४॥

भूपभवनु तेहि अवसर सोहा ❀ रचना देखि मदनमन मोहा ॥
मंगल सगुन मनोहरताई ❀ रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये ❀ तनु धरि धरि दसरथगृह आये ॥
देखन हेतु रामबैदेही ❀ कहहु लालसा होइ न केही ॥
जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि ❀ निजछबि निदरहिं मदनबिलासिनि ॥
सकल सुमंगल सजे आरती ❀ गावहिं जनु बहु बेष भारती ॥
भूपतिभवन कोलाहल होई ❀ जाइ न बरनि समउ सुख सोई ॥
कौसल्यादि राममहतारीं ❀ प्रेमबिबस तनुदसा बिसारी ॥

दोहा--दिये दान बिप्रन्ह बिपुल, पूजि गनेस पुरारि ।
प्रमुदित परमदरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥३४५॥

मोद-प्रमोद-बिबस सब माता ❀ चलहिं न चरन सिथिल भये गाता ॥
रामदरस हित अतिअनुरागीं ❀ परिछन साजु सजन सब लागीं ॥
बिबिध बिधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥

हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पूगफल मंगलमूला ॥
अच्छत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ॥
छुहे पुरटघट सहज सुहाये ❀ मदन सकुन जनु नीड़ बनाये ॥
सगुन सुगंध न जाइ बखानी ❀ मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥
रची आरती बहुत बिधाना ❀ मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥

दोहा—कनकथार भरि मंगलन्हि, कमल करन लिये मात ।
चलीं मुदित परिछन करन, पुलकपल्लवित गात ॥३४६॥

धूपधूम नभ मेचक भयऊ ❀ सावन घनघमंड जनु ठयऊ ॥
सुर-तरु-सुमन-माल सुर बरषहिं ❀ मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं ॥
मंजुल मनिमय बंदनवारे ❀ मनहुँ पाक-रिपु-चाप सवाँरे ॥
प्रगटहिं दुरहिं अटन पर भामिनि ❀ चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ॥
दुंदुभिधुनि घनगरजनि घोरा ❀ जाचक चातक दादुर मोरा ॥
सुर सुगंध सुचि बरषहिं बारी ❀ सुखी सकल ससि पुर-नर-नारी ॥
समउ जानि गुरु आयसु दीन्हा ❀ पुर प्रबेसु रघु-कुल-मनि कीन्हा ॥
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दोहा- होहिं सगुन बरषहिं सुमन, सुर दुंदुभी बजाइ ।
बिबुधबधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर ❀ गावहिं जसु तिहुँ लोक उजागर ॥
जयधुनि बिमल बेद–बर–बानी ❀ दस दिसि सुनिअ सु-मंगल-सानी ॥
बिपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरनि न जाहीं ❀ महामुदित मन सुख न समाहीं ॥
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे ❀ देखत रामहि भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मनिगन चीरा ❀ बारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥
आरति करहिं मुदित पुरनारी ❀ हरषहिं निरखि कुअँर बर चारी ॥
सिबिका सुभग ओहार उघारी ❀ देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

दोहा—एहि बिधि सबही देत सुख, आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं, बधुन्ह समेत कुमार ॥३४८॥

करहिं आरती बारहिं बारा ❀ प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥
भूषन मनि पट नाना जाती ❀ करहिं निछावरि अगनित भाँती ॥
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी ❀ परमानंदमगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय-राम-छबि देखी ❀ मुदित सुफल जग जीवनु लेखी ॥
सखी सीयमुख पुनि पुनि चाही ❀ गान करहिं निज सुकृत सराही ॥
बरसहिं सुमन छनहिं छन देवा ❀ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरी ❀ सारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहिं निपट लघु लागी ❀ एकटक रहीं रूपअनुरागी ॥

दोहा—निगमनीति कुलरीति करि, अरघ पावँड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब, चलीं लेवाइ निकेत ॥३४९॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये ❀ जनु मनोज निज हाथ बनाये ॥
तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे ❀ सादर पाय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य बेदबिधि ❀ पूजे बरदुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिंबार आरती करहीं ❀ ब्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥
बस्तु अनेक निछावरि होहीं ❀ भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
पावा परमतत्त्व जनु जोगी ❀ अमृत लहेउ जनु संतत रोगी ॥
जनमरंकु जनु पारस पावा ❀ अंधहि लोचनलाभु सुहावा ॥
मूकबदन जनु सारद छाई ❀ मानहुँ समर सूर जय पाई ॥

दोहा—एहि सुखतें सत-कोटि-गुन, पावहिं मातु अनंदु।
भाइन्ह सहित बिआहि घर, आये रघु-कुल-चंदु ॥
लोकरीति जननी करहिं, बर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोदु बिनोदु बिलोकि बड़, रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०॥

देवपितर पूजे बिधि नीकी ❀ पूजीं सकल बासना जी की ॥
सबहि बंदि माँगहिं बरदाना ❀ भाइन्ह सहित रामकल्याना ॥
अंतरहित सुर आसिष देहीं ❀ मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपति बोलि बराती लीन्हे ❀ जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥
आयसु पाइ राखि उर रामहि ❀ मुदित गये सब निज निज धामहि ॥
पुर-नर-नारि सकल पहिराये ❀ घर घर बाजन लगे बधाये ॥

जाचक जन जाचहिं जोइ जोई ❀ प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियाँ नाना ❀ पूरन किये दान सनमाना ॥

दोहा—देहिं असीस जोहारि सब, गावहिं गुन-गन-गाथ ।
तब गुरु-भूसुर-सहित गृह, गवन कीन्ह नरनाथ ॥३५१॥

जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्हा ❀ लोक बेद बिधि सादर कीन्हा ॥
भू-सुर-भीर देखि सब रानी ❀ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पाय पखारि सकल अन्हवाये ❀ पूजि भली बिधि भूप जेंवाये ॥
आदर दान प्रेम परिपोषे ❀ देत असीस चले मन तोषे ॥
बहु बिधि कीन्हि गाधि-सुत-पूजा ❀ नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी ❀ रानिन्ह सहित लीन्हि पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बर बासू ❀ मन जोगवत रह नृपरनिवासू ॥
पूजे गुरु-पद-कमल बहोरी ❀ कीन्ह बिनय उर प्रीति न थोरी ॥

दोहा—बधुन्ह समेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीस ।
पुनि पुनि बंदत गुरुचरन, देत असीस मुनीस ॥३५२॥

बिनय कीन्ह उर अति अनुरागे ❀ सुत संपदा राखि नृप आगे ॥
नेग माँगि मुनिनायक लीन्हा ❀ आसिरबाद बहुत बिधि दीन्हा ॥
उर धरि रामहिं सीयसमेता ❀ हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता ॥
बिप्रबधू सब भूप बोलाईं ❀ चैल चारुभूषन पहिराईं ॥
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्ही ❀ रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्ही ॥
नेगी नेग जोग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने ❀ भूपति भली भाँति सनमाने ॥
देव देखि रघु-बीर-बिबाहू ❀ बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दोहा—चले निसान बजाइ सुर, निज-निज-पुर सुख पाइ ।
कहत परसपर रामजस, प्रेम न हृदय समाइ ॥३५३॥

सब बिधि सबहि समदि नरनाहू ❀ रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे ❀ सहित बधूटिन्ह कुअँर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता ❀ को कहि सकै भयेउ सुख जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारी ❀ बार बार हिय हरषि दुलारी ॥

देखि समाज मुदित रनिवासू ❀ सब के उर आनँद कियो बासू ॥
कहेउ भूप जिमि भयेउ बिवाहू ❀ सुनि सुनि हरष होइ सब काहू ॥
जनकराजगुन सील बड़ाई ❀ प्रीतिरीति संपदा सुहाई ॥
बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी ❀ रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दोहा–सुतन्ह समेत नहाइ नृप, बोलि बिप्र गुरुज्ञाति ।
भोजन कीन्ह अनेक बिधि, घरी पंच गइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहिं बरभामिनी ❀ भइ सुखमूल मनोहर जामिनि ॥
अँचइ पान सब काहू पाये ❀ स्रग-सुगंध-भूषित छबि छाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई ❀ निज-निज-भवन चले सिर नाई ॥
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई ❀ समउ समाज मनोहरताई ॥
कहि न सकहिं सत सारद सेसू ❀ बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥
सो मैं कहौं कवन बिधि बरनी ❀ भूमिनाग सिर धरइ कि धरनी ॥
नृप सब भाँति सबहि सनमानी ❀ कहि मृदुबचन बोलाईं रानी ॥
बधू लरिकिनी परघर आईं ❀ राखेहु नयन पलक की नाईं ॥

दोहा–लरिका स्रमित उनींदबस, सयन करावहु जाइ ।
अस कहि गे बिस्रामगृह, रामचरन चितु लाइ ॥३५५॥

भूपबचन सुनि सहज सुहाये ❀ जटित कनकमनि पलँग डसाये ॥
सुभग-सुरभि-पय-फेनु समाना ❀ कोमल कलित सुपेतीं नाना ॥
उपबरहन बर बरनि न जाहीं ❀ स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा ❀ कहत न बनइ जान जेइ जोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये ❀ प्रेमसमेत पलँग पौढाये ॥
अज्ञा पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही ❀ निज-निज-सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता ❀ कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥
मारग जात भयावन भारी ❀ केहि बिधि तात ताड़का मारी ॥

दोहा–घोर निसाचर बिकट भट, समर गनहिं नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु ॥३५६॥

मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारी ❀ ईस अनेक करवरें टारी ॥

मखरखवारी करि दुहुँ भाई ❀ गुरुप्रसाद सब विद्या पाई ॥
मुनि तिय तरी लगत पग धूरी ❀ कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ-पीठि पबिकूट कठोरा ❀ नृप समाज महँ सिवधनु तोरा ॥
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई ❀ आये भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष करम तुम्हारे ❀ केवल कौसिक कृपा सुधारे ॥
आजु सुफल जग जनम हमारा ❀ देखि तात बिधुवदन तुम्हारा ॥
जे दिन गये तुम्हहिं बिनु देखे ❀ ते बिरंचि जनि पारहि लेखे ॥

दोहा--राम प्रतोषी मातु सब, कहि बिनीत बर बैन ।
सुमिरि संभु-गुरु-बिप्र-पद, किये नींदबस नैन ॥३५७॥

नींदहु वदन सोह सुठि लोना ❀ मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरन नारी ❀ देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरी बिराजति राजति रजनी ❀ रानी कहहिं बिलोकहु सजनी ॥
सुंदरि बधुन्ह सासु लै सोई ❀ फनिकन्ह जनु सिर मनि उर गोई ॥
प्रात पुनीतकाल प्रभु जागे ❀ अरुनचूड़ बर बोलन लागे ॥
बंदि मागधन्ह गुनगन गाये ❀ पुरजन द्वार जोहारन आये ॥
बंदि बिप्र गुरु सुर पितु माता ❀ पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे ❀ भूपतिसंग द्वार पगु धारे ॥

दोहा--कीन्ह सौच सब सहज सुचि, सरित पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहिं, आये चारिउ भाइ ॥३५८॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई ❀ बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी ❀ लोचन-लाभु-अवधि अनुमानी ॥
पुनि बसिष्ठ मुनि कौसिक आये ❀ सुभग आसनन्हि मुनि बैठाये ॥
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे ❀ निरखि राम दोउ गुरु अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ठ धरम इतिहासा ❀ सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥
मुनिमन अगम गाधि-सुत-करनी ❀ मुदित बसिष्ठ बिपुलबिधि बरनी ॥
बोले बामदेव सब साँची ❀ कीरति कलित लोक तिहुँ माँची ॥
सुनि आनंद भयेउ सब काहू ❀ राम-लषन-उर अधिक उछाहू ॥

दोहा--मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस एहि भाँति ।
उमगी अवध अनंद भरि, अधिक अधिक अधिकाति ॥३५९॥

सुदिन सोधि कलकंकन छोरे ❀ मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं ❀ अवध जनम जाचहिं बिधि पाहीं ॥
बिस्वामित्र चलन नित चहहीं ❀ राम - सनेह - बिनय - बस रहहीं ॥
दिन दिन सयगुन भूपतिभाऊ ❀ देखि सराह महा-मुनि-राऊ ॥
मांगत बिदा राउ अनुरागे ❀ सुतन्ह समेत ठाढ़ भये आगे ॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी ❀ मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करबि सदा लरिकन्ह पर छोहू ❀ दरसन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी ❀ परेउ चरन मुख आव न बानी ॥
दीन्हि असीस बिप्र बहु भाँती ❀ चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई ❀ आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दोहा--रामरूप भूपतिभगति, ब्याह उछाह अनंद ।
जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधि-कुल-चंद ॥३६०॥

बामदेव रघु-कुल-गुरु ज्ञानी ❀ बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥
सुनि मुनि सुजस मनहिं मन राऊ ❀ बरनत आपन पुन्यप्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ ❀ सुतन्ह समेत नृपति गृह गयऊ ॥
जहँ तहँ रामब्याह सब गावा ❀ सुजस पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥
आये ब्याहि राम घर जब तें ❀ बसे अनंद अवध सब तब तें ॥
प्रभुबिबाह जस भयेउ उछाहू ❀ सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥
कबि-कुल-जीवन-पावन जानी ❀ राम - सीय - जस मंगलखानी ॥
तेहि तें मैं कछु कहा बखानी ❀ करन पुनीत हेतु निज-बानी ॥

छंद—निज-गिरा-पावनि-करन कारन रामजसु तुलसी कह्यो ।
रघु-बीर-चरित अपार बारिधि पार कबि कौने लह्यो ॥
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
बैदेहि-राम-प्रसाद तें जन सर्वदा सुख पावहीं ॥

अथ क्षेपक

छन्द-सुनि गाय कहौं गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही।
नित प्रीति अनुपम सुतन हरिगुण भक्ति अनुपम ते लही॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई।
यह जानि तुलसी दास मन क्रम वचन हरि गुण गावई॥

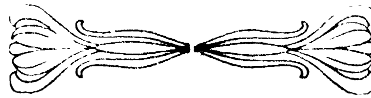
दोहा--कठिन काल मल ग्रसित तनु, साधन कछुक न होइ।
यह बिचारि विश्वास करि, हरि सुमिरें बुध सोइ॥

सो०-मन हरि पद अनुराग, करहु त्याग नाना कपट।
महा मोह निशि जाग, सोवत बीते काल बहु॥

इति क्षेपक

सोरठा--सिय-रघु-बीर-बिबाहु, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहँ सदा उछाहु, मंगलायतन रामजसु॥३६१॥

इति बालकाण्ड समाप्त॥



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

अयोध्याकाण्ड



श्लोकाः

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके । भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥ सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा । शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥ प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः । मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् । पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दोहा--श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज, निज-मनु-मुकुरु सुधारि ।
बरनौं रघुबर-बिमल-जसु, जो दायकु फल चारि ॥

जब तें राम ब्याहि घर आये ❀ नित नवमंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी ❀ सुकृत मेघ बरषहिं सुखबारी ॥
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई ❀ उमगि अवध अंबुधि कहुँ आई ॥
मनिगन पुर-नर-नारि-सुजाती ❀ सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती ❀ जनु एतनिअ बिरंचि करतूती ॥
सब बिधि सब पुरलोग सुखारी ❀ रामचंद-मुख-चंदु निहारी ॥
मुदित मातु सब सखीं सहेली ❀ फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥
राम - रूप - गुन - सीलु - सुभाऊ ❀ प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ ॥

दोहा--सब के उर अभिलाषु अस, कहहिं मनाइ महेसु ।

आपु अछत जुवराज पदु, रामहिं देउ नरेसु ॥ १ ॥

अथ क्षेपक

एक बार जानकी समेता ❀ बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
तेहि अवसर ऋषि नारद आये ❀ सुर हित लागि बिरंचि पठाये ॥
देखि राम सहसा उठि धाये ❀ करि प्रणाम आसन बैठाये ॥
सुनु मुनि विषय निरत जे प्रानी ❀ हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिनकहँ सत्संगति तब होई ❀ करै कृपा जाकहँ प्रभु सोई ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया ❀ मैं जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
सहज स्वभाव प्रणत अनुरागी ❀ नरतनु धरेउ दास हित लागी ॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा ❀ अस्तन पान लागि सोइ रोवा ॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई ❀ दशरथ सुत कहि गाइय सोई ॥

दोहा--जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण सगुण स्वरूप ।
मम हिय पंकज भृंगइव, बसहु राम नररूप ॥

ब्रह्म भुवन मैं रह्यो कृपाला ❀ गावत तव गुण दीन दयाला ॥
असि इच्छा उपजी मन माहीं ❀ देख्यों चरण बहुत दिन नाहीं ॥
अवध चलत बिरंचि मोहिं जाना ❀ कीन्हीं बिनय लागि मम काना ॥
ज्यहि हित लीन मनुज अवतारा ❀ नाथ ताहि अब करिय सँभारा ॥
सुनत बचन रघुपति मुसुकाने ❀ मुनि अजहूँ बिरंचि भय माने ॥
कहहु तात ब्रह्महिं समुझाई ❀ कछु दिन गये देखिहैं आई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद ❀ चले करत गुणगान विशारद ॥
तब रघुपति सीतहिं समुझाई ❀ पूर्व कथा सब हेतु सुनाई ॥

दोहा--जग संभव स्थिति प्रलय, जाकी भृकुटि बिलास ।
सो प्रभु यत्न विचारत, केहिविधि निशिचर नाश ॥

इति क्षेपक

एक समय सब सहित समाजा ❀ राजसभा रघुराज बिराजा ॥
सकल-सुकृत-मूरति नरनाहू ❀ रामसुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥

नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे ❀ लोकप करहिं प्रीतिरुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं ❀ भूरि भाग दसरथसम नाहीं ॥
मंगलमूल रामु सुत जासू ❀ जो कछु कहिअ थोर सबु तासू ॥
राय सुभाय मुकुरु कर लीन्हा ❀ बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥
स्रवनसमीप भये सित केसा ❀ मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥
नृप जुवराजु राम कहुँ देहू ❀ जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥

दोहा--यह बिचारु उर आनि नृप, सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरहिं सुनायेउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक ❀ भये राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी ❀ जे हमरे अरि मित्र उदासी ॥
सबहिं रामुप्रिय जेहि बिधि मोही ❀ प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
बिप्र सहित परिवार गोसाईं ❀ करहिं छोहु सब रउरहि नाईं ॥
जे गुरु-चरन-रेनु सिर धरहीं ❀ ते जनु सकल बिभव बस करहीं ॥
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें ❀ सबु पायेउँ रज पावनि पूजें ॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरे ❀ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❀ कहेउ नरेस रजायसु देहू ॥

दोहा--राजन राउर नामु जसु, सब अभिमतदातार ।
फलअनगामी महिपमनि, मन अभिलाषु तुम्हार ॥३॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी ❀ बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी ॥
नाथ रामु करिअहि जुबराजू ❀ कहिअ कृपा करि करिअ समाजू ॥
मोहि अछत यहु होइ उछाहू ❀ लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभुप्रसाद सिव सबइ निबाहीं ❀ यह लालसा एक मन माहीं ॥
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ ❀ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाये ❀ मंगल-मोद-मूल मन भाये ॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं ❀ जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं ॥
भयेउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी ❀ रामु पुनीत प्रेम-अनुगामी ॥

दोहा--बेगि बिलंबु न करिअ नृप, साजिअ सबुइ समाजु ।

सुदिनु सुमंगल तबहिं जब, रामु होहिं जुबराजु ॥४॥

मुदित महीपति मंदिर आये ❀ सेवक सचिव सुमंत्र बोलाये ॥
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाये ❀ भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू ❀ रामहिं राय देहु जुबराजू ॥
जौं पंचहि मत लागइ नीका ❀ करहु हरषि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रियबानी ❀ अभिमत बिरव परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी ❀ जियहु जगतपति बरिस करोरी ॥
जगमंगल भल काजु बिचारा ❀ बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुभाखा ❀ बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा ॥

दोहा—कहेउ भूप मुनिराज कर, जोइ जोइ आयस होइ ।
राम-राज-अभिषेक-हित, बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५ ॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदुबानी ❀ आनहु सकल सु-तीरथ-पानी ॥
औषध मूल फूल फल पाना ❀ कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
चामर चरम बसन बहु भाँती ❀ रोम पाट पट अगनित जाती ॥
मनिगन मंगलबस्तु अनेका ❀ जो जग जोगु भूपअभिषेका ॥
बेदबिदित कहि सकल बिधाना ❀ कहेउ रचहु पुर बिबिधबिताना ॥
सफल रसाल पूँगफल केरा ❀ रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजु मनि चौकइ चारू ❀ कहहु बनावन बेगि बजारू ॥

दोहा—ध्वज पताक तोरन कलस, सजहु तुरग रथ नाग ।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु, निज-निज-काजहिं लाग ॥६॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा ❀ सो तेहि काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा ❀ करत रामहित मंगलकाजा ॥
सुनत रामअभिषेक सुहावा ❀ बाज गहागह अवध बधावा ॥
राम-सीय-तन सगुन जनाये ❀ फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं ❀ भरत-आगमनु-सूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अतिअवसेरी ❀ सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
भरतसरिस प्रिय को जग माहीं ❀ इहइ सगुनफलु दूसर नाहीं ॥

रामहिं बंधुसोचु दिन राती ❁ अंडन्हि कमठ हृदय जेहि भाँती ॥

दोहा—एहि अवसर मंगलु परम, सुनि रहसेउ रनिवासु ।
सोभत लखि बिधु बढ़त जन, बारिधि बीचिबिलासु ॥७॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाये ❁ भूषन बसन भूरि तिन्ह पाये ॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ❁ मंगलकलस सजन सब लागीं ॥
चौकइ चारु सुमित्रा पूरी ❁ मनिमय बिबिधभाँति अतिरूरी ॥
आनँद मगन राममहतारी ❁ दिये दान बहु बिप्र हँकारी ॥
पूजी ग्रामदेबि सुर नागा ❁ कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहि बिधि होइ राम कल्यानू ❁ देहु दया करि सो बरदानू ॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनी ❁ बिधुबदनी मृग-सावक-नयनी ॥

दोहा—राम-राज-अभिषेकु सुनि, हिय हरषे नरनारि ।
लगे सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल बिचारि ॥८॥

तब नरनाह बसिष्ठ बोलाये ❁ रामधाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमनु सुनत रघुनाथा ❁ द्वार आइ पद नायेउ माथा ॥
सादर अरघ देइ घर आने ❁ सोरहभाँति पूजि सनमाने ॥
गहे चरन सियसहित बहोरी ❁ बोले रामु कमल कर जोरी ॥
सेवकसदन स्वामिआगमनू ❁ मंगलमूल अमंगलदमनू ॥
तदपि उचित जन बोलि सप्रीती ❁ पठइय काज नाथ असि नीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❁ भयउ पुनित आजु यह गेहू ॥
आयसु होइ सो करउँ गोसाईं ❁ सेवकु लहइ स्वामिसेवकाईं ॥

दोहा—सुनि सनेहसाने बचन, मुनि रघुबरहि प्रसंस ।
राम कस न तुम्ह कहहु अस, हंस-बंस-अवतंस ॥९॥

बरनि राम गुन सील सुभाऊ ❁ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू ❁ चाहत देन तुम्हहिं जुबराजू ॥
राम करहु सब संजम आजू ❁ जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू ॥
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ ❁ राम हृदय अस बिसमय भयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई ❁ भोजन सयन केलि लरिकाई ॥
करनबेध उपवीत बियाहा ❁ संग संग सब भयउ उछाहा ॥

बिमलवंस यह अनुचित एकू ❀ बंधु बिहाइ बड़ेहिं अभिषेकू ॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❀ हरउ भगतमन कै कुटिलाई ॥

दोहा--तेहि अवसर आये लषन, मगन प्रेम आनंद ।
सनमाने प्रिय बचन कहि, रघु-कुल-कैरव-चंद ॥१०॥

बाजहिं बाजन बिबिधि बिधाना ❀ पुरप्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
भरतआगमनु सकल मनावहिं ❀ आवहिं बेगि नयनफल पावहिं ॥
हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परसपर लोग लोगाई ॥
कालि लगन भलि केतिक बारा ❀ पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा ॥
कनकसिंहासन सीयसमेता ❀ बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥
सकल कहहिं कब होइहि काली ❀ बिघन मनावहिं देव कुचाली ॥
तिन्हहिं सुहाइ न अवध बधावा ❀ चोरहिं चंदिनि राति न भावा ॥
सादर बोलि बिनय सुर करहीं ❀ बारहिं बार पाँय लै परहीं ॥

दोहा--बिपति हमारी बिलोकि बड़ि, मातु करिअ सोइ आजु ।
रामु जाहिं बन राजु तजि, होइ सकल सुरकाजु ॥११॥

सुनि सुरबिनय ठाढ़ि पछिताती ❀ भइउँ सरोजबिपिन हिमराती ॥
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी ❀ मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी ॥
बिसमय - हरष - रहित रघुराऊ ❀ तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥
जीव करमबस सुख-दुख-भागी ❀ जाइअ अवध देवहित लागी ॥
बारबार गहि चरन सँकोची ❀ चली बिचारि बिबुधमति पोची ॥
ऊँच निवास नीच करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ बिभूती ॥
आगिल काजु बिचारि बहोरी ❀ करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी ॥
हरषि हृदय दसरथपुर आई ❀ जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ॥

दोहा--नामु मंथरा मन्दमति, चेरी कैकइ केरि ।
अजस पेटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥१२॥

दीख मंथरा नगरु बनावा ❀ मंजुल मंगल बाज बधावा ॥
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू ❀ रामतिलक सुनि भा उरदाहू ॥
करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाज कवनि बिधि राती ॥
देखि लागि मधु कुटिल किराती ❀ जिमि गँव तकइ लेउँ केहि भाँती ॥

भरतमातु पहिं गइ बिलखानी ❀ का अनमनि हसि कह हँसि रानी ॥
उतरु देइ नहिं लेइ उसासू ❀ नारिचरित करि ढारइ आँसू ॥
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे ❀ दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे ॥
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि ❀ छाँड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि ॥

दोहा–सभय रानि कह कहसि किन, कुसल रामु महिपालु ।
लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि, भा कुबरी उर सालु ॥ १३ ॥

कत सिख देइ हमहिं कोउ माई ❀ गालु करब केहि कर बलु पाई ॥
रामहिं छाड़ि कुसल केहि आजू ❀ जिनहिं जनेसु देइ जुबराजू ॥
भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन ❀ देखत गरब रहत उर नाहिंन ॥
देखहु कस न जाइ सब सोभा ❀ सो अवलोकि मोर मनु छोभा ॥
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें ❀ जानतिहहु बस नाहु हमारें ॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई ❀ लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनि प्रिय बचन मलिनमनु जानी ❀ झुकी रानि अब रहु अरगानी ॥
पुनि अस कबहुँ कहसि घर फोरी ❀ तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी ॥

दोहा–काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि, भरतमातु मुसुकानि ॥ १४ ॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हिउँ तोही ❀ सपनेहु तो पर कोपु न मोही ॥
सुदिनु सु-मंगल-दायकु सोई ❀ तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ❀ यह दिन-कर-कुल-रीति सुहाई ॥
रामतिलकु जौं साँचेउ काली ❀ देउँ माँगु मन भावत आली ॥
कौसल्यासम सब महतारी ❀ रामहिं सहज सुभाय पियारी ॥
मो पर करहिं सनेहु बिसेखी ❀ मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू ❀ होहिं राम सिय पूतपतोहू ॥
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें ❀ तिन्हकें तिलक छोभु कस तोरें ॥

दोहा–भरतसपथ तोहि सत्य कहु, परिहरि कपट दुराउ ।
हरष समय बिसमय करसि, कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥

एकहि बार आस सब पूजी ❀ अब कछु कहब जीभ करि दूजी ॥
फोरै जोग कपारु अभागा ❀ भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा ॥

कहहिं झूठि फुरि बात बनाई ❀ ते प्रिय तुम्हहिं करुइ मैं माई ॥
हमहूँ कहब अब ठकुरसोहाती ❀ नाहिं त मौन रहब दिन राती ॥
करि कुरूप बिधि परवस कीन्हा ❀ बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमहिं का हानी ❀ चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी ॥
जारइ जोगु सुभाउ हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी ❀ छमिअ देबि बड़ि चूक हमारी ॥

दोहा—गूढ़-कपट-प्रिय-बचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमाया बस बैरिनिहि, सुहृद जानि पतियानि ॥१६॥

सादर पुनि पुनि पूछति ओही ❀ सबरीगान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी ❀ रहसी चेरि घात जनु फाबी ॥
तुम्ह पूछहु मैं कहत डेराऊँ ❀ धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ ॥
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली ❀ अवध साढ़साती तब बोली ॥
प्रिय सियरामु कहा तुम्ह रानी ❀ रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥
रहा प्रथम अब ते दिन बीते ❀ समउ फिरे रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमल-कुल-पोषनि-हारा ❀ बिनु जर जारि करइ सोइ छारा ॥
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी ❀ रूँधहु करि उपाय बर बारी ॥

दोहा—तुम्हहिं न सोचु सोहाग बल, निज बस जानहु राउ ।
मन मलीन मुहँ मीठ नृपु, राउर सरल सुभाउ ॥१७॥

चतुर गँभीर राममहतारी ❀ बीचु पाइ निजबात सवाँरी ॥
पठये भरतु भूप ननिअउरें ❀ राम-मातु-मत जानब रउरें ॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीके ❀ गरबित भरतमातु बल पी के ॥
सालु तुम्हार कौसिलहि माई ❀ कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥
राजहिं तुम्ह पर प्रेमु बिसेखी ❀ सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई ❀ राम-तिलक-हित लगन धराई ॥
यह कुल उचित राम कहुँ टीका ❀ सबहि सुहाइ मोहि सुठ नीका ॥
आगिल बात समुझि डर मोही ❀ देउ दैव फिरि सो फलु ओही ॥

दोहा—रचि पचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपटप्रबोध ।
कहेसि कथा सत सवति कै, जेहिबिधि बाढ़ बिरोध ॥१८॥

भावीबस प्रतीति उर आई ❀ पूछु रानि पुनि सपथ देवाई ॥
का पूछहु तुम्ह अबहु न जाना ❀ निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
भयेउ पाखु दिन सजत समाजू ❀ तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे ❀ सत्य कहे नहिं दोषु हमारे ॥
जौं असत्य कछु कहब बनाई ❀ तौ बिधि देइहि हमहिं सजाई ॥
रामहिं तिलक कालि जौं भयेऊ ❀ तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयेऊ ॥
रेख खँचाइ कहउँ बल भाखी ❀ भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
जौं सुत सहित करहु सेवकाई ❀ तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दोहा--कद्रू बिनतहि दीन्ह दुख, तुम्हहिं कौसिला देब ॥
भरतु बंदि गृह सेइहहिं, लषनु राम के नेब ॥१९॥

कैकयसुता सुनत कटुबानी ❀ कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥
तन पसेउ कदली जिमि काँपी ❀ कुबरी दसन जीभ तब चाँपी ॥
कहि कहि कोटिक कपटकहानी ❀ धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू ❀ जिमि न नवइ फिरि उकठि कुकाठू ॥
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली ❀ बकिहि सराहइ मानि मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी ❀ दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी ॥
दिन प्रति देखहुँ राति कुसपनें ❀ कहउँ न तोहि मोहबस अपनें ॥
काह करौं सखि सूधसुभाऊ ❀ दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥

दोहा--अपने चलत न आजु लगि, अनभल काहु क कीन्ह ।
केहि अघ एकहि बार मोहि, दैअ दुसह दुख दीन्ह ॥२०॥

नैहर जनमु भरब बरु जाई ❀ जियत न करब सवति सेवकाई ॥
अरिबस दउ जियावत जाही ❀ मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥
दीनबचन कह बहुबिधि रानी ❀ सुनि कुबरी तिय माया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना ❀ सुख सोहागु तुम्ह कहँ दिन दूना ॥
जेहि राउर अतिअनभल ताका ❀ सोइ पाइहि यह फलु परिपाका ॥
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि ❀ भूख न बासर नींद न जामिनि ॥
पूछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची ❀ भरत भुआल होहिं यह साँची ॥
भामिनि करहु त कहउँ उपाऊ ❀ है तुम्हरी सेवाबस राऊ ॥

दोहा--परउँ कूप तुअ बचन पर, सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हित लागि ॥२१॥

कुबरी करि कबुली कैकेई ❀ कपटछुरी उरपाहन टेई ॥
लखइ न रानि निकट दुख कैसें ❀ चरइ हरित त्रिन बलिपसु जैसें ॥
सुनत बात मृदु अंत कोठरी ❀ देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं ❀ स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती ❀ माँगहु आज जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राजु रामहिं बनवासू ❀ देहु लेहु सब सवतिहुलासू ॥
भूपति रामसपथ जब करई ❀ तब माँगेहु जेहि बचन न टरई ॥
होइ अकाजु आजु निसि बीते ❀ बचनु मोर प्रिय मानहु जी ते ॥

दोहा--बड़ कुघातु करि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु।
काज सवाँरेहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥२२॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी ❀ बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तोहि सम हितु न मोर संसारा ❀ बहे जात कर भइसि अधारा ॥
जौं बिधि पूरब मनोरथु काली ❀ करौं तोहि चखपूतरि आली ॥
बहुबिधि चेरिहिं आदरु देई ❀ कोपभवन गवनी कैकेई ॥
बिपति बीजु बरषारितु चेरी ❀ भुइँ भइ कुमति कैकेई केरी ॥
पाइ कपटजलु अंकुर जामा ❀ बर दोउ दल दुखफल परिनामा ॥
कोप समाजु साजि सब सोई ❀ राजु करत निज कुमति बिगोई ॥
राउर नगर कोलाहल होई ❀ यह कुचालि कछु जान न कोई ॥

दोहा--प्रमुदित पुर नरनारि सब, सजहिं सुमंगल चार।
एक प्रबिसहि एक निर्गमहिं, भीर भूप दरबार ॥२३॥

बालसखा सुनि हिय हरषाहीं ❀ मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी ❀ पूछहिं कुसल खेम मृदुबानी ॥
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई ❀ करत परसपर रामबड़ाई ॥
को रघुबीरसरिस संसारा ❀ सीलु सनेहु निबाहनिहारा ॥
जेहि जेहि जोनि करमबस भ्रमहीं ❀ तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहिं ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू ❀ होउ नात यहु ओर निबाहू ॥

अस अभिलाषु हृदय सब काहू ❀ कैकयसुता हृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नसाई ❀ रहइ न नीच मते चतुराई ॥

दोहा--साँझ समय सानंद नृप, गयेउ कैकेइ गेह।
गवनु निठुरता निकट किय, जनु धरि देह सनेह ॥२४॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ ❀ भयबस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥
सुरपति बसइ बाँहबल जाके ❀ नरपति सकल रहहिं रुख ताके ॥
सो सुनि तियरिस गयउ सुखाई ❀ देखहु कामप्रताप बड़ाई ॥
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे ❀ ते रतिनाथ सुमनसर मारे ॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ ❀ देखि दसा दुख दारुन भयऊ ॥
भूमिसयन पट मोट पुराना ❀ दिये डारि तन भूषन नाना ॥
कुमतिहि कसि कुबेसता फाबी ❀ अन-अहिवातु-सूच जनु भाबी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी ❀ प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छंद—केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई।
मानहुँ सरोप भुअंगभामिनि विषम भाँति निहारई ॥
दोउ बासना रसना दसन बर परम ठाहरु देखई।
तुलसी नृपतिभवितव्यता बस काम कौतुक लेखई ॥

सोरठा--बार बार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ, गजगामिनि निजकोप-कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केइ कीन्हा ❀ केइ दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकहि करउँ नरेसू ❀ कहु केहि नृपहि निकासउँ देसू ॥
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी ❀ काह कीट बपुरे नरनारी ॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरू ❀ मन तव आनन चंद चकोरू ॥
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरे ❀ परिजन प्रजा सकल बस तोरे ॥
जौं कछु कहउँ कपट करि तोही ❀ भामिनि राम-सपथ-सत मोही ॥
बिहँसि माँगु मनभावति बाता ❀ भूषन सजहि मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू ❀ बेगि प्रिया परिहरहि कुबेखू ॥

दोहा—यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि, बिहँसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिनि फंद ॥२६॥

पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी ❀ प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
भामिनि भयेउ तोर मनभावा ❀ घरघर नगर अनंदबधावा ॥
रामहिं देउँ कालि जुबराजू ❀ सजहि सुलोचनि मंगलसाजू ॥
दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू ❀ जनु छुइ गयेउ पाक बरतोरू ॥
ऐसेउ पीर बिहँसि तेहि गोई ❀ चोरनारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई ❀ कोटि-कुटिल-मनि गुरू पढ़ाई ॥
जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू ❀ नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपटसनेहु बढ़ाइ बहोरी ❀ बोली बिहँसि नयन मुँह-मोरी ॥

दोहा--माँगु माँगु पै कहहु पिय, कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेहु बरदान दुइ, तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई ❀ तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाती राखि न माँगेहु काऊ ❀ बिसरि गयेउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
झूठेहु हमहिं दोष जनि देहू ❀ दुइ कै चारि माँगि किन लेहू ॥
रघु-कुल-रीति सदा चलि आई ❀ प्रान जाहु बरु बचनु न जाई ॥
नहिं असत्यसम पातकपुंजा ❀ गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाये ❀ बेद पुरान बिदित मुनि गाये ॥
तेहि पर राम सपथ करि आई ❀ सुकृत - सनेह - अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली ❀ कुमत-कुबिहँग-कुलह जनु खोली ॥

दोहा--भूप मनोरथ सुभग बन, सुख सु-बिहंग-समाजु ।
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति, बचन भयंकर बाजु ॥२८॥

सुनहुँ प्रानप्रिय भावत जी का ❀ देहु एक बर भरतहि टीका ॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी ❀ पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापसबेष बिसेषि उदासी ❀ चौदह बरिस रामु बनबासी ॥
सुनि मृदुबचन भूपहिय सोकू ❀ ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥
गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा ❀ जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
बिबरन भयेउ निपट नरपालू ❀ दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन ❀ तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
मोर मनोरथ सुर-तरु-फूला ❀ फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥

अवध उजारि कीन्हि कैकई ❁ दीन्हेसि अचल बिपति कै नेई ॥

दोहा--कवने अवसर का भयेउ, गयउँ नारिबिस्वास ।
जोग-सिद्धि-फल-समय जिमि, जतिहि अविद्यानास ॥२९॥

एहि बिधि राउ मनहिं मन झाँखा ❁ देखि कुभाँति कुमति मनु माँखा ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं ❁ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि सर अस लागु तुम्हारे ❁ काहे न बोलहु बचनु सँभारे ॥
देहु उतर अरु कहहु कि नाहीं ❁ सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥
देन कहेहु अब जनि बरु देहू ❁ तजहु सत्य जग अपजस लेहू ॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना ❁ जानेहु लेइहि माँगि चबेना ॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा ❁ तनुधनु तजेउ बचन पनु राखा ॥
अति-कटु-बचन कहति कैकेई ❁ मानहु लोन जरे पर देई ॥

दोहा--धरम-धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राय ।
सिर धुनि लीन्हि उसास असि, मारेसि मोहि कुठाय ॥३०॥

आगे दीखि जरति रिसि भारी ❁ मनहु रोष तरवारि उघारी ॥
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ❁ धरी कूबरी सान बनाई ॥
लखी महीप कराल कठोरा ❁ सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥
बोलेउ राउ कठिन करि छाती ❁ बानी सबिनय तासु सोहाती ॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती ❁ भीरु प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥
मोरें भरत राम दुइ आँखी ❁ सत्य कहउँ करि संकर साखी ॥
अवसि दूत मैं पठउब प्राता ❁ ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिन सोधि सब साजु सजाई ❁ देउँ भरत कहँ राजु बजाई ॥

दोहा--लोभु न रामहिं राजु कर, बहुत भरत पर प्रीति ।
मैं बड़ छोट बिचारि जिय, करत रहेउँ नृपनीति ॥३१॥

राम-सपथ-सत कहउँ सुभाऊ ❁ राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूछे ❁ तेहि तें परेउ मनोरथ छूछे ॥
रिस परिहरु अब मंगल साजू ❁ कछु दिन गये भरत जुबराजू ॥
एकहि बात मोहि दुख लागा ❁ बर दूसर असमंजस माँगा ॥
अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा ❁ रिस परिहास कि साँचेहु साँचा ॥

कहु तजि रोषु रामअपराधू ❀ सब कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू ❀ अब सुनि मोहि भयेउ संदेहू ॥
जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला ❀ सो किमि करिहि मातुप्रतिकूला ॥

दोहा--प्रिया हास रिस परिहरहि, माँगु बिचारि बिबेकु ।
जेहि देखउँ अब नयनभरि, भरत राज अभिषेकु ॥३२॥

जिअइ मीन बरु बारिबिहीना ❀ मनि बिनु फनिक जिअइ दुखदीना ॥
कहउँ सुभाउ न छल मन माहीं ❀ जीवन मोर रामु बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु जिय प्रिया प्रबीना ❀ जीवन राम - दरस - आधीना ॥
सुनि मृदुबचन कुमति अति जरई ❀ मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥
कहइ करहु किन कोटि उपाया ❀ इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
देहु कि लेहु अजस करि नाहीं ❀ मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥
राम साधु तुम्ह साधु सयाने ❀ राममातु भलि सब पहिचाने ॥
जस कौसिला मोर भल ताका ❀ तस फल उन्हहिं देउँ करि साका ॥

दोहा--होत प्रात मुनिबेष धरि, जौं न राम बन जाहिं ।
मोर मरनु राउर अजसु, नृप समुझिय मन माहिं ॥३३॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ❀ मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई ❀ भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा ❀ भँवर कूबरी - बचन - प्रचारा ॥
ढाहत भूपरूप तरुमूला ❀ चली बिपतिबारिधि अनुकूला ॥
लखी नरेस बात सब साँची ❀ तियमिसु मीच सीस पर नाँची ॥
गहि पद बिनय कीन्हि बैठारी ❀ जनि दिन-कर-कुल होसि कुठारी ॥
माँगु माथ अबहीं देउँ तोही ❀ रामबिरह जनि मारसि मोही ॥
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती ❀ नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दोहा--देखी ब्याधि असाधि नृप, परेउ धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरतबचन, राम राम रघुनाथ ॥३४॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता ❀ करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥
कंठ सूख मुख आव न बानी ❀ जनु पाठीन दीन बिनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेई ❀ मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥

जौं अंतहु अस करतब रहेऊ ❀ माँगु माँगु तुम्ह केहि बल कहेऊ ॥
दुइ कि होइ एक समय भुआला ❀ हँसब ठठाइ फुलाउब गाला ॥
दानि कहाउब अरु कृपनाई ❀ होइ कि खेम कुसल रौताई ॥
छाँड़हु बचन कि धीरज धरहू ❀ जनि अबला जिमि करुना करहू ॥
तनु तिय तनय धाम धनु धरनी ❀ सत्यसंध कहँ तृनसम बरनी ॥

दोहा--मरमबचन सुनि राउ कह, कहु कछु दोष न तोर ।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि, काल कहावत मोर ॥३५॥

चहत न भरत भूपतिहि भोरें ❀ बिधिबस कुमति बसी जिय तोरें ॥
सो सब मोर पापपरिनामू ❀ भयउ कुठाहर जेहि बिधि बामू ॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई ❀ सब गुनधाम राम - प्रभुताई ॥
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई ❀ होइहि तिहुँ पुर रामबड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥
अब तोहि नीक लाग करु सोई ❀ लोचन ओट बैठु मुँह गोई ॥
जब लगि जिअउँ कहउँ करजोरी ❀ तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी ॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी ❀ मारसि गाइ नहारू लागी ॥

दोहा—परेउ राउ कहि कोटिबिधि, काहे करसि निदानु ।
कपटसयानि न कहति कछु, जागति मनहुँ मसानु ॥३६॥

राम राम रट बिकल भुआलू ❀ जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू ॥
हृदय मनाव भोरु जनि होई ❀ रामहिं जाइ कहइ जनि कोई ॥
उदय करहु जनि रबि रघुकुलगुर ❀ अवध बिलोकि सूल होइहि उर ॥
भूपप्रीति कैकइकठिनाई ❀ उभयअवधि बिधि रची बनाई ॥
बिलपत नृपहि भयेउ भिनुसारा ❀ बीना - बेनु - संख - धुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक ❀ सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक ॥
मंगल सकल सुहाहिं न कैसें ❀ सहगामिनिहिं बिभूषन जैसें ॥
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू ❀ रामदरस लालसा उछाहू ॥

दोहा—द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदित रबि देखि ।
जागे अजहुँ न अवधपति, कारन कवन बिसेखि ॥३७॥

पछिले पहर भूपु नित जागा ❀ आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा ॥

जाहु सुमंत्र जगावहु जाई ❀ कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥
गये सुमंत्र तब राउर पाहीं ❀ देखि भयावन जात डेराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा ❀ मानहुँ बिपति-बिषाद-बसेरा ॥
पूछे कोउ न ऊतरु देई ❀ गये जेहि भवन भूप कैकेई ॥
कहि जय जीव बैठ सिर नाई ❀ देखि भूपगति गयेउ सुखाई ॥
सोच बिकल बिबरन महि परेऊ ❀ मानहुँ कमलमूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकइ नहिं पूछी ❀ बोली असुभभरी सुभछूछी ॥

दोहा—परी न राजहि नींद निसि, हेतु जान जगदीसु ।
रामु रामु रटि भोरु किय, कहइ न मरमु महीसु ॥३८॥

आनहु रामहिं बेगि बोलाई ❀ समाचार तब पूछेहु आई ॥
चलेउ सुमंत्र रायरुख जानी ❀ लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥
सोच बिकल मग परइ न पाऊ ❀ रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ॥
उर धरि धीरज गयउ दुआरें ❀ पूछहिं सकल देखि मनमारें ॥
समाधानु करि सो सबही का ❀ गयेउ जहाँ दिन-कर-कुल-टीका ॥
राम सुमंत्रहि आवत देखा ❀ आदर कीन्ह पितासम लेखा ॥
निरखि बदन कहि भूपरजाई ❀ रघु-कुल-दीपहिं चलेउ लेवाई ॥
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं ❀ देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं ॥

दोहा—जाइ देखि रघु-बंस-मनि, नरपति निपट कुसाजु ।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि, मनहुँ बृद्ध गजराजु ॥३९॥

सूखहिं अधर जरहिं सब अंगू ❀ मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू ॥
सरुख समीप देखि कैकेई ❀ मानहुँ मीच घरी गनि लेई ॥
करुनामय मृदु राम—सुभाऊ ❀ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समउ बिचारी ❀ पूछी मधुर बचन महतारी ॥
मोहि कहु मातु तात-दुख-कारन ❀ करिय जतन जेहि होइ निवारन ॥
सुनहु राम सब कारन एहू ❀ राजहिं तुम्ह पर बहुत सनेहू ॥
देन कहेन्हि मोहिं दुइ बरदाना ❀ माँगेउँ जो कछु मोहि सुहाना ॥
सो सुनि भयउ भूपउर सोचू ❀ छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥

दोहा—सत सनेहु इत बचनु उत, संकट परेउ नरेसु ।

सकहु त आयसु धरहु सिर, मेटहु कठिन कलेसु ॥४०॥

निधरक बैठि कहै कटुबानी ❀ सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
जीभ कमान बचन सर नाना ❀ मनहुँ महिप मृदु-लच्छ-समाना ॥
जनु कठोरपनु धरे सरीरू ❀ सिखइ धनुषबिद्या बरबीरू ॥
सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई ❀ बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई ॥
मन मुसुकाइ भानु-कुल-भानू ❀ राम सहज - आनंद - निधानू ॥
बोले बचन बिगत सब दूषन ❀ मृदु मंजुल जनु बागबिभूषन ॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी ❀ जो पितु - मातु - बचन-अनुरागी ॥
तनय मातु - पितु - तोषनि - हारा ❀ दुर्लभ जननि सकलसंसारा ॥

दोहा—मुनिगन मिलनु बिसेषि बन, सबहि भाँति हित मोर ।
तेहि महँ पितुआयसु बहुरि, संमत जननी तोर ॥४१॥

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू ❀ बिधि सबबिधि मोहिं सनमुख आजू ॥
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा ❀ प्रथम गनिय मोहि मूढ़समाजा ॥
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी ❀ परिहरि अमृत लेहि बिषु माँगी ॥
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं ❀ देखि बिचारि मातु मनमाहीं ॥
अंब एक दुख मोहि बिसेखी ❀ निपट बिकल नरनायक देखी ॥
थोरिहि बात पितहि दुख भारी ❀ होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥
राउ धीरु गुन-उदधि-अगाधू ❀ भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू ॥
ता तें मोहि न कहत कछु राऊ ❀ मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ ॥

दोहा—सहज सरल रघुबरबचन, कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोंक जिमि बक्रगति, जद्यपि सलिल समान ॥४२॥

रहसी रानि रामरुख पाई ❀ बोली कपट सनेह जनाई ॥
सपथ तुम्हार भरत कइ आना ❀ हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम्ह अपराधु जोगु नहिं ताता ❀ जननी - जनक - बंधु - सुख - दाता ॥
राम सत्य सब जो कछु कहहू ❀ तुम्ह पितु-मातु-बचन-रत अहहू ॥
पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई ❀ चौथेपन जेहि अजसु न होई ॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हे ❀ उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥
लागहिं कुमुखबचन सुभ कैसे ❀ मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥

रामहिं मातुवचन सब भाये ❀ जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाये ॥

दोहा--गइ मुरछा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव रामआगमन कहि, बिनय समयसम कीन्ह ॥४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे ❀ धरि धीरजु तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे ❀ चरन परत नृप रामु निहारे ॥
लिये सनेहविकल उर लाई ❀ गइ मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहिं चितइ रहेउ नरनाहू ❀ चला बिलोचन बारिप्रवाहू ॥
सोकबिबस कछु कहइ न पारा ❀ हृदय लगावत बारहिं बारा ॥
बिधिहि मनाव राउ मनमाहीं ❀ जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी ❀ बिनती सुनहु सदा सिव मोरी ॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी ❀ आरति हरहु दीनजन जानी ॥

दोहा--तुम्ह प्रेरक सब के हृदय, सो मति रामहिं देहु ।
बचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि सील सनेहु ॥४४॥

अजस होउ जग सुजस नसाऊ ❀ नरक परउँ बरु सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं ❀ लोचनओट राम जनि होहीं ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला ❀ पीपर-पात-सरिस मन डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेम बस जानी ❀ पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस काल अवसर अनुसारी ❀ बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई ❀ अनुचित छमब जानि लरिकाई ॥
अति-लघु-बात लागि दुखपावा ❀ काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गोसाइँहि पूछिउँ माता ❀ सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता ॥

दोहा--मंगलसमय सनेहबस, सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषि हिय, कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू ❀ पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ता के ❀ प्रिय पितुमातु प्रानसम जाके ॥
आयसु पालि जनमफल पाई ❀ ऐहउँ बेगिहि होउ रजाई ॥
बिदा मातु सन आवउँ माँगी ❀ चलिहउँ बनहिं बहुरि पग लागी ॥
अस कहि रामु गवन तब कीन्हा ❀ भूप सोकबस उतरु न दीन्हा ॥

नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी ❀ छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥
सुनि भये बिकल सकल नर नारी ❀ बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ॥
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई ❀ बड़ बिषादु नहिं धीरज होई ॥

दोहा--मुख सुखाहिं लोचन स्रवहि, सोकु न हृदय समाइ ।
मनहुँ करुन-रस-कटकई, उतरी अवध बजाइ ॥४६॥

मिलेहिं माँझ बिधि बात बिगारी ❀ जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ ❀ छाइ भवन पर पावक धरेऊ ॥
निजकर नयन काढ़ि चह दीखा ❀ डारि सुधा बिष चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी ❀ भइ रघु-बंस-बेनु-बन आगी ॥
पालव बैठि पेड़ु एहि काटा ❀ सुख महँ सोक ठाटु धरि ठाटा ॥
सदा राम एहि प्रानसमाना ❀ कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
सत्य कहहिं कबि नारिसुभाऊ ❀ सबबिधि अगम अगाध दुराऊ ॥
निजप्रतिबिंबु बरुक गहि जाई ❀ जानि न जाइ नारिगति भाई ॥

दोहा--काह न पावकु जारि सक, का न समुद्र समाइ ।
का न करइ अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ॥४७॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा ❀ का देखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा ❀ बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु ❀ अबलाबिबस ग्यान गुन गा जनु ॥
एक धरमपरमिति पहिचाने ❀ नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥
सिबि–दधीचि–हरिचंद–कहानी ❀ एक एक सन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीं ❀ एक उदास भाय सुनि रहहीं ॥
कान मूँदि कर रद गहि जीहा ❀ एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे ❀ राम भरत कहँ प्रानपियारे ॥

दोहा–चंद चवइ बरु अनलकन, सुधा होइ बिष तूल ।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं कछु, भरत रामप्रतिकूल ॥४८॥

एक बिधातहि दूषन देहीं ❀ सुधा देखाइ दीन्ह बिषु जेहीं ॥
खरभरु नगर सोचु सब काहू ❀ दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी ❀ जे प्रिय परम कैकई केरी ॥

लगीं देन सिख सीलु सराही ❀ बचन बानसम लागहिं ताही ॥
भरत न मोहि प्रिय रामसमाना ❀ सदा कहहु यह सब जग जाना ॥
करहु राम पर सहजसनेहू ❀ केहि अपराध आजु बन देहू ॥
कबहुँ न कियेहु सवति आरेसू ❀ प्रीति प्रतीति जान सब देसू ॥
कौसल्या अब काह बिगारा ❀ तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दोहा--सीय कि पिय सँग परिहरिहि, लषनु कि रहिहहिं धाम ।
राजु कि भूँजब भरत पुर, नृपु कि जिइहि बिनु राम॥४९॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू ❀ सोक कलंक कोटि जनि होहू ॥
भरतहिं अवसि देहु जुबराजू ❀ कानन काह राम कर काजू ॥
नाहिन रामु राज के भूखे ❀ धरमधुरीन बिषयरस रूखे ॥
गुरुगृह बसहिं राम तजि गेहू ❀ नृप सन अस बर दूसर लेहू ॥
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे ❀ नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे ॥
जौं परिहास कीन्हि कछु होई ❀ तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
रामसरिस सुत कानन जोगू ❀ काह कहिहि सुनि तुम्ह कहँ लोगू ॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई ❀ जेहि बिधि सोक कलंक नसाई ॥

छंद—जेहि भाँति सोक कलंक जाइ उपाय करि कुल पालही ।
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालही ॥
जिमि भानु बिनु दिन प्रान बिनु चंदु बिनु जिमि जामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जिय भामिनी ॥

सोरठा—सखिन्ह सिखावन दीन्ह, सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेइँ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥५०॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी ❀ मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी ॥
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी ❀ चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥
राज करत यह दैव बिगोई ❀ कीन्हेसि अस जस करइ न कोई ॥
एहि बिधि बिलपहिं पुर-नर-नारी ❀ देहिं कुचालहिं कोटिक गारी ॥
जरहिं बिषमजर लेहिं उसासा ❀ कवनि राम बिनु जीवन आसा ॥
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी ❀ जनु जल-चर-गन सूखत पानी ॥
अतिबिषादबस लोग लोगाई ❀ गये मातु पहिं राम गोसाईं ॥

मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ ❀ मिटा सोच जनि राखइ राऊ ॥

दोहा—नवगयंद रघुबीरमन, राजु अलान समान ।
छूट जानि बनगवनु सुनि, उर अनंद अधिकान ॥५१॥

रघु-कुल-तिलक जोरि दोउ हाथा ❀ मुदित मातु पद नायेउ माथा ॥
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हे ❀ भूषनबसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता ❀ नयन नेहजलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाये ❀ स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये ॥
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई ❀ रंक धनदपदबी जनु पाई ॥
सादर सुंदरबदन निहारी ❀ बोली मधुरबचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी ❀ कबहिं लगन मुद-मंगल-कारी ॥
सुकृत सील सुख सींव सुहाई ❀ जनमलाभ कइ अवधि अघाई ॥

दोहा—जेहि चाहत नरनारि सब, अतिआरत एहि भाँति ।
जिमि चातकि चातक त्रिषित, बृष्टि सरद रितु स्वाति ॥५२॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू ❀ जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितुसमीप तब जायहु भैया ❀ भइ बड़ि बार जाइ बलि मैया ॥
मातुबचन सुनि अतिअनुकूला ❀ जनु सनेह-सुर-तरु के फूला ॥
सुखमकरंद भरे स्रियमूला ❀ निरखि राम-मनु-भवँरु न भूला ॥
धरमधुरीन धरमगति जानी ❀ कहेउ मातु सन अति-मृदु-बानी ॥
पिता दीन्ह मोहि काननराजू ❀ जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
आयसु देहि मुदितमन माता ❀ जेहि मुदमंगल कानन जाता ॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें ❀ आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दोहा--बरष चारि दस बिपिन बसि, करि पितु-बचन-प्रमान ।
आइ पाय पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान ॥५३॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के ❀ सरसम लगे मातुउर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतलबानी ❀ जिमि जवास परे पावस पानी ॥
कहि न जाइ कछु हृदय-बिषादू ❀ मनहुँ मृगी सुनि केहरिनादू ॥
नयन सजल तन थरथर काँपी ❀ माँजहि खाइ मीन जनु माँपी ॥
धरि धीरज सुतबदन निहारी ❀ गदगदबचन कहति महतारी ॥

तात पितहि तुम्ह प्रानपियारे ❀ देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
राज देन कहँ सुभदिन साधा ❀ कहेउ जान बन केहि अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहि निदानू ❀ को दिन-कर-कुल भयेउ कृसानू ॥

दोहा--निरखि रामरुख सचिवसुत, कारन कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि, दसा बरनि नहिं जाइ ॥५४॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू ❀ दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू ॥
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू ❀ बिधिगति बाम सदा सब काहू ॥
धरम सनेह उभय मति घेरी ❀ भइ गति साँप छछुंदरि केरी ॥
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू ❀ धरम जाइ अरु बंधुबिरोधू ॥
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी ❀ संकट-सोच-बिबस भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तियधरम सयानी ❀ रामभरत दोउ सुत सम जानी ॥
सरलसुभाउ राममहतारी ❀ बोली बचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका ❀ पितुआयसु सब धरम क टीका ॥

दोहा--राजु देन कहि दीन्ह बन, मोहिं न सो दुखलेसु ।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥५५॥

जौं केवल पितु आयसु ताता ❀ तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
जौं पितुमातु कहेउ बन जाना ❀ तौ कानन सत-अवध-समाना ॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी ❀ खग मृग चरनसरोरुह सेवी ॥
अंतहु उचित नृपहि बनबासू ❀ बय बिलोकि हिय होइ हरासू ॥
बड़भागी बन अवध अभागी ❀ जो रघु-बंस-तिलक तुम्ह त्यागी ॥
जौं सुत कहउँ संग मोहि लेहू ❀ तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पूत परमप्रिय तुम्ह सबही के ❀ प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ ❀ मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ॥

दोहा--यह बिचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ ।
मानि मातकर नात बलि, सुरति बिसरि जनि जाइ ॥५६॥

देव पितर सब तुम्हहिं गोसाईं ❀ राखहु नयन पलक की नाईं ॥
अवधि अंबु प्रियपरिजन मीना ❀ तुम्ह करुनाकर धरमधुरीना ॥
अस बिचारि सोइ करहु उपाई ❀ सबहिं जिअत जेहि भेंटहु आई ॥

जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ ❀ करि अनाथ जन-परिजन-गाऊँ ॥
सब कर आजु सुकृतफल बीता ❀ भयेउ करालकाल बिपरीता ॥
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी ❀ परमअभागिनि आपुहि जानी ॥
दारुन-दुसह-दाह उर व्यापा ❀ बरनि न जाइ बिलापकलापा ॥
राम उठाइ मातु उर लाई ❀ कहि मृदुवचन बहुरि समुझाई ॥

दोहा--समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासु-पद-कमल-जुग, बंदि बैठि सिरु नाइ ॥५७॥

दीन्हि असीस सासु मृदुबानी ❀ अतिसुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नमित मुख सोचति सीता ❀ रूपरासि पति-प्रेम-पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवननाथू ❀ केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना ❀ बिधि करतब कछु जाइ न जाना ॥
चारु चरननख लेखति धरनी ❀ नूपुरमुखर मधुर कवि बरनी ॥
मनहुँ प्रेमबस बिनती करहीं ❀ हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं ॥
मंजुबिलोचन मोचति बारी ❀ बोली देखि राममहतारी ॥
तात सुनहु सिय अतिसुकुमारी ❀ सासु-ससुर-परिजनहिं पियारी ॥

दोहा--पिता जनक भूपालमनि, ससुर भानु-कुल-भानु ।
पति रवि-कुल-कैरव-बिपिन-बिधु गुन-रूप-निधानु ॥५८॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई ❀ रूपरासि गुन सील सुहाई ॥
नयनपुतरि करि प्रीति बढ़ाई ❀ राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई ॥
कलपबेलि जिमि बहु बिधि लाली ❀ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयेउ बिधि बामा ❀ जानि न जाइ काह परिनामा ॥
पलँगपीठ तजि गोद हिंडोरा ❀ सिय न दीन्ह पगु अवनिकठोरा ॥
जिवनमूरि जिमि जोगवत रहेऊँ ❀ दीपबाति नहिं टारन कहेऊँ ॥
सोइ सिय चलन चहति बन साथा ❀ आयसु काह होइ रघुनाथा ॥
चंद-किरन-रस-रसिक चकोरी ❀ रबिरुख नयन सकै किमि जोरी ॥

दोहा--करि केहरि निसिचर चरहिं, दुष्ट जंतु बन भूरि ।
विषवाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनि मूरि ॥५९॥

बनहित कोल किरात किसोरी ❀ रची बिरंचि बिषय-सुख-भोरी ॥

पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ ❀ तिन्हहिं कलेसु न कानन काऊ ॥
कै तापसतिय कानन जोगू ❀ जिन्ह तपहेतु तजा सब भोगू ॥
सिय बन बसिहि तात केही भाँती ❀ चित्रलिखित कपि देखि डेराती ॥
सुर-सर-सुभग बनज-बन-चारी ❀ डाबर जोग कि हंसकुमारी ॥
अस बिचारि जस आयसु होई ❀ मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जौं सिय भवन रहइ कह अंबा ❀ मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥
सुनि रघुबीर मातु-प्रिय-बानी ❀ सील सनेह सुधा जनु सानी ॥

दोहा--कहि प्रियबचन बिबेकमय, कीन्ह मातु परितोप ।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगटि बिपिन गुन दोप ॥६०॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं ❀ बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू ❀ आन भाँति जिय जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जौं चहहू ❀ बचन हमार मानि गृह रहहू ॥
आयसु मोरि सासुसेवकाई ❀ सबबिधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि तें अधिक धरमु नहिं दूजा ❀ सादर सासु-ससुर-पद-पूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी ❀ होइहि प्रेमबिकल मतिभोरी ॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी ❀ सुंदरि समुझायेहु मृदुबानी ॥
कहउँ सुभाय सपथ सत मोही ❀ सुमुखि मातुहित राखउँ तोही ॥

दोहा—गुरु-स्रुति-संमत धरमफल, पाइअ बिनहिं कलेसु ।
हठबस सब संकट सहे, गालव नहुप नरेसु ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रमान पितुबानी ❀ बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा ❀ सुंदरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जौं हठ करहु प्रेमबस बामा ❀ तौ तुम्ह दुख पाउब परिनामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी ❀ घोर घाम हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना ❀ चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना ॥
चरनकमल मृदु मंजु तुम्हारे ❀ मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदीं नद नारे ❀ अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा ❀ करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दोहा—भूमिसयन बलकलबसन, असन कंद-फल-मूल ।

ते कि सदा सब दिन मिलहिं, सबुइ समय अनुकूल॥६२॥

नरअहार रजनीचर चरहीं ❀ कपटबेष बिधि कोटिक करहीं ॥
लागइ अति पहार कर पानी ❀ बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी ॥
ब्याल कराल बिहँग बन घोरा ❀ निसि-चर-निकर नारि-नर-चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ❀ मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाये ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बनजोगू ❀ सुनि अपजसु मोहिं देइहि लोगू ॥
मानस - सलिल - सुधा प्रतिपाली ❀ जिअइ कि लवनपयोधि मराली ॥
नव - रसाल - बन बिहरनसीला ❀ सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी ❀ चंदबदनि दुख कानन भारी ॥

दोहा—सहज सुहृद-गुर-स्वामि-सिख, जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर, अवसि होइ हितहानि ॥६३॥

सुनि मृदुबचन मनोहर पियके ❀ लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
सीतलसिख दाहक भइ कैसें ❀ चकइहि सरदचंद निसि जैसें ॥
उतरु न आव बिकल बैदेही ❀ तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचनबारी ❀ धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासुपग कह कर जोरी ❀ छमबि देवि बड़ि अबिनय मोरी ॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई ❀ जेहि बिधि मोर परमहित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीखि मनमाहीं ❀ पिय-बियोग-सम दुख जग नाहीं ॥

दोहा—प्राननाथ करुनायतन, सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघु-कुल-कुमुद-बिधु, सुरपुर नरकसमान ॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ❀ प्रियपरिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुरु सजन सहाई ❀ सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ❀ पिय बिनु तियहि तरनिहुँ ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुरराजू ❀ पतिबिहीन सब सोकसमाजू ॥
भोग रोगसम भूषन भारू ❀ जम - जातना - सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं ❀ मो कहँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिअ बिनु देह नदी बिनु बारी ❀ तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ❀ सरद - बिमल - बिधु-बदन निहारे ॥

दोहा—खग मृग परिजन नगर बन, बलकल बिमल दुकूल।
नाथसाथ सुर-सदन-सम, परनसाल सुखमूल ॥६५॥

बनदेवी बनदेव उदारा ❀ करिहहिं सासु-ससुर-सम-सारा ॥
कुस - किसलय - साथरी सुहाई ❀ प्रभुसँग मंजु मनोजतुराई ॥
कंद मूल फल अमिअ अहारू ❀ अवध - सौंध - सत - सरिस पहारू ॥
छिनुछिनु प्रभु-पद-कमल बिलोकी ❀ रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बनदुख नाथ कहे बहुतेरे ❀ भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु - बियोग - लव - लेस - समाना ❀ सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि ❀ लेइअ संग मोहि छाँड़िअ जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी ❀ करुनामय उर - अंतर - जामी ॥

दोहा--राखिअ अवध जो अवधि लगि, रहत जानिअहि प्रान।
दीनबंधु सुंदर सुखद, सील - सनेह - निधान ॥६६॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी ❀ छिनु छिनु चरनसरोज निहारी ॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं ❀ मारग जनित सकल स्रम हरिहौं ॥
पाय पखारि बैठ तरुछाहीं ❀ करिहौं बाउ मुदित मनमाहीं ॥
स्रम-कन-सहित स्याम तनु देखे ❀ कहँ दुख समउ प्रानपति पेखे ॥
सम महि तृन-तरु-पल्लव डासी ❀ पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बारबार मृदुमूरति जोही ❀ लागिहि तात बयारि न मोही ॥
को प्रभुसँग मोहि चितवनि हारा ❀ सिंघबधुहि जिमि ससक सियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बनजोगू ❀ तुम्हहिं उचित तप मो कहँ भोगू ॥

दोहा--ऐसेउ बचन कठोर सुनि, जौं न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु-बिषम-बियोग-दुख, सहिहहि पावँर प्रान ॥६७॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी ❀ बचनबियोग न सकी सँभारी ॥
देखि दसा रघुपति जिय जाना ❀ हठि राखे नहिं राखिहि प्राना ॥
कहेउ कृपाल भानु-कुल-नाथा ❀ परिहरि सोच चलहु बन साथा ॥
नहिं बिषाद कर अवसर आजू ❀ बेगि करहु बन - गवन - समाजू ॥
कहि प्रियबचन प्रिया समुझाई ❀ लगे मातुपद आसिष पाई ॥
बेगि प्रजादुख मेटब आई ❀ जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥

फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी ❀ देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होइहि ❀ जननी जिअत बदनविधु जोइहि ॥

दोहा--बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बोलाइ लगाइ हिय, हरषि निरखिहौं गात॥६८॥

लखि सनेह कातरि महतारी ❀ बचन न आव बिकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना ❀ समउ सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासुपग लागी ❀ सुनिय माय मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा ❀ मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि छाँड़िअ छोहू ❀ करम कठिन कछु दोष न मोहू ॥
सुनि सियबचन सासु अकुलानी ❀ दसा कवनि बिधि कहौं बखानी ॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही ❀ धरि धीरज सिख आसिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा ❀ जब लगि गंग-जमुन-जल-धारा ॥

दोहा--सीतहि सासु असीस सिख, दीन्ह अनेकप्रकार ।
चली नाइ पदपदुम सिरु, अति हित बारहिं बार ॥६९॥

समाचार जब लछिमन पाये ❀ ब्याकुल बिलखि बदन उठि धाये ॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा ❀ गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ❀ मीन दीन जनु जल ते काढ़े ॥
सोच हृदय बिधि का होनिहारा ❀ सब सुख सुकृत सिरान हमारा ॥
मो कहँ काह कहब रघुनाथा ❀ रखिहहिं भवन कि लेइहहिं साथा ॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरे ❀ देह गेह सब सन तृन तोरे ॥
बोले बचन राम नयनागर ❀ सील–सनेह–सरल–सुख–सागर ॥
तात प्रेमबस जनि कदराहू ❀ समुझि हृदय परिनाम उछाहू ॥

दोहा--मातु-पिता-गुरु-स्वामि-सिख, सिर धरि करहिं सुभाय ।
लहेउ लाभ तिन्ह जनम कर, न तरु जनम जग जाय ॥७०॥

अस जिय जानि सुनहु सिख भाई ❀ करहु मातु–पितु–पद–सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदनु नाहीं ❀ राउ बृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं बन जाउँ तुम्हहिं लेइ साथा ❀ होइ सबहि बिधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू ❀ सब कहँ परइ दुसह-दुख-भारू ॥

रहहु करहु सब कर परितोषू ❀ न तरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रियप्रजा दुखारी ❀ सो नृपु अवसि नरकअधिकारी ॥
रहहु तात असि नीति बिचारी ❀ सुनत लषन भये ब्याकुल भारी ॥
सिअरें बचन सूखि गये कैसे ❀ परसत तुहिन तामरस जैसे ॥

दोहा--उतरु न आवत प्रेमबस, गहे चरन अकुलाइ ।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह, तजहु त कहा बसाइ ॥७१॥

दीन्हि मोहि सिख नीक गोसाईं ❀ लागि अगम अपनी कदराई ॥
नरवर धीर धरम-धुर-धारी ❀ निगम नीति कहँ ते अधिकारी ॥
मैं सिसु प्रभु-सनेह-प्रतिपाला ❀ मंदर मेरु कि लेहिं मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानउँ काहू ❀ कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई ❀ प्रीतिप्रतीति निगम निजु गाई ॥
मोरे सबहि एक तुम्ह स्वामी ❀ दीनबंधु उर-अंतर-जामी ॥
धरम नीति उपदेसिअ ताही ❀ कीरति-भूति-सुगति-प्रिय जाही ॥
मन-क्रम-बचन चरनरत होई ❀ कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

दोहा--करुनासिंधु सुबंधु के, सुनि मृदुबचन बिनीत ।
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥७२॥

माँगहु बिदा मातु सन जाई ❀ आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
मुदित भये सुनि रघुबर बानी ❀ भयेउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥
हरषित हृदय मातु पहिं आये ❀ मनहुँ अंध फिरि लोचन पाये ॥
जाइ जननि पग नायउ माथा ❀ मनु रघुनंदन-जानकि-साथा ॥
पूँछे मातु मलिन मन देखी ❀ लषन कहा सब कथा बिसेखी ॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा ❀ मृगी देखि दव जनु चहुँओरा ॥
लषन लखेउ भा अनरथ आजू ❀ एहि सनेह बस करब अकाजू ॥
माँगत बिदा सभय सकुचाहीं ❀ जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं ॥

दोहा--समुझि सुमित्रा राम-सिय-रूप-सुसील-सुभाउ ।
नृपसनेह लखि धुनेउ सिर, पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥७३॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी ❀ सहज सुहृद बोली मृदुबानी ॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही ❀ पिता रामु सब भाँति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ रामनिवासू ❀ तहइँ दिवसु जहँ भानुप्रकासू ॥
जौं पै सीय रामु बन जाहीं ❀ अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बंधु सुर साईं ❀ सेइअहि सकल प्रान की नाईं ॥
राम प्रानप्रिय जीवन जी के ❀ स्वारथरहित सखा सबही के ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें ❀ सब मानिअहि राम के नातें ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू ❀ लेहु तात जग जीवनलाहू ॥

दोहा--भूरि भागभाजन भयेहु, मोहि समेत बलि जाउँ ।
जौं तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह रामपद ठाउँ ॥७४॥

पुत्रवती जुबती जग सोई ❀ रघु-पति-भगत जासु सुतु होई ॥
न तरु बाँझ भलि बादि बिआनी ❀ रामबिमुख सुत तें हित हानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं ❀ दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर बड़ फल एहू ❀ राम-सीय-पद सहज सनेहू ॥
राग रोष इरिषा मदु मोहू ❀ जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई ❀ मन क्रम बचन करेहु सेवकाई ॥
तुम्ह कहँ बन सब भाँति सुपासू ❀ सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥
जेहि न रामु बन लहहिं कलेसू ❀ सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥

छन्द—उपदेसु यह जेहि तात तुम्हरें रामसिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवारु पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय-रघु-बीर-पद नितनित नई ॥

सोरठा--मातुचरन सिर नाइ, चले तुरत संकित हृदय ।
बागुर बिषम तोराइ, मनहुँ भाग मृगु भागबस ॥७५॥

गये लषनु जहँ जानकिनाथू ❀ भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥
बंदि राम-सिय-चरन सुहाये ❀ चले संग नृपमंदिर आये ॥
कहहिं परसपर पुर-नर-नारी ❀ भलि बनाइ बिधि बात बिगारी ॥
तन कृस मन दुख बदन मलीने ❀ बिकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥
कर मीजहिं सिर धुनि पछिताहीं ❀ जनु बिनु पंख बिहँग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा ❀ बरनि न जाइ बिषाद अपारा ॥

सचिव उठाइ राउ बैठारे ❀ कहि प्रियबचन रामु पगु धारे ॥
सियसमेत दोउ तनय निहारी ❀ व्याकुल भयेउ भूमिपति भारी ॥

दोहा--सीयसहित सुत सुभग दोउ, देखि देखि अकुलाइ ।
बारहि बार सनेहबस, राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि विकल नरनाहू ❀ सोकजनित उर दारुन दाहू ॥
नाइ सीस पद अतिअनुरागा ❀ उठि रघुबीर बिदा तब माँगा ॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै ❀ हरषसमय बिसमउ कत कीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेमप्रमादू ❀ जस जग जाइ होइ अपबादू ॥
सुनि सनेहबस उठि नरनाहाँ ❀ बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥
सुनहु तात तुम्ह कहँ मुनि कहहीं ❀ राम चराचरनायक अहहीं ॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी ❀ ईसु देइ फल हृदय बिचारी ॥
करइ जो करम पाव फल सोई ❀ निगम नीति असि कह सबु कोई ॥

दोहा--अउर करइ अपराध कोउ, अउर पाव फल भोगु ।
अतिबिचित्र भगवंतगति, को जग जानइ जोगु ॥७७॥

राय राम राखन हित लागी ❀ बहुत उपाय किये छलु त्यागी ॥
लखा रामरुख रहत न जाने ❀ धरम-धुरं-धर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही ❀ अतिहित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाये ❀ सासु ससुर पितु सुख समुझाये ॥
सिय मनु रामचरन अनुरागा ❀ घरु न सुगम बन बिषम न लागा ॥
अउरउ सबहि सीय समुझाई ❀ कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई॥
सचिवनारि गुरनारि सयानी ❀ सहित सनेह कहहिं मृदुबानी ॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू ❀ करहु जो कहहिं ससुर-गुरु-सासू ॥

दोहा-सिख सीतलि हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि न सोहानि ।
सरद-चंद-चंदिनि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥७८॥

सीय सकुचबस उतरु न देई ❀ सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि-पट-भूषन-भाजन आनी ❀ आगे धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहिं प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा ❀ सील सनेह न छाँड़िहि भीरा ॥
सुकृत सुजस परलोकु नसाऊ ❀ तुम्हहिं जान बन कहिहि न काऊ ॥

अस बिचारि सोइ करहु जो भावा ❀ राम जननिसिख सुनि सुखु पावा ॥
भूपहि बचन बानसम लागे ❀ करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू ❀ काह करिय कछु सूझ न काहू ॥
राम तुरत मुनिबेषु बनाई ❀ चले जनक जननिहि सिरुनाई ॥

दोहा--सजि बन-साजु-समाजु सब, बनिता-बंधु-समेत ।
बंदि बिप्र-गुर-चरन प्रभु, चले करि सबहि अचेत ॥७९॥

निकसि बसिष्ठद्वार भये ठाढ़े ❀ देखे लोग बिरहदव दाढ़े ॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझाये ❀ बिप्रबृंद रघुबीर बोलाये ॥
गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे ❀ आदर दान बिनयबस कीन्हे ॥
जाचक दान मान संतोषे ❀ मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बोलाइ बहोरी ❀ गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कै सार सँभार गोसाईं ❀ करबि जनक जननी की नाईं ॥
बारहिं बार जोरि जुग पानी ❀ कहत राम सब सन मृदुबानी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❀ जेहि तें रहइ भुआल सुखारी ॥

दोहा--मातु सकल मोरे बिरह, जेहि न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब, पुरजन परम प्रबीन ॥८०॥

एहि बिधि राम सबहिं समुझावा ❀ गुरु-पद-पदुम हरषि सिरु नावा ॥
गनपति गौरि गिरीस मनाई ❀ चले असीस पाइ रघुराई ॥
रामु चलत अति भयेउ बिषादू ❀ सुनि न जाइ पुर आरतनादू ॥
कुसगुन लंक अवध अतिसोकू ❀ हरष- बिषाद - बिबस सुरलोकू ॥
गइ मुरुछा तब भूपति जागे ❀ बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं ❀ केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना ❀ जो दुख पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहै नरनाहू ❀ लेइ रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दोहा--सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ देखराइ बनु, फिरेहु गये दिन चारि ॥८१॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ❀ सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई ॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी ❀ फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥

जब सिय कानन देखि डेराई ❀ कहेहु मोर सिख अवसरु पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू ❀ पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू ॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी ❀ रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
एहि बिधि करेहु उपायकदंबा ❀ फिरइ त होइ प्रानअवलंबा ॥
नाहिं त मोर मरन परिनामा ❀ कछु न बसाइ भये बिधि बामा ॥
अस कहि मुरुछि परा महि राऊ ❀ राम लषनु - सिय आनि देखाऊ ॥

दोहा–पाइ रजायसु नाइ सिरु, रथु अति बेग बनाइ ।
गयेउ जहाँ बाहर नगर, सीयसहित दोउ भाइ ॥८२॥

तब सुमंत्र नृपबचन सुनाये ❀ करि बिनती रथ राम चढ़ाये ॥
चढ़ि रथ सीयसहित दोउ भाई ❀ चले हृदय अवधहि सिरु नाई ॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा ❀ बिकल लोग सब लागे साथा ॥
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं ❀ फिरहिं प्रेमबस पुनि फिरि आवहिं ॥
लागति अवध भयावनि भारी ❀ मानहुँ कालराति अँधियारी ॥
घोर जंतुसम पुर–नर–नारी ❀ डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मसान परिजन जनु भूता ❀ सुत हित मीत मनहुँ जमदूता ॥
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं ❀ सरित सरोवर देखि न जाहीं ॥

दोहा–हय गय कोटिन्ह केलिमृग, पुरपसु चातक मोर ।
पिक रथांग सुक सारिका, सारस हंस चकोर ॥८३॥

रामबियोग बिकल सब ठाढ़े ❀ जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥
नगरु सकल बनु गहबर भारी ❀ खग मृग बिपुल सकल नरनारी ॥
बिधि कैकई किरातिनि कीन्हीं ❀ जेहि दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्हीं ॥
सहि न सके रघु-बर- बिरहागी ❀ चले लोग सब व्याकुल भागी ॥
सबहिं बिचारु कीन्ह मनमाहीं ❀ राम लषन सिय बिनु सुख नाहीं ॥
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू ❀ बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू ॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई ❀ सुरदुर्लभ सुखसदन बिहाई ॥
राम-चरन-पंकज प्रिय जिन्हहीं ❀ बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हहीं ॥

दोहा–बालक बृद्ध बिहाइ गृह, लगे लोग सब साथ ।
तमसा-तीर निवासु किय, प्रथम दिवस रघुनाथ ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी ❀ सदय हृदय दुख भयेउ बिसेखी ॥
करुनामय रघुनाथ गोसाईं ❀ बेगि पाइअहिं पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदुबचन सुहाये ❀ बहुबिधि राम लोग समुझाये ॥
किये धरम - उपदेश घनेरे ❀ लोग प्रेमबस फिरहिं न फेरे ॥
सील सनेह छाँड़ि नहिं जाई ❀ असमंजसबस भे रघुराई ॥
लोग सोग-स्रम-बस गये सोई ❀ कछुक देवमाया मति मोई ॥
जबहिं जामजुग जामिनि बीती ❀ राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
खोज मारि रथ हाँकहु ताता ❀ आन उपाय बनिहि नहिं बाता ॥

दोहा--राम लषनु सिय जान चढ़ि, संभुचरन सिरु नाइ ।
सचिव चलायेउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ॥८५॥

जागे सकल लोग भये भोरू ❀ गे रघुनाथ भयेउ अति सोरू ॥
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं ❀ राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं ॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू ❀ भयेउ बिकल बड़ बनिकसमाजू ॥
एकहिं एक देहिं उपदेसू ❀ तजे राम हम जानि कलेसू ॥
निंदहिं आपु सराहहिं मीना ❀ धिग जीवन रघु-बीर-बिहीना ॥
जौं पै प्रियबियोग बिधि कीन्हा ❀ तौ कस मरन न माँगे दीन्हा ॥
एहि बिधि करत प्रलापकलापा ❀ आये अवध भरे परितापा ॥
बिषमबियोग न जाइ बखाना ❀ अवधिआस सब राखहिं प्राना ॥

दोहा--राम-दरस-हित नेम ब्रत, लगे करन नरनारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन बिहीन तमारि ॥८६॥

सीता-सचिव-सहित दोउ भाई ❀ सृंगबेरपुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी ❀ कीन्ह दंडवत हरष बिसेखी ॥
लषन सचिव सिय किये प्रनामा ❀ सबहिं सहित सुख पायउ रामा ॥
गंग सकल–मुद–मंगल – मूला ❀ सब सुखकरनि हरनि सब सूला ॥
कहि कहि कोटिक कथाप्रसंगा ❀ रामु बिलोकहिं गंगतरंगा ॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई ❀ बिबुध-नदी-महिमा अधिकाई ॥
मज्जनु कीन्ह पंथस्रम गयेऊ ❀ सुचि जल पियत मुदित मन भयेऊ ॥
सुमिरत जाहि मिटइ स्रमभारू ❀ तेहि स्रम यह लौकिकब्यवहारू ॥

दोहा—सुद्ध सच्चिदानंदमय, कंद भानु - कुल-केतु ।
चरित करत नरअनुहरत, संसृति-सागर-सेतु ॥ ८७ ॥

यह सुधि गुह निषाद जब पाई ❀ मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिये फल मूल भेंट भरि भारा ❀ मिलन चलेउ हिय हरष अपारा ॥
करि दंडवत भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहि बिलोकत अतिअनुरागे ॥
सहज – सनेह – बिबस रघुराई ❀ पूछी कुसल निकट बैठाई ॥
नाथ कुसल पदपंकज देखे ❀ भयेउँ भागभाजन जन लेखे ॥
देव धरनि – धन—धाम तुम्हारा ❀ मैं जन नीच सहित परिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ ❀ थापिय जन सब लोग सिहाऊ ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना ❀ मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दोहा—बरष चारिदस बास बन, मुनि-ब्रत-बेषु-अहारु ।
ग्रामबास नहिं उचित सुनि, गुहहि भयेउ दुखभारु॥८८॥

राम-लषन-सिय-रूप निहारी ❀ कहहिं सप्रेम ग्राम—नर—नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❀ जिन्ह पठये बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा ❀ लोयनलाहु हमहिं बिधि दीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना ❀ तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
लेइ रघुनाथहि ठाउँ देखावा ❀ कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारु घर आये ❀ रघुबर संध्याकरन सिधाये ॥
गुह सवाँरि साथरी डसाई ❀ कुस-किसलय-मय मृदुल सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी ❀ दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥

दोहा—सिय-सुमंत्र-भ्राता-सहित, कंद मूल फल खाइ ।
सयन कीन्ह रघु-बंस-मनि, पाय पलोटत भाइ ॥८९॥

उठे लषनु प्रभु सोवत जानी ❀ कहि सचिवहि सोवन मृदुबानी ॥
कछुक दूरि सजि बानसरासन ❀ जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती ❀ ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥
आपु लषन पहिं बैठेउ जाई ❀ कटि भाथा सरचाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू ❀ भयेउ प्रेमबस हृदय बिषादू ॥
तनु पुलकित जलु लोचन बहई ❀ बचन सप्रेम लषन सन कहई ॥

भूपति-भवन सुभाय सुहावा ❀ सुर-पति-सदन न पटतर पावा ॥
मनि-मय-रचित चारु चौवारे ❀ जनु रतिपति निजहाथ सवाँरे ॥

दोहा—सुचि सुविचित्र सु-भोग-मय, सुमन सुगंध सुबास ।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ, सब बिधि सकल सुपास ॥९०॥

बिबिध बसन उपधान तुराई ❀ छीरफेन मृदु बिसद सुहाई ॥
तहँ सियराम सयन निसि करहीं ❀ निज छबि रति-मनोज-मद हरहीं ॥
ते सिय-रामु साथरी सोये ❀ स्रमित बसन बिनु जाहिं न जोये ॥
मातु पिता परिजन पुरबासी ❀ सखा सुसील दास अरु दासी ॥
जोगवहिं जिन्हहिं प्रान की नाईं ❀ महि सोवत तेइ राम गोसाईं ॥
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ ❀ ससुर सुरेससखा रघुराऊ ॥
रामचंद्र पति सो बैदेही ❀ सोवत महि बिधि बाम न केही ॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू ❀ करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दोहा—कैकयनंदिनि मंदमति, कठिन कुटिलपन कीन्ह ।
जेहि रघुनंदन जानकिहि, सुखअवसर दुख दीन्ह ॥९१॥

भइ दिन-कर-कुल-बिटप-कुठारी ❀ कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ॥
भयउ बिषाद निषादहि भारी ❀ रामसीय महिसयन निहारी ॥
बोले लषन मधुर-मृदु-बानी ❀ ज्ञान-बिराग-भगति - रस सानी ॥
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता ❀ निज कृत करम भोग सब भ्राता ॥
जोग बियोग भोग भल मंदा ❀ हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालू ❀ संपति बिपति करमु अरु कालू ॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू ❀ सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू ॥
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं ❀ मोह मूल परमारथ नाहीं ॥

दोहा—सपने होइ भिखारि नृपु, रंक नाकपति होइ ।
जागें लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ ॥९२॥

अस बिचारि नहिं कीजिय रोषू ❀ काहुहि बादि न देइय दोषू ॥
मोहनिसा सबु सोवनिहारा ❀ देखिय सपन अनेक प्रकारा ॥
एहि जग जामिनि जागहिं जोगी ❀ परमारथी प्रपंचबियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जग जागा ❀ जब सब बिषय बिलास बिरागा ॥

होइ बिवेक मोहभ्रम भागा ❀ तब रघु-नाथ-चरन अनुरागा ॥
सखा परम परमारथु एहू ❀ मन-क्रम-बचन रामपद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथरूपा ❀ अबिगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल-बिकार-रहित गतभेदा ❀ कहि नित नेति निरूपहिं बेदा ॥

दोहा--भगत भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुज तन, सुनत मिटहिं जगजाल ॥९३॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू ❀ सिय - रघुबीर - चरन रत होहू ॥
कहत रामगुन भा भिनुसारा ❀ जागे जगमंगल—दातारा ॥
सकल सौच करि राम नहावा ❀ सुचि सुजान बटछीर मँगावा ॥
अनुजसहित सिर जटा बनाये ❀ देखि सुमंत्र नयनजल छाये ॥
हृदय दाहु अति बदन मलीना ❀ कह कर जोरि बचन अति दीना ॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा ❀ लै रथ जाहु राम के साथा ॥
बन देखाइ सुरसरि अन्हवाई ❀ आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई ॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी ❀ संसय सकल सँकोच निबेरी ॥

दोहा—नृप अस कहेउ गोसाइँ जस, कहइ करउँ बलि सोइ ।
करि बिनती पायन्ह परेउ, दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥९४॥

तात कृपा करि कीजिय सोई ❀ जा तें अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा ❀ तात धरम मतु तुम्ह सब सोधा ॥
सिबि दधीच हरिचंद नरेसा ❀ सहे धरमहित कोटि कलेसा ॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना ❀ धरम धरेउ सहि संकट नाना ॥
धरमु न दूसर सत्यसमाना ❀ आगम निगम पुरान बखाना ॥
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा ❀ तजे तिहूँपुर अपजसु छावा ॥
संभावित कहुँ अपजसलाहू ❀ मरन-कोटि-सम दारुन दाहू ॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ ❀ दियें उतरु फिरि पातक लहऊँ ॥

दोहा—पितुपद गहि कहि कोटि नति, बिनय करब कर जोरि ।
चिंता कवनिहुँ बात कै, तात करिय जनि मोरि ॥९५॥

तुम्ह पुनि पितुसम अतिहित मोरे ❀ बिनती करौं तात कर जोरे ॥
सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारें ❀ दुख न पाव पितु सोच हमारें ॥

सुनि रघु-नाथ-सचिव-संबादू ॐ भयउ सपरिजन बिकल निषादू ॥
पुनि कछु लषन कही कटुबानी ॐ प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी ॥
सकुचि राम निजसपथ देवाई ॐ लषनसँदेसु कहिय जनि जाई ॥
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू ॐ सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू ॥
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया ॐ सोइ रघुबरहिं तुम्हहिं करनीया ॥
न तरु निपट अवलंबबिहीना ॐ मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना ॥

दोहा--मइकें ससुरें सकलसुख, जबहिं जहाँ मन मान ।
तहँ तब रहिहि सुखेन सिय, जब लगि बिपति बिहान ॥९६॥

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती ॐ आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
पितुसँदेस सुनि कृपानिधाना ॐ सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना ॥
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू ॐ फिरहु त सब कर मिटइ खँभारू ॥
सुनि पतिबचन कहति बैदेही ॐ सुनहु प्रानपति परमसनेही ॥
प्रभु करुनामय परमबिबेकी ॐ तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी ॥
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई ॐ कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई ॐ कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥
तुम्ह पितु-ससुर-सरिस हितकारी ॐ उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

दोहा--आरतिबस सनमुख भइउँ, बिलगु न मानब तात ।
आरज-सुत-पद-कमल बिनु, बादि जहाँ लगि नात ॥९७॥

पितु-बैभव-बिलास मैं डीठा ॐ नृप-मनि-मुकुट मिलित पदपीठा ॥
सुखनिधान अस पितुगृह मोरें ॐ पिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥
ससुर चक्कवइ कोसलराऊ ॐ भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ जेहि सुरपति लेई ॐ अरधसिंघासन आसनु देई ॥
ससुर एतादृस अवधनिवासू ॐ प्रिय परिवारु मातुसम सासू ॥
बिनु रघुपति-पद-पदुम-परागा ॐ मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा ॥
अगम पंथ बन भूमि पहारा ॐ करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा ॐ मोहि सब सुखद प्रान-पति-संगा ॥

दोहा--सासु ससुर सन मोरि हुँति, बिनय करबि परि पायँ ।
मोर सोचु जनि करिय कछु, मैं बन सुखी सुभायँ ॥९८॥

प्राननाथ प्रियदेवर साथा ❀ धीर धुरीन धरें धनु भाथा ॥
नहिं मग स्रम भ्रम दुख मन मोरें ❀ मोहि लगि सोचु करिय जनि भोरें ॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलबानी ❀ भयउ बिकल जनु फनि मनिहानी ॥
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना ❀ कहि न सकइ कछु अति अकुलाना ॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहुभाँती ❀ तदपि होति नहिं सीतल छाती ॥
जतन अनेक साथहित कीन्हे ❀ उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ॥
मेटि जाइ नहिं रामरजाई ❀ कठिन करमगति कछु न बसाई ॥
राम-लषन-सिय-पद सिरु नाई ❀ फिरेउ बनिक जिमि मूर गवाँई ॥

दोहा--रथ हाँकेउ हय रामतन, हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखि निषाद बिषादबस, धुनहिं सीस पछिताहिं ॥९९॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें ❀ प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसें ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाये ❀ सुरसरितीर आपु तब आये ॥
माँगी नाव न केवट आना ❀ कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन-कमल-रज कहँ सब कहई ❀ मानुषकरनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई ❀ पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउँ मुनिघरनी होइ जाई ❀ बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहि प्रतिपालउँ सब परिवारू ❀ नहिं जानउँ कछु और कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू ❀ मोहि पदपदुम पखारन कहहू ॥

छंद—पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम राउरि आन दसरथसपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहु लषन पै जब लगि न पाय पखारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारु उतारिहौं ॥

दोहा—सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहँसे करुना ऐन, चितइ जानकी-लषन-तन ॥१००॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई ❀ सोइ करु जेहि तव नाव न जाई ॥
बेगि आनु जल पाय पखारू ❀ होत बिलंब उतारहि पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा ❀ उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा ❀ जेहि जग किय तिहुँ पगहुँ तें थोरा ॥

पदनख निरखि देवसरि हरषी ❀ सुनि प्रभुबचन मोह मति करषी ॥
केवट रामरजायसु पावा ❀ पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
अतिआनंद उमगि अनुरागा ❀ चरनसरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं ❀ एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

दोहा–पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥१०१॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरिरेता ❀ सीय राम गुह लषन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा ❀ प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
पियहिय की सिय जाननिहारी ❀ मनिमुंदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहु उतराई ❀ केवट चरन गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा ❀ मिटे दोष–दुख–दारिद–दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी ❀ आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरें ❀ दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती बार मोहि जोइ देवा ❀ सो प्रसाद मैं सिर धरि लेवा ॥

दोहा–बहुत कीन्ह प्रभु लषन सिय, नहिं कछु केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन, भगति बिमल बर देइ ॥१०२॥

तब मज्जन करि रघुकुलनाथा ❀ पूजि पारथिव नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहिं कहेउ कर जोरी ❀ मातु मनोरथ पुरउबि मोरी ॥
पति-देवर-सँग कुसल बहोरी ❀ आइ करउँ जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सियबिनय प्रेम-रस-सानी ❀ भइ तब बिमल बारि बरबानी ॥
सुनु रघु–बीर–प्रिया बैदेही ❀ तव प्रभाउ जग बिदित न केही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरे ❀ तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें ॥
तुम्ह जो हमहिं बड़ि बिनय सुनाई ❀ कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई ॥
तदपि देबि मइँ देबि असीसा ❀ सफल होन हित निजबागीसा ॥

दोहा–प्राननाथ देवरसहित, कुसल कोसला आइ ।
पूजिहि सब मनकामना, सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंगबचन सुनि मंगलमूला ❀ मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू ❀ सुनत सूख मुख भा उर दाहू ॥

दीनबचन गुह कह कर जोरी ❀ विनय सुनहु रघु-कुल-मनि मोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ देखाई ❀ करि दिन चारि चरनसेवकाई ॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई ❀ परनकुटी मैं करबि सुहाई ॥
तब मोहि कहँ जसि देव रजाई ❀ सोइ करिहौं रघु—बीर—दोहाई ॥
सहजसनेह राम लखि तासू ❀ संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे ❀ करि परितोष बिदा तब कीन्हे ॥

दोहा—तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहि माथ ।
सखा-अनुज-सिय-सहित बन, गवन कीन्ह रघुनाथ॥१०४॥

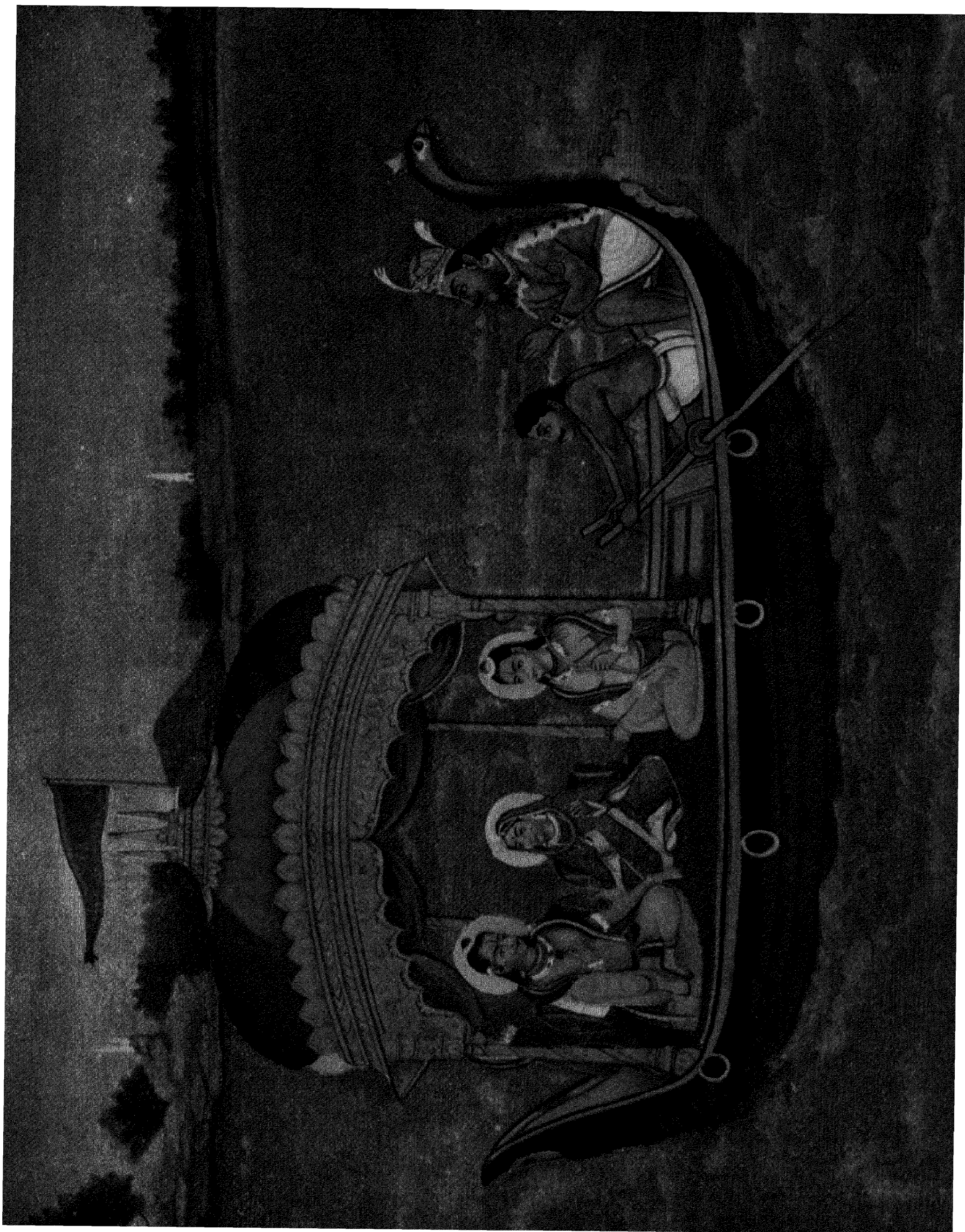
तेहि दिन भयेउ बिटप तर बासू ❀ लषन सखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई ❀ तीरथराजु देखि प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी ❀ माधवसरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारू ❀ पुन्य प्रदेस देस अति चारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा ❀ सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥
सेन सकल तीरथ बरबीरा ❀ कलुष—अनीक—दलन रनधीरा ॥
संगमु सिंहासन सुठि सोहा ❀ छत्रु अषयबटु मुनिमन मोहा ॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा ❀ देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥

दोहा—सेवहि सुकृती साधु सुचि, पावहिं सब मन काम ।
बंदी बेद-पुरान-गन, कहहि बिमल गुनग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयागप्रभाऊ ❀ कलुष - पुंज - कुंजर - मृग - राऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा ❀ सुखसागर रघुबर सुखपावा ॥
कहि सिय लषनहिं सखहि सुनाई ❀ श्रीमुख तीरथ - राज - बड़ाई ॥
करि प्रनाम देखत बन बागा ❀ कहत महातम अति अनुरागा ॥
एहि बिधि आइ बिलोकी बेनी ❀ सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिवसेवा ❀ पूजि जथाबिधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आये ❀ करत दंडवत मुनि उर लाये ॥
मुनि-मन-मोद न कछु कहि जाई ❀ ब्रह्मानंदरासि जनु पाई ॥

दोहा—दीन्हि असीस मुनीस उर, अति अनंदु अस जानि ।
लोचनगोचर सुकृतफल, मनहुँ किये बिधि आनि ॥१०६॥

अयोध्याकाण्ड — श्रीराम गंगापार गमन (पृ० सं० १९९)



पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥

कुसलप्रस्न करि आसन दीन्हे ❀ पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥
कंद मूल फल अंकुर नीके ❀ दिये आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥
सीय-लषन-जन-सहित सुहाये ❀ अति रुचि राम मूलफल खाये ॥
भये बिगतस्रम राम सुखारे ❀ भरद्वाज मृदुबचन उचारे ॥
आजु सुफल तप तीरथ त्यागू ❀ आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥
सुफल सकल-सुभ-साधन-साजू ❀ राम तुम्हहिं अवलोकत आजू ॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी ❀ तुम्हरे दरस आस सब पूजी ॥
अब करि कृपा देहु बर एहू ❀ निज-पद-सरसिज सहजसनेहू ॥

दोहा—करम बचन मन छाँड़ि छल, जब लगि जन न तुम्हार ।
तब लगि सुख सपनेहुँ नहीं, किये कोटिउपचार ॥ १०७ ॥

सुनि मुनिबचन राम सकुचाने ❀ भाव भगति आनंद अघाने ॥
तब रघुबर मुनि सुजस सुहावा ❀ कोटि भाँति कहि सबहिं सुनावा ॥
सो बड़ सो सब-गुन-गन-गेहू ❀ जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं ❀ बचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
यह सुधि पाइ प्रयागनिवासी ❀ बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
भरद्वाजआस्रम सब आये ❀ देखन दसरथसुअन सुहाये ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित भये लहि लोयन लाहू ॥
देहिं असीस परमसुख पाई ❀ फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दोहा—राम कीन्ह बिस्राम निसि, प्रात प्रयाग नहाइ ।
चले सहित सिय लषन जन, मुदित मुनिहिं सिरु नाइ ॥ १०८ ॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं ❀ नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं ॥
मुनि मन बिहँसि राम सन कहहीं ❀ सुगम सकलमग तुम्ह कहँ अहहीं ॥
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाये ❀ सुनि मन मुदित पचास क आये ॥
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा ❀ सकल कहहिं मगु दीख हमारा ॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे ❀ जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे ॥
करि प्रनाम रिषि आयसु पाई ❀ प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट निकसहिं जब जाई ❀ देखहिं दरस नारिनर धाई ॥
होहिं सनाथ जनमफलु पाई ❀ फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥

दोहा—बिदा किये बटु बिनय करि, फिरे पाइ मनकाम।
उतरि नहाये जमुनजल, जो सरीरसम स्याम ॥१०९॥

सुनत तीरवासी नरनारी ❀ धाये निज निज काज बिसारी ॥
लषन - राम - सिय - सुंदरताई ❀ देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥
अति लालसा सबहि मन माहीं ❀ नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महँ बयबिरिध सयाने ❀ तिन्ह करि जुगुति राम पहिचाने ॥
सकलकथा तिन्ह सबहिं सुनाई ❀ बनहि चले पितुआयसु पाई ॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं ❀ रानी राय कीन्हि भल नाहीं ॥
तेहि अवसर एक तापस आवा ❀ तेजपुंज लघुबयस सुहावा ॥
कबि अलखितगति बेषु बिरागी ❀ मन - क्रम - बचन रामअनुरागी ॥

दोहा—सजल नयन तन पुलकि निज, इष्टदेउ पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल, दसा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा ❀ परमरंक जनु पारसु पावा ॥
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ ❀ मिलत धरे तन कह सब कोऊ ॥
बहुरि लषन पायन्ह सोइ लागा ❀ लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
पुनि सिय-चरन-धूरि धरि सीसा ❀ जननि जानि सिसु दीन्ह असीसा ॥
कीन्ह निषाद दंडवत तेही ❀ मिलेउ मुदित लखि रामसनेही ॥
पियत नयनपुट रूपु पियूखा ❀ मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❀ जिन्ह पठये बन बालक ऐसे ॥
राम - लषन - सिय - रूप निहारी ❀ होहिं सनेह बिकल नरनारी ॥

दोहा—तब रघुबीर अनेकबिधि, सखहि सिखावनु दीन्ह।
रामरजायसु सीस धरि, भवन गवँनु तेइँ कीन्ह ॥१११॥

पुनि सिय राम लषन कर जोरी ❀ जमुनहिं कीन्ह प्रनाम बहोरी ॥
चले ससीय मुदित दोउ भाई ❀ रबितनुजा कै करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता ❀ कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राजलषन सब अंग तुम्हारे ❀ देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाये ❀ ज्योतिष झूठ हमारेहि भाये ॥
अगमु पंथु गिरि कानन भारी ❀ तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥

करि केहरि बन जाइ न जोई ❀ हम सँग चलहिं जो आयसु होई ॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई ❀ फिरब बहोरि तुम्हहि सिर नाई ॥

दोहा—एहि बिधि पूछहिं प्रेम बस, पुलकगात जल नैन ।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहि बिनती मृदु बैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं ❀ तिन्हहिं नाग-सुर-नगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये ❀ धन्य पुन्यमय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं ❀ तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥
पुन्यपुंज मग-निकट-निवासी ❀ तिन्हहिं सराहहिं सुर-पुर-बासी ॥
जे भरि नयन बिलोकहि रामहिं ❀ सीता-लषन-सहित घनस्यामहिं ॥
जे सर सरित राम अवगाहहिं ❀ तिन्हहिं देव-सर-सरित सराहहिं ॥
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई ❀ करहिं कलपतरु तासु बड़ाई ॥
परसि राम - पद - पदुम - परागा ❀ मानति भूमि भूरि निजभागा ॥

दोहा—छाहँ करहिं घन बिबुधगन, बरषहिं सुमन सिहाहिं ।
देखत गिरि बन बिहँग मृग, राम चले मग जाहिं ॥११३॥

सीता - लषन - सहित रघुराई ❀ गावँ निकट जब निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृह काज बिसारी ॥
राम-लषन-सिय-रूप निहारी ❀ पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा ❀ सब भये मगन देखि दोउ बीरा ॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी ❀ लहि जनु रंकन्ह सुर-मनि-ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं ❀ लोचन लाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहि देखि एक अनुरागे ❀ चितवत चले जाहिं सँग लागे ॥
एक नयनमग छबि उर आनी ❀ होहिं सिथिल तन मन बरबानी ॥

दोहा—एक देखि बटछाहँ भलि, डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गवाँइअ छिनुक स्नम, गवनब अबहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी ❀ अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी ❀ रामु कृपालु सुसील बिसेखी ॥
जानी स्नमित सीय मन माहीं ❀ घरिक बिलम्ब कीन्ह बटछाहीं ॥
मुदित नारिनर देखहिं सोभा ❀ रूपअनूप नयन मन लोभा ॥

एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा ❀ रामचंद्र - मुख - चंद्र - चकोरा ॥
तरुन-तमाल-बरन तनु सोहा ❀ देखत कोटि-मदन-मन मोहा ॥
दामिनिबरन लषन सुठि नीके ❀ नखसिख सुभग भावते जी के ॥
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा ❀ सोहहिं करकमलनि धनुतीरा ॥

दोहा—जटा मुकुट सीसनि सुभग, उर भुज नयन बिसाल ।
सरद-परब-बिधु-बदन बर, लसत स्वेद-कन-जाल ॥११५॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी ❀ सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
राम - लषन - सिय – सुंदरताई ❀ सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
थके नारि नर प्रेम पियासे ❀ मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
सीयसमीप ग्रामतिय जाहीं ❀ पूछत अतिसनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाये ❀ कहहिं बचन मृदु सरल सुभाये ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं ❀ तिय सुभाय कछु पूछत डरहीं ॥
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी ❀ बिलगु न मानब जानि गवाँरी ॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने ❀ इन्ह तें लहि दुति मरकत सोने ॥

दोहा—स्यामल गौर किसोर बर, सुंदर सुखमा ऐन ।
सरद-सर्बरी-नाथ-मुख, सरदसरोरुह नैन ॥११६॥

कोटि मनोज लजावनिहारे ❀ सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुलबानी ❀ सकुचि सीय मन महुँ मुसुकानी ॥
तिनहिं बिलोकि बिलोकति धरनी ❀ दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी ॥
सकुचि सप्रेम बाल-मृग-नैनी ❀ बोली मधुरबचन पिकबैनी ॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे ❀ नाम लषन लघुदेवर मोरे ॥
बहुरि बदनबिधु अंचल ढाँकी ❀ पियतन चितइ भौंह करि बाँकी ॥
खंजनमंजु तिरीछे नैननि ❀ निजपतिकहेउ तिन्हहिं सियसैननि ॥
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं ❀ रंकन्ह रायरासि जनु लूटीं ॥

दोहा—अतिसप्रेम सियपाय परि, बहुबिधि देहिं असीस ।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह, जबलगि महिअहिसीस ॥११७॥

पारबतीसम पतिप्रिय होहू ❀ देबि न हम पर छाँड़ब छोहू ॥
पुनि पुनि बिनय करिय कर जोरी ❀ जौं एहि मारग फिरिय बहोरी ॥

दरसन देव जानि निज दासी ❀ लखी सीय सब प्रेमपियासी ॥
मधुरवचन कहि कहि परितोषी ❀ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लषन रघुवररुख जानी ❀ पूछेउ मगु लोगन्हि मृदुवानी ॥
सुनत नारिनर भये दुखारी ❀ पुलकित गात बिलोचन वारी ॥
मिटा मोद मन भये मलीने ❀ बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ॥
समुझि करम गति धीरज कीन्हा ❀ सोधि सुगम मगु तिन्हकहि दीन्हा ॥

दोहा—लषन-जानकी-सहित तब, गवनु कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रियवचन कहि, लिये लाइ मन साथ ॥११८॥

फिरत नारिनर अति पछिताहीं ❀ दैवहि दोषु देहिं मन माहीं ॥
सहित बिषाद परसपर कहहीं ❀ बिधिकरतब उलटे सब अहहीं ॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू ❀ जेहि ससि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥
रूख कलपतरु सागर खारा ❀ तेहि पठये बन राजकुमारा ॥
जौं पै इन्हहिं दीन्ह वनवासू ❀ कीन्ह बादि बिधि भोगबिलासू ॥
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना ❀ रचे बादि बिधि वाहन नाना ॥
ए महि परहिं डासि कुसपाता ❀ सुभगसेज कत सृजत बिधाता ॥
तरु-तर-बास इन्हहिं बिधि दीन्हा ❀ धवलधाम रचि रचि स्रम कीन्हा ॥

दोहा—जौं ए मुनि-पट-धर जटिल, सुंदर सुठि सुकुमार ।
बिबिधभाँति भूषन बसन, बादि किये करतार ॥११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं ❀ बादि सुधादि असन जग माहीं ॥
एक कहहिं ए सहज सुहाये ❀ आपु प्रगट भये बिधि न बनाये ॥
जहँ लगि बेद कही बिधिकरनी ❀ स्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥
देखहु खोजि भुवन दसचारी ❀ कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥
इन्हहिं देखि बिधि मनु अनुरागा ❀ पटतर जोग बनावइ लागा ॥
कीन्ह बहुत स्रम ऐक न आये ❀ तेहि इरिषा बन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ❀ आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे ❀ जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥

दोहा—एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय, लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहहिं मारग अगम, सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह बिकलबस होहीं ❀ चकईं साँझ समय जनु सोहीं ॥
मृदु-पद-कमल कठिन मगु जानी ❀ गहबरि हृदय कहहिं बरबानी ॥
परसत मृदुलचरन अरुनारे ❀ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जौं जगदीस इन्हहिं बनु दीन्हा ❀ कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥
जौं माँगा पाइय बिधि पाहीं ❀ ए रखिअहि सखि आँखिन्ह माहीं ॥
जे नरनारि न अवसर आये ❀ तिन्ह सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि सुरूप बूझहिं अकुलाई ❀ अब लगि गये कहाँ लगि भाई ॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई ❀ प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पाई ॥

दोहा--अबला बालक बृद्ध जन, कर मीजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमबस लोग इमि, रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२१॥

गावँ गावँ अस होइ अनंदू ❀ देखि भानु - कुल - कैरव - चंदू ॥
जे यह समाचार सुनि पावहिं ❀ ते नृपरानिहिं दोष लगावहिं ॥
कहहिं एक अतिभल नरनाहू ❀ दीन्ह हमहिं जेहिं लोचनलाहू ॥
कहहिं परसपर लोग लोगाईं ❀ बातें सरल सनेह सुहाईं ॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये ❀ धन्य सो नगरु जहाँ तें आये ॥
धन्य सो देस सैल बन गाऊँ ❀ जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥
सुख पायउ बिरंचि रचि तेही ❀ ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥
राम–लषन–पथि–कथा सुहाई ❀ रही सकल मग कानन छाई ॥

दोहा--एहि बिधि रघु-कुल-कमल-रबि, मग लोगन्ह सुख देत ।
जाहिं चले देखत बिपिन, सिय-सौमित्रि-समेत ॥१२२॥

आगे राम लषन बने पाछे ❀ तापसबेष बिराजत काछे ॥
उभय बीच सिय सोहति कैसी ❀ ब्रह्म – जीव - बिच माया जैसी ॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई ❀ जनु मधु-मदन-मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहउँ जिय जोही ❀ जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥
प्रभु–पद–रेख बीच बिच सीता ❀ धरति चरन मग चलति सभीता ॥
सीय – राम – पद – अंक बराये ❀ लषन चलहिं मगु दाहिन बायें ॥
राम–लषन–सिय–प्रीति सुहाई ❀ बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीं ❀ लिये चोरि चित राम बटोही ॥

दोहा--जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय, सियसमेत दोउ भाइ ।
भव-मग-अगम अनंद तेइ, बिनु स्रम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ ❀ बसहु लषन-सिय-राम बटाऊ ॥
राम-धाम-पथ पाइहि सोई ❀ जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
तब रघुबीर स्रमित सिय जानी ❀ देखि निकट बट सीतल-पानी ॥
तहँ बसि कंद मूल फल खाई ❀ प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर सैल सुहाये ❀ बालमीकिआस्रम प्रभु आये ॥
राम दीख मुनिबास सुहावन ❀ सुंदर गिरि कानन जल पावन ॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले ❀ गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं ❀ बिरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दोहा--सुचि सुंदर आस्रमु निरखि, हरषे राजिवनैन ।
सुनि रघु-बर-आगमन मुनि, आगे आयेउ लैन ॥१२४॥

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा ❀ आसिरबाद बिप्रबर दीन्हा ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने ❀ करि सनमान आस्रमहिं आने ॥
मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाये ❀ कंद मूल फल मधुर मँगाये ॥
सिय सौमित्रि राम फल खाये ❀ तब मुनि आसन दिये सुहाये ॥
बालमीकि मन आनँद भारी ❀ मंगलमूरति नयन निहारी ॥
तब करकमल जोरि रघुराई ❀ बोले बचन स्रवन-सुख-दाई ॥
तुम्ह त्रि-काल-दरसी मुनिनाथा ❀ बिस्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा ॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी ❀ जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी ॥

दोहा--तात बचन पुनि मातुहित, भाइ भरत अस राउ ।
मो कहुँ दरस तुम्हार, प्रभु, सब मम पुन्यप्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे ❀ भये सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई ❀ मुनि उदबेगु न पावइ कोई ॥
मुनि तापस जिन्ह तें दुख लहहीं ❀ ते नरेस बिनु पावक दहहीं ॥
मंगलमूल बिप्रपरितोषू ❀ दहइ कोटि कुल भू-सुर-रोषू ॥
अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊँ ❀ सिय-सौमित्रि-सहित जहँ जाऊँ ॥
तहँ रचि रुचिर परन-तृन-साला ❀ बासु करउँ कछु काल कृपाला ॥

सहज सरल सुनि रघुबरबानी ❀ साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी ॥
कस न कहहु अस रघु-कुल-केतू ❀ तुम्ह पालक संतत स्रुतिसेतू ॥

छंद—स्रुति-सेतु-पालक राम तुम्ह जगदीससमाया जानकी ।
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की ॥
जो सहससीस अहीस महि धरु लषन स-चराचर-धनी ।
सुरकाज धरि नरराज तनु चले दलन खल-निसिचर-अनी ॥

सोरठा--राम सरूप तुम्हार, बचनअगोचर बुद्धिपर ।
अबिगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥१२६॥

जग पेखन तुम्ह देखनिहारे ❀ बिधि-हरि-संभु-नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरम तुम्हारा ❀ अउर तुम्हहिं को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई ❀ जानत तुम्हहिं तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहिं रघुनंदन ❀ जानहिं भगत भगत-उर-चंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी ❀ बिगतबिकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेउ संत-सुर-काजा ❀ कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ❀ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा ❀ जस काछिय तस चाहिय नाचा ॥

दोहा–पूछेहु मोहिं कि रहौं कहँ, मैं पूछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहिं देखावउँ ठाउँ ॥१२७॥

सुनि मुनिबचन प्रेमरस साने ❀ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी ❀ बानी मधुर अमियरस बोरी ॥
सुनहु राम अब कहउँ निकेता ❀ जहाँ बसहु सिय-लषन-समेता ॥
जिन्ह के स्रवन समुद्रसमाना ❀ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे ❀ तिन्हके हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे ❀ रहहिं दरसजलधर अभिलाषे ॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी ❀ रूपबिंदु जल होहिं सुखारी ॥
तिन्ह के हृदयसदन सुखदायक ❀ बसहु बंधु-सिय-सह रघुनायक ॥

दोहा–जस तुम्हार मानस बिमल, हंसिनि जीहा जासु ।
मुकताहल गुनगन चुनइ, राम बसहु मन तासु ॥१२८॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा ❀ सादर जासु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं ❀ प्रभुप्रसाद पट भूषन धरहीं ॥
सीस नवहिं सुर-गुरु-द्विज देखी ❀ प्रीतिसहित करि बिनय बिसेखी ॥
कर नित करहिं रामपद पूजा ❀ रामभरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरन रामतीरथ चलि जाहीं ❀ राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा ❀ पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा ॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना ❀ बिप्र जेवाँइ देहिं बहुदाना ॥
तुम्ह तें अधिक गुरुहिं जिय जानी ❀ सकल भाय सेवहिं सनमानी ॥

दोहा--सब करि माँगहिं एकु फलु, राम-चरन-रति होउ ।
तिन्ह के मनमंदिर बसहु, सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९॥

काम कोह मद मान न मोहा ❀ लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया ❀ तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ॥
सब के प्रिय सब के हितकारी ❀ दुख-सुख-सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रियबचन बिचारी ❀ जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥
तुम्हहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं ❀ राम बसहु तिन्ह के मनमाहीं ॥
जननीसम जानहिं परनारी ❀ धन पराव बिष तें बिष भारी ॥
जे हरषहिं परसंपति देखी ❀ दुखित होहिं परबिपति बिसेखी ॥
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पियारे ❀ तिन्ह के मन सुभसदन तुम्हारे ॥

दोहा--स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिन के सब तुम्ह तात ।
मनमंदिर तिन्ह के बसहु, सीयसहित दोउ भ्रात ॥१३०॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं ❀ बिप्र-धेनु-हित संकट सहहीं ॥
नीतिनिपुन जिन्ह कइ जग लीका ❀ घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका ॥
गुन तुम्हार समुझइ निजदोसा ❀ जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥
रामभगत प्रिय लागहिं जेही ❀ तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जाति पाँति धन धरम बड़ाई ❀ प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
सब तजि तुम्हहिं रहइ लउ लाई ❀ तेहि के हृदय रहहु रघुराई ॥
सरग नरक अपबरग समाना ❀ जहँ तहँ देख धरे धनुबाना ॥
करम-बचन-मन राउर चेरा ❀ राम करहु तेहि के उर डेरा ॥

दोहा--जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेह ।
बसहु निरंतर तासु मन, सो राउर निज गेह ॥१३१॥

एहि विधि मुनिवर भवन देखाये ❀ बचन सप्रेम राममन भाये ॥
कह मुनि सुनहु भानु-कुल-नायक ❀ आस्रमु कहउँ समय सुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू ❀ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
सैल सुहावन कानन चारू ❀ करि-केहरि-मृग-बिहँग बिहारू ॥
नदी पुनीत पुरान बखानी ❀ अत्रिप्रिया निज-तप-बल आनी ॥
सुरसरिधार नाउँ मंदाकिनि ❀ जा सब-पातक-पोतक-डाकिनि ॥
अत्रि-आदि-मुनि-बर बहु बसहीं ❀ करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥
चलहु सफल स्रम सब कर करहू ❀ राम देहु गौरव गिरिबरहू ॥

दोहा--चित्र-कूट-महिमा अमित, कही महामुनि गाइ ।
आइ नहाये सरित बर, सिय समेत दोउ भाई ॥१३२॥

रघुबर कहेउ लषन भल घाटू ❀ करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥
लषन दीख पय उतर करारा ❀ चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दस दाना ❀ सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी ❀ चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लषन ठाँव देखरावा ❀ थल बिलोकि रघुबर सुख पावा ॥
रमेउ राममन देवन्ह जाना ❀ चले सहित सुरपति परधाना ॥
कोल - किरात - बेष सब आये ❀ रचे परन-तृन--सदन सुहाये ॥
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला ❀ एक ललित लघु एक बिसाला ॥

दोहा--लषन-जानकी-सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत ।
सोह मदन मुनिबेष जनु, रति-रितु-राज-समेत ॥१३३॥

अमरनाग किन्नर दिसि पाला ❀ चित्रकूट आये तेहि काला ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
बरषि सुमन कह देव समाजू ❀ नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाये ❀ हरषित निज-निज-सदन सिधाये ॥
चित्रकूट रघुनंदन छाये ❀ समाचार सुनि सुनि मुनि आये ॥
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा ❀ कीन्ह दंडवत रघु-कुल-चंदा ॥

मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं ❀ सुफल होन हित आसिष देहीं ॥
सिय-सौमित्रि-राम-छबि देखहिं ❀ साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दोहा–जथाजोग सनमानि प्रभु, बिदा किये मुनिबृंद ।
करहिं जोग जप जाग तप, निज आस्रमनि सुछंद ॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई ❀ हरषे जनु नवनिधि घर आई ॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना ❀ चले रंक जनु लूटन सोना ॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता ❀ अपर तिन्हहिं पूछहिं मगु जाता ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई ❀ आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े ❀ पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने ❀ कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी ❀ बचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥

दोहा–अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाय ।
भाग हमारे आगमनु, राउर कोसलराय ॥१३५॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा ❀ जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम्ह धारा ॥
धन्य बिहँग मृग काननचारी ❀ सफल जनम भये तुम्हहिं निहारी ॥
हम सब धन्य सहित परिवारा ❀ दीख दरस भरि नयन तुम्हारा ॥
कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी ❀ इहाँ सकल रितु रहब सुखारी ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई ❀ करि-केहरि-अहि-बाघ बराई ॥
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा ❀ सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
जहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब ❀ सर निरझर भल ठाउँ देखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दोहा–बेदबचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुनाअयन ।
बचन किरातन्ह के सुनत, जिमि पितु बालक बयन ॥१३६॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा ❀ जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
राम सकल-बन-चर तब तोषे ❀ कहि मृदुबचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किये सिरु नाइ सिधाये ❀ प्रभुगुन कहत सुनत घर आये ॥
एहि बिधि सिय समेत दोउ भाई ❀ बसहिं बिपिन सुर-मुनि-सुख-दाई ॥

जब तें आइ रहे रघुनायक ❀ तब तें भयेउ बनु मंगल-दायक ॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना ❀ मंजु-बलित-बर-बेलि-बिताना ॥
सुर-तरु-सरिस सुभाय सुहाये ❀ मनहुँ बिबुधबन परिहरि आये ॥
गुंज मंजुतर मधुकर स्रेनी ❀ त्रिविध बयारि बहइ सुखदेनी ॥

दोहा--नीलकंठ कलकंठ सुक, चातक चक्क चकोर ।
भाँति भाँति बोलहिं बिहँग, स्रवनसुखद चितचोर ॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा ❀ बिगत बैर बिचरहिं सब संगा ॥
फिरत अहेर रामछबि देखी ❀ होहिं मुदित मृगबृंद बिसेखी ॥
बिबुधबिपिन जहँ लगि जग माहीं ❀ देखि रामबन सकल सिहाहीं ॥
सुरसरि सरसइ दिन-कर-कन्या ❀ मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सर सिंधु नदी नद नाना ❀ मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू ❀ मंदर मेरु सकल-सुर-बासू ॥
सैल हिमाचल आदिक जेते ❀ चित्रकूटजस गावहिं तेते ॥
बिंध मुदित मन सुख न समाई ❀ स्रम बिनु बिपुल बड़ाई पाई ॥

दोहा–चित्रकूट के बिहँग मृग, बेलि बिटप तृन जाति ।
पुन्यपुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिनराति ॥१३८॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी ❀ पाइ जनम फल होहि बिसोकी ॥
परसि चरनरज अचर सुखारी ❀ भये परमपद के अधिकारी ॥
सो बन सैल सुभाय सुहावन ❀ मंगलमय अति-पावन-पावन ॥
महिमा कहिय कवनि बिधि तासू ❀ सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
पयपयोधि तजि अवध बिहाई ❀ जहँ सिय-लषन-राम रहे आई ॥
कहि न सकहिं सुखमा जसि कानन ❀ जौं सत सहस होहिं सहसानन ॥
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं ❀ डाबरकमठ कि मंदर लेहीं ॥
सेवहिं लषन करम-मन-बानी ❀ जाइ न सील सनेह बखानी ॥

दोहा–छिनु छिनु लखि सिय-राम-पद, जानि आपु परनेह ।
करत न सपनेहुँ लषन चित, बंधु-मातु-पितु-गेह ॥१३९॥

रामसंग सिय रहति सुखारी ❀ पुर-परिजन-गृह-सुरति बिसारी ॥
छिनु छिनु पिय-बिधु-बदन निहारी ❀ प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी ॥

नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी ❀ हरषित रहति दिवस जिमि कोकी ॥
सियमनु रामचरन अनुरागा ❀ अवध-सहस-सम बनु प्रियलागा ॥
परनकुटीप्रिय प्रियतम संगा ❀ प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा ॥
सासु-ससुर-सम मुनितिय मुनिवर ❀ असन अमिय सम कंद मूलफर ॥
नाथ साथ साथरी सुहाई ❀ मयन - सयन - सय - सम सुखदाई ॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू ❀ तेहि कि मोहि सक बिषयबिलासू ॥

दोहा–सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृन सम बिषय बिलासु ।
रामप्रिया जग जननि सिय, कछु न आचरजु तासु ॥१४०॥

सीय लषन जेहि बिधि सुख लहहीं ❀ सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं ॥
कहहिं पुरातनि कथा कहानी ❀ सुनहिं लखन सिय अतिसुख मानी ॥
जब जब राम अवध सुधि करहीं ❀ तब तब बारि बिलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई ❀ भरत - सनेह - सील - सेवकाई ॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी ❀ धीरज धरहिं कुसमउ बिचारी ॥
लखि सिय लषनु बिकल होइ जाहीं ❀ जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं ॥
प्रिया-बंधु-गति लखि रघुनंदन ❀ धीर कृपाल भगत-उर-चंदन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता ❀ सुनि सुख लहहिं लषनु अरु सीता ॥

दोहा–राम-लषन-सीता-सहित, सोहत परननिकेत ।
जिमि बासव बस अमरपुर, सची-जयंत-समेत ॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सियलषनहिं कैसें ❀ पलक बिलोचनगोलक जैसें ॥
सेवहिं लषन सीय रघुबीरहिं ❀ जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहिं ॥
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी ❀ खग-मृग-सुर - तापस - हित-कारी ॥
कहेउँ राम-बन-गवँन सुहावा ❀ सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई ❀ सचिवसहित रथ देखेसि आई ॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू ❀ कहि न जाइ जस भयउ बिषादू ॥
राम राम सिय लषन पुकारी ❀ परेउ धरनितल ब्याकुल भारी ॥
देखि दखिनदिसि हय हिहिनाहीं ❀ जनु बिनु पंख बिहँग अकुलाहीं ॥

दोहा–नहिं तृन चरहिं न पियहिं जल, मोचहिं लोचनबारि ।
ब्याकुल भयउ निषाद सब, रघु-बर-बाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरज तब कहइ निषादू ❀ अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू ॥
तुम्ह पंडित परमारथज्ञाता ❀ धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता ॥
बिबिधकथा कहि कहि मृदुबानी ❀ रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
सोकसिथिल रथु सकइ न हाँकी ❀ रघु-बर-बिरह-पीर उर बाँकी ॥
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे ❀ बनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अढ़ुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे ❀ राम बियोग बिकल दुख तीछे ॥
जो कह रामुलषनु बैदेही ❀ हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
बाजि बिरहगति कहि किमि जाती ❀ बिनुमनिफनिक बिकलजेहि भाँती ॥

दोहा—भयउ निषाद बिषादबस, देखत सचिवतुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथीसंग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरे पहुँचाई ❀ बिरहबिषाद बरनि नहिं जाई ॥
चले अवध लेइ रथहि निषादा ❀ होहिं छनहिं छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमंत्र बिकल दुखदीना ❀ धिग जीवन रघु-बीर-बिहीना ॥
रहिहि न अंतहु अधमुसरीरू ❀ जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ॥
भये अजस-अघ-भाजन प्राना ❀ कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मंद मन अवसर चूका ❀ अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मींजि हाथ सिर धुनि पछिताई ❀ मनहुँ कृपिन धनरासि गवाँई ॥
बिरद बाँधि बरबीरु कहाई ❀ चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दोहा--बिप्र बिबेकी बेदबिद, संमत साधु सुजाति ।
जिमि धोखे मदपान कर, सचिब सोच तेहि भाँति ॥१४४॥

जिमि कुलीनतिय साधु सयानी ❀ पतिदेवता करम - मन - बानी ॥
रहै करमबस परिहरि नाहू ❀ सचिवहृदय तिमि दारुनदाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी ❀ सुनइ न स्रवन बिकल मति भोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुह लाटी ❀ जिउ न जाइ उर अवधिकपाटी ॥
बिबरन भयउ न जाइ निहारी ❀ मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी ❀ जम-पुर-पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदय पछिताई ❀ अवध काह मैं देखब जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई ❀ सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दोहा--धाइ पूछिहहिं मोहिं जब, बिकल नगर नरनारि ।
उतरु देब मैं सबहिं तब, हृदय बज्र बैठारि ॥१४५॥

पुछिहहिं दीन दुखित जब माता ❀ कहब काह मैं तिन्हहिं बिधाता ॥
पूछिहि जबहिं लषनमहतारी ❀ कहिहौं कवन सँदेस सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई ❀ सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥
पूछत उतर देब मैं तेही ❀ गे बन राम लषनु बैदेही ॥
जोइ पूछिहि तेहि ऊतरु देबा ❀ जाइ अवध अब यह सुख लेबा ॥
पुछिहहि जबहिं राउ दुखदीना ❀ जिवनु जासु रघुनाथअधीना ॥
देइहौं उतरु कवन मुँह लाई ❀ आयउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥
सुनत लषन - सिय - राम-सँदेसू ❀ तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दोहा--हृदय न बिदरेउ पंक जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर ।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि, यह जातना सरीर ॥१४६॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा ❀ तमसातीर तुरत रथ आवा ॥
बिदा किये करि बिनय निषादा ❀ फिरे पाँय परि बिकल बिषादा ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई ❀ जनु मारेसि गुरु-बाम्हन-गाई ॥
बैठि बिटपतर दिवसु गवाँवा ❀ साँझ समय तब अवसर पावा ॥
अवधप्रबेस कीन्ह अँधियारे ❀ पैठ भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये ❀ भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथ पहिचानि बिकल लखि घोरे ❀ गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर-नारि-नर ब्याकुल कैसें ❀ निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दोहा--सचिवआगमनु सुनत सब, बिकल भयउ रनिवासु ।
भवनु भयंकरु लाग तेहि, मानहु प्रेतनिवासु ॥१४७॥

अतिआरति सब पूछहिं रानी ❀ उतरु न आव बिकल भइ बानी ॥
सुनइँ न स्रवन नयन नहिं सूझा ❀ कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई ❀ कौसल्यागृह गईं लेवाई ॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा ❀ अमियरहित जनु चंद बिराजा ॥
आसन - सयन-बिभूषन - हीना ❀ परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसास सोच एहि भाँती ❀ सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥

लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती ❀ जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
राम राम कह रामसनेही ❀ पुनि कह राम लषन बैदेही ॥

दोहा—देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेउ दंड प्रनामु ।
सुनत उठेउ व्याकुल नृपति, कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्र लीन्ह उर लाई ❀ बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी ❀ पूछत राउ नयन भरि बारी ॥
रामकुसल कहु सखा सनेही ❀ कहँ रघुनाथ लषन बैदेही ॥
आने फेरि कि बनहिं सिधाये ❀ सुनत सचिवलोचन जल छाये ॥
सोक बिकल पुनि पूछ नरेसू ❀ कह सिय–राम–लषन–संदेसू ॥
राम–रूप–गुन–सील–सुभाऊ ❀ सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राज सुनाइ दीन्ह बनबासू ❀ सुनि मन भयेउ न हरष हरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना ❀ को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दोहा—सखा रामु-सिय-लषनु जहँ, तहाँ मोहि पहुँचाउ ।
॥ नाहिं त चाहत चलन अब, प्रान कहौं सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ ❀ प्रियतम-सुअन-सँदेस सुनाऊ ॥
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ ❀ रामु-लषन-सिय नयन देखाऊ ॥
सचिव धीर धरि कह मृदुबानी ❀ महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी ॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा ❀ साधुसमाज सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा ❀ हानि लाभ प्रियमिलन बियोगा ॥
काल करम बस होहिं गोसाईं ❀ बरबस राति दिवस की नाईं ॥
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं ❀ दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं ॥
धीरज धरहु बिबेक बिचारी ❀ छाड़िय सोच सकल हितकारी ॥

दोहा—प्रथम बासु तमसा भयेउ, दूसरि सुरसरि तीर ।
॥ न्हाइ रहे जलपान करि, सियसमेत दोउ बीर ॥१५०॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ❀ सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥
होत प्रात बटछीर मँगावा ❀ जटामुकुट निज सीस बनावा ॥
रामसखा तब नाव मँगाई ❀ प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लषन बानधनु धरे बनाई ❀ आपु चढ़े प्रभुआयसु पाई ॥

विकल बिलोकि मोहि रघुबीरा ❀ बोले मधुरबचन धरि धीरा ॥
तात प्रनामु तात सन कहेहू ❀ बार बार पदपंकज गहेहू ॥
करबि पाय परि बिनय बहोरी ❀ तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
बनमग मंगल कुसल हमारे ❀ कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे ॥
छन्द—तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोषि परि परि पाय करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ जतन जेहि कुसली रहहिं कोसलधनी ॥

सोरठा—गुरु सन कहब सँदेसु, बार बार पदपदुम गहि ।
करब सोइ उपदेसु, जेहि न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी ❀ तात सुनायेहु बिनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❀ जा तें रह नरनाह सुखारी ॥
कहब सँदेसु भरत के आये ❀ नीति न तजिइ राजपदु पाये ॥
पालेहु प्रजहि करम - मन-बानी ❀ सेयेहु मातु सकल सम जानी ॥
अउर निबाहेहु भायप भाई ❀ करि पितु - मातु-सुजन-सेवकाई ॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ ❀ सोच मोर जेहि करइ न काऊ ॥
लषन कहे कछु बचन कठोरा ❀ बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
बार बार निज सपथ देवाई ❀ कहबि न तात लषनलरिकाई ॥

दोहा-कहि प्रनामु कछु कहन लिय, सिय भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ॥१५२॥

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई ❀ केवट पारहिं नाव चलाई ॥
रघु-कुल-तिलक चले एहि भाँती ❀ देखेउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहउँ कलेसू ❀ जियत फिरउँ लेइ रामसँदेसू ॥
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ ❀ हानि गलानि सोच बस भयऊ ॥
सूत बचन सुनतहि नरनाहू ❀ परेउ धरनि उर दारुनदाहू ॥
तलफत बिषम मोह मन मापा ❀ माँजा मनहुँ मीन कहँ ब्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी ❀ महाबिपति किमि जाइ बखानी ॥
सुनि बिलाप दुखहू दुख लागा ❀ धीरजहू कर धीरज भागा ॥

दोहा—भयेउ कोलाहलु अवध अति, सुनि नृप राउर सोरु।
बिपुल बिहँगबन परेउ निसि, मानहुँ कुलिस कठोरु॥१५३॥

प्रान कंठगत भयेउ भुआलू ❀ मनिबिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू॥
इंद्री सकल बिकल भईं भारी ❀ जनु सर सरसिज बन बिनु बारी॥
कौसल्या नृप दीख मलाना ❀ रवि-कुल-रबि अथयेउ जिय जाना॥
उर धरि धीर राममहतारी ❀ बोली बचन समय अनुसारी॥
नाथ समुझि मन करिय बिचारू ❀ राम-बियोग-पयोधि अपारू॥
करनधार तुम्ह अवधजहाजू ❀ चढ़ेउ सकल प्रिय-पथिक-समाजू॥
धीरजु धरिय त पाइय पारू ❀ नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू॥
जौं जिय धरिय बिनय पिय मोरी ❀ रामु लषनु सिय मिलहिं बहोरी॥

दोहा—प्रिया बचन मृदु सुनत नृप, चितयेउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत सीतलबारि॥१५४॥

धरि धीरज उठि बैठि भुआलू ❀ कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू॥
कहाँ लषन कहँ रामसनेही ❀ कहँ प्रिय-पुत्र-बधू बैदेही॥
बिलपत राउ बिकल बहुभाँती ❀ भइ जुगसरिस सिराति न राती॥
तापस-अंध-साप सुधि आई ❀ कौसल्यहि सब कथा सुनाई॥
भयउ बिकल बरनत इतिहासा ❀ रामरहित धिग जीवनआसा॥
सो तनु राखि करब मैं काहा ❀ जेहि न प्रेमपनु मोर निबाहा॥
हा रघुनंदन प्रानपिरीते ❀ तुम्ह बिनु जियत बहुत दिन बीते॥
हा जानकी लषन हा रघुबर ❀ हा पितु-हित-चित-चातक-जलधर॥

दोहा—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबरबिरह, राउ गयेउ सुरधाम॥१५५॥

जियन मरन फल दसरथ पावा ❀ अंड अनेक अमल जसु छावा॥
जियत राम-बिधु-बदन निहारा ❀ रामबिरह करि मरनु सवाँरा॥
सोकबिकल सब रोवहिं रानी ❀ रूप सीलु बलु तेजु बखानी॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा ❀ परहिं भूमितल बारहिं बारा॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी ❀ घर घर रुदन करहिं पुरबासी॥
अथयेउ आजु भानु-कुल-भानू ❀ धरमअवधि गुन-रूप-निधानू॥

गारी सकल कैकइहि देहीं ❀ नयनबिहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी ❀ आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥

दोहा—तब बसिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास ।
सोक निवारेउ सबहि कर, निज बिग्यान प्रकास ॥१५६॥

तेल नाव भरि नृपतनु राखा ❀ दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा ॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू ❀ नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
एतनेइ कहेउ भरत सन जाई ❀ गुरु बोलाइ पठयेउ दोउ भाई ॥
सुनि मुनिआयसु धावन धाये ❀ चले बेगि बरबाजि लजाये ॥
अनरथु अवध अरंभेउ जब तें ❀ कुसगुन होहिं भरत कहँ तब तें ॥
देखहिं राति भयानकसपना ❀ जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना ❀ सिव अभिषेक करहिं बिधिनाना ॥
माँगहिं हृदय महेस मनाई ❀ कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दोहा—एहि बिधि सोचत भरत मन, धावन पहुँचे आइ ।
गुरुअनुसासन स्रवन सुनि, चले गनेसु मनाइ ॥१५७॥

चले समीरबेग हय हाँके ❀ नाँघत सरित सैल बन बाँके ॥
हृदय सोचु बड़ कछु न सोहाई ❀ अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष बरषसम जाई ❀ एहि बिधि भरत नगर नियराई ॥
असगुन होहिं नगर पैठारा ❀ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर सियार बोलहिं प्रतिकूला ❀ सुनि सुनि होइ भरतमन सूला ॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा ❀ नगर बिसेषि भयावनु लागा ॥
खग मृग हय गज जाहिं न जोयें ❀ राम-बियोग-कुरोग बिगोयें ॥
नगर-नारि-नर निपट दुखारी ❀ मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥

दोहा—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु, गवहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरतकुसल पूछि न सकहिं, भयबिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाहि निहारी ❀ जनु पुर दह दिसि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि ❀ हरषी रबि-कुल-जलरुह-चंदिनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई ❀ द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
भरत दुखित परिवारु निहारा ❀ मानहुँ तुहिन बनजबनु मारा ॥

कैकेई हरषित एहि भाँती ❀ मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
सुतहि ससोच देखि मन मारे ❀ पूछति नैहर कुसल हमारे ॥
सकल कुसल कहि भरत सुनाई ❀ पूछी निज-कुल-कुसल भलाई ॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता ❀ कहँ सिय रामु लषन प्रियभ्राता ॥

दोहा--सुनि सुतवचन सनेहमय, कपटनीर भरि नैन ।
भरत-स्रवन-मन-सूल सम, पापिनि बोली बैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सवाँरी ❀ भइ मंथरा सहाय बिचारी ॥
कछुक काज विधि बीच बिगारेउ ❀ भूपति सुर-पति-पुर पगु धारेउ ॥
सुनत भरतु भये बिबस बिषादा ❀ जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी ❀ परे भूमितल ब्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोही ❀ तात न रामहिं सौंपेहु मोही ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी ❀ कहु पितुमरन हेतु महतारी ॥
सुनि सुतबचन कहति कैकेई ❀ मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥
आदिहु तें सब आपनि करनी ❀ कुटिल कठोर मुदितमन बरनी ॥

दोहा--भरतहि बिसरेउ पितुमरन, सुनत राम-बन-गौनु ।
हेतु अपनपउ जानिजिय, थकित रहे धरि मौनु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति ❀ मनहुँ जरे पर लोन लगावति ॥
तात राउ नहिं सोचइ जोगू ❀ बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥
जीवत सकल जनम फल पाए ❀ अन्त अमर-पति-सदन सिधाए ॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू ❀ सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू ❀ पाकें छत जनु लाग अँगारू ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा ❀ पापिनि सबहि भाँति कुल नासा
जौं पै कुरुचि रही अति तोही ❀ जनमत काहे न मारे मोही ॥
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा ❀ मीनजियन निति बारि उलीचा ॥

दोहा--हंसबसु दसरथु जनकु, राम लषन से भाइ ।
जननी तूँ जननी भई, विधि सन कछु न बसाइ ॥१६१॥

जबतैं कुमति कुमत जिय ठयऊ ❀ खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
बर माँगत मन भइ नहिं पीरा ❀ गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा ॥

भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ❀ मरनकाल बिधि मति हरि लीन्ही ॥
बिधिहुँ न नारि हृदयगति जानी ❀ सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥
सरल सुसील धरमरत राऊ ❀ सो किमि जानइ तीयसुभाऊ ॥
अस को जीव जंतु जग माहीं ❀ जेहि रघुनाथ प्रान प्रिय नाहीं ॥
भे अति अहित राम तेउ तोही ❀ को तूँ अहसि सत्य कहु मोही ॥
जो हसि सो हसि मुहुँ मसि लाई ❀ आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दोहा–राम-बिरोधी हृदय तें, प्रगट कीन्ह बिधि मोहि ।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहि ॥ १६२॥

सुनि सत्रुघुन मातुकुटिलाई ❀ जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई ❀ बसन बिभूषन बिबिध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लषन-लघु-भाई ❀ बरत अनल घृतआहुति पाई ॥
हुमगि लात तकि कूबर मारा ❀ परि मुँह भरि महि करत पुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू ❀ दलितदसन मुख रुधिरप्रचारू ॥
आह दइअ मैं काह नसावा ❀ करत नीक फल अनइस पावा ॥
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी ❀ लगे घसीटन धरि धरि झोंटी ॥
भरत दयानिधि दीन्हि छुड़ाई ❀ कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दोहा--मलिनबसन बिबरन बिकल, कृस सरीर दुखभारु ।
कनक-कलप-बर-बेलि-बन, मानहुँ हनी तुषारु ॥ १६३॥

भरतहिं देखि मातु उठि धाई ❀ मुरुछित अवनि परी झइँ आई ॥
देखत भरत बिकल भये भारी ❀ परे चरन तनदसा बिसारी ॥
मातु तात कहँ देहि देखाई ❀ कहँ सिय रामु लषनु दोउ भाई ॥
कैकइ कत जनमी जग माँझा ❀ जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥
कुलकलंकु जेहि जनमेउ मोही ❀ अपजसभाजन प्रिय-जन-द्रोही ॥
को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी ❀ गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥
पितु सुरपुर बन रघु-बर-केतू ❀ मैं केवल सब अनरथहेतू ॥
धिग मोहि भयेउँ बेनु-बन-आगी ❀ दुसह - दाह-दुख - दूषन - भागी ॥

दोहा–मातु भरत के बचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचति बारि ॥ १६४॥

सरल सुभाय माय हिय लाये ❀ अतिहित मनहुँ राम फिरि आये ॥
भेंटेउ बहुरि लषन-लघु-भाई ❀ सोक सनेह न हृदय समाई ॥
देखि सुभाउ कहत सब कोई ❀ राममातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे ❀ आँसु पोंछि मृदुबचन उचारे ॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरजु धरहू ❀ कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥
जनि मानहु हिय हानि गलानी ❀ काल-करम-गति अघटित जानी ॥
काहुहि दोस देहु जनि ताता ❀ भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता ॥
जो एतेहु दुख मोहि जियावा ❀ अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥

दोहा--पितुआयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरष न हृदय कछु, पहिरे बलकर चीर ॥१६५॥

मुख प्रसन्न मनु राग न रोषू ❀ सबकर सब बिधि करि परितोषू ॥
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी ❀ रहइ न राम - चरन - अनुरागी ॥
सुनतहि लषन चले उठि साथा ❀ रहहिं न जतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही सिरु नाई ❀ चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
रामु लषनु सिय बनहिं सिधाये ❀ गइउँ न संग न प्रान पठाये ॥
एहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगे ❀ तउ न तजा तनु प्रान अभागे ॥
मोहि न लाज निज देहु निहारी ❀ रामसरिस सुत मैं महतारी ॥
जिअइ मरइ भल भूपति जाना ❀ मोर हृदय सत-कुलिस-समाना ॥

दोहा–कौसल्या के बचन सुनि, भरतसहित रनिवासु ।
ब्याकुल बिलपत राजगृह, मानहुँ सोकनिवासु ॥१६६॥

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई ❀ कौसल्या लिये हृदय लगाई ॥
भाँति अनेक भरत समुझाये ❀ कहि बिबेकमय बचन सुनाये ॥
भरतहु मातु सकल समुझाई ❀ कहि पुरान स्रुति कथा सुहाई ॥
छलबिहीन सुचि सरल सुबानी ❀ बोले भरत जोरि जुगपानी ॥
जे अघ मातु-पिता-सुत मारे ❀ गाइगोठ महि - सुर - पुर जारे ॥
जे अघ तिय-बालक-बध कीन्हे ❀ मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उतपातक अहहीं ❀ करम-बचन-मन-भव कबि कहहीं ॥
ते पातक मोहि होहु बिधाता ❀ जौं एहुँ होइ मोर मत माता ॥

दोहा--जे परिहरि हरि-हर-चरन, भजहिं भूतगन घोर ।
तिन्ह कइ मोहि देउ बिधि, जौं जननी मत मोर ॥१६७॥

बेचहिं बेद धरम दुहि लेहीं ❀ पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी ❀ बेदबिदूषक बिस्वबिरोधी ॥
लोभी लंपट लोलुपचारा ❀ जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
पावउँ मैं तिन्ह कै गति घोरा ❀ जौं जननी एहु संमत मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे ❀ परमारथपथ बिमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई ❀ जिन्हहिं न हरि-हर-सुजसु सुहाई ॥
तजि स्रुतिपंथु बामपथ चलहीं ❀ बंचक बिरचि बेषु जगु छलहीं ॥
तिन्ह कइ गति मोहि संकर देऊ ❀ जननी जौं एहु जानउँ भेऊ ॥

अथ क्षेपक

छंद—मन बचन कर्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातुरी ।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
अस कहत लोचन बहत जल, तनु पुलक नख खेलत मही ।
हियलाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभु-पद-रत सही ॥

इति क्षेपक

दोहा--मातु भरत के बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय ।
कहति रामप्रिय तात तुम्ह, सदा बचन मन काय ॥१६८॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे ❀ तुम्ह रघुपतिहि प्रान तें प्यारे ॥
बिधु बिष चवइ स्रवइ हिमु आगी ❀ होइ बारिचर बारिबिरागी ॥
भये ज्ञान वरु मिटइ न मोहू ❀ तुम्ह रामहिं प्रतिकूल न होहू ।
मत तुम्हार एहु जो जग कहहीं ❀ सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥
अस कहि मातु भरत हिय लाये ❀ थनपय स्रवहिं नयनजल छाये ॥
करत बिलाप बहुत एहि भाँती ❀ बैठेहिं बीति गई सब राती ॥
बामदेव बसिष्ठ तब आये ❀ सचिव महाजन सकल बोलाये ॥
मुनि बहुभाँति भरत उपदेसे ❀ कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥

दोहा–तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरु बचन सुनि, करन कहेउ सब काजु ॥१६९॥

नृपतनु बेद बिहित अन्हवावा ❀ परमबिचित्र बिमान बनावा ॥
गहि पग भरत मातु सब राखी ❀ रहीं राम दरसन अभिलाखी ॥
चंदन-अगर-भार बहु आये ❀ अमित अनेक सुगंध सुहाये ॥
सरजुतीर रचि चिता बनाई ❀ जनु सुर-पुर-सोपान सुहाई ॥
एहि विधि दाहक्रिया सब कीन्ही ❀ बिधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना ❀ कीन्ह भरत दसगात बिधाना ॥
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा ❀ तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा
भये बिसुद्ध दिये सब दाना ❀ धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥

दोहा--सिंहासन भूषन बसन, अन्न धरनि धन धाम ।
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितुहित भरत कीन्हि जसि करनी ❀ सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ॥
सुदिन सोधि मुनिवर तब आये ❀ सचिव महाजन सकल बोलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई ❀ पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे ❀ नीति-धरम-मय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी ❀ कइकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥
भूप धरमब्रत सत्य सराहा ❀ जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा ॥
कहत राम-गुन-सील-सुभाऊ ❀ सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लषन-सिय-प्रीति बखानी ❀ सोक सनेह मगन मुनिज्ञानी ॥

दोहा--सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु, जस अपजस बिधि हाथ ॥१७१॥

अस बिचारि केहि देइय दोषू ❀ ब्यरथ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात बिचार करहु मन माहीं ❀ सोचजोग दसरथ नृप नाहीं ॥
सोचिय बिप्र जो बेदबिहीना ❀ तजि निज धरम बिषय लयलीना ॥
सोचिय नृपति जो नीति न जाना ❀ जेहि न प्रजा प्रिय प्रानसमाना ॥
सोचिय बयसु कृपिन धनवानू ❀ जो न अतिथिसिवभगतिसुजानू ॥
सोचिय सूद्र बिप्र अवमानी ❀ मुखर मानप्रिय ज्ञानगुमानी ॥
सोचिय पुनि पतिबंचक नारी ❀ कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिय बटु निजब्रत परिहरई ❀ जो नहिं गुरुआयसु अनुसरई ॥

दोहा--सोचिय गृही जो मोहबस, करइ करमपथ त्याग।
सोचिय जती प्रपंचरत, बिगत बिबेक बिराग ॥१७२॥

बैषानस सोइ सोचन जोगू ❀ तप बिहाइ जेहि भावइ भोगू ॥
सोचिय पिसुन अकारनक्रोधी ❀ जननि-जनक-गुरु-बंधु-बिरोधी ॥
सबबिधि सोचिय परअपकारी ❀ निज तनुपोषक निरदय भारी ॥
सोचनीय सबही बिधि सोई ❀ जो न छाडि छल हरिजन होई ॥
सोचनीय नहिं कोसलराऊ ❀ भवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
भयेउ न अहइ न अब होनिहारा ❀ भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
बिधि हरि हर सुरपति दिसिनाथा ❀ बरनहिं सब दसरथ-गुन-गाथा ॥

दोहा--कहहु तात केहि भाँति कोउ, करिहि बड़ाई तासु।
रामलषन तुम्ह शत्रुहन, सरिस सुअन सुचि जासु॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी ❀ बादि बिषादु करिय तेहि लागी ॥
एहु सुनि समुझि सोच परिहरहू ❀ सिर धरि राजरजायसु करहू ॥
राय राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा ❀ पिताबचन फुर चाहिय कीन्हा ॥
तजे रामु जेहि बचनहि लागी ❀ तनु परिहरेउ रामबिरहागी ॥
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ❀ करहु तात पितुबचन प्रमाना ॥
करहु सीस धरि भूपरजाई ❀ हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥
परसुराम पितुअग्या राखी ❀ मारी मातु लोग सब साखी ॥
तनय जजातिहि जौबन दयऊ ❀ पितुअग्या अघ अजस न भयऊ ॥

दोहा--अनुचित उचित बिचारु तजि, जे पालहिं पितु बयन।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहिं अमरपति अयन॥१७४॥

अवसि नरेस बचन फुर करहू ❀ पालहु प्रजा सोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ❀ तुम्ह कहुँ सुकृत सुजसु नहिं दोषू ॥
बेदबिहित संमत सबही का ❀ जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥
करहु राज परिहरहु गलानी ❀ मानहु मोर बचन हित जानी ॥
सुनि सुख लहब रामबैदेहीं ❀ अनुचित कहब न पंडित केहीं ॥
कौसल्यादि सकल महतारी ❀ तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ॥
मरम तुम्हार राम कर जानिहि ❀ सो सब बिधि तुम्ह सनभल मानिहि॥

सौंपेहु राज राम के आये ❀ सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥

दोहा--कीजिय गुरुआयसु अवसि, कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आये उचित जस, तस तब करब बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरज कहई ❀ पूत पथ्य गुरुआयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हित मानी ❀ तजिय विषादु कालगति जानी ॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❀ तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा ❀ तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा ॥
लखि विधि बाम कालकठिनाई ❀ धीरज धरहु मातु बलि जाई ॥
सिर धरि गुरुआयसु अनुसरहू ❀ प्रजा पालि पुर-जन-दुख हरहू ॥
गुरु के बचन सचिव अभिनंदनु ❀ सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी ❀ सील - सनेह - सरल - रस सानी ॥

छंद--सानी सरलरस मातुबानी सुनि भरत व्याकुल भये ।
लोचनसरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये ॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहजसनेह की ॥

सोरठा--भरतु कमलकर जोरि, धीर-धुरं-धर धीर धरि ।
बचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहि ॥१७६॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुरु नीका ❀ प्रजा सचिव संमत सबही का ॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा ❀ अवसि सीस धरि चाहैं कीन्हा ॥
गुरु-पितु - मातु - स्वामि- हित-बानी ❀ सुनि मन मुदित करिय भलि जानी॥
उचित कि अनुचित किये बिचारू ❀ धरमु जाइ सिर पातकभारू ॥
तुम्ह तउ देहु सरल सिख सोई ❀ जो आचरत मोर भल होई ॥
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें ❀ तदपि होत परितोषु न जी कें ॥
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू ❀ मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ॥
उतरु देउँ छमब अपराधू ❀ दुखित-दोष-गुन गनहिं न साधू ॥

दोहा--पितु सुरपुर सिय राम बन, करन कहहु मोहि राजु ।
एहि ते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सिय-पति-सेवकाई ❀ सो हरि लीन्ह मातुकुटिलाई ॥

मैं अनुमानि दीखि मन माहीं ❀ आन उपाय मोर हित नाहीं ॥
सोकसमाजु राजु केहि लेखें ❀ लषन-राम-सिय-पद बिनु देखें ॥
बादि बसन बिनु भूषन भारू ❀ बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू ॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा ❀ बिनु हरिभगति जाय जप जोगा ॥
जाय जीव बिनु देह सुहाई ❀ बादि मोर सबु बिनु रघुराई ॥
जाउँ राम पहिं आयसु देहू ❀ एकहि आँक मोर हित एहू ॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहू ❀ सोउ सनेह जड़ताबस कहहू ॥

दोहा--कैकेइसुअन कुटिल मति, रामबिमुख गतलाज ।
तुम्ह चाहत सुख मोहबस, मोहि से अधम के राज ॥१७८॥

कहौं साँच सब सुनि पतियाहू ❀ चाहिय धरमसील नरनाहू ॥
मोहि राजु हठि देइहहु जबहीं ❀ रसा रसातल जाइहि तबहीं ॥
मोहि समान को पापनिवासू ❀ जेहि लगि सीयराम बनबासू ॥
राय राम कहुँ काननु दीन्हा ❀ बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
मैं सठ सब अनरथ कर हेतू ❀ बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू ❀ रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत बिषयरस रूखे ❀ लोलुप भूमिभोग के भूखे ॥
कहँ लगि कहौं हृदयकठिनाई ❀ निदरि कुलिसु जेहि लही बड़ाई ॥

दोहा--कारन तें कारज कठिन, होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि तें उपल तें, लोह कराल कठोर ॥ १७९ ॥

कैकेईभव तनु अनुरागे ❀ पावँर प्रान अघाइ अभागे ॥
जौं प्रियबिरह प्रान प्रिय लागे ❀ देखब सुनब बहुत अब आगे ॥
लषन-राम-सिय कहुँ बनु दीन्हा ❀ पठइ अमरपुर पतिहित कीन्हा ॥
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू ❀ दीन्हेउ प्रजहिं सोकु संतापू ॥
मोहि दीन्ह सुख सुजस सुराजू ❀ कीन्ह कैकई सब कर काजू ॥
एहि तें मोर काह अब नीका ❀ तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥
कैकइजठर जनमि जग माहीं ❀ यह मो कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥
मोरि बात सब बिधिहिं बनाई ❀ प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥

दोहा--ग्रहग्रहीत पुनि बातबस, तेहि पुनि बीछी मार ।

ताहि पियाइय बारुनी, कहहु कवन उपचार ॥ १८० ॥

कैकइसुअन जोगु जग जोई ❀ चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥
दसरथतनय राम - लघु - भाई ❀ दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ाई ॥
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका ❀ रायरजायसु सब कहँ नीका ॥
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही ❀ कहहु सुखेन जथा रुचि जेही ॥
मोहि कु - मातु - समेत बिहाई ❀ कहहु कहिहि के कीन्हि भलाई ॥
मो बिनु को सचराचर माहीं ❀ जेहि सियरामु प्रानप्रिय नाहीं ॥
परमहानि सबु कहँ बड़ लाहू ❀ अदिनु मोर नहिं दूषन काहू ॥
संसय सील प्रेम बस अहहू ❀ सबुइ उचित सबु जो कछु कहहू ॥

दोहा--राममातु सुठि सरलचित, मो पर प्रेम बिसेखि ।
कहइ सुभाय सनेहबस, मोरि दीनता देखि ॥ १८१ ॥

गुरु बिबेकसागर जगु जाना ❀ जिन्हहिं बिस्व कर-बदर-समाना ॥
मो कहँ तिलकसाज सज सोऊ ❀ भये बिधि बिमुख बिमुख सब कोऊ ॥
परिहरि रामसीय जग माहीं ❀ कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥
सो मैं सुनब सहब सुख मानी ❀ अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी ॥
डर न मोहि जग कहहि कि पोचू ❀ परलोकहु कर नाहिंन सोचू ॥
एकइ उर बस दुसह दवारी ❀ मोहि लगि भे सियरामु दुखारी ॥
जीवनलाहु लषन भल पावा ❀ सबु तजि रामचरन मनु लावा ॥
मोर जनम रघुबरबन लागी ❀ झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दोहा--आपनि दारुन दीनता, कहउँ सबहि सिरु नाइ ।
देखे बिनु रघु-नाथ-पद, जिय कै जरनि न जाइ ॥ १८२ ॥

आन उपाउ मोहि नहिं सूझा ❀ को जिय कै रघुबर बिनु बूझा ॥
एकहि आँक इहै मन माहीं ❀ प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
जद्यपि मैं अनभल अपराधी ❀ भइ मोहि कारन सकलउपाधी ॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी ❀ छमि सब करिहहिं कृपा बिसेखी ॥
सील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ ❀ कृपा - सनेह - सदन रघुराऊ ॥
अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा ❀ मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा ॥
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी ❀ आयसु आसिष देहु सुबानी ॥

जेहि सुनि बिनय मोहि जनु जानी ❀ आवहिं बहुरि रामु रजधानी ॥

दोहा--जद्यपि जनम कुमातु तें, मैं सठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहहिं, मोहि रघु-बीर-भरोस ॥१८३॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे ❀ राम - सनेह - सुधा जनु पागे ॥
लोग बियोग-बिषम-बिष दागे ❀ मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर-नर-नारी ❀ सकल सनेह बिकल भये भारी ॥
भरतहिं कहहिं सराहि सराही ❀ राम-प्रेम-मूरति-तनु आही ॥
तात भरत अस काहे न कहहू ❀ प्रान समान रामप्रिय अहहू ॥
जो पावँरु अपनी जड़ताईं ❀ तुम्हहिं सुगाइ मातुकुटिलाई ॥
सो सठ कोटिक-पुरुष-समेता ❀ बसहिं कलपसत नरकनिकेता ॥
अहि-अघ-अवगुन नहिं मनि-गहई ❀ हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥

दोहा--अवसि चलिय बन राम जहँ, भरत मंत्र भल कीन्ह ।
सोकसिंधु बूड़त सबहिं, तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥१८४॥

भा सब के मन मोद न थोरा ❀ जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीकें ❀ भरत प्रान प्रिय भे सबही कें ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई ❀ चले सकल घर बिदा कराई ॥
धन्य भरत जीवनु जगमाहीं ❀ सील सनेह सराहत जाहीं ॥
कहहिं परसपर भा बड़ काजू ❀ सकल चलइ कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी ❀ सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू ❀ को न चहइ जग जीवन लाहू ॥

दोहा--जरउ सो संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ ।
सनमुख होत जो रामपद, करइ न सहस सहाइ ॥१८५॥

घर घर साजहिं बाहन नाना ❀ हरषु हृदय परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू ❀ नगर बाजि गज भवन भँडारू ॥
संपति सब रघुपति कै आही ❀ जौं बिनु जतनु चलौं तजि ताही ॥
तौ परिनाम न मोरि भलाई ❀ पापसिरोमनि साइँदोहाई ॥
करइ स्वामिहित सेवक सोई ❀ दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
अस बिचारि सुचि सेवक बोले ❀ जे सपनेहुँ निजधरमु न डोले ॥

कहि सबु मरमु धरमु भल भाखा ❀ जो जेहि लायक सो तहँ राखा ॥
करि सब जतन राखि रखवारे ❀ राममातु पहिं भरत सिधारे ॥

दोहा--आरत जननी जानि सबु, भरत सनेहसुजान ।
कहेउ बनावन पालकी, सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक्क चक्कि जिमि पुर-नर-नारी ❀ चहत प्रात उर आरत भारी ॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना ❀ भरत बोलाये सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सब तिलकसमाजू ❀ वनहिं देव मुनि रामहिं राजू ॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे ❀ तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥
अरुंधती अरु अगिनिसमाऊ ❀ रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥
बिप्रबृंद चढ़ि वाहन नाना ❀ चले सकल तप-तेज-निधाना ॥
नगर लोग सब सजि सजि नाना ❀ चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी ❀ चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी ॥

दोहा--सौंपि नगर सुचि सेवकनि, सादर सबहिं चलाइ ।
सुमिरि राम-सिय-चरन तब, चले भरत दोउ भाइ ॥१८७॥

राम-दरस-बस सब नरनारी ❀ जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
बन सिय रामु समुझि मन माहीं ❀ सानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे ❀ उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥
जाइ समीप राखि निजडोली ❀ राममातु मृदुबानी बोली ॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी ❀ होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू ❀ सकल सोक कृस नहिं मग जोगू ॥
सिर धरि बचन चरन सिरु नाई ❀ रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई ॥
तमसा प्रथमदिवस करि बासू ❀ दूसर गोमतितीर निवासू ॥

दोहा--पय अहार फल असन एक, निसि भोजन एक लोग ।
करत रामहित नेम ब्रत, परिहरि भूषन भोग ॥१८८॥

सई तीर बसि चले बिहाने ❀ सृंगबेरपुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा ❀ हृदय बिचार करइ सविषादा ॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं ❀ है कछु कपटभाउ मन माहीं ॥
जौं पै जिय न होति कुटिलाई ❀ तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥

जानहिं सानुज रामहिं मारी ❀ करौं अकंटक राज सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी ❀ तब कलंकु अब जीवनहानी ॥
सकल-सुरासुर जुरहिं जुझारा ❀ रामहिं समर न जीतनिहारा ॥
का आचरज भरत अस करहीं ❀ नहिं बिषबेलि अमिय फल फरहीं ॥

दोहा—अस बिचारि गुह ग्याति सन, कहेउ सजग सब होहु।
हथबाँसहु बोरहु तरनि, कीजिय घाटारोहु ॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा ❀ ठाटहु सकल मरइ के ठाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ ❀ जियत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥
समर मरनु पुनि सुर-सरि-तीरा ❀ रामकाज छनभंगु सरीरा ॥
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू ❀ बड़े भाग असि पाइअ मीचू ॥
स्वामिकाज करिहउँ रन रारी ❀ जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥
तजउँ प्रान रघु-नाथ-निहोरे ❀ दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधुसमाज न जा कर लेखा ❀ राम भगत महँ जासु न रेखा ॥
जाय जियत जग सो महि भारू ❀ जननी - जौवन - बिटप - कुठारू ॥

दोहा--बिगतबिषाद निषादपति, सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम माँगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाहु ॥१९०॥

बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ ❀ सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥
भलेहि नाथ सब कहहिं सहरषा ❀ एकहिं एक बढ़ावहिं करषा ॥
चले निषाद जोहारि जोहारी ❀ सूर सकल रन रूचइ रारी ॥
सुमिरि राम - पद - पंकज - पनहीं ❀ भाथा बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं ॥
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं ❀ फरसा बाँस सेल सम करहीं ॥
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े ❀ कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े ॥
निज निज साज समाज बनाई ❀ गुहराउतहिं जोहारे जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने ❀ लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दोहा--भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट, बीर अधीर न होहि ॥१९१॥

रामप्रताप नाथ बल तोरें ❀ करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरें ॥
जीवत पाउ न पाछें धरहीं ❀ रुंड - मुंड - मय मेदिनि करहीं ॥

दीख निषादनाथ भल टोलू ❀ कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
एतना कहत छींक भइ बायें ❀ कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहायें ॥
बूढ़ु एक कह सगुन बिचारी ❀ भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं ❀ सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं ॥
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा ❀ सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा ॥
भरत-सुभाउ-सीलु बिनु बूझे ❀ बड़ि हितहानि जानि बिनु जूझे ॥

दोहा--गहहु घाट भट सिमिटि सब, लेउँ मरम मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति, तब तस करिहउँ आइ ॥१९२॥

लखब सनेहु सुभाय सुहायें ❀ बैर प्रीति नहिं दुरइ दुरायें ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे ❀ कंद मूल फल खग मृग माँगे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने ❀ भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधाये ❀ मंगलमूल सगुन सुभ पाये ॥
देखि दूरि तें कहि निजनामू ❀ कीन्ह मुनीसहि दंडप्रनामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्ह असीसा ❀ भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा ॥
रामसखा सुनि संदनु त्यागा ❀ चले उतरि उमगत अनुरागा ॥
गाउँ जाति गुह नाउँ सुनाई ❀ कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥

दोहा--करत दंडवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लषन सन भेंट भइ, प्रेम न हृदय समाइ ॥१९३॥

भेंटत भरतु ताहि अतिप्रीती ❀ लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥
धन्य धन्य धुनि मंगलमूला ❀ सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला ॥
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा ❀ जासु छाँह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहि भरि अंक राम-लघु-भ्राता ❀ मिलत पुलकपरिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं ❀ तिन्हहिं न पापपुंज समुहाहीं ॥
एहि तौ राम लाइ उर लीन्हा ❀ कुलसमेत जगु पावन कीन्हा ॥
करम-नास-जलु सुरसरि परई ❀ तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥
उलटा नामु जपत जग जाना ❀ बालमीकि भये ब्रह्म समाना ॥

दोहा--स्वपच सबर खस जनम जड़, पावँर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन बिख्यात ॥१९४॥

नहिं अचरजु जुग जुग चलि आई ❀ केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ाई ॥
राम-नाम-महिमा सुर कहहीं ❀ सुनिसुनि अवध लोग सुखु लहहीं ॥
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा ❀ पूछी कुसल सुमंगल खेमा ॥
देखि भरत कर सीलु सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा ❀ भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी ❀ बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुसल मूल पदपंकज पेखी ❀ मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें ❀ सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥

दोहा--समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ।
जो न भजइ रघु-बीर-पद, जग बिधिबंचित सोइ ॥१९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती ❀ लोक बेद बाहेर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबही तें ❀ भयउँ भुवन-भूषन तबही तें ॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई ❀ मिलेउ बहोरि भरत-लघु-भाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुबानी ❀ सादर सकल जोहारीं रानी ॥
जानि लषनसम देहिं असीसा ❀ जियहु सुखी सय लाख बरीसा ॥
निरखि निषाद नगर-नर-नारी ❀ भये सुखी जनु लषन निहारी ॥
कहहिं लहेउ एहि जीवन लाहू ❀ भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निज-भाग-बड़ाई ❀ प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई ॥

दोहा--सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन, बास बनायेन्हि जाइ ॥१९६॥

सृंगबेरपुर भरत दीख जब ❀ भे सनेहबस अंग सिथिल तब ॥
सोहत दिये निषादहि लागू ❀ जनु तनु धरें बिनय अनुरागू ॥
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा ❀ दीख जाइ जग पावनि गंगा ॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू ❀ भा मन मगन मिले जनु रामू ॥
करहिं प्रनाम नगर-नर-नारी ❀ मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
करि मज्जनु माँगहि कर जोरी ❀ रामचंद्रपद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू ❀ सकल-सुखद- सेवक - सुर - धेनू ॥
जोरि पानि बर माँगहु एहू ❀ सीय-राम-पद सहज सनेहू ॥

दोहा–एहि बिधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुसासन पाइ।
मातु नहानीं जानि सब, डेरा चले लेवाइ ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा ❀ भरत सोधु सबही कर लीन्हा ॥
सुरसेवा करि आयसु पाई ❀ राममातु पहिं गे दोउ भाई ॥
चरन चाँपि कहि कहि मृदुबानी ❀ जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहिं सौंपि मातुसेवकाई ❀ आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥
चले सखा कर सों कर जोरें ❀ सिथिल सरीर सनेहु न थोरें ॥
पूछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ ❀ नेकु नयन-मन-जरनि जुड़ाऊ ॥
जहँ सिय रामु लषन निसि सोये ❀ कहत भरे जल लोचनकोये ॥
भरतबचन सुनि भयउ बिषादू ❀ तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू ॥

दोहा--जहँ सिंसुपा पुनीततरु, रघुबर किय बिस्रामु।
अतिसनेह सादर भरत, कीन्हे दंड प्रनामु ॥१९८॥

कुस साथरी निहारि सुहाई ❀ कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई ॥
चरन-रेख-रज आँखिन्ह लाई ❀ बनत न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनकबिंदु दुइ चारिक देखे ❀ राखे सीस सीयसम लेखे ॥
सजल बिलोचन हृदय गलानी ❀ कहत सखा सन बचन सुबानी ॥
श्रीहत सीयबिरह दुतिहीना ❀ जथा अवध नरनारि बिलीना ॥
पिता जनक देउँ पटतर केही ❀ करतल भोग जोग जग जेही ॥
ससुर भानु-कुल-भानु भुआलू ❀ जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥
प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं ❀ जो बड़ होत सो रामबड़ाई ॥

दोहा--पतिदेवता सु-तीय-मनि, सीय साथरी देखि।
बिहरत हृदय न हहरि हर, पबि तें कठिन बिसेखि ॥१९९॥

लालनजोग लखन लघु लोने ❀ भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे ❀ सिय रघुबीरहिं प्रानपियारे ॥
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ ❀ ताति बाउ तन लाग न काऊ ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती ❀ निदरे कोटि कुलिस एहि छाती ॥
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर ❀ रूप सील सुख सब गुनसागर ॥
पुरजन परिजन गुरु पितु माता ❀ रामसुभाउ सबहि सुखदाता ॥

बैरिउ रामबड़ाई करहीं ❀ बोलेनि मिलनि बिनय मन हरहीं ॥
सादर कोटि कोटि सत सेखा ❀ करि न सकहिं प्रभु-गुन-गन-लेखा ॥

दोहा--सुखसरूप रघुबंस-मनि, मंगल-मोद-निधान ।
ते सोवत कुस डासि महि, बिधिगति अतिबलवान॥२००॥

राम सुना दुख कान न काऊ ❀ जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती ❀ जोगवहिं जननि सकल दिनराती ॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी ❀ कंद - मूल - फल - फूल अहारी ॥
धिग कैकेई अमंगलमूला ❀ भइसि प्रान - प्रियतम- प्रतिकूला ॥
मैं धिगधिग अघउदधि अभागी ❀ सब उतपात भयउ जेहि लागी ॥
कुलकलंकु करि सृजेउ बिधाता ❀ साइँद्रोह मोहि कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू ❀ नाथ करिअ कत बादि बिषादू ॥
राम तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहिं ❀ एह निरजोसु दोसु बिधि बामहिं ॥

छंद—बिधि बाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहत हौं सौंहें किये ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥

सोरठा--अंतरजामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिय करिय बिश्रामु, यह बिचारि दृढ़ आनि मन॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा ❀ बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर-नर-नारी ❀ चले बिलोकन आरत भारी ॥
परदखिना करि करहिं प्रनामा ❀ देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं ❀ बामबिधातहि दूषन देहीं ॥
एक सराहहिं भरतसनेहू ❀ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू ॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहि ❀ को कहि सकइ बिमोहबिषादहि ॥
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा ❀ भा भिनुसारु गुदारा लागा ॥
गुरहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई ❀ नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दंड चारि महँ भा सब पारा ❀ उतरि भरत तब सबहि सँभारा ॥

दोहा--प्रातक्रिया करि मातुपद, बंदि गुरुहि सिर नाइ ।

आगे किये निषादगन, दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

कियेउ निषादनाथ अगुआई ❀ मातु पालकीं सकल चलाई ॥
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा ❀ बिप्रन्ह सहित गवनु गुरु कीन्हा ॥
आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रनामू ❀ सुमिरे लषनसहित सियरामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाये ❀ कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ❀ होइय नाथ अस्व असवारा ॥
रामु पयादेहि पाय सिधाये ❀ हम कहँ रथ गज बाजि बनाये ॥
सिरभर जाउँ उचित अस मोरा ❀ सब तें सेवकधरमु कठोरा ॥
देखि भरतगति सुनि मृदुबानी ❀ सब सेवकगन गरहिं गलानी ॥

दोहा--भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेसु प्रयाग ।
कहत राम सिय राम सिय, उमगि उमगि अनुराग ॥२०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैसें ❀ पंकजकोस ओसकन जैसें ॥
भरत पयादेहि आये आजू ❀ भयउ दुखित सुनि सकलसमाजू ॥
खबरि लीन्ह सब लोग नहाये ❀ कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहि आये ॥
सबिधि सितासित नीर नहाने ❀ दिये दान महिसुर सनमाने ॥
देखत स्यामल - धवल - हलोरे ❀ पुलकि सरीर भरत कर जोरे ॥
सकल - काम - प्रद तीरथराऊ ❀ बेदबिदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
मागउँ भीख त्याग निजधरमू ❀ आरत काह न करइ कुकरमू ॥
अस जिय जानि सुजान सुदानी ❀ सफल करहिं जग जाचकबानी ॥

दोहा--अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहहुँ निरबान ।
जनम जनम रति रामपद, यह बरदानु न आन ॥२०४॥

जानहु रामु कुटिल करि मोही ❀ लोग कहउ गुरु - साहिब-द्रोही ॥
सीता - राम - चरन रति मोरें ❀ अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ॥
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ ❀ जाचत जलु पबिपाहन डारउ ॥
चातकु रटनि घटें घटि जाई ❀ बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़इ जिमि दाहें ❀ तिमि प्रिय-तम-पद नेम निबाहें ॥
भरतबचन सुनि माँझ त्रिबेनी ❀ भइ मृदुबानि सु - मंगल - देनी ॥
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू ❀ राम--चरन -- अनुराग--अगाधू ॥

वादि गलानि करहु मन माहीं ❀ तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं ॥

दोहा--तनु पुलकेउ हिय हरषु सुनि, बेनिबचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित बरषहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथ-राज-निवासी ❀ बैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा ❀ भरथ सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
सुनत राम-गुन-ग्राम सुहाये ❀ भरद्वाज मुनिवर पहिं आये ॥
दंडप्रनाम करत मुनि देखे ❀ मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ❀ दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ सिरु बैठे ❀ चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे ॥
मुनि पूछब किछु यह बड़ सोचू ❀ बोले रिषि लखि सीलसँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ❀ विधिकरतब पर किछु न बसाई ॥

दोहा--तुम्ह गलानि जिय जनि करहु, समुझि मातुकरतूति ।
तात कैकइहि दोष नहिं, गई गिरा मतिधूति ॥२०६॥

इहउ कहत भल कहिहि न कोऊ ❀ लोक बेद बुधसंमत दोऊ ॥
तात तुम्हार बिमलजस गाई ❀ पाइहि लोकउ बेद बड़ाई ॥
लोक-बेद-संमत सब कहई ❀ जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥
राउ सत्यब्रत तुम्हहिं बोलाई ❀ देत राज सुख धरम बड़ाई ॥
रामगवन बन अनरथमूला ❀ जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला ॥
सो भावीबस रानि अयानी ❀ करि कुचालि अंतहु पछितानी ॥
तहउँ तुम्हार अलप अपराधू ❀ कहइ सो अधम अयान असाधू ॥
करतेहु राज त तुम्हहिं न दोषू ❀ रामहि होत सुनत संतोषू ॥

दोहा--अब अति कीन्हेहु भरत भल, तुम्हहिं उचित मत एहु ।
सकल-सुमंगल-मूल जग, रघुबरचरन सनेहु ॥२०७॥

सो तुम्हार धन जीवनप्राना ❀ भूरि भाग को तुम्हहिं समाना ॥
यह तुम्हार आचरज न ताता ❀ दसरथसुअन राम-प्रिय-भ्राता ॥
सुनहु भरत रघु-पति-मन माहीं ❀ प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषन राम सीतहिं अतिप्रीती ❀ निसि सब तुम्हहिं सराहत बीती ॥
जाना मरम नहात प्रयागा ❀ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥

तुम्ह पर अस सनेह रघुबर के ❀ सुख जीवन जग जस जड़ नर के ॥
यह न अधिक रघुबीरबड़ाई ❀ प्रनत – कुटुंब – पाल रघुराई ॥
तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू ❀ धरे देह जनु रामसनेहू ॥

दोहा–तुम्ह कहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेसु ।
राम-भगति-रस-सिद्धि हित, भा यह समउ गनेसु॥२०८॥

नवबिधु बिमल तात जसु तोरा ❀ रघुबरकिंकर – कुमुद – चकोरा ॥
उदित सदा अथइहि कबहूँ ना ❀ घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ॥
कोक तिलोक प्रीति अति करिही ❀ प्रभुप्रतापु रबि छबिहि न हरिही ॥
निसि दिन सुखद सदा सब काहू ❀ ग्रसिहि न कैकइकरतब राहू ॥
पूरन रामु – सु – प्रेम – पियूषा ❀ गुरुअवमान दोख नहिं दूषा ॥
रामभगत अब अमिय अघाहू ❀ कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी ❀ सुमिरत सकल-सु-मंगल - खानी ॥
दसरथ-गुन-गन बरनि न जाहीं ❀ अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं ॥

दोहा--जासु सनेह-सकोच-बस, राम प्रगट भये आइ ।
जे हर-हिय-नयननि कबहुँ, निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा ❀ जहँ बस राम प्रेम-मृग-रूपा ॥
तात गलानि करहु जिय जायें ❀ डरहु दरिद्रहि पारस पायें ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं ❀ उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा ❀ लषन-राम - सिय - दरसनु पावा ॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा ❀ सहित प्रयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम्ह जसु जग जयऊ ❀ कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ ॥
सुनि मुनिबचन सभासद हरषे ❀ साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा ❀ सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दोहा--पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रनामु मुनिमंडलिहि, बोले गदगद बैन ॥२१०॥

मुनिसमाज अरु तीरथराजू ❀ साँचिहु सपथ अघाइ अकाजू ॥
एहि थल जौं कुछ कहिय बनाई ❀ एहि सम अधिक न अघ अधमाई ॥
तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभाऊ ❀ उर - अंतरजामी रघुराऊ ॥

मोहि न मातुकरतब कर सोचू ❀ नहिं दुख जिय जग जानहिं पोचू ॥
नाहिं न डरु बिगरहि परलोकू ❀ पितहु मरन कर मोहि न सोकू ॥
सुकृत सुजस भरि भुवन सुहाये ❀ लछिमन-राम-सरिस सुत पाये ॥
रामबिरह तजि तन छनभंगू ❀ भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम-लषन-सिय बिनु पग पनहीं ❀ करि मुनिबेष फिरहिं बन बनहीं ॥

दोहा--अजिन बसन फल असन महि, सयन डासि कुस पात ।
बसि तरुतर नित सहत हिम, आतप बरषा बात ॥२११॥

एहि दुख दाह दहइ दिन छाती ❀ भूख न बासर नींद न राती ॥
एहि कुरोग कर औषध नाहीं ❀ सोधेउँ सकलबिस्व मन माहीं ॥
मातु कुमत बढ़ई अघमूला ❀ तेहिं हमार हित कीन्ह बसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू ❀ गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू ॥
मोहि लगि यह कुठाटु तेहिं ठाटा ❀ घालेसि सब जग बारह बाटा ॥
मिटइ कुजोगु राम फिरि आयें ❀ बसइ अवध नहिं आन उपायें ॥
भरतवचन सुनि मुनि सुख पाई ❀ सबहिं कीन्हि बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि सोचु बिसेखी ❀ सब दुख मिटिहि रामपग देखी ॥

दोहा--करि प्रबोध मुनिबर कहेउ, अतिथि प्रेमप्रिय होहु ।
कंद मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

सुनि मुनिबचन भरतहिय सोचू ❀ भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
जानि गरुइ गुरुगिरा बहोरी ❀ चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा ❀ परमधरम यह नाथ हमारा ॥
भरतवचन मुनिबर मन भाये ❀ सुचि सेवक सिष निकट बोलाये ॥
चाहिय कीन्हि भरतपहुनाई ❀ कंद मूल फल आनहु जाई ॥
भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाये ❀ प्रमुदित निज निज काज सिधाये ॥
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता ❀ तसि पूजा चाहिय जस देवता ॥
सुनि रिधिसिधि अनिमादिक आईं ❀ आयसु होइ सो करहिं गोसाईं ॥

दोहा--रामबिरह ब्याकुल भरत, सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु स्रम, कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनि-बर-बानी ❀ बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी ॥

कहहिं परसपर सिधिसमुदाई ❀ अतुलित अतिथि राम-लघु-भाई ॥
मुनिपद बंदि करिय सोइ आजू ❀ होइ सुखी सब राजसमाजू ॥
अस कहि रचे रुचिर गृह नाना ❀ जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥
भोग बिभूति भूरि भरि राखे ❀ देखत जिन्हहिं अमर अभिलाखे ॥
दासीं दास साजु सब लीन्हे ❀ जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे ॥
सबु समाजु सजि सिधि पल माहीं ❀ जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिये सब केही ❀ सुंदर सुखद जथारुचि जेही ॥

दोहा--बहुरि सपरिजन भरत कहँ, रिषि अस आयसु दीन्ह ।
बिधि-बिसमय-दायकु बिभव, मुनिबर तपबल कीन्ह ॥२१४॥

मुनिप्रभाउ जब भरत बिलोका ❀ सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
सुख समाजु नहिं जाइ बखानी ❀ देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी ॥
आसन सयन सुबसन बिताना ❀ बन बाटिका बिहँग मृग नाना ॥
सुरभि फूल फल अमियसमाना ❀ बिमल जलासय बिबिध बिधाना ॥
असन पान सुचि अमिय अमी से ❀ देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुरसुरभी सुरतरु सबही कें ❀ लखि अभिलाषु सुरेस सची कें ॥
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी ❀ सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगा ❀ देखि हरष बिसमयबस लोगा ॥

दोहा--संपति चकई भरतु चक, मुनिआयसु खेलवार ।
तेहि निसि आस्रमपिंजरा, राखे भा भिनुसार ॥२१५॥

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा ❀ नाइ मुनिहिं सिरु सहित समाजा ॥
रिषिआयसु असीस सिर राखी ❀ करि दंडवत बिनय बहु भाखी ॥
पथ-गति-कुसल साथ सब लीन्हे ❀ चले चित्रकूटहि चितु दीन्हे ॥
रामसखा कर दीन्हे लागू ❀ चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
नहिं पदत्रान सीस नहिं छाया ❀ पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया ॥
लषन - राम - सिय - पंथ - कहानी ❀ पूछत सखहि कहत मृदुबानी ॥
राम - बास - थल - बिटप बिलोकें ❀ उरअनुराग रहत नहिं रोकें ॥
देखि दसा सुर बरिसहिं फूला ❀ भइ मृदु महि मग मंगलमूला ॥

दोहा--कियें जाहिं छाया जलद, सुखद बहइ बरबात ।

तस मगु भयउ न राम कहँ, जस भा भरतहिं जात ॥२१६॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे ❀ जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भये परम - पद - जोगू ❀ भरतदरस मेटा भवरोगू ॥
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं ❀ सुमिरत जिनहिं रामु मन माहीं ॥
बारक राम कहत जग जेऊ ❀ होत तरन तारन नर तेऊ ॥
भरतु राम प्रिय पुनि लघुभ्राता ❀ कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं ❀ भरतहिं निरखि हरषु हिय लहहीं ॥
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू ❀ जगु भल भलेहि पोच कहँ पोचू ॥
गुरु सन कहेउ करिय प्रभु सोई ❀ रामहि भरतहि भेंट न होई ॥

दोहा--राम सँकोची प्रेमबस, भरतु सपेम पयोधि ।
बनी बात बिगरत चहति, करिय जतनु छलु सोधि ॥२१७॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने ❀ सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥
कह गुरु बादि छोभ छल छाँड़ू ❀ इहाँ कपट कर होइहि भाँड़ू ॥
माया - पति - सेवक सन माया ❀ करइ त उलटि परइ सुरराया ॥
तब किछु कीन्ह रामरुख जानी ❀ अब कुचालि करि होइहि हानी ॥
सुनु सुरेस रघु - नाथ - सुभाऊ ❀ निजअपराध रिसाहिं न काऊ ॥
जो अपराध भगत कर करई ❀ राम - रोष - पावक सो जरई ॥
लोकहु बेद बिदित इतिहासा ❀ यह महिमा जानहिं दुरबासा ॥
भरतसरिस को रामसनेही ❀ जगु जप राम रामु जप जेही ॥

दोहा--मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुबर-भगत-अकाजु ।
अजसु लोक परलोक दुख, दिन दिन सोकसमाजु ॥२१८॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा ❀ रामहि सेवक परमपियारा ॥
मानत सुख सेवकसेवकाई ❀ सेवकबैर बैरु अधिकाई ॥
जद्यपि सम नहिं राग न रोषू ❀ गहहिं न पाप पुन्य गुन दोषू ॥
करम प्रधान बिस्व करि राखा ❀ जो जस करइ सो तस फल चाखा ॥
तदपि करहिं सम-बिषम-बिहारा ❀ भगत अभगत हृदय अनुसारा ॥
अगुन अलेप अमान एक रस ❀ रामु सगुन भये भगत-प्रेम-बस ॥
राम सदा सेवकरुचि राखी ❀ बेद - पुरान - साधु - सुर - साखी ॥

अस जिय जानि तजहु कुटिलाई ❀ करहु भरत - पद - प्रीति सुहाई ॥

दोहा--रामभगत परहितनिरत, परदुख दुखी दयाल ।
भगतसिरोमनि भरत तें, जनि डरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर-हित-कारी ❀ भरत राम - आयसु - अनुसारी ॥
स्वारथविवस विकल तुम्ह होहू ❀ भरतदोसु नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरवर सुर-गुरु-बर-बानी ❀ भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
बरषि प्रसून हरषि सुरराऊ ❀ लगे सराहन भरतसुभाऊ ॥
एहि विधि भरत चले मग जाहीं ❀ दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा ❀ उमगत पेमु मनहुँ चहुँ पासा ॥
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना ❀ पुरजन पेमु न जाइ बखाना ॥
बीच बास करि जमुनहिं आये ❀ निरखि नीरु लोचन जल छाये ॥

दोहा-रघु-बर-बरन बिलोकि बर, बारि समेत समाज ।
होत मगन बारिधि बिरह, चढ़े बिबेक जहाज ॥२२०॥

जमुनतीर तेहि दिन करि बासू ❀ भयेउ समयसम सबहिं सुपासू ॥
रातिहिं घाट घाट की तरनी ❀ आईं अगनित जाहिं न बरनी ॥
प्रात पार भये एकहि खेवा ❀ तोषे रामसखा की सेवा ॥
चले नहाइ नदिहि सिरु नाई ❀ साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥
आगे मुनि-बर-बाहन आछें ❀ राजसमाज जाइ सब पाछें ॥
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादें ❀ भूषन बसन बेष सुठि सादें ॥
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा ❀ सुमिरत लषनु सीय रघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम - बास - बिस्रामा ❀ तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दोहा—मगबासी नरनारि सुनि, धामकाम तजि धाइ ।
देखि सरूप सनेह सब, मुदित जनमफलु पाइ ॥२२१॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं ❀ रामलषनु सखि होहिं कि नाहीं ॥
बय बपु बरन रूपु सोइ आली ❀ सील सनेहु सरिस सम चाली ॥
बेषु न सो सखि सीय न संगा ❀ आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्नमुख मानस खेदा ❀ सखि संदेहु होइ येहि भेदा ॥
तासु तरक तियगन मन मानी ❀ कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥

तेहि सराहि बानी फुरि पूजी ❀ बोली मधुरबचन तिय दूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथाप्रसंगू ❀ जेहि बिधि राम-राज-रस भंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी ❀ सील सनेह सुभाय सुभागी ॥

दोहा—चलत पयादेहि खात फल, पिता दीन्ह तजि राजु ।
जात मनावन रघुबरहिं, भरतसरिस को आजु ॥२२२॥

भायप भगति भरत आचरनू ❀ कहत सुनत दुख-दूषन-हरनू ॥
जो किछु कहब थोर सखि सोई ❀ रामबंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहिं देखें ❀ भइन्ह धन्य जुवतीजन लेखें ॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं ❀ कैकइ-जननि-जोग सुतु नाहीं ॥
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिंन ❀ बिधि सबु कीन्ह हमहिं जो दाहिन ॥
कहँ हम लोक-बेद-बिधि-हीनी ❀ लघुतिय कुल-करतूति-मलीनी ॥
बसहिं कुदेस कुगावँ कुबामा ❀ कहँ यह दरसु पुन्यपरिनामा ॥
अस अनंदु अचरजु प्रतिग्रामा ❀ जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दोहा—भरतदरसु देखत खुलेउ, मग लोगन्ह कर भागु ।
जनु सिंघलबासिन्ह भयउ, बिधिबस सुलभ प्रयागु ॥२२३॥

निज-गुन-सहित राम-गुन-गाथा ❀ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनिआस्रम सुरधामा ❀ निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
मनहीं मन माँगहिं बर एहू ❀ सीय-राम-पद-पदुम सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल बनबासी ❀ बैखानस बटु जती उदासी ॥
करि प्रनामु पूछहिं जेहि तेही ❀ केहि बन लषनु रामु बैदेही ॥
ते प्रभुसमाचार सब कहहीं ❀ भरतहिं देखि जनमफलु लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुसल हम देखे ❀ ते प्रिय राम-लषन-सम लेखे ॥
एहि बिधि बूझत सबहिं सुबानी ❀ सुनत राम बन-बास-कहानी ॥

दोहा—तेहि बासर बसि प्रातहीं, चले सुमिरि रघुनाथ ।
रामदरस की लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू ❀ फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित समाज उछाहू ❀ मिलिहहिं रामु मिटिहि दुखदाहू ॥
करत मनोरथ जस जिय जाकें ❀ जाहिं सनेहसुरा सब छाकें ॥

सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं ❀ बिह्वल बचन प्रेमबस बोलहिं ॥
रामसखा तेहि समय देखावा ❀ सैलसिरोमनि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरित-पय-तीरा ❀ सीयसमेत बसहिं दोउ बीरा ॥
देखि करहिं सब दंडप्रनामा ❀ कहि जय जानकिजीवन रामा ॥
प्रेममगन अस राजसमाजू ❀ जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दोहा--भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकइ न सेषु ।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुख, अह-मम-मलिन-जनेषु ॥२२५॥

सकल सनेह सिथिल रघुबर के ❀ गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जलु थलु देखि बसे निसि बीते ❀ कीन्ह गवनु रघु-नाथ-पिरीते ॥
उहाँ रामु रजनी अवसेखा ❀ जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये ❀ नाथबियोग ताप तन ताये ॥
सकल मलिनमन दीन दुखारीं ❀ देखी सासु आन अनुहारीं ॥
सुनि सियसपन भरे जल लोचन ❀ भये सोचबस सोचबिमोचन ॥
लषन सपन यह नीक न होई ❀ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बंधुसमेत नहाने ❀ पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥

छन्द--सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भये ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आस्रम गये ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे ।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥

सोरठा--सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ।
सरदसरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥२२६॥

बहुरि सोच बस भे सियरवनू ❀ कारन कवन भरतआगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी ❀ सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं भा अति सोचू ❀ इत पितुबच उत बंधुसँकोचू ॥
भरतसुभाउ समुझि मन माहीं ❀ प्रभुचित हित थिति पावत नाहीं ॥
समाधान तब भा यह जानें ❀ भरत कहे महुँ साधु सयानें ॥
लषन लखेउ प्रभु-हृदय-खभारू ❀ कहत समयसम नीतिबिचारू ॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं ❀ सेवकु समय न ढीठु ढिठाईं ॥

तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी ❀ आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

दोहा--नाथ सुहृद सुठि सरलचित, सील-सनेह-निधान ।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान ॥२२७॥

बिषयी जीव पाइ प्रभुताई ❀ मूढ़ मोहबस होहिं जनाई ॥
भरतु नीतिरत साधु सुजाना ❀ प्रभु-पद-प्रेम सकलजग जाना ॥
तेऊ आजु राजपदु पाई ❀ चले धरममरजाद मेटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी ❀ जानि राम बनबास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू ❀ आये करइ अकंटक राजू ॥
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई ❀ आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जिय होति न कपट कुचाली ❀ केहि सोहाति रथ-बाजि-गजाली ॥
भरतहि दोष देइ को जायें ❀ जग बौराइ राजपदु पायें ॥

दोहा--ससि गुरु-तिय-गामी नहुष, चढ़ेउ भूमि-सुर-जान ।
लोकबेद तें बिमुख भा, अधम न बेनसमान ॥२२८॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू ❀ केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ❀ रिपु रिन रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्हि नहिं भरत भलाई ❀ निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेखी ❀ समर सरोष राममुखु पेखी ॥
एतना कहत नीतिरस भूला ❀ रन-रस-बिटप पुलक मिस फूला ॥
प्रभुपद बंदि सीसरज राखी ❀ बोले सत्य सहज बलु भाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा ❀ भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥
कहँ लगि सहिय रहिय मन मारें ❀ नाथसाथ धनु हाथ हमारें ॥

दोहा--छत्रिजाति रघुकुल जनमु, रामअनुज जगु जान ।
लातहुँ मारे चढ़ति सिर, नीच को धूरिसमान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु माँगा ❀ मनहुँ बीररस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा ❀ साजि सरासन सायकु हाथा ॥
आजु रामसेवक जसु लेऊँ ❀ भरतहिं समर सिखावन देऊँ ॥
रामनिरादर कर फल पाई ❀ सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकलसमाजू ❀ प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥

जिमि करिनिकर दलइ मृगराजू ❀ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहिं भरतहि सेनसमेता ❀ सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जौं सहाय कर संकरु आई ❀ तौ मारउँ रन रामदोहाई ॥

दोहा—अतिसरोष माषे लषन, लखि सुनि सपथप्रवान ।
सभय लोक सब लोकपति, चाहत भभरि भगान॥२३०॥

जग भयमगन गगन भइ बानी ❀ लषन-बाहु-बल बिपुल बखानी ॥
तात प्रतापप्रभाउ तुम्हारा ❀ को कहि सकइ को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काज कछु होऊ ❀ समुझि करिय भल कह सब कोऊ ॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं ❀ कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुरबचन लषन सकुचाने ❀ राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई ❀ सब तें कठिन राजमद भाई ॥
जो अँचवत मातहिं नृप तेई ❀ नाहिं न साधु सभा जेहि सेई ॥
सुनहु लषन भल भरतसरीसा ❀ बिधिप्रपंच महँ सुना न दीसा ॥

दोहा—भरतहि होइ न राजमद, बिधि-हरि-हर-पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजीसीकरनि, छीरसिंधु बिनसाइ॥२३१॥

तिमिरुतरुन तरनिहि मकु गिलई ❀ गगनु मगन मकु मेघहि मिलई ॥
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी ❀ सहज छमा बरु छाड़इ छोनी ॥
मसकफूँक मकु मेरु उड़ाई ❀ होइ न नृपमद भरतहि भाई ॥
लषन तुम्हार सपथ पितुआना ❀ सुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना ॥
सगुनु खीरु अवगुनजल ताता ❀ मिलइ रचइ परपंचु बिधाता ॥
भरत हंस रबि-बंस-तड़ागा ❀ जनमि कीन्ह गुन-दोष-बिभागा ॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी ❀ निजजस जगत कीन्हि उँजियारी ॥
कहत भरत - गुन - सील-सुभाऊ ❀ पेमपयोधि मगन रघुराऊ ॥

दोहा—सुनि रघुबरबानी बिबुध, देखि भरत पर हेतु ।
सकल सराहत राम सों, प्रभु को कृपानिकेतु ॥२३२॥

जौं न होत जग जनम भरत को ❀ सकल-धरम-धुर धरनि धरत को ॥
कबि-कुल-अगम भरत-गुन-गाथा ❀ को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा ॥
लषन राम सिय सुनि सुरबानी ❀ अतिसुख लहेउ न जाइ बखानी ॥

इहाँ भरतु सब सहित सहाये ❀ मंदाकिनी पुनीत नहाये ॥
सरितसमीप राखि सब लोगा ❀ माँगि मातु-गुरु-सचिव-नियोगा ॥
चले भरत जहँ सियरघुराई ❀ साथ निषादनाथ लघुभाई ॥
समुझि मातुकरतब सकुचाहीं ❀ करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
राम-लषन-सिय सुनि मम नाऊँ ❀ उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥

दोहा—मातु मतें महँ मानि मोहि, जो किछु कहहिं सो थोर ।
अघअवगुन छमि आदरहिं, समुझि आपनी ओर ॥२३३॥

जौ परिहरहिं मलिन मन जानी ❀ जौं सनमानहिं सेवक मानी ॥
मोरे सरन राम की पनहीं ❀ राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
जग जस भाजन चातक मीना ❀ नेम पेम निज निपुन नबीना ॥
अस मन गुनत चले मग जाता ❀ सकुच सनेह सिथिल सब गाता ॥
फेरति मनहिं मातुकृत खोरी ❀ चलत भगतिबल धीरजधोरी ॥
जब समुझत रघुनाथसुभाऊ ❀ तब पथ परत उताइल पाऊ ॥
भरतदसा तेहि अवसर कैसी ❀ जलप्रवाह जल-अलि-गति जैसी ॥
देखि भरत कर सोचु सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥

दोहा—लगे होन मंगल सगुन, सुनि गुनि कहत निषादु ।
मिटिहि सोच होइहि हरषु, पुनि परिनाम बिषादु ॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जानें ❀ आस्रमनिकट जाइ नियरानें ॥
भरत दीख बन-सैल-समाजू ❀ मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ❀ त्रिविध ताप पीडित ग्रहमारी ॥
जाइ सुराज सुदेस सुखारी ❀ होहिं भरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबास बनसंपति भ्राजा ❀ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू ❀ बिपिन सुहावन पावन देसू ॥
भट जमनियम सैल रजधानी ❀ सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ ❀ रामचरनआस्रित चित चाऊ ॥

दोहा—जीति मोह-महि-पाल-दल, सहित बिबेक भुआलु ।
करत अकंटक राजु पुर, सुख संपदा सुकालु ॥२३५॥

बनप्रदेस मुनिबास घनेरे ❀ जनु पुर नगर गाउँगन खेरे ॥

विपुल विचित्र विहँग मृग नाना ❀ प्रजासमाज न जाइ बखाना ॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा ❀ देखि महिष वृष साजु सराहा ॥
बयरु विहाय चरहिं एक संगा ❀ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं ❀ मनहुँ निसान विविधविधि बाजहिं ॥
चक चकोर चातक सुक पिक गन ❀ कूजत मंजु मराल मुदितमन ॥
अलिगन गावत नाचत मोरा ❀ जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ॥
बेलि बिटप तृन सफल सफूला ❀ सब समाजु मुद-मंगल-मूला ॥

दोहा—रामसैल सोभा निरखि, भरतहृदय अतिपेमु ।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिरानें नेमु ॥२३६॥

तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई ❀ कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देखियहि बिटपबिसाला ❀ पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा ❀ मंजु बिसाल देखि मन मोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला ❀ अबिचल छाँह सुखद सब काला ॥
मानहुँ तिमिर-अरुन-मय रासी ❀ बिरची बिधि सकेलि सुखमासी ॥
ए तरु सरितसमीप गोसाईं ❀ रघुबर परनकुटी जहँ छाई ॥
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाये ❀ कहुँ कहुँ सिय कहुँ लषन लगाये ॥
बटछाया बेदिका बनाई ❀ सिय निज-पानि-सरोज सुहाई ॥

दोहा—जहाँ बैठि मुनि-गन सहित, नित सिय रामु सुजान ।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥२३७॥

सखाबचन सुनि बिटप निहारी ❀ उमगे भरत बिलोचन बारी ॥
करत प्रनाम चले दोउ भाई ❀ कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥
हरषहिं निरखि राम-पद-अंका ❀ मानहुँ पारसु पायेउ रंका ॥
रजसिर धरि हिय नयनन्हि लावहिं ❀ रघुबर-मिलन-सरिस सुखपावहिं ॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा ❀ प्रेम मगन मृग खग जड़जीवा ॥
सखहिं सनेहबिबस मग भूला ❀ कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला ॥
निरखि सिद्धसाधक अनुरागे ❀ सहजसनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाउ भरत को ❀ अचर सचर चर अचर करत को ॥

दोहा—प्रेम अमिय मंदरु विरह, भरत पयोधिगँभीर ।

मथि प्रगटे सुर-साधु-हित, कृपासिंधु रघुबीर ॥२३८॥

सखासमेत मनोहर जोटा ❀ लखेउ न लषन सघन बन ओटा ॥
भरत दीख प्रभुआस्रमु पावन ❀ सकल-सुमंगल-सदन सुहावन ॥
करत प्रवेस मिटे दुखदावा ❀ जनु जोगी परमारथ पावा ॥
देखे भरत लषन प्रभु आगे ❀ पूछे बचन कहत अनुरागे ॥
सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे ❀ तून कसे कर सर धनु काँधे ॥
बेदी पर मुनि-साधु-समाजू ❀ सीयसहित राजत रघुराजू ॥
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा ❀ जनु मुनिबेष कीन्ह रतिकामा ॥
करकमलनि धनुसायक फेरत ❀ जियकी जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दोहा—लसत मंजु मुनि-मण्डली, मध्य सीय रघुचंदु ।
ग्यानसभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंदु ॥२३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन ❀ बिसरे हरष-सोक-सुख-दुख-गन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं ❀ भूतल परे लकुट की नाईं ॥
बचन सप्रेम लषन पहिचाने ❀ करत प्रनामु भरत जिय जाने ॥
बंधुसनेह सरस एहि ओरा ❀ इत साहिबसेवा बरजोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई ❀ सुकबि लषनमन की गति भनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू ❀ चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा ❀ भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा ❀ कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥

दोहा—बरबस लिये उठाइ उर, लाये कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि, बिसरे सबहिं अपान ॥२४०॥

मिलनिप्रीति किमि जाइ बखानी ❀ कबि-कुल-अगम करम मन बानी ॥
परम-पेम-पूरन दोउ भाई ❀ मन बुधि चित अहमिति बिसराई ॥
कहहु सुपेमु प्रगट को करई ❀ केहि छाया कबि मति अनुसरई ॥
कबिहिं अरथ आखर बल साँचा ❀ अनुहरि ताल गतिहि नट नाचा ॥
अगमसनेह भरतरघुबर को ❀ जहँ न जाइ मनु बिधि-हरि-हर को ॥
सो मैं कुमति कहउँ केहि भाँती ❀ बाजु सुराग कि गाँडरताँती ॥
मिलनि बिलोकि भरतरघुबर की ❀ सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥

समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ❀ बरषि प्रसून प्रसंसन लागे ॥

दोहा—मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ।
भूरि भाय भेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम॥२४१॥

भेंटेउ लषन ललकि लघुभाई ❀ बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे ❀ अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा ❀ धरि सिर सिय-पद-पदुम-परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये ❀ सिर करकमल परसि बैठाये ॥
सीय असीस दीन्हि मन माहीं ❀ मगन सनेह देहसुधि नाहीं ॥
सबबिधि सानुकूल लखि सीता ❀ भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूछा ❀ प्रेम भरा मन निजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि ❀ जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥

दोहा--नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब, आये बिकल बियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु सुनि गुरुआगवनू ❀ सियसमीप राखे रिपुदवनू ॥
चले सबेग राम तेहि काला ❀ धीर-धरम-धुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे ❀ दंडप्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिये उर लाई ❀ प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू ❀ कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू ॥
रामसखा रिषि बरबस भेंटा ❀ जनु महि लुठत सनेहु समेटा ॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला ❀ नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं ❀ बड़ बसिष्ठसम को जग माहीं ॥

दोहा—जेहि लखि लषनहुँ तें अधिक, मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीता-पति-भजन को, प्रगट प्रतापप्रभाउ ॥२४३॥

आरत लोग राम सबु जाना ❀ करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भाय रहा अभिलाखी ❀ तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ॥
सानुज मिलि पलमहुँ सब काहू ❀ कीन्ह दूरि दुख-दारुन-दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं ❀ जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं ॥
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा ❀ पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥

देखी राम दुखित महतारीं ❀ जनु सुबेलिअवलीं हिम मारीं ॥
प्रथम राम भेंटी कैकेई ❀ सरल सुभाय भगति मति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी ❀ काल करम बिधि सिर धरि खोरी ॥

दोहा--भेंटी रघुबर मातु सब, करि प्रबोध परितोषु ।
अंब ईसआधीन जगु, काहु न देइय दोषु ॥२४४॥

गुरु-तिय-पद बंदे दुहुँ भाई ❀ सहित बिप्रतिय जे सँग आई ॥
गंग-गौरि-सम सब सनमानीं ❀ देहिं असीस मुदित मृदुबानी ॥
गहि पद लगे सुमित्राअंका ❀ जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
पुनि जननीचरननि दोउ भ्राता ❀ परे पेम ब्याकुल सब गाता ॥
अतिअनुराग अंब उर लाये ❀ नयन सनेह सलिल अन्हवाये ॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू ❀ किमि कवि कहइ मूक जिमि स्वादू ॥
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ ❀ गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीसनियोगू ❀ जल थल तकि तकि उतरे लोगू ॥

दोहा--महिसुर मंत्री मातु गुरु, गनें लोग लिये साथ ।
पावन आस्रम गवनु किय, भरत लषन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आइ मुनि-बर-पग लागी ❀ उचित असीस लही मनमाँगी ॥
गुरुपतिनिहि मुनि तियन्ह समेता ❀ मिली पेमु कहि जाइ न जेता ॥
बंदि बंदि पग सिय सबही के ❀ आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥
सासु सकल जब सीयँ निहारीं ❀ मूँदे नैन सहमि सुकुमारीं ॥
परीं बधिकबस मनहुँ मरालीं ❀ काह कीन्ह करतार कुचालीं ॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुख पावा ❀ सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा ❀ नील-नलिन-लोयन भरि नीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई ❀ तेहि अवसर करुना महि छाई ॥

दोहा--लागि लागि पग सबनि सिय, भेंटति अतिअनुराग ।
हृदय असीसहि प्रेमबस, रहिहहु भरी सोहाग ॥२४६॥

बिकल सनेह सीय सब रानी ❀ बैठन सबहिं कहेउ गुरु ज्ञानी ॥
कहि जगगति मायिक मुनिनाथा ❀ कहे कछुक परमारथगाथा ॥
नृप कर सुर-पुर-गवनु सुनावा ❀ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा ॥

मरनहेतु निजनेहु बिचारी ❀ भे अति बिकल धीर-धुर-धारी ॥
कुलिसकठोर सुनत कटु बानी ❀ बिलपत लषन सीय सब रानी ॥
सोक बिकल अति सकल समाजू ❀ मानहुँ राजु अकाजेउ आजू ॥
मुनिबर बहुरि रामु समुझाये ❀ सहित समाज सुरसरित न्हाये ॥
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा ❀ मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा ॥

दोहा--भोर भयें रघुनंदनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ।
स्रद्धा-भगति-समेत प्रभु, सो सबु सादर कीन्ह ॥२४७॥

करि पितुक्रिया बेद जसि बरनी ❀ भे पुनीत पातक-तम-तरनी ॥
जासु नाम पावक अघतूला ❀ सुमिरत सकल-सु-मंगल-मूला ॥
सुद्ध सो भयेउ साधु संमत अस ❀ तीरथआवाहन सुरसरि जस ॥
सुद्ध भये दुइ बासर बीते ❀ बोले गुरु सन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी ❀ कंद-मूल-फल-अंबु-अहारी ॥
सानुज भरतु सचिव सब माता ❀ देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सबसमेत पुर धारिय पाऊ ❀ आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियेउँ ढिठाई ❀ उचित होय तस करिय गोसाईं ॥

दोहा–धरमसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिन दुइ दरस, देखि लहहु बिस्राम ॥२४८॥

रामबचन सुनि सभय समाजू ❀ जनु जलनिधि महँ बिकल जहाजू ॥
सुनि गुरुगिरा सु-मंगल-मूला ❀ भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावन पय तिहुँ काल नहाहीं ❀ जो बिलोकि अघओघ नसाहीं ॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि ❀ निरखहिं हरषि दंडवत करि करि ॥
राम-सैल-बन देखन जाहीं ❀ जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥
झरना झरहिं सुधासम बारी ❀ त्रि-बिध-ताप-हर त्रिबिध बयारी ॥
बिटप बेलि तृन अगनित जाती ❀ फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं ❀ जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं ॥

दोहा–सरनि सरोरुह जल बिहँग, कूजत गुंजत भृंग ।
बैरबिगत बिहरत बिपिन, मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी ❀ मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥

भरि भरि परनपुटी रचि रूरीं ❀ कंद मूल फल अंकुर जूरीं ॥
सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा ❀ कहि कहि स्वादुभेद गुन नामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेहमगन मृदुबानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा ❀ पावा दरसनु रामप्रसादा ॥
हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा ❀ जस मरुधरनि देव-धुनि-धारा ॥
रामकृपाल निषाद नेवाजा ❀ परिजन प्रजउ चहिय जस राजा ॥

दोहा—यह जिय जानि सँकोचु तजि, करिय छोहु लखि नेहु ।
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृन अंकुर लेहु ॥ २५० ॥

तुम्ह प्रिय पाहुन बन पगु धारे ❀ सेवाजोग न भाग हमारे ॥
देब काह हम तुम्हहिं गोसाईं ❀ ईंधनु पात किरात मिताई ॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई ❀ लेहिं न बासनबसन चोराई ॥
हम जड़ जीव जीव-गन-घाती ❀ कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
पाप करत निसि बासरजाहीं ❀ नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं ॥
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ ❀ यह रघु-नंदन-दरस प्रभाऊ ॥
जब तें प्रभु-पद-पदुम निहारे ❀ मिटे दुसह-दुख-दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे ❀ तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छंद—लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सिय-राम-चरन-सनेहु लखि सुख पावहीं ॥
नरनारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।
तुलसी कृपा रघु-बंस-मनि की लोह लै नौका तिरा ॥

सोरठा—बिहरहिं बन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥ २५१ ॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती ❀ बासर जाहिं पलकसम बीती ॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई ❀ सादर करइ सरिस सेवकाई ॥
लखा न मरमु राम बिनु काहू ❀ माया सब सियमाया माहू ॥
सीय सासु सेवा बस कीन्ही ❀ तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्ही ॥
लखि सियसहित सरल दोउ भाई ❀ कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥

अवनि जमहिं जाँचति कैकेई ❀ महि न बीचु विधि मीचु न देई ॥
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं ❀ राम विमुख थलु नरक न लहहीं ॥
यह संसउ सब के मन माहीं ❀ रामगवँनु विधि अवध कि नाहीं ॥

दोहा—निसि न नींद नहि भूख दिन, भरतु विकल सुचि सोच।
नीज कीच बिच मगन जस, मीनहिं सलिल सँकोच॥२५२॥

कीन्हि मातुमिस काल कुचाली ❀ ईति भीति जस पाकत साली ॥
केहि विधि होइ रामअभिषेकू ❀ मोहि अवकलत उपाउ न एकू ॥
अवसि फिरहिं गुरु आयसु मानी ❀ मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी ॥
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ ❀ रामजननि हठ करबि कि काऊ ॥
मोहि अनुचर कर केतिक बाता ❀ तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता ॥
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू ❀ हरगिरि तें गुरु सेवकधरमू ॥
एकउ जुगुति न मन ठहरानी ❀ सोचत भरतहिं रैन बिहानी ॥
प्रात नहाइ प्रभुहिं सिर नाई ❀ बैठत पठये रिषय बोलाई ॥

दोहा—गुरु-पद-कमल प्रनामु करि, बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ॥२५३॥

बोले मुनिवरु समयसमाना ❀ सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धरमधुरीन भानु-कुल-भानू ❀ राजा राम स्ववस भगवानू ॥
सत्यसंध पालक स्रुतिसेतू ❀ रामजनमु जग मंगलहेतू ॥
गुरु—पितु—मातु—बचन—अनुसारी ❀ खल-दल-दलन देव—हित—कारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु ❀ कोउ न रामसम जान जथारथु ॥
विधि हरिहर ससि रबिदिसि पाला ❀ माया जीव करम कुलि काला ॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई ❀ जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जिय देखहु नीकें ❀ रामरजाइ सीस सबही कें ॥

दोहा—राखें राम रजाइ रुख, हम सब कर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि संमत सोइ॥२५४॥

सब कहुँ सुखद रामअभिषेकू ❀ मंगल—मोद—मूल मग एकू ॥
केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ ❀ कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥
सब सादर सुनि मुनि-बर-बानी ❀ नय — परमारथ — स्वारथ— सानी ॥

उतर न आव लोग भये भोरे ❀ तब सिरुनाइ भरत कर जोरे ॥
भानुबंस भये भूप घनेरे ❀ अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जनम हेतु सब कहँ पितु माता ❀ करम सुभासुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सहज सकल कल्याना ❀ अस असीस राउरि जगु जाना ॥
सोइ गोसाइँ बिधि गति जेहि छेंकी ❀ सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दोहा—बूझिय मोहि उपाउ अब, सो सब मोर अभागु ।
सुनि सनेह-मय-बचन गुरु, उर उमगा अनुरागु॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं ❀ रामबिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
सकुचउँ तात कहत एक बाता ❀ अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई ❀ फेरियहि लषन सीय रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता ❀ भे प्रमोद-परिपूरन गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा ❀ जनु जिय राउ रामु भये राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी ❀ सम दुखसुख सब रोवहिं रानी ॥
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे ❀ फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥
कानन करउँ जनम भरि बासू ❀ एहि तें अधिक न मोर सुपासू ॥

दोहा--अंतरजामी रामुसिय, तुम्ह सरबग्य सुजान ।
जौं फुर कहहु त नाथ निज, कीजिय बचनु प्रवान ॥२५६॥

भरतवचन सुनि देखि सनेहू ❀ सभासहित मुनि भये बिदेहू ॥
भरत-महा - महिमा जलरासी ❀ मुनिमति ठाढ़ि तीर अबला सी ॥
गा चह पार जतनु हियँ हेरा ❀ पावति नाव न बोहितु बेरा ॥
औरु करिहि को भरत बड़ाई ❀ सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥
भरत मुनिहि मनभीतर भाये ❀ सहितसमाज राम पहिं आये ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु ❀ बैठे सब सुनि मुनिअनुसासनु ॥
बोले मुनिबर बचन बिचारी ❀ देस काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सरबग्य सुजाना ❀ धरम – नीति-गुन-ग्यान-निधाना ॥

दोहा--सब के उर अंतर बसहु, जानहु भाउ कुभाउ ।
पुरजन-जननी-भरत-हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

आरत कहहिं बिचारि न काऊ ❀ सूझ जुआरिहि आपुन दाऊ ॥

सुनि मुनिवचन कहत रघुराऊ ❀ नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउरि राखें ❀ आयसु किये मुदित फुर भाखें ॥
प्रथम जो आयसु मो कहँ होई ❀ माथे मानि करउँ सिख सोई ॥
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं ❀ सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं ॥
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाखा ❀ भरत-सनेह-विचारु न राखा ॥
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी ❀ भरत-भगति-बस भइ मति मोरी ॥
मोरें जान भरत रुचि राखी ❀ जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ॥

दोहा--भरतविनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुरुअनुरागु भरत पर देखी ❀ राम हृदय आनंद बिसेखी ॥
भरतहि धरमु-धुरं-धर जानी ❀ निज सेवक तन-मानस-बानी ॥
बोले गुरु - आयसु - अनुकूला ❀ बचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई ❀ भयउ न भुवन भरतसम भाई ॥
जे गुरु-पद - अंबुज-अनुरागी ❀ ते लोकहुँ वेदहुँ बड़भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागू ❀ को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
लखि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई ❀ करत बदन पर भरतबड़ाई ॥
भरतु कहहिं सोइ कियें भलाई ❀ अस कहि राम रहे अरगाई ॥

दोहा-तबमुनि बोले भरत सन, सब सँकोचु तजि तात।
कृपासिंधु प्रियबंधु सन, कहहु हृदय कै बात॥२५९॥

सुनि मुनिवचन रामरुख पाई ❀ गुरु साहिब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने सिर सबु छरुभारू ❀ कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू ॥
पुलकि सरीर सभा भये ठाढ़े ❀ नीरजनयन नेहजल बाढ़े ॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ❀ एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानउँ निजनाथ सुभाऊ ❀ अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
मो पर कृपा सनेह बिसेखी ❀ खेलत खुनिस न कबहूँ देखी ॥
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू ❀ कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपारीति जिय जोही ❀ हारेहु खेल जितावहिं मोही ॥

दोहा--महूँ सनेह-सकोच-बस, सनमुख कहा न बैन।

दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन ॥२६०॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा ❀ नीच बीचु जननी मिस पारा ॥
यहउ कहत मोहिं आजु न सोभा ❀ अपनी समुझि साधु सुचि को भा ॥
मातु मंद मैं साधु सुचाली ❀ उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली ❀ मुकता प्रसव कि संबुक ताली ॥
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू ❀ मोर अभाग उदधिअवगाहू ॥
बिनु समुझें निज-अघ-परिपाकू ❀ जारिउँ जाय जननि कहि काकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा ❀ एकहि भाँति भलेहि भल मोरा ॥
गुरु गोसाइँ साहिब सियरामू ❀ लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दोहा--साधु-सभा-गुरु-प्रभु-निकट, कहउँ सुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२६१॥

भूपतिमरन प्रेम पनु राखी ❀ जननी कुमति जगतु सबु साखी ॥
देखि न जाहिं बिकल महतारी ❀ जरहिं दुसह जर पुर-नर-नारी ॥
महीं सकल अनरथ कर मूला ❀ सो सुनि समुझि सहेउँ सब सूला ॥
सुनि बनगवनु कीन्ह रघुनाथा ❀ करि मुनिबेष लखन-सिय-साथा ॥
बिन पानहिन्ह पयादेहि पायें ❀ संकरु साखि रहेउँ एहि घायें ॥
बहुरि निहारि निषादसनेहू ❀ कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥
अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई ❀ जियत जीव जड़ सबइ सहाई ॥
जिन्हहिं निरखिमग सांपिनि बीछीं ❀ तजहिं बिषमबिष तामस तीछीं ॥

दोहा--तेइ रघुनंदनु लखनु सिय, अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावइ काहि ॥२६२॥

सुनि अति बिकल भरत-बर-बानी ❀ आरति-प्रीति-बिनय-नय-सानी ॥
सोकमगन सब सभा खभारू ❀ मनहुँ कमलबन परेउ तुसारू ॥
कहि अनेकबिधि कथा पुरानी ❀ भरतप्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥
बोले उचित बचन रघुनंदू ❀ दिन-कर-कुल-कैरव-बन-चंदू ॥
तात जाय जिन करहु गलानी ❀ ईसअधीन जीवगति जानी ॥
तीनि काल तिभुवन मत मोरें ❀ पुन्यसिलोक तात तर तोरें ॥
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई ❀ जाइ लोकु-परलोकु नसाई ॥

दोषु देहिं जननिहि जड़ तेई ❀ जिन्ह गुरु-साधु-सभा नहिं सेई ॥

दोहा—मिटिहहिं पाप प्रपंच सब, अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुखु, सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६३॥

कहहुँ सुभाउ सत्य सिव साखी ❀ भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतरक करहु जनि जायें ❀ बैर पेमु नहिं दुरइ दुरायें ॥
मुनि गुनि निकट बिहँग मृग जाहीं ❀ बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ॥
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना ❀ मानुषतनु गुन-ग्यान-निधाना ॥
तात तुम्हहिं मैं जानउँ नीकें ❀ करउँ काह असमंजस जी के ॥
राखेउ राय सत्य मोहि त्यागी ❀ तनु परिहरेउ पेम पनु लागी ॥
तासु बचन मेटत मन सोचू ❀ तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू ॥
तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा ❀ अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दोहा—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि, कहहु करउँ सोइ आजु।
सत्य-संध-रघुबर-बचन, सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर-गन-सहित सभय सुरराजू ❀ सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
बनत उपाउ करत कछु नाहीं ❀ रामसरन सब गे मन माहीं ॥
बहुरि बिचारि परसपर कहहीं ❀ रघुपति भगत-भगति-बस अहहीं ॥
सुधि करि अंबरीष दुरबासा ❀ भे सुर सुरपति निपट निरासा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा ❀ नरहरि किये प्रगट प्रहलादा ॥
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा ❀ अब सुरकाज भरत के हाथा ॥
आन उपाउ न देखिय देवा ❀ मानत रामु सु-सेवक-सेवा ॥
हिय सपेम सुमिरहु सब भरतहिं ❀ निज-गुन-सील रामबस करतहिं ॥

दोहा—सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सु-मंगल-मूल जग, भरत-चरन-अनुराग ॥२६५॥

सीता-पति-सेवक-सेवकाई ❀ काम-धेनु-सय-सरिस सुहाई ॥
भरतभगति तुम्हरें मन आई ❀ तजहु सोचु बिधि बात बनाई ॥
देखि देवपति भरतप्रभाऊ ❀ सहज-सुभाय-बिबस रघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं ❀ भरतहिं जानि रामपरिछाहीं ॥
सुनि सुरगुरु-सुर-संमत सोचू ❀ अंतरजामी प्रभुहिं सँकोचू ॥

निजसिर भारु भरत जिय जाना ❀ करत कोटिबिधि उर अनुमाना ॥
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका ❀ रामरजायसु आपन नीका ॥
निजपन तजि राखेउ पनु मोरा ❀ छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥

दोहा–कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनामु बोले भरतु, जोरिजलज-जुग-हाथ ॥२६६॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी ❀ कृपा-अंबु-निधि अंतरजामी ॥
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला ❀ मिटी मलिन मनकलपित सूला ॥
अपडर डरेउँ न सोच समूलें ❀ रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें ॥
मोर अभागु मातकुटिलाई ❀ बिधिगति बिषम कालकठिनाई ॥
पाउँ रोपि सब मिलि मोहि घाला ❀ प्रनतपाल पन आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई ❀ लोकहु बेद बिदित नहिं गोई ॥
जग अनभल भल एकु गोसाई ❀ कहिअ होइ भल कासु भलाई ॥
देव देव-तरु-सरिस सुभाऊ ❀ सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ ॥

दोहा–जाइ निकट पहिचानि तरु, छाहँ समनि सब सोच ।
माँगत अभिमत पाव जग, राउ रंक भल पोच ॥२६७॥

लखि सब बिधि-गुरु-स्वामि-सनेहू ❀ मिटेउ छोभु नहिं मन संदेहू ॥
अब करुनाकर कीजिअ सोई ❀ जन हित प्रभुचित छोभु न होई ॥
जो सेवकु साहिबहि सँकोची ❀ निजहित चहइ तासु मति पोची ॥
सेवकहित साहिबसेवकाई ❀ करइ सकल सुख लोभ बिहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरें सबही का ❀ कियें रजाइ कोटि बिधि नीका ॥
यह स्वारथ-परमारथ-सारू ❀ सकलसुकृत फल सुगति सिंगारू ॥
देव एक बिनती सुनि मोरी ❀ उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलक समाजु साजि सब आना ❀ करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना ॥

दोहा–सानुज पठइअ मोहिं बन, कीजिअ सबहिं सनाथ ।
नतरु फेरियहि बन्धु दोउ, नाथ चलउँ मैं साथ ॥२६८॥

न तरु जाहिं बन तीनिउँ भाई ❀ बहुरिय सीयसहित रघुराई ॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई ❀ करुनासागर कीजिय सोई ॥
देव दीन्ह सबु मोहि सिरभारू ❀ मोरें नीति न धरम बिचारू ॥

कहउँ बचन सब स्वारथहेतू ❀ रहत न आरत के चित चेतू ॥
उतर देइ सुनि स्वामिरजाई ❀ सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥
अस मैं अवगुन-उदधि-अगाधू ❀ स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपाल मोहिसो मत भावा ❀ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ॥
प्रभु-पद-सपथ कहउँ सतिभाऊ ❀ जग मंगल-हित एक उपाऊ ॥

दोहा—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देब ।
सो सिर धरि धरि करिहि सब, मिटिहि अनट अवरेब ॥२६९॥

भरत बचन सुचिसुनि सुर हरषे ❀ साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
असमंजसबस अवधनिवासी ❀ प्रमुदित मन तापस-बन-बासी ॥
चुपहि रहे रघुनाथ सँकोची ❀ प्रभुगति देखि सभा सब सोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आये ❀ मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाये ॥
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे ❀ बेषु देखि भये निपट दुखारे ॥
दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता ❀ कहहु बिदेह भूम कुसलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा ❀ बोले चरबर जोरें हाथा ॥
बूझब राउर सादर साईं ❀ कुसलहेतु सो भयउ गोसाईं ॥

दोहा—नाहिं त कोसलनाथ के, साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिला अवध बिसेष तें, जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा ❀ भे सब लोक सोकबस बौरा ॥
जेहि देखे तेहि समय बिदेहू ❀ नाम सत्य अस लाग न केहू ॥
रानि-कु-चालि सुनत नरपालहि ❀ सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि ॥
भरतराज रघुबर-बन-बासू ❀ भा मिथिलेसहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध-सचिव-समाजू ❀ कहहु बिचारि उचित का आजू ॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ ❀ चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ ॥
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी ❀ पठये अवध चतुर चर चारी ॥
बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ ❀ आयहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दोहा—गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरतु, चार चले तिरहूति ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी ❀ जनकसमाज जथामति बरनी ॥

सुनि गुरु परिजन सचिव महीपति ❀ भे सब सोच सनेह बिकल अति ॥
धरि धीरज करि भरत बड़ाई ❀ लिये सुभट साहनी बोलाई ॥
घर पुर देस राखि रखवारे ❀ हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
दुघरी साधि चले ततकाला ❀ किय बिस्रामु न मग महिपाला ॥
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा ❀ चले जमुन उतरन सबु लागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा ❀ तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा ॥
साथ किरात छसातक दीन्हे ❀ मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे ॥

दोहा–सुनत जनक आगवन सब, हरषेउ अवधसमाजु ।
रघुनंदनहिं सकोचु बड़, सोचबिबस सुरराजु ॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई ❀ काहि कहइ केहि दूषन देई ॥
अस मन आनि मुदित नरनारी ❀ भयेउ बहोरि रहब दिन चारी ॥
एहि प्रकार गत बासर सोऊ ❀ प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥
करि मज्जनु पूजहिं नरनारी ❀ गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥
रमा-रमन-पद बंदि बहोरी ❀ बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥
राजा रामु जानकी रानी ❀ आनँदअवधि अवधरजधानी ॥
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा ❀ भरतहिं रामु करहु जुबराजा ॥
एहि सुखसुधा सींचि सब काहू ❀ देव देहु जग-जीवन-लाहू ॥

दोहा–गुरुसमाज भाइन्ह सहित, रामराजु पुर होउ ।
अछत राम राजा अवध, मरिअ माँग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुर-जन-बानी ❀ निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी ॥
एहि बिधि नित्य करम करि पुरजन ❀ रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ लहहिं दरस निज निज अनुहारी ॥
सावधान सबही सनमानहिं ❀ सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
लरिकाइहि तें रघुबरबानी ❀ पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
सील-सकोच-सिंधु रघुराऊ ❀ सुमुख सुलोचन सरलसुभाऊ ॥
कहत राम-गुन-गन अनुरागे ❀ सब निज भाग सराहन लागे ॥
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे ❀ जिन्हहिं रामु जानत करि मोरे ॥

दोहा–प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेसु ।

सहित सभा संभ्रम उठेउ, रबि-कुल-कमल-दिनेसु ।।२७४।।

भाइ-सचिव-गुरु-पुरुजन-साथा ❀ आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ।।
गिरिवर दीख जनकपति जबहीं ❀ करि प्रनामु रथ त्यागेउ तबहीं ।।
राम-दरसु-लालसा-उछाहू ❀ पथस्रम लेस कलेस न काहू ।।
मन तहँ जहँ रघुबरबैदेही ❀ बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही ।।
आवत जनकु चले एहि भाँती ❀ सहितसमाज प्रेम मति माँती ।।
आये निकट देखि अनुरागे ❀ सादर मिलन परसपर लागे ।।
लगे जनक मुनि-जन-पद बंदन ❀ रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ।।
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहिं ❀ चले लेवाइ समेत समाजहिं ।।

दोहा—आस्रम सागर साँतरस, पूरन पावन पाथ ।
सेन मनहुँ करुनासरित, लिये जाहिं रघुनाथ ।।२७५।।

बोरति ग्यान बिराग करारें ❀ बचन ससोक मिलत नद नारें ।।
सोच उसास समीरतरंगा ❀ धीरज तट-तरु-बर कर भंगा ।।
बिषम बिषाद तोरावति धारा ❀ भय भ्रम भँवर अवर्त अपारा ।।
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा ❀ सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ।।
बनचर कोल किरात बेचारे ❀ थके बिलोकि पथिक हिय हारे ।।
आस्रम उदधि मिली जब जाई ❀ मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ।।
सोक बिकल दोउ राज समाजा ❀ रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ।।
भूप—रूप—गुन—सील सराही ❀ रोवहिं सोकसिंधु अवगाही ।।

छंद—अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि-नर ब्याकुल महा ।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा ।।
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की ।
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ।।

सोरठा--किये अमित उपदेस, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।
धीरजु धरिय नरेस, कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ।।२७६।।

जासु ग्यानुरबि भवनिसि नासा ❀ बचनकिरन मुनि-कमल-बिकासा ।।
तेहि कि मोह ममता नियराई ❀ यह सिय-राम-सनेह बड़ाई ।।
बिषयी साधक सिद्ध सयाने ❀ त्रिबिध जीव जग बेद बखाने ।।

राम-सनेह-सरस मन जासू ❀ साधुसभा बड़ आदर तासू ॥
सोह न रामपेम बिनु ग्यानू ❀ करनधार बिनु जिमि जलजानू ॥
मुनि बहुबिधि बिदेह समुझाये ❀ रामघाट सब लोग नहाये ॥
सकल-सोक-संकुल नरनारी ❀ सो बासर बीतेउ बिनु बारी ॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू ❀ प्रिय परिजन कर कौन बिचारू ॥

दोहा--दोउ समाज निमिराजु रघु-राज नहाने प्रात ।
बैठे सब बट-बिटप-तर, मन मलीन कृसगात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ--पुर--बासी ❀ जे मिथिला-पति-नगर-निवासी ॥
हंस--बंस--गुरु जनकपुरोधा ❀ जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥
लगे कहन उपदेस अनेका ❀ सहित धरम नय बिरति बिबेका ॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी ❀ समुझाई सब सभा सुबानी ॥
तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ ❀ नाथ कालि जल बिनु सबु रहेऊ ॥
मुनि कह उचित कहत रघुराई ❀ गयेउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
रिषि रुख लखि कह तिरहुतिराजू ❀ इहाँ उचित नहिं असन अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहिं सुहाना ❀ पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दोहा--तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।
लइ आये बनचर बिपुल, भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भो गिरि रामप्रसादा ❀ अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमि बिभागा ❀ जनु उमगत आनँद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला ❀ बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू ❀ त्रिबिध समीर सुखद सब काहू ॥
जाइ न बरनि मनोहरताई ❀ जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई ❀ राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुबर अनुरागे ❀ जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना ❀ पावन सुंदर सुधासमाना ॥

दोहा--सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥२७९॥

एहि बिधि बासर बीते चारी ❀ रामु निरखि नरनारि सुखारी ॥

दुहुँ समाज असि रुचि मन माहीं ❀ बिनु सियराम फिरब भल नाहीं ॥
सीताराम संग बनबासू ❀ कोटि अमर-पुर-सरिस सुपासू ॥
परिहरि लपन-राम-बैदेही ❀ जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही ॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं ❀ रामसमीप बसिय बन तबहीं ॥
मंदाकिनिमज्जनु तिहुँकाला ❀ रामदरसु मुद-मंगल-माला ॥
अटनु राम गिरि बन तापस थल ❀ असन अमियसम कंद मूल फल ॥
सुखसमेत संबत दुइ साता ❀ पलसम होहिं न जनियहिं जाता ॥

दोहा--एहि सुख जोग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भागु ।
सहज सुभाउ समाज दुहुँ, राम-चरन-अनुरागु ॥२८०॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं ❀ बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीयमातु तेहि समय पठाईं ❀ दासी देखि सुअवसरु आईं ॥
सावकास सुनि सब सिय सासू ❀ आयउ जनक-राज-रनिवासू ॥
कौसल्या सादर सनमानी ❀ आसन दिये समय सम आनी ॥
सीलु सनेहु सकल दुहुँ ओरा ❀ द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तनु बारि बिलोचन ❀ महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥
सब सिय-राम-प्रीति कि सी मूरति ❀ जनु करुना बहुबेष बिसूरति ॥
सीयमातु कह बिधिबुधि बाँकी ❀ जो पयफेनु फोर पबिटाँकी ॥

दोहा--सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा ❀ बिधिगति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी ❀ बाल-केलि-सम बिधिमति भोरी ॥
कौसल्या कह दोसु न काहू ❀ करमबिबस दुख सुख छति लाहू ॥
कठिन करमगति जान बिधाता ❀ जो सुभ असुभ सकल फलदाता ॥
ईस रजाइ सीस सबही के ❀ उतपति थिति लय बिषहु अमी के ॥
देबि मोहबस सोचिय बादी ❀ बिधिप्रपंचु अस अचल अनादी ॥
भूपति जियब मरब उर आनी ❀ सोचियसखिलखिनिज-हित-हानी ॥
सीयमातु कह सत्य सुबानी ❀ सुकृतीअवधि अवध-पति-रानी ॥

दोहा--लपनु रामु सिय जाहु बन, भल परिनाम न पोचु ।

गहबरि हिय कह कौसिला, मोहि भरत कर सोचु ॥२८२॥

ईसप्रसाद असीस तुम्हारी ❀ सुत-सुत बधू देव-सरि-बारी ॥
रामसपथ मैं कीन्हि न काऊ ❀ सो करि कहउँ सखी सतिभाऊ ॥
भरत सील गुन बिनय बड़ाई ❀ भायप भगति भरोस भलाई ॥
कहत सारदहु कर मति हीचे ❀ सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानउँ सदा भरत कुलदीपा ❀ बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥
कसे कनक मनि पारिखि पायें ❀ पुरुष परिखियहि समय सुभायें ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा ❀ सोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुर-सरि-सम पावनि बानी ❀ भईं सनेह बिकल सब रानी ॥

दोहा--कौसल्या कह धीर धरि, सुनहु देबि मिथिलेसि ।
को बिबेक-निधि-बल्लभहि, तुम्हहिं सकइ उपदेसि ॥२८३॥

रानि राय सन अवसरु पाई ❀ अपनी भाँति कहब समुझाई ॥
रखियहिं लषनु भरतु गवनहिं बन ❀ जौं यह मत मानइ महीपमन ॥
तौ भल जतन करब सुबिचारी ❀ मोरे सोच भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ❀ रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी ❀ सब भइँ मगन करुनरस रानी ॥
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि ❀ सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि ॥
सब रनिवास बिथकि लखि रहेऊ ❀ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ ॥
देबि दंडजुग जामिनि बीती ❀ राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दोहा--बेगि पाउ धारिय थलहिं, कह सनेह सतिभाय ।
हमरें तौ अब ईसगति, कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता ❀ जनकप्रिया गहि पाय पुनीता ॥
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी ❀ दसरथ-घरिनि राम-महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ❀ अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥
सेवक राउ करम-मन-बानी ❀ सदा सहाय महेस भवानी ॥
रउरे अंग जोगु जग को है ❀ दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
रामु जाइ बनु करि सुरकाजू ❀ अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
अमर नाग नर राम बाहु-बल ❀ सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥

यह सब जागबलिक कहि राखा ❀ देबि न होइ मुधा मुनि भाखा ॥

दोहा--अस कहि पग परि पेम अति, सियहित बिनय सुनाइ ।
सियसमेत सियमातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही ❀ जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
तापसबेष जानकी देखी ❀ भा सबु बिकल बिषाद बिसेखी ॥
जनक रामगुरु आयसु पाई ❀ चले थलहिं सिय देखी आई ॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी ❀ पाहुनि पावन पेम प्रान की ॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू ❀ भयउ भूपमन मनहुँ प्रयागू ॥
सियसनेह बटु बाढ़त जोहा ❀ तापर राम - पेम - सिसु सोहा ॥
चिरजीवी मुनि ग्यानु बिकल जनु ❀ बूड़त लहेउ बालअवलंबनु ॥
मोह मगनमति नहिं बिदेह की ❀ महिमा सिय-रघुबर-सनेह की ॥

दोहा--सिय पितु-मातु-सनेह-बस, बिकल न सकी सँभारि ।
धरनिसुता धीरजु धरेउ, समउ सुधरमु बिचारि ॥२८६॥

तापसबेष जनक सिय देखी ❀ भयउ पेमु परितोषु बिसेषी ॥
पुत्रि पबित्र किये कुल दोऊ ❀ सुजस धवल जग कह सब कोऊ ॥
जिति सुरसरि कीरतिसरि तोरी ❀ गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी ॥
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे ❀ एहि किय साधुसमाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी ❀ सीय सकुचि महि मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई ❀ सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई ॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीं ❀ इहाँ बसब रजनी भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ ❀ हृदय सराहत सील सुभाऊ ॥

दोहा--बारबार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्हि सनमानि ।
कही समय सिर भरतगति, रानि सुबानि सयानि ॥२८७॥

सुनि भूपाल भरतब्यवहारू ❀ सोन सुगंध सुधा ससिसारू ॥
मूँदे सजल नयन पुलके तन ❀ सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ❀ भरतकथा भव-बंध-बिमोचनि ॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू ❀ इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरत महिमाहीं ❀ कहइ काह छलि छुअति न छाहीं ॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद ❀ कबि कोबिद बुध बुद्धिबिसारद ॥

भरत चरित कीरति करतूती ❀ धरम सील गुन बिमल बिभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू ❀ सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू ॥

दोहा—निरवधि गुन निरुपम पुरुष, भरत भरतसम जानि ।
कहिय सुमेरु कि सेरसम, कबि-कुल-मति सकुचानि॥२८८॥

अगम सबहिं बरनत बरबरनी ❀ जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी ❀ जानहिं रामु न सकहिं बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ ❀ तियजिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिं लषनु भरत बन जाहीं ❀ सब कर भल सब के मन माहीं ॥
देबि परंतु भरत रघुबर की ❀ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरतु अवधि सनेह ममता की ❀ जद्यपि राम सींव समता की ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे ❀ भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि रामपग नेहू ❀ मोहि लखि परत भरतमत एहू ॥

दोहा—भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ राम रजाइ ।
करिय न सोच सनेहबस, कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८९॥

राम-भरत-गुन गनत सप्रीती ❀ निसि दंपतिहिं पलकसम बीती ॥
राजसमाज प्रात जुग जागे ❀ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरु पहिं रघुराई ❀ बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी ❀ सोकबिकल बनबास दुखारी ॥
सहितसमाज राउ मिथिलेसू ❀ बहुत दिवस भये सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिय नाथा ❀ हित सबही कर रउरे हाथा ॥
अस कहि अतिसकुचे रघुराऊ ❀ मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा ❀ नरकसरिस दुहुँ राजसमाजा ॥

दोहा—प्रान प्रान के जीव के, जिव सुख के सुख राम ।
तुम्ह तजि तात सुहात गृह, जिन्हहिं तिन्हहिं बिधि बाम॥२९०॥

सो सुख धरम करम जरि जाऊ ❀ जहँ न राम-पद-पंकज भाऊ ॥
जोग कुजोग ग्यानु अग्यानू ❀ जहँ नहिं रामपेम परधानू ॥
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं ❀ तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं ॥
राउर आयसु सिर सबही के ❀ बिदित कृपालहिं गति सब नीके ॥

आपु आस्रमहिं धारिय पाऊ ❀ भयउ सनेहसिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रनामु तब रामु सिधाये ❀ रिषि धरि धीर जनक पहिं आये ॥
रामबचन गुरु नृपहि सुनाये ❀ सील सनेह सुभाय सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई ❀ सब कर धरमसहित हित होई ॥

दोहा--ग्यान निधान सुजान सुचि, धरमधीर नरपाल ।
तुम्ह बिनु असमंजस समन, को समरथ एहिकाल ॥२९१॥

सुनि मुनिबचन जनक अनुरागे ❀ लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे ॥
सिथिल सनेह गुनत मन माहीं ❀ आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहिं राय कहेउ बन जाना ❀ कीन्ह आपु प्रिय प्रेमप्रवाना ॥
हम अब बन तें बनहिं पठाई ❀ प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई ॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी ❀ भये प्रेमबस बिकल बिसेखी ॥
समउ समुझि धरि धीरजु राजा ❀ चले भरत पहिं सहितसमाजा ॥
भरत आइ आगें भइ लीन्हे ❀ अवसरसरिस सुआसन दीन्हे ॥
तात भरत कह तिरहुतिराऊ ❀ तुम्हहिं बिदित रघुबीरसुभाऊ ॥

दोहा--राम सत्यब्रत धरमरत, सब कर सीलु सनेहु ।
संकट सहत संकोचबस, कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी ❀ बोले भरतु धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू ❀ कुलगुरु-सम हित माय न बापू ॥
कौसिकादिमुनि सचिवसमाजू ❀ ज्ञान-अंबु-निधि आपुनु आजू ॥
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी ❀ जानि मोहि सिख देइय स्वामी ॥
एहि समाज थल बूझब राउर ❀ मौन मलिन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता ❀ छमब तात लखि बाम बिधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ सेवाधरमु कठिन जग जाना ॥
स्वामि धरम स्वारथहिं बिरोधू ❀ बैरु अंध प्रेमहिं न प्रबोधू ॥

दोहा--राखि राम रुख धरमु ब्रतु, पराधीन मोहि जानि ।
सब के संमत सर्बहित, करिय प्रेम पहिचानि ॥२९३॥

भरतबचन सुनि देखि सुभाऊ ❀ सहितसमाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे ❀ अरथु अमित अति आखर थोरे ॥

ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निजपानी ❀ गहि न जाइ अस अद्भुत बानी ॥
भूपु भरतु मुनि साधु समाजू ❀ गे जहँ बिबुध-कुमुद-द्विज-राजू ॥
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा ❀ मनहुँ मीनगन नवजल जोगा ॥
देव प्रथम कुल-गुरु-गति देखी ❀ निरखि बिदेह सनेह बिसेखी ॥
राम-भगति-मय भरतु निहारे ❀ सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥
सब कोउ राम प्रेममय पेखा ❀ भये अलेख सोचबस लेखा ॥

दोहा--राम सनेह-सकोच-बस, कह ससोच सुरराज ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिं त भयेउ अकाज॥ २९४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही ❀ देवि देव सरनागत पाही ॥
फेरि भरतमति करि निजमाया ❀ पालु बिबुधकुल करि छलछाया ॥
बिबुधबिनय सुनि देवि सयानी ❀ बोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥
मो सन कहहु भरत मति फेरू ❀ लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
बिधि-हरि-हर माया बड़ि भारी ❀ सोउ न भरतमति सकइ निहारी ॥
सो मति मोहि कहत करु भोरी ❀ चाँदिनि कर कि चंदकर चोरी ॥
भरतहृदय सिय - रामु - निवासू ❀ तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकासू ॥
अस कहि सारद गइ बिधिलोका ❀ बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका ॥

दोहा--सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाटु ।
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम अरति उचाटु॥ २९५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू ❀ भरतहाथ सबु काजु अकाजू ॥
गये जनकु रघुनाथसमीपा ❀ सनमाने सब रबि-कुल-दीपा ॥
समय समाज धरम अविरोधा ❀ बोले तब रघु - बंस - पुरोधा ॥
जनक भरत संबादु सुनाई ❀ भरत कहाउति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू ❀ सो सब करइ मोर मत एहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुगपानी ❀ बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
बिद्यमान आपुनु मिथिलेसू ❀ मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥
राउर राय रजायसु होई ❀ राउरिसपथ सही सिर सोई ॥

दोहा--रामसपथ सुनि मुनि जनकु, सकुचे सभासमेत ।
सकल बिलोकत भरतमुखु, बनइ न ऊतरु देत ॥ २९६॥

सभा सकुचवस भरत निहारी ❀ रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
कुसमउ देखि सनेह सँभारा ❀ बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा ॥
सोक कनकलोचन मति छोनी ❀ हरी बिमल-गुन-गन जग जोनी ॥
भरतबिबेक बराह बिसाला ❀ अनायास उधरी तेहि काला ॥
करि प्रनामु सबु कहँ कर जोरे ❀ राम राउ गुरु साधु निहोरे ॥
छमब आजु अतिअनुचित मोरा ❀ कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा ॥
हिय सुमिरी सारदा सुहाई ❀ मानस तें मुखपंकज आई ॥
बिमल बिबेक धरम नय साली ❀ भरतभारती मंजु मराली ॥

दोहा—निरखि बिबेक बिलोचनन्हि, सिथिल सनेह समाजु ।
करि प्रनामु बोले भरतु, सुमिरि सीय रघुराजु ॥२९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी ❀ पूज्य परमहित अंतरजामी ॥
सरल सुसाहिबु सील निधानू ❀ प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू ॥
समरथ सरनागत हितकारी ❀ गुनगाहकु अवगुन-अघ-हारी ॥
स्वामि गोसाइँहि सरिस गोसाईं ❀ मोहि समान मैं साइँ दोहाईं ॥
प्रभु-पितु-बचन मोहवस पेली ❀ आयेउँ इहाँ समाज सकेली ॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू ❀ अमिय अमरपद माहुर मीचू ॥
रामरजाइ मेट मन माहीं ❀ देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठाई ❀ प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दोहा--कृपा भलाइ आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषनसरिस, सुजस चारु चहुँ ओर ॥२९८॥

राउरिरीति सुबानि बड़ाई ❀ जगत बिदित निगमागम गाई ॥
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी ❀ नीच निसील निरीस निसंकी ॥
तेउ सुनि सरन सामुहें आये ❀ सुकृत प्रनामु किहें अपनाये ॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने ❀ सुनि गुन साधुसमाज बखाने ॥
को साहिब सेवकहि नेवाजी ❀ आपु समान साज सब साजी ॥
निज करतूति न समुझिय सपने ❀ सेवक सकुच सोचु उर अपने ॥
सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी ❀ भुजा उठाइ कहौं पन रोपी ॥
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना ❀ गुनगति नट पाठक आधीना ॥

दोहा—यों सुधारि सनमानि जन, किये साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै, बिरदावलि बरजोर ॥२९९॥

सोक सनेह कि बाल सुभायें ❀ आयेउँ लाइ रजायसु बायें॥
तबहुँ कृपाल हेरि निजओरा ❀ सबहि भाँति भल मानेउ मोरा॥
देखेउँ पाय सु-मंगल-मूला ❀ जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला॥
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू ❀ बड़ी चूक साहिबअनुरागू॥
कृपा अनुग्रह अंग अघाई ❀ कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई॥
राखा मोर दुलार गोसाईं ❀ अपने सील सुभाय भलाई॥
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई ❀ स्वामि समाज सकोच बिहाई॥
अबिनय बिनय जथारुचि बानी ❀ छमिहि देव अतिआरति जानी॥

दोहा—सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइ देव अब, सबइ सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु-पद-पदुम-पराग दोहाई ❀ सत्य सुकृत सुखसीवँ सुहाई॥
सो करि कहउँ हिये अपने की ❀ रुचि जागत सोवत सपने की॥
सहज सनेह स्वामिसेवकाई ❀ स्वारथ छल फल चारि बिहाई॥
अग्यासम न सुसाहिबसेवा ❀ सो प्रसादु जन पावइ देवा॥
अस कहि प्रेमबिबस भये भारी ❀ पुलक सरीर बिलोचन बारी॥
प्रभु-पद-कमल गहे अकुलाई ❀ समउ सनेह न सो कहि जाई॥
कृपासिंधु सनमानि सुबानी ❀ बैठाये समीप गहि पानी॥
भरतबिनय सुनि देखि सुभाऊ ❀ सिथिल सनेह सभा रघुराऊ॥

छंद—रघुराउ सिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिलाधनी।
मन महुँ सराहत भरत-भायप-भगति की महिमा घनी॥
भरतहिं प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानसमलिन से।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से॥

सोरठा—देखि दुखारी दीन, दुहुँ, समाज नरनारि सब।
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥३०१॥

कपट-कुचालि-सीवँ सुरराजू ❀ पर-अकाज-प्रिय आपन काजू॥
काकसमान पाक-रिपु-रीती ❀ छली मलीन कतहुँ न प्रतीती॥

प्रथम कुमत करि कपट सँकेला ❀ सो उचाटु सब के सिर मेला ॥
सुरमाया सब लोग बिमोहे ❀ रामप्रेम अतिसय न बिछोहे ॥
भय उचाटबस मन थिर नाहीं ❀ छन बन रुचि छन सदन सुहाहीं ॥
दुबिध मनोगत प्रजा दुखारी ❀ सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं ❀ एक एक सन मरमु न कहहीं ॥
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू ❀ सरिस स्वान मघवान जुबानू ॥

दोहा–भरत जनक मुनिजन सचिव, साधु सचेत बिहाइ ।
लागि देवमाया सबहिं, जथाजोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ❀ निजसनेह सुर-पति-छल भारे ॥
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री ❀ भरतभगति सब कै मति जंत्री ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखे से ❀ सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
भरत–प्रीति–नति–बिनय - बड़ाई ❀ सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥
जासु बिलोकि भगति लवलेसू ❀ प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी ❀ भगति सुभाय सुमति हिय हुलसी ॥
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी ❀ कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई ❀ मतिगति बालबचन की नाईं ॥

दोहा--भरत-बिमल-जसु बिमल बिधु, सुमति चकोर कुमारि ।
उदित बिमल जनहृदय नभ, एकटक रही निहारि ॥३०३॥

भरतसुभाउ न सुगम निगमहूँ ❀ लघुमति चापलता कबि छमहूँ ॥
कहत सुनत सतिभाउ भरत को ❀ सीय–राम–पद होइ न रत को ॥
सुमिरत भरतहिं प्रेम राम को ❀ जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को ॥
देखि दयालु दसा सबही की ❀ राम सुजान जानि जन जी की ॥
धरमधुरीन धीर नयनागर ❀ सत्य सनेह सील सुख सागर ॥
देसु कालु लखि समयसमाजू ❀ नीति-प्रीति-पालक रघुराजू ॥
बोले बचन बानि सरबसु से ❀ हित परिनाम सुनत ससिरसु से ॥
तात भरत तुम्ह धरमधुरीना ❀ लोक बेद बिद परमप्रबीना ॥

दोहा--करम बचन मानस बिमल, तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुरुसमाज लघु-बंधु-गुन, कुसमय किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि-कुल-रीती ❀ सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
समउ समाजु लाज गुरुजन की ❀ उदासीन हित अनहित मन की ॥
तुम्हहिं बिदित सबही कर करमू ❀ आपन मोर परम हित धरमू ॥
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा ❀ तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ॥
तात तात बिनु बात हमारी ❀ केवल गुरु-कुल-कृपा सँभारी ॥
न तरु प्रजा पुरजन परिवारू ❀ हमहिं सहित सब होत खुआरू ॥
जौं बिनु अवसर अथव दिनेसू ❀ जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा ❀ मुनिमिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥

दोहा--रामकाज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम ।
गुरप्रभाउ पालिहि सबहिं, भल होइहि परिनाम ॥३०५॥

सहित समाज तुम्हार हमारा ❀ घर बन गुरप्रसाद रखवारा ॥
मातु-पिता-गुरु-स्वामि-निदेसू ❀ सकलधरम धरनीधर सेसू ॥
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू ❀ तात तरनि-कुल-पालक होहू ॥
साधक एक सकलसिधि देनी ❀ कीरति सुगति भूतिमय बेनी ॥
सो बिचार सहि संकट भारी ❀ करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥
बाँटी बिपति सबहि मोहि भाई ❀ तुमहिं अवधि भरि बड़ि कठिनाई ॥
जानि तुम्हहिं मृदु कहहुँ कठोरा ❀ कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥
होहिं कुठायँ सुबंधु सहायें ❀ ओडियहि हाथ असनि के घायें ॥

दोहा--सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकबि सराहहिं सोइ ॥३०६॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी ❀ प्रेम-पयोधि-अमिय जनु सानी ॥
सिथिलसमाज सनेह समाधी ❀ देखि दसा चुप सारद साधी ॥
भरतहिं भयउ परम संतोषू ❀ सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू ❀ भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी ❀ बोले पानिपंकरुह जोरी ॥
नाथ भयेउ सुखु साथ गये को ❀ लहेउँ लाहु जग जनम भये को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई ❀ करउँ सीस धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहिं देई ❀ अवधि पारु पावउँ जेहि सेई ॥

दोहा--देव देवअभिषेक हित, गुरुअनुसासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथसलिलु, तेहि कहँ काह रजाइ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं ❀ सभय सकोच जात कहि नाहीं॥
कहहु तात प्रभुआयसु पाई ❀ बोले बानि सनेह सुहाई॥
चित्रकूट मुनि थल तीरथ बन ❀ खग मृग सरि सर निर्झर गिरिगन॥
प्रभु-पद-अंकित अवनि बिसेखी ❀ आयसु होइ त आवउँ देखी॥
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू ❀ तात बिगत भय कानन चरहू॥
मुनिप्रसाद बनु मंगलदाता ❀ पावन परम सुहावन भ्राता॥
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं ❀ राखेहु तीरथजलु थल तेहीं॥
सुनि प्रभुबचन भरत सुखु पावा ❀ मुनि-पद-कमल मुदित सिर-नावा॥

दोहा--भरत-राम-संबादु सुनि, सकल-सुमंगल-मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल, बरषत सुर-तरु-फूल॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं ❀ कहत देव हरषत बरिआईं॥
मुनि मिथिलेस सभा सब काहू ❀ भरत बचन सुनि भयेउ उछाहू॥
भरत – राम – गुन – ग्राम–सनेहू ❀ पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू॥
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन ❀ नेमु प्रेमु अति पावन पावन॥
मतिअनुसार सराहन लागे ❀ सचिव सभासद सब अनुरागे॥
सुनि सुनि राम–भरत–संबादू ❀ दुहुँ समाज हिय हरष बिषादू॥
राममातु दुख–सुख - सम जानी ❀ कहि गुन राम प्रबोधी रानी॥
एक कहहिं रघुबीरबड़ाई ❀ एक सराहत भरतभलाई॥

दोहा--अत्रि कहेउ तब भरत सन, सैलसमीप सुकूप।
राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमिय अनूप॥३०९॥

भरत अत्रिअनुसासन पाई ❀ जलभाजन सब दिये चलाई॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू ❀ सहित गये जहँ कूप अगाधू॥
पावनु पाथ पुन्य थल राखा ❀ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू ❀ लोपेउ काल बिदित नहिं केहू॥
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा ❀ कीन्ह सुजल हित कूप बिसेखा॥
बिधिबस भयेउ बिस्व उपकारू ❀ सुगम अगम अति धरम बिचारू॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा ❀ अतिपावन तीरथ जलजोगा ॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी ❀ होइहहिं बिमलकरम मनबानी ॥

दोहा--कहत कूपमहिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ ।
अत्रि सुनायेउ रघुबरहि, तीरथ-पुन्य-प्रभाउ ॥३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती ❀ भयेउ भोर निसि सो सुख बीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई ❀ राम–अत्रि–गुरु–आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सब सादें ❀ चले राम–बन–अटन पयादें ॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं ❀ भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
कुस कंटक काँकरी कुराई ❀ कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे ❀ बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे ॥
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं ❀ बिटप फूलि फल तृन मृदुताहीं ॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी ❀ सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

दोहा--सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ।
राम-प्रान-प्रिय भरत कहुँ, यह न होइ बड़ि बात ॥३११॥

एहि बिधि भरत फिरत बन माहीं ❀ नेम प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुन्य जलास्रय भूमि बिभागा ❀ खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा ॥
चारु बिचित्र पवित्र बिसेखी ❀ बूझत भरत दिब्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ ❀ हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा ❀ कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनिआयसु पाई ❀ सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा ❀ देहिं असीस मुदित बनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई ❀ प्रभु-पद कमल बिलोकहिं आई ॥

दोहा--देखे थलतीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ।
कहत सुनत हरिहर सुजस, गयेउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू ❀ भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भल दिन आजु जानि मन माहीं ❀ राम कृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी ❀ सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी ॥
सील सराहि सभा सब सोची ❀ कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥

भरत सुजान रामरुख देखी ❀ उठि सप्रेम धरि धीर बिसेखी ॥
करि दंडवत कहत कर जोरी ❀ राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहि लगि सहेउ सबहिं संतापू ❀ बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई ❀ सेवउँ अवध अवधि भरि जाई ॥

दोहा--जेहि उपाय पुनि पाय जनु, देखइ दीनदयाल ।
सो सिख देइय अवधि लगि, कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं ❀ सब सुचि सरस सनेह सगाईं ॥
राउर बदि भल भव-दुख-दाहू ❀ प्रभु बिनु बादि परम-पदलाहू ॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की ❀ रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥
प्रनत पालु पालहिं सब काहू ❀ देव दुहूँ दिसि ओर निबाहू ॥
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो ❀ कियें बिचारु न सोचु खरो सो ॥
आरति मोर नाथ कर छोहू ❀ दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू ॥
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी ❀ तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥
भरतबिनय सुनि सबहि प्रसंसी ❀ खीर-नीर-बिबरन-गति हंसी ॥

दोहा--दीनबंधु सुनि बंधु के, बचन दीन छलहीन ।
देस-काल-अवसर-सरिस, बोले रामु प्रबीन ॥३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की ❀ चिंता गुरुहिं नृपहिं घर बन की ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू ❀ हमहिं तुम्हहिं सपनेहुँ न कलेसू ॥
मोर तुम्हार परमपुरुषारथ ❀ स्वारथु सुजसु धरमु परमारथ ॥
पितुआयसु पालिहि दुहुँ भाई ❀ लोक बेद भल भूप भलाई ॥
गुरु-पितु-मातु-स्वामि-सिख पालें ❀ चलेहु कु-मग-पग परहिं न खालें ॥
अस बिचारि सब सोच बिहाई ❀ पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
देसु कोसु परिजन परिवारू ❀ गुरुपद रजहिं लाग छरुभारू ॥
तुम्ह मुनि-मातु-सचिव-सिख मानी ❀ पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दोहा--मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥३१५॥

राज-धरम-सरबसु एतनोई ❀ जिमि मन माँह मनोरथ गोई ॥
बंधुप्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❀ बिनु अधार मन तोष न साँती ॥

भरत सीलु गुरु सचिव समाजू ❀ सकुच सनेह बिबस रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पाँवँरी दीन्ही ❀ सादर भरत सीस धरि लीन्ही ॥
चरनपीठ करुनानिधान के ❀ जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥
संपुट भरतसनेह रतन के ❀ आखर जुग जनु जीवजतन के ॥
कुलकपाट कर कुसल करम के ❀ बिमलनयन सेवा - सु - धरम के ॥
भरत मुदित अवलंब लहे तें ❀ अस सुख जस सिय रामु रहे तें ॥

दोहा--माँगेउ बिदा प्रनामु करि, राम लिये उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी ❀ अवधिआस सम जीवनि जी की ॥
न तरु लषन-सिय-राम-बियोगा ❀ हहरि मरत सबु लोग कुरोगा ॥
रामकृपा अवरेब सुधारी ❀ बिबुधधारि भइ गुनद गोहारी ॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो ❀ राम-प्रेम-रसु कहि न परत सो ॥
तन मन वचन उमग अनुरागा ❀ धीर-धुरंधर धीरजु त्यागा ॥
बारिजलोचन मोचत बारी ❀ देखि दसा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगन गुरु धुर धीर जनक से ❀ ग्यानअनल मन कसे कनक से ॥
जे बिरंचि निरलेप उपाये ❀ पदुमपत्र जिमि जग जलजाये ॥

दोहा--तेउ बिलोकि रघुबर-भरत-प्रीति अनूप अपार ।
भये मगन मन तन बचन, सहित बिराग बिचार ॥३१७॥

जहाँ जनक गुरु गति मति भोरी ❀ प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥
बरनत रघुबर - भरत - बियोगू ❀ सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू ॥
सो सकोचु रसु अकथ सुबानी ❀ समउसनेहु सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरतु रघुबर समुझाये ❀ पुनि रिपुदवन हरषि हिय लाये ॥
सेवक सचिव-भरत-रुख पाई ❀ निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुनदुख दुहूँ समाजा ❀ लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभु-पद-पदुम बंदि दोउ भाई ❀ चले सीस धरि रामरजाई ॥
मुनि तापस बन देव निहोरी ❀ सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दोहा--लषनहिं भेंटि प्रनाम करि, सिर धरि सिय-पद-धूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि, सकल-सुमंगल-मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई ❀ कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दयावस बड़ दुख पायेउ ❀ सहित समाज काननहिं आयेउ ॥
पुर पगु धारिय देइ असीसा ❀ कीन्ह धीर धरि गवन महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने ❀ बिदा किये हरि-हर-सम जाने ॥
सासुसमीप गये दोउ भाई ❀ फिरे बंदि पग आसिष पाई ॥
कौसिक बामदेव जाबाली ❀ परिजन पुरजन सचिव सुचाली ॥
जथाजोगु करि बिनय प्रनामा ❀ बिदा किये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे ❀ सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

दोहा--भरत-मातु-पद-बंदि प्रभु, सुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्हि सजि पालकी, सकुच सोच सब मेंटि ॥३१६॥

परिजन मातु पितहिं मिलि सीता ❀ फिरी प्रान - प्रिय - प्रेम - पुनीता ॥
करि प्रनाम भेंटी सब सासू ❀ प्रीति कहत कबि हिय न हुलासू ॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पाई ❀ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई ❀ करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥
बार बार हिलि मिलि दुहुँ भाई ❀ सम सनेह जननी पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना ❀ भूप भरतदल कीन्ह पयाना ॥
हृदय रामु सिय लखन समेता ❀ चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
बसह बाजि गज पसु हिय हारे ❀ चले जाहिं परबस मन मारे ॥

दोहा--गुरु-गुरु-तिय-पद बंदि प्रभु, सीता लषन समेत ।
फिरे हरष-बिसमय-सहित, आये परननिकेत ॥३२०॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू ❀ चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू ॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी ❀ फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लषन बैठि बट छाहीं ❀ प्रिय-परिजन-बियोग बिलखाहीं ॥
भरत सनेहु सुभाव सुबानी ❀ प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी ❀ श्रीमुख राम प्रेमबस बरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना ❀ चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की ❀ बरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो ❀ चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

दोहा–सानुज सीयसमेत प्रभु, राजत परनकुटीर।
भगति ग्यान बैराग जनु, सोहत धरे सरीर ॥३२१॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू ❀ रामबिरह सबु साजु बिहालू ॥
प्रभु-गुन-ग्राम गुनत मन माहीं ❀ सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार सब भयऊ ❀ सो बासर बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू ❀ रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये ❀ चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनक रहे पुर बासर चारी ❀ राज काज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू ❀ तिरहुति चले साजि सब साजू ॥
नगर-नारि-नर गुरु सिख मानी ❀ बसे सुखेन राम–रज–धानी ॥

दोहा–रामदरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास।
तजितजि भूषन भोग सुख, जियत अवधि कीआस ॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे ❀ निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई ❀ सौंपी सकल मातुसेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे ❀ करि प्रनाम बरबिनय निहोरे ॥
ऊँच नीज कारज भल पोचू ❀ आयसु देब न करब सँकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बोलाये ❀ समाधान करि सुबस बसाये ॥
सानुज गे गुरुगेह बहोरी ❀ करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ त रहउँ सनेमा ❀ बोले मुनि तन पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम्ह जोई ❀ धरमसारु जग होइहि सोई ॥

दोहा–सुनि सिख पाइ असीस बड़ि, गनक बोलि दिन साधि।
सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारे निरुपाधि ॥ ३२३ ॥

राममातु गुरुपद सिरु नाई ❀ प्रभु–पद–पीठ–रजायसु पाई ॥
नंदिगाँव करि परनकुटीरा ❀ कीन्ह निवास धरम-धुर-धीरा ॥
जटाजूट सिर मुनिपट धारी ❀ महि खनि कुससाथरी सवाँरी ॥
असन बसन बासन ब्रत नेमा ❀ करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा ॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी ❀ मन तन बचन तजे तिन तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाई ❀ दसरथ धनु सुनि धनद लजाई ॥

तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा ❀ चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥
रमाबिलास रामअनुरागी ❀ तजत बमन जिमि जन बड़ भागी ॥
दोहा–राम-पेम-भाजन भरत, बड़े न येहि करतूति ।
चातक हंस सराहियत, टेक बिबेक बिभूति ॥३२४॥
देह दिनहुँ दिन दूबरि होई ❀ घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ॥
नित नव राम-पेम-पनु पीना ❀ बढ़त धरमदलु मन न मलीना ॥
जिमि जल निघटत सरद प्रकासे ❀ बिसत बेतसबनज बिकासे ॥
सम दम संजम नियम उपासा ❀ नखत भरत हिय बिमल अकासा ॥
ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी ❀ स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी ॥
राम पेम-बिधु अचल अदोखा ❀ सहित समाज सोह नित चोखा ॥
भरत रहनि समुझनि करतूती ❀ भगतिबिरति गुन बिमल बिभूती ॥
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं ❀ सेस – गनेस – गिरा – गमुनाहीं ॥
दोहा–नित पूजत प्रभुपावँरी, प्रीति न हृदय समाति ।
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहु भाँति ॥३२५॥
पुलक गात हिय सिय रघुबीरू ❀ जीह नामु जप लोचन नीरू ॥
लषन राम सिय कानन बसहीं ❀ भरत भवन बसि तप तनु कसहीं ॥
दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू ❀ सब बिधि भरत सराहन जोगू ॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं ❀ देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥
परमपुनीत भरतआचरनू ❀ मधुर–मंजु–मुद – मंगल – करनू ॥
हरन कठिन कलि-कलुष-कलेसू ❀ महा-मोह-निसि दलन दिनेसू ॥
पाप –पुंज – कुंजर – मृग – राजू ❀ समन सकल - संताप - समाजू ॥
जनरंजन भंजन भवभारू ❀ रामसनेह सुधाकरसारू ॥
छंद–सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनम न भरत को ।
मुनि-मन-अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को ॥
दुखदाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि रामसनमुख करत को ॥
सोरठा–भरतचरित करि नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय-राम-पद पेमु, अवसि होइ भव-रस-बिरति ॥३२६॥

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

अरण्यकाण्ड



श्लोकौ

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् । मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् । राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सोरठा—उमा रामगुन गूढ़, पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह बिमूढ़, जे हरि बिमुख न धर्मरति ॥

पुर-नर-भरत-प्रीति मैं गाई ❀ मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन ❀ करत जे बन सुर-नर-मुनि-भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाये ❀ निज कर भूषन राम बनाये ॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर ❀ बैठे फटिकसिला पर सुंदर ॥
सुर-पति-सुत धरि बायस बेखा ❀ सठ चाहत रघु-पति-बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ❀ महा-मंद-मति पावन चाहा ॥
सीता चरन चोंच हति भागा ❀ मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ❀ सींक-धनुष-सायक संधाना ॥

दोहा—अतिकृपाल रघुनायक, सदा दीन पर नेह ।
ता सन आइ कीन्ह छलु, मूरख अवगुनगेह ॥ १ ॥

प्रेरितमंत्र ब्रह्म सर धावा ❀ चला भाजि बायस भयपावा ॥
धरि निज रूप गयेउ पितु पाहीं ❀ रामबिमुख राखा तेहि नाहीं ॥
भा निरास उपजी मन त्रासा ❀ जथा चक्रभय रिषि दुर्वासा ॥
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका ❀ फिरा स्रमिक ब्याकुल भय सोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही ❀ राखि को सकै राम कर द्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु समनसमाना ❀ सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना ॥
मित्र करै सतरिपु कै करनी ❀ ता कहुँ बिधुधनदी बैतरनी ॥
सब जग ताहि अनलहु ते ताता ❀ जो रघु-बीर-बिमुख सुनु भ्राता ॥
नारद देखा बिकल जयंता ❀ लागि दया कोमलचित संता ॥
पठवा तुरत राम पहिं ताही ❀ कहेसि पुकारि प्रनतहित पाही ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई ❀ त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
अ-तुलित-बल अ-तुलित-प्रभुताई ❀ मैं मतिमंद जानि नहिं पाई ॥
निज कृत कर्मजनित फल पायउँ ❀ अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ ॥
सुनि कृपाल अति-आरत-बानी ❀ एक नयन करि तजा भवानी ॥

सोरठा--कीन्ह मोह बस द्रोह, जद्यपि तेहि कर बध उचित ।
प्रभु छाँडेउ करि छोह, को कृपाल रघुबीर-सम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ❀ चरित किये स्रुति सुधा समाना ॥
बहुरि राम अस मनअनुमाना ❀ होइहि भीर सबहिं मोहि जाना ॥
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई ❀ सीतासहित चले दोउ भाई ॥
अत्रि के आस्रम जब प्रभु गयऊ ❀ सुनत महामुनि हरषित भयऊ ॥
पुलकितगात अत्रि उठि धाये ❀ देखि रामु आतुर चलि आये ॥
करत दंडवत मुनि उर लाये ❀ प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने ❀ सादर निज आस्रम तब आने ॥
करि पूजा कहि बचन सुहाये ❀ दिये मूल फल प्रभु मन भाये ॥

सोरठा–प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन सोभा निरखि ।
मुनिबर परम प्रबीन, जोरि पानि अस्तुति करत ॥ ३ ॥

छंद—नमामि भक्तवत्सलं । कृपालु-शील कोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदम् ॥

निकाम - श्याम - सुन्दरं । भवाम्बु - नाथ - मन्दरम् ।
प्रफुल्ल - कञ्ज - लोचनं । मदादि - दोष - मोचनम् ॥
प्रलम्ब - बाहु - विक्रमं । प्रभोऽप्रमेयवैभवम् ।
निषङ्ग - चाप - सायकं । धरं त्रि-लोक-नायकम् ॥
दिनेश - वंश - मंडनं । महेश - चाप - खंडनम् ।
मुनींद्र - संत - रंजनम् । सुरारि - वृंद - भंजनम् ॥
मनोज - वैरि - वंदितं । अजादि - देव - सेवितम् ।
विशुद्ध - बोध - विग्रहं । समस्तदूषणापहम् ॥
नमामि इन्दिरापतिं । सुखाकरं सतां गतिम् ।
भजे सशक्ति सानुजं । शची - पति - प्रियानुजम् ॥
त्वदंघ्रिमूल ये नरा । भजंति हीनमत्सराः ।
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क - वीचि - संकुले ॥
विविक्तवासिनस्सदा । भजंति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकम् ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुम् ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलम् ॥
भजामि भाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभम् ।
स्व-भक्त - कल्प - पादपं । समं सुसेव्यमन्वहम् ॥
अनूप - रूप - भूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदम् ।
व्रजंति नात्र संशयः । त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥

दोहा--बिनती करि मुनि नाइ सिरु, कह कर जोरि बहोरि ।
चरनसरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥४॥

अनुसुइया के पद गहि सीता ❀ मिली बहोरि सुसील बिनीता ॥
रिषी-पतिनी-मन सुख अधिकाई ❀ आसिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य बसन भूषन पहिराये ❀ जे नित नूतन अमल सुहाये ॥
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी ❀ नारिधरम कछु ब्याज बखानी ॥

मातु-पिता-भ्राता-हित-कारी ❀ मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥
अमितदानि भर्ता बैदेही ❀ अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरजु धर्म मित्र अरु नारी ❀ आपदकाल परखियहि चारी ॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना ❀ अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पति कर किये अपमाना ❀ नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा ❀ काय बचन मन पतिपद प्रेमा ॥
जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं ❀ बेद पुरान संत सब कहहीं ॥
उत्तम के अस बस मन माहीं ❀ सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम परपति देखइ कैसें ❀ भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई ❀ सो निकृष्ट तिय स्रुति अस कहई ॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई ❀ जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिबंचक पर-पति-रति करई ❀ रौरव नरक कलपसत परई ॥
छन सुख लागि जनम सत कोटी ❀ दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥
बिनु स्रम नारि परम गति लहई ❀ पति-ब्रत-धर्म छाँड़ि छल गहई ॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई ❀ बिधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

सोरठा--सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत स्रुति चारि, अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं ।
तोहि प्रानप्रिय राम, कहेउँ कथा संसारहित ॥५॥

सुनि जानकीं परम सुख पावा ❀ सादर तासु चरन सिरु नावा ॥
तब मुनि सन कह कृपानिधाना ❀ आयसु होइ जाउँ बन आना ॥
संतत मोपर कृपा करेहू ❀ सेवक जानि तजेउ जनि नेहू ॥
धर्म-धुरंधर प्रभु कै बानी ❀ सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥
जासु कृपा अज सिव सनकादी ❀ चहत सकल परमारथबादी ॥
ते तुम्ह राम अ-काम-पियारे ❀ दीनबंधु मृदु बचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्रीचतुराई ❀ भजी तुम्हहि सब देव बिहाई ॥
जेहि समान अतिसय नहिं कोई ❀ ता कर सील कस न अस होई ॥
केहि बिधि कहौं जाहु अब स्वामी ❀ कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥

अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा ❀ लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥
छन्द–तन पुलकनिर्भर प्रेमपूरन नयन मुख-पंकज दिये ।
मन-ग्यान-गुन-गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये ॥
जप जोग धर्म समूह ते नर भगति अनुपम पावई ।
रघु-बीर-चरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई ॥

दोहा–कलि-मल-समन दमन मन, रामसुजस सुख मूल ।
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर, राम रहहिं अनुकूल ॥
सोरठा–कठिन काल मल कोस, धर्म न ग्यान न जोग जप ।
परिहरि सकल भरोस, रामहिं भजहिं ते चतुर नर ॥६॥

मुनि-पद-कमल नाइ करि सीसा ❀ चले बनहिं सुर-नर-मुनि-ईसा ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे ❀ मुनि-बर-बेष बने अति आछे ॥
उभय बीच सिय सोहइ कैसी ❀ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ॥
सरिता बन गिरि अवघट घाटा ❀ पति पहिचानि देहिं बर बाटा ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया ❀ करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया ॥

अथ क्षेपक

आश्रम विपुल दीख बनमाहीं ❀ देवसदन तेहि पटतर नाहीं ॥
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई ❀ भाँति भाँति सब मुनिन लगाई ॥
दिव्य बिटप बन चहुँदिशि सोहैं ❀ देखत सकल सुरन मन मोहैं ॥
तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा ❀ सकल मुनिन्ह मिलिकीन्ह सुपासा ॥

दोहा–निज २ आश्रम बेदिका, तेहिपर तुलसि बिराज ।
अनुजजानकी सहित तहँ, राजत भे रघुराज ॥
आनि सुआसन मुदित मन, पूजि पहुनई कीन्ह ।
कंद मूल फल अमियसम, आनिराम कहँ दीन्ह ॥

अनुज सीय सह भोजन कीन्हा ❀ जो जिहि भाव सुभग बर दीन्हा ॥
होत प्रभात मुनिन्ह शिर नावा ❀ आशिर्वाद सबहि मन पावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा ❀ पुनि प्रभु चले सुनहु बिहँगेशा ॥
बन अनेक सुन्दर गिरि नाना ❀ लाँघत चले जाहिं भगवाना ॥
मिला असुर बिराध मगु जाता ❀ गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥

रूप भयंकर मानहु काला ❀ बेगवन्त धायेउ जिमि ब्याला ॥
गगन देव मुनि किन्नर नाना ❀ तेहिक्षण हृदय हारि भय माना ॥
तुरतहि सो सीतहिं लै गयऊ ❀ राम हृदय कछु बिस्मय भयऊ ॥
समुझि हृदय कैकेयि कुकरणी ❀ कहा अनुज सन बहुबिधि बरणी ॥
बहुरि लषण रघुबरहि प्रबोधा ❀ पाँच बाण छाँड़े करि क्रोधा ॥
छंद—भये क्रोध लषण संधानि धनु शर मारि तेहि व्याकुल कियो ।
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शूललै धावत भयो ॥
जनु कालदण्ड कराल धावा बिकल सब खग मृग भये ।
धनु तानि श्री रघुबंशमणि पुनि काटि तेहि रजसम किये ॥

दोहा--बहुरि एक शर मारेऊ, परा धरणि धुनि माथ ।
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥

ऐसे कहत निशाचर धावा ❀ अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा ॥
तासु तेज शत मरुत समाना ❀ टूटहिं तरु बहु उड़हिं पषाना ॥
जीव जन्तु जहँ लगि रहे जेते ❀ ब्याकुल भाजि चले सब तेते ॥
आव प्रबल यहि बिधि जनु भूधर ❀ होइहिं काह कहहिं ब्याकुल सुर ॥
उरग समान जोरि शर साता ❀ आवतही रघुबीर निपाता ॥

इति क्षेपक

तुरतहिं रुचिर रूप तेहि पावा ❀ देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा ❀ सुंदर अनुज जानकी संगा ॥

दोहा--देखि राम-मुख-पंकज, मुनि-बर-लोचन भृङ्ग ।
सादर पान करत अति, धन्य जनम सरभंग ॥ ७ ॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला ❀ संकर - मानस - राज - मराला ॥
जात रहेउँ बिरंचि के धामा ❀ सुनेउ स्रवन बन ऐहहिं रामा ॥
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती ❀ अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना ❀ कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥
सो कछु देव न मोहि निहोरा ❀ निजपन राखेहु जन-मन-चोरा ॥
तब लगि रहहु दीनहित लागी ❀ जब लगि मिलैं तुम्हहिं तनु त्यागी ॥

जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा ❀ प्रभु कहँ देइ भगतिबर लीन्हा ॥
एहि बिधि सर रचि मुनि सरभंगा ❀ बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा ॥

दोहा–सीता-अनुज-समेत प्रभु, नील जलद तनु स्याम ।
मम हिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा ❀ रामकृपा बैकुण्ठ सिधारा ॥
ता तें मुनि हरिलीन न भयऊ ❀ प्रथमहिं भेद भगतिबर लयऊ ॥
रिषिनिकाय मुनि-बर-गति देखी ❀ सुखी भये निज हृदय बिसेखी ॥
अस्तुति करहिं सकल मुनिबृंदा ❀ जयति प्रनतहित करुनाकंदा ॥
पुनि रघुनाथ चले बन आगे ❀ मुनि-बर-बृंद बिपुल सँग लागे ॥
अस्थिसमूह देखि रघुराया ❀ पूछा मुनिन्ह लागि अतिदाया ॥
जानतहू पूछिय कस स्वामी ❀ सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
निसि-चर-निकर सकल मुनि खाये ❀ सुनि रघुनाथ नयन जल छाये ॥

दोहा–निसि-चर-हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आस्रमन्हि, जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥९॥

मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना ❀ नाम सुतीछन रति भगवाना ॥
मन-क्रम-बचन राम-पद-सेवक ❀ सपनेहु आन भरोस न देवक ॥
प्रभु आगवनु स्रवन सुनि पावा ❀ करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे बिधि दीनबंधु रघुराया ❀ मो से सठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहि राम गोसाईं ❀ मिलिहहिं निज सेवक की नाईं ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं ❀ भगति बिरति न ग्यान मन माहीं ॥
नहिं सतसंग जोग जप जागा ❀ नहिं दृढ़ चरनकमल अनुरागा ॥
एक बानि करुनानिधान की ❀ सो प्रिय जा के गति न आन की ॥
होइहहिं सुफल आजु मम लोचन ❀ देखि बदनपंकज भवमोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी ❀ कहि न जाइ सो दसा भवानी ॥
दिसि अरु बिदिसि पंथ नहिं सूझा ❀ को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई ❀ कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥
अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई ❀ प्रभु देखहिं तरुओट लुकाई ॥
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा ❀ प्रगटे हृदय हरन भवभीरा ॥

मुनि मग माँझ अचल होइ बैसा ❀ पुलकसरीर पनसफल जैसा ॥
तब रघुनाथ निकट चलि आये ❀ देखि दसा निज जन मन भाये ॥
मुनिहिं राम बहु भाँति जगावा ❀ जाग न ध्यानजनित सुख पावा ॥
भूपरूप तब राम दुरावा ❀ हृदय चतुर्भुजरूप देखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें ❀ विकल हीनमनि फनिवर जैसें ॥
आगे देखि रामतनु स्यामा ❀ सीता-अनुज-सहित सुखधामा ॥
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी ❀ प्रेममगन मुनिवर बड़भागी ॥
भुजविसाल गहि लिये उठाई ❀ परमप्रीति राखे उर लाई ॥
मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनकतरुहि जनु भेंट तमाला ॥
रामबदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा ❀ मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा ॥

दोहा--तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ।
निज आस्रम प्रभु आनि करि, पूजा बिबिधि प्रकार ॥१०॥

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी ❀ अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रविसनमुख खद्योत अँजोरी ॥
स्याम - तामरस - दाम - सरीरं ❀ जटा - मुकुट - परिधन - मुनि-चीरं ॥
पानि - चाप - सर - कटि - तूनीरं ❀ नौमि निरंतर श्री-रघु-बीरं ॥
मोह - बिपिन - घन - दहन-कृसानुः ❀ संत - सरोरुह - कानन - भानुः ॥
निसि-चर-करि-बरूथ-मृगराजः ❀ त्रातु सदा नो भव-खग-बाजः ॥
अरुन - नयन - राजीव - सुवेसं ❀ सीता - नयन - चकोर - निसेसं ॥
हर - हृदि - मानस-राज-मरालं ❀ नौमि राम-उर-बाहु-बिसालं ॥
संसय - सर्प - ग्रसन - उरगादः ❀ समन-सु-कर्कस - तर्क - विषादः ॥
भव - भंजन - रंजन-सुर - जूथः ❀ त्रातु सदा नो कृपाबरूथः ॥
निर्गुन-सगुन-बिषम - सम-रूपं ❀ ज्ञान - गिरा - गो - तीतमनूपं ॥
अमल-मखिल - मन - वद्यमपारं ❀ नौमि रामभंजन-महि-भारं ॥
भक्त - कल्प - पादप - आरामः ❀ तर्जन - क्रोध - लोभ - मद - कामः ॥
अति - नागर - भव - सागर - सेतुः ❀ त्रातु सदा दिन-कर-कुल-केतुः ॥
अतुलित -भुज - प्रताप - बल-धामः ❀ कलि-मल-विपुल -बिभंजन - नामः ॥
धर्मवर्म नर्मद गुनग्रामः ❀ संतत संतनोतु मम रामः ॥

अनसूया सीता मिलन



ऋषिपत्नी मन सुख अधिकाई * आशिष दीन्ह निकट बैठाई ॥

भार्गव भूषण प्रेस, बनारस ।

जदपि बिरजब्यापक अबिनासी ❀ सब के हृदय निरंतर बासी ॥
तदपि अनुज-श्री-सहित खरारी ❀ बसतु मनसि मम काननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहु स्वामी ❀ सगुन अगुन उर-अंतर-जामी ॥
जो कोसलपति राजिवनयना ❀ करौ सो राम हृदय मम अयना ॥
अस अभिमान जाइ जनि भोरें ❀ मैं सेवक रघुपति पति मोरें ॥
सुनि मुनिवचन राममन भाये ❀ बहुरि हरषि मुनिवर उर लाये ॥
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही ❀ जो बर माँगहु देउँ सो तोही ॥
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाँचा ❀ समुझि न परै झूठ का साँचा ॥
तुम्हहिं नीक लागै रघुराई ❀ सो मोहि देहु दास-सुख-दाई ॥
अबिरल भगति बिरति बिग्याना ❀ होहु सकल-गुन-ग्यान-निधाना ॥
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा ❀ अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दोहा—अनुज-जानकी-सहित प्रभु, चाप-बान-धर राम ।
मम हियगगन इंदु इव, बसहु सदा निःकाम ॥११॥

एवमस्तु कहि रमानिवासा ❀ हरषि चले कुंभज रिषि पासा ॥
बहुत दिवस गुरुदरसन पाये ❀ भये मोहिं एहि आश्रम आये ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं ❀ तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
देखि कृपानिधि मुनिचतुराई ❀ लिये संग बिहँसे दोउ भाई ॥
पंथ कहत निज भगति अनूपा ❀ मुनिआस्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
तुरत सुतीच्छन गुरु पहिं गयऊ ❀ करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥
नाथ कोसलाधीसकुमारा ❀ आये मिलन जगतआधारा ॥
राम अनुज समेत बैदेही ❀ निसि दिनु देव जपत हहु जेही ॥
सुनत अगस्त तुरत उठि धाये ❀ हरि बिलोकि लोचन जल छाये ॥
मुनि-पद-कमल परे दोउ भाई ❀ रिषि अतिप्रीति लिये उर लाई ॥
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी ❀ आसन पर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा ❀ मोहि सम भागवंत नहिं दूजा ॥
जहँ लगि रहे अपर मुनिबृंदा ❀ हरषे सब बिलोकि सुखकंदा ॥

दोहा—मुनिसमूह महँ बैठे, सनमुख सब की ओर ।
सरदइंदु तन चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥१२॥

तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं ❀ तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ ❀ ता तें तात न कहि समुझायउँ ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही ❀ जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु वानी ❀ पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥
तुम्हरेइ भजनप्रभाव अघारी ❀ जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ॥
ऊमरितरु बिसाल तव माया ❀ फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जंतुसमाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
ते फलभच्छक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सोउ काला ॥
ते तुम्ह सकल लोकपति साईं ❀ पूछेहु मोहि मनुज की नाईं ॥
यह बर माँगौं कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय श्री-अनुज-समेता ॥
अबिरल भगति बिरति सतसंगा ❀ चरनसरोरुह प्रीति अभंगा ॥
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता ❀ अनुभवगम्य भजहिं जेहि संता ॥
अस तव रूप बखानउँ जानउँ ❀ फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ ॥
संतत दासन्ह देहु बड़ाई ❀ ता तें मोहि पूछेहु रघुराई ॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ❀ पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू ❀ उग्र साप मुनिबर कर हरहू ॥
बास करहु तहँ रघु-कुल-राया ❀ कीजिय सकल मुनिन्ह पर दाया ॥
चले राम मुनिआयसु पाई ❀ तुरतहिं पंचबटी नियराई ॥

दोहा—गीधराज सों भेंट भइ, बहु बिधि प्रीति दृढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु, रहे परनगृह छाइ ॥१३॥

जब तें राम कीन्ह तहँ वासा ❀ सुखी भये मुनि बीती त्रासा ॥
गिरि बन नदी ताल छबि छाये ❀ दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाये ॥
खग-मृग-बृंद अनंदित रहहीं ❀ मधुप मधुर गुंजत छबि लहहीं ॥
सो बन बरनि न सक अहिराजा ❀ जहाँ प्रगट रघुवीर बिराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना ❀ लछिमन बचन कहे छलहीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❀ मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं ॥
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा ❀ सब तजि करौं चरन-रज-सेवा ॥
कहहु ग्यान बिराग अरु माया ❀ कहहु सो भगति करहु जेहि दाया ॥

दोहा—ईस्वर जीवहि भेद प्रभु, कहहु सकल समुझाइ।
जा तें होइ चरन रति, सोक मोह भ्रम जाइ ॥१४॥

थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई ❀ सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया ❀ जेहिं बस कीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई ❀ सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ ❀ बिद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा ❀ जा बस जीव परा भवकूपा ॥
एक रचइ जग गुनबस जा कें ❀ प्रभुप्रेरित नहिं निज बल ता कें ॥
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं ❀ देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम बिरागी ❀ तृनसम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥

दोहा—माया ईस न आपु कहँ, जान कहिय सो जीव।
बंध मोच्छप्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥१५॥

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना ❀ ग्यान-मोच्छ-प्रद बेद बखाना ॥
जा तें बेगि द्रवउँ मैं भाई ❀ सो मम भगति भगत-सुखदाई ॥
सो सुतंत्र अवलंब न आना ❀ तेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना ॥
भगति तात अनुपम सुखमूला ❀ मिलइ जो संत होहिं अनुकूला ॥
भगति के साधन कहउँ बखानी ❀ सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं बिप्रचरन अतिप्रीती ❀ निज निज कर्म निरत स्रुतिरीती ॥
यहि कर फल पुनि बिषयबिरागा ❀ तब मम धरम उपज अनुरागा ॥
स्रवनादिक नव भगति दृढ़ाहीं ❀ मम लीला रति अति मन माहीं ॥
संत-चरन-पंकज अति प्रेमा ❀ मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा ❀ सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा ॥
मम गुन गावत पुलक सरीरा ❀ गदगद गिरा नयन बह नीरा ॥
काम आदि मद दंभ न जा के ❀ तात निरंतर बस मैं ता के ॥

दोहा—बचन करम मन मोरि गति, भजन करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ, करउँ सदा बिस्राम ॥१६॥

भगतिजोग सुनि अति सुख पावा ❀ लछिमन प्रभुचरनन्हि सिरु नावा ॥
एहि बिधि गये कछुक दिन बीती ❀ कहत बिराग ग्यान गुन नीती ॥

सूपनखा रावन कै बहिनी ❀ दुष्टहृदय दारुन जसि अहिनी ॥
पंचवटी सो गइ एक बारा ❀ देखि बिकल भइ जुगल कुमारा ॥
भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❀ पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ बिकल सक मनहिं न रोकी ❀ जिमि रबिमनि द्रव रबिहिं बिलोकी ॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई ❀ बोली बचन बहुत मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मो सम नारी ❀ यह सँजोग-बिधि रचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं ❀ देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं ॥
ता तें अब लगि रहिउँ कुमारी ❀ मन माना कछु तुम्हहिं निहारी ॥
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता ❀ अहइ कुँआर मोर लघु भ्राता ॥
गइ लछिमन रिपुभगिनी जानी ❀ प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी ॥
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा ❀ पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समर्थ कोसल-पुर-राजा ❀ जो कछु करहिं उन्हहिं सब छाजा ॥
सेवक सुख चह मान भिखारी ❀ ब्यसनी धन सुभगति बिभिचारी ॥
लोभी जसु चह चार गुमानी ❀ नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥
पुनि फिरि राम निकट सो आई ❀ प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई ॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई ❀ जो तृन तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसिआनि राम पहिं गई ❀ रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
सीतहि सभय देखि रघुराई ❀ कहा अनुज सन सैन बुझाई ॥

दोहा--लछिमन अतिलाघव सो, नाक कान बिनु कीन्हि ।
ता के कर रावन कहँ मनहुँ चुनौती दीन्हि ॥ १७ ॥

नाक कान बिनु भइ बिकरारा ❀ जनु स्रव सैल गेरु कै धारा ॥
खरदूषन पहिं गइ बिलपाता ❀ धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई ❀ जातुधान सुनि सेन बनाई ॥
धाए निसिचर निकरबरूथा ❀ जनु सपच्छ कज्जल-गिरि-जूथा ॥
नानाबाहन नानाकारा ❀ नानायुधधर घोर अपारा ॥
सूपनखा आगे करि लीन्ही ❀ असुभरूप स्रुति-नासा-हीनी ॥
असगुन अमित होहिं भयकारी ❀ गनहिं न मृत्युबिबस सब झारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ❀ देखि बिकट भट अति हरषाहीं ॥

कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई ❁ धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥
धूरि पूरि नभमंडल रहा ❁ राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर ❁ आवा निसि-चर-कटकु भयंकर ॥
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी ❁ चले सहित श्री सर-धनु-पानी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा ❁ बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छंद—कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों ।
मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गज-राज-घटा निहारि कै ॥

सोरठा-आइ गये बग मेल, धरहु धरहु धावत सुभट ।
जथा बिलोकि अकेल, बालरबिहिं घेरत दनुज ॥१८॥

प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी ❁ थकित भई रजनी-चर-धारी ॥
सचिव बोलि बोले खरदूषन ❁ यह कोउ नृपबालक नरभूषन ॥
नाग असुर सुर नर मुनि जेते ❁ देखे जिते हते हम केते ॥
हम भरि जनम सुनहु सब भाई ❁ देखी नहिं असि सुंदरताई ॥
जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा ❁ बध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
देहु तुरत निजनारि दुराई ❁ जीअत भवन जाहु दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु ❁ तासु बचन सुनि आतुर आवहु ॥
दूतन्ह कहा राम सन जाई ❁ सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
हम क्षत्री मृगया बन करहीं ❁ तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं ❁ एक बार कालहु सन लरहीं ॥
जद्यपि मनुज दनुज-कुल-घालक ❁ मुनिपालक खल सालक बालक ॥
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू ❁ समरबिमुख मैं हतउँ न काहू ॥
रन चढ़ि करिय कपट चतुराई ❁ रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ ❁ सुनि खरदूषन उर अति दहेऊ ॥

छंद—उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये बिकट भट रजनीचरा ।
सर-चाप-तोमर-सक्ति-सूल-कृपान-परिघ-परसु-धरा ॥

प्रभु कीन्हि धनुषटकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भये बधिर ब्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा॥

दोहा--सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति।
लागे बरषन राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति॥
तिन्ह के आयुध तिल सम, करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन स्रवन लगि, पुनि छाँड़े निज तीर॥१९॥

तोमर छंद—तब चले बान कराल ❀ फुंकरत जनु बहु ब्याल॥
कोपेउ समर श्रीराम ❀ चले बिसिख निसित निकाम॥
अवलोकि खरतर तीर ❀ मुरि चले निसिचर बीर॥
भये क्रुद्ध तीनिउ भाइ ❀ जो भागि रन तें जाइ॥
तेहि बधब हम निजपानि ❀ फिरे मरन मन महुँ ठानि॥
आयुध अनेक प्रकार ❀ सनमुख तें करहिं प्रकार॥
रिपु परम कोपे जानि ❀ प्रभु धनुष सर संधानि॥
छाँड़े बिपुल नाराच ❀ लगे कटन बिकट पिसाच॥
उर सीस भुज कर चरन ❀ जहँ तहँ लगे महि परन॥
चिक्करत लागत बान ❀ धर परत कु - धर - समान॥
भट कटत तन सतखंड ❀ पुनि उठत करि पाखंड॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड ❀ बिनु मौलि धावत रुंड॥
खग कंक काक सृगाल ❀ कटकटहिं कठिन कराल॥

छंद—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं॥
रघु-बीर-बान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरु धरु धरु करहिं भयंकर गिरा॥
अंतावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं।
संग्राम-पुर-बासी मनहुँ बहुबाल गुड़ी उड़ावहीं॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट कहँरत परे।
अवलोकि निज दल बिकट भट तिसिरादि खर दूषन फिरे॥
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहिं बारहीं।

करि कोप श्रीरघुबीर पर अगनित निसाचर डारहीं ॥
प्रभु निमिष महुँ रिपुसर निवारि प्रचारि डारे सायका ।
दस दस बिसिख उर माँझ मारे सकल निसि-चर-नायका ॥
महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अतिघनी ।
सुर डरत चौदहसहस प्रेत बिलोकि एक अवधधनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुक कर्‌यो ।
देखहिं परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्‌यो ॥

दोहा--राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारे, छन महुँ कृपानिधान ॥
हरषित बरषहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निसान ।
अस्तुति करि करि सब चले, सोभित बिबिध बिमान ॥२०॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते ❀ सुर नर मुनि सब के भय बीते ॥
तब लछिमनु सीतहिं लै आये ❀ प्रभु पद परत हरषि उर लाये ॥
सीता चितव स्याम मृदु गाता ❀ परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्री - रघु - नायक ❀ करत चरित सुर-मुनि-सुख-दायक ॥
धुआँ देखि खरदूषन केरा ❀ जाइ सुपनखा रावनु प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करि भारी ❀ देस कोस कै सुरति बिसारी ॥
करसि पान सोवसि दिनु राती ❀ सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥
राजु नीति बिनु धन बिनु धर्मा ❀ हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ॥
बिद्या बिनु बिबेक उपजाये ❀ स्रम फल पढ़े किये अरु पाये ॥
संग तें जती कुमंत्र तें राजा ❀ मान तें ज्ञान पान तें लाजा ॥
प्रीति प्रनय बिनु मद तें गुनी ❀ नासहिं बेगि नीति असि सुनी ॥

सोरठा--रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गनिय न छोट करि ।
अस कहि बिबिध बिलाप, करि लागी रोदन करन ॥

दोहा--सभा माँझ परि ब्याकुल, बहु प्रकार कह राइ ।
तोहि जियत दसकंधर, मोरि कि असि गति होइ ॥२१॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई ❀ समुझाइ गहि बाँह उठाई ॥
कह लंकेस कहसि निज बाता ❀ केइँ तव नासा कान निपाता ॥

अवधनृपति दसरथ के जाये ❀ पुरुषसिंह बन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी ❀ रहित निसाचर करिहहिं धरनी ॥
जिन्हकर भुजबल पाइ दसानन ❀ अभय भये बिचरत मुनि कानन ॥
देखत बालक कालसमाना ❀ परमधीर धन्वी गुन नाना ॥
अतुलित-बल-प्रताप दोउ भ्राता ❀ खल-बध-रत -सुर-मुनिसुख-दाता ॥
सोभाधाम राम अस नामा ❀ तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥
रूपरासि बिधि नारि सँवारी ❀ रति सतकोटि तासु बलिहारी ॥
तासु अनुज काटे स्रुति नासा ❀ सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा ॥
खरदूषन सुनि लगे पुकारा ❀ छन महँ सकल कटक उन्ह मारा ॥
खर-दूषन-तिसिरा कर घाता ❀ सुनि दससीस जरे सब गाता ॥

दोहा—सूपनखहि समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति ।
गयेउ भवन अति-सोच-बस, नींद परइ नहिं राति ॥२२॥

सुर नर असुर नाग खग माहीं ❀ मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं ॥
खरदूषन मोहिं सम बलवंता ❀ तिन्हहिं को मारइ बिनु भगवंता ॥
सुररंजन भंजन महिभारा ❀ जौं भगवंत लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैं जाइ बयरु हठि करऊँ ❀ प्रभुसर प्रान तजे भव तरऊँ ॥
होइहि भजनु न तामस देहा ❀ मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥
जौं नररूप भूपसुत कोऊ ❀ हरिहउँ नारि जीति रन दोऊ ॥
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ ❀ बस मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई ❀ सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

दोहा—लछिमन गये बनहिं जब, लेन मूल फल कंद ।
जनकसुता सन बोले, बिहँसि कृपा-सुख-बृंद ॥२३॥

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला ❀ मैं कछु करब ललित नरलीला ॥
तुम्ह पावक महँ करहु निवासा ❀ जौं लगि करउँ निसा-चर-नासा ॥
जबहिं राम सबु कहा बखानी ❀ प्रभु पद धरि हिय अनल समानी ॥
निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता ❀ तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥
लछिमनहूँ यह मरम न जाना ❀ जो कछु चरित रचेउ भगवाना ॥
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा ❀ नाइ माथ स्वारथरत नीचा ॥

नवनि नीच कै अति दुखदाई ❀ जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खल कै प्रिय बानी ❀ जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

दोहा–करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ।
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात ॥२४॥

दसमुख सकल कथा तेहि आगे ❀ कही सहित अभिमान अभागे ॥
होहु कपटमृग तुम्ह छलकारी ❀ जेहि बिधि हरि आनउँ नृपनारी ॥
तेहि पुनि कहा सुनहु दससीसा ❀ ते नररूप चरा – चर – ईसा ॥
ता सों तात बयरु नहिं कीजै ❀ मारे मरिय जिआये जीजै ॥
मुनिमख राखन गयउ कुमारा ❀ बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
सत जोजन आयउँ छन माहीं ❀ तिन्ह सन बयरु किये भल नाहीं ॥
भइ मम कीट भृंग की नाईं ❀ जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥
जौं नर तात तदपि अति सूरा ❀ तिन्हहिं बिरोधि न आइहि पूरा ॥

दोहा–जेहि ताड़का सुबाहु हति, खंडेउ हरकोदंड ।
खर दूषन तिसिरा बधेउ, मनुज कि अस बरिबंड ॥२५॥

जाहु भवन कुलकुसल बिचारी ❀ सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी ॥
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा ❀ कहु जग मोहि समान को जोधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना ❀ नवहि बिरोधे नहिं कल्याना ॥
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी ❀ बैद्य बंदि कबि भानस गुनी ॥
उभय भाँति देखा निजमरना ❀ तब ताकेसि रघु-नायक-सरना ॥
उतरु देत मोहि बधब अभागे ❀ कस न मरउँ रघु-पति-सर लागे ॥
अस जिय जानि दसाननसंगा ❀ चला राम-पद-प्रेम अभंगा ॥
मन अति हरष जनाव न तेही ❀ आजु देखिहउँ परमसनेही ॥

छंद–निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहउँ ।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपा-निकेत-पद मन लाइहउँ ॥
निर्बानदायक क्रोध जा कर भगति अबसहिं बस करी ।
निजपानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥

दोहा–मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान ।
फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहउँ, धन्य न मो सम आन ॥२६॥

तेहि बन निकट दसानन गयऊ ❀ तब मारीच कपटमृग भयऊ ॥
अतिबिचित्र कछु बरनि न जाई ❀ कनकदेह मनि रचित बनाई ॥
सीता परमरुचिर मृग देखा ❀ अंग अंग सुमनोहर बेखा ॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला ❀ एहि मृग कर अतिसुंदर छाला ॥
सत्यसंध प्रभु बध कर एही ❀ आनहु चर्म कहति बैदेही ॥
तब रघुपति जानत सब कारन ❀ उठे हरषि सुरकाज सँवारन ॥
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा ❀ करतल चाप रुचिरसर साँधा ॥
प्रभु लछिमनहिं कहा समुझाई ❀ फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ॥
सीता केरि करेहु रखवारी ❀ बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी ❀ धाये राम सरासन साजी ॥
निगम नेति सिव ध्यान न पावा ❀ मायामृग पाछे सो धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❀ कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई ॥
प्रगटत दुरत करत छल भूरी ❀ एहि बिधि प्रभुहि गयउ लेइ दूरी ॥
तब तकि राम कठिन सर मारा ❀ धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥
लछिमन कै प्रथमहि लै नामा ❀ पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा ॥
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा ❀ सुमिरेसि राम समेत सनेहा ॥
अंतरप्रेमु तासु पहिचाना ❀ मुनि-दुर्लभ-गति दीन्हि सुजाना ॥

दोहा--बिपुल सुमन सुर बरषहिं, गावहिं प्रभु-गुन-गाथ ।
निजपद दीन्ह असुर कहुँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा ❀ सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
आरतगिरा सुनी जब सीता ❀ कह लछिमन सन परम सभीता ॥
जाहु बेगि संकट अति भ्राता ❀ लछिमन बिहँसि कहा सुनु माता ॥
भृकुटिबिलास सृष्टि लय होई ❀ सपनेहु संकट परइ कि सोई ॥
मरमबचन जब सीता बोला ❀ हरिप्रेरित लछिमनमन डोला ॥
बन-दिसि-देव सौंपि सब काहू ❀ चले जहाँ रावन-ससि-राहू ॥
सून बीच दसकंधर देखा ❀ आवा निकट जती के भेखा ॥
जा के डर सुर असुर डेराहीं ❀ निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं ॥
सो दससीस स्वान की नाईं ❀ इत उत चितइ चली भड़िहाईं ॥

इमि कुपंथ पग देत खगेसा ❀ रह न तेज तन बुधिलव - लेसा ॥
नाना बिधि कहि कथा सुहाई ❀ राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
कह सीता सुनु जती गोसाईं ❀ बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥
तब रावन निज रूप देखावा ❀ भई सभय जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा ❀ आइ गयउ प्रभु खल रहु ठाढ़ा ॥
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा ❀ भयसि कालबस निसिचर नाहा ॥
सुनत बचन दससीस लजाना ❀ मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥

दोहा—क्रोधवंत तब रावन, लीन्हेसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर, भय रथ हाँकि न जाइ ॥ २८॥

हा जगदेकबीर रघुराया ❀ केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतिहरन सरन-सुख-दायक ❀ हा रघु-कुल-सरोज-दिन-नायक ॥
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा ❀ सो फल पायेउँ कीन्हेउँ रोसा ॥
बिबिधि बिलाप करति बैदेही ❀ भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा ❀ पुरोडास चह रासभ खावा ॥
सीता के बिलाप सुनि भारी ❀ भये चराचर जीव दुखारी ॥
गीधराज सुनि आरत बानी ❀ रघु-कुल-तिलक-नारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हे जाई ❀ जिमि मलेछबस कपिला गाई ॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा ❀ करिहउँ जातुधान कै नासा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसे ❀ छूटइ पबि पर्बत कहुँ जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही ❀ निर्भय चलेसि न जानेसि मोही ॥
आवत देखि कृतांतसमाना ❀ फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई ❀ मम बल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू एहा ❀ मम करतीरथ छाडिहि देहा ॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा ❀ कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू ❀ नाहिं त अस होइहि बहुबाहू ॥
राम-रोष - पावक अतिघोरा ❀ होइहि सलभ सकलकुल तोरा ॥
उतरु न देत दसानन जोधा ❀ तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा ❀ सीतहिं राखि गीध पुनि फिरा ॥

चोचन मारि बिदारेसि देही ❀ दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥
तब सक्रोध निसिचर खिसियाना ❀ काढेसि परमकराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी ❀ सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥
सीतहि जान चढाइ बहोरी ❀ चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जात नभ सीता ❀ ब्याधबिबस जनु मृगी सभीता ॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी ❀ कहि हरिनामु दीन्ह पट डारी ॥
एहि बिधि सीतहि सो लेइ गयऊ ❀ बन असोक महँु राखत भयऊ ॥

दोहा--हारि परा खल बहुबिधि, भय अरु प्रीति देखाइ ।
नव असोकपादप तर, राखेसि जतनु कराइ ॥
जेहि बिधि कपटकुरंग सँग, धाइ चले श्रीराम ।
सो सबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ॥२९॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी ❀ बाहिज चिंता कीन्हि बिसेखी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात बचन मम पेली ॥
निसि-हर निकर फिरहिं बन माहीं ❀ मम मन सीता आस्रम नाहीं ॥
गहि पदकमल अनुज कर जोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ॥
अनुजसमेत गये प्रभु तहवाँ ❀ गोदावरितट आश्रम जहवाँ ॥
आस्रम देखि जानकीहीना ❀ भये बिकल जस प्राकृत दीना ॥
हा गुनखानि जानकी सीता ❀ रूप - सील - ब्रत - नेम - पुनीता ॥
लछिमन समुझाये बहु भाँती ❀ पूछत चले लता तरु पाती ॥
हे खग मृग हे मधुकरस्रेनी ❀ तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना ❀ मधुपनिकर कोकिला प्रबीना ॥
कुंद कली दाडिम दामिनी ❀ कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥
बरुनपास मनोजधनु हंसा ❀ गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं ❀ नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू ❀ हरषे सकल पाइ जनु राजू ॥
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं ❀ प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी ❀ मनहुँ महाबिरही अतिकामी ॥
पूरनकाम राम सुखरासी ❀ मनुजचरित कर अज अबिनासी ॥

आगे परा गीधपति देखा ❀ सुमिरत रामचरन जिन्ह रेखा ॥

दोहा—करसरोज सिर परसेउ, कृपासिंधु रघुबीर ।
निरखि राम-छबि-धाम-मुख, बिगत भई सब पीर ॥३०॥

तब कह गीध बचन धरि धीरा ❀ सुनहु राम भंजन भवभीरा ॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही ❀ तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥
लेइ दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं ❀ बिलपति अति कुररी की नाईं ॥
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना ❀ चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता ❀ मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता ॥
जा कर नाम मरत मुख आवा ❀ अधमहुँ मुकुत होइ स्रुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे ❀ राखउँ देह नाथ केहि लागे ॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई ❀ तात कर्म निज तें गति पाई ॥
परहित बस जिन्ह के मन माहीं ❀ तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा ❀ देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥

दोहा—सीताहरन तात जनि, कहेउ पिता सन जाइ ।
जौं मैं राम त कुल सहित, कहिहि दसानन आइ ॥३१॥

गीध देह तजि धरि हरिरूपा ❀ भूषन बहु पट पीत अनूपा ॥
स्याम गात बिसाल भुज चारी ❀ अस्तुति करत नयन भरि बारी ॥

छंद—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही ।
जस – सीस – बाहु – प्रचंड–खंडन चंडसर मंडन मही ॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव-आयत-लोचनं ।
नित नौमि राम कृपाल बाहुबिसाल भव-भय-मोचनं ॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोविंद गोपर द्वंदहर बिग्यानघन धरनीधरं ॥
जे राममंत्र जपंत संत अनंत जन-मन-रंजनं ।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादि-खल-दल-गंजनं ॥
जेहि स्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
सो प्रगट करुनाकंद सोभाबृंद अग जग मोहई ।

मम हृदय–पंकज–भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ॥
जो अगम सुगम सुभावनिर्मल असम सम सीतल सदा ।
पस्यंति जे जोगी जतनु करि करत मन गो बस जदा ॥
सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रि—भुवन—धनी ।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ॥

दोहा--अबिरल भगति माँगि बर, गीध गयेउ हरिधाम ।
तेहि की क्रिया जथोचित, निज कर कीन्ही राम ॥३२॥

कोमलचित अति दीनदयाला ❀ कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गीध अधमखग आमिषभोगी ❀ गति दीन्ही जो जाँचत जोगी ॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी ❀ हरि तजि होहिं बिषयअनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत दोउ भाई ❀ चले बिलोकत बन बहुताई ॥
संकुल लता बिटप घन कानन ❀ बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पंथ कबंध निपाता ❀ तेहि सब कही साप कै बाता ॥
दुर्बासा मोहि दीन्ही सापा ❀ प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही ❀ मोहि न सुहाइ ब्रह्म-कुल-द्रोही ॥

दोहा--मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर भू-सुर-सेव ।
मोहि समेत बिरंचि सिव, बस ता के सब देव ॥३३॥

सापत ताडत परुष कहंता ❀ बिप्रपूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय बिप्र सील-गुन-हीना ❀ सूद्र न गुन-गन-ज्ञान-प्रबीना ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा ❀ निज-पद-प्रीति देखि मन भावा ॥
रघु-पति चरन-कमल सिरु नाई ❀ गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति रामु उदारा ❀ सबरी के आस्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि रामु गृह आये ❀ मुनि के बचन समुझि जिय भाये ॥
सरसि-ज-लोचन बाहुबिसाला ❀ जटामुकुट सिर उर बनमाला ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई ❀ सबरी परी चरन लपटाई ॥
प्रेममगन मुख बचन न आवा ❀ पुनि पुनि पदसरोज सिरु नावा ॥
सादर जल लेइ चरन पखारे ❀ पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दोहा--कंद मूल फल सुरस अति, दिये राम कहुँ आनि।
प्रेमसहित प्रभु खाये, बारंबार बखानि ॥३४॥

पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी ❀ प्रभुहिं बिलोकि प्रीति उर बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करउँ तुम्हारी ❀ अधम जाति मैं जड़मति भारी ॥
अधम तें अधम अधम अति नारी ❀ तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ❀ मानउँ एक भगति कर नाता ॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई ❀ धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगतिहीन नर सोहइ कैसा ❀ बिनु जल बारिद देखिय जैसा ॥
नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं ❀ सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा ❀ दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा--गुरु-पद-पंकज-सेवा, तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुनगन, करइ कपट तजि गान ॥३५॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा ❀ पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा ❀ निरत निरंतर सज्जन धर्मा ॥
सातव सम मोहि मय जग देखा ❀ मो तें संत अधिक करि लेखा ॥
आठव जथालाभ संतोषा ❀ सपनेहु नहिं देखइ परदोषा ॥
नवम सरल सब सन छलहीना ❀ मम भरोस हिय हरष न दीना ॥
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे ❀ सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे ॥
जोगि - बृंद - दुर्लभ - गति जोई ❀ तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दरसनफल परम अनूपा ❀ जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कै सुधि कहु भामिनि ❀ जानहि कहु जो करि-बर-गामिनि ॥
पंपासरहि जाहु रघुराई ❀ तहँ होइहि सुग्रीवमिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा ❀ जानतहू पूछहु मतिधीरा ॥
बार बार प्रभुपद सिरु नाई ❀ प्रेमसहित सब कथा सुनाई ॥

छंद--कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे।
तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू॥

दोहा--जातिहीन अघ जनम महि, मुकुति कीन्हि असि नारि।
महा-मंद-मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥३६॥

चले राम त्यागा बन सोऊ ❀ अ-तुलित-बल नरकेहरि दोऊ॥
बिरही इव प्रभु करत बिषादा ❀ कहत कथा अनेक संबादा॥
लछिमन देखु बिपिन कइ सोभा ❀ देखत केहि कर मन नहिं छोभा॥
नारि सहित सब खग-मृग-बृंदा ❀ मानहुँ मोरि करत हहिं निंदा॥
हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं ❀ मृगी कहहिं तुम्ह कहँ भय नाहीं॥
तुम्ह आनंद करहु मृगजाये ❀ कंचनमृग खोजन ए आये॥
संग लाइ करिनी करि लेहीं ❀ मानहुँ मोहि सिखावन देहीं॥
सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिय ❀ भूप सुसेबित बस नहिं लेखिय॥
राखिय नारि जदपि उर माहीं ❀ जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं॥
देखहु तात बसंत सुहावा ❀ प्रियाहीन मोहि भय उपजावा॥

दोहा--बिरहबिकल बलहीन मोहि, जानेसि निपट अकेल।
सहित बिपिन मधुकर खग, मदन कीन्हि बगमेल॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तब, कटकु हटकि मनजात॥३७॥

बिटप बिसाल लता अरुझानी ❀ बिबिध बितान दिये जनु तानी॥
कदलि तालबर ध्वजा पताका ❀ देखि न मोह धीर मन जाका॥
बिबिध भाँति फूले तरु नाना ❀ जनु बानैत बने बहु बाना॥
कहुँ कहुँ सुंदर बिटप सुहाये ❀ जनु भट बिलग बिलग होइ छाये॥
कूजत पिक मानहुँ गज माते ❀ ढेक महोख ऊँट बिसराते॥
मोर चकोर कीर बर बाजी ❀ पारावत मराल सब ताजी॥
तीतर लावक पद-चर-जूथा ❀ बरनि न जाइ मनोजबरूथा॥
रथ गिरिसिला दुंदुभी झरना ❀ चातक बंदी गुनगन बरना॥
मधु-कर-मुखर भेरि सहनाई ❀ त्रिबिध बयारि बसीठी आई॥
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे ❀ बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे॥

सेवरी मंगल



कन्दमूल फल सरस अति दिये रामकहँ आनि ।

लछिमन देखत काम अनीका ❀ रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ॥
एहि के एक परमबल नारी ❀ तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी ॥

दोहा—तात तीनि अतिप्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञानधाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ ॥
लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि।
क्रोध के परुषवचन बल, मुनिबर कहहिं बिचारि ॥३८॥

गुनातीत स-चराचर-स्वामी ❀ राम उमा सब अंतरजामी ॥
कामिन्ह कै दीनता देखाई ❀ धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई ॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया ❀ छूटहिं सकल राम की दाया ॥
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला ❀ जा पर होइ सो नट अनुकूला ॥
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना ❀ सत हरि भजन जगत सब सपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोबरतीरा ❀ पंपा नाम सुभग गंभीरा ॥
संतहृदय जस निर्मल बारी ❀ बाँधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँ तहँ पियहिं बिबिध मृग नीरा ❀ जनु उदारगृह जाचकभीरा ॥

दोहा—पुरइनि सघन ओट जल, बेगि न पाइय मर्म।
मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं।
जथा धर्मसीलन्ह के, दिन सुखसंजुत जाहिं ॥३९॥

बिकसे सरसिज नाना रंगा ❀ मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा ❀ प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा ॥
चक्रबाक - बक - खग - समुदाई ❀ देखत बनइ बरनि नहिं जाई ॥
सुंदर खग - गन - गिरा सुहाई ❀ जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये ❀ चहुँ दिसि कानन बिटप सुहाये ॥
चंपक बकुल कदंब तमाला ❀ पाटल पनस परास रसाला ॥
नवपल्लव कुसुमित तरु नाना ❀ चंचरीकपटली कर गाना ॥
सीतल मंद सुगंध सुभाऊ ❀ संतत बहइ मनोहर बाऊ ॥
कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं ❀ सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं ॥

दोहा--फल भारन नमि बिटप सब, रहे भूमि नियराइ।
परउपकारी पुरुप जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ॥४०॥

देखि राम अति रुचिर तलावा ❀ मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा ॥
देखी सुंदर तरु बर छाया ❀ बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❀ अस्तुति करि निज धाम सिधाये ॥
बैठे परमप्रसन्न कृपाला ❀ कहत अनुज सन कथा रसाला ॥
बिरहवंत भगवंतहिं देखी ❀ नारदमन भा सोच बिसेखी ॥
मोर साप करि अंगीकारा ❀ सहत राम नाना दुखभारा ॥
ऐसे प्रभुहिं बिलोकउँ जाई ❀ पुनि न बनिहि अस अवसरु आई ॥
यह बिचारि नारद करबीना ❀ गये जहाँ प्रभु सुखआसीना ॥
गावत राम चरित मृदुबानी ❀ प्रेमसहित बहुभाँति बखानी ॥
करत दंडवत लिये उठाई ❀ राखे बहुत बार उर लाई ॥
स्वागत पूछि निकट बैठारे ❀ लछिमन सादर चरन पखारे ॥

दोहा--नाना बिधि बिनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब, जोरि सरोरुहपानि ॥४१॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❀ सुंदर अगम सुगम बरदायक ॥
देहु एक बरु मागउँ स्वामी ❀ जद्यपि जानत अंतरजामी ॥
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ ❀ जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ ॥
कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी ❀ जो मुनि बर न सकहु तुम्ह माँगी ॥
जन कहुँ कछु अदेह नहिं मोरे ❀ अस बिस्वास तजहु जनि भोरे ॥
तब नारद बोले हरपाई ❀ अस बर मागउँ करउँ ढिठाई ॥
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका ❀ स्रुति कह अधिक एक तें एका ॥
राम सकल नामन्ह तें अधिका ❀ होउ नाथ अघ-खग-गन-बधिका ॥

दोहा--राका रजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडुगन बिमल, बसहु भगत-उर-व्योम ॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरप अति, प्रभुपद नायेउ माथ ॥४२॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी ❀ पुनि नारद बोले मृदुबानी ॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया ❀ मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥
तब बिवाह मैं चाहउँ कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारन करइ न दीन्हा ॥
सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा ❀ भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा ॥
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी ❀ जिमि बालकहिं राख महतारी ॥
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई ❀ तहँ राखइ जननी अरु गाई ॥
प्रौढ भये तेहि सुत पर माता ❀ प्रीति करइ नहिं पाछिल बाता ॥
मोरे प्रौढ-तनय-सम ज्ञानी ❀ बालक सुत सम दास अमानी ॥
जनहि मोर बल निज बल ताही ❀ दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं ❀ पायेहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं ॥

दोहा--काम-क्रोध-लोभादि-मद, प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महँ अतिदारुन दुखद, माया रूपी नारि ॥४३॥

सुनु मुनि कह पुरान स्रुति संता ❀ मोहबिपिन कहुँ नारि बसंता ॥
जप तप नेम जलाश्रय झारी ❀ होइ ग्रीसम सोखइ सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका ❀ इनहिं हरषप्रद बरषा एका ॥
दुर्बासना कुमुदसमुदाई ❀ तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥
धर्म सकल सरसी-रुह-बृंदा ❀ होइ हिम तिन्हहिं दहइ सुख मंदा ॥
पुनि ममता जवासबहुताई ❀ पलुहइ नारि सिसिररितु पाई ॥
पाप उलूकनिकर सुखकारी ❀ नारि निबिडरजनी अँधियारी ॥
बुधि बल सील सत्य सब मीना ❀ बंसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना ॥

दोहा--अवगुनमूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुखखानि ।
ता तें कीन्ह निवारन, मुनि मैं यह जिय जानि ॥४४॥

सुनि रघुपति के बचन सुहाये ❀ मुनि तन पुलक नयन भरि आये ॥
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती ❀ सेवक पर ममता अरु प्रीती ॥
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक नर मंद अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम बिज्ञानबिसारद ॥
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा ❀ कहहु नाथ भंजन भवभीरा ॥

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ ❀ जिन्ह तें मैं उन्हके बस रहऊँ ॥
षट विकार जित अनघ अकामा ❀ अचल अकिंचन सुचिसुख धामा ॥
अमित बोध अनीह मितभोगी ❀ सत्यसंध कबि कोविद जोगी ॥
सावधान मानद मदहीना ❀ धीर भगतिपथ परम प्रबीना ॥

दोहा—गुनागार संसार - दुख - रहित बिगत संदेह ।
तजि मम चरनसरोज प्रिय, जिन्ह कहुँ देह न गेह ॥४५॥

निज गुन स्रवन सुनत सकुचाहीं ❀ परगुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ❀ सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संजम नेमा ❀ गुरु - गोविंद - बिप्र - पद प्रेमा ॥
स्रद्धा छमा मइत्री दाया ❀ मुदिता मम पदप्रीति अमाया ॥
बिरति बिबेक बिनय बिग्याना ❀ बोध जथारथ वेदपुराना ॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ ❀ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❀ हेतु रहित पर-हित-रत-सीला ॥
सुनु मुनि साधुन के गुन जेते ❀ कहि न सकहिं सारद स्रुति तेते ॥

छंद—कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पदपंकज गहे ।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगतगुन निज मुख कहे ॥
सिरु नाहिं बारहिं बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये ।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरँग रये ॥

दोहा—रावनारिजस पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ।
रामभगति दृढ़ पावहिं, बिनु बिराग जप जोग ॥
दीप-सिखा-सम जुवतिजन, मन जनि होसि पतंग ।
भजहिं राम तजि काम मद, करहिं सदा सतसंग ॥४६॥

इति अरण्यकाण्ड समाप्त ।



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

किष्किन्धाकाण्ड

श्लोकौ

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ । मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्म्मवर्म्मौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथि गतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा । संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सोरठा--मुक्तिजनम महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस संभुभवानि, सो कासी सेइय कस न ॥
जरत सकल सुरबृंद, विषमगरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद, को कृपाल संकरसरिस ॥१॥

आगे चले बहुरि रघुराया ❀ रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवाँ ❀ आवत देखि अ-तुल-बल-सींवाँ ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुष-जुगल बल-रूप-निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसु जानि जिय सैन बुझाई ॥
पठये बालि होहिं मन मैला ❀ भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
बिप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ ❀ माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्यामल-गौर-सरीरा ❀ छत्रीरूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिनभूमि कोमल-पद-गामी ❀ कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥

मृदुल मनोहर सुंदर गाता ❀ सहत दुसह बन आतपबाता ॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ ❀ नरनारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दोहा--जगकारन तारन भव, भंजन धरनीभार ।
की तुम्ह अखिल-भुवन-पति, लीन्ह मनुजअवतार ॥ २ ॥

कोसलेसदसरथ के जाये ❀ हम पितुबचन मानि बन आये ॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई ❀ संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही ❀ बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु बिप्र निजकथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना ❀ सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥
पुलकित तन मुख आव न बचना ❀ देखत रुचिरबेष कै रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही ❀ हरष हृदय निजनाथहिं चीन्ही ॥
मोर न्याउ मैं पूछा साईं ❀ तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ॥
तव मायाबस फिरौं भुलाना ❀ ता तें मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दोहा--एकु मंद मैं मोहबस, कुटिलहृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥ ३ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे ❀ सेवक प्रभुहिं परै जनि भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहा ❀ सो निस्तरइ तुम्हारेहि छोहा ॥
ता पर मैं रघुबीर दोहाई ❀ जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक-सुत पति-मातु भरोसे ❀ रहइ असोच बनइ प्रभु पोसे ॥
अस कहि परेउ चरन अकुलाई ❀ निजतनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा ❀ निज-लोचन-जल सींचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना ❀ तैं मम प्रिय लछिमन तें दूना ॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ ❀ सेवकप्रिय अनन्यगति सोऊ ॥

दोहा--सो अनन्य जाके असि, मति न टरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवंत ॥ ४ ॥

देखि पवनसुत पतिअनुकूला ❀ हृदय हरष बीती सब सूला ॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई ❀ सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तेहि सन नाथ मयत्री कीजै ❀ दीन जानि तेहि अभय करीजै ॥

सो सीता कर खोज कराइहि ❀ जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥
एहि बिधि सकलकथा समुझाई ❀ लिये दुओ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहुँ देखा ❀ अतिसय जनम धन्य करि लेखा ॥
सादर मिलेउ नाइ पदमाथा ❀ भेंटेउ अनुजसहित रघुनाथा ॥
कपि कर मन विचार एहि रीती ❀ करिहहिं बिधि मो सन ये प्रीती ॥

दोहा--तब हनुमंत उभय दिसि, कहि सब कथा सुनाइ।
पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ ५ ॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा ❀ लछिमन रामचरित सब भाखा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी ❀ मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा ❀ बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा ॥
गगनपंथ देखी मैं जाता ❀ परबस परी बहुत बिलपाता ॥
राम राम हा राम पुकारी ❀ हमहिं देखि दीन्हेउ पट डारी ॥
माँगा राम तुरत तेहि दीन्हा ❀ पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❀ तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहउँ सेवकाई ❀ जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥

दोहा--सखावचन सुनि हरषे, कृपासिंधु बलसींवँ।
कारन कवन बसहु बन, मोहि कहहु सुग्रीवँ ॥ ६ ॥

अथ क्षेपक

सुग्रीवहिं प्रभु पूछत कैसे ❀ बहु अजान कोउ मानुष जैसे ॥
मात पिता कर नाम बतावहु ❀ निज उतपति सब मोहिं सुनावहु ॥
रामचन्द्र के सुनि अस बचना ❀ कहन लगे सब अपनी रचना ॥
चतुरानन निज नयन उघारी ❀ कीच काढ़ि महि ऊपर डारी ॥
तासों भयो एक कपि भारी ❀ तेहि समान नहिं कोउ बलकारी ॥
ऋच्छराज कहि ताहि पुकार्यो ❀ पुनि तिहिविधि यह बचन उचार्यो ॥
बनमें जाय मधुर फल खावहु ❀ दुष्ट असुर मारहु जहँ पावहु ॥
विधिकी अस आज्ञा धरि शीशा ❀ दक्षिण दिशि धावा सो कीशा ॥

दोहा--ऋच्छराज बन महँ फिरत, निज इच्छा अनुसार।
असुर दैत्य जहँ तहँ मिलें, सब कहँ डारत मार ॥

कूप रुचिर इक वन महँ पावा ❀ ताके निकट तुरत चलि आवा ॥
देखी जल विच निज परछाहीं ❀ जाना असुर कूप के माहीं ॥
ताके वध को सो बलवाना ❀ कूद पर्‌यो नहिं मनहिं डेराना ॥
कूदतही कपि दैव बमाना ❀ नारी रूप भयो बलवाना ॥
सुनहु गौरि कौतुक कर बाता ❀ आई बहिर सहित शुभ गाता ॥
अति विचित्र लखि सुन्दरताई ❀ तापर मोहे रवि सुरराई ॥
इन्द्रवीर्य बालन पर गिरेऊ ❀ ताते बाली प्रकटत भयऊ ॥
वीर्य दिवाकर कंठ गिरायो ❀ उपज्यो मैं सुग्रीव कहायो ॥
ता पाछे सुनु राम कृपाला ❀ नारी ते भा नर तत्काला ॥
पुनि मम तात सुखी मन माहीं ❀ हमहिं संग लेगा विधि पाहीं ॥

दोहा--ब्रह्मलोक में पहुँच करि, कीन्हेसि विधिहि प्रणाम ।
सुत उतपति विधिवत कही, और बतायसु नाम ॥

सुनि ब्रह्मा बोले मुसकाई ❀ हरि इच्छा भावी अधिकाई ॥
अब तुम बास करहु तिहि ठहवाँ ❀ किष्किन्धा शुभ थल है जहवाँ ॥
विधिकी आज्ञा शीश चढ़ाई ❀ किष्किन्धा आये दोउ भाई ॥

इति क्षेपक

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई ❀ प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ ❀ आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ ॥
अर्धराति पुरद्वार पुकारा ❀ बाली रिपुबल सहै न पारा ॥
धावा बालि देखि सो भागा ❀ मैं पुनि गयउँ बंधु सँग लागा ॥
गिरि-बर-गुहा पैठ सो जाई ❀ तब बाली मोहिं कहा बुझाई ॥
परिखेसु मोहिं एक पखवारा ❀ नहिं आवौं तब जानेसु मारा ॥
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी ❀ निसरी रुधिरधार तहँ भारी ॥
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई ❀ सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ॥
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं ❀ दीन्हेउ मोहि राज बरिआईं ॥
बाली ताहि मारि गृह आवा ❀ देखि मोहि जिह भेद बढ़ावा ॥
रिपुसम मोहि मारेसि अति भारी ❀ हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी ॥
ता के भय रघुबीर कृपाला ❀ सकलभुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥



एक मन्द मैं मोहवश, कुटिल हृदय अज्ञान।

भार्गव भूषण प्रेस, बनारस। [कापी २१९८]

इहाँ सापबस आवत नाहीं ❀ तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवकदुख दीनदयाला ❀ फरकि उठीं दोउ भुजा बिसाला ॥

अथ क्षेपक

दोहा--रामचन्द्र बोले बचन, सुनहु तात सुग्रीव ।
दुंदुभिको कैसे हन्यो, बालि महाबल सीव ॥
ऋषि मुनि समदर्शी सदा, सबकर चह कल्यान ।
चूक परी कह बालि सों, शाप दियो सुज्ञान ॥

ऐसे जब पूछेहु रघुनाथा ❀ सुनि सुग्रीव बखानेहु गाथा ॥
मयदानवते दो सुत भयऊ ❀ मायावी दुन्दुभि अस कहेऊ ॥
तिनमहँ दुन्दुभि अति बलधारी ❀ भय माने तासो बलकारी ॥
एकबार हिम गिरि पहँ आयउ ❀ ताल ठोंकि हिमवान उठायउ ॥
तब हिमवन्त कहे कर जोरे ❀ हम तुम मन बलमें अति थोरे ॥
पंपापुर जावहु बल बीरा ❀ बालि महाबल अति रणधीरा ॥

दोहा--सुनिके गिरिके बचन तब, आयउ तहाँ तुरंत ।
बालि २ भाखत भयो, सुनि दौड्यो बलवंत ॥

दुन्दुभि बाली दोनों योधा ❀ मल्ल युद्ध करते करि क्रोधा ॥
चार पहर दोनों बल कीन्हा ❀ बाली ने पुनि मुष्टिक दीन्हा ॥
गिरा महीपर गिरिकी नाईं ❀ पशु पक्षी तरु दंत्र गुमाईं ॥
पुनि बाली दुइ फाँक उतारी ❀ इक दक्षिण इक उत्तर डारी ॥
ऋषि मतंगकर तहँ अस्थाना ❀ रुधिर बह्यो तहँ नदी समाना ॥
कर अस्नान ऋषि जब आये ❀ एक यच्च वृत्तान्त सुनाये ॥
पुनि मतंग कीन्हा अति क्रोधा ❀ दियो शाप यह कीन्ह न शोधा ॥
इहि गिरि देखत बाली नासा ❀ ताहीते भइ मन कछु त्रासा ॥

दोहा--बालि तहाँ आवत नहीं, सुनिये श्रीरघुबीर ।
करहु निडर मो कहँ प्रभो, दूर होहिं सब पीर ॥

इति क्षेपक

दोहा--सुनु सुग्रीव मारिहउँ, बालिहि एकहि बान ।
ब्रह्म-रुद्र-सरनागत, गये न उबरिहि प्रान ॥ ७ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी ॥
निज-दुख-गिरि-सम रज करि जाना ❀ मित्र क दुखरज मेरुसमाना ॥
जिन्ह के असि मति सहज न आई ❀ ते सठ कत हठि करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा ❀ गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ॥
देत लेत मन संक न धरई ❀ बल अनुमान सदा हित करई ॥
विपतिकाल कर सतगुन नेहा ❀ स्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
आगे कह मृदुबचन बनाई ❀ पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जा कर चित अहि-गति-सम भाई ❀ अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप कृपिन कुनारी ❀ कपटी मित्र सूलसम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरे ❀ सब बिधि घटब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ❀ बालि महाबल अति-रन-धीरा ॥

अथ क्षेपक

दोहा--चन्द्र मण्डलाकार जो, नाथ सात ये ताल ।
बेधे जो इकबाणते, सो बाली कर काल ॥
सुनि बोले रघुवंशमणि, कहहु तालकर गाथ ।
कहन लग्यो जियहर्ष पुनि, हाथ जोड़ हरिनाथ ॥

एक दिवस बाली वन आयो ❀ सफल बृक्ष देखत हुलसायो ॥
सात फलन लायो इकबारी ❀ तिन्हे राखि न्हायो बलधारी ॥
तापर सर्प बैठगो आई ❀ बालि देख बोला झुँझलाई ॥
कियो नाश तैं मोर अहारा ❀ तासो शाप देहुँ अति भारा ॥
सात ताल उपजैं तव देहा ❀ जानिकर यामें तू संदेहा ॥
ताल बृक्ष निकसे तनु माहीं ❀ सर्पपिता लखि शाप्यो ताहीं ॥
जो इक शरते ताल गिरावै ❀ बाली तेहिकर मृत्यू पावै ॥
समाचार यह तुमहिं सुनायउँ ❀ बालि बधनकी रीति जतायउँ ॥

इति क्षेपक

दुंदुभि अस्थि ताल देखराये ❀ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
देखि अमितबल बाढ़ी प्रीती ❀ बालि बधब इन्ह भइ परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा ❀ प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥

उपजा ग्यान बचन तब बोला ❀ नाथ कृपा मन भयउ अडोला ॥
सुख संपति परिवार बड़ाई ❀ सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥
ए सब रामभगति के बाधक ❀ कहहिं संत तव पद अवराधक ॥
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
बालि परमहित जासु प्रसादा ❀ मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा ॥
सपने जेहि सन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपा करहु येहि भाँती ❀ सब तजि भजन करौं दिनु राती ॥
सुनि बिरागसंयुत कपिबानी ❀ बोले बिहँसि रामु धनुपानी ॥
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई ❀ सखाबचन मम मृषा न होई ॥
नट मरकट इव सबहिं नचावत ❀ राम खगेस बेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❀ चले चापसायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❀ गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा ❀ गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिन्हहिं मिलेउ सुग्रीवाँ ❀ ते दोउ बंधु तेजबलसींवाँ ॥
कोसलेससुत लछिमनरामा ❀ कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥

दोहा—कहा बालि सुनु भीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ ।
जौं कदाचि मोहि मारहिं, तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ८ ॥

अस कहि चला महाअभिमानी ❀ तृनसमान सुग्रीवहि जानी ॥
भिरे उभौ बाली अति तरजा ❀ मुठिका मारि महाधुनि गरजा ॥
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा ❀ मुष्टिप्रहार बज्रसम लागा ॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला ❀ बंधु न होइ मोर यह काला ॥
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ ❀ तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीवँ-सरीरा ❀ तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
मेली कंठ सुमन कै माला ❀ पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
पुनि नानाबिधि भई लराई ❀ बिटपओट देखहिं रघुराई ॥

दोहा—बहु छलबल सुग्रीव करि, हिय हारा भय मानि ।
मारा बाली राम तब, हृदय माँझ सर तानि ॥ ९ ॥

परा बिकल महि सर के लागे ❀ पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
स्यामगात सिर जटा बनाये ❀ अरुननयन सर चाप चढ़ाये ॥
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा ❀ सुफल जनम माना प्रभु चीन्हा ॥
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा ❀ बोला चितइ राम की ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गोसाईं ❀ मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥
मैं बैरी सुग्रीव पियारा ❀ कारन कवन नाथ मोहिं मारा ॥
अनुजबधू भगिनी सुतनारी ❀ सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई ❀ ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना ❀ नारिसिखावन करेसि न काना ॥
मम भुज-बल-आस्रित तेहि जानी ❀ मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दोहा—सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अंतकाल गति तोरि ॥१०॥

सुनत राम अतिकोमल बानी ❀ बालिसीस परसेउ निजपानी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना ❀ बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं ❀ अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नामबल संकर कासी ❀ देत सबहिं समगति अबिनासी ॥
मम लोचन गोचर सोइ आवा ❀ बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

छंद—सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि स्रुति गावहीं ।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥
मोहि जानि अति-अभिमान-बस प्रभु कहेहु राखु सरीरही ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर माँगऊँ ।
जेहि जोनि जनमउँ कर्मबस तहँ रामपद अनुरागऊँ ॥
यह तनय मम सम बिनयबल कल्यानपद प्रभु लीजिये ।
गहि बाहँ सुर-नर-नाह आपन दास अंगद कीजिये ॥

दोहा—रामचरन दृढ़प्रीति करि, बालि कीन्ह तनुत्याग ।
सुमनमाल जिमि कंठ तें, गिरत न जानइ नाग ॥११॥

राम बालि निजधाम पठावा ❀ नगरलोग सब ब्याकुल धावा ॥
नानाबिधि बिलाप कर तारा ❀ छूटे केस न देह सँभारा ॥
तारा बिकल देखि रघुराया ❀ दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
छिति जल पावक गगन समीरा ❀ पंच रचित अतिअधम सरीरा ॥
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा ❀ जीव नित्य केहि तुम्ह लगि रोवा ॥
उपजा ज्ञान चरन तब लागी ❀ लीन्हेसि परम भगति बर माँगी ॥
उमा दारुजोषित की नाईं ❀ सबहिं नचावत रामु गोसाईं ॥
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा ❀ मृतककर्म बिधिवत सब कीन्हा ॥
रामु कहा अनुजहि समुझाई ❀ राजु देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति-चरन नाइ करि माथा ❀ चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दोहा—लछिमन तुरत बोलाये, पुरजन बिप्रसमाज ।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ, अङ्गद कहँ जुबराज ॥ १२ ॥

उमा रामसम हित जग माहीं ❀ गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥
सुर-नर-मुनि सब कै यह रीती ❀ स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥
बालि-त्रास-ब्याकुल दिन राती ❀ तन बहु ब्रन चिंता जर छाती ॥
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❀ अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ॥
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं ❀ काहे न बिपतिजाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई ❀ बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा ❀ पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ॥
गत ग्रीषम बरषा रितु आई ❀ रहिहौं निकट सैल पर छाई ॥
अंगदसहित करहु तुम्ह राजू ❀ संतत हृदय धरेहु मम काजू ॥
जब सुग्रीव भवन फिरि आये ❀ रामु प्रबरषन गिरि पर छाये ॥

दोहा—प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा, राखेउ रुचिर बनाइ ।
रामु कृपानिधि कछुक दिन, बास करहिंगे आइ ॥ १३ ॥

सुंदर बन कुसुमित अतिसोभा ❀ गुंजत मधुपनिकर मधुलोभा ॥
कंद मूल फल पत्र सुहाये ❀ भये बहुत जब तें प्रभु आये ॥
देखि मनोहर सैल अनूपा ❀ रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
मधुकर-खग-मृग-तनु धरि देवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥

मंगलरूप भयउ बन तब तें ❀ कीन्ह निवास रमापति जब तें ॥
फटिकसिला अतिसुभ्र सुहाई ❀ सुख आसीन तहाँ दोउ भाई ॥
कहत अनुज सन कथा अनेका ❀ भगति बिरति नृप नीति बिबेका ॥
बरषाकाल मेघ नभ छाये ❀ गर्जत लागत परम सुहाये ॥

दोहा–लछिमन देखहु मोरगन, नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरतिरत हरष जस, बिष्णुभगत कहुँ देखि ॥१४॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा ❀ प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
दामिनि दमकि रह न घन माहीं ❀ खल.कै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
बरसहिं जलद भूमि नियराये ❀ जथा नवहिं बुध बिद्या पाये ॥
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे ❀ खल के बचन संत सह जैसे ॥
छुद्र नदी भरि चली तोराई ❀ जस थोरेहु धन खल इतराई ॥
भूमि परत भा ढावर पानी ❀ जनु जीवहि माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटि जल भरहि तलावा ❀ जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥
सरिताजल जलनिधि महुँ जाई ❀ होहि अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दोहा–हरित भूमि तृनसंकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥१५॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई ❀ बेद पढहिं जनु बटुसमुदाई ॥
नव पल्लव भये बिटप अनेका ❀ साधक मन जस मिले बिबेका ॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ ❀ जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी ❀ करइ क्रोध जिमि धर्महि दूरी ॥
ससिसंपन्न सोह महि कैसी ❀ उपकारी कै संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा ❀ जनु दंभिन कर मिला समाजा ॥
महाबृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि सुतंत्र भये बिगरहिं नारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखियत चक्रबाक खग नाहीं ❀ कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊसर बरषइ तृन नहिं जामा ❀ जिमि हरि-जन-हिय उपज न कामा ॥
बिबिध जंतुसंकुल महि भ्राजा ❀ प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना ❀ जिमि इंद्रियगन उपजे ज्ञाना ॥

दोहा—कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के ऊपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं॥
कबहुँ दिवस महुँ निबिडतम, कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग॥१६॥

बरषाबिगत सरद रितु आई ❀ लछिमन देखहु परम सुहाई॥
फूले कास सकल महि छाई ❀ जनु बरषाकृत प्रगट बुढाई॥
उदित अगस्त पंथजल सोखा ❀ जिमि लोभहि सोखइ संतोषा॥
सरितासर निर्मलजल सोहा ❀ संतहृदय जस गत-मद-मोहा॥
रस रस सूख सरित-सर-पानी ❀ ममतात्याग करहिं जिमि ज्ञानी॥
जानि सरद रितु खंजन आये ❀ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये॥
पंक न रेनु सोह असि धरनी ❀ नीति-निपुन-नृप कै जसि करनी॥
जलसंकोच बिकल भइ मीना ❀ अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना॥
बिनु घन निर्मल सोह अकासा ❀ हरिजन इव परिहरि सब आसा॥
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी ❀ कोउ एक पाव भगति जसि मोरी॥

दोहा—चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरिभगति पाइ स्रम, तजहिं आस्रमी चारि॥१७॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा ❀ जिमि हरिसरन न एकउ बाधा॥
फूले कमल सोह सर कैसा ❀ निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसा॥
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा ❀ सुंदर खगरव नानारूपा॥
चक्रवाकमन दुख निसि पेखी ❀ जिमि दुरजन परसंपति देखी॥
चातक रटत तृषा अति ओही ❀ जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही॥
सरदातप निसि ससि अपहरई ❀ संतदरस जिमि पातक टरई॥
देखि इंदु चकोरसमुदाई ❀ चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई॥
मसकदंस बीते हिमत्रासा ❀ जिमि द्विज द्रोह किये कुलनासा॥

दोहा—भूमि जीव संकुल रहे, गये सरद रितु पाइ।
सदगुरु मिले जाहिं जिमि, संसय-भ्रम-समुदाइ॥१८॥

बरषा गत निर्मल रितु आई ❀ सुधि न तात सीता कै पाई॥
एकबार कैसेहुँ सुधि जानउँ ❀ कालहु जीति निमिष महुँ आनउँ॥

कतहुँ रहउ जौं जीवत होई ❀ तात जतन करि आनउँ सोई ॥
सुग्रीवँहु सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहि सायक मारा मैं बाली ❀ तेहि सर हतउँ मूढ़ कहुँ काली ॥
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा ❀ ताकहुँ उमा कि सपनेहु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी ❀ जिन्ह रघु-बीर-चरन-रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना ❀ धनुष चढाइ गहे कर बाना ॥

दोहा–तब अनुजहिं समुझावा, रघुपति करुनासीवँ ।
भय देखाइ लेइ आवहु, तात सखासुग्रीवँ ॥१९॥

इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा ❀ रामकाज सुग्रीवँ बिसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा ❀ चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥
सुनि सुग्रीव परमभय माना ❀ विषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना ॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ बानरजूहा ॥
कहेहु पाख महुँ आव न जोई ❀ मोरे कर ता कर बध होई ॥

अथ क्षेपक

राम काज अरु मोर निहोरा ❀ पठवहुँ मैं तुम कहँ सब ओरा ॥
यह सुन हनूमान बलधारी ❀ पूरब दिशि कीन्हें तयारी ॥
जेमिल आन वचन अस कहेऊ ❀ बालि बन्धु तुम कहँ बुलवयऊ ॥
सुनि हनुमन्त बचन सब आये ❀ तुरत सबन सादर शिर नाये ॥
गव गवाक्ष आये दोउ बीरा ❀ संग लिये सेना रणधीरा ॥

दोहा–असी लाख अरु सातसौ, कपि सेना बलवान ।
तिनहिं भेजि रोहित गिरहिं, गये तुरत हनुमान ॥

दुर्धर्षण सन बोले जाई ❀ तुमहिं बुलायो है कपि राई ॥
पुनि कदली बन गये पलाई ❀ गजसे कथा कही समुझाई ॥
दुर्धर्षण अरु गज कपि आये ❀ डंक बजाय सेन सब लाये ॥
पदम सात दल असी करोरा ❀ डगमग करै भूमि अहिकोरा ॥
हनुमत पुनि व्याहर गिरि आये ❀ बड़ सुत बल बीरहीं बुलाये ॥
कह्यो तुमहिं टेरयो, कपि राजू ❀ तहँ तुम जावहु सहित समाजू ॥
तीस लाख दल साठ हजारा ❀ लायो सो किष्किंध मझारा ॥
धुंधुमार गिरि पर पुनि आये ❀ श्रीखंडहिं सब बचन सुनाये ॥

दोहा--छप्पन कोटि बनचर लिये, आये तहँ श्रीखंड।
कपिपति कहँ शिरनाय करि, बैठ्यो अति बरवंड॥

पुनि हनुमत अंजनि गिरि आये ❀ समाचार कुमुदहिं समुझाये॥
पदम सात सत्तासी लक्षा ❀ सुनिलै चल्यो कपिन कर कक्षा॥
नीलगिरी आये हरि नाथा ❀ कही नीलते पुनि सब गाथा॥
अर्बुद चार चार शत चारा ❀ चल्यो नील दल बिकट जुझारा॥
पुनि हनुमान उतरदिशि आये ❀ बदरिकाश्रम जा सुख पाये॥
गंधमदन सो कहि इतिहासा ❀ जावहु तुम सुकंठ के पासा॥

दोहा--अर्जुन गिरिपहँ पुनि गये, ताराकर जहँ तात।
नाम सुखेन महाबली, ताहि सुनाई बात॥

बिदा होय सुमेरु गिरि आये ❀ कह्यो चलहु कपिराज बुलाये॥
तिन्हें भेजकरि अंजनि नंदन ❀ शिव पर्वत पर गा दुख भंजन॥
दुरदकपी तिहि नायउ माथा ❀ हनूमान मन भयउ सनाथा॥
सुनि कपि वचन सैन लै धायो ❀ मैंना गिरि हनुमत पुनि आयो॥
अंडक राज तहाँ पर धाना ❀ तेहि बुझाय कह करहु पयाना॥
बिन्ध्याचल आये हनुमाना ❀ रह बसंत कपि जहँ बलवाना॥
सुनि लैचल दल कपिपति पासी ❀ आठ पदम अरु सहस अठासी॥
हनुमान तहँ सों पग धारे ❀ कश्यपगिरि पुनि आन पधारे॥
नाम मयंद तहाँ कर स्वामी ❀ तेजपुंज अरु अति बलगामी॥

दोहा--इक्किस कोटि बनचर लिये, आकर नायउ माथ।
हनूमान तब सब कही, पंपापुर की गाथ॥

अट्टहास कर चल्यो मयंदा ❀ उछला जिमि नभ चले गयंदा॥
दल टीडी सम सैन चलाई ❀ उठि लँगूर रवि जाइ छिपाई॥
तीस करोड़ नील की सैना ❀ सब बानर बुधि बलकर ऐना॥
सिंहनाद कर बारम्बारा ❀ किष्किन्धा भइ भीर अपारा॥
कपि दुर्गन्ध नाम जहँ रहहीं ❀ गाथा वायु पूत तिहि कहहीं॥
आठ लाख सवार गिनायो ❀ सबदल लै पंपापुर आयो॥
चहुँदिशि से बनचर सब लाये ❀ आय सुकंठहिं पुनि शिरनाये॥

दोहा--तब सुकंठ हनुमान की, अमित बड़ाई कीन ।
भा हर्षित धन धन्य कहि, जिमि जल पाये मीन ॥

इति क्षेपक

तब हनुमंत बोलाये दूता ❀ सब कर करि सनमान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति देखराई ❀ चले सकल चरनन्हि सिरु नाई ॥
एहि अवसर लछिमन पुर आये ❀ क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये ॥

दोहा--धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करउँ पुर छार ।
व्याकुल नगर देखि तब, आयउ बालिकुमार ॥ २० ॥

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही ❀ लछिमन अभयबाँह तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना ❀ कह कपीस अतिभय अकुलाना ॥
सुनु हनुमंत संग लेइ तारा ❀ करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥
तारासहित जाइ हनुमाना ❀ चरन बंदि प्रभु सुजसु बखाना ॥
करि बिनती मंदिर लेइ आये ❀ चरन पखारि पलंग बैठाये ॥
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा ❀ गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
नाथ बिषयसम मद कछु नाहीं ❀ मुनिमन मोह करइ छन माहीं ॥
सुनत बिनीतबचन सुख पावा ❀ लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई ❀ जेहि बिधि गये दूतसमुदाई ॥

दोहा--हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादिकपि साथ ।
रामानुज आगे करि, आये जहँ रघुनाथ ॥ २१ ॥

नाइ चरन सिरु कह करजोरी ❀ नाथ मोहि कछु नाहिं न खोरी ॥
अतिसयप्रबल देव तव माया ❀ छूटइ राम करहु जौं दाया ॥
बिषयबस्य सुर नर मुनि स्वामी ❀ मैं पामर पसु कपि अतिकामी ॥
नारि-नयन-सर जाहि न लागा ❀ घोर-क्रोध-तम-निसि जो जागा ॥
लोभपास जेहि गर न बँधाया ❀ सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
यह गुन साधन तें नहिं होई ❀ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई ❀ तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
अब सोइ जतन करहु मन लाई ❀ जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥

दोहा–एहि विधि होत बतकही, आये बानरजूथ ।
नानाबरन सकल दिसि, देखिय कीसबरूथ ॥२२॥

बानरकटक उमा मैं देखा ❀ सो मूरख जो कर चह लेखा ॥
आइ रामपद नावहिं माथा ❀ राखे बदनु सब होहिं सनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं ❀ राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥
यह कछु नहिं प्रभु कै अधिकाई ❀ बिस्वरूप ब्यापक रघुराई ॥
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई ❀ कह सुग्रीवँ सबहि समुझाई ॥
रामकाजु अरु मोर निहोरा ❀ बानरजूथ जाहु चहुँओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहु जाई ❀ मासदिवस महँ आयहु भाई ॥

अथ क्षेपक

तब सुकंठ दुइ दूत बुलायेसि ❀ सुनतहिं गज गवाक्ष उठ धायेसि ॥
मन क्रम वच कर विविध प्रकारा ❀ सुधा सरिस प्रभु वचन उचारा ॥
सिय खोजन तुम पूरब जावहु ❀ रामकाज करि आतुर आवहु ॥
सात कोटि बानर परिमाना ❀ पूरब दिशिकहँ चले सुजाना ॥
गज गवाक्ष यूथप बलकारी ❀ तिनके संग चले हँकारी ॥

दोहा--पुनि सुग्रीव सुखेन कहँ, समुझाई सब गाथ ।
आदर कर बोले बचन, गहु मयंद कहँ साथ ॥

उत्तर दिशि कहँ तुम चलि जाहू ❀ सीता सुधि पूछहु सब काहू ॥
मादन गन्ध मेरु धरणीधर ❀ अर्जुन गिरि कैलास महाधर ॥
नीलगिरि अलकापुरि नामा ❀ खोजहु तात सकल शुभ धामा ॥
काक-भुशुंडि केर अस्थाना ❀ जावहु तुम तहँ बीर सुजाना ॥
शूरसेन कर मंडप राजै ❀ जहँ लोमश साँडिल्य बिराजै ॥
सुमिरि राम खोजहु अब जाई ❀ मास दिवस में आवहु भाई ॥
राजा की सुनिके यह बाता ❀ चले तुरत मन में हरषाता ॥
पदम इकादश बानर साथा ❀ चले सकल सुमिरत रघुनाथा ॥
पुनि सुग्रीव सुबीर बुलायउ ❀ अतिहित सों यह वचन सुनायउ ॥

दोहा--पश्चिम दिशिकी ओर तुम, खोजहु सीतहिं जाय ।
रामकाज कहँ तुरत करि, मोहिं सुनावहु आय ॥

सरिता सर बन गिरि गुहा, खोजत सबही ठाम ।
दशपटलख हरि जावहू, लै रघुपति कर नाम ॥

इति क्षेपक

अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये ❀ आवइ बनिहि सो मोहि मराये ॥

दोहा--बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरंत ।
तब सुग्रीवँ बोलाये, अंगद नल हनुमंत ॥ २३ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❀ जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू ❀ सीतासुधि पूछेहु सब काहू ॥
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु ❀ रामचंद्र कर काज सँवारेहु ॥
भानुपीठि सेइय उर आगी ❀ स्वामिहि सर्वभाव छल त्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका ❀ मिटहि सकल भवसंभव सोका ॥
देह धरे कर यह फलु भाई ❀ भजिय राम सब काम बिहाई ॥
सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी ❀ जो रघु-बीर-चरन-अनुरागी ॥
आयसु माँगि चरन सिरु नाई ❀ चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय सिरु नावा ❀ जानि काजु प्रभु निकट बोलावा ॥
परसा सीस सरोरुहपानी ❀ करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायेहु ❀ कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आयेहु ॥
हनुमत जनम सुफल करि माना ❀ चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना ॥
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❀ राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दोहा--चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ।
राम-काज-लय-लीन मन, बिसरा तन कर छोह ॥२४॥

कतहुँ होइ निसिचर सों भेटा ❀ प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं ❀ कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिं ॥
लागि तृषा अतिसय अकुलाने ❀ मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना ❀ मरन चहत सब बिनु जलपाना ॥
चढ़ि गिरिसिखर चहूँदिसि देखा ❀ भूमिबिवर एक कौतुक पेखा ॥
चक्रबाक बक हंस उडाहीं ❀ बहुतेक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥

गिरि तें उतरि पवनसुत आवा ❀ सब कहुँ लेइ सोइ बिबर देखावा ॥
आगे करि हनुमंतहिं लीन्हा ❀ पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा ॥

दोहा–दीख जाइ उपबन बर, सर बिकसित बहुकंज ।
मंदिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज ॥२५॥

दूरि तें ताहि सबन्हि सिरु नावा ❀ पूछे निजबृत्तांत सुनावा ॥
तेहि तब कहा करहु जलपाना ❀ खाहु सुरस-सुंदर-फल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुरफल खाये ❀ तासु निकट पुनि सब चलि आये ॥
तेहि सब आपनि कथा सुनाई ❀ मैं अब जाब जहाँ रघुराई ॥
मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू ❀ पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा ❀ ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा ❀ जाइ कमलपद नायेसि माथा ॥
नाना भांति बिनय तेहि कीन्ही ❀ अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दोहा--बदरीबन कहुँ सो गई, प्रभुअज्ञा धरि सीस ।
उर धरि राम-चरन-जुग, जे बंदत अज ईस ॥२६॥

इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं ❀ बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥
सब मिलि कहहिं परसपर बाता ❀ बिनु सुधि लये करब का भ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी ❀ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहाँ न सुधि सीता कै पाई ❀ उहाँ गये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधे पर मारत मोही ❀ राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं ❀ मरन भयेउ कछु संसय नाहीं ॥
अंगद बचन सुनत कपिबीरा ❀ बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥
छन एक सोच मगन होइ गयऊ ❀ पुनि अस बचन कहत सब भयऊ ॥
हम सीता कै सोध बिहीना ❀ नहिं जैहहिं जुवराज प्रबीना ॥
अस कहि लवन-सिंधु-तट जाई ❀ बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जामवंत अंगददुख देखी ❀ कही कथा उपदेसबिसेखी ॥
तात राम कहुँ नर जनि मानहु ❀ निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥
हम सब सेवक अति-बड़-भागी ❀ संतत सगुन-ब्रह्म-अनुरागी ॥

दोहा--निज इच्छा प्रभु अवतरइ, सुर-महि-गो-द्विजलागि ।
सगुन उपासक संग तहँ, रहहिं मोच्छसुखत्यागि ॥२७॥

एहि बिधि कथा कहहिं बहुभाँती ❀ गिरि कंदरा सुनी संपाती ॥
बाहेर होइ देखे बहु कीसा ❀ मोहि अहारु दीन्ह जगदीसा ॥
आजु सबहिं कहँ भच्छन करऊँ ❀ दिन बहु चल अहार बिनु मरऊँ ॥
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा ❀ आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा ॥
डरपे गीध बचन सुनि काना ❀ अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गीध कहँ देखी ❀ जामवंत मन सोच बिसेखी ॥
कह अंगद बिचारि मन माहीं ❀ धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥
राम-काज-कारन तनु त्यागी ❀ हरिपुर गयउ परम-बड़-भागी ॥
सुनि खग हरष-सोक-जुग बानी ❀ आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥
तिन्हहिं अभय करि पूछेसि जाई ❀ कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
सुनि संपाति बंधु कै करनी ❀ रघुपति-महिमा बहुबिधि बरनी ॥

दोहा--मोहि लेइ जाहु सिंधु तट, देउँ तिलांजलि ताहि ।
बचनसहाय करबि मैं, पैहहु खोजहु जाहि ॥२८॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा ❀ कह निज कथा सुनहु कपि बीरा ॥
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई ❀ गगन गये रबि निकट उड़ाई ॥
तेज न सहि सक सो फिरि आया ❀ मैं अभिमानी रबि नियराया ॥
जरे पंख अति तेज अपारा ❀ परेउँ भूमि करि घोरचिकारा ॥
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही ❀ लागी दया देखि करि मोही ॥
बहुप्रकार तेहि ज्ञान सुनावा ❀ देह जनित अभिमान छुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरहीं ❀ तासु नारि निसिचर-पति हरहीं ॥
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता ❀ तिन्हहिं मिले तैं होब पुनीता ॥
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता ❀ तिन्हहिं देखाइ दिहेसु तैं सीता ॥

अथ क्षेपक

यह कहि मुनि निज आश्रम गयऊ ❀ तिहिक्षण हृदय ज्ञान कछु भयऊ ॥
अस इक बात सुनहु मन लाई ❀ दूसरि कथा कहौं रुचि पाई ॥
छुधा एक दिन मोहिं सतायो ❀ निज सुत सो दुख जाइ सुनायो ॥

जीव लेनहित बनसो आवा ❀ गज मृगराजहिं मार गिरावा ॥
अस्त भये रबि घर कहँ आयउ ❀ तब मैं मनमें क्रोध बढ़ायउ ॥
पुत्रहिं शाप देन कहँ भयऊ ❀ तिहि विलंब कारण अस कहेऊ ॥
सुनहु तात चित धरि मम बानी ❀ कहहुँ तुमहिं सब कथा बखानी ॥
बीस भुजा अरु बड़ दशआनन ❀ लिये जात इक नारि सुहावन ॥
जान जन्तु मैं धरा प्रचारी ❀ तुरत छोड़ दीनी तिन नारी ॥
मोरि विनय करि कुजदिशि गयऊ ❀ मैं पुनि बाट भवनकी लयऊ ॥
भयो दुःख मोहिं सुन तत्काला ❀ कह्यो पुत्रते मैं यह हाला ॥
अहह तात तैं भल नहिं कीन्हा ❀ रघुपति नारि छीन नहिं लीन्हा ॥
पंखहीन मेरो बस नाहीं ❀ जाहि भिरूं तिहि निश्चर पाहीं ॥
पुनि मुनि बचन सुरत मोहिं आवा ❀ तुमहिं देखि अभिमत फलपावा ॥
निशि दिन मग जोवत दिन भरऊँ ❀ सदा रामको सुमिरण करऊं ॥

इति क्षेपक

मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू ❀ सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ❀ तहँ रह रावन सहज असंका ॥
तहँ असोकउपबन जहँ रहई ❀ सीता बैठि सोचरत अहई ॥

दोहा--मैं देखउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥२६॥

जो नाँघइ सतयोजन सागर ❀ करइ सो रामकाज मतिआगर ॥
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा ❀ रामकृपा कस भयउ सरीरा ॥
पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं ❀ अतिअपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई ❀ राम हृदय धरि करहु उपाई ॥
अस कहि उमा गीध जब गयऊ ❀ तिन्हके मन अतिविसमय भयऊ ॥
निज निज बल सब काहू भाखा ❀ पार जाइ कर संसय राखा ॥
जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा ❀ नहिं तनु रहा प्रथम-बल-लेसा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भयउ खरारी ❀ तब मैं तरुन रहेउँ बलभारी ॥

अथ क्षेपक

विकट नाम वानर अस भाखा ❀ योजन बीस जाउ बल राखा ॥
नील कहा मैं चालिस जाऊँ ❀ अधिक जात निज मरहिं डराऊँ ॥

दुर्धर हाथ जोड़ यों कहई ❀ मम बल पंचाशत कर अहई ॥
नल बोल्यो दुहुँ बाँह उठाई ❀ योजन साठ लाँघ हम जाई ॥
दधिमुख ऐसे वचन सुनावत ❀ अस्सी सात योजन हम धावत ॥
यह सुनि कह अंगद युवराज ❀ इतने बलते होय न काज ॥

दोहा–अंगद मनमें भा दुखी, तब बोल्यो ऋच्छेश ।
वृद्ध भयो अब नहिं रहा, युवावस्थ लवलेश ॥

वृद्ध भयहुँ अब बलहिं सुनाऊँ ❀ पलमें लाँघि सिंधु कहँ जाऊँ ॥
इकदिन वदरिनाथ में आवा ❀ तहँ इक चरित देखि मनभावा ॥
ब्रह्म ज्ञान इक विप्र सुनावै ❀ श्री भगवत सो ध्यान लगावै ॥
असुर एक तिहि मारन आवा ❀ ताकहँ देखि कोप मोहिं छावा ॥
योजन तीस शैल परमाना ❀ लै उखाड़ दौड़ा बलवाना ॥
सो मारेसि मम पद तल आई ❀ नहीं तनिक मोहिं मुर्छा आई ॥
तब मैं क्रोध किया अति भारी ❀ चार फाँक करि महिपर डारी ॥

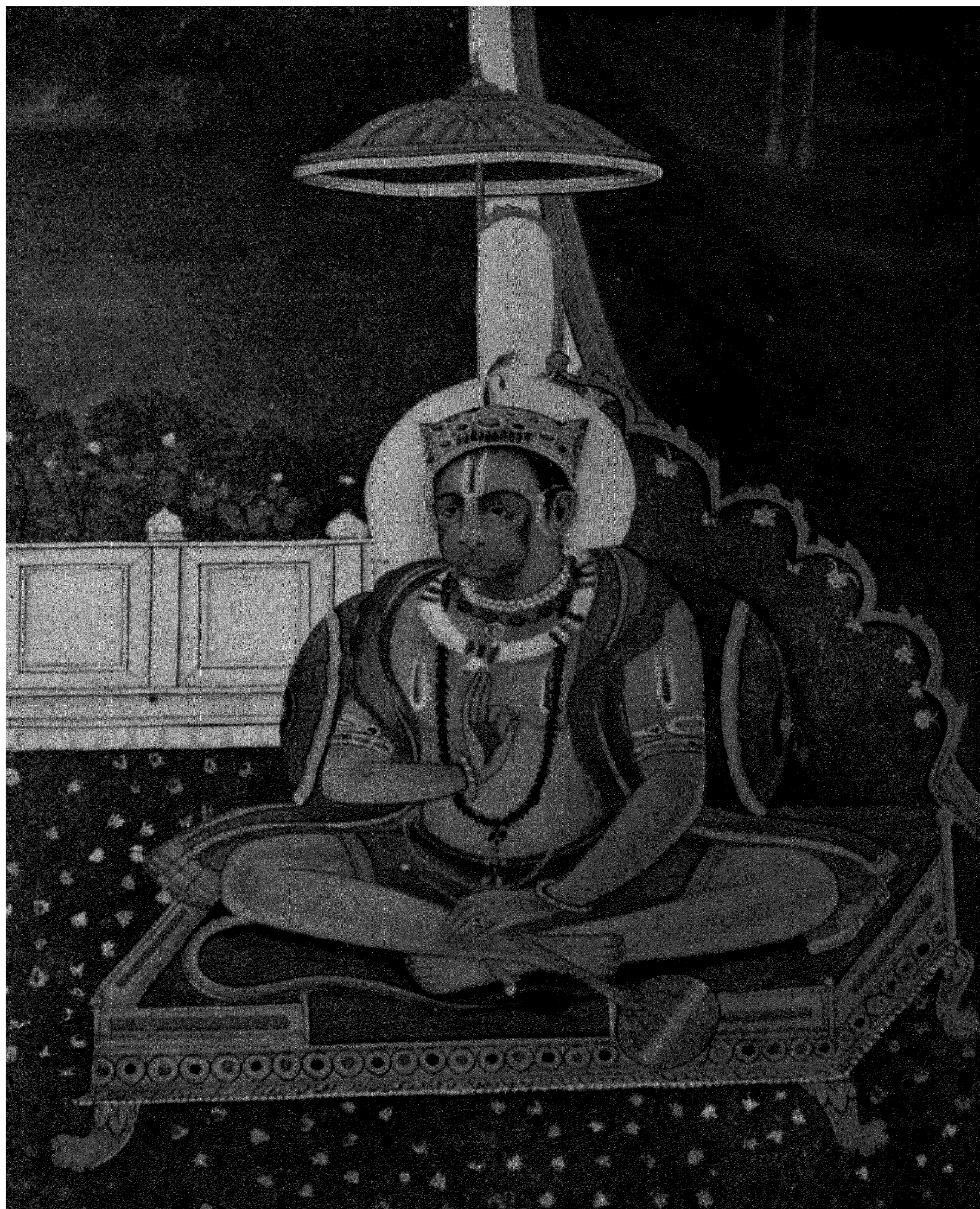
इति क्षेपक

दोहा–बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्हीं, सात प्रदच्छिन धाइ ॥ ३० ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ❀ जिय संसय कछु फिरती बारा ॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक ❀ पठइय किमि सबही कर नायक ॥
कहइ रिच्छपति सुनु हनुमाना ❀ का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥
पवन-तनय-बल पवनसमाना ❀ बुधि- बिबेक-बिज्ञान- निधाना ॥
कवन सो काज कठिन जगमाहीं ❀ जो नहिं तात होइ तुम्ह पाहीं ॥

अथ क्षेपक

जन्म कथा तव बरणों भाई ❀ सादर सुनहु सकल मन लाई ॥
नाम हिमाचल गिरि कर राजा ❀ कश्यपऋषि रह सहित समाजा ॥
दिग्गज सम इक हाथी आयो ❀ ऋषिगण सन्मुख तुरतहि धायो ॥
केशरि नाम तहाँ कर ईशा ❀ ताहि वध्यो तव तात हरीशा ॥
तात प्रबल बल मुनिन्ह सराहा ❀ कह्यो माँग वर जो चित चाहा ॥
जो प्रसन्न मोपर मुनिराई ❀ पुत्र देहु बल में अधिकाई ॥



पवन - तनय - बल पवनसमाना, बुधि - विवेक - विज्ञान - निधाना ।
कवन सो काज कठिन जगमाहीं, जो नहिं तात होइ तुम्ह पाहीं ॥

भार्गव भूषण प्रेस, [illegible] गाइड)

दोहा--बेगवन्त मारुत सरिस, बुधिबल रूप निधान ।
एवमस्तु कहि ऋषि गये, केशरि सुनि सुखमान ॥

अंजनि नाम तुम्हारी माता ❀ रूप अपार जगत विख्याता ॥
करि शृँगार अति रूप बनाई ❀ बैठी सो पर्वत पर जाई ॥
रूप देख मारुत सुख सर्सा ❀ चीर उड़ाय चाह तिहि पर्सा ॥
सती अंजनी देख अनीता ❀ शापहि लगी देन विपरीता ॥
तब मारुत कह मीठी बानी ❀ क्षमा करहु अपराध भवानी ॥
तव पति मम मम पुत्रहिं जाची ❀ मुनि बाणी नहिं होय असाँची ॥

दोहा--चतुर्दशी कार्तिक वदी, शुभ घड़ि अरु शनिवार ।
तादिन तुम प्रगटे सुनहु, बीच सकल संसार ॥

इक दिन मात अंक लै ठाढ़ी ❀ करत प्यार उर आनंद बाढ़ी ॥
देखे सूर्य उदय भा लाला ❀ तड़क स्वर्ग पहुँचे तत्काला ॥
सूर्य गहन को भुजा उठाई ❀ तबहीं कोप कियो सुरराई ॥
कर गहि वज्र तुरत जब मारा ❀ मूर्छिपरे तुम पवन कुमारा ॥
चिन्ह भयो ठोढ़ी महँ लग कर ❀ पर्यो नाम हनुमान सुकपिवर ॥
मुर्च्छा जगी तुम्हार सुजाना ❀ किये भक्ष रविकहँ बलवाना ॥
अंधकार सब जगमहँ भयऊ ❀ दान धर्म जप तप सब गयऊ ॥
अस्तुति करत देव सब भागे ❀ लखि चरित्र शिव भापन लागे ॥
देव धरहु मनमें तुम धीरा ❀ जाय कहहु केशरिसों पीरा ॥

दोहा--शिव ब्रह्मादिक इन्द्र सब, सुर आये तेहि पास ।
पवन देव पुनि कोप कर, रोक लिये सब स्वास ॥

सबमिलि सुर अस कहैं बखानी ❀ भई चूक हमसों अनजानी ॥
स्वास खोल रवि करौ प्रकाशू ❀ सुखप्रद बहै बयार सुतासू ॥
तुमको सुजस हमहिं कल्याना ❀ जो चाहिय माँगिय बरदाना ॥
सब देवन की बानी सुनकर ❀ कहै केशरी मन महँ गुनिकर ॥
अजर अमर अरु कर बलवाना ❀ मोरपूत सम नहिं कोउ आना ॥
रामभक्ति महँ होइ परायन ❀ यह बरदान देहु चतुरानन ॥

एवमस्तु कह देव सिधाये ❀ सुनि यह वचन कीश हरषाये ॥
हुइहै सिद्ध रामकहँ काजू ❀ समुझि परा चित यह युवराजू ॥

दोहा--जामवन्त कपि जब कही, उत्पति पवन कुमार ।
सुनि हरषे नलनील हरि, द्विविद आदि कपिझार॥
पुनि हनुमन्त समुद्र कहँ, देखन लग्यो बहोरि ।
जामवन्त कहतौ भयो, सुनहु वचन अब मोरि ॥

इति क्षेपक

रामकाज लगि तव अवतारा ❀ सुनतहिं भयउ पर्वताकारा ॥
कनक-बरन-तन तेज विराजा ❀ मानहुं अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा ❀ लीलहि नाँघउँ जलधि अपारा ॥
सहित सहाय रावनहिं मारी ❀ आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
जामवंत मैं पूछउँ तोही ❀ उचित सिखावन दीजहु मोही ॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई ❀ सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
तब निज-भुज-बल राजिवनैना ❀ कौतुक लागि संग कपिसैना ॥

छंद—कपि-सेन-संग सँघारि निसिचर रामु सीतहिं आनिहैं ।
त्रै-लोक-पावन-सु-जस सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावई ।
रघु-बीर-पद-पाथोज-मधुकर दास तुलसी गावई ॥

दोहा--भवभेषज रघुनाथजसु, सुनहिं जे नर अरु नारि ।
तिन कर सकलमनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥

सोरठा--नीलोत्पल-तन-स्याम, कामकोटि सोभा अधिक ।
सुनिय तासु गुनग्राम, जासु नाम अघ-खग-बधिक ॥

इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ।

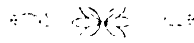


श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

सुन्दरकाण्ड



श्लोकाः

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्र-सेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् । रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥ नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा । भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥ अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् । सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत के बचन सुहाये ❀ सुनि हनुमंत हृदय अति भाये ॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई ❀ सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जब लगि आवउँ सीतहि देखी ❀ होइ काज मोहि हरष बिसेखी ॥
अस कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा ❀ चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधुतीर एक भूधर सुन्दर ❀ कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी ❀ तरकेउ पवनतनय बलभारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता ❀ चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ❀ तेही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघु-पति-दूत बिचारी ❀ तैं मैनाक होहि स्रमहारी ॥

सोरठा–सिंधुबचन उर आनि, तुरत उठेउ मैनाक तब ।
कपि कहुँ कीन्ह प्रनाम, पुलकिततनु कर जोरि करि ॥

दोहा–हनूमान तेहि परसा, कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
रामकाजु कीन्हे बिनु, मोहि कहाँ बिस्राम॥ १॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा ❀ जानइ कहुँ बल-बुद्धि-बिसेखा॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता ❀ पठइन्हि आइ कही तेहि बाता॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ❀ सुनत बचन कह पवनकुमारा॥
रामकाजु करि फिरि मैं आवउँ ❀ सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावउँ॥
तब तव बदन पैठिहउँ आई ❀ सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥
कवनेहु जतन देइ नहिं जाना ❀ ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा ❀ कपि तनु कीन्ह दुगुन-बिस्तारा॥
सोरह जोजन मुख तेहि ठयेऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिस भयेऊ॥
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा ❀ तासु दून कपि रूप देखावा॥
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा ❀ अति-लघु-रूप पवन सुत लीन्हा॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा ❀ माँगा बिदा ताहि सिरु नावा॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा ❀ बुधि-बल-मरमु तोर मैं पावा॥

दोहा–राम काजु सब करिहहु, तुम्ह बल-बुद्धि-निधान।
आसिष देइ गई सो, हरषि चलेउ हनुमान॥ २॥

निसिचरि एक सिंधु महँ रहई ❀ करि माया नभ के खग गहई॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं ❀ जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं॥
गहइ छाँह सक सो न उड़ाई ❀ एहि बिधि सदा गगनचर खाई॥
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा ❀ तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा॥
ताहि मारि मारुत-सुत-बीरा ❀ बारिधिपार गयउ मतिधीरा॥
तहाँ जाइ देखी बनसोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा॥
नाना तरु फल फूल सुहाये ❀ खग-मृग-बृंद देखि मन भाये॥
सैल बिसाल देखि एक आगे ❀ तापर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे॥
उमा न कछु कपि कै अधिकाई ❀ प्रभुप्रताप जो कालहि खाई॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी ❀ कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेखी॥
अतिउतंग जलनिधि चहुँ पासा ❀ कनककोट कर परमप्रकासा॥

छंद—कनक कोट बिचित्र-मनि-कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहुबिधि बना॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनइ।
बहुरूप निसि-चर-जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनइ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं।
नर-नाग-सुर-गंधर्व-कन्या-रूप मुनिमन मोहहीं॥
कहुँ माल देहबिसाल सैलसमान अति बल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकटतन नगर चहुँदिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछुयक है कही।
रघु-बीर-सर-तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पइहहिं सही॥

दोहा—पुररखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार।
अतिलघु रूप धरउँ निसि, नगर करउँ पइसार॥३॥

मसकसमान रूप कपि धरी ❀ लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी ❀ सो कह चलेसि मोहि निंदरी॥
जानेहि नहीं मरम सठ मोरा ❀ मोर अहार जहाँ लगि चोरा॥
मुठिका एक महा कपि हनी ❀ रुधिर बमत धरनी ढन मनी॥
पुनि सँभार उठी सो लंका ❀ जोरि पानि कर बिनय ससंका॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा ❀ चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा॥
बिकल होसि तें कपि के मारे ❀ तब जानेसु निसिचर संघारे॥
तात मोर अतिपुन्य बहूता ❀ देखेउँ नयन राम कर दूता॥

दोहा—तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग॥४॥

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोसल-पुर-राजा॥
गरल सुधा रिपु करइ मिताई ❀ गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥
गरुअ सुमेरु रेनुसम ताही ❀ राम कृपा करि चितवा जाही॥
अति-लघु-रूप धरेउ हनुमाना ❀ पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा ❀ देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
गयउ दसानन मंदिर माँहीं ❀ अतिबिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
सयन किये देखा कपि तेही ❀ मंदिर महुँ न दीख बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा ❀ हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

दोहा–रामायुध अंकित ग्रह, सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिको वृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ ॥५॥

लंका निसि-चर-निकर-निवासा ❀ इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महुँ तरक करइ कपि लागा ❀ तेहि समय बिभीषनु जागा ॥
राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा ❀ हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सनु हठि करहउँ पहिचानी ❀ साधु तें होइ न कारज हानी ॥
बिप्ररूप धरि बचन सुनाये ❀ सुनत बिभीषन उठि तहँ आये ॥
करि प्रनाम पूछी कुसलाई ❀ बिप्र कहहु निजकथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरिदासन महुँ कोई ❀ मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम्ह राम-दीन-अनुरागी ❀ आयहु मोहि करन बड़ भागी ॥

दोहा–तब हनुमंत कही सब, रामकथा निजनाम।
सुनत जुगलतन पुलक मन, मगन सुमिरि गुनग्राम ॥६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❀ जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा ❀ करिहहिं कृपा भानु-कुल-नाथा ॥
तामसतनु कछु साधन नाहीं ❀ प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता ❀ बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ❀ तौ तुम्ह मोहिं दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती ❀ करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना ❀ कपि चंचल सबही बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❀ तेहि दिन ताहि न मिलइ अहारा ॥

दोहा–अस मैं अधम सखा सुनु, मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे बिलोचन नीर ॥७॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ❀ फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम-गुन-ग्रामा ❀ पावा अनिर्वाच्य बिस्रामा ॥

पुनि सब कथा बिभीषन कही ❀ जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ❀ देखा चहउँ जानकी माता ॥
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई ❀ चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ❀ बन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहिं महुँ किन्ह प्रनामा ❀ बैठेहि बीति जात निसिजामा ॥
कृसतन सीस जटा एक बेनी ❀ जपति हृदय रघु-पति-गुन-स्रेनी ॥

दोहा–निजपद नयन दिये मन, रामचरन महँ लीन ।
परमदुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरुपल्लव महुँ रहा लुकाई ❀ करइ बिचार करउँ का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा ❀ संग नारि बहु किये बनावा ॥
बहुबिधि खल सीतहिं समुझावा ❀ साम दाम भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी ❀ मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करउँ पन मोरा ❀ एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृन धरि ओट कहति बैदेही ❀ सुमिरि अवधपति परमसनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा ❀ कबहु कि नलिनी करइ बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी ❀ खल सुधि नहिं रघु-बीर-बान की ॥
सठ सूने हरि आनेहि मोही ❀ अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥

दोहा–आपुहि सुनि खद्योतसम रामहिं भानुसमान ।
परुषवचन सुनि काढ़ि असि, बोला अतिखिसियान॥९॥

सीता तैं मम कृत अपमाना ❀ कटिहउँ तव सिर कठिनकृपाना ॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी ❀ सुमुखि होत न त जीवनहानी ॥
स्याम–सरोज–दाम–सम सुंदर ❀ प्रभुभुज करि-कर-सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा ❀ सुनु सठ अस प्रमान पन मोरा ॥
चंद्रहास हर मम परितापं ❀ रघु–पति–बिरह–अनल–संजातं ॥
सीतल निसि तव असि-बर-धारा ❀ कह सीता हरु मम दुखभारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा ❀ मयतनया कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई ❀ सीतहि बहुबिधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महुँ कहा न माना ❀ तौ मैं मारब काढ़ि कृपाना ॥

दोहा–भवन गयउ दशकंधर, इहां पिसाचिनिवृंद।
सीतहिं त्रास देखावहिं, धरहिं रूप बहुमंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका ❀ राम-चरन-रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हों बोलि सुनायेसि सपना ❀ सीतहिं सेइ करहु हित अपना ॥
सपने बानर लंका जारी ❀ जातुधानसेना सब मारी ॥
खरआरूढ नगन दससीसा ❀ मुंडितसिर खंडित–भुज–बीसा ॥
एहिबिधि सो दच्छिनदिसि जाई ❀ लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघु–बीर–दोहाई ❀ तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहउँ पुकारी ❀ होइहि सत्य गये दिन चारी ॥
तासु बचन सुन ते सब डरीं ❀ जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

दोहा--जहँ तहँ गईं सकल तब, सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीते मोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोली कर जोरी ❀ मातु बिपतिसंगिनि तैं मोरी ॥
तजउँ देह करु बेगि उपाई ❀ दुसह बिरह अब नहिं सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई ❀ मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी ❀ सुनइ को स्रवन सूलसम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझायेसि ❀ प्रभु-प्रताप-बल-सुजस सुनायेसि ॥
निसि न अनल मिलु सुनु सुकुमारी ❀ अस कहि सो निजभवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला ❀ मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखियत प्रगट गगन अंगारा ❀ अवनि न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय ससि स्रवत न आगी ❀ मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका ❀ सत्य नाम कह हरु मम सोका ॥
नूतनकिसलय अनलसमाना ❀ देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परमबिरहाकुल सीता ❀ सो छन कपिहि कलपसम बीता ॥

सो०--कपि करि हृदय बिचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अँगार, दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर ❀ राम–नाम – अंकित अतिसुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी ❀ हरष बिषाद हृदय अकुलानी ॥

जीति को सकइ अजय रघुराई ❀ माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना ❀ मधुरबचन बोलेउ हनुमाना ॥
राम – चंद्र – गुन बरनइ लागा ❀ सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
लागी सुनइ स्रवन मन लाई ❀ आदिहुँ तें सब कथा सुनाई ॥
स्रवनामृत जेहि कथा सुहाई ❀ कहि सो प्रगट होत किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ ❀ फिर बैठी मन बिसमय भयऊ ॥
रामदूत मैं मातु जानकी ❀ सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❀ दीन्हि राम तुम्ह कहँ महिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसे ❀ कही कथा भइ संगति जैसे ॥

दोहा--कपि के बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधु कर दास ॥१३॥

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढी ❀ सजल नयन पुलकावलि ठाढी ॥
बूडत बिरहजलधि हनुमाना ❀ भयहु तात मो कहँ जलयाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ❀ अनुजसहित सुखभवन खरारी ॥
कोमलचित कृपालु रघुराई ❀ कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहजबानि सेवक – सुख–दायक ❀ कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता ❀ होइहहिं निरखि स्याम-मृदु-गाता ॥
बचन न आव नयन भरि बारी ❀ अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता ❀ बोला कपि मृदुबचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुजसमेता ❀ तव दुख दुखी सु-कृपा-निकेता ॥
जनि जननी मानहु जिय ऊना ❀ तुम्ह तें प्रेम राम के दूना ॥

दोहा--रघुपति कर संदेस अब, सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥१४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता ❀ मो कहँ सकल भये बिपरीता ॥
नव-तरु-किसलय मनहुँ कृसानू ❀ काल-निसा-सम निसि ससि भानू ॥
कुबलयबिपिन कुंत-बन-परिसा ❀ बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहे करत तेइ पीरा ❀ उरग-स्वास-सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू ते कछु दुख घटि होई ❀ काहि कहउँ यह जान न कोई ॥

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा ❀ जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मन सदा रहत तोहि पाहीं ❀ जानु प्रीतिरस एतनहि माहीं ॥
प्रभुसंदेस सुनत बैदेही ❀ मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता ❀ सुमिरु राम सेवक-सुख-दाता ॥
उर आनहु रघु-पति-प्रभुताई ❀ सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

दोहा--निसि-चर-निकर पतंगसम, रघु-पति-बान कृसानु ।
जननी हृदय धीर धरु, जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥

जो रघुबीर होति सुधि पाई ❀ करते नहिं बिलंब रघुराई ॥
रामबान रबि उये जानकी ❀ तमबरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई ❀ प्रभुआयसु नहिं रामदोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा ❀ कपिन सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लेइ जैहहिं ❀ तिहुँ पुर नारदादि जस गैहहिं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना ❀ जातुधानभट अतिबलवाना ॥
मोरे हृदय परम संदेहा ❀ सुनि कपि प्रगट कीन्ह निजदेहा ॥
कनक - भूधरा - कार - सरीरा ❀ समरभयंकर अति-बल-बीरा ॥
सीता मनभरोस तब भयऊ ❀ पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ ॥

दोहा--सुनु माता साखामृग, नहिं बल-बुद्धि-बिसाल ।
प्रभुप्रताप तें गरुडहिं, खाइ परमलघु ब्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपिबानी ❀ भगति - प्रताप - तेज - बल - सानी ॥
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना ❀ होहु तात बल - सील - निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू ❀ करहिं बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना ❀ निर्भर प्रेममगन हनुमाना ॥
बार बार नायेसि पद सीसा ❀ बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा ❀ लागि देखि सुंदरफल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिनरखवारी ❀ परमसुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं ❀ जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

दोहा--देखि बुद्धि-बल-निपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु ।
रघु-पति-चरन हृदय धरि, तात मधुरफल खाहु ॥१७॥

चलेउ नाइ सिरु बैठेउ बागा ❀ फल खायेसि तरु तोरइ लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ❀ कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ❀ तेहि असोकबाटिका उजारी ॥
खायेसि फल अरु बिटप उपारे ❀ रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावन पठये भट नाना ❀ तिन्हहिं देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संघारे ❀ गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठयेउ तेहि अच्छयकुमारा ❀ चला संग लेइ सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा ❀ ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

दोहा--कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछु मिलयेसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना ❀ पठयेसि मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसु ताही ❀ देखिय कपिहि कहाँ कर आही ॥
चला इंद्रजित अ-तुलित-योधा ❀ बंधुनिधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा ❀ कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
अतिबिसाल तरु एक उपारा ❀ बिरथ कीन्ह लंकेसकुमारा ॥
रहे महाभट ता के संगा ❀ गहि गहि कपि मर्दइ निजअंगा ॥
तिन्हहिं निपाति ताहि सन बाजा ❀ भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई ❀ ताहि एक छन मुरछा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया ❀ जीति न जाय प्रभंजनजाया ॥

दोहा--ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्म सर मानउँ, महिमा मिटइ अपार ॥१९॥

ब्रह्मबान कपि कहँ तेहि मारा ❀ परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥
तेहि देखा कपि मुरछित भयऊ ❀ नागपास बाँधेसि लेउ गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी ❀ भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत की बँध तरु आवा ❀ प्रभुकारज लगि कपिहि बँधावा ॥
कपिबंधन सुनि निसिचर धाये ❀ कौतुक लागि सभा सब आये ॥

दस-मुख-सभा दीखि कपि जाई ❀ कहि न जाइ कछु अतिप्रभुताई ॥
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता ❀ भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपि मन संका ❀ जिमि अहिगन महँ गरुड असंका ॥

दोहा--कपिहि बिलोकि दसानन, बिहँसा कहि दुर्बाद ।
सुत-बध-सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय बिषाद ॥२०॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा ❀ केहि के बल घालेहि बन खीसा ॥
की धौं स्रवन सुने नहिं मोही ❀ देखउँ अति असंक सठ तोही ॥
मारे निसिचर केहि अपराधा ❀ कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा ॥
सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया ❀ पाइ जासु बल बिरचति माया ॥
जा के बल बिरंचि हरि ईसा ❀ पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन ❀ अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरे जो बिबिध देह सुरत्राता ❀ तुम्ह से सठन्ह सिखावनदाता ॥
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा ❀ तोहि समेत नृप-दल-मद गंजा ॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली ❀ बधे सकल अ-तुलित-बल-साली ॥

दोहा--जा के बललवलेस तें, जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि, हरि आनेहु प्रियनारि ॥२१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई ❀ सहसबाहु सन परी लराई ॥
समर बालि सन करि जस पावा ❀ सुनि कपिबचन बिहँसि बहरावा ॥
खायेउँ फल प्रभु लागी भूखा ❀ कपिसुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
सब के देह परमप्रिय स्वामी ❀ मारहिं मोहि कु-मारग-गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे ❀ तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारे ॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा ❀ कीन्ह चहउँ निजप्रभु कर काजा ॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन ❀ सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम निजकुलहि बिचारी ❀ भ्रम तजि भजहु भगत-भय-हारी ॥
जा के डर अति काल डेराई ❀ जो सुर असुर चराचर खाई ॥
ता सों बैरु कबहुँ नहिं कीजै ❀ मोरे कहे जानकी दीजै ॥

दोहा--प्रनतपाल रघुनायक, करुनासिंधु खरारि ।
गये सरन प्रभु राखिहहिं, तव अपराध बिसारि ॥२२॥

राम-चरन-पंकज उर धरहू ❀ लंका अ-चल-राज तुम्ह करहू ॥
रिषि-पुलस्ति-जस बिमलमयंका ❀ तेहि ससि महँ जनि होहु कलंका ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा ❀ देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसनहीन नहिं सोह सुरारी ❀ सब - भूषन - भूषित बरनारी ॥
रामबिमुख संपति प्रभुताई ❀ जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ❀ बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी ❀ बिमुखराम त्राता नहिं कोपी ॥
संकर सहस बिष्णु अज तोही ❀ सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दोहा--मोहमूल बहु सूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक, कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

जदपि कही कपि अतिहितबानी ❀ भगति-बिबेक - बिरति -नय-सानी ॥
बोला बिहँसि महाअभिमानी ❀ मिला हमहिं कपि गुरु बड ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही ❀ लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना ❀ मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
सुनि कपिबचन बहुत खिसिआना ❀ बेगि न हरहु मूढ कर प्राना ॥
सुनत निसाचर मारन धाये ❀ सचिवन्ह सहित बिभीषन आये ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता ❀ नीतिबिरोध न मारिय दूता ॥
आन दंड कछु करिय गोसाईं ❀ सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहँसि बोला दसकंधर ❀ अंगभंग करि पठइय बंदर ॥

दोहा--कपि कै ममता पूँछि पर, सबहिं कहेउ समुझाय ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाय ॥२४॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि ❀ तब सठ निजनाथहिं लेइ आइहि ॥
जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बड़ाई ❀ देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ❀ भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातुधान सुनि रावनबचना ❀ लागे रचइ मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला ❀ बाढी पूँछि कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहँ आये पुरबासी ❀ मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ❀ नगर फेरि पुनि पूँछि प्रजारी ॥

पावक जरत देखि हनुमंता ❀ भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुकि चढेउ कपि कनकअटारी ❀ भईं सभीत निसा-चर-नारी ॥

दोहा--हरिप्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा, कपि बढ़ि लाग अकास ॥ २५॥

अथ क्षेपक

चल्यो फलाँगि धाम धूम लामको उठायऊ।
मनो अकाश ते नदी कृशानु की बहायऊ ॥
कि लंक लीलने को काल जीह सी पसारेहू।
किधौं अनी महान शूर सैफ सी निकारेहू ॥
फिराय लाय लाय अयन मयन से लगे बरै।
गयंद छोर बाजि छोर ऊँट छोरिये खरै ॥
अनेक बाल बालकी सुतात मात बोलहीं।
बचाय लीजिये हमैं समय समान डोलहीं ॥
अनेक नारि मारि रिंभ डिंभ काठ लावहीं।
अनेक डारि डारि वस्तु नारि लेन धावहीं ॥
अनेक कंत वीरते पुकारि बैन यों कहैं।
उठाय लेहु लाल माल जाल दे परो तहैं ॥
गिरैं कंगूर दूरते तबै कहै मंदोदरी।
विहाय लोक लाज कानि भागती न क्यों अरी ॥
अरे अकंप नातिकाय कंटकी सहोदरं।
लिवाय लेउ अर्द्ध गाति पूत नाति सोदरं ॥
अनेक बार मैं कही बुझायहू विभीषणं।
न मानि दाढ़िजार ने कुठार बंश तीक्षणं ॥
निकेत द्वार अर्द्ध उर्द्ध हाट बाट में जहाँ।
लुकाय जाय नीर तीर कीश देखिये तहाँ ॥
वधू जो कुम्भकर्ण की पसारि हाथ भाषिये।
दुहाइ रामचन्द्रकेर मोर कंत राखिये ॥

अनेक धाय धाय आय रावणै सुनायऊ।
बिचारि वीर मेघनाद से वली पठायऊ॥
अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आय मारने लगे।
घुमाय दीन बालधी पुकारि कूरसे भगे॥
विशाल ज्वाल जानि कोप मेघ बोल यों कही।
बुझाय देहु आगिरे बहाय कोशको सही॥
भले सुनाय मेघ आय पुंज पाथ छाड़ेऊ।
यथा सनेह पाप चौगुनी कृशानु बाढ़ेऊ॥
लगो जु अंग अंग बान प्रान ले भजे सबै।
निहार रीत मालवान स्यान बोलियो तबै॥
न आहि याहि अग्नि आहि ईशकी जु बामता।
समीर स्वास मीयकी जु राम रोष मामता॥
बुलाय कालते कह्यो लंगूर लाउ मारिकै।
बटोर भूत प्रेत यक्ष दंड चंड धारिकै॥
बिलोकि बात जात घात कौन मैन तासु को।
उठाय गालमें धरो परो खँभार जासुको॥
समेत शंभु इन्द्र बात जात पास आयऊ।
सभीत पंकजासनादि वीनती सुनायऊ॥

दोहा--देहु छाड़ि यमराज कहँ, यही बिनय यक मोर।
बरबस आयो लरन सुनि, दीनगाल ते छोर॥

इति क्षेपक

देह बिसाल परम हरुआई ❀ मंदिर तें मंदिर चढ धाई॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला ❀ झपट लपट बहुकोटि कराला॥
तात मातु हा सुनिय पुकारा ❀ एहि अवसर को हमहिं उबारा॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ❀ बानररूप धरे सुर कोई॥
साधुअवज्ञा कर फल ऐसा ❀ जरइ नगर अनाथ कर जैसा॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं ❀ एक बिभीषन कर गृह नाहीं॥

ता कर दूत अनल जेहि सिरिजा ❀ जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी ❀ कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दोहा--पूँछि बुझाइ खोइ स्रम, धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२६॥

मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा ❀ जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ ❀ हरषसमेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेउ तात अस मोर प्रनामा ❀ सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन - दयालु - बिरुद संभारी ❀ हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्र - सुत - कथा सुनायहु ❀ बानप्रताप प्रभुहिं समुझायहु ॥
मास दिवस महुँ नाथ न आवा ❀ तौ पुनि मोहि जियति नहिं पावा ॥
कहु कपि केहिबिधि राखउँ प्राना ❀ तुम्हहूँ तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतल भइ छाती ❀ पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सोइ राती ॥

दोहा--जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुबिध धीरजु दीन्ह ।
चरनकमल सिरु नाइ कपि, गवँनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी ❀ गर्भ स्रवहिं सुनि निसि-चर-नारी ॥
नाँघि सिंधु एहि पारहिं आवा ❀ सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना ❀ नूतन जनम कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा ❀ कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥
मिले सकल अति भये सुखारी ❀ तलफत मीन पाव जनु बारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा ❀ पूछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आये ❀ अंगदसंमत मधुफल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे ❀ मुष्टिप्रहार हनत सब भागे ॥

दोहा--जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीवँ हरष कपि, करि आये प्रभुकाज ॥२८॥

जौं न होति सीतासुधि पाई ❀ मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा ❀ आइ गये कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा ❀ मिले सबन्हि अतिप्रेम कपीसा ॥
पूछी कुसल कुसलपद देखी ❀ रामकृपा भा काजु बिसेखी ॥

नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना ❀ राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुग्रीवँ बहुरि तेहि मिलेऊ ❀ कपिन्हसहित रघुपति पहँ चलेऊ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा ❀ किये काजु मन हरष बिसेखा ॥
फटिकसिला बैठे दोउ भाई ❀ परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दोहा--प्रीतिसहित सब भेंटे, रघुपति करुनापुंज ।
पूछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पदकंज ॥२९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया ❀ जापर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर ❀ सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुनसागर ❀ तासु सुजसु त्रयलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयेउ सबु काजू ❀ जनम हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी ❀ सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवन तनय के चरित सुहाये ❀ जामवंत रघुपतिहि सुनाये ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाये ❀ पुनि हनुमान हरषि हिय लाये ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी ❀ रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥

दोहा--नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज-पद-जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट ॥३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही ❀ रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगललोचन भरि बारी ❀ बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुजसमेत गहेहु प्रभुचरना ❀ दीनबंधु प्रनतारतिहरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी ❀ केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोर मैं जाना ❀ बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा ❀ निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा ❀ स्वास जरइ छन माहँ सरीरा ॥
नयन स्रवहिं जल निजहित लागी ❀ जरइ न पाव देह बिरहागी ॥
सीता कै अति बिपति बिसाला ❀ बिनहिं कहे भलि दीनदयाला ॥

दोहा--निमिष निमिष करुनानिधि, जाहिं कलपसम बीति ।
बेगि चलिय प्रभु आनिय, भुजबल खलदल जीति ॥३१॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना ❀ भरि आये जल राजिवनयना ॥
बचन काय मन मम गति जाही ❀ सपनेहुँ बूझिय बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरन भजनु न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की ❀ रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी ❀ नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
प्रतिउपकार करउँ का तोरा ❀ सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं ❀ देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ❀ लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दोहा--सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख, गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

बार बार प्रभु चहहिं उठावा ❀ प्रेममगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु-कर-पंकज कपि के सीसा ❀ सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर ❀ लागे कहन कथा अतिसुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा ❀ कर गहि परमनिकट बैठावा ॥
कहु कपि रावनपालित लंका ❀ केहि बिधि दहेहु दुर्ग अतिबंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोला बचन बि-गत-अभिमाना ॥
साखामृग कै बडि मनुसाई ❀ साखा तें साखा पर जाई ॥
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा ❀ निसि-चर-गन बधि बिपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछु मोरी प्रभुताई ॥

दोहा--ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं, जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभाव बडवानलहि, जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥

नाथ भगति अति-सुख-दायनी ❀ देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परमसरल कपिबानी ❀ एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामसुभाव जेहि जाना ❀ ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा ❀ रघु-पति-चरन-भगति सोइ पावा ॥
सुनि प्रभुबचन कहहिं कपिबृंदा ❀ जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहिं बोलावा ❀ कहा चलइ कर करहु बनावा ॥

अब बिलंबु केहि कारन कीजै ❀ तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी ❀ नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

दोहा--कपिपति बेगि बोलाये, आये जूथप जूथ।
नानावरन अ-तुल-बल, बानर-भालु-बरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु-पद-पंकज नावहिं सीसा ❀ गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपि सैना ❀ चितइ कृपा करि राजिवनैना ॥
राम-कृपा-बल पाइ कपिंदा ❀ भये पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना ❀ सगुन भये सुंदर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती ❀ तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभुपयान जाना बैदेही ❀ फरकि बामअँग जनु कहि देही ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई ❀ असगुन भयउ रावनहि सोई ॥
चला कटकु को बरनइ पारा ❀ गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नखआयुध गिरि-पादप-धारी ❀ चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं ❀ डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

छंद—चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबलप्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गहि दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघु-बीर-रुचिर-पयान-प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठखर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

दोहा--एहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागरतीर।
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु बिपुल कपिबीर ॥३५॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ❀ जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निजगृह सब करहिं बिचारा ❀ नहिं निसि-चर-कुल केर उबारा ॥
जासु दूतबल बरनि न जाई ❀ तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
दूतिन्ह सन सुनि पुर-जन-बानी ❀ मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥

रहसि जोरि कर पतिपद लागी ❀ बोली बचन नीति-रस-पागी ॥
कंत करष हरिमन परिहरहू ❀ मोर कहा अतिहित हिय धरहू ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी ❀ स्रवहिं गर्भ रजनी-चर-घरनी ॥
तासु नारि निजसचिव बोलाई ❀ पठवहु कंत जौं चहहु भलाई ॥
तव कुल-कमल-बिपिन-दुख-दाई ❀ सीता सीत-निसा-सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे ❀ हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे ॥

दोहा--रामबान अहि-गन-सरिस, निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तब लगि, जतनु करहु तजि टेक ॥३६॥

स्रवन सुनी सठ ता करि बानी ❀ बिहँसा जगतबिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाव नारि कर साँचा ❀ मंगल महुँ भय मन अतिकाँचा ॥
जौं आवइ मर्कट कटकाई ❀ जियहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जा की त्रासा ❀ तासु नारि सभीत बड़ि हाँसा ॥
अस कहि बिहँसि ताहि उर लाई ❀ चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मंदोदरी हृदय कर चिंता ❀ भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभा खबरि असि पाई ❀ सिंधुपार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ❀ ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब स्रम नाहीं ❀ नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दोहा–सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिही नास ॥३७॥

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई ❀ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा ❀ भ्राताचरन सीसु तेहि नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निजआसन ❀ बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौं कृपाल पूछेहु मोहि बाता ❀ मति-अनु-रूप कहउँ हित ताता ॥
जो आपन चाहइ कल्याना ❀ सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना ॥
सो पर-नारि-लिलारु गोसाईं ❀ तजइ चौथि के चंद कि नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई ❀ भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई ॥
गुनसागर नागर नर जोऊ ❀ अलपलोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक पंथ।
सब परिहरि रघुबीरही, भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात रामु नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेस्वर कालहुँ कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता ❀ ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो-द्विज-धेनु-देव-हित-कारी ❀ कृपासिंधु मानुष-तनु-धारी ॥
जनरंजन भंजन खलब्राता ❀ बेद-धर्म-रच्छक सुनु भ्राता ॥
ताहि बयरु तजि नाइय माथा ❀ प्र-नतारति-भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही ❀ भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गये प्रभु ताहु न त्यागा ❀ बिस्व-द्रोह-कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय-ताप-नसावन ❀ सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन ॥

दोहा—बार बार पद लागउँ, बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन, कहि पठइ यह बात।
तुरम सो मैं प्रभु सन कही, पाइ सुअवसरु तात ॥३९॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना ❀ तासु बचन सुनि अतिसुख माना ॥
तात अनुज तब नीतिबिभूषन ❀ सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपु-उत-करष कहत सठ दोऊ ❀ दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयेउ बहोरी ❀ कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥
सुमति कुमति सब के उर रहहीं ❀ नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ❀ जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता ❀ हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसि-चर-कुल केरी ❀ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दोहा—तात चरन गहि मागेउँ, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध-पुरान-स्रुति-संमत बानी ❀ कही बिभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठा रिसाई ❀ खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
जियसि सदा सठ मोर जियावा ❀ रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं ❀ भुजबल जेहि जीता मैं नाहीं ॥

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती ❀ सठ मिलु जाइ तिन्हहिं कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ❀ अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई ❀ मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितुसरिस भलेहि मोहि मारा ❀ राम भजे हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लेइ नभपथ गयऊ ❀ सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दोहा--रामु सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ।
मैं रघु-वीर-सरन अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चला बिभीषन जबहीं ❀ आयुहीन भये सब तबहीं ॥
साधुअवज्ञा तुरत भवानी ❀ कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषनु त्यागा ❀ भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं ❀ करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउँ जाइ चरन-जल-जाता ❀ अरुन मृदुल सेवक-सुख-दाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी ❀ दंडक - कानन - पावन - कारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये ❀ कपट-कुरंग-संग धर धाये ॥
हर-उर-सर-सरोज पद जेई ❀ अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

दोहा--जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि, भरत रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ, इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥४२॥

एहिबिधि करत सप्रेम बिचारा ❀ आयउ सपदि सिंधु येहि पारा ॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा ❀ जाना कोउ रिपुदूत बिसेखा ॥
ताहि राखि कपीस पहिं आये ❀ समाचार सब ताहि सुनाये ॥
कह सुग्रीवँ सुनहु रघुराई ❀ आवा मिलन दसाननभाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❀ कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया ❀ कामरूप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा ❀ राखिय बाँधि मोहि अस भावा ॥
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी ❀ मम पन सरनागत - भय - हारी ॥
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना ❀ सरनागतबच्छल भगवाना ॥

दोहा--सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय, तिन्हहिं बिलोकत हानि ॥४३॥

कोटि बिप्रबध लागहि जाहू ❀ आये सरन तजउ नहिं ताहू ॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं ❀ जनम कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
पापवंत कर सहज सुभाऊ ❀ भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई ❀ मोरे सनमुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहि पावा ❀ मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा ❀ तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुँ सखा निसाचर जेते ❀ लछिमन हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जौं सभीत आवा सरनाई ❀ रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ॥

दोहा--उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपा निकेत।
जय कृपालु कहि कपि चले, अंगद-हनू-समेत ॥४४॥

सादर तेहि आगे करि बानर ❀ चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि तें देखे दोउ भ्राता ❀ नयनानंद दान के दाता ॥
बहुरि राम छविधाम बिलोकी ❀ रहेउ ठठुकि एकटक पल रोकी ॥
भुज प्रलम्ब कंजारुनलोचन ❀ स्यामल गात प्रनत-भय-मोचन ॥
सिंहकंध आयत उर सोहा ❀ आनन अमित-मदन-मन मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता ❀ मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
नाथ दसानन कर मैं भ्राता ❀ निसि-चर-बंस-जनम सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा ❀ जथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दोहा--स्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुबीर ॥४५॥

अस कहि करत दंडवत देखा ❀ तुरत उठे प्रभु हरष बिसेखा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा ❀ भुज बिसाल गहि हृदय लगावा ॥
अनुजसहित मिलि ढिग बैठारी ❀ बोले बचन भगत-भय-हारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा ❀ कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खलमंडली बसहु दिनु राती ❀ सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती ❀ अति नयनिपुन न भाव अनीती ॥
बरु भल बास नरक कर ताता ❀ दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया ❀ जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥

दोहा--तब लगि कुसल न जीव कहुँ, सपनेहुँ मन बिस्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ, सोक धाम तजि काम ॥४६॥
तब लगि हृदय बसत खल नाना ❀ लोभ मोह मत्सर मद माना ॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा ❀ धरे चापसायक कटि भाथा ॥
ममता तरुन तमी अँधियारी ❀ राग द्वेष अलूक सुखकारी ॥
तब लगि बसत जीव मन माहीं ❀ जब लगि प्रभु-प्रताप-रवि नाहीं ॥
अब मैं कुसल मिटे भय भारे ❀ देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला ❀ ताहि न ब्याप त्रिबिध भवसूला ॥
मैं निसिचर अति-अधम-सुभाऊ ❀ सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा ❀ तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा ॥
दोहा--अहोभाग्य मम अमित अति, राम कृपा-सुख-पुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव, सेव्य जुगल-पद-कंज ॥४७॥
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ ❀ जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥
जौं नर होइ चराचरद्रोही ❀ आवइ सभय सरन तकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना ❀ करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा ❀ तनु धन भवन सुहृद परिवारा ॥
सब कइ ममतातागा बटोरी ❀ मम पद मनहिं बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं ❀ हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे ❀ लोभीहृदय बसइ धन जैसे ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे ❀ धरउँ देह नहिं आन निहोरे ॥
दोहा--सगुनउपासक पर-हित-निरत नीति-दृढ-नेम ।
ते नर प्रानसमान मम, जिन्ह के द्विज-पद-प्रेम ॥४८॥
सुनु लंकेस सकल गुन तोरे ❀ ता तें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरे ॥
राम बचन सुनि बानरजूथा ❀ सकल कहहिं जय कृपाबरूथा ॥
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी ❀ नहिं अघात स्रवनामृत जानी ॥
पदअंबुज गहि बारहिंबारा ❀ हृदय समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव स-चराचर-स्वामी ❀ प्रनतपाल उर-अंतर-जामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही ❀ प्रभु-पद-प्रीति-सरित सो बही ॥

अब कृपाल निज भगति पावनी ❀ देहु सदा सिव-मन-भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा ❀ माँगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं ❀ मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा ❀ सुमनवृष्टि नभ भई अपारा ॥

दोहा--रावनक्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषन राखेउ, दीन्हेउ राजु अखंड ॥
जो संपति सिव रावनहिं, दीन्हि दिये दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४९॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना ❀ ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥
निजजन जानि ताहि अपनावा ❀ प्रभुसुभाव कपि-कुल-मन भावा ॥
पुनि सर्वज्ञ सर्व-उर-बासी ❀ सर्वरूप सबरहित उदासी ॥
बोले बचन नीति-प्रति-पालक ❀ कारनमनुज दनुज-कुल-घालक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा ❀ केहि बिधि तरिय जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झष जाती ❀ अतिअगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक ❀ कोटि-सिंधु-सोषक तव सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति अस गाई ❀ बिनय करिय सागर सन जाई ॥

दोहा--प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि, सकल-भालु-कपि-धारि ॥५०॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई ❀ करिय दैव जौं होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा ❀ रामबचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा ❀ सोखिय सिंधु करिय मन रोसा ॥
कादर मन कहुँ एक अधारा ❀ दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा ❀ ऐसेहि करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई ❀ सिंधु समीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई ❀ बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आये ❀ पाछे रावन दूत पठाये ॥

दोहा--सकल चरित तिन्ह देखे, धरे कपट कपिदेह ।
प्रभुगुन हृदय सराहहिं, सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट बखानहिं रामसुभाऊ ❀ अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने ❀ सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
कह सुग्रीवँ सुनहु सब वानर ❀ अंगभंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीवँबचन कपि धाये ❀ बाँधि कटक चहुँ पास फिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे ❀ दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना ❀ तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाये ❀ दया लागि हँसि तुरत छोडाये ॥
रावन कर दीजेहु यह पाती ❀ लछिमनबचन बाँचु कुलघाती ॥

दोहा—कहेहु मुखागर मूढ सन, मम संदेस उदार ।
सीता देइ मिलहु न त, आवा काल तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमनपद माथा ❀ चले दूत बरनत गुनगाथा ॥
कहत रामजसु लंका आये ❀ रावनचरन सीस तिन्ह नाये ॥
बिहँसि दसानन पूछी बाता ❀ कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी ❀ जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राजु लंका सठ त्यागी ❀ होइहि जव कर कीट अभागी ॥
पुनि कहु भालु कीस कटकाई ❀ कठिन कालप्रेरित चलि आई ॥
जिन्हके जीवन्ह कर रखवारा ❀ भयउ मृदुलचित सिंधु बेचारा ॥
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी ❀ जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी ॥

दोहा—की भइ भेंट कि फिरि गये, स्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु-दल-तेज-बल, बहुत चकित चित तोर ॥५३॥

नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे ❀ मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ॥
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा ❀ जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
रावनदूत हमहिं सुनि काना ❀ कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
स्रवन नासिका काटन लागे ❀ रामसपथ दीन्हे हम त्यागे ॥
पूछेहु नाथ रामकटकाई ❀ बदन कोटिसत बरनि न जाई ॥
नानाबरन भालु-कपि-धारी ❀ बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा ❀ सकल कपिन्ह महँ तेहि बल थोरा ॥
अमितनाम भट कठिन कराला ❀ अ-मित-नाग-बस बिपुल बिसाला ॥

दोहा--द्विविद मयंद नील नल, अंगदादि बिकटासि ।
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवंत बलरासि ॥५४॥

ए कपि सब सुग्रीवँसमाना ❀ इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
रामकृपा अ-तुलित-बल तिन्हहीं ❀ तृनसमान त्रैलोकहिं गनहीं ॥
अस मैं स्रवन सुना दसकंधर ❀ पदुम अठारह जूथप बंदर ॥
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं ❀ जो न तुम्हहिं जीतइ रन माहीं ॥
परमक्रोध मीजहिं सब हाथा ❀ आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
सोषहिं सिंधु सहितझषब्याला ❀ पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा ❀ ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका ❀ मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका ॥

दोहा--सहज सूर कपिभालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावन काल कोटि कहुँ, जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम-तेज-बल-बुधि बिपुलाई ❀ सेष सहससत सकहिं न गाई ॥
सक सर एक सोखि सत सागर ❀ तव भ्रातहिं पूछेउ नय नागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं ❀ माँगत पंथ कृपा मन माहीं ॥
सुनत बचन बिहँसा दससीसा ❀ जौं असि मति सहायकृत कीसा ॥
सहज भीरु कर बचन दृढाई ❀ सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ मृषा का करसि बड़ाई ❀ रिपु-बल-बुद्धि-थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषनु जा के ❀ विजय बिभूति कहाँ लगि ता के ॥
सुनि खलवचन दूतरिसि बाढ़ी ❀ समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामानुज दीन्ही यह पाती ❀ नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहँसि बामकर लीन्ही रावन ❀ सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

दोहा--बातन्ह मनहिं रिझाइ सठ, जनि घालेसि कुल खीस ।
रामविरोध न उबरसि, सरन बिष्णु अज ईस ॥
की तजि मान अनुज इव, प्रभु-पद-पंक-ज-भृंग ।
होहि कि रामसरानल, खल कुलसहित पतंग ॥५६॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई ❀ कहत दसानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा ❀ लघु तापस कर बागविलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी ❀ समुझहु छाडि प्रकृत अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा ❀ नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥
अतिकोमल रघुबीर-सुभाऊ ❀ जद्यपि अखिललोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिहीं ❀ उर अपराध न एकउ धरिहीं ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजै ❀ एतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेहि कहा देन बैदेही ❀ चरनप्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ ❀ कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निजकथा सुनाई ❀ रामकृपा आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति के साप भवानी ❀ राच्छस भयेउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
बंदि रामपद बारहिं बारा ❀ मुनि निजआस्रम कहुँ पगु धारा ॥

दोहा--बिनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन बानसरासन आनू ❀ सोखउँ बारिधि बिसिखकृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ❀ सहज कृपिन सन सुंदर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञानकहानी ❀ अतिलोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरिकथा ❀ ऊसर बीज बये फल जथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढावा ❀ यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला ❀ उठी उदधि उरअंतर ज्वाला ॥
मकर--उरग--झष--गन अकुलाने ❀ जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनकथार भरि मनिगन नाना ❀ बिप्ररूप आयउ तजि माना ॥

दोहा--काटेहि पइ कदली फरइ, कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु, डाँटेहि पै नव नीच ॥५८॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ❀ छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी ❀ इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥

तव प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रंथहि गाये ॥
प्रभुआयसु जेहि कहँ जस अहई ❀ सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही ❀ मरजादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही ॥
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी ❀ सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभुप्रताप मैं जाब सुखाई ❀ उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु आज्ञा अपेल स्रुति गाई ❀ करउ सो बेगि जो तुम्हहिं सुहाई ॥

दोहा--सुनत विनीत वचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि विधि उतरइ कपिकटकु, तात सो कहहु उपाइ ॥५९॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❀ लरिकाई रिषिआसिष पाई ॥
तिन्ह के परस किये गिरि भारे ❀ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभुप्रभुताई ❀ करिहउँ बलअनुमान सहाई ॥
एहि विधि नाथ पयोधि बँधाइय ❀ जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइय ॥
एहि सर मम उत्तर-तट-बासी ❀ हतहु नाथ खल नर अघरासी ॥
सुनि कृपाल सागर-मन-पीरा ❀ तुरतहि हरी राम रनधीरा ॥
देखि राम-बल-पौरुष भारी ❀ हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
सकलचरित कहि प्रभुहिं सुनावा ❀ चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छंद--निज भवन गवँनेउ सिंधु श्री-रघु-पतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि-मल-हर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुखभवन संसयसमन दमनविषाद रघु-पति-गुन-गना ।
तजि सकल आसभरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दोहा--सकल-सु-मंगल-दायक, रघु-नायक-गुन-गान ।
सादर सुनहि ते तरहिं भव, सिंधु बिना जलजान ॥६०॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ।

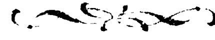


श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

लङ्काकाण्ड



श्लोकाः

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं योगीन्द्रज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् । मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥ शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् । काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥ २ ॥ यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् । खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु माम् ॥ ३ ॥

दोहा--लव निमेष परमानु जुग, बरष कलप सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ, कालु जासु कोदंड ॥

सोरठा-सिंधुबचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब बिलंबु केहि काम, करहु सेतु उतरै कटकु ॥
सुनहु भानु-कुल-केतु, जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यह लघु जलधि तरत कति बारा ❀ अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥
प्रभुप्रताप बड़वानल भारी ❀ सोखेउ प्रथम पयो-निधि-बारी ॥
तव रिपु--नारि--रुदन--जल-धारा ❀ भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा ॥
सुनि अतिउक्ति पवनसुत केरी ❀ हरषे कपि रघु--पति--तन हेरी ॥

जामवंत बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहिं सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि मन माहीं ❀ करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी ❀ सकल सुनहु बिनती कछु मोरी ॥
राम -- चरन -- पंकज उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मरकट बिकटबरूथा ❀ आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करि हू हा ❀ जय रघुबीर प्रतापसमूहा ॥

दोहा--अतिउतंग गिरिपादप, लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नीलहि, रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

अथ क्षेपक

जुग जुग सूजै जहाँ थल माहीं ❀ खोजत पर्वत कतहूँ नाहीं ॥
करहु बिचार करिय का भाई ❀ हर्षित सब उत्तर दिशि जाई ॥
लेहिं महाभट सुगिरि उपारी ❀ मारुत बेगि चलत बनचारी ॥
कहुँ कहुँ एकहि एक प्रचारी ❀ तौलहिं निकट केहि गिरि भारी ॥
सेतु बिषम कतहूँ नहिं कोई ❀ रचा नीलनल द्विविद जु सोई ॥
प्रथम दिवस नल सेतु सुहावन ❀ चौदह जोजन कीन्ह सुपावन ॥
द्वितिय दिवस सुभ जोजन बीसा ❀ तीजे दिन इकइस कियो कीसा ॥
दिवस चतुर्थ सुबाइस जोजन ❀ पंचम तेइस कियो मुदितमन ॥
दस जोजन आयत अति सुंदर ❀ सत जोजन बिशाल शोभापर ॥
तब आज्ञा रघुराज सुनाई ❀ अब पर्वत मत लावहु भाई ॥
सुनत बचन कपि भये सुखारी ❀ जहँ तहँ पर्वत दिये बिसारी ॥

दोहा--एक चरित अति रुचिर अब, चित धरि सुनहु खगेश ।
गये पवन सुत उत्तरहिं, जो गिरि बसहिं धनेश ॥

गोबर्धन सो रुचिर पहारा ❀ जोजन साठ तासु बिस्तारा ॥
बिबिध उपाय पवन सुत कीन्हा ❀ तन नहिं उठा अचल पद लीन्हा ॥
तब कपि राम चरन धरि ध्याना ❀ लगे उठावन मन मुसुकाना ॥
कह गिरीश सुनिये हनुमाना ❀ जन्म भूमि तजिहों नहिं आना ॥
कहा कपीश चलउँ लै तहवाँ ❀ अच्युत राम बिराजत जहवाँ ॥
सुनत बचन गोबर्धन बोला ❀ प्रभु यह बचन कहा अनमोला ॥

जो तुम राम दरश मोहिं देहू ❀ तो ले चलहु अचल जस लेहू ॥
राम सुमिरि हँसि कीन्ह पयाना ❀ बृंदा बिपिन ताहि नियराना ॥

दोहा--गोवरधन इत रहहु तुम, मैं गवनव प्रभु पास।
कछु संशय तहि करहु चित, पुरवहुँ सब तव आस॥

तहँ गोवर्धन को पधरायो ❀ विप्र रूप तिन वचन सुनायो ॥
प्रभु दरसन की इच्छा भारी ❀ तजों न विनती सुनहु हमारी ॥
अस कहि चले हिये सुख मानी ❀ कही जाय प्रभुसे सब बानी ॥
रघुपति कह्यो सुनहु हनुमाना ❀ कहो जाय तासो मम बाना ॥
द्वापर अन्त कृष्ण अवतारा ❀ लहउँ हरन भूमि कर भारा ॥
सात दिना तोहि करपर धारउँ ❀ ब्रजबासिन को कष्ट निवारउँ ॥
यह तुम ताहि सुनावहु जाई ❀ चले पवन सुत आतुर धाई ॥
कहा सकल तेहि प्रभुकी बानी ❀ आये पुनि प्रभुपहँ सुख मानी ॥

इति क्षेपक

सैल बिसाल आनि कपि देहीं ❀ कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥
देखि सेतु अति--सुंदर -- रचना ❀ बिहँसि कृपानिधि बोले बचना ॥
परम रम्य उत्तम यह धरनी ❀ महिमा अमित जाइ नहिं बरनी ॥
करिहउँ इहाँ संभुथापना ❀ मोरे हृदय परम कलपना ॥
सुनि कपीस बहु दूत पठाये ❀ मुनिबर सकल बोलि ले आये ॥
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा ❀ सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥
सिवद्रोही मम भगत कहावा ❀ सो नर सपनेहु मोहि न पावा ॥
संकरबिमुख भगति चह मोरी ❀ सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

दोहा--संकरप्रिय मम द्रोही, सिवद्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक महुँ बास॥ २॥

जे रामेस्वर दरसन करिहहिं ❀ ते तनु तजि हरिलोक सिधरिहहिं ॥
जे गंगाजल आनि चढाइहि ❀ सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि ❀ भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही ❀ सो बिनुस्रम भवसागर तरिही ॥
राम बचन सब के जिय भाये ❀ मुनिबर निज निज आस्रम आये ॥

शिव स्थापना

(पृ० स० ३६०)



लिङ्ग थापि विधिवत करि पूजा ॐ शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा ॥

गिरिजा रघुपति कै यह रीती ❀ संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥
बाँधा सेतु नील नल नागर ❀ रामकृपा जसु भयउ उजागर ॥
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई ❀ भये उपल बोहित सम तेई ॥
महिमा यह न जलधि कै बरनी ❀ पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी ॥

दोहा—श्री-रघु-बीर-प्रताप तें, सिंधु तरे पाषान ।
ते मतिमंद जे राम तजि, भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❀ देखि कृपानिधि के मन भावा ॥
चली सेन कछु बरनि न जाई ❀ गरजहिं मरकट-भट-समुदाई ॥
सेतु बंध ढिग चढ़ि रघुराई ❀ चितव कृपाल सिंधुबहुताई ॥
देखन कहुँ प्रभु करुनाकंदा ❀ प्रगट भये सब जलचर-बृंदा ॥
मकर नक्र झख नाना ब्याला ❀ सत-जोजन-तन परमबिसाला ॥
ऐसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं ❀ एकन्ह के डर तेपि डेराहीं ॥
प्रभुहिं बिलोकहिं टरहिं न टारे ❀ मन हरषित सब भये सुखारे ॥
तिन्ह की ओट न देखिय बारी ❀ मगन भये हरिरूप निहारी ॥
चला कटकु प्रभु आयसु न जाई ❀ को कहि सक कपि-दल-बिपुलाई ॥

दोहा—सेतुबंध भइ भीर अति, कपि नभपंथ उड़ाहिं ।
अपर जलचरन्हि ऊपर, चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ॥ ४ ॥

अस कौतुक बिलोकि दोउ भाई ❀ बिहँसि चले कृपाल रघुराई ॥
सेनसहित उतरे रघुबीरा ❀ कहि न जाइ कपि-जूथप भीरा ॥
सिंधुपार प्रभु डेरा कीन्हा ❀ सकल कपिन्ह कहँ आयसु दीन्हा ॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये ❀ सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये ॥
सब तरु फरे राम हित लागी ❀ रितु अरु कुरितु कालगति त्यागी ॥
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं ❀ लंका सनमुख सिखर चलावहिं ॥
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं ❀ घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥
दसनन्हि काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभु सुजसु देहिं तब जाना ॥
जिन्ह कर नासा कान निपाता ❀ तिन्ह रावनहि कहा सब बाता ॥
सुनत स्रवन बारिधि बंधाना ❀ दसमुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दोहा—बाँधे वननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपती, उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी ❀ बिहँसि चला गृह करि भय भोरी ॥
मंदोदरी सुनेउ प्रभु आयो ❀ कौतुकही पाथोधि बँधायो ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी ❀ बोली परम मनोहर बानी ॥
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा ❀ सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
नाथ बयरु कीजे ताही सों ❀ बुधि बल सकिय जीति जाही सों ॥
तुम्हहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिनकरहिं जैसा ॥
अति बल मधु कैटभ जेहि मारे ❀ महाबीर दितिसुत संहारे ॥
जेहि बलि बाँधि सहसभुज मारा ❀ सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा ❀ काल करम जिव जाके हाथा ॥

दोहा—रामहिं सौंपिय जानकी, नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन, जाइ भजिय रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई ❀ बाघउ सनमुख गयें न खाई ॥
चाहिय करन सो सब करि बीते ❀ तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥
संत कहहिं असि नीति दसानन ❀ चौथें-पन जाइहि नृप कानन ॥
तासु भजनु कीजिय तहँ भरता ❀ जो करता पालक संहरता ॥
सोइ रघुबीर प्रनतअनुरागी ❀ भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी ❀ भूप राजु तजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोसलाधीस रघुराया ❀ आयउ करन तोहि पर दाया ॥
जौं पिय मानहु मोर सिखावन ❀ सुजसु होइ तिहुँपुर अतिपावन ॥

दोहा—अस कहि लोचन नीर भरि, गहि पद कंपितगात ।
नाथ भजहु रघु-बीर-पद, अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥

तब रावन मयसुता उठाई ❀ कहइ लाग खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना ❀ जग जोधा को मोहि समाना ॥
बरुन कुबेर पवन जम काला ❀ भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
देव दनुज नर सब बस मोरें ❀ कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई ❀ सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥

मंदोदरी हृदय अस जाना ❀ कालबिबस उपजा अभिमाना ॥
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा ❀ करब कवनि बिधि रिपु सें जूझा ॥
कहहिं सचिव सुनु निसि-चर-नाहा ❀ बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
कहहु कवन भय करिय बिचारा ❀ नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दोहा--बचन सबहिं के स्रवन सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि।
नीतिबिरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥८॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसोहाती ❀ नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
बारिधि नाँघि एक कपि आवा ❀ तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥
छुधा न रही तुम्हहिं तब काहू ❀ जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगे दुख पावा ❀ सचिवन्ह अस मत प्रभुहिं सुनावा ॥
जेहिं बारीस बँधायउ हेला ❀ उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
सो भनु मनुज खाब हम भाई ❀ बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
तात बचन मम सुनु अतिआदर ❀ जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
प्रियबानी जे सुनहिं जे कहहीं ❀ ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
बचन परमहित सुनत कठोरे ❀ सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती ❀ सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥

दोहा--नारि पाइ फिरि जाहिं जौं, तौ न बढ़ाइय रारि।
नाहिं त सनमुख समर महि, तात करिय हठि मारि ॥९॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा ❀ उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
सुत सन कह दसकंठ रिसाई ❀ असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥
अबहीं तें उर संसय होई ❀ बेनुमूल सुत भयउ घमोई ॥
सुनि पितुगिरा परुष अतिघोरा ❀ चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
हितमत तोहि न लागत कैसें ❀ कालबिबस कहुँ भेषज जैसें ॥
संध्यासमय जानि दससीसा ❀ भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
लंका सिखर उपर आगारा ❀ अति बिचित्र तहँ होइ अखारा ॥
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन ❀ लागे किंनर गुनगन गावन ॥
बाजहिं ताल पखाउज बीना ❀ नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

दोहा--सु-नासीर-सत-सरिस सो, संतत करइ बिलास।
परम-प्रबल-रिपु सीस पर, तदपि न कछु मन त्रास ॥१०॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा ❀ उतरे सेनसहित अतिभीरा ॥
सिखर एक उतंग अति देखी ❀ परम रम्य सम सुभ्र बिसेखी ॥
तहँ तरु-किसलय-सुमन सुहाये ❀ लछिमन रचि निज हाथ डसाये ॥
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
प्रभु कृतसीस कपीसउछंगा ❀ बाम दहिन दिसि चाप निषंगा ॥
दुहुँ करकमल सुधारत बाना ❀ कह लंकेस मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना ❀ चरन कमल चाँपत बिधि नाना ॥
प्रभुपाछें लछिमन बीरासन ❀ कटि निषंग कर बान सरासन ॥

दोहा—एहि बिधि कृपारूप गुन, धाम रामु आसीन।
धन्य ते नर एहि ध्यान जे, रहत सदा लयलीन ॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक।
कहत सबहिं देखहु ससिहि, मृग-पति-सरिस असंक ॥११॥

पूरबदिसि गिरि-गुहा-निवासी ❀ परमप्रताप तेज बलरासी ॥
मत्त - नाग - तम - कुंभ-बिदारी ❀ ससि केसरी गगन-बन-चारी ॥
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा ❀ निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥
कह प्रभु ससि महँ मेचकताई ❀ कहहु काह निज निज मति भाई ॥
कह सुग्रीवँ सुनहु रघुराई ❀ ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥
मारेहु राहु ससिहि कह कोई ❀ उर महँ परी स्यामता सोई ॥
कोउ कह जब बिधि रतिमुख कीन्हा ❀ सारभाग ससि कर हरि लीन्हा ॥
छिद्र सो प्रगट इंदुउर माहीं ❀ तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं ॥
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा ❀ अतिप्रिय निजउर दीन्ह बसेरा ॥
बिषसंजुत करनिकर पसारी ❀ जारत बिरहवंत नरनारी ॥

दोहा—कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरति बिधुउर बसति, सोइ स्यामता अभास ॥

पवनतनय के बचन सुनि, बिहँसे रामु सुजान।
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान॥१२॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसा ❀ घन घमंड दामिनी बिलासा॥
मधुर मधुर गरजइ घन घोरा ❀ होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा॥
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला ❀ होइ न तड़ित न बारिदमाला॥
लंकासिखर उपर आगारा ❀ तहँ दसकंधर देख अखारा॥
छत्र मेघडंबर सिर धारी ❀ सोइ जनु जलदघटा अतिकारी॥
मंदोदरी - स्रवन - ताटंका ❀ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❀ सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा॥
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना ❀ चाप चढ़ाइ बान संधाना॥

दोहा--छत्र मुकुट ताटंक तब, हते एकही बान।
सब कें देखत महि परे, मरम न कोऊ जान॥
अस कौतुक करि रामसर, प्रबिसेउ आइ निषंग।
रावन सभा ससंक सब, देखि महा रस-भंग॥१३॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेखा ❀ अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा॥
सोचहिं सब निज हृदय मँझारी ❀ असगुन भयउ भयंकर भारी॥
दसमुख देखि सभा भय पाई ❀ बिहँसि बचन कह जुगुति बनाई॥
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही ❀ मुकुट परे कस असगुन ताही॥
सयन करहु निज निज गृह जाई ❀ गवने भवन सकल सिर नाई॥
मंदोदरी सोच उर बसेऊ ❀ जब तें स्रवनपूर महि खसेऊ॥
सजल नयन कह जुग कर जोरी ❀ सुनहु प्रानपति बिनती मोरी॥
कंत रामबिरोध परिहरहू ❀ जानि मनुज जनि मन हठ धरहू॥

दोहा--बिस्वरूप रघु-बंस-मनि, करहु बचन बिस्वासु।
लोककल्पना बेद कर, अंग अंग प्रति जासु॥१४॥

पद पाताल सीस अजधामा ❀ अपर लोक अँग अँग बिस्रामा॥
भृकुटि बिलास भयंकर काला ❀ नयन दिवाकर कच घनमाला॥
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा ❀ निसि अरु दिवस निमेष अपारा॥
स्रवन दिसा दस बेद बखानी ❀ मारुत स्वास निगम निजबानी॥

अधर लोभ जम दसन कराला ❀ माया हास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अंबुपति जीहा ❀ उतपति पालन प्रलय समीहा ॥
रोमराजि अष्टादस भारा ❀ अस्थि सैल सरिता नस जारा ॥
उदर उदधि अधगो जातना ❀ जगमय प्रभु का बहु कलपना ॥

दोहा--अहंकार सिव बुद्धि अज, मन ससि चित्त महान ।
मनुज बास चर-अचर-मय, रूप राम भगवान ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सन बयरु बिहाइ ।
प्रीति करहु रघु-बीर-पद, मम अहिवात न जाइ ॥१५॥

बिहँसा नारिबचन सुनि काना ❀ अहो मोहमहिमा बलवाना ॥
नारिसुभाउ सत्य कबि कहहीं ❀ अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥
साहस अनृत चपलता माया ❀ भय अबिबेक असौच अदाया ॥
रिपु कर रूप सकल तैं गावा ❀ अति बिसाल भय मोहि सुनावा ॥
सो सब प्रिया सहज बस मोरें ❀ समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई ❀ एहि बिधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥
तब बतकही गूढ़ मृगलोचनि ❀ समुझत सुखद सुनत भयमोचनि ॥
मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ ❀ पियहि कालबस मतिभ्रम भयऊ ॥

दोहा--एहि बिधि करत बिनोद बहु, प्रात प्रगट दसकंध ।
सहज असंक सु-लंक-पति, सभा गयउ मदअंध ॥

सोरठा--फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरखहृदय न चेत, जौं गुरु मिलहिं बिरंचि सम ॥१६॥

अथ क्षेपक

दोहा--मंत्रिन सहित दशानन, चढ़ेउ धौरहर जाइ ।
शुकसारन कह राजसन, देखहु दल समुदाइ ॥

यह जो सिंहनाद किलकाई ❀ तरुवर सप्त रुमान उँचाई ॥
सहस कोटि शत संकु समाना ❀ सँग इनके बानर परिमाना ॥
रण अजीत अरु सहज सशंका ❀ नाद सुनै काँपै गढ़ लंका ॥
लगि अकास बनचर लंगूरा ❀ जनु ऋतु पावस धनु नभ पूरा ॥
विशकर्मा के सुत अभिमानी ❀ इन सागर बाँधेउ अनुमानी ॥

बसहिं ताम्रगिरि कंदर माहीं ❀ गोदावरी विमल जल पाहीं ॥
अति बल आगे धावहिं बीरा ❀ इनपर कृपा करहिं रघुबीरा ॥
इनके परस किये गिरि शीला ❀ जलमें तरहिं नाम नल नीला ॥

दोहा-पद्म अठारह कपि कटक, चले इनकी भुजछाँह ।
अपने हाथ सुपुष्प लै, रघुपति पूजी बाँह ॥

यह जो आवत अचल समाना ❀ चौदह तार ऊँच परमाना ॥
वास पुलिंदा के तट करई ❀ अंबुद ऊपर यह संचरई ॥
रक्त कमल केसर सम देहा ❀ जनु अकाश संध्याकर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूछ भ्रमाई ❀ लंका सौंह चितै जनु खाई ॥
बाली सुत तारा को जायो ❀ अति जुझार रघुपति मन भायो ॥
मन में जपै राम कर नाऊँ ❀ निशिदिन तिहिकर एक सुभाऊँ ॥
करै बज्र बासव कर भंगा ❀ उदयाचल कहँ लेइ उछंगा ॥
सेनापति यह सबके आगे ❀ रघुपति कृपा भाग इहि जागे ॥

दोहा-पाँव भूमि जो चापहीं, पन्नग होहिं अकाज ।
पाँच पद्म बानर लिये, यह अंगद युवराज ॥

यह जो श्वेत लसे तनुरेपा ❀ जनु रूपेकर शृंग सुवेपा ॥
दीर्घ केश दारुण भुजदंडा ❀ चलत चलत बलबुद्धि प्रचंडा ॥
बास करै जलनिधि के तीरा ❀ पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी ❀ सकल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
बल अरु बुद्धिन इन सम आना ❀ इनकर पुरुषारथ जग जाना ॥
जेहि दिन जनमेउ बल अधिकाई ❀ चढ़ेउ गगन शशि देखि ललाई ॥
धरणी धसकि धरन जब उड़ेऊ ❀ सत्तरि योजन ते पुनि फिरेऊ ॥

दोहा-मरकट कोटि पचास से, रहैं सर्वदा साथ ।
कालहुते रणमें जुझै, कुमुद नाम कपिनाथ ॥

यह देखहु जो घटा सोहाई ❀ मानो भर भादों बहुताई ॥
आगे पाछे दश दिशि धावहिं ❀ शिला शृंग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नाग बल शंकु समाना ❀ सत पद्म इनकर परिमाना ॥
ये ऋक्षप काशी के बासी ❀ अजरअजित अविचल अविनासी ॥

तीक्षण दंत नखायुध धारी ❀ गहि मारहिं गजदंत उपारी ॥
इन ऋक्षन कर यूथ अपारा ❀ धूमकेतु यह पालन हारा ॥
इन्ह कर ज्येष्ठ बन्धु जमवंता ❀ जिहिके बलकर अहहि न अंता ॥
तीनि लोक सो जूझै पारै ❀ संकट परै सुमेरु उखारै ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा ❀ वज्र समान अभेद शरीरा ॥

दोहा–राजाकर यह मंतरी, रघुपति कर प्रिय दास ।
कालहु ते जूझै समर, नेक न लेइ उसास ॥

अब देखहु यह यूथ अपारा ❀ पीत वरण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुण रवि किरणन छूटी ❀ कुंकुम उबटि दिशा जनु फूटी ॥
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा ❀ सहस वृंद सो कोटि समूहा ॥
शिला शृंग जे आगे परहीं ❀ पायन मीड़ि किरकिरा करहीं ॥
कंचन गिरि कंदर के बासी ❀ इनकर यूथ नाथ अविनाशी ॥
अतिबल वासव कर हितकारी ❀ सखा सुकंठ केर शुभकारी ॥
पान करै गंगा कर नीरा ❀ पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
क्षण क्षण सिंहनाद जो होई ❀ यह गर्जत आवत है सोई ॥

दोहा–यशतिहुँ मंडल गलित गज, बल कर नाहिं न अन्त ।
यह कपिराजा केसरी, जिहि कर सुत हनुमन्त ॥

घटा एक आवत है जूटी ❀ जनु मधु सिंधु बलै निशि फूटी ॥
भूमि अकाश अचल अवसाने ❀ उत्तर तें जनु सलभ उड़ाने ॥
यहि महँ यूथ नाथ जो अहई ❀ अति बल राजा के संग रहई ॥
कपि के रूप अनल अविनासी ❀ ये दोउ पारियात के बासी ॥
अति सुन्दर अरु समर विपक्षी ❀ महाबीर दोउ गवय गवक्षी ॥
पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा ❀ मर्दन गंध मदन दोउ बीरा ॥
साठि सहस्र नाग बल जाही ❀ इन महँ एक कहौं मैं ताही ॥
भेरी नाद सिंहकर ठाना ❀ विक्रम शारदूल अनुमाना ॥

दोहा–देवन में जस सुरपती, ते जन में जस भानु ।
पनस नाम मर्कट यहै, अति बल नीति निधानु ॥

यह जो कमल पत्र सम देहा ❀ जनु कैलाश शृंग की रेहा ॥

लोचन मधु पिंगल अति लोने ❀ काम रूप चितवत चहुँ कोने ॥
लंका सौंह लंगूर भ्रमाई ❀ गर्जत आव वज्र की नाई ॥
सुरपति संग युद्धकह गयऊ ❀ तबते काम रूप यह भयऊ ॥
एहिकर वासव सन मित्राई ❀ ताते यह देवन को भाई ॥
सहस कोटि कपि एहिके संगा ❀ राते पीत श्वेत बहु रंगा ॥
बचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं ❀ अपर बोलि जानहु मनमाहीं ॥
दुर्दुर शैल सदन इनकेरा ❀ मन बच कर्म रामकर चेरा ॥

दोहा--गिरिवर लाँघत आवहीं, चलत उड़ावे रेणु ।
तरणि तेज यह रूँधेऊ, तारा तनय सुषेणु ॥

यह कपि को देखउ तनु फेरा ❀ जनु सपक्ष उड़ चलेउ सुमेरा ॥
एक बार लंका यहि जारी ❀ पुनि गर्जत आवत यहि बारी ॥
जेहि दिन गर्भ अंजनी जायो ❀ बाल अरुन लीलन कहँ धायो ॥
योजन तीन सहस उड़ि गयऊ ❀ उदयाचल ऊपर होइ गयऊ ॥
सब देवन मिलि अस्तुति कीन्हा ❀ तब रवि छाँड़ि पवनसुत दीन्हा ॥
कामरूप अतुलित बल येही ❀ कालदंड कुलिशन सम देही ॥
बेगवंत जस गरुड़ उड़ाहीं ❀ बुद्धिवन्त दूसर अस नाहीं ॥
विद्या पढ़न भानु पहँ जाहीं ❀ उलटे गति रवि संग उड़ाहीं ॥
नाक नाग नरपुर गतिकारी ❀ महा अवधि पत तेज पुगारी ॥
बारिध लाँघेउ गोपद जैसे ❀ यह कपीश मन जूझब कैसे ॥

दोहा--तेज दिवाकर अनल इव, पवन तो बेग अपार ।
कंध लिये दोउ बंधुको, श्रीरघुवंश कुमार ॥

अतसी बरण कुसुम तनु रेषा ❀ पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुज दंडा ❀ धनुषबाण असि धरणि प्रचंडा ॥
उर बिशाल अति उन्नत कंधर ❀ कंबु कंठ रेषा प्रमन्न वर ॥
मुख छविकी उपमा कवि जो हैं ❀ शशि सरोज सम कहें न सोहैं ॥
दशन पाँतिकी काति कहैको ❀ ललकत मन पटतरहिं लहैको ॥
देखत अधरन की अरुणाई ❀ विंबाफल बंधूक लजाई ॥
शुक तुंडहिं नासिका लजावै ❀ थके सुकबि नहिं पटतर पावै ॥

शीर्ष जटाके मुकुट बनाये ❀ भाल विशाल तिलक अति भाये ॥
दक्षिण दिशि लच्मण बलबीरा ❀ राम बाहु अरु प्राण समीरा ॥

दोहा--बाम बिभीषण सोहहीं, सिर अभिषेका राज ।
बीज मंत्र सब जानहीं, अब कस करहिं अकाज ॥

अब देखहु यह सेना आई ❀ जस भादौं की घटा सुहाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई ❀ नैन रुचिर अरु रूप लुनाई ॥
बाल भाव दिनकर बल दीन्हा ❀ ऋतु जानै बासव रति कीन्हा ॥
जातक जमल बीर दोउ जाये ❀ देव अंश बानर ह्वै आये ॥
किष्किन्धा पुरि इनकर थाना ❀ देव सरिस मधुबन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर बिश्रामा ❀ चातुर्मास्य बसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा ❀ यहि कह राज तिलक प्रभु सारा ॥
तारा तासु पाटकी रानी ❀ जिहिकर सुत अंगद अभिमानी ॥
सहस शंकु कर अर्बुद एका ❀ अर्बुद सहसकि बृन्द बिशेका ॥
सहस बृन्द जो होइ अमाना ❀ महा पद्म तेहिकर परमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह राजा ❀ बिग्रह बढ़ेउ रामके काजा ॥
बीर वेष अरु नयन बिशाला ❀ कम्बु कंठ मोतिन की माला ॥

दोहा--हस्ती साठि सहस्रबल, सदा धर्म की सींव ।
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥
इहि बिधि सकल दिखाये, सारण कपिबलव्यूह ।
गनै न रावण कालबश, अतिसय गर्ब समूह ॥

इति क्षेपक

इहाँ प्रात जागे रघुराई ❀ पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥
कहहु बेगि का करिय उपाई ❀ जामवंत कह पद सिरु नाई ॥
सुनु सर्बग्य सकल-उर-बासी ❀ बुधि बल तेज धर्म गुनरासी ॥
मंत्र कहउँ निज-मति-अनुसारा ❀ दूत पठाइय बालिकुमारा ॥
नीक मंत्र सब के मन माना ❀ अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
बालि तनय बुधि-बल-गुन-धामा ❀ लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुम्हहिं का कहऊँ ❀ परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥
काजु हमार तासु हित होई ❀ रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सोरठा--प्रभु अग्या धरि सीस, चरन बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुनसागर ईस, राम कृपा जापर करहु ॥
स्वयंसिद्ध सब काज, नाथ मोहि आदर दियेउ ।
अस बिचारि जुबराज, तनु पुलकित हरषित हिये ॥१७॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई ❀ अंगद चलेउ सबहिं सिरु नाई ॥
प्रभुप्रताप उर सहज असंका ❀ रनबाँकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावन कर बेटा ❀ खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा ॥
बातहिं बात करष बढ़ि आई ❀ जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥
तेहि अंगद कहुँ लात उठाई ❀ गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥
निसि-चर-निकर देखि भट भारी ❀ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एक एक सन मरम न कहहीं ❀ समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगरमँझारी ❀ आवा कपि लंका जेहि जारी ॥
अब धौं काह करिहि करतारा ❀ अतिसभीत सब करहिं बिचारा ॥
बिनु पूछे मग देहिं देखाई ❀ जेहि बिलोकि सोइ जाइ सुखाई ॥

दोहा–गयउ सभादरबार तब, सुमिरि राम-पद-कंज ।
सिंहठवनि इत उत चितव, धीर–बीर–बल–पुंज ॥१८॥

तुरित निसाचर एक पठावा ❀ समाचार रावनहिं जनावा ॥
सुनत बिहँसि बोला दससीसा ❀ आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये ❀ कपिकुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दसानन बैसें ❀ सहित प्रान कज्जलगिरि जैसें ॥
भुजा बिटप सिर सृंग समाना ❀ रोमावली लता जनु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना ❀ गिरिकंदरा खोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❀ बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥
उठे सभासद कपि कहुँ देखी ❀ रावनउर भा क्रोध बिसेखी ॥

दोहा--जथा मत्तगज जूथ महुँ, पंचानन चलि जाइ ।
रामप्रताप सुमिरि उर, बैठ सभा सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर ❀ मैं रघु–बीर—दूत दसकंधर ॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई ❀ तव हितकारन आयउँ भाई ॥

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती ❀ सिव बिरंचि पूजेहु वहु भाँति ॥
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा ❀ जीतेहु लोकपाल सबराजा ॥
नृपअभिमान मोहबस किंबा ❀ हरि आनेहु सीता जगदंबा ॥
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा ❀ सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी ❀ परिजनसहित संग निजनारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे ❀ एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागे ॥

दोहा-प्रनतपाल रघु-बंस-मनि, त्राहि त्राहि अब मोहि ।
आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करहिंगे तोहि ॥२०॥

रे कपिपोत बोलु संभारी ❀ मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक कर भाई ❀ केहि नातें मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा ❀ ता सों कबहुँ भई ही भेंटा ॥
अंगदवचन सुनत सकुचाना ❀ रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद तहीं बालि कर बालक ❀ उपजेहु बंस अनल कुलघालक ॥
गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम्ह जायहु ❀ निजमुख तापसदूत कहायहु ॥
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई ❀ बिहँसि वचन तब अंगद कहई ॥
दिन दस गये बालि पहँ जाई ❀ बूझेउ कुसल सखा उर लाई ॥
रामबिरोध कुसल जसि होई ❀ सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें ❀ श्री-रघु-बीर हृदय नहिं जाकें ॥

दोहा-हम कुलघालक सत्य तुम्ह, कुलपालक दससीस ।
अंधउ बहिर न अस कहहिं, नयन कान तव बीस ॥२१॥

सिव-बिरंचि-सुर-मुनि-समुदाई ❀ चाहत जासु चरन सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा ❀ ऐसिहु मति उर बिहरु न तोरा ॥
सुनि कठोर बानी कपि केरी ❀ कहत दसानन नयन तरेरी ॥
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ ❀ नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ॥
कह कपि धर्मसीलता तोरी ❀ हमहु सुनी कृत पर-त्रिय-चोरी ॥
देखी नयन दूत रखवारी ❀ बूड़ि न मरहु धर्म-ब्रत-धारी ॥
कान नाक बिनु भगनि निहारी ❀ छमा कीन्ह तुम्ह धर्म बिचारी ॥
धर्मसीलता तव जग जागी ❀ पावा दरस हमहुँ बड़भागी ॥

दोहा--जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि, सठ बिलोकु मम बाहु।
लोक-पाल-बल-बिपुल-ससि-ग्रसन हेतु सब राहु॥
पुनि नभसर मम कर-निकर-कमलन्हि पर करि बास।
सोभत भयउ मराल इव, संभुसहित कैलास॥ २२॥

तुम्हरे कटक माँझ सुनु अंगद ❀ मो सन भिरिहि कवन जोधा बद॥
तव प्रभु नारिबिरह बलहीना ❀ अनुज तासु दुख दुखी मलीना॥
तुम्ह सुग्रीवँ कूलद्रुम दोऊ ❀ अनुज हमार भीरु अति सोऊ॥
जामवंत मंत्री अतिबूढ़ा ❀ सो कि होइ अब समर अरूढ़ा॥
सिल्पिकर्म जानहिं नल नीला ❀ है कपि एक महा-बल-सीला॥
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा ❀ सुनि हँसि बोलेउ बालिकुमारा॥
सत्य बचन कहु निसि-चर-नाहा ❀ साँचेहु कीस कीन्ह पुरदाहा॥
रावननगर अल्पकपि दहई ❀ सुनि अस बचन सत्य को कहई॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन ❀ सो सुग्रीवँ केर लघुधावन॥
चलइ बहुत सो बीर न होई ❀ पठवा खबरि लेन हम सोई॥

दोहा--सत्य नगर कपि जारेउ, बिनु प्रभुआयसु पाइ।
फिरि न गयउ सुग्रीवँ पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ॥
सत्य कहेहु दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारें कटक अस, तो सन लरत जो सोह॥
प्रीति बिरोध समान सन, करिय नीति असि आहि।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि, भल कि कहइ कोउ ताहि॥
जद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि बधें बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रिजाति कर रोष॥
बक्रउक्ति धनु बचन सर, हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रति उत्तर सड़सिन्ह मनहुँ, काढ़त भट दससीस॥
हँसि बोलेउ दसमौलि तब, कपि कर बड़ गुन एक।
जो प्रतिपालइ तासु हित, करइ उपाय अनेक॥ २३॥

धन्य कीस जो निज-प्रभु-काजा ❀ जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥
नाँचि कूदि करि लोग रिझाई ❀ पतिहित करइ धर्म निपुनाई ॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती ❀ प्रभुगुन कस न कहसि एहि भाँती ॥
मैं गुनगाहक परम - सु - जाना ❀ तव कटुरटनि करउँ नहिं काना ॥
कह कपि तव गुनगाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥
वन विधंसि सुत वधि पुर जारा ❀ तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा ॥
सोइ विचारि तव प्रकृतिसुहाई ❀ दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरें लाज न रोष न माषा ॥
जौं असि मति पितु खायेहु कीसा ❀ कहि अस वचन हँसा दससीसा ॥
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही ❀ अवहीं समुझि परा कछु मोही ॥
वालि-बिमल-जस-भाजन जानी ❀ हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥
कहु रावन रावन जग केते ❀ मैं निजस्रवन सुने सुनु जेते ॥
वलिहि जितन एकु गयउ पताला ❀ राखा वाँधि सिसुन्ह हयसाला ॥
खेलहिं वालक मारहिं जाई ❀ दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥
एक वहोरि सहसभुज देखा ❀ धाइ धरा जिमि जंतुबिसेखा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा ❀ सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

दोहा—एक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालिकी काँख ।
तिन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य वदहि तजि माख ॥२४॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला ❀ हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥
जान उमापति जासु सुराई ❀ पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
सिरसरोज निजकरन्हि उतारी ❀ पूजेउँ अमित वार त्रिपुरारी ॥
भुजविक्रम जानहिं दिगपाला ❀ सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❀ जव जव भिरेउँ जाइ बरिआई ॥
जिन्ह के दसन करालन फूटे ❀ उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलति इमि धरनी ❀ चढ़त मत्तगज जिमि लघुतरनी ॥
सोइ रावन जगबिदित प्रतापी ❀ सुनेहि न स्रवन अलीकप्रलापी ॥

दोहा--तेहि रावन कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्व खल, अब जाना तव ग्यान ॥२५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी ❀ बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥
सहस-बाहु-भुज-गहन अपारा ❀ दहन अनलसम जासु कुठारा ॥
जासु परसु-सागर-खर-धारा ❀ बूड़े नृप अगनित बन बारा ॥
तासु गर्ब जेहि देखत भागा ❀ सो नर क्यों दससीस अभागा ॥
रामु मनुज कस रे सठ बंगा ❀ धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥
पसु सुरधेनु कलपतरु रूखा ❀ अन्न दान अरु रस पीयूखा ॥
बैनतेय खग अहिसहसानन ❀ चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा ❀ लाभु कि रघु-पति-भगति-अकुंठा ॥

दोहा—सेनसहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि ।
कस रे सठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुत मारि ॥२६॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई ❀ भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥
जौं खल भयेसि राम कर द्रोही ❀ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला ❀ राम बयर होइहि अस हाला ॥
तव सिरनिकर कपिन्ह के आगें ❀ परिहहिं धरनि रामसर लागें ॥
ते तव सिर कंदुक इव नाना ❀ खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ॥
जबहिं समर कोपिहिं रघुनायक ❀ छुटिहहिं अति कराल बहु सायक ॥
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा ❀ अस बिचारि भजु राम उदारा ॥
सुनत बचन रावनु परजरा ❀ जरत महानल जनु घृत परा ॥

दोहा—कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि ।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि, जितेउँ चराचर झारि ॥२७॥

सठ साखामृग जोरि सहाई ❀ बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥
नाघहिं खग अनेक बारीसा ❀ सूर न होहिं ते सुनु जड़ कीसा ॥
मम भुज-सागर-बल-जल-पूरा ❀ जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा ❀ को अस बीर जो पाइहि पारा ॥
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा ❀ भूप सुजसु खल मोहि सुनावा ॥
जौं पै समरसुभट तव नाथा ❀ पुनि पुनि कहसि जासु गुनगाथा ॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा ❀ रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥
हर-गिरि-मथन निरखु मम बाहू ❀ पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू ॥

दोहा–सूर कवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहि सीस।
हुने अनल महुँ बार बहु, हरषि साखि गौरीस ॥२८॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला ❀ बिधि के लिखे अंक निजभाला ॥
नर के कर आपन बध बाँची ❀ हँसेउँ जानि बिधिगिरा असाँची ॥
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें ❀ लिखा बिरंचि जरठमति भोरें ॥
आन बीरबल सठ मम आगे ❀ पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे ॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं ❀ रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥
लाजवंत तव सहज सुभाऊ ❀ निजमुख निजगुन कहसि न काऊ ॥
सिर अरु सैल कथा चित रही ❀ ता तें बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेहु उर घाली ❀ जीतहु सहसबाहु बलि बाली ॥
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा ❀ काटे सीस कि होइय सूरा ॥
इन्द्रजालि कहुँ कहिय न बीरा ❀ काटइ निजकर सकलसरीरा ॥

दोहा--जरहिं पतंग बिमोहबस, भार बहहिं खरबृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं, समुझि देखु मतिमंद ॥२९॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करही ❀ सुनु मम बचन मान परिहरही ॥
दसमुख मैं न बसीठी आयेउँ ❀ अस बिचारि रघुबीर पठायेउँ ॥
बार बार असि कहइ कृपाला ❀ नहिं गजारि जस बधे सृगाला ॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे ❀ सहेउँ कठोरबचन सठ तेरे ॥
नाहिं त करि मुखभंजन तोरा ❀ लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी ❀ सूने हरि आनेहि परनारी ॥
तैं निसि-चर-पति गर्बबहूता ❀ मैं रघु-पति-सेवक कर दूता ॥
जौं न राम अपमानहिं डरऊँ ❀ तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥

दोहा--तोहि पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाउँ।
तव जुवतीन्ह समेत सठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥३०॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई ❀ मुयेहि बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा ❀ अतिदरिद्र अजसी अतिबूढ़ा ॥
सदा रोग बस संततक्रोधी ❀ बिष्णुबिमुख स्रुति-संत-बिरोधी ॥
तनुपोषक निंदक अघखानी ❀ जीवत सवसम चौदह प्रानी ॥

अस विचारि खल बधउँ न तोही ❀ अब जनि रिस उपजावसि मोही ॥
सुनि सकोप कह निसि-चर-नाथा ❀ अधर दसन दसि मींजत हाथा ॥
रे कपिअधम मरन अब चहसी ❀ छोटे वदन. बात बड़ि कहसी ॥
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें ❀ बल प्रताप बुधि तेज न ताकें ॥

दोहा—अगुन अमान बिचारि तेहि, दीन्ह पिता बनबास ।
सो दुख अरु जुबतीबिरह, पुनि निसिदिन मम त्रास ।
जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि. ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिं निसाचर दिवसनिसि, मूढ़ समुझु तजिटेक ॥३१॥

जब तेहि कीन्ह राम कै निंदा ❀ क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ॥
हरि-हर निंदा सुनइ जो काना ❀ होइ पाप गो-घात-समाना ॥
कटकटान कपिकुंजर भारी ❀ दुहुँ भुजदंड तमकि महि मारी ॥
डोलत धरनि सभासद खसे ❀ चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत सँभारि उठा दसकंधर ❀ भूतल परे मुकुट अतिसुंदर ॥
कछु तेहि लै निजसिरन्हि सँवारे ❀ कछु अंगद प्रभुपास पवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे ❀ दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥
की रावन करि कोप चलाये ❀ कुलिस चारि आवत अतिधाये ॥
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू ❀ लूक न असनि केतु नहिं राहू ॥
ए किरीट दसकंधर केरे ❀ आवत बालितनय के प्रेरे ॥

दोहा--तरकि पवनसुत कर गहे, आनि धरे प्रभुपास ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिन-कर-सरिस प्रकास ॥
उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ ॥
धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२॥

एहि बधि बेगि सुभट सब धावहु ❀ खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु ॥
मरकटहीन करहु महि जाई ❀ जिअत धरहु तापस दोउ भाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा ❀ गाल बजावत तोहि न लाजा ॥
मरु गर काटि निलज कुलघाती ❀ बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती ॥
रे त्रियचोर कु - मारग - गामी ❀ खल मलरासि मंदमति कामी ॥

सन्निपात जल्पसि दुर्बादा ❀ भयोसि कालबस खल मनुजादा ॥
या को फलु पावहिगो आगें ❀ बानर-भालु-चपेटन्हि लागें ॥
रामु मनुज बोलत असि बानी ❀ गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं ❀ सिरन्हि समेत समरमहि माहीं ॥

सोरठा--सो नर क्यों दसकंध, बालि बधेउ जेहि एक सर ।
बीसहु लोचन अंध, धिक तव जनम कुजाति जड़ ॥
तव सोनित की प्यास, तृपित राम-सायक निकर ।
तजउँ तोहि तेहि त्रास, कटुजल्पकनिसिचर अधम ॥३३॥

मैं तव दसन तोरिबे लायक ❀ आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥
अस रिसि होति दसउ मुखतोरौं ❀ लंका गहि समुद्र महं बोरौं ॥
गूलर-फल-समान तव लंका ❀ बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥
मैं बानर फल खात न बारा ❀ आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई ❀ मूढ़ सीख कहँ बहुत झुठाई ॥
बालि न कबहुँ गाल अस मारा ❀ मिलि तपसिन्ह तैं भयसि लबारा ॥
साँचेहुँ मैं लबार भुजबीहा ❀ जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥
समुझि रामप्रताप कपि कोपा ❀ सभा माँझ पन करि पद रोपा ॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी ❀ फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा ❀ पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥
इंद्र-जीत-आदिक बलवाना ❀ हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई ❀ पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती ❀ टरइ न कीसचरन एहि भाँती ॥
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी ❀ मोहबिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दोहा-कोटिन्ह मेघ-नाद-सम, सुभट उठे हरखाइ ।
झपटहिं टरै न कपिचरन, पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥
भूमि न छाँडत कपिचरन, देखत रिपुमद भाग ।
कोटिविघ्न तें संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ॥३४॥

कपिबल देखि सकल हिय हारे ❀ उठा आपु कपि कें परचारे ॥
गहत चरन कह बालिकुमारा ❀ मम पद गहे न तोर उबारा ॥

गहसि न रामचरन सठ जाई ❀ सुनत फिरा मन अतिसकुचाई ॥
भयउ तेजहत श्री सब गई ❀ मध्यदिवस जिमि ससि सोहई ॥
सिंहासन बैठेउ सिर नाई ❀ मानहुँ संपति सकल गवाँई ॥
जगदातमा प्रानपति रामा ❀ तासु बिमुख किमि लह बिस्रामा ॥
उमा राम की भृकुटि बिलासा ❀ होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥
तृन तें कुलिस कुलिस तृन करई ❀ तासु दूतपन कहु किमि टरई ॥
पुनि कपि कही नीति बिधि नाना ❀ मान न तासु काल नियराना ॥
रिपुमद मथि प्रभु-सु-जस सुनायो ❀ यह कहि चलेउ बालि-नृप-जायो ॥
हतौं न खेत खेलाइ खेलाई ❀ तोहि अबहिं का करौं बड़ाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा ❀ सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥
जातुधान अंगदपन देखी ❀ भय ब्याकुल सब भये बिसेखी ॥

दोहा–रिपुबल धरपि हरपि कपि, बालितनय बलपुंज ।
पुलक सरीर नयनजल, गहे राम-पद-कंज ॥
साँझ जानि दसमौलि तब, भवन गयउ बिलखाइ ।
मंदोदरी रावनहि, बहुरि कहा समुझाइ ॥३५॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही ❀ सोह न समर तुम्हहिं रघुपतिही ॥
रामानुज लघुरेख खँचाई ❀ सोउ नहिं नाँघेहु असि मनुसाई ॥
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा ❀ जा के दूत केर अस कामा ॥
कौतुक सिंधु नाँघि तव लंका ❀ आयउ कपिकेहरी असंका ॥
रखवारे हति बिपिन उजारा ❀ देखत तोहि अच्छ तेहि मारा ॥
जारि नगर सबु कीन्हेसि छारा ❀ कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा ॥
अब पति मृषा गाल जनि मारहु ❀ मोर कहा कछु हृदय बिचारहु ॥
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु ❀ अग जगनाथ अ-तुल-बल जानहु ॥
बानप्रताप जान मारीचा ❀ तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ॥
जनकसभा अगनित महिपाला ❀ रहे तुम्हहुँ बल बिपुल बिसाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिआही ❀ तब संग्राम जितेहु किन ताही ॥
सुर-पति-सुत जानइ बल थोरा ❀ राखा जियत आँखि गहि फोरा ॥
सूपनखा के गति तुम्ह देखी ❀ तदपि हृदय नहिं लाज बिसेखी ॥

दोहा–बधि बिराध खरदूखनहि, लीला हतेउ कबंध ।
बालि एक सर मारेउ, तेहि जानहु दसकंध ॥३६॥

जेहि जल नाथ बँधायेउ हेला ❀ उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥
कारुनीक दिन-कर-कुल-केतू ❀ दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभा माँझ जेहि तव बल मथा ❀ करिबरूथ महँ मृगपति जथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जा के ❀ रनबाँकुरे बीर अतिबाँके ॥
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू ❀ मुधा मान ममता मद बहहू ॥
अहह कंत कृत राम बिरोधा ❀ कालबिबस मन उपज न बोधा ॥
कालु दंड गहि काहु न मारा ❀ हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट काल जेहि आवइ साईं ❀ तेहि भ्रम होहि तुम्हारिहि नाईं ॥

दोहा--दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर, अजहुँ पूर पिय देहु ।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि, नाथ बिमल जस लेहु ॥३७॥

नारिबचन सुनि बिसिखसमाना ❀ सभा गयउ उठि होत बिहाना ॥
बैठ जाइ सिंहासन फूली ❀ अतिअभिमान त्रास सब भूली ॥
इहाँ राम अंगदहि बोलावा ❀ आइ चरन-पंक-ज सिरु नावा ॥
अति आदर समीप बैठारी ❀ बोले बिहँसि कृपाल खरारी ॥
बालितनय कौतुक अति मोही ❀ तात सत्य कहु पूछउँ तोही ॥
रावनु जातु-धान-कुल-टीका ❀ भुजबल अतुल जासु जग लीका ॥
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाये ❀ कहहु तात कवनी बिधि पाये ॥
सुनु सर्वग्य प्र-नत-सुख-कारी ❀ मुकुट न होहिं भूपगुन चारी ॥
साम दान अरु दंड बिभेदा ❀ नृपउर बसहिं नाथ कह बेदा ॥
नीतिधर्म के चरन सुहाये ❀ अस जिय जानि नाथ पहिं आये ॥

दोहा–धर्महीन प्रभु-पद-बिमुख, कालबिबस दससीस ।
तेहि परिहार गुन आये, सुनहु कोसलाधीस ॥
परमचतुरता स्रवन सुनि, बिहँसे रामु उदार ।
समाचार पुनि सब कहे, गढ़ के बालिकुमार ॥३८॥

रिपु के समाचार जब पाये ❀ राम सचिव सब निकट बोलाये ॥
लंका बाँके चारि दुआरा ❀ केहि बिधि लागिय करहु बिचारा ॥

तब कपीस रिच्छेस बिभीषन ❀ सुमिरि हृदय दिन-कर-कुल-भूषन ॥
करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा ❀ चारि अनी कपिकटक बनावा ॥
जथाजोग सेनापति कीन्हे ❀ जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप कहि सब समुझाये ❀ सुनि कपि सिंहनाद करि धाये ॥
हरषिस रामचरन सिर नावहिं ❀ गहि गिरिसिखर बीर सब धावहिं ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा ❀ जय रघुबीर कोसलाधीसा ॥
जानत परमदुर्ग अति लंका ❀ प्रभुप्रताप कपि चले असंका ॥
घटाटोप करि चहुँदिसि घेरी ❀ मुखहि निसान बजावहिं भेरी ॥

दोहा—जयति राम जय लछिमन, जय कपीस सुग्रीवँ ।
गर्जहिं केहरिनाद कपि, भालु महा-बल-सींवँ ॥३९॥

लंका भयउ कोलाहल भारी ❀ सुना दसानन अतिअहँकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ❀ बिहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥
आये कीस काल के प्रेरे ❀ छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा ❀ गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू ❀ धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥
उमा रावनहि अस अभिमाना ❀ जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥
चले निसाचर आयसु माँगी ❀ गहि कर भिंडिपाल बर साँगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचंडा ❀ सूल कृपान परसु गिरिखंडा ॥
जिमि अरुनोपलनिकर निहारी ❀ धावहिं सठ खग मांसअहारी ॥
चोंच-भंग-दुख तिन्हहिं न सूझा ❀ तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥

दोहा—नानायुध सर-चाप-धर, जातुधान बलबीर ।
कोटकँगूरनि चढ़ि गये, कोटि कोटि रनधीर ॥४०॥

कोटकँगूरन्हि सोहहिं कैसे ❀ मेरु के सृंगनि जनु घन बैसे ॥
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ ❀ सुनि धुनि होहि भटन्ह मन चाऊ ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❀ सुनि कादरउर जाहिं दरारा ॥
देखि न जाइ कपिन्ह के ठट्टा ❀ अति बिसाल तनु भालु सुभट्टा ॥
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा ❀ पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥
कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं ❀ दसन ओठ काटहिं अतितर्जहिं ॥

उत रावन इत रामदोहाई ❀ जयति जयति जय परी लराई ॥
निसिचर सिखरसमूह ढहावहिं ❀ कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥

छन्द—धरि कु-धर-खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि प्रचारहीं ॥
अतितरल तरुन प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गये।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ रामजसु गावत भये ॥

दोहा—एकु एकु गहि निसिचर, पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपु हेठ भट, गिरहिं धरनि पर आइ ॥४१॥

राम - प्रताप - प्रबल कपिजूथा ❀ मर्दहिं निसि-चर-निकर-बरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर ❀ जय रघु-बीर-प्रताप दिवाकर ॥
चले निसा-चर-निकर पराई ❀ प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई ॥
हाहाकार भयउ पुर भारी ❀ रोवहिं बालक आतुर नारी ॥
सब मिलि देहिं रावनहिं गारी ❀ राज करत एहि मृत्यु हँकारी ॥
निजदल बिचल सुना तेहि काना ❀ फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥
जो रन बिमुख सुना मैं काना ❀ सो मैं हतब करालकृपाना ॥
सरबसु खाइ भोग करि नाना ❀ समरभूमि भये दुर्लभ प्राना ॥
उग्र बचन सुनि सकल डेराने ❀ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥
सनमुख मरन बीर कै सोभा ❀ तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

दोहा—बहु-आयुध-धर सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ त्रिसूलन्हि मारी ॥४२॥

भय आतुर कपि भागन लागे ❀ जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता ❀ कहँ नल नील दुबिद बलवंता ॥
निजदल बिचल सुना हनुमाना ❀ पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करइ लराई ❀ टूट न द्वार परम कठिनाई ॥
पवन-तनय-मन भा अति क्रोधा ❀ गर्जेउ प्रबल-काल-सम जोधा ॥
कूदि लंकगढ़ ऊपर आवा ❀ गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता ❀ ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥
दुसरे सूत बिकल तेहि जाना ❀ स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दोहा--अंगद सुना पवनसुत, गढ़ पर गयउ अकेल ।
रनबाँकुरा बालिसुत, तरकि चढ़ेउ कपिखेल ॥४३॥

जुद्धबिरुद्ध क्रुद्ध दोउ बानर ❀ रामप्रताप सुमिरि उरअंतर ॥
रावन भवन चढ़े दोउ धाई ❀ करहिं कोमलाधीसदोहाई ॥
कलससहित गहि भवन ढहावा ❀ देखि निसा-चर-पति भय पावा ॥
नारिबृंद कर पीटहिं छाती ❀ अब दुइ कपि आये उतपाती ॥
कपिलीला करि तिन्हहिं डेरावहिं ❀ रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥
पुनि कर गहि कंचन के खंभा ❀ कहेन्हि करिय उतपातअरंभा ॥
गर्जि परे रिपुकटक मँझारी ❀ लागे मर्दइ भुजबल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन्हि केहू ❀ भजहु न रामहिं सो फल लेहू ॥

दोहा--एक एक सों मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुंड ।
रावन आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥४४॥

महा-महा-मुखिया जे पावहिं ❀ ते पद गहि प्रभुपास चलावहिं ॥
कहहिं बिभीषन तिन्ह के नामा ❀ देहिं रामु तिन्हहू निजधामा ॥
खल मनुजाद द्विजामिषभोगी ❀ पावहिं गति जो जाँचत जोगी ॥
उमा राम मृदुचित करुनाकर ❀ बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर ॥
देहिं परम गति सो जिय जानी ❀ अस कृपालु को कहहु भवानी ॥
अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी ❀ नर मतिमंद ते परम अभागी ॥
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा ❀ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥
लंका दोउ कपि सोहहिं कैसें ❀ मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसें ॥

दोहा--भुजबल रिपुदल दलमलि, देखि दिवस कर अंत ।
कूदे जुगल बिगत स्रम, आये जहँ भगवंत ॥४५॥

प्रभु-पद-कमल सीस तिन्ह नाये ❀ देखि सुभट रघु-पति-मन भाये ॥
राम कृपा करि जुगल निहारे ❀ भये बिगतस्रम परम सुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना ❀ फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
जातुधान प्रदोषबल पाई ❀ धाये करि दस-सीस-दोहाई ॥
निसि-चर-अनी देखि कपि फिरे ❀ जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥
दोउ दल प्रबल पचारि पचारी ❀ लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥

महावीर निसिचर सब कारे ❀ नानावरन बलीमुख भारे ॥
सबल जुगलदल समबल जोधा ❀ कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
प्राविट–सरद–पयोद घनेरे ❀ लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया ❀ बिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥
भयउ निमिष महँ अति अँधियारा ❀ बृष्टि होइ रुधिरोपलछारा ॥

दोहा--देखि निबिड तम दसहुँ दिसि, कपिदल भयउ खभार ।
एकहि एक न देखहिं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥४६॥

सकल मरमु रघुनायक जाना ❀ लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये ❀ सुनत कोपि कपिकुंजर धाये ॥
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा ❀ पावकसायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं ❀ ग्यान उदय जिमि संसय जाहीं ॥
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा ❀ धाये हरषि बि–गत-स्रम–त्रासा ॥
हनूमान अंगद रन गाजे ❀ हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागत भट पटकहिं धरि धरनी ❀ करहिं भालु कपि अदभुत करनी ॥
गहि पद डारहिं सागर माहीं ❀ मकर उरग झष धरि धरि खाहीं ॥

दोहा--कछु मारे कछु घायल, कछु गढ़ चले पराइ ।
गर्जहिं भालु बलीमुख, रिपु-दल-बल बिचलाइ ॥४७॥

निसा जानि कपि चारिउ-अनी ❀ आये जहाँ कोसलाधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं ❀ भये बिगतस्रम बानर तबहीं ॥
उहाँ दसानन सचिव हँकारे ❀ सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटक कपिन्ह संहारा ❀ कहहु बेगि का करिय बिचारा ॥
माल्यवंत अतिजरठ निसाचर ❀ रावनु – मातु – पिता–मंत्री–बर ॥
बोला बचन नीति अतिपावन ❀ सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥
जब तें तुम्ह सीता हरि आनी ❀ असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥
बेद पुरान जासु जस गायो ❀ राम बिमुख काहु न सुख पायो ॥

दोहा–हिरन्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ।
जेहि मारे सोइ अवतरेउ, कृपासिंधु भगवान ॥

कालरूप खल-बन-दहन, गुनागार घनबोध ।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासों कवन बिरोध ॥४८॥

परिहरि बयरु देहु बैदेही ❀ भजहु कृपानिधि परमसनेही ॥
ता के बचन बानसम लागे ❀ करियामुख करि जाहि अभागे ॥
बूढ़ भयसि न त मरतेउँ तोही ❀ अब जनि नयन देखावसि मोही ॥
तेहि अपने मन अस अनुमाना ❀ बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा ❀ तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा ❀ करिहउँ बहुत कहौं का थोरा ॥
सुनि सुतबचन भरोसा आवा ❀ प्रीतिसमेत अंक बैठावा ॥
करत बिचार भयउ भिनुसारा ❀ लागे कपि पुनि चहूँदुआरा ॥
कोपि कपिन्ह दुरघट गढ़ घेरा ❀ नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
बिबिधायुधधर निसिचर धाये ❀ गढ़ तें पर्वतसिखर ढहाये ॥

छन्द—ढाहे महीधर-सिखर कोटिन्ह बिबिधबिधि गोला चले ।
घहरात जिमि पबिपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भये ।
गहि सैल तेइ गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हये ॥

दोहा--मेघनाद सुनि स्रवन अस, गढ़ पुनि छेंका आइ ।
उतरि दुर्ग तें बीरबर, सनमुख चलेउ बजाइ ॥४९॥

कहँ कोसलाधीस दोउ भ्राता ❀ धन्वी सकल-लोक-बिख्याता ॥
कहँ नल नील द्विबिद सुग्रीवा ❀ अंगद हनूमंत बलसींवा ॥
कहाँ बिभीषनु भ्राता द्रोही ❀ आजु सठहि हठि मारउँ ओही ॥
अस कहि कठिन बान संधाने ❀ अतिसय क्रोध स्रवन लगि ताने ॥
सरसमूह सो छाँड़ै लागा ❀ जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखियहि बानर ❀ सनमुख होइ न सके तेहि अवसर ॥
जहँ तहँ भागि चले कपि रिच्छा ❀ बिसरी सबहि जुद्ध कै इच्छा ॥
सो कपि भालु न रन महँ देखा ❀ कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेखा ॥

दोहा--दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर ।
सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलधीर ॥५०॥

देखि पवनसुत कटकु बिहाला ❀ क्रोधवंत जनु धायउ काला ॥
महासैल एक तुरत उपारा ❀ अतिरिसि मेघनाद पर डारा ॥
आवत देखि गयउ नभ सोई ❀ रथ सारथी तुरग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना ❀ निकट न आव मरमु सो जाना ॥
रघु-पति-निकट गयउ घननादा ❀ नानाभाँति करेसि दुर्बादा ॥
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे ❀ कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रताप मूढ़ खिसियाना ❀ करै लाग माया बिधि नाना ॥
जिमि कोउ करै गरुड़ से खेला ❀ डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

दोहा—जासु प्रबल-माया-बिवस, सिव बिरंचि बड़ छोट ।
ताहि देखावइ निसिचर, निज माया मतिखोट ॥५१॥

नभ चढ़ि बरषइ बिपुल अँगारा ❀ महि तें प्रगट होहिं जलधारा ॥
नाना भाँति पिसाच पिसाची ❀ मारु काटु धुनि बोलहिं नाँची ॥
बिष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा ❀ बरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
कपि अकुलाने माया देखे ❀ सब कर मरन बना यहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❀ भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एक बान काटी सब माया ❀ जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया ॥
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके ❀ भये प्रबल रन रहहिं न रोके ॥

दोहा—आयसु माँगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाथ ॥५२॥

छत-ज-नयन उर बाहु बिसाला ❀ हिम-गिरि-निभ तनुकछुएकलाला ॥
इहाँ दसानन सुभट पठाये ❀ नाना सस्त्र अस्त्र गहि धाये ॥
भू-धर-नख-बिटपायुध धारी ❀ धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी ❀ इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं ❀ कपि जय सील मारि पुनि डाटहिं ॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू ❀ सीस तोरि गहि भुजा उपारू ॥
असि रव पूरि रही नव खंडा ❀ धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुरबृंदा ❀ कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा ॥

दोहा--रुधिर गाड़ भरि भरि जमेउ, ऊपर धूरि उड़ाइ।
जनु अंगाररासीन्ह पर, मृतकधूम रह छाइ ॥५३॥

घायल बीर बिराजहि कैसे ❀ कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
लछिमन मेघनाद दोउ जोधा ❀ भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा ॥
एकहिं एक सकहिं नहिं जीति ❀ निसिचर छल बल करइ अनीती ॥
क्रोधवंत तब भयउ अनंता ❀ भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥
नाना बिधि प्रहार कर सेषा ❀ राच्छस भयउ प्रानअवसेषा ॥
रावनसुत निजमन अनुमाना ❀ संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥
बिरघातिनी छाड़ेसि साँगी ❀ तेजपुंज लछिमन उर लागी ॥
मुरछा भई सक्ति के लागे ❀ तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ॥

दोहा--मेघ-नाद-सम कोटिसत, जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि, उठै चले खिसिआइ ॥५४॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू ❀ जारइ भुवन चारि दस आसू ॥
सक संग्राम जीति को ताही ❀ सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
यह कौतूहल जानइ सोई ❀ जा पर कृपा राम कै होई ॥
संखय भई फिरी दोउ बाहिनी ❀ लगे सँभारन निज निज अनी ॥
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर ❀ लछिमनु कहाँ बूझ करुनाकर ॥
तब लगि लै आयउ हनुमाना ❀ अनुज देखि प्रभु अतिदुख माना ॥
जामवंत कह बैद सुषेना ❀ लंका रहइ को पठइय लेना ॥
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता ❀ आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दोहा--रघु-पति-चरन-सरो-ज सिरु, नायउ आय सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥५५॥

अथ क्षेपक

कह हनुमन्त जोरि युग हाथा ❀ लषण सोच जनि कीजे नाथा ॥
कहा चन्द्र में पट इव गारी ❀ अबहीं देउँ अमी मुख डारी ॥
कहो बिबुध बैदहि गहि आवौं ❀ मौत मारि सबके दुख भानौं ॥
कहो फोरि नभ रबिहिं निकारों ❀ रिपु तेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरिहर कहँ आनी ❀ अमर अमर बुलवावों बानी ॥

कहो पताल जाय हति नागा ❀ आनौ जमी कुंड यहि जागा ॥
कहो देहुँ निज देहे त्यागी ❀ अबहीं उठो लषण घट जागी ॥

दोहा--जो कछु तव मनमें रुचै, सो मोहि आयसु होय ।
नाथ शपथ क्षण में करों, प्रभु प्रताप बल सोय ॥

इति क्षेपक

राम-चरन-सरसि-ज उर राखी ❀ चलेउ प्रभंजनसुत बल भाखी ॥
उहाँ दूत एक मरमु जनावा ❀ रावन काल-नेमि-गृह आवा ॥
दसमुख कहा मरमु तेहि सुना ❀ पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥
देखत तुम्हहिं नगर जेहि जारा ❀ तासु पंथ को रोकनिहारा ॥
भजि रघुपति करु हित आपना ❀ छाँड़हु नाथ मृषा जलपना ॥
नील-कंज-तनु सुंदर स्यामा ❀ हृदय राखु लोचन अभिरामा ॥
मैं तें मोर मूढ़ता त्यागू ❀ महा मोहनिसि सूतत जागू ॥
कालव्याल कर भच्छक जोई ❀ सपनेहु समर कि जीतिय सोई ॥

दोहा--सुनि दसकंध रिसान अति, तेहि मन कीन्ह बिचार ।
राम-दूत-कर मरउँ बरु, यह खल रत मलभार ॥५६॥

अस कहि चला रचेसि मग माया ❀ सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आस्रम ❀ मुनिहि बूझि जलु पियउँ जाइ स्रम ॥
राच्छस-कपट-बेष तहँ सोहा ❀ माया-पति-दूतहि चह मोहा ॥
जाइ पवनसुत नायेउ माथा ❀ लाग सो कहइ राम-गुन-गाथा ॥
होत महारन रावनरामहिं ❀ जितिहहिं राम न संसय या महिं ॥
इहाँ भये मैं देखउँ भाई ❀ ग्यान-दृष्टि-बलु मोहि अधिकाई ॥
माँगा जल तेहि दीन्ह कमंडल ❀ कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल ॥
सरमज्जनु करि आतुर आवहु ❀ दिच्छा देउँ ग्यान जेहि पावहु ॥

दोहा--सर पैठत कपि-पद-गहा, मकरी तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिव्यतनु, चली गगन चढ़ि जान ॥५७॥

कपि तव दरस भइउँ निःपापा ❀ मिटा तात मुनिबर कर सापा ॥
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा ❀ मानहु सत्य बचन प्रभु मोरा ॥
अस कहि गई अपछरा जबहीं ❀ निसि-चर-निकट गयउ सो तबहीं ॥
कह कपि मुनि गुरुदछिना लेहू ❀ पाछे हमहिं मंत्र तुम्ह देहू ॥

सिर लंगूर लपेटि पछारा ❀ निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना ❀ सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ॥
देखा सैल न औषध चीन्हा ❀ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहिगिरिनिसि नभ धावत भयऊ ❀ अवध - पुरी - ऊपर कपि गयऊ ॥

दोहा--देखा भरत बिसाल अति, निसिचर मन अनुमान ।
बिनु फर सायक मारेउ, चाप स्रवन लगि तानि ॥५८॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक ❀ सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरत तब धाये ❀ कपि समीप अतिआतुर आये ॥
बिकल बिलोकि कीस उरलावा ❀ जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥
मुख मलीन मन भये दुखारी ❀ कहत बचन लोचन भरि बारी ॥
जेहि बिधि राम बिमुखमोहि किन्हा ❀ तेहि पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥
जौं मोरे मन बच अरु काया ❀ प्रीति राम - पद-कमल अमाया ॥
तौ कपि होउ बिगत - स्रम-सूला ❀ जौं मो पर रघुपति अनुकूला ॥
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा ❀ कहि जय जयति कोसलाधीसा ॥

सोरठा-लीन्ह कपिहि उर लाइ, पुलकित तन लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि राम रघु-कुल-तिलक ॥५९॥

तात कुसल कहु सुखनिधान की ❀ सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
कपि सब चरित समास बखाने ❀ भये दुखी मन महँ पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायउँ ❀ प्रभु के एकहु काज न आयउँ ॥
जानि कुअवसरु मन धरि धीरा ❀ पुनि कपि सन बोले बल बीरा ॥

अथ क्षेपक

भले भरत कहँ बोले ताता ❀ पीछे सुनि दुख पैहैं माता ॥
तेहिते चलि दीजै समुझाई ❀ आय भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि मातु सुमित्रहिं ❀ भयउ हर्ष औ सोच विचित्रहिं ॥
बोली धन्य सुवन मम आजू ❀ जूझेउ समर स्वामि के काजू ॥
पर एक दुःख होत अति ताता ❀ कुसमय भये राम बिनु भ्राता ॥
पुनि स्वभाव रिपुहन ते कहेऊ ❀ जाहु तात प्रभु पहँ तुम रहेऊ ॥
सुनत उठे मुद सहित प्रकासा ❀ बिधि बस सुठर ढरे जनु पासा ॥

दोहा–अम्ब अनुजगति देख मन, माना सबनि गलानि ।
बोली रघुपति मातु तब, कपिते धीरज आनि ॥
जेहि सौंपेउ मैं लषण कहँ, तिनकी यह गति होय ।
अब कब देखौं नयन भरि, पुत्र कमल मुख सोय ॥
बोले मारुत सुवन तब, सकल धरहु मन धीर ।
कुशल जानकी लषण युत, ऐहौं श्रीरघुबीर ॥

इति क्षेपक

तात गहरु होइहि तोहि जाता ❀ काज नसाइहि होत प्रभाता ॥
चढु मम सायक सैलसमेता ❀ पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेता ॥
सुनि कपिमन उपजा अभिमाना ❀ मोरे भार चलिहि किमि बाना ॥
रामप्रभाव बिचारि बहोरी ❀ बंदि चरन कपि कह कर जोरी ॥
दोहा--तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत ॥
भरत-बाहु-बल-सील-गुन, प्रभु-पद-प्रीति अपार ।
मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवनकुमार ॥६०॥
उहाँ राम लछिमनहिं निहारी ❀ बोले बचन मनुजअनुसारी ॥
अर्धराति गइ कपि नहिं आयउ ❀ राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥
सकहु न दुखित देहि मोहि काऊ ❀ बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥
मम हित लागि तजेहु पितु माता ❀ सहेउ बिपिन हिम आतप बाता ॥
सो अनुराग कहाँ कब भाई ❀ उठहु न सुनि मम बचबिकलाई ॥
जौ जनतेउँ बन बंधुबिछोहू ❀ पिताबचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥
सुत बित नारि भवन परिवारा ❀ होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस बिचारि जिय जागहु ताता ❀ मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥
जथा पंख बिनु खग अति दीना ❀ मनि बिनु फनि करिबर करहीना ॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही ❀ जौं जड़ दैव जियावै मोही ॥
जैहउँ अवध कवन मुंह लाई ❀ नारिहेतु प्रियभाइ गवाँई ॥
बरु अपजसु सहतेउँ जग माहीं ❀ नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥

अव अपलोकु सोकु सुत तोरा ❀ सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥
निजजननी के एक कुमारा ❀ तात तासु तुम्ह प्रानअधारा ॥
सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी ❀ सब बिधि सुखद परम हित जानी ॥
उतरु काह देहउँ तेहि जाई ❀ उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥
बहु बिधि सोचत सोचविमोचन ❀ स्रवत सलिल राजिव-दल-लोचन ॥
उमा एक अखंड रघुराई ❀ नरगति भगतकृपाल देखाई ॥

सोरठा--प्रभुप्रलाप सुनि कान, बिकल भये वानरनिकर ।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस ॥६१॥

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना ❀ अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई ❀ उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता ❀ हरषे सकल भालु-कपि - ब्राता ॥
पुनि कपि बैद तहाँ पहुँचावा ❀ जेहि बिधि तबहिं ताहि लेइ आवा ॥
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ ❀ अतिबिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा ❀ बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥
जागा निसिचर देखिय कैसा ❀ मानहुँ काल देह धरि बैसा ॥
कुंभकरन बूझा कहु भाई ❀ काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेहि अभिमानी ❀ जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे ❀ महा - महा - जोधा संहारे ॥
दुर्मुख सुररिपु मनुजअहारी ❀ भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक बीरा ❀ परे समरमहि सब रनधीरा ॥

दोहा--सुनि दस-कंधर-बचन तब, कुम्भकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्यान ॥६२॥

भल न कीन्ह तैं निसि-चर-नाहा ❀ अब मोहि आइ जगायेहि काहा ॥
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना ❀ भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दससीस मनुज रघुनायक ❀ जा के हनूमान से पायक ॥
अहह बन्धु तैं कीन्हि खोटाई ❀ प्रथमहिं मोहि न सुनायेहि आई ॥
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक ❀ सिव बिरंचि सुर जाके सेवक ॥
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा ❀ कहतेउँ तोहि समय निरबहा ॥

अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई ❀ लोचन सुफल करौं मैं जाई ॥
स्यामगात सरसीरुह - लोचन ❀ देखौं जाइ ताप - त्रय - मोचन ॥

दोहा—राम-रूप-गुन सुमिरत, मगन भयउ छन एक ।
रावन माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक ॥६३॥

महिष खाइ करि मदिरापाना ❀ गर्जा बज्राघातसमाना ॥
कुंभकरन दुर्मद रनरंगा ❀ चला दुर्ग तजि सेन न संगा ॥
देखि बिभीषनु आगे आयउ ❀ परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥
अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा ❀ रघु-पति-भगत जानि मनभावा ॥
तात लात रावन मोहि मारा ❀ कहत परमहित मंत्र बिचारा ॥
तेहि गलानि रघुपति पहिं आयउँ ❀ देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥
सुनु सुत भयउ कालबस रावन ❀ सो कि मान अब परमसिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन ❀ भयउ तात निसि-चर-कुल-भूषन ॥
बंधुबंस तैं कीन्ह उजागर ❀ भजेहु राम सोभा - सुख - सागर ॥

दोहा—बचन कर्म मन कपट तजि, भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि, भयउँ कालबस बीर ॥६४॥

बंधुबचन सुनि फिरा बिभीषन ❀ आयउ जहँ त्रै-लोक-बिभूषन ॥
नाथ भूधराकार सरीरा ❀ कुम्भकरण आवत रनधीरा ॥
एतना कपिन्ह सुना जब काना ❀ किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उपारि बिटप अरु भूधर ❀ कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥
कोटि कोटि गिरि-सिखर-प्रहारा ❀ करहिं भालु कपि एकहिं बारा ॥
मुरेउ न मन तन टरेउ न टारे ❀ जिमि गज अर्क फलन्हि के मारे ॥
तब मारुतसुत मुष्टिका हनेऊ ❀ परेउ धरनि व्याकुल सिर धुनेऊ ॥
पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंता ❀ घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि ❀ जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि ॥
चली बली - मुख - सेन पराई ❀ अति-भय-त्रसित न कोउ समुहाई ॥

दोहा—अंगदादि कपि मुर्छित करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहँ चला अमित-बल-सींव ॥६५॥

उमा करत रघुपति नरलीला ❀ खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥
भृकुटि भंग कालहि जो खाई ❀ ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥
जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिं ❀ गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ॥
मुरछा गइ मारुतसुत जागा ❀ सुग्रीवँ हिं तब खोजन लागा ॥
सुग्रीवहुँ कै मुरुछा बीती ❀ निबुकि गयउ तेहि मृतकप्रतीती ॥
काटेसि दसन नासिका काना ❀ गरजि अकास चलेउ तेहि जाना ॥
गहेउ चरन धरि धरनि पछारा ❀ अतिलाघव उठि पुनि तेहि मारा ॥
पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना ❀ जयति जयति जय कृपानिधाना ॥
नाक कान काटे जिय जानी ❀ फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
सहज भीम पुनि बिनु स्रुति नासा ❀ देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥

दोहा–जय जय जय रघु-बंस-मनि, धाये कपि दै हूह ।
एकहि बार तासु पर, छाड़ेन्हि गिरि-तरु-जूह ॥६६॥

कुम्भकरन रनरंग बिरुद्धा ❀ सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि धरि धरि खाई ❀ जनु टीडी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा ❀ कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥
मुख नासा स्रवनन्हि की बाटा ❀ निसरि पराहिं भालु-कपि-ठाटा ॥
रन-मद-मत्त निसाचर दर्पा ❀ बिस्व ग्रसिहि जनु एहि बिधि अर्पा ॥
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे ❀ सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकरन कपिफौज बिडारी ❀ सुनि धाई रजनीचर-धारी ॥
देखी राम बिकल कटकाई ❀ रिपुअनीक नानाबिधि आई ॥

दोहा–सुनु सुग्रीवँ बिभीषन, अनुज सँभारेहु सैन ।
मैं देखउँ खल-बल-दलहि, बोले राजिवनैन ॥६७॥

कर सारंग साजि कटि भाथा ❀ अरि-दल-दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुषटकोरा ❀ रिपुदल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा ❀ कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा ❀ लगे कटन भट बिकट पिसाचा ॥
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा ❀ बहुतक बीर होहिं सत खंडा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं ❀ उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

लागत बान जलद जिमि गाजहिं ❀ बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ॥
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ॥

दोहा--छन महुँ प्रभु के सायकन्हि, काटे बिकट पिसाच ।
पुनि रघुबीर निषंग महुँ, प्रबिसे सब नाराच ॥६८॥

कुम्भकरन मन दीख बिचारी ❀ हति छन माँझ निसा-चर-धारी ॥
भा अति क्रुद्ध महा बल बीरा ❀ कियो मृग-नायक-नाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर लेइ उपारी ❀ डारइ जहँ मर्कटभट भारी ॥
आवत देखि सैल प्रभु भारे ❀ सरन्हि काटि रजसम करि डारे ॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक ❀ छाड़े अति कराल बहु सायक ॥
तन महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं ❀ जनु दामिनि घन माँझ समाहीं ॥
सोनित स्रवत सोह तन कारे ❀ जनु कज्जलगिरि गेरुपनारे ॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धाये ❀ बिहँसा जबहिं निकटकपि आये ॥

दोहा--महानाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस ।
महि पटकइ गजराज इव, सपथ करइ दससीस ॥६९॥

भागे भालु-बलीमुख-जूथा ❀ बृक बिलोकि जिमि मेषबरूथा ॥
चले भागि कपि भालु भवानी ❀ बिकल पुकारत आरत बानी ॥
यह निसिचर दुकाल-सम अहई ❀ कपिकुल देस परन अब चहई ॥
कृपा-बारिधर राम खरारी ❀ पाहि पाहि प्रनतारतिहारी ॥
सकरुन बचन सुनत भगवाना ❀ चले सुधारि सरासनबाना ॥
राम सेन निज पाछे घाली ❀ चले सकोप महा-बल-साली ॥
खैंचि धनुष सरसत संधाने ❀ छूटे तीर सरीर समाने ॥
लागत सर धावा रिसभरा ❀ कुधर डगमगत डोलति धरा ॥
लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी ❀ रघु-कुल-तिलक भुजा सोइ काटी ॥
धावा बामबाहु गिरि धारी ❀ प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ॥
काटें भुजा सोह खल कैसा ❀ पच्छहीन मंदरगिरि जैसा ॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका ❀ ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका ॥

दोहा--करि चिक्कार घोर अति, धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रासित, हा हा होति पुकारि ॥७०॥

सभय देव करुनानिधि जानेउ ❀ स्रवन प्रजंत सरासनु तानेउ ॥
बिसिखनिकर निसि-चर-मुख भरेऊ ❀ तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥
सरन्हि भरा मुख सनमुख धावा ❀ कालत्रोन सजीव जनु आवा ॥
तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा ❀ धर तें भिन्न तासु सिर कीन्हा ॥
सो सिरु परेउ दसानन आगें ❀ बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा ❀ तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर ❀ हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ॥
तासु तेज प्रभुबदन समाना ❀ सुर मुनि सबहिं अचंभो माना ॥
सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं ❀ अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं ॥
करि बिनती सुर सकल सिधाये ❀ तेही समय देवरिषि आये ॥
गगनोपरि हरि-गुन-गन गाये ❀ रुचिर बीररस प्रभुमन भाये ॥
बेगि हतहु खल कहि मुनि गये ❀ राम समर महि सोहत भये ॥

छन्द—संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुलबल कोसलधनी ।
स्रमबिंदु मुख राजीवलोचन अरुन तन सोनितकनी ॥
भुजजुगल फेरत सरसरासन भालु कपि चहुँ दिसि बने ।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने ॥

दोहा—निसिचर अधम मलाकर, ताहि दीन्ह निज धाम ।
गिरिजा ते नर मंदमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥७१॥

दिन के अंत फिरी दोउ अनी ❀ समर भई सुभटन्ह स्रम घनी ॥
रामकृपा कपिदल बल बाढ़ा ❀ जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा ॥
छीजहिं निसिचर दिन अरु राती ❀ निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती ॥
बहु बिलाप दसकंधर करई ❀ बंधुसीस पुनि पुनि उर धरई ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल बिपुल बखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आयो ❀ कहि बहु कथा पिता समुझायो ॥
देखेहु कालि मोरि मनुसाई ❀ अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥
इष्टदेव सों बल रथ पायउँ ❀ सो बल तात न तोहि देखायउँ ॥
एहि बिधि जलपत भयउ बिहाना ❀ चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥
इत कपि भालु कालसम बीरा ❀ उत रजनीचर अति-रन-धीरा ॥

लरहिं सुभट निज निज जय हेतू ❀ बरनि न जाइ समर खगकेतू ॥

दोहा--मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउ अट्टहास करि, भइ कपिकटकहि त्रास ॥७२॥

सक्ति सूल तलवारि कृपाना ❀ अस्त्र शस्त्र कुलिसायुध नाना ॥
डारइ परसु परिघ पापाना ❀ लागेउ बृष्टि करै बहु बाना ॥
दस दिसि रहे बान नभ छाई ❀ मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥
धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना ❀ जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥
गहिगिरि तरु अकास कपि धावहिं ❀ देखहिंतेहि न दुखित फिरिआवहिं ॥
अवघट घाट बाट गिरि कंदर ❀ मायाबल कीन्हेसि सरपंजर ॥
जाहिं कहाँ भये व्याकुल बंदर ❀ सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला ❀ कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला ॥
पुनि लछिमन सुग्रीवँ बिभीषन ❀ सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जरतन ॥
पुनि रघुपति सन जूझइ लागा ❀ सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥
व्याल-पास-बस भयउ खरारी ❀ स्वबस अनंत एक अविकारी ॥
नट इव कपट चरित कर नाना ❀ सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥
रनसोभा लगि प्रभुहिं बँधायो ❀ देखि दसा देवन्द भय पायो ॥

दोहा--गिरिजा जासु नाम जपि, मुनि काटहिं भवपास ।
सो कि बंध तर आवइ, व्यापक बिस्वनिवास ॥७३॥

चरित राम के सगुन भवानी ❀ तरकि न जाहिं बुद्धि बल बानी ॥
अस बिचारि जे तग्य बिरागी ❀ रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी ॥
ब्याकुल कटक कीन्ह घननादा ❀ पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा ॥
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा ❀ सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥
बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही ❀ लागेसि अधम पचारै मोही ॥
अस कहि तरल त्रिसूल चलावा ❀ जामवंत सो कर गहि धावा ॥
मारेसि मेघनाद कै छाती ❀ परा धरनि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनि रिसान गहि चरन फिरावा ❀ महि पछारि निज बल देखरावा ॥
बर प्रसाद सो मरइ न मारा ❀ तब गहि पद लंका पर डारा ॥
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठावा ❀ रामसमीप सपदि सो आवा ॥

दोहा—खगपति सब धरि खाये, माया-नाग-बरूथ ।
माया बिगत भये सब, हरषे बानरजूथ ॥
गहि गिरि पादप उपल नख, धाये कीस रिसाइ ।
चले तमीचर बिकलतर, गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४ ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी ❁ पितहि बिलोकि लाज अति लागी ॥
तुरत गयेउ गिरि-बर-कंदरा ❁ करौं अजय मख अस मन धरा ॥
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा ❁ सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥
मेघनाद मख करइ अपावन ❁ खल मायावी देवसतावन ॥
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि ❁ नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥
सुनि रघुपति अतिसयसुख माना ❁ बोले अंगदादि कपि नाना ॥
लछिमन संग जाहु सब भाई ❁ करहु बिधंस जग्य कर जाई ॥
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही ❁ देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ❁ जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई ॥
जामवंत सुग्रीवँ बिभीषन ❁ सेन समेत रहेउ तीनिउँ जन ॥
जब रघुबीर दीन्हि अनुसासन ❁ कटि निषंग कसि साजि सरासन ॥
प्रभुप्रताप उर धरि रनधीरा ❁ बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥
जौं तेहि आजु बधे बिनु आवौं ❁ तौ रघु-पति-सेवक न कहावौं ॥
जौं सत संकर करहिं सहाई ❁ तदपि हतउँ रघु-बीर-दोहाई ॥

दोहा—रघु-पति-चरन नाइ सिरु, चलेउ तुरंत अनंत ।
अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा ❁ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य बिधंसा ❁ जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा ॥
तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई ❁ लातन्हि हति हति चले पराई ॥
लै त्रिसूल धावा कपि भागे ❁ आये जहँ रामानुज आगे ॥
आवा परम क्रोध कर मारा ❁ गर्ज घोररव बारहिं बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये ❁ हति त्रिसूल उर धरनि गिराये ॥
प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचंडा ❁ सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥
उठि बहोरि मारुति जुबराजा ❁ हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥

फिरे वीर रिपु मरइ न मारा ❀ तब धावा करि घोर चिकारा ॥
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला ❀ लछिमन छाड़े बिसिख कराला ॥
देखेसि आवत पविसम बाना ❀ तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥
बिबिध वेष धरि करइ लराई ❀ कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरि जाई ॥
देखि अजय रिपु डरपे कीसा ❀ परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥
एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ❀ लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा ॥
सुमिरि कोसला - धीस - प्रतापा ❀ सरसंधान कीन्ह करि दापा ॥
छाँड़ेउ बान माँझ उर लागा ❀ मरती बार कपट सब त्यागा ॥

दोहा--रामानुज कहँ रामु कहँ, अस कहि छाड़ेसि प्रान ।
धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान ॥७६॥

अथ क्षेपक

शीश परेउ धरणी पर जबई ❀ भुजा दाहिनी नभ सो गबई ॥
जो जग कह दंडक यम दंडा ❀ हरि द्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
महिमा अमित महा बल सींवा ❀ जासु प्रताप भयउ दशग्रीवा ॥
भुज बल सुरनायक बश कीन्हा ❀ चौदह भुवन जीति यश लीन्हा ॥
रिपु तरु लषण मूलखनि गंजेउ ❀ जिमि गज काल ताल गहि भंजेउ ॥
जिमि बासव गहि कुलिश कराला ❀ कीन्ह बिकल गिरि पक्ष बिहाला ॥
रण सागर महँ परेउ शरीरा ❀ तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
दन्त विकट मुख परम भयावन ❀ चिकुर सघन चख अशुभ अपावन ॥
रसना लाल रंग जनु जावक ❀ देवकि सिखा सोइ जनु पावक ॥
पाइ सुआयसु ऋषभ कपीशा ❀ करगहि लीन्ह दुष्ट कर शीशा ॥

दोहा–करि श्रम मारेउ महारिपु, रामानुज रणधीर ।
निडर सुमन वर्षहिं विबुध, कहिजयगिरा गंभीर ॥

इति क्षेपक

बिनु प्रयास हनुमंत उठावा ❀ लंका द्वार राखि तेहि आवा ॥
तासु मरन सुनि सुर गंधर्बा ❀ चढ़ि बिमान आये नभ सर्बा ॥
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं ❀ श्री-रघु-बीर-बिमल-जसु गावहिं ॥
जय अनंत जय जगदाधारा ❀ तुम्ह प्रभु सब देवन्ह निस्तारा ॥

अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाये ❀ लछिमन कृपासिंधु पहिं आये ॥

अथ क्षेपक

प्रभुहिं बिलोकि शीश पद नाये ❀ उठि प्रभु अनुज हर्ष उर लाये ॥
मुख प्रसन्नता देखि पूछ जब ❀ रिपु बध कहा बिभीषणहू तब ॥
कृपा दृष्टि करि अनुजहिं हेरा ❀ बिगत घाव कीन्हेउ कर फेरा ॥
वाण बेध देखिय तनु कैसे ❀ कनक त्रोन शर पूरित जैसे ॥
धर तेहि सीस आनि प्रभु आगे ❀ वानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकी बिलोकेउ शीशा ❀ राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥

दोहा–प्रभु आयसु सुनि कोशपति, राखे यतन कराइ ।
कटक सहित रघुवंश मणि, शोभित दोनों भाइ ॥

कृपा दृष्टि कपि भालु निहारे ❀ भए श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा एहिविधि रिपु मारे ❀ सुर नर मुनि सब भए सुखारे ॥
अब सो सुनहु बाँह तिहि केरी ❀ खग जो लाँघ गई शर प्रेरी ॥
मेघनाद आँगन महँ परी ❀ वाण बिद्ध शोणित सो भरी ॥
राजति तहँ सुलोचना वैसी ❀ रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नाग सुता दशकंध पतोहू ❀ वासव रिपुतिय छबिमय जाहू ॥
हेम सिंहासन सोहति वाला ❀ सेवहिं विद्याधर तिय माला ॥
पूजहिं विबुध विनय करि ताही ❀ सुख प्रमोद को सकहिं सराही ॥
तहँ पति भुजा परी यहि भाँती ❀ मनहुँ सकल सुख तरुकी काँती ॥

दोहा–तिहि दिशि दासी देखि कहँ, सोणित श्रव भुज दण्ड ।
भयउ समर आश्चर्य मय, मनहुँ अखंडन खंड ॥

सुनिके सकल सखी मुख बयना ❀ तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
नारि सुभाव धकधकी धरकी ❀ सूचक अशुभ दहिन भुज फरकी ॥
होत महा रण रावण रामहिं ❀ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी ❀ विधि की मती परै नहिं बूझी ॥
इतना कहति गई चलि आपू ❀ पति भज लखि करि कोटि विलापू ॥
कंकण मणि गण भूषण सोई ❀ महा विटप मम आन न होई ॥
देखति मनहिं न आवत तेही ❀ तासु प्रभाव सुनत पहिलेही ॥

नींद नारि भोजन परिहरई ❀ बारह बरष तासु कर मरई ॥

दोहा–करि विचार मन टेक दे, मैं पति देवतनारि ।
भुज लिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन्ह पसारि ॥

लखि रुख तासु सखी उठि धाई ❀ तुरतहिं खोजि खरी लै आई ॥
दीन्ह हाथ पर मणि अँगनाई ❀ लिखित लषण कीरति रुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटिक ❀ तजै तासु महिमा यह छोटिक ॥
अक्षय अव्यय अज अविनासी ❀ अतुल अमित घट घट के वासी ॥
प्रगटहिं पालहिं पुनि जग हरहीं ❀ त्रिगुण रूप त्रय मूरति करहीं ॥
जो कालहु कर काल भयंकर ❀ वरणत सुयश शारदा शंकर ॥
धरहिं विविध तनु सेवक हेतू ❀ जासु नाम भवसागर सेतू ॥
मुनि मन पुंडरीक जाके घर ❀ वचन विवेक विचार बुद्धिवर ॥

दोहा--कोटि कल्प वरणत निगम, अगम जासु गुण गाथ ।
तम शरीर जड़ जीव बिनु, किमि बरणों लिखि हाथ ॥

मम शिर गयउ जहाँ रघुराई ❀ तव बचननि लगि भुजा पठाई ॥
एहिबिधि लिखी सकल भुज बाता ❀ परी भूमि तल अति बिलपाता ॥
बाँचि सकल भुज लिखित जथारथ ❀ लक्ष्मण राम जानि परमारथ ॥
नारि सुभाव तदपि बहु भाँती ❀ बिलपहिं मिलि सखियन को पाँती ॥
गुण गण साहस शील नाह के ❀ कहि रोवहिं बल बिजय बाँह के ॥
जिहि भुजबल सुर नाथ बिगोए ❀ सो प्रभु आज समर महि सोए ॥
मणि गण भूषण बसन बिसारति ❀ महि लोटति करतल सिर मारति ॥
मगन शोक सरि तनु सुधि नाहीं ❀ दारुण बिपति कहौं किहि पाहीं ॥
क्षणिक प्रबोध सखी कोउ करई ❀ बहुरि शोक दावानल जरई ॥
क्षण क्षण उठति परति धरणी तल ❀ पुनि रोवहिं सराहि पति कर बल ॥

दोहा–तिन्ह महँ सखी सयानि इक, कहि समुझाइ बैन ।
शोकछाँड़ि पतिदेवता, सुमति करिय जिय चैन ॥

सुनि कह सहसानन तनु जाता ❀ सत्य कहा तुम्ह सखी सुवाता ॥
बिधि निर्मित मोकहँ दुख लाहू ❀ सुख परिपूर भवन सब काहू ॥
बिजय राम लक्ष्मण कहँ आयउ ❀ सुयश सकल मर्कट कुल पायउ ॥

कुल कलंक बड़ लहेउ विभीषण ❀ कुल कुठार अग सुनेउ न दीपण ॥
छूटि बंदि अत्र सुरगण केरी ❀ निज २ पुरनि दुहाई फेरी ॥
मुनि पुलस्त्य कर भा कुल नाशा ❀ अवरनिशशि मुख करहिं प्रकाशा ॥
तेजवंत पावक परिहरि दुख ❀ बहहिं समीर आजु अपने सुख ॥
सलिल गगन भू निर्मल आजू ❀ सुबस बसहिं सुरनायक राजू ॥

दोहा–यम कुबेर दिगपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ।
खाय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग ॥

इतना कहि मंदिर महँ आई ❀ देखति मणि गण धनु बहुताई ॥
सुरपति भवन पटोतर ताई ❀ ऋद्धि सिद्धि जहँ सकल कमाई ॥
देखत त्रिभवन मन अनुरागेउ ❀ पति पद नेह निपुण मन लागेउ ॥
दीन्हे मणि गण भूषण चीरा ❀ धनु धरणि गज हाटक हीरा ॥
मणिमय शिविका रचेउ बनाई ❀ भुज चढ़ाइ पहरात्र बनाई ॥
आपुन चढ़ति भई तहँ आई ❀ सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥
वीत राग जिमि तजहिं विषय गण ❀ सहस भाँति पति पद लागेउ मन ॥
शुक सारिक सुलोचन जाये ❀ कनक पींजरन्हि राखि पढ़ाये ॥
व्याकुल कहहिं ते कहाँ सुनयना ❀ सुधि धीरज परिहरिय सुबयना ॥
भयो विकल खग मृग यहि भाँती ❀ अपर दशा कैसे कहि जाती ॥
प्रजा लोग आतुर सँग लागे ❀ प्रेम उमगि लोचन जल पागे ॥

दोहा–बाजन लगे निसान गण, ढोल दुन्दुभी भेरि ।
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि ॥

देखि भीर दशकंधर द्वारे ❀ सजग होउ सब बीर प्रचारे ॥
जाना कटक रिपुन्हि कर आई ❀ अस्त्र शस्त्र कर धरहु बनाई ॥
धनुष चढ़ाय तूण कटि बाँधहिं ❀ गहि असि चर्म बीरवर साजहिं ॥
तोमर परशु प्रचंड गदागहि ❀ तीक्षण चोखे शूल शक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहि धावहिं ❀ प्रगट दशानन विजय सुनावहिं ॥
गर्जि तर्जि कहि गिरा गँभीरा ❀ समर भयंकर निशिचर बीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई ❀ चीन्ह सकल भट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नाग पति कन्या ❀ सती सिरोमणि त्रिभुवन धन्या ॥

दोहा–द्वारपाल दशकंध के, खबर सुनायउ जाइ।
भई रजायसु बेगिही, लेहु सुताहि बुलाइ॥
दोहा–तिहि अवसरहि सुलोचना, गहे चरण शिरनाइ।
राखि भुजा घननादकी, करुणा बचन सुनाइ॥

तुमहिं अछत अस हाल हमारी ❀ सुख तजि भयउँ शोक अधिकारी॥
नभ मारग भुज मम गृहपरी ❀ संशय जानि दीन्ह कर खरी॥
लिखा राम लछ्मण महि माइन्ह ❀ क्रमसों सब विधि कथा कही तिन्ह॥
ठगिसी रही बाँचि गुण गाथा ❀ जरहुँ संग जो पावउँ माथा॥
रण कबन्ध भुज मम गृह आई ❀ शिर तहँ जहँ नरेस दोउ भाई॥
करि सो जतन मिले मोहि शीशा ❀ तुम्ह सर्वज्ञ चराचर ईशा॥
सुनत कुलिश सम गिरा बधूकी ❀ जीवन आस दशानन मूकी॥
तदपि धीर धरि करत प्रबोधा ❀ कहु जग मोहिं समान को जोधा॥

दोहा–राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमंत।
साथ विभीषण ऋषभको, आनौं मारि तुरंत॥

अब लगि रहा भरोसा भारी ❀ कुम्भकर्ण घननाद सुरारी॥
मैंहु आजुलगि कीन्ह न जूझा ❀ इन्ह सबकर पुरुपारथ बूझा॥
मरे ते नर बानर के मारे ❀ बात सुनत बड़ि लाज हमारे॥
गणना कवन बीर महँ तिनकी ❀ अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिन्हकी॥
छाँड़ि शोच कुल बधू पतोहू ❀ जानेउ उन्ह समान जिन मोहू॥
पुत्रि विलंब करहु घट चारी ❀ देखहु मोरि भयंकर मारी॥
आनि शीश सब शत्रुन्ह केरा ❀ बिनु प्रयास नहिं लागहिं बेरा॥
भुगवहिं जंतु पराकृत भोगा ❀ नतुकत निशिचर बनचर योगा॥

दोहा–मेरु उपारनहार जे, धरा धरहिं कर बीच।
ते भट खाये मशक शिशु, काल कुटिलता नीच॥

क्रोधावेश घोर रव बोलहिं ❀ हृदय शोक तरु अचल न डोलहिं॥
समाधान नहिं मानति सोई ❀ सुनि प्रलाप परितोप न होई॥
नर बानर पुरुषारथ देखत ❀ बड़ो प्रचंड छोट करि लेखत॥
कूदि सिंधु लंका कपि जारी ❀ लघुकर मानत ताहि सुरारी॥

कुम्भकर्ण अति काय महोदर ❀ मम पति गिरेउ समेत सहोदर ॥
तेहि रिपु चहहिं दशानन जीती ❀ देखिय महा मोह की रीती ॥
उतर देउँ तो पातक होई ❀ करि विषाद अव सर्वसु खोई ॥
फिरेउ राज तो मोहिं न काजू ❀ बिनु पिय सकल नरक कर साजू ॥

दोहा--तुरतहिं उठी सुलोचना, गइ मयसुता जु पास ।
पदगहि रोवति सबकही, प्रगट शोक उपहास ॥

आदिहि ते सब कथा बखानी ❀ सुनि सुनि रोवहिं रावण रानी ॥
कही सो पति भुज लिखित वहोरी ❀ राम लषण महिमा नहिं थोरी ॥
कहेउ वहुरि दशकंधर क्रोधा ❀ सहेउ विडंवन कीन्ह सो जोधा ॥
सुनि सोउ पुत्र बधू की बानी ❀ बोली दुखित मंदोदरि रानी ॥
कहौं सो मानव मत्य सयानी ❀ सुनी जो नारद मुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब साँची ❀ अनुभव कीन्ह न एको बाँची ॥
देवि न होइ वृथा ऋषि भाषित ❀ अपने महा मोह मन माँपित ॥
आगिल कथा समाज समेता ❀ सुनहु पुत्रि ऋषि वर्णन जेता ॥
बीर भाव दशकंधर जूझहिं ❀ प्राणहु गये नीति नहिं बूझहिं ॥
बंधु भेद लंका गढ़ टूटहिं ❀ सुर नर नाग वंदिते छूटहिं ॥
सिया शोक संकट ते छूटहिं ❀ बानर भालु राज गृह लूटहिं ॥
धन मणि भूषण वसन विमाना ❀ भोग करहिं मर्कट कुल नाना ॥

दोहा--राज बिभीषण पाइहैं, अमर कल्प निर्वाहि ।
भावीबश सुख दुख जगत, उपदेशिय कहु काहि ॥

मुनि वचनन की मोहिं प्रतीती ❀ अनुभव सदा हारि अरु जीती ॥
तैं पुत्री परिहरि अब शोका ❀ पति सँग तुरत साध परलोका ॥
जाहि राम पहँ पति शिरलागी ❀ तजि सँकोच आनहि शिरमाँगी ॥
होव न लाज आजु को भूषण ❀ समयहीन मनगणिय न दूषण ॥
एक नारि व्रत रघुपति केरा ❀ लषण सुयश ते सुना घनेरा ॥
है पुनि ससुर विभीषण तोरा ❀ वालि सुवन है वालक मोरा ॥
मंत्री जामवन्त सुग्रीवा ❀ दुविद मयंद पनसवल सीवा ॥

जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता ❀ शिव स्वरूप भय हर भगवन्ता ॥
सदा नीति रत राम नरेशू ❀ तहाँ जात कहु कवन कलेशू ॥

दोहा-बिदित तोहि पतिभुज लिखित, लक्ष्मण राम प्रभाउ ।
महा सुऋषि भाषित भयउ, अब बिलम्ब नहिं लाउ ॥

सुनत तासु मुखकी हितबानी ❀ जाहुँ राम पहिं यह उर आनी ॥
बार बार चरणन शिर नाई ❀ चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई ॥
देखी कटक भालु कपि केरी ❀ सिंधु सुवेल महीधर घेरी ॥
उमगेउ मनहुँ महोदधि दूसर ❀ हरित पिंग धूमिल तनु धूसर ॥
स्वर्ग लाल भासत अनहेरी ❀ मनहुँ लपट वड़वानल केरी ॥
स्रवत रुधिर भुज सहज भयंकर ❀ जहँ तहँ प्रगट होत जनु जलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीश धरि ❀ कटक जलधि सोवत राघव हरि ॥
अक्षय वट तहँ बैठ बिभीषण ❀ अस सुकृती जग सुना न दीषण ॥

दोहा-देखत हर्ष सुलोचना, धीरज धरति वहोरि ।
महाराज रघुबीर कहँ, बिनय सुनावहु मोरि ॥

बानर सकल उठे अस बोली ❀ अरिपुर ते आवत एक डोली ॥
इह जानिय रावण अब बूझा ❀ भइ मति मेघनाद जब जूझा ॥
हठ तजि सीतहिं दीन्ह पठाई ❀ तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जेहि लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी ❀ बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सो सीता अब बिनु श्रम पाई ❀ जानहु विधि अनुकूल अघाई ॥
बिजय राम सुग्रीवहिं आयउ ❀ सुयश सकल बानर कुल पायउ ॥
बिरह राम लक्ष्मण कर छूटेउ ❀ बिनु प्रयास लंका गढ़ टूटेउ ॥
युग युग कीरति रहहिं हमारी ❀ कत रण कत हम लघु बनचारी ॥

दोहा-यहिबिधि चारु बिचारकरि, दीन्ह ठीक मन माहिं ।
भयउ काज रघुराजकर, बात दूसरी नाहिं ॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❀ अन चिन्हारि जिमि पर घर जाई ॥
आगे जाइ दीख रघुबीरहिं ❀ छबि मय श्यामल गौर शरीरहिं ॥
मर्कत कनक छबिहिं जनु निंदक ❀ सो जन धन्य उमा जे बंधक ॥
मत्तगयंद शुण्ड भुज दंडा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचंडा ॥

उर बिशाल अति उन्नत कंधर ❀ कंबु कंठ रेखा वर त्रय धर ॥
मुख छवि को उपमा कवि जोहहिं ❀ शशि सरोज सम कहेन सोहहिं ॥
दशन पाँतिको काँति कहै को ❀ ललकत मन पट तरहि लहै को ॥
देखत अधरनि की अरुणाई ❀ बिंबाफल बंधूक लजाई ॥
शुक तुडंहिं नासिका लजावहिं ❀ थके सुकवि नहिं पटतर पावहिं ॥

दोहा—छबिमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह ।
जहाँ न पावत पार सुर, को वरणै कवि थाह ॥

भृकुटी बिकट कपोल सुहाये ❀ शीश जटा शुचि मुकुट बनाये ॥
भाल विशाल तिलक जुत सोहइ ❀ ध्यान समय लखि मुनि मन मोहइ ॥
वल्कल बसन तूण कटि बाँधे ❀ कर शर सुभग सरासन काँधे ॥
बीरासन आसन मृगछाला ❀ नवपल्लव प्रसून की माला ॥
चरण सरोज बरणि नहिं जाई ❀ जहँ मुनि मधुकर सदा लुभाई ॥
प्रगट भई तेहि थल ते गंगा ❀ श्रुति पुराण कहि कथा प्रसंगा ॥
नवहिं महेश बिरंचि जाहि कहँ ❀ लोचन गोचर होइ काहि कहँ ॥
भय भंजन जनरंजन जोहित ❀ भवसागर तारण कहँ बोहित ॥

दोहा—प्रणतपाल विरदावली, जिन्ह चरणनिकी बानि ।
शोक हरण संशय दलन, सकल सुमंगलखानि ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना ❀ दुविद मयंद कुमुद बलवाना ॥
जाम्बवन्त कपि पति बल शीला ❀ ऋषभ सुषेण सहित नल नीला ॥
महाबीर बानर सब राजहिं ❀ लषणबिभीषण दुहुदिशि भ्राजहिं ॥
मित भाषित सर्वज्ञ सु सेवक ❀ चितवहिं रुख रघुनन्दन देवक ॥
सभा मध्य शोभित रघुनन्दन ❀ कीन्हेमिसफल निरखि निज अंजन॥
करति दंडवत शिर धरि धरणी ❀ तब सब कथा बिभीषण बरणी ॥
पुत्र बधू दसकंधर वारी ❀ पति देवता सुलोचनि नारी ॥
मेघनाद की नारि सुसीला ❀ यह गति तब बिरोध की लीला ॥

दोहा—मुये जान पति भुज लिखित, सब समुझाइ ओहि ।
महाराज रघुवंशमणि, जाचन आइ तोहि ॥

करि प्रणाम आदर नहिं थोरे ❀ करुणा वचन कहत कर जोरे ॥
अति अस्तुति कीन्ही बहु भाँती ❀ हृदय सोच चिंता दिन राती ॥
अस्तुति कीन्ह अहो प्रभु देवा ❀ कृपा अनुग्रह अद्भुत सेवा ॥
नित सुमिरों में तुम्हें गुसाईं ❀ जेहि विधि मोहिं होउ सुखदाई ॥
दया करहु देवन के देवा ❀ राम नाम हुइए एक खेवा ॥
दीन दयालु अनुग्रह कारी ❀ मोहि पतित प्रभु लेहु उबारी ॥
पतितहु महँ जे पतित कहाई ❀ ताहू गति दीन्ही रघुराई ॥
तुम त्रिभुवन पति सब कर स्वामी ❀ करो दया प्रभु गरुड़ा गामी ॥

दोहा--अस प्रभु दिनबन्धु हरि, कारन रहित कृपालु ।
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जंजालु ॥
तुम्ह त्रिभुवन त्रैलोक के, दूसर अवर न कोइ ।
काहि पुकारों छाँड़ि तुहि, नाम सत्य प्रभु होइ ॥

तुम अंतर्यामी भगवाना ❀ प्रभुता आदि मध्य अवसाना ॥
करुना वचन सुनत रघुबीरा ❀ पुलक रोम भये सिथिल सरीरा ॥
देउँ जिवाय तोर पति आजू ❀ भोगहु लंक कल्प सत राजू ॥
छाँड़ि सोच मन अति हर्षाई ❀ तुरत भवन अपने फिरि जाई ॥
सुनि अस सत्य सिंधु की बानी ❀ मन महँ वानर चमू डरानी ॥
कहि न सकें कछु प्रभु मुख देखी ❀ कहा करिय करतार अलेखी ॥
सीय सोचकर फल नहिं होइहि ❀ जो करि कृपा राम यह जोइहि ॥
सब देवन कर सोच न जाई ❀ जो अस कृपा करैं रघुराई ॥

दोहा--राज बिभीषण लंककर, केहिविधि करिहहिं भोइ ।
समुझि बरै घननाद जब, गहहिं शरासन जाइ ॥

मुख रुख लखि कपीश जब जाना ❀ प्रणतपाल भगवान समाना ॥
देखि बहुत रघुपति कर छोहू ❀ विनय करति दशकंठ पतोहू ॥
आपु उदार देव सब लायक ❀ करुणा मय देखेउँ रघुनायक ॥
हमहुँ विचार कीन्ह मन माहीं ❀ जीवन ते अस मरण सराहीं ॥
भुज बल जीति लोक सब कीन्हे ❀ चौदह भुवन भोग करि लीन्हे ॥
रण तीरथ जाचक भल कीन्हेउँ ❀ प्राण सोंध लछमण करि दीन्हेउँ ॥

अब न उचित पति लेउ उभारा ❀ धन्य धन्य भा दर्श तुम्हारा ॥
जानिय हमहुँ मरब मत साधी ❀ मिलब तुम्हहि जिमि मिले समाधी ॥

दोहा--निर्मल गति अवसर भयउ, सुनिय सत्य रघुबीर ।
तुमहिं मिले नहिं होहिं भव, यथा सिंधु गति नीर ॥

मनकी जानन हार सुदेवा ❀ भव सागर तारहु इहि सेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई ❀ मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाइ कृतारथ मानेउ आपू ❀ मिटा बिरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछति मुख की धूरी ❀ कहि मम प्राण सजीवन मूरी ॥
देखि करत संशय सुग्रीवा ❀ भुज महि लिखा सो मोहिंनसीवा ॥
हँसै बदन तौ तिय यह साँची ❀ नाहिं तो निशिचर माया काँची ॥
कहँ यह ज्ञान मृतक भुज गावै ❀ जो मुनिवर साधन ते पावै ॥
प्रभु यह कहेउ हँसत यह शीशा ❀ किये कुतर्क न उचित कपीशा ॥

दोहा–शिर सो कहति सुलोचना, हँसहु वेगि मम नाथ ।
नतरु प्रतीति न मानिहैं, लिखि जो तुम्हरे हाथ ॥

क्षणक बिलम्ब कीन्ह नहिं बोला ❀ मृतक सोमुख मुदित नहिं खोला ॥
पुनि पुनि कहति सो नागकुमारी ❀ श्रमित भयउ रण महि करि मारी ॥
लगेउ लषण शर क्षोभ बढ़ावहिं ❀ प्रभु समीप कत मोहिं लजावहिं ॥
जो मन बचन कर्म यह देही ❀ पति देवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच सिर बोलहिं ❀ रहि जाइहि जग सुयश अमोलहिं ॥
जौ जानति तव यह गति साईं ❀ बोलि पठावति पितहिं सहाई ॥
सुनि तिय बचन हँसेउ तब शीशा ❀ चौंकि उठे सब भालु कपीशा ॥
हँसे ठठाइ बदन सब देखत ❀ विस्मय भयउ सकल जन देखत ॥
कोटि मेघ सम सुनि नहिं जाई ❀ रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपीशहिं तोषेउ नारिहिं ❀ बड़ आश्चर्य भयउ बन चारिहिं ॥
कह सुग्रीव चरण शिरनाई ❀ कारण कवन हँसा शिर साँई ॥
यह सुनि बिहँसि कहा रघुराई ❀ सुनु सुग्रीव कुतर्क बिहाई ॥
पतिव्रत तिय जिनके गृह माहीं ❀ यह बड़ि बात तिन्हहिं कछु नाहीं ॥
पुनि तब संशय भयउ कपीशा ❀ तिहि कारणहिं हँसा यह शीशा ॥

दोहा–शीश पाइ प्रभु चरण गहि, बहुविधि विनय सुनाय ।
आजु के दिन रणपरिहरहु, ममहित कोशलराय ॥

बहुरि विभीषणपदहि न मित सो ❀ रघुवर गुण हृदय भणित सो ॥
तुम पितु सम दशकंधर भाई ❀ यहि कुल की तोहिं लाज बड़ाई ॥
मुनि पुलस्त्य परिवार के दीपक ❀ पायउ फल रघुबीर समीपक ॥
प्रथम मोहवश अनहित मानउ ❀ ज्ञान भये तव गुण पहिचानउ ॥
युग युग करब अकंटक राजू ❀ सहित सुकीरति सुकृत समाजू ॥
सुमिरत तुमहिं सुयश जन पैहैं ❀ रघुवर चरित संग कर गैहैं ॥
सुनत विभीषण करुणा भारी ❀ प्रगट न करत समय अनुहारी ॥
काल कर्म गति कहि समुझाई ❀ चली तुरत गुरु आयसु पाई ॥

दोहा–बाहिर करि कपि कटकते, फिरे विभीषण आपु ।
बिसरेउ दशकंधर बयर, हृदय अधिक संतापु ॥

शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो ❀ रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामहिं ❀ रसना रटति निरंतर रामहिं ॥
सरित सिंधु संगम जहँ पावन ❀ यह सुधि पाइ गये तहँ रावन ॥
संग मँदोदरि सब रनिवासू ❀ मनहु शोक रवि कीन्ह प्रवासू ॥
पाइ रजायसु सेवक धाये ❀ चंदन अगर भार बहु ल्याये ॥
रची दारुमय चिता बनाई ❀ जनु सुरलोक निसेनी लाई ॥
शिर भुज धरि बैठी करि आसन ❀ भइ जनु योग सिद्धिको बासन ॥

दोहा–दीन्ह अग्नि दशमौलि तब, लपट गगन लगिजाइ ।
लखी न काहू जात सो, सुरपुर पहुँची धाइ ॥

सुतबध सुना दसानन जबहीं ❀ मुरछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥
दुखित हृदय नयन भरि आवा ❀ जनु सिरमणि अहिराज गँवावा ॥
हा सुत संतत आज्ञा कारी ❀ करि विलाप दशकंध पुकारी ॥
शक्र आदि जीतेहु सब देवा ❀ सुर मुनि नाग करायहु सेवा ॥
दूसर रहा न भुजबल दापा ❀ स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा ॥
इहि विधि करि बिलाप लंकेशा ❀ भयउ तेज हत सुनु उरगेशा ॥

इति क्षेपक

मंदोदरी रुदन करि भारी ❀ उर ताड़त बहु भाँति पुकारी ॥
नगर लोग सब व्याकुल सोचा ❀ सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दोहा--तब दसकंठ बिबिध बिधि, समुझाई सब नारि ।
नस्वररूप जगत सब, देखहु हृदय बिचारि ॥७७॥

तिन्हहिं ग्यान उपदेसा रावन ❀ आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥
परउपदेश कुसल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

अथ क्षेपक

तासु क्रिया करि निशिचर नाहा ❀ भयउ शोचवश अति उरदाहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन ❀ बादि बिषाद करिय जिन रावन ॥
सुत बित नारि बिबिध सुख कैसे ❀ उपजहिं घटा जाहिं उड़ि जैसे ॥
तड़ित दमक देखिय घनमाहीं ❀ रहइ न थिरत बहुरि छिपाहीं ॥
अस जिय जानि सुनिय दशभाला ❀ बचहि न कोउ जग आए काला ॥
अब प्रभु जतन बिचारहु सोई ❀ रिपुकर नाश कवन बिधि होई ॥
बचन सुनत तेहि कछु सुख माना ❀ काल बिवश जिमि तीरथ ज्ञाना ॥

अहिरावण की कथा

दोहा--लागेउ करन बिचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश ।
समुझि हृदय अहिरावणहि, आयउ जहाँ गिरीश ॥

दंड चारि तब तहँ निशि बीती ❀ सन्ध्या बन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा ❀ बहुरि हर्ष जारेउ कर बीशा ॥
शिव सेवक मन क्रम अनुरागी ❀ सुनु खगेश तिहिते बड़ भागी ॥
मंत्राकर्षण जप दशभाला ❀ अहिरावण चित डोल पताला ॥
लागेउ करन सो मन अनुमाना ❀ केहि कारण दशमुख अकुलाना ॥
निशिचरनाह भुवन बश जाके ❀ जीत न कह न बीर कोउ ताके ॥
मन क्रम बचन आन नहिं सेवी ❀ धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहवाँ ❀ शिव मंडप दशमुख रह जहँवा ॥
निशिचर पति कहँतेहि शिर नायउ ❀ करगहि निज आसन बैठायउ ॥

दोहा--अहिरावण तब रावणहिं, पूछेउ कुशल सप्रीति ।
प्रथम कही तेहिसो कथा, भगिनी कीन्ह अनीति ॥

बध खरदूषण जिमि सुधि पाई ❀ पुनि मरीच कर कथा सुनाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरना ❀ पवन तनय बल लंका दहना ॥
सेतु बाँधि जिमि प्रभु चलि आयउ ❀ बालि तनय संवाद सुनायउ ॥
अवनि अकंपन अरु अति काया ❀ परे समर महँ सुनु अहिराया ॥
तात कुशल अब आइ सिरानी ❀ कटक निशाचर सकल नसानी ॥
कुम्भकर्ण घननादहु मारे ❀ राम लषण ते मनुज बिचारे ॥
आनेइ बोलि तोहि निज पासा ❀ कहु सोइ जतन होइ रिपुनासा ॥
सुनत बचन कहि केतिक बाता ❀ हरि लै जैहों दोनों भ्राता ॥
लै जाऊँ जानेउ तुम तबहीं ❀ रविसम तेज होय निशि जबहीं ॥

दोहा--कहि अस बचन प्रबोध करि, शीशनाइ बल भाषि ।
आयउ रघुपति कटक महँ, निज देविहिं उर राषि ॥

सूझन पर निशिचर अँधियारी ❀ मर्कट भट जागहिं तहँ भारी ॥
कहहिं जयति जय जयति कृपाला ❀ अतिहि अगम गम नाहिं न काला ॥
तहँ मारुत सुत रचा उपाई ❀ निज लँगूर कर कोट बनाई ॥
सो शोभा कछु बरणि न जाई ❀ जनु भुजंग पति रहे तहँ छाई ॥
अरु जिमि देखिय शैल समाना ❀ द्वार बिराजत मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा ❀ जिमि रवि उदय न तिमिर पसारा॥
एको युक्ति न मन ठहरानी ❀ कपट भेष तब कीन्ह भवानी ॥
वेष बिभीषण कर अनुहारी ❀ पवन तनय पहँ गै छलकारी ॥

दोहा--सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपति पति दास ।
तिन्हहि निदरि चल रामपहँ, मूढ़ हृदय नहिं त्रास ॥

मरम न जानेउ कछु सुत पवना ❀ वेष बिभीषण खल धरि गवना ॥
ठाढ़ होउ बोलेउँ सुनु भ्राता ❀ चलेउ जहाँ कृपाल जन त्राता ॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई ❀ संध्या करन गयउँ सुनु भाई ॥
तेहिते तुरति चलेउ प्रभु पाहीं ❀ भइ बिलम्ब जनिराय रिसाहीं ॥
सत्य बचन कपि निज मनमाना ❀ सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपट चतुर गति जानि न जाई ❀ पर मन हरै हरै धन भाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहवाँ ❀ फणिपति प्रभु दोनों रह जहवाँ ॥

कपिपति जामवन्त नल नीला ❀ बालितनय सुषेण बलशीला ॥

दोहा--द्विविद मयंद कपीश गण, गव गवाक्ष कपि बीर ।
सहित विभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर ॥

तिनहिं मध्य रावण शशिराहू ❀ एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा ❀ अनुज बाम दिशि तिहिपर हाथा ॥
प्रभुकर उर पर राजत कैसे ❀ जात रूप पर फणिपति जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा ❀ तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
सुभग बाण धनु धरे बनाई ❀ लछमण सहित नियर रघुराई ॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा ❀ देखि राम घन सुन्दर श्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं ❀ मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥
करहिं बिबिध जप जोग बिरागी ❀ रटहिं निरंतर दिन निशि जागी ॥
सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन ❀ कृपासिंधु सबके भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह बिचारा ❀ रावण काज करौं अनुसारा ॥
पुनि निज मायाकृत गुण आई ❀ कवनी भाँति जाइ दोउ भाई ॥

दोहा--मोहन ते मोहे सबहिं, मन्त्रन्ह ते मुख मूँदि ।
भयउ अदृश्य उठाइ करि, प्रभुहिं चलेउ लै कूदि ॥

यहि बिधि प्रभुहिं गयो लै सोई ❀ नभ मारग प्रकाश अति होई ॥
मनमें हर्ष करै अति भारी ❀ अहिरावण लै गा असुरारी ॥
गै निज लोक गयो क्षण माहीं ❀ सोरु भयो तब कपि दल माहीं ॥
जागे बानर श्रीहत झारी ❀ देखिय जिमि सरिता बिनु वारी ॥
अस देखिय जिमि निशि बिनु इन्दू ❀ तेज हीन वासर जिमि चन्दू ॥
रवि बिनु दिवस जीव बिनु देहा ❀ जिमि दीपक बिनु देखिय गेहा ॥
एकहि एक लगे तब पूछन ❀ कहाँ गये त्रैलोक्य बिभूषण ॥

दोहा--शोधा सब मिलि कटक तिन्ह, नहिं पाये दोउ वीर ।
भै व्याकुल सब भालुकपि, जिमि जलचर बिनु नीर ॥
सहित पवन सुत ऋक्षपति, दुख मनभा बहुभाँति ।
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तेहि राति ॥

पवन तनय पुनि कह सब पाहीं ❀ विस्मय होइ एक मन माहीं ॥
कोउ इक आव बिभीषण वेषा ❀ प्रभुके निकट जात हम देखा ॥
पूछत बचन कहेसि अति नीका ❀ कपट न जानों निशिचर जीका ॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा ❀ अहिरावण लै गा अवधेशा ॥
पन्नग लोक बसतु है सोई ❀ मम तनु वेष अवर नहिं कोई ॥
जिहि बल होइ वहाँ सो जाई ❀ ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहहिं भालु पति सुनु हनुमाना ❀ तव बल तात सकल जग जाना ॥
बेगि सो जतन विचारहु ताता ❀ कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥

दोहा—बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि, मारुतसुत सुनु तात ।
बिनु रघुपति धिक २ जनम, पलयुग सरिस बिहात ॥

तृषित होय बिनु वारि दुखारी ❀ तैसे हम सब विना खरारी ॥
दीप अवर्ति सकल क्षण भंगी ❀ तिमि हम सब देखिय बजरंगी ॥
सीता सुधि जिमि औषधि आनी ❀ तेहि प्रकार आनहु गुण खानी ॥
यह सुनि बहुरि पवनसुत बोला ❀ चित्त करहु थिर सेन न डोला ॥
भुवन चारिदश तीनहु लोका ❀ आनहुँ प्रभुहिं तजहु तुम शोका ॥
अबते सजग रहेउ सब भाई ❀ लरहु कालसों जो चढ़ि आई ॥
यह कहि गर्जि चलेउ हनुमाना ❀ प्रलय कालके मेघ समाना ॥
चले जात इक तरु तर गयऊ ❀ गृद्धनि गृद्ध कहत अस भयऊ ॥

दोहा—गृद्ध नारि रहि गर्भिणी, बोली पति सो बैन ।
आनहु आमिष मनुजकर, खाउँ होइ जिय चैन ॥

तासु बचन सुनि खग अस कहेऊ ❀ अहिरावण रामहिं लै गयऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई ❀ बड़े भाग्य आमिष जो पाई ॥
कवनेहु जतन देव मैं आनी ❀ असकहि गृद्ध नारि सनमानी ॥
जबहिं पवनसुत यह सुधि पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
तुरत पतालहि तिहि क्षण गयऊ ❀ अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❀ कपिसन डाटि कहत बहु रीशा ॥
निदरहि मोहिं तोहिं डर नाहीं ❀ जिमि दीपक न पतंग डेराहीं ॥
मारुतसुत कर हौं मैं बालक ❀ स्वामी भक्त भजन सुख कालक ॥

सोरठा--सुनत बचन हनुमान, विस्मय ह्वै बोलत भयउ।
अरे मूढ़ अज्ञान, मेरे सुत सपने नहीं॥

कहत बचन शठ तोहि न खोरी ❀ काम बिवश कब मति मैं भोरी॥
मम सुत होसि मूढ़ केहि काजा ❀ इतनी कहत तोहिं नहिं लाजा॥
किहि प्रकार ते मम सुत भयसी ❀ निज उत्पति मोसन किन कहसी॥
सुनत कहहिं मकरध्वज बचना ❀ कीन्ह तात जब लंका दहना॥
छूटि प्रस्वेद सागर महँ गयऊ ❀ मो झष पाय तहाँ मैं भयऊ॥
इहि प्रकार मैं तव सुत ताता ❀ गोपहुँ नहिं निज पिता न माता॥
अहिरावण सेवा मैं करऊँ ❀ प्रभु आयसु इहि द्वारे रहऊँ॥

दोहा--सत्य वचन हनुमान कहि, पुनि पूछेउ सब बात।
आनेउ लक्ष्मण राम कहँ, कहा करत है तात॥

कहहु तात तिहि थलको जाऊँ ❀ जान चहौं मैं निज प्रभु ठाऊँ॥
यह बृत्तान्त न जानहु ताता ❀ अस मैं श्रवण सुना कछु बाता॥
सीतापति अरु फणिपति साथा ❀ मो लै आयऊ निशिचर नाथा॥
करत सो अहै होम धौ आजू ❀ देविहि बलि देइहि अहिराजू॥
जो कछु निज श्रवणन सुनि पायउँ ❀ तात सकल मैं तुमहिं सुनायउँ॥
निज प्रभु काज लागि दुख सहऊँ ❀ तुम सन सत्य मरम मैं कहेऊँ॥
जान कहौ पै जान न देऊँ ❀ प्रभु अज्ञा तजि अयश न लेऊँ॥
सुनि असपेलि चलेउ हनुमाना ❀ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना॥

दोहा--तेहिं मुष्टिक कपि कहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहि।
हनहिं परस्पर एकइक, बल समान घट नाहिं॥

एकहिं एक सकहिं नहिं टारी ❀ पिता पुत्र दोऊ भट भारी॥
सुतहिं लूमसन बाँधि भवानी ❀ चलेउ बातसुत बिलँब न आनी॥
धरि लघु रूप होम गृह देखा ❀ जीव सजीव परे नहिं लेखा॥
तहँ देवीकर मण्डप रहई ❀ शोणित घट बहुको कहि सकई॥
विविध भाँति मेवा पकवाना ❀ धरे आनि देवी अस्थाना॥
सुमनहुँ ते करि असि हलुकाई ❀ लेत पानि जेहि जानि न जाई॥

दोहा--छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ।
मुख पसारि ठाढ़े भये, कपि छबि लखत डराइ ॥

जब देविहिं सो पुष्प चढ़ायउ ❀ बिकट रूप तब कपि दिखरायउ ॥
देवी प्रगट समुझि खल झारी ❀ करहिं विचार हृदय अति भारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगट भइ आजू ❀ बड़ भागी भा निशिचर राजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❀ जो चढ़ाउ सो कपि मुख परहीं ॥
जो जहँ रही वस्तु समुदाई ❀ बची न कछुक सकल कपि खाई ॥
कपि खिलारि कौतुक विस्तारा ❀ भा चह निशिचर कुल संहारा ॥
अहिरावण उरभा सुख कैसे ❀ चढ़े काँध पर बलि पशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना ❀ लछमण राम तुरत तहँ आना ॥
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी ❀ निशिचर बहु आयुध धरि पानी ॥
कोउ गदा कोऊ धनु बाणा ❀ शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दोहा--तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ।
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत ॥

मायाबल ते सकल विलक्षण ❀ अति विकार मय मूढ़ कुलक्षण ॥
यहि विधि सकल बीर तहँ रहहीं ❀ अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं ॥
आयसु पाइ खंग तिन्ह काढ़े ❀ मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू ❀ भरि त्रय दण्ड बिलंब अब करहू ॥
पुनि अस वचन मूढ़ मति कहहीं ❀ सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं ॥
नाहित काल आइ नियराना ❀ निशा स्वप्न सम दोउ जन प्राना
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी ❀ सकुच लगे सो कहत भवानी ॥

दोहा--फणिपति चितवत रामतन, राम चितव अहिराज ।
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनो दशा खगराज ॥

बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय बिचारा ❀ जपै सकल जग नाम हमारा ॥
जाना देवि रूप हनुमाना ❀ बिहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
काल कौर तुम सुमिरहु रक्षक ❀ भई तुम्हारि देवि तुम भक्षक ॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ ❀ घन समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकल त्रसित भें भारी ❀ कहहिं बचन भय हृदय बिचारी ॥

अहिरावण भल कीन्ह न काजू ❀ आने कपट वेष सुर राजू ॥
तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू ❀ अब भा सबको मरण समाजू ॥
संभ्रम बश तब निशिचर झारी ❀ बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी ॥

दोहा--प्रगट रूप धरि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ।
अति भय त्रसित निशाचर, सुनहु उमा मतिधीर ॥

तेहिक्षण कपि लीन्हे दोउ भाई ❀ धुनत तूल निशिचर समुदाई ॥
छीनि कृपाण लीन हनुमाना ❀ काटत भुज शिर कृषी समाना ॥
खण्ड खण्ड तब खल दल कीन्हा ❀ गहिपद डारि अनल महँ दीन्हा ॥
करि लंगूर कोट कपिराई ❀ तेहि महँ घिरि कपि भागि न जाई ॥
यहि विधि सब निशिचर संहारे ❀ अहिरावण लखि बचन उचारे ॥
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❀ अहिरावण तैं जान न मोहीं ॥
जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा ❀ अरु रावण सुत हतेउ बिचारा ॥

दोहा--कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि बचन प्रमान ।
अस कहि खड्ग प्रहार किय, कपितनु बज्र समान ॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा ❀ कोटि शीश पावक महँ डारा ॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा ❀ लै पुनि चलेउ लषन जगदीशा ॥
मकरध्वज विनती तब कीन्हा ❀ बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा ॥
इहाँ राज्य भोगहु तुम ताता ❀ भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता ॥
असकहि कपि निजदल सो आवा ❀ हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा ॥
मृतक शरीर प्राण जिमि आवहिं ❀ गइ मणि पाइ फणी सुख पावहिं ॥
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई ❀ तिमि हर्ष सब लखि दोउ भाई ॥
मिलेउ कपीश चरण धरि माथा ❀ पुनि पद गहे निशाचर नाथा ॥

दोहा--जाम्बवन्त अङ्गद सहित, मिले भालु अरु कीश ।
सनमाने कहि बचन प्रिय, लषन कोशलाधीश ॥

बहुरि सबहिं भेंटेउ हनुमाना ❀ कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं ❀ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं ॥
अनुज सहित हरषित रघुबीरा ❀ कहेउ बचन सुनु तनय समीरा ॥
तव समान नहिं कोउ हितकारी ❀ सुर मुनि सिद्ध मनुज तनुधारी ॥

यश तुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ ❀ सुनि प्रभु वचन चरण कपि नयऊ ॥
तैसे सब प्रताप तब नाथा ❀ सुनि अस मिले कपिहिं रघुनाथा ॥
कटक सहित हर्ष दोउ भाई ❀ तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई ॥
छंद—कहिजाइ सुख किमि तेहि समयकर सुनहु गिरिजा चितधरे ।
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षत आरती सुर गण करे ॥
अति प्रेममों मारुत सुवन यश गाइ विबुध न अस कहा ।
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥

दोहा--करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय ।
रामचरण अनुरागेउ, अपर सुमन झरिलाय ॥

देव निडर प्रभु गुण गण गावहिं ❀ आरत हरकहँ विनय सुनावहिं ॥
विबुध विनय रघुपति सुनि काना ❀ कह प्रभु सत्य सिन्धु भगवाना ॥
चतुरानन वर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ्यो खेला ॥
नाहित लषण एक पलमाहीं ❀ राखत यातुधान कुलनाहीं ॥
अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सब शोच बिचारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेषा ❀ भट महँ जासु भुजा कर रेषा ॥
तेहि रण महँ हम हतहुँ प्रचारी ❀ बिन श्रम सबसों कहत खरारी ॥
शम्भु कृपा अब संशय नाहीं ❀ सुनि सुर अति हर्षे मनमाहीं ॥

दोहा--सत्यवचन सुनि रामके, आनन्दित सुर व्यूह ।
चले कहति जय जयति प्रभु, वर्षें सुमन समूह ॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ❀ खगपति रामकृपा मैं गावा ॥
अब हिय हरषि सुनहु द्विज राई ❀ मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई ॥
याज्ञवल्क्य पद बन्दि सप्रीती ❀ भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिर सुहावा ❀ सुनि मम नाथ परम सुख पावा ॥
अहिरावण वधान्त भगवाना ❀ चरित किये सो करहु बखाना ॥
सुनि मुनि विनय अपय पुलकाई ❀ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन ❀ सहज सुभग सज्जन मन भावन ॥
मानस हरि चरित्र सुठि नीका ❀ सुनत करत जो कोउ मन फीका ॥

दोहा--सोइ जगबंचक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाय ।
भवसागर महँ भ्रमतसो, अमित कल्प चलि जाय ।।

मानस सुन तन मनहिं अघाहीं ❀ तासम धन्य अवर कोउ नाहीं ।।
धन्य धन्य तुम सन कोउ आना ❀ ललितचरित अतिसुनहु सुजाना ।।
राम लषन दल सहित बिराजे ❀ जयति राम कहि कपि गणगाजे ।।
उहाँ दशानन सब सुधि पाई ❀ दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ।।
अहिरावण कर बध सुनि काना ❀ भयउ तेजहत अति दुख माना ।।

नारान्तक की कथा

बचन बज्रसम लागेउ ताहीं ❀ संभ्रम मूर्च्छि परेउ महिमाहीं ।।
मुख सुखान लोचन जल बहई ❀ बचन न आव शीश धुनि रहई ।।

दोहा--मयतनया तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ।
मान न मूरख कालबश, परम क्रोध कहँ पाइ ॥

नारि बचन सुनि तेहि रिसिबाढ़ी ❀ उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी ।।
सिन्धुर नाद नाम बलवाना ❀ बृद्ध ज्ञानमय परम सुजाना ।।
सदा बिभीषण कर सँग ठयऊ ❀ कबहूँ दशमुख सभा न गयऊ ।।
आवा सो भल अवसर पाई ❀ कहेसि नीति रावणहिं बुझाई ।।
ज्ञान कथा दशमुख न सुहानी ❀ तब बहिराइ बात कह आनी ।।
करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ ❀ प्रभु दुहु ताग हृदय पट बुनेऊ ।।
अब यहि कहों सो सहज उपाई ❀ जेहि यहि मूल समूल नसाई ।।

दोहा--यह विचार बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुल राउ ।
धीर धरहु संसय बिगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ।।

अक्षादिकन सुनत बल दूना ❀ कस सुरारि मन मानहु ऊना ।।
सचिव बचन सुनि दशमुख कहई ❀ अब हमरे कुल को भट अहई ।।
अपने मन महँ करहु बिचारा ❀ है नारान्तक तनय तुम्हारा ।।
मूल अभुक्त माहिं भा जोई ❀ दियो बहाइ मरा नहिं सोई ।।
शम्भु प्रसाद ताँहिं कछु भयऊ ❀ पुर विह्वावल नृपती दयऊ ।।
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ ❀ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ।।
दूत पठाइ बुलावहु ताहीं ❀ जीतिहि सो रिपु रणके माहीं ।।

दनुज अर्धीश चतुरचर पठवौ ❀ धरहु धीर चित चिन्ता घटवौ ॥

दोहा--तासु मन्त्र सुनि दसबदन, हृदय प्रमोद अमान ।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समुझायउ सनमान ॥

धूम्रकेतु तुम परम सयाना ❀ लै मम पाती करहु पयाना ॥
बसत जहाँ नारान्तक राजा ❀ तहाँ न तात अवरकर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई ❀ सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसु पाइ चार तहँ गवना ❀ यहसुनि बिहसि कहो अहिदवना ॥
काक नाथ यह गाथ सुहाई ❀ मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि ❀ पुर विह्वल पहुँचा कवनी सिधि ॥
सुमिरि काकपति उर अवधेशा ❀ मन प्रसन्न कर कह काकेशा ॥

दोहा--नख चौगुन बसु ऊन तहँ, सप्त अकास मिलाइ ।
इतने निशिचर एक दिन, भे रावण पुर आइ ॥

पुर महँ उपजे खल इक साथा ❀ तब सुनि हर्षा निशिचर नाथा ॥
निज गुरु बोलि चरण शिरनाई ❀ बूझा मुदित सो कलश धराई ॥
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ ❀ आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं ❀ भये आजु जे तव पुर माहीं ॥
वे सुत सब निज निज पितु घाती ❀ मुख देखत सुन सुर आराती ॥
घर राखे धन सहित विनाशा ❀ होइ अवशि नहिं उबरन आशा ॥
शुक्र बचन सुनि डरे निशाचर ❀ कह करिये अति बाद परस्पर ॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू ❀ सौंपिय सिन्धुहि अवर न काजू ॥

दोहा--सपद करहु सब काज यह. लावहु बाल बटोर ।
राखे होई हानि अति, कह दशबदन बहोर ॥

सेवक दशमुख आयसु पाई ❀ धाये तुरत चरण शिर नाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी ❀ सुनहु सकल पुरनर अरुनारी ॥
आजु अभुक्त मूल भये बालक ❀ डारहु सागर सब कुलघालक ॥
बोरे सबनि बाल इकठाईं ❀ भावी वश मधुमाखी नाईं ॥
पाय अधार वृक्ष बट बोरा ❀ पीवन लगे छीर चहुँ ओरा ॥
पीवत चीर अब्द भर साती ❀ पुष्ट भये खल निशिचर जाती ॥

पुनि सब एकसङ्ग तहँ जाई ❀ सुरसरि सङ्गम भा तेहि ठाई ॥
तहँ शिव मंदिर परम सुहावा ❀ सबनि बिलोकि मुदित शिरनावा ॥
छन्द–शिरनाइ मुदित बिलोकि शिव मन्दिर सुहावन पावनं ।
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनि अहि दावनं ॥
रावण पुरीते दिशाप्राची कोश शत रस चलि गये ।
बैठे जलधि महँ पाइ थल बर शम्भु चरणन चित दिये ॥
दोहा--जानत नहिं उत्पत्ति निज, छन महँ करत बिचार ।
गे तेहि ढिग जाकर बिदित, रबिते छठवीं बार ॥
हरि अरिगुरु निजशिष्य न चीन्हा ❀ करत प्रणाम सु आशिष दीन्हा ॥
कहि निज नाम सबनि समुझावा ❀ कुल गुरु जाना बिनय सुनावा ॥
निज उतपति बूझी शिरनाई ❀ भृगुनंदन तिन्ह सकल सुनाई ॥
सुनत अपन बृत्तान्त लजाने ❀ लखि रुख भृगुनायक सनमाने ॥
करि प्रतोष मन्त्र गुरु दीन्हा ❀ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी ❀ भे बिरंचि पद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन ❀ वर्ष सहस तप किय उरगासन ॥
श्वासधार कृत वर्ष हजारा ❀ रहे ऊर्ध्वमुख बिना अहारा ॥
दोहा--एक पाद पुहुमी दये, अपर अंग अनसाय ।
सबल पुष्ट तनु मन हरष, सपनेहु भूख न प्यास ॥
तप अति उग्र बिचार बिधाता ❀ तिन ढिग गमने मुख मुसकाता ॥
हंसारूढ कमण्डलु हाथे ❀ श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥
आनन चारि नयन बसु नीके ❀ चारिउ भाल भस्म शुभ टीके ॥
उपमा मय प्रभु सब जग अयना ❀ भाष्यो दया सदन बर बयना ॥
माँगहु बर जो सब मन भावा ❀ सुनउ सबनि बिधिपद शिरनावा ॥
नाथ चहत हम यह बरदाना ❀ हमहिं न कोउ जीते मयदाना ॥
एवमस्तु बिधि कहेउ बिचारी ❀ आन पाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी ॥
हरि सुत हैं तुम्हार गुरु भाई ❀ तेहिसन किहेउ न कबहुँ लराई ॥
दोहा--जो तेहिसन करिहौ समर, मारिहौ वचन प्रमान ।
एकहि कहँ बरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥

दियउ नरान्तक कहँ बरदाना ❀ रहे अपर जे धरि उर ध्याना ॥
तिनसन बरं ब्रूहि बिधि कहेऊ ❀ सुनत प्रमोद सबनि उर लहेऊ ॥
सुनि बिधिगिरा सबनि कह स्वामी ❀ देहु एक बर अन्तर्यामी ॥
देवासुर संग्रामहि माहा ❀ जीतहिं हम यह बर सुरनाहा ॥
असकहि रहे दनुज शिर नाई ❀ तिनसन कहेउ बिरंचि बुझाई ॥
तुम अजीत सब मन सब भाँती ❀ बानर भालु त्यागि दुइ जाती ॥
बिधिते लहिबर तिन सुख बाढ़ा ❀ लागे करन बहुरि तप गाढ़ा ॥

दोहा--गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ।
जोरि युगलकर एक पद, निशिदिन आठो याम ॥

बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई ❀ क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई ॥
गुण सहस्र सम्बत सब ऐसे ❀ गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ॥
सबन शीश पुनि अवनी दीन्हा ❀ उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा ॥
जोरे कर निरोध कर श्वासा ❀ जपहिं मन्त्र शंकर बर आसा ॥
हरि इच्छा बल हृदय बिचारी ❀ निरखि चले मुनि जपत पुरारी ॥
अयुत अब्द बीते खगनायक ❀ भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक ॥
चढ़े बरद हिमसुता समेता ❀ आये तिन तट कृपानिकेता ॥

दोहा--बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, माँगहु बर मन भाव ।
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥

मैं तप किहेउँ दरश तव लागी ❀ नाथ दीन जन चित अनुरागी ॥
अब माँगत आवत मोहिं लाजा ❀ ठाढ रहा कहि निशिचर राजा ॥
माँगु सकुच तजिअस हर कहेऊ ❀ नारान्तक तब माँगत भयऊ ॥
मोहिं बिभव अस देहु गोसाँई ❀ भूप प्रजा नहिं परहु लखाई ॥
पुर अनयास बसहिं मम नाथा ❀ यह कहि रहा जोरि युग हाथा ॥
एवमस्तु कहि हरि सुर ईशा ❀ गवने भवन सहित बागीशा ॥
शिव प्रसाद नारान्तक पावा ❀ अन्तरिच्छ पुर मर्पाद बसावा ॥
पुर बिहावल की रुचिराई ❀ कहत कछुक अब तुम सन गाई ॥

दोहा--ऋतु रबि दूने कोटि सो, भवन बसे इकठोर ।
जात रूप मय नग जटित, अति शोभित चहुँओर ॥

योजन ढाई शत चकलाई ❀ चौसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❀ बिस्मय बिश्वकर्म्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे ❀ गढ़ भीतर चौहट निधि पूरे ॥
बणिक पद्म धन तुच्छ बखाना ❀ बन उपवन सरिता सर नाना ॥
बसत प्रजा पुर सघन अपारा ❀ नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा ॥
षोड़श कोश कोट चहुँ ओरा ❀ मणि माणिक लागे नहिं थोरा ॥
हय गज रथ खच्चर समुदाई ❀ कहि न जाइ खगमृग बिपुलाई ॥
कोटि बहत्तर एकै साथा ❀ विद्या पढ़न लगे खग नाथा ॥

दोहा--हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबल पहुँचा आय ।
पुर बिह्वावल निरखि सो, कछुदिन रहा लुभाय ॥

भावी बश निशिचर सँग कीशा ❀ वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा ॥
गुरु इकबार कहेउ रिसियाई ❀ हतिहसि तें आपन गुरु भाई ॥
बिनुअघ सुनि दधिबल गुरुशापा ❀ बिदा माँगि गवनेउ करिदापा ॥
मारग मिले देवऋषि तेही ❀ गहे सुकण्ठ सुवन पग नेही ॥
लखि असीष दै बूझा तेही ❀ दधिबल कवन काज गए जेही ॥
तब नारान्तक पुर प्रभुताई ❀ दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी ❀ रहे ब्रह्मसुत हृदय बिचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना ❀ बार बार सुमिरे भगवाना ॥

दोहा--दधिबल ते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ ।
तनुधरि जेहि हरिभक्ति नहिं, जन्मबादि जग जाइ ॥

यह बिचार भजु रामहिं ताता ❀ उपजेउ सुनत ज्ञान मुनिबाता ॥
ऋषिपद परसि आशिषा पाई ❀ कपि पति सुत गवन हर्षाई ॥
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवाँ ❀ पयनिधि मध्य रुचिरगिरि तहँवाँ ॥
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा ❀ सुभग देखि कपिवर मन भावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई ❀ कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारद ताहि देइ उपदेशा ❀ गये विरंचिहिं धाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत बिद्यापाई ❀ जहाँ तहाँ की विविध लराई ॥
बिन्दु नाम इक निशिचर आहा ❀ सो खल रहा वितल थलमाहा ॥

सोरठा--अति रणधोर जुझार, चढ़े शक्रपर बलि विपुल ।
कीन्हेउ समर अपार, शब्द एक श्रुतिसन्त कह ।।

सप्तकोटि निशिचर सँग ताके ❀ असित मेरु समखल भट बाँके ।।
सुनासीर काँपेउ इक बारा ❀ सब कहँ समर मध्य संहारा ।।
भाजि विन्दु केवल गृह गयऊ ❀ तासुनारि निशिचर सुख दयऊ ।।
सब निशि भोग करा खल पापी ❀ उपजे बहु बालक पर तापी ।।
सप्तकोटि सुत नाना नामा ❀ उदर वक्रसब अति बलधामा ।।
कोटि बहत्तर तनया जाके ❀ लाजहिं मृगलोचन लखि ताके ।।
तिन महँ विन्दुमती इक सुन्दरि ❀ नभचारिनि रतिरूप निरंतरि ।।
निरखि विन्दु निज मन अनुमाना ❀ नहिं नारान्तक सम कोउ आना ।।

दोहा--यह विचारि चित विन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ ।
विन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ।।

सकल सुता इक संग बिवाही ❀ यथायोग्य जेहि कहँ जसचाही ।।
नारान्तक सब सेन समेता ❀ करिविवाह फिरि गयउ निकेता ।।
पुर विहग्राचल कीन्ह बसेरा ❀ प्रजा सहित सुख करत घनेरा ।।
जो तिय चहिय विबुध गृह भाई ❀ सो भावी वश निशिचर पाई ।।
नारि पतिव्रता जेहि घर माहीं ❀ तेहि प्रताप निज अमर डराहीं ।।
विन्दुमती विया सम ताता ❀ बुधजन सभा चरित विख्याता ।।
नारान्तक उतपति मैं गावा ❀ सुन खगेश पुनि चरित सुहावा ।।
पुनि पुनि हरिहरपद शिर नाई ❀ गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई ।।

दोहा--चारन दशमुख को तरत, भगचलि पहुँचो जाय ।
ग्रामान्तर जोजन युगल, ठाढ़ भयउ हरषाय ।।

तेहि मारुत दिशि कानन भारी ❀ पर्ण लेत देखेउ तहँ बारी ।।
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा ❀ बूझेसि ताहि धीर धरि गाढ़ा ।।
कवन रीति यहि पुर महँ भाई ❀ तरुपर चढ़त भूपसुत आई ।।
चार बचन सुनि सो मुसुकाना ❀ कवन नगर तुम बसत अयाना ।।
नारान्तक नृप कै यह बारी ❀ तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ।।
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❀ कछुडरि पुनि निज मारग लीन्हा ।।

लिये कनक घट सुखमा पूरी ❀ वारि लेन आई तिय रूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❀ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥

दोहा--तुम्हरे पुर कहँ चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ।
आइउ तुम जल भरन कहँ, बोलेउ त्याग दराव ॥

दूत बचन सुनि निशिचर चेरी ❀ बोली हँसिकरि एकहि बेरी ॥
नारान्तक दासिन की दासी ❀ हम ताकी दासी बिश्वासी ॥
सदा भरें यहि सागर पानी ❀ यह आवहिं केहि कारण रानी ॥
कहिहउ और काहु असबाता ❀ पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥
असकहि गवनी लै जल नारी ❀ तिन सँग धूम्रकेतु पग धारी ॥
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी ❀ निरखे बिपुल कूप सर बारी ॥
नाना गजरथ खच्चर घोरा ❀ फिरत बिलोकत पुर चहुँ ओरा ॥
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा ❀ तहाँ न चर पावहिं पैसारा ॥
छन्द—पावत नहीं पैसार चरगति द्वार लगि फिरि आयऊ ।
यहि भाँति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत डाढ़ चौहट मध्य सो जब रहिगयो ।
निशिचर निकंदन होन लगि बिधिताहि इक अवसर दयो ॥

सोरठा--गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ।
लीन्ह धार तेहि सार, गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर ॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई ❀ कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनिरस गुणवसु एका ❀ अंकराति लिखि गुणा बिवेका ॥
बन्दीजन नट कौतुक करहीं ❀ प्रतिदिन कवि कोविद उच्चरहीं ॥
रावणदूत सभा सो देखा ❀ मन महँ चकृत भयो बिशेखा ॥
तब चारण मन अस अनुमाना ❀ कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण बसन सुआसन जोहा ❀ देखि सुखद चारण मन मोहा ॥
याम दिवस गत अवसर पावा ❀ नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई ❀ कुशल तासु बूझा हरषाई ॥

दोहा--नारान्तक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ।
समाचार गढ़ लंककर, बरणेउ दूत सचेतु ॥

चर भाषित नारान्तक सुनेऊ ❀ क्षणकमाहिंनिज कारण गुनेऊ ॥
पुनि पत्री निशिचर पति बाँची ❀ मानी चार बात सब साँची ॥
उठेउ सभाते हृदय रिसाई ❀ गा निज भवन शोच सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई ❀ पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कहँ तेइ नारी ❀ तुम जनि करहु रामसन रारी ॥
गहहु चरण पिय अकसर जाई ❀ रमन सफल करि बिनय सुनाई ॥
माँगि भक्तिवर प्रेम दृढ़ाई ❀ निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
नारि बचन तेहि मनहिं न भावा ❀ तब उठि कोटद्वार खल आवा ॥

दोहा--कहत बजाव निसान घन, सजहु सेन चतुरंग ।
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितु चारन के संग ॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा ❀ लगे निशाचर सजन समाजा ॥
अमित बाजि गज उष्ट्र नाना ❀ रथ खच्चर खेचर बहु याना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी ❀ निशिचर अनी न जाइ बखानी ॥
जय सब संयुत साज सजाई ❀ बिबिध निसान हने हर्षाई ॥
कन्त जात निश्चय जिय जानी ❀ बिन्दुमती निज चित अनुमानी ॥
राम बिरोध न यहि कल्याना ❀ महूँ संग अब करहुँ पयाना ॥
भूषन बसन सुअंग बनाई ❀ कन्त चरण गहि बिनय सुनाई ॥
सासु ससुर दर्शन हित नाथा ❀ हमहूँ चलब प्राणपति साथा ॥

दोहा--दशमुख सुतसुनितिय बचन, हृदयपरम सुखमानि ।
कहेउ चलहु सबसखिन सह, प्रमुदित छाड़ि गलानि ॥

सुनि पतिवचन नारि हर्षानी ❀ चली संग लै सखी सयानी ॥
लै दल नारान्तक पग धारा ❀ अमित सेनको कहि सकपारा ॥
बुधजन कहत सुनहु खग राजा ❀ अयुत सतावन बाजत बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँग लीन्हें ❀ अति आतुर गमनारिस कीन्हें ॥
चलत शकुन मग ताहि न होई ❀ गनइ न मृत्यु बिबश शठ सोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला ❀ जिय महँ संशय करत बिशाला ॥
कालकूर्म अहिपति अति डरहीं ❀ पुनिपुनि रामचरण चित धरहीं ॥
समुझि राम बल संशय त्यागी ❀ सुर दिगेश प्रभुपद अनुरागी ॥

दोहा--नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ।
दिगयोजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीश सज्ञान ॥

इहाँ कृपालु रमेश खरारी ❀ असित जलदसम सेन निहारी ॥
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू ❀ सचिव बोलि कह रघुकुलकेतू ॥
सखा बिलोकहु दक्षिण ओरा ❀ गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
उमा राम सब अन्तरयामी ❀ चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
राम बचन सुनि दशमुख भ्राता ❀ कह हँसि गहि प्रभुपद जलजाता ॥
देव देव नहिं दल जल बाहा ❀ अहहि नरान्तक निशिचर नाहा ॥
बिहवावलपुर बसत गुसाईं ❀ पठवा तेहि दशकन्ध बुलाईं ॥
आवत धूम्रकेतु चर संगा ❀ करत कुलाहल नाद उतंगा ॥

दोहा--तेहि सँग गुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान ।
सेन संग चतुरंग खल, डोलत बिबिध दिशान ॥

यह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना ❀ बिहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना ॥
पाइ राम रुख पवनकुमारा ❀ उठ हरषि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषण प्रभु पद शिरनाईं ❀ धाये कहि जय जय रघुराईं ॥
बात जात निशिचर समुदाईं ❀ देखि सपदि ढिग पहुँचे जाईं ॥
कटकटाइ गर्जेउ अति भारी ❀ देखेउ इमि आवत बनचारी ॥
बूझेउ दूतहिं निशिचर त्राता ❀ यह आवत धावत को भ्राता ॥
स्वर्ण शैल बिकराल शरीरा ❀ गर्जत प्रलय जलद सम बीरा ॥
तब नारान्तक सन कह दूता ❀ यहै पवन सुत बली अकूता ॥

दोहा--सिंधु लाँघि लंका दहेसि, पुनि हति अक्षयकुमार ।
कालनेमि कह मारि मग, लावा मेरु उपार ॥

पुनि अहिरावण सह परिवारा ❀ पैठि पताल सदन संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई ❀ आवत अब तव ढिग सोइ धाई ॥
यहि कर भुज बल अहै अपारा ❀ सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना ❀ तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपि डारा ❀ पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे ❀ बज्र रसातल गे गिरि जैसे ॥

पवन पूत बल लूम पसारा ❀ कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्ण सम भयऊ ❀ विधिवश तेहिकर प्राण न गयऊ ॥

दोहा--एक दण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ।
पुनि शठ उठा सँभार तनु, धायल धनु धरि हाथ॥

छाँड़ेसि अगणित शायक कोपी ❀ क्षणइक कीश कटक गा तोपी ॥
राम प्रताप प्रभंजन जाया ❀ करगहि अरिशर तोरि बहाया ॥
देखि पवनसुत की प्रभुताई ❀ वर्षत सुमन विबुध झरि लाई ॥
जय जय पिंगलाक्ष सुर भाषा ❀ सुनि दशकन्ध तनय मन माषा ॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई ❀ कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कह खल कीश जो कछु बल धरहू ❀ मोसन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहिं विबुध तोरि भुज जोरा ❀ निज उर सहु इक मुष्टिक मोरा ॥
लागत ठाढ रहे जो वानर ❀ तौ जानहुँ तव बल भुज आगर ॥

सोरठा–हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोकि उर।
अति सकोप मुसकात, क्षणक ठाढ़ सन्मुख रहेउ ॥

तब तेहि कपि कहँ मुष्टिक मारा ❀ भयउ तड़ित सम शब्द अपारा ॥
टरा न तहँ ते पग हनुमाना ❀ हृदय न निशिचर नेकु लजाना ॥
दुइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा ❀ तब मारुतसुत कोप बढ़ावा ॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा ❀ डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा ॥
विकल ताहि करि कपि अति गाजे ❀ भे व्याकुल निशिचर बहु भाजे ॥
कोटिन निशिचर कपिकर गहहीं ❀ रामदूत कर कौतुक अहहीं ॥
मर्दि मर्दि बहु बारिधि डारे ❀ देखि देव जय जयति पुकारे ॥
एक दंड गत निशिचर जागा ❀ बहु बिधि समर करन सो लागा ॥

छन्द–लागेउ करन पुनि समर बहु विधि निज सुभट बहु फेरि कै।
खल कोटि कोटि प्रचण्ड नायक कपिहि रणमहँ घेरि कै॥
रणरंग रंजति वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही।
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछारत उर विदारत तर्जही॥

दोहा-सघन वाहिनी जलजवन, जिमि करि कृत उतपात।
रिपु न हनत तिमि वायुसुत, बिनुश्रम प्रमुदित गात॥

करत समर आयउ तेहि ठामा ❀ जहँ नित होत रहा संग्रामा ॥
लरत अकेल तहाँ हनुमाना ❀ धायउ बालितनय बलवाना ॥
ता पीछे कपि चमू अपारा ❀ चले कहत जय कृपा अगारा ॥
लीन्हें गिरिवर तरु पापाना ❀ जहँ तहँ करन लगे मैदाना ॥
अंगद आइ पवनसुत पाहीं ❀ कहि जय रघुवर सन द्विज नाहीं ॥
दोऊ भट इक संग करि हूहा ❀ हतन लगे अरि सेन समूहा ॥
देखत भालु कीश कृत भारी ❀ भागि चले निशिचर भय भारी ॥
देखि अनी निज त्रसित बहूता ❀ भा अति कुपित दशानन पूता ॥

छन्द—अति कुपित भा दशमुख सुवन निज भटन शपथ दिवाइके ।
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहुँ पराइके ॥
विधि दीन विविध अहार कपिदल खात कस न अघाइके ।
बिनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइके ॥

दोहा-सुनि नारान्तक सरुप वच, रजनीचर समुदाय ।
लागे लरन सकोप सब, माया कपट कुभाय ॥

माया तिमिर पसार अपारा ❀ अस्त्र शस्त्र दुहुभाँति प्रहारा ॥
शक्ति शूलवर विशिख कराला ❀ डारहिं रज तरु शैल विशाला ॥
गिरत ऋक्ष कपि लागत शायक ❀ उठहिं बहुरि कहि जय रघुनायक ॥
निज दल विकल बिलोकि खरारी ❀ सत्य सिन्धु इक शर संचारी ॥
रिपुशर काटि तिमिर कर दूरी ❀ प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंग महँ पुनि सो तीरा ❀ प्रविसेउ आइ सुनहु मुनि धीरा ॥
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा ❀ गहि गिरि तरु कहि जय जगदीशा ॥
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं ❀ दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं ॥

दोहा-मरे तमोचर कोटिपट, जानि निशा परिवेश ।
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँ अवधेश ॥

अंगद हनुमदादि कपि भालू ❀ आये जहँ रघुबीर कृपालू ॥
प्रभुहिं बिलोकि चरण शिरधरे ❀ भे श्रम रहित सकल सुख भरे ॥
अति आदर प्रभु किय सन्माना ❀ सब कहँ बैठन कहँ भगवाना ॥

पुनि रजाइ लै थलहिं सिधाये ❀ छबि वारिधि प्रभुपद शिरनाये ॥
अंगद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुषमा गुणरासी ॥
दोउ भट कर परसत प्रभु पाऊ ❀ देखि सुरन मनभा अति चाऊ ॥
हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा ❀ पदगहि नित्त रहत नर भूपा ॥
हरि न सिहाहिं सुमन झरलाये ❀ निज २ आश्रम अमर सिधाये ॥

दोहा--बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्री भगवान ।
तुलसिदास ते धन्य नर, जे यह ध्यान भुलान ॥

उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहाँ दशकन्ध निकेता ॥
सुतहिं सुरारि मिला पुलकाई ❀ कुशल बूझि बैठेउ हर्षाई ॥
देखि नरान्तक कै समुदाई ❀ दशमुख शठ सब शोच दुराई ॥
जेहिविधि हरि लावा जगमाता ❀ ताहि आदि कृत कृत बिख्याता ॥
कुम्भकर्ण घननाद निपाता ❀ कहि बिलखा अहिरावण घाता ॥
पितु मनमलिन नरान्तक देखा ❀ बोला खल उर गर्व विशेषा ॥
तजहु सकल संशय बिबुधारी ❀ करिहहुँ प्रात समर अति भारी ॥
चमूकीश बिनु क्षिति करि ताता ❀ धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥

छन्द--धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं ।
धरि धरि बिपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं ॥
भुजबल कहहुँ निज नहिं बहुत करि रिपुन प्रगट दिखाइहौं ।
बिनु श्रमहिं तातन को बयरलै तव चरण शिर नाइहौं ॥

दोहा--सुनत बीस भुज सुत बचन, बार बार उरलाइ ।
लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ ॥

बिन्दुमती आदिक रनिवासू ❀ सब चलि गईं मँदोदरि पासू ॥
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी ❀ मयतनया करि आदर भारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरणी ❀ प्रभुयश ताहि सुनायउ बरणी ॥
देइ पतोहुन बास सुहावन ❀ आपु लगी सुमिरन जगपावन ॥
शयन करहु कह सुतहिं निशाचर ❀ उठा आपु मतिमन्द अघाकर ॥
गा तेहि भवन कुटिल दशग्रीवा ❀ जहँ मयतनया सद्गुण सीवा ॥

आयउ पिय मन्दोदरि जानी ❀ पाइ सुअवसर गहि पग पानी ॥
पिय सुनाय अति कोमल बयना ❀ लगी कहन जलभरि युग नयना ॥

दोहा--नाथ निगम आगम बिबुध, कहत प्रगट यह बात ।
बुधजन सो जो आधहु, राखैं सर्वस जात ॥

सो बिचारि प्रभु परम सुजाना ❀ मोर वचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाँई ❀ अनुज भाँति मिलिये प्रभु जाई ॥
प्रथमहिं सीतहिं देहु पठाई ❀ पुनि तुम गवनेहु पुत्र लखाई ॥
प्रभु पद गहि माँगहु वर एहू ❀ पद पंकज रति विमल सनेहू ॥
प्रिया वचन तेहि बिष समलागा ❀ सो गृह तजिगा अनत अभागा ॥
निज नारी कहि कटु अभिमानी ❀ कीन्ह शयन निशि गइ बड़ जानी ॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता ❀ जागे रघुवर त्रय जग त्राता ॥
कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना ❀ रावण सुत लखि निपट रिसाना ॥

दोहा--ऋक्ष कीश जगदीश पद, शीश नाइ सुख पाइ ।
धरि गिरि तरु धावत भयउ, कहि जय २ रघुराइ ॥

साजि विपुल दल हनत निशाना ❀ गढ़ते चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई ❀ विशिष बरषि कपिदल बिचलाई ॥
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे ❀ शलभ समूह शैल ते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे ❀ कटकटाइ अति विक्रम गाजे ॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भवाई ❀ रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर फल बेलू ❀ केतिन देत विदिशि दिशि मेलू ॥
इक दिशि इमि हरिकृत संग्रामा ❀ दिग दूजी अंगद बलधामा ॥

दोहा--निशिचर सेना उदधिसम, मन्दर इव दोउ कीश ।
मथत देखि जय रतन लगि, हँसे विबुध सुर ईश ॥

छंद--इमिनिरखि पराक्रम करतकीश ❀ भा क्रोध परम रजनीचरीश ॥
करि प्रलय कन्द ते घोर शोर ❀ धरे कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इक बार मार कर शर समूह ❀ किय विकल अस्त्र हनि कीशजूह ॥
कोउ टेरत कपिपति चितउ चोट ❀ कोउ सुरत करत निज धाम ओट ॥
बहु चले कन्दरा शैल ताकि ❀ कोउ दबकत इत उतपात झाँकि ॥

कोउ देत दुहाई लषण राम ❀ कोउ कहत विधाता भयो वाम ॥
यहि बीच नरान्तक कर प्रधान ❀ तेहि धाय गहेउ युवराज पान ॥
बहु भट लपटाने अंग अंग ❀ सब संग उठेउ अंगद उतंग ॥
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत ❀ रवि मण्डल पहुँचेउ बालिपूत ॥
अँगारे जारे तपनि आँच ❀ पुनि आयउ जहँ संग्राम राँच ॥
यह निरखि अपर यूथप पिशाच ❀ तुर आइ गयउ सेना समाच ॥
ले विषम शूल मारेसि प्रचंड ❀ उरलाग आन अति कठिन दंड ॥
महि परेउ तनय तारा तुरन्त ❀ लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
सोइ सूल खैंचि मारेउ प्रचंड ❀ है गिरेउ यूथपति सहस खंड ॥
सब चरित सुनेउ रविकुल दिनेश ❀ कह जाहु बेगि अहिराज शेश ॥
चले नाइ माथ शंकर मनाइ ❀ धनु बाँधि बाँधि विकराल लाइ ॥
उर अंगद कर धरि सुमिरि राम ❀ श्रम विगत भयउ बल अतुल धाम ॥

दोहा--विगत भई मूर्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ।
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दलसाज ॥

सुनत टँकोर शरासन निशिचर ❀ बधिर भये नहिं सुनत शब्द पर ॥
बर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा ❀ काटे पाणि पायँ बहु माथा ॥
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे ❀ धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रण धरणी ❀ यथा अकाल छुधारत करणी ॥
इत कपि भालु विजय अभिलाखे ❀ उतहि निशाचर जयहित राखे ॥
मारुतसुत अंगद बलबीरा ❀ समर बाँकुरे अति रणधीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ ❀ भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ❀ प्रमुदित भट कायर हिय डरहीं ॥

छन्द–कायर डरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं ।
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि फिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक बिलोकत बिबुधगण विस्मय हरप उर आनहीं ।
रघुबीर सेनिपर सुमन झरि लाय बिनती ठानहीं ॥

दोहा--अति अद्भुत करणी करहि, ऋक्षकीश बलभूरि ।
करपद बिनकर रजनिचर, तिन मुख डारहि धूरि ॥

बहुतनिके शिर तोरि चलावहिं ❀ निज भुजबल रावणहिं जनावहिं ॥
गये याम युग दिवस भवानी ❀ नारान्तक अघ सेन सिरानी ॥
मरे निशाचर अमित निहारी ❀ रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई ❀ भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
क्षणमँह करि मूर्छित कपिसेना ❀ पुनि शठगा जहँ राजिवनैना ॥
गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई ❀ कहन लगा कटु वचन रिसाई ॥
होसि सजग निशिचर कुलद्रोही ❀ बन्धु वैर लगि मारहुँ तोही ॥
प्रभु कहँ कटुक कहत सुनि काना ❀ कोपेउ जाम्बवन्त बलवाना ॥

दोहा--शूल एक तेहि छाँड़ेऊ, सो कर गहि ऋक्षेश ।
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥

लागत शूल सो मूर्छित भयऊ ❀ जाम्बवन्त तब कर गहि लयऊ ॥
बार अमित महि माँह पछारा ❀ बाँधि गाड़ि बारू महँ डारा ॥
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा ❀ लगे करन रण निज निज इच्छा ॥
जाम्बवन्त यह हृदय विचारा ❀ मरे नहीं यह खल मम मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टि चारि उरमाहिं प्रचारी ॥
गहि पद संचारा गढ़ माहा ❀ सपदि परा जहँ निशिचरनाहा ॥
दशोवदन हाहा करि धावा ❀ नारान्तकहिं हृदय तब लावा ॥
निरखि निशाचर गण समुदाई ❀ गढ़ कहँ गे सब सम्भ्रम धाई ॥

दोहा--कपिगण समय प्रदोष लखि, रामचरण धरि माथ ।
ठाढ़ भये सब तन चिते, दयादृष्टि रघुनाथ ॥

बिनुश्रम कीन्ह सबनि जगदीशा ❀ गये सुधाम भालु अरु कीशा ॥
रुचिरासन आसीन रमेशा ❀ ढिग वीरासन उरग नरेशा ॥
अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा ❀ लाग पलोटन सुनहु अपरणा ॥
पुण्य पुंज अरु भाग्य निधाना ❀ जिनपर निन प्रसन्न भगवाना ॥
वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई ❀ बिलखहिं तासु नारि समुदाई ॥
होत प्रभात नरान्तक जागा ❀ पितु बिलोकि लज्जा रिस पागा ॥
रथ चढ़ि तुरत इकाको धावा ❀ नभ पथ समर पुहुमि महँ आवा ॥
कीश कटक यह मर्म न जाना ❀ होई लोप कीन्हेसि झरि बाना ॥

दोहा--धावहि ब्योमहिं भालुकपि, ताहि न हेरैं नैन।
घायल ह्वै ह्वै गिरहिं महिं, भाषहिं आरत बैन॥

बाण एक शत तड़ित समाना ❀ छाँड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना॥
लागत विपुल कीश मुरझाने ❀ बहुतक कायर देखि पराने॥
भागि सेतु ढिग एक अयाना ❀ टेरे फिरहिं न सुनु हरियाना॥
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा ❀ कुमुद मयन्द द्विविद बल सीवा॥
ये सब बीर हाँक दै धावहिं ❀ नभ पथ ताहि न खोजत पावहिं॥
तव सब बीर एक मत ठाना ❀ लै गिरि तरु किये लंक पयाना॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा ❀ बैठे कपि पसारि लंगूरा॥
करते डारि देहिं पाषाना ❀ बहुत दनुज भे चूर्ण समाना॥

छन्द—भे चूर्ण निशिचर यूथ ❀ गे निशिचरी भय गूथ॥
मुख बीन आरत दीन्ह ❀ मइँ भवन रावण लीन्ह॥
सुनि बोलि भट दशभाल ❀ कह खाहु कीश कराल॥
करि यत्न भागहिं कीश ❀ अस कहेउ वच दशशीश॥
मम लहहु आयसु छोर ❀ सोइ जानिहौं रिपु मोर॥
सो शूर मोकहँ प्यार ❀ जो खाय मर्कट धार॥

दोहा—एतु एतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर।
रावण पावन राखि शिर, धाये करि रव घोर॥

देखि लँगूर सकल हरषाने ❀ मधुमाखी सम सब लपटाने॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा ❀ डारे सबनि पटकि कर दापा॥
काचे घट सम दनुज बिदारी ❀ जयति राम जय लषण खरारी॥
सुभट लुहनि पुनि फेरि लँगूरा ❀ भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा॥
अति विशाल गहि कञ्चन खम्भा ❀ जिमि प्रयास बिनु करु आरम्भा॥
लै ढाहत अपक्व घट जूहा ❀ कपि तिमि तोरत दनुज समूहा॥
पुनि विचारि करि हरि भट धाये ❀ निशिचर निकर मध्य चलि आये॥
करि कोटिन बिनु नासा काना ❀ कर पद हीन कीन्ह रिपु नाना॥

छन्द—रिपु कीन्ह कर पद हीन अगणित दीन बचन पुकारहीं।
गढ़ते निकर निशिचर अखिल खल बिपिन बाट सिधारहीं॥

पीपर परण सम धरणि लंका कम्प षट कीशन करा।
तोरे कपाट निपाटि अरि तिय केश खैंचत गहि करा॥

दोहा--भयहु कुलाहल लंक अति, नारान्तक सुनि कान।
नभते स्यन्दन सहित शठ, प्रकटि परम रिसियान॥

निरखि दशा निज नारिन केरी ❀ कहन लाग कटु गिरा घनेरी॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई ❀ लरत तियन सँग लाज न आई॥
अबलन पै बल भट न कराहीं ❀ छाड़हु तियन लरहु मम पाहीं॥
सुनि मर्कटनि भयउ सुख भारी ❀ तजी निशाचरि दीन पुकारी॥
भाजि भवन भययुत गहि नारी ❀ लीन्ह कपिन कर शिला उपारी॥
शिल प्रहार हय स्यन्दन भंजा ❀ आयुध तोरि सारथी गंजा॥
धरि पछारि रावण दृग देखा ❀ कौतुक कीशनि कीन्ह बिशेखा॥
लागे पद गहि खलन फिरावन ❀ नाचहिं गाइ राम यश पावन॥

दोहा–तोरत तिन तनु पटकि महि, कहत जयति रघुबीर।
करत युद्धगत याम युग, कीश छहौ रणधीर॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❀ बन्दे चरण जाइ अवधेशा॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी ❀ पदधरि शिर सुख लहेउ बिशेखी॥
राम सबनि सादर सनमाना ❀ को दयालु रघुबीर समाना॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना ❀ आयसु पाइ भये श्रम हीना॥
भये बिगत श्रम बानर भालू ❀ अनुज सहित मन मुदित कृपालू॥
सुनहु उमा तानिशि रघुनायक ❀ गावत जनगुण सब गुणदायक॥
याम तीनि यामिनि गत जबहीं ❀ उत नारान्तक जागेउ तबहीं॥
शोच बिबश मींजत दोउ हाथा ❀ लज्जित हृदय निशाचर नाथा॥

छन्द–साजिकै रथै सँभारि बाजि साजि रुष्ट पुष्ट।
शंक छाड़ि अस्त्र माँड़ि गाढ़ बीर संग दुष्ट॥
भेरि दुन्दुभी निशान गान काढ़ खेत कर्त।
धीर बीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त॥
जीव आश त्रास नास बाजि मोह छण्ड छण्ड।
बंक शूर शंक दूर बीरता सपूर चण्ड॥

बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ।
धूरि पूरि मेघ ओघ शोध ना परौ अपान ॥
कूदि कूदि व्योम पन्थ जाइ आइ जाइ भूमि ।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढ़ि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥

दोहा—प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनी तमीचर चण्ड ।
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरबण्ड ॥

छन्द—निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैल मे ।
बजाइ कटकटाइ हूह एक बार कै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ।
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड मुण्ड भंगहू ॥
रदी हरीं मृगामती सवार उष्ट्र मण्डहू ।
मनो विचित्र बाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥
हलै धरा चलै बिचारि भार धारिको सकै ।
सुनै पुकार जयति राम शत्रु से नहीं सकै ॥
लँगूर शूल से अकाश भीत उच्च औचट्यो ।
गिरे पयोद पौन ते झपेट भेट ते फट्यो ॥

सोरठा--शब्द करत अतिघोर, इमि पहुँच्यो दल भालुकपि ।
आयुध झरि अति जोर, परे लागि घन प्रलय सम ॥

सजग होन कपि भालु न पाये ❁ अतिशय निकट तमीचर आये ॥
असित निशाचर अति अँधियारी ❁ तापर करैं शत्रु कै मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे ❁ जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सन्मुख कोउ न करत लराई ❁ कपिन मारि रण भूमि सुवाई ॥
गे अनेक भजि सिन्धु समीपा ❁ सेन बिकल लखि रघुकुलदीपा ॥
सजि शारंग तजा इक बाना ❁ भा प्रकाश दिग तरणि समाना ॥
लखि तम विगत भालु कपि हरषे ❁ कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥
भिरे एक सन एक प्रचारी ❁ लागे करन कठिन हठ मारी ॥

दोहा—शीश शिला तरु करन धरि, काँखन भरि २ धूरि ।
गर्जे भालु बलीबदन, धाय धाय नभ दूरि ॥

डारहिं गिरि तरु निशिचर शीशा ❀ दधि घटसम फोरहिं भट कीशा ॥
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई ❀ काटहिं कान दृगनि रजनाई ॥
तोरहिं शूल चाप नाराचा ❀ अरि दल अस्त्र न एकौ बाँचा ॥
शस्त्र हीन रिपु सेन पराई ❀ देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवनि अति लूम लफाई ❀ अनि उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे ❀ पक्षहीन नभ ते खग जैसे ॥
गिरतकीश गहिचरण फिरावहिं ❀ पटकि भूमि गाड़हिं बिहँसावहिं ॥
तुम्बरिसम अगणित भुज तोरत ❀ अगणित रुण्ड सिंधु महँ बोरत ॥

दोहा–कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात ।
रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात ॥

प्रभु तुणीर महँ हरिशर जबहीं ❀ प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं ॥
देखि कटक निज परम बिहाला ❀ नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये संग बीरा ❀ वर्षत शक्ति उपलगण तीरा ॥
शर अस्तम्भन विपुल पवारे ❀ भये अचल कपि टरहिं न टारे ॥
लै लै पाश निशाचर धाई ❀ बाँधत जिमि चुंगुलि शुकपाई ॥
व्याध पींजरा सम बहु जाना ❀ भरे जान प्रति अयुत प्रमाना ॥
जो कपि लखैं बिपुल बल बंका ❀ ते मुर्छित फेंकैं गढ़ लंका ॥
रावण देखि तनय की करणी ❀ बन्दी जन जिमि भुजबल बरणी ॥

दोहा–हरिइच्छा जानै न सक, सुतहिं सराहत मूढ़ ।
कालबिवश मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधि मूढ़ ॥

अंगद हनूमान जब जागे ❀ नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षणइक कीश न पायउ लरई ❀ पुनि शर हति मूर्छा बश करई ॥
अंमा युगल तेहिकर बरदाना ❀ राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
रिपुहिं खिलावत रघुकुलकेतू ❀ पालक बुधि बाणी श्रुति सेतू ॥
सो युग याम गये जब बीती ❀ तब रघुबीर सजी जय रीती ॥
हाँक देइ कपि भालु जगाये ❀ भये विगत मूर्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे ❀ राम लषण चरणन अनुरागे ॥
प्रभु पद शीश रहे धरि कीशा ❀ तब हँसि बोले श्री जगदीशा ॥

सोरठा-विधि वाचालगि आज, तात तुमहिं मूर्छा भई ।
पुनि कहि प्रभु रघुराज, अवश्रम स्वानेहु अनत नहिं ॥

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना ❁ जितिहैं जगत मनुज रणनाना ॥
अमवर जवहिं रमापति भाखा ❁ सुनत गिरा हर्ष मृग शाखा ॥
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा ❁ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा ॥
तात तुरत तुम उभय सिधावहु ❁ लंक गये कपि तिन्हैं छुटावहु ॥
सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला ❁ सुमिरि कोशलाधीश कृपाला ॥
सपदि कीश गढ़पर चढ़ि गयऊ ❁ देखि लंक महँ खरभर भयऊ ॥
सकल कपिन के मुर्छा बीती ❁ तोरि पाश भजि राम सप्रीती ॥
वायुसून युवराज निहारी ❁ हर्ष कहि जय जयति खरारी ॥

दोहा--मेष बरूथहिं पाइ जिमि, वृकगण करहिं संहार ।
तिमिमर्दहिं दनुजन सुभट, कीश भालु बरियार ॥

याम एक बासर अवशेखा ❁ कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा ❁ देखिय पद पाथोज अनूपा ॥
अंगद वचन पवनसुत भाये ❁ सपदि सहित दल प्रभुपहँ आये ॥
निशिचर कोटि नरान्तक संगा ❁ करत रहे बहु बिधि रणरंगा ॥
माया करि निज गात बचावहिं ❁ जहँ तहँ खल रावण यश गावहिं ॥
अदितिनंद लखि तिनकर माया ❁ सभय भये जाना रघुराया ॥
दीन नाथ अनुजहिं अनुशासन ❁ उठे नमित गहि बिशिख शरासन ॥
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षण एका ❁ तैं कीन्हें रण खेल अनेका ॥

छन्द-तैं कीन्ह खेल अनेक विधि अब तिष्ठ खल रण भूथला ।
इमि कहि अहीश चढ़ाइ धनुशर करन निशिचर दलमला ॥
निज अनी निरखि निदान हरिअरि सुवन धावा रिसभरा ।
डारत अनेक नराच प्रभुपर शिला तरुवर भूधरा ॥

छन्द-रघुवीर अनुज प्रवीण खलबल दलन श्रुति यश गावहिं ।
तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहि बाण लषण चलावहीं ॥
रिपुशस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं ।
सुरगण प्रफुल्लित सुमन झरि करि जयति लषण पुकारहीं ॥

दोहा—मायापति के अनुज सन, माया करत अयान ।
लगत न एको जानिजिय, तब खल निकट तुलान ॥

हना लषण उर पवि सम सायक ❀ लगत गिरे रण महि अहिनायक ॥
पुनि खल दल भा प्रबल अपारा ❀ भक्षण लाग भालु कपिधारा ॥
चले पराय कीश भय भीता ❀ अब न बचब करि काल प्रतीता ॥
निशिचर धारि भालु कपि वेषा ❀ लागे खान कपिन अस देखा ॥
कपि डर कीश भालु डर ऋच्छा ❀ आपु आपु भइ मिलन अनिच्छा ॥
कोउ न काहु निकट नियराई ❀ जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई ॥
पुनि शठ साधि बिभीषण रूपा ❀ गहि अंगद हनुमत कपि भूपा ॥
काहु न यह माया कछु जानी ❀ कपट मिलाप बिभीषण ठानी ॥

दोहा—तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश ।
अहिरावण छल पवनसुत, समुझत उड़ा अकाश ॥

गर्जेउ जाय भयंकर भारी ❀ फटेउ हृदय सुनि निशिचर झारी ॥
माया हर शर लषण पँवारा ❀ उघरे कपट कपाट अपारा ॥
नारान्तक कै माया बीती ❀ गयउ यज्ञशाला अति प्रीती ॥
खोजिसि सब सामग्री ताकी ❀ कीन्ह अरंभ विजय निज ताकी ॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना ❀ पशु समूह बलि कारण आना ॥
भई निशामुख श्रमवश सैना ❀ फिरे सुमिरि सब राजिवनैना ॥
तुरत अहीश राम पहँ आये ❀ सहित अनी प्रभुपद शिरनाये ॥
कृपा अयन निरखे मृगशाखा ❀ प्रभु श्रमछीन दीन अभिलाषा ॥

दोहा—टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ ।
पाय सुआयसु भालुकपि, चले सुमिरि श्रीनाथ ॥

तब रघुराज अनुज उर लावा ❀ निज आसन समीप बैठावा ॥
मघवासुत सुत अरु हनुमाना ❀ इन सम भाग्यवंत नहिं आना ॥
कमलाम्बुज पद गहि निज पानी ❀ परसे सबनि सनेह भवानी ॥
जाम्बवंत लंकेश हरीशा ❀ प्रभु समीप सब मुदित मुनीशा ॥
अनुज सखा नारान्तक करणी ❀ युद्ध प्रबलता बहुबिधि बरणी ॥
शिव प्रताप तेहि अमित प्रतापा ❀ मरण न दीन्हे बहु सन्तापा ॥

सुने वचन रघुपति मुसुकाने ❀ अति सनेह हर चरित बखाने ॥
सुनहु सकल हम शम्भु न आनी ❀ जिनहिं भेद ते बश अज्ञानी ॥

दोहा--जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानहु मम प्रीय ।
शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिंते शंभु अतीय ॥

चारि पदारथ करतल ताके ❀ बसहिं महेश उमा उर जाके ॥
जो मम प्रण शिव सदा निबाहा ❀ सो जय देव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जयविजय विभूति ❀ शंकर सुमिरत होय अकूती ॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना ❀ जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
कहँ आश्चर्य नरान्तक एहा ❀ मोपर गिरि पति परम सनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक नाथा ❀ कपट त्यागि नावहु सब माथा ॥
होइहि विजय धीर मन धरहू ❀ बेगि उपाय पाव सुख करहू ॥
शम्भु उपासन कर मम दासा ❀ तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा ॥

दोहा–जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ ।
विश्वसमेत गिरीश पद, निशदिन रहु मनलाइ ॥

मन क्रम बचन शम्भु पद आसा ❀ करहिं ताहि उर सब गुण बासा ॥
निर्भय करि जो हरिपद नेहू ❀ ता उर रमा सहित मम गेहू ॥
भव बारिधि लाँघहिं बिनु खेवहिं ❀ यह विचारि बुधजन भव सेवहिं ॥
भवभंजन यह हित उपदेशा ❀ अनुजहिं सखहिं बुझाव रमेशा ॥
ध्रुव वाणी सुनि अति सुख पावा ❀ अहिपति रामचरण शिर नावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला ❀ कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला ॥
सहित बिभीषण राजन साता ❀ सुनि श्रीमुख हरयश विख्याता ॥
रामहिं शिवहिं एक जे जाने ❀ भय तजि नाम जपत हर्षाने ॥

दोहा--कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युग याम ।
खगपति आगम देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ॥

राम लषण सुख सीव विराजे ❀ मार अपार निहारत लाजे ॥
निरखि मान मुनि हृदय सनाथा ❀ उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
सीस नाइ प्रभु आसन दीन्हा ❀ आसिष पाइ हर्ष हित कीन्हा ॥
मुनि नीके हरि रूप बिलोका ❀ यथाइन्दु लखि सुखलह कोका ॥

पुलकि गात तब कह ऋषिराजा ❀ सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा ॥
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ❀ यदपि कृपानिधि अन्तरयामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना ❀ विभव विरंचि करिय परिमाना ॥
जबलगि होन प्रभात न पावहिं ❀ तबलगि हरि हरिसुत ले आवहिं ॥

दोहा--जपत निरंतर नाम तव, सो जानहु भगवान ।
विधिविरहित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान ॥

नारान्तक बध है तेहि हाथा ❀ दधिबल नाम भक्त तव नाथा ॥
नाथ बहुत यहि खलहिं खेलावा ❀ रण विलोकि देवन दुख पावा ॥
अब रघुबीर करहु सोइ बाता ❀ बिनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता ॥
तेइसन तुमहिं न सोह लराई ❀ दधिबल सन्मुख करहु बोलाई ॥
सबिनय नाइ शीश बर भाखी ❀ गवने मुनि प्रभु छबि उर राखी ॥
नारद गये जबहिं बिधिलोका ❀ वायुतनय तन राम बिलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ ❀ बारिधि महँ धवलागिरि जहवाँ ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❀ बहुत दिवस चलि गये सुभाये ॥

दोहा--अहै तपोबल तेजसी, तात तासु ढिग जाइ ।
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु बेगि बुलाइ ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन ❀ चले बन्दि पद हरषि उदासन ॥
बेगवन्त धावा कपि कैसे ❀ वर नाराच धनुपते जैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा ❀ पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
देखि तरणि सम तासु प्रकासा ❀ ठाढ़ भयउ कपि मन्दिर पासा ॥
दण्ड युगल कपि इस्थित रहेऊ ❀ हियमहँ राम राम अस कहेऊ ॥
उत रण होइहिं होत प्रभाता ❀ इत इनकर चित हरिपद राता ॥
क्षणइक कपि मन कीन्ह बिचारा ❀ प्रभुपहँ चलिये कवन प्रकारा ॥
जो गृह सहित चलहुँ लै येही ❀ नहिं अस आयसु भक्त सनेही ॥

दोहा--बुधजन शीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराउ ।
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हें अमित उपाउ ॥

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना ❀ तजि प्रवीणता भजि भगवाना ॥
राम चरण चित कपिवर दयऊ ❀ दंड एक औरो चलि गयऊ ॥

बिधि प्रेरित दधिबल लघु शंका ❀ करन उठेउ देखा भट बंका ॥
जय श्रीराम वायुसुत बोला ❀ सुनि दधिबल निजलोचन खोला ॥
बूझि हरिहि कीशहिं उरलाई ❀ कही परस्पर दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता ❀ चलहु बिलोकन त्रिभुवन त्राता ॥
सानुज राम सुखद पदकंजा ❀ जिन मकरंद शिला अघ-गंजा ॥
जेहिलगि तप कीन्हेउ बहुकाला ❀ सो तुमपर अनुकूल कृपाला ॥

दोहा--धूरजटी हृद मानसर, बसत हंस इव जोइ ।
सादर तुमकहँ लेन लगि, पठवा मोहि प्रभु सोइ ॥

सुनि शुभ वचन सुकंठ कुमारा ❀ हरिपहँ हरिसँग तुरत सिधारा ॥
आये नाथ निकट मृग शाखा ❀ देखे पद जे हर हिय राखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता ❀ दधिबल निरखेउ कृपानिकेता ॥
सानुज हरषि मिलेउ सुख कंजा ❀ तासु पाणिगहि निजकर कंजा ॥
बैठे ताहि निकट बैठावा ❀ तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा ॥
निरखि तनय कपिपति हर्षाना ❀ मिलत प्रेम नहिं जाय बखाना ॥
गइ मणि पन्नग जनु पुनि पाई ❀ देही देह मीन जल जाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे ❀ अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥

सोरठा--दधिबल बालिकुमार, मिले परस्पर हर्षि हिय ।
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबनि प्रभु पद गहे ॥

जहँ तहँ समर करन बनचारी ❀ चले कहत जय लषण खरारी ॥
वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा ❀ रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा ॥
निशिचर अनी सुभट सँग ताके ❀ आयुध अखिल भयानक वाके ॥
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े ❀ असित मेघ सम अति रिस बाढ़े ॥
करि माया तेइ गात छिपावा ❀ भयउ प्रगट जब प्रभु ढिग आवा ॥
दधिबल लखा सखा चलि आयउ ❀ भुजा पसारि हरषि उठि धायउ ॥
नारान्तकहु दीख गुरु भाई ❀ मुदित मिले उर भयउ अघाई ॥
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❀ निज निज दशा कीन्ह विख्याता ॥

दोहा--हरिपति पूत प्रवीण अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।
लगे बुझावन मित्रकहँ, सुनहु वीर्यपति बात ॥

बंश स्वभाव सत्य कवि कहहीं ❀ फल पियूष बिष बेलि न लहहीं ॥
समुझहु तात बिचारि निदाना ❀ किये अनीति न जग कल्याना ॥
पितु चरित्र समुझहु मनमाहीं ❀ राम विरोध कतहुँ जय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मति भ्रम कैसे ❀ कूप धँसत बिच बाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिन चारि लड़ाई ❀ जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ❀ कहहु पाहि रघुबर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभु पद परसी ❀ करिहैं अभय तोहिं सम दरसी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी ❀ प्रणतपाल रघुबीर खरारी ॥

दोहा--शारंगीशर तरणि सम, दसमुख वपु खग लेख ।
जरत राखु यहि समय तव, करि विज्ञान विशेष ॥

सुनत बचन गुरु भ्राता केरा ❀ नारान्तक भा क्रुद्ध घनेरा ॥
कहन लाग खल ताहि कुभाँती ❀ सहज सभीत कीश दिन राती ॥
वालिहि हतेउ जौन तप धारी ❀ भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिवल यह वानर कुल रीती ❀ हमरे करहिं न अरिसन प्रीती ॥
यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा ❀ दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर ❀ तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
छाँड़हु मूढ़ समुझि गुरु भाई ❀ कहि अस पेलि चला कठिनाई ॥
तब सुकंठ सुत क्रोधित भयऊ ❀ सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥

दोहा--नारान्तक दधिवल भिरे, निरखि भालु कपि कीश ।
लगे लरन सँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश ॥

छन्द--कपिशूर संहारे शिलनि मारि । बहु मर्दि करे शिकता पहारि ॥
भट बिह्वावल वासी जितेक । कपि मारि गिराये बच न एक ॥
रह एकाकी मनुजाद बीर । किय द्वन्द युद्ध उरगाद धीर ॥
दोउ लरत लहैं छवि एक भाँति । गिरि कज्जल कञ्चन उभय गाति ॥
युग घटिका ऊपर एक याम । दोउ भिरे समर बल योग धाम ॥
पुनि भा अलक्ष सोकरत युद्ध । बलवन्त उभय श्रमगत सक्रुद्ध ॥
कहपट प्रकार श्रुति युद्ध रीती । सुख मानेउ सुर देखत सप्रीती ॥
लखि पुत्र इकाकी पुलकगात । कह बालि अनुज अति हर्षि बात ॥

दोहा--जाम्बवन्त सन वचन मृदु, कहेउ सुकंठ पुकारि ।
कहहु तात दधिबल कबहिं, दनुजहिं डारिहि मारि ॥

समर करत लागी अति बारा ❀ यह सुनि बोले ऋक्ष भुआरा ॥
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा ❀ दधिबल गुरुसन लही अशीशा ॥
सो अवसर अब आनि तुलाना ❀ एक पलक महँ मरिहिं अयाना ॥
सुनी हरीश मनमहँ अति हर्ष ❀ तबही बिबुध सुमन बहु वर्षे ॥
दधिबल धन्य भुजा बल तोरा ❀ रण कौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरि अस्तुति सुनि हरि अरि कोपा ❀ कपिहि सहित खल भयउ अलोपा ॥
योजन अयुत अष्ट नभ जाई ❀ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई ॥
गहि मनुजाद भूमि पर डारा ❀ करि चिकार तेहि मरती बारा ॥

छन्द--मरती समय अति शब्दकरि दशमुख तनय हरिहरकही ।
तजिअधमतनु धरिसुभगवपु द्विजनाथ सुनि सोगति लही ॥
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्धि नाना भाँति जप तप मख किये ।
श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजही दनुजहि दिये ॥

दोहा--देखि तासुगति बिबुधगण, अभय भये खगराइ ।
प्रमुदित वर्षे पुहुप झरि, रामचरण चितलाइ ॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❀ तोरि तासु शिर गहि निजपानी ॥
रुण्ड तासु गहि लंक सँचारी ❀ आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥
निशा प्रवेश भूत बैताला ❀ चढ़ि चढ़ि बाहन वेष कराला ॥
जाइ समर महि सुखद समेता ❀ उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
आयउ दधिबल प्रभु के पासा ❀ देखि हरषि उठि रमानिवासा ॥
सानुज राम मिले अति प्रीती ❀ परम प्रसाद नाथ नित रीती ॥
बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई ❀ सखा सुतहिं निज ढिग बैठाई ॥
हनुमदादि मर्कट प्रभुपाहीं ❀ नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं ॥

दोहा--रामरजायसु पाय पुनि, होइ विगत श्रम कीश ।
तबदधिबल प्रभु चरणगहि, आगे धर अरि शीश ॥

समुझि कौतुकी रिपुसुत शीशा ❀ सुनहु सुकंठ कहा जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु ❀ यतन समेत न सेन चलावहु ॥

नाथ रजाय पाय कपिराई ❀ राखहु सो शिर यतन कराई ॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई ❀ श्रीपति श्रीमुख बहुविधि गाई ॥
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा ❀ सबहिं सराहत सो जगदीशा ॥
दधिबल प्रभु अनुकूल बिलोकी ❀ सफलजन्म लखिभयउ विशोकी ॥
प्रेम बारि लोचन कर जोरी ❀ बोलेउ गिरा भक्ति रस बोरी ॥
जगदातमा तुम्हार यह बाना ❀ सन्तत करहु दीन मनमाना ॥

दोहा--बनचर पामर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान ।
बिर स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान ॥

तव यश विमल विदित अवधेशा ❀ कहन न पार पाव श्रुति शेषा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे ❀ पर्णवणिक गज मणि गुण जैसे ॥
अस कहि हरि हरिपद लपटाने ❀ देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
अन अभिमान ताहि प्रभु जाना ❀ दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
माँगु वत्स जो वर मन भावा ❀ सुनिदधिबलकरि विनय सुनावा ॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा ❀ करहिं निरन्तर मम उर धामा ॥
होइ मोहिं प्रिय पदपंकज कैसे ❀ कामिहिं वाम सूम धन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू ❀ मम इच्छा कछु औरो लेहू ॥

सोरठा–विह्वावलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ।
छाँड़ि और सब काज, शिवाशम्भु पद भक्ति दृढ़ ॥

यहै काज शुभ संतत चहई ❀ जो सो प्राणी मम मन रहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ ❀ जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
मोहि निज रूप रमापति जाने ❀ ताते बारम्बार बखाने ॥
जानेउ श्रीरघुबर स्वभाउ जिन ❀ सब तजि प्रेमभक्ति माँगी तिन ॥
राम भक्ति बारीश जासु उर ❀ महिमा तासु कहत श्रुतिबुधबर ॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये ❀ सहजहिं आवत बिनहिं बुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिखदै रघुनाथा ❀ पुनि प्रभु कीन्ह तिलकनिज हाथा ॥
सारंगी रुख सबहीं पावा ❀ अंगदादि ताकहँ शिर नावा ॥

दोहा–पाइ भक्तिवर राज्य वर, प्रभु चरणन शिरनाइ ।
दधिबल पठयउ तुरत हठि, सुनहु ऋषय मनलाइ ॥

तन मन राम चरण अनुरागे ❀ दधिवल राज्य करत भय त्यागे ॥
सेन सहित श्रीराजिवनयना ❀ राजत देखि विबुध चित चयना ॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा ❀ पुहुपमाल झरि करत अपारा ॥
करि अस्तुति वर विनय पुकारे ❀ अदिति सूनु निज गेह सिधारे ॥
उतहि जहाँ बैठा दशभाला ❀ बिनु शिर वपुमो परा बिशाला ॥
देखि विकल आपै उठि धावा ❀ पहिचानत तेहि अति दुख पावा ॥
हा नारान्तक कहि खल परा ❀ महा खंभार लंकगढ़ भरा ॥
मयतनया आदिक निशिचरी ❀ शोक समाज विषादहिं भरी ॥

दोहा—बिन्दुमती आदिक सकल, नारान्तक की नारि ।
व्याकुल महि लोटत परी, निज निज दशा बिसारि ।

करिविलाप जिमि निशिचर नारी ❀ सो न जात कहि सुनु नभचारी ॥
शोक जलधि लंका वधु तरणी ❀ चढ़ीसकल निशिचरकी घरणी ॥
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा ❀ कहत मंदोदरि तब भव पाहा ॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई ❀ नागसुता की कथा सुनाई ॥
सुनत सुनयना की शुचिकरणी ❀ धारि धीर नारान्तक घरणी ॥
सबनि बुझाय सासु पगलागी ❀ तजि धनधाम स्वामि अनुरागी ॥
मातु कहहु सो यतन उतावल ❀ मिलहुँ जाइ जेहिपद निजरावल ॥
सुनु सुतबधू न आन उपाऊ ❀ जाउ जहाँ राजत रघुराऊ ॥

दोहा—जेहि विधि गई सुलोचना, तेहिगत तुम भय त्यागि ।
निरखहु रघुपति पद कमल, लावहु पति शिर माँगि ॥

सासु वचन सुनि जानि प्रभाता ❀ उठिनिशिचरतिय पुलकितगाता ॥
जात रूप मय यान मँगाई ❀ निजकर गहि पतिदेह चढ़ाई ॥
चली अकेलि यान चढ़ि जबहा ❀ तासु सवति इक आई तबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू ❀ गुणगण सुभग बसैं तनु जासू ॥
सोकरि विनय चढ़ी तेहि संगा ❀ कीन्ह पयान रँगी शतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा ❀ कायर डरपे हृदय बिशेखा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोई ❀ नल अरु नील सुभट बर दोऊ ॥
आये धाय झपटि तब आगे ❀ युगल नारि तनु निरखन लागे ॥

दोहा-समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ, फिरि आये प्रभुपास।
बन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमा निवास॥

नाथ नरान्तक की दोउ नारी ❀ आवत शरण प्रणत भयहारी॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसुकाने ❀ उतहि टिकावहु सखा सयाने॥
सुनि प्रभु बचन बहुरि सो धाये ❀ कटक विगत तिन दूरि टिकाये॥
विन्दुमती चितरेखा दूनों ❀ विनय हमारि कीश अस सूनों॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहिं बुझाई ❀ केहि कारण हम दरश न पाई॥
हम अबला कपि विनवौं तोहीं ❀ बूझि नाथ मन कहिये मोहीं॥
नारि विनय सुनि कपि दोउ भले ❀ नीति बिचारि रामपहँ चले॥
विनती नारि जाय नल बरणी ❀ सुनि बिहँसे प्रभु तिनकी करणी॥

दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध वेद।
तिन कहँ देत न दरश प्रभु, सुन खगेश सो भेद॥

प्रेम परीक्षा हित रघुनायक ❀ कौतुक करत समर सुखदायक॥
नाथ सखा तब बहुरि बुझाई ❀ पुनि नल नारिन पास पठाई॥
कह कपि सुनहु नरान्तक नारी ❀ दर्शन तुमहिं न देहिं खरारी॥
तुम गृह जाहु बचन मम मानी ❀ बोलीं सो तिय बचन सयानी॥
हम अबला दर्शन हित आईं ❀ नयन सफल बिनु किमि गृहजाईं॥
यहि बिधि करत विनय दोउ नारी ❀ कीशन कटक कीन्ह पैसारी॥
आवत निकट जानि रिपुरवनी ❀ यद्यपि पतिव्रत हैं सुखभवनी॥
तदपि नाथ तेहि दरश न देहीं ❀ जाइ निकट विनती किय तेहीं॥

दोहा--प्रभु सीतापति जगतपति, सुर नर पति रघुनाथ।
देउ दरश करुणायतन, दीनबन्धु श्रुति माथ॥

बोले राम न सो तिय बोलीं ❀ बिमल ज्ञान पतिव्रत अनु डोलीं॥
नाथ सत्य यह नीति बखाने ❀ पुरुष न परतिय सपनेहु जाने॥
प्राकृत पुरुषन की यह रीती ❀ जिनके हृदय कपट पर प्रीती॥
समदरशी कुछ दोष न स्वामी ❀ सो विचारु प्रभु अन्तरयामी॥
आरत बन्धु विलम्ब न कीजे ❀ करुणाकर अब दर्शन दीजे॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहईं ❀ तवयश अस श्रुति गावत अहईं॥

गौतम नारि राम तुम तारी ❀ अधम जाति भिल्लनि निस्तारी ॥
सुनि मम हृदय परी परतीती ❀ अब प्रभु कस देखिय बिपरीती ॥

दोहा–तारि तारि अधमनि अमित, बार बार श्रम जान ।
तातें करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान ॥

प्रभु मुसुकाहिं न उत्तर देहीं ❀ ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥
बिकल उभय नारान्तक बाला ❀ बार बार करि बिनय बिशाला ॥
धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा ❀ केवल पतिब्रत धर्म हमारा ॥
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ❀ द्रवहु बेगि उर अन्तर्यामी ॥
बृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा ❀ पूजत नाथ न मम अभिलाषा ॥
लीन भयउ पति प्राण रामपहँ ❀ अर्द्ध भाग हम कहहु जाइँ कहँ ॥
बृन्दा चरित नाथ सुधि करहू ❀ बिनय हमारि बेगि उर धरहू ॥
बिनय प्रीति सत धर्म जनाई ❀ परी प्रेमवश महि अकुलाई ॥

दोहा--पाहि पाहि रघुवंश मणि, हतहु न विरद प्रतीति ।
प्रीतम प्रीति न करत डर, तुम कहँ नाथ अनीति ॥

सती निराश बिनय सुनि बानी ❀ पुलके दीनदयाल भवानी ॥
दुहुँन लीन निज निकट बुलाई ❀ परी युगल प्रभु पदतर आई ॥
तिन्हें उठाय राम बैठावा ❀ जगदीश्वर मृदु बचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी ❀ पतिपद रति दृढ़ हृदय समानी ॥
बहुत करहुँ का तव गुण गाना ❀ माँगु बेगि वर जो मनमाना ॥
सुनत बचन लोचन जल बाढ़ी ❀ जोरि युगल कर दोऊ ठाढ़ी ॥
प्रभु तुम दानि देव तरुवर से ❀ पद जलजात देखि सुरसरि से ॥
परम पवित्र भईं हम दोऊ ❀ हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ ॥

छन्द–कोधन्य हमसम नारि जगमहँ सुनहु श्रीरघुनायकं ।
दै दरश कीन्ही पतित पावन नाथ सुर अरि धायकं ॥
अब कृपासागर यश उजागर देहु वर सुरभावरं ।
जेहि मिलैं पति कहँ जाइ बिनुश्रम बढ़ै तव यश श्रीधरं ॥

सोरठा–यह कहि बिन्दु कुमारि, सहित सौति प्रभु पदपरी ।
तिन्हैं उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत पुनि ॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ❀ निज पति लेहु भवन सुख करहू ॥
कहेउ देव हम कहँ यह नीका ❀ हमहुँ कहत अब भावतजीका ॥
गिरिजा सहित गिरीश बिरागी ❀ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते ❀ जपतप करहिं विविध विधि तेते ॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाई ❀ देखहिं पद जलजात अघाई ॥
हरि दर्शन लवलेश प्रमाना ❀ जगके सब सुख नाहिं समाना ॥
अमिय अघाइ गरल को खाई ❀ बिनय हमारि यहै सुरसाई ॥
देहु कन्त शिर सपदि मँगाई ❀ दया शील सागर रघुराई ॥

दोहा–नारान्तक कर शीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ।
पाइ स्वामि शिर मुदित ह्वै, बोलीं दोउ उरगेश ॥

नाथ बिनय हम औरो करहीं ❀ दारु बिना हम केहि विधि जरहीं ॥
सुखसागर सुनि बचन प्रमाना ❀ हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
कह प्रभु सखा लंक महँ धावहु ❀ चन्दन अगर भार बहु लावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये ❀ लंका गढ़ गृह गृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❀ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुबीर सुनहु लंकेशा ❀ तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥
बिंदुमती जहँ चाहत ठाऊ ❀ दाहभार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर बैर बिहाई ❀ चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥

दोहा–रघुबर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ।
अयुत भार चन्दन अगर, तेहि सँग चले लिवाइ ॥

जहाँ जरी मघवाजित नारी ❀ तेहिं गहर शुचि चिता सँवारी ॥
उहवाँ अपर सौति मनु नारी ❀ विन्दुमती मन भाव पियारी ॥
मूर्च्छित परी प्रथम सुधि नाहीं ❀ चली सुनत गति दुख मन माहीं ॥
चली चतुर्दश निशिचरि कैसे ❀ निरखि दवास मृगी गण जैसे ॥
हाहा बिन्दुमती पति प्यारी ❀ कहाँ गई तुम हमहिं बिसारी ॥
पहुँची सह बिलाप तहँ सोऊ ❀ हरषी हृदय बिलोकत दोऊ ॥
षोडश निशिचर भईं सभागी ❀ मन वच क्रम पति पद अनुरागी ॥
सकल अन्हाय मृतक अन्हवाई ❀ सुमिरत हृदय राम गतिदाई ॥

दोहा–उत दसकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सब हेतु ।
संग मंदोदरि आदि तिय, गवनेउ लै खगकेतु ॥

बाजत ढोल कपिन सुनि काना ❀ अपने मन किय अस अनुमाना ॥
आव युद्ध हित उत कोउ बीरा ❀ हम कहँ ठाढ़ करत यहि तीरा ॥
कीश अयुत तब प्रभु पहँ आये ❀ पूरण प्रेम चरण शिर नाये ॥
नाथ उतहिं दशकन्धर जाता ❀ कीश एक कह सुनु जन त्राता ॥
प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु ❀ बेगि बिभीषण कहँ लै आवहु ॥
राम रजायसु शिर धरि धाये ❀ सपदि बिभीषण पहँ सो आये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा ❀ सुनत लंकपति आतुर आवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा ❀ कुमुद सहित रघुपति पहँ आवा ॥

दोहा--मोह निशा कहँ तरुण रवि, तिन चरणन शिरनाइ ।
भाग्यवन्त रावण अनुज, बैठेउ प्रभु सुख पाइ ॥

दशमुख तिय न सहितगा तहँवाँ ❀ बिन्दुमती चित्ररेखा जहँवाँ ॥
देखत अति बिलखा बिबुधारी ❀ करुणा करत निशाचरि झारी ॥
सासु ससुर कहँ देखि दुखारी ❀ ज्ञान नवीन नरान्तक नारी ॥
कहि शुचि गाथ सबन समुझाई ❀ स्वामि समेत चितापर आई ॥
यथा योग्य बैठी सब तैसे ❀ पति गृह रहत रहीं नित जैसे ॥
अग्नि दीन्ह ज्वाला अति धाई ❀ पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई ॥
देखि दशा तिनकी सुररवनी ❀ तिनहिं सराहि भवन निज गवनी ॥
रावण सहित युवति निज गेहा ❀ गयउ भवन सासति सन्देहा ॥

छंद–सन्देह सासति भरेउ रावण सहित दारनि गृह गयो ।
इमि मयसुतादिक निशिचरिन लखि बिकल बल मुर्छित भयो ॥
दशमाथ गति देखत विपुल बिलखें निशाचर निशिचरी ।
सन्ताप शोक बिलाप भय भ्रम कटक लंका महँ परी ॥

दोहा--राम बिरोधहि जस उचित, तस दिन पहुँचा आइ ।
सो बिचार करि लंकगढ़, उतरी बिपति बजाइ ॥

इहाँ देव देवायसु जाना ❀ बर आसन शोभित भगवाना ॥
यथा योग्य बैठे मृगशाखा ❀ सब कीन्हे प्रभु पद अभिलाखा ॥

रिपुबड़ मरेउ हर्ष सबके मन ❀ पुनि पुनि हेरत सुभग श्याम तन ॥
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला ❀ शिव यश गावहु कहा कृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❀ गावहिं कपि कलकंठ लजाईं ॥
डमरु भृंगि शृंगी करतारी ❀ घ्राण पाणि मुखते बनचारी ॥
गोंडर तन्तु बेणु मंजीरा ❀ शंख मृदंग नाद गम्भीरा ॥
नृत्यत कीश भाव दिखरावत ❀ शिवा सहित शिव कीरति गावत ॥

छन्द–शिव शिवा कीरति बिमल गावत भालु बानर सुखभरे ।
अहिनाथ युत रघुनाथ छबि निरखत सकल चित पद धरे ॥
प्रभु देखि कौतुक अनुज सहित सखन बखानत श्रीमुखम् ।
तुलसी पगे यहि ध्यान जेजन पाइहैं नित यश सुखम् ॥

सोरठा--गतरजनी युग याम, तब कीशन करुणा अयन ।
करि पूरण मनकाम, सबनि कहेउ राजहु थलन ॥

बैठे निज निज थल रणधीरा ❀ अनुज सहित राजत रघुबीरा ॥
सुखमा सींव सेन युत राजैं ❀ जय जय ध्वनि कपि भालु समाजैं ॥
उमा चरित यह रुचिर सुहावा ❀ नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपर चरित गिरिराज कुमारी ❀ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी ॥
उहाँ मध्य निशि रावण जागा ❀ कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा ॥
उग्र सिखावन कहि बुध थाके ❀ थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई ❀ मेटि को सकै जो विधि उर बसई ॥
प्रभु विरोध करि चह कल्याना ❀ मोह विवश सो सठ अज्ञाना ॥
बचन सुनत तेइ कछु सुख माना ❀ काल विवश जस तीरथ ज्ञाना ॥

इति क्षेपक

निसा सिरानि भयउ भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बोलाइ दसानन बोला ❀ रनसनमुख जा कर मन डोला ॥
सो अबहीं बरु जाउ पराई ❀ संजुगविमुख भये न भलाई ॥
निज-भुज-बल मैं बैर बढ़ावा ❀ देइहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा ॥
अस कहि मरुतवेग रथ साजा ❀ बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले बीर सब अतुलित बली ❀ जनु कज्जल कै आँधी चली ॥

असगुन अमित होहिं तेहि काला ❀ गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला ॥
छंद—अतिगर्व गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें ।
भट गिरत रथ तें बाजि गज चिक्करत भागहिं साथ तें ॥
गोमायु गीध कराल खररव स्वान बोलहिं अति घने ।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ॥

दोहा--ताहि कि संपति सगुन सुभ, सपनेहु मन बिस्राम ।
भूत-द्रोह-रत मोहबस, रामबिमुख रतकाम ॥७८॥

चलेउ निसा-चर-कटक अपारा ❀ चतुरंगिनी अनी बहुधारा ॥
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना ❀ बिपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥
चले मत्त गजयूथ घनेरे ❀ प्राबिट-जल-द मरुत जनु प्रेरे ॥
बरन बरन बिरदैत निकाया ❀ समरसूर जानहिं बहु माया ॥
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी ❀ बीर बसंत सेन जनु साजी ॥
चलत कटकु दिगसिंधुर डगहीं ❀ छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥
उठी रेनु रबि गयउ छपाई ❀ पवन थकित बसुधा अकुलाई ॥
पनव निसान घोररव बाजहिं ❀ प्रलयसमय के घन जनु गाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई ❀ मारू राग सुभट सुखदाई ॥
केहरिनाद बीर सब करहीं ❀ निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥
कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा ❀ मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥
हौं मारिहउँ भूप दोउ भाई ❀ अस कहि सनमुख फौज रेंगाई ॥
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई ❀ धाये करि रघु-बीर-दोहाई ॥
छन्द—धाये बिसाल कराल मरकट भालु काल समान ते ।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधरबृंद नाना बान ते ॥
नख-दसन-सैल-महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
जय राम रावन-मत्त-गज-मृग-राज सुजस बखानहीं ॥

दोहा--दुहुँ दिसि जय जयकार करि, निज निज जोरी जानि ।
भिरे बीर इत रघुपतिहिं, उत रावनहिं बखानि ॥७९॥

रावन रथी बिरथ रघुबीरा ❀ देखि बिभीषन भयउ अधीरा ॥
अधिकप्रीति मन भा संदेहा ❀ बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥

नाथ न रथ नहिं तनु पदत्राना ❀ केहि बिधि जितब बीर बलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❀ जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ❀ सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दम परहित घोरे ❀ छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईसभजन सारथी सुजाना ❀ बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा ❀ बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥
अमल अचल मन त्रोनसमाना ❀ सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद बिप्र-गुरु-पूजा ❀ यहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जा कें ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ता कें ॥

दोहा--महा अजय संसाररिपु, जीति सकइ सो बीर ।
जा कें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनि प्रभु बचन बिभीषन. हरषि गहे पदकंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु, रामकृपा सुखपुंज ॥
उत प्रचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान ।
लरत निसाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभु आन ॥८०॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❀ देखत रन नभ चढ़े बिमाना ॥
हमहूँ उमा रहे तेहि संगा ❀ देखत राम-चरित-रन-रंगा ॥
सुभट समर रस दुहुँ दिसि माते ❀ कपि जयसील राम बल ताते ॥
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❀ एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं ❀ सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ❀ गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं ॥
निसिचर भट महि गाड़हिं भालू ❀ ऊपर डारि देहिं बहु बालू ॥
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे ❀ देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

छन्द—क्रुद्धे कृतांत समान कपि तनु स्रवत सोनित राजहीं ।
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन्हि डाँटि दाँतन्ह काटि लातन्ह मीजहीं ।
चिक्करहिं मरकट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजहीं ॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।

प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु धरि समरअंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
जय राम जो तृन तें कुलिस कर कुलिस तें तृन कर सही ॥

दोहा–निज दल बिचलत देखेसि, बीस भुजा दस चाप ।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप ॥८१॥

धायेउ परम क्रुद्ध दसकंधर ❀ सनमुख चले हूह दै बंदर ॥
गहि कर पादप उपल पहारा ❀ डारेहिं ता पर एकहिं बारा ॥
लागहिं सैल बज्रतनु तासू ❀ खंड खंड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहा रथ रोपी ❀ रनदुर्मद रावन अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपटि कपिजोधा ❀ मर्दै लाग भयेउ अति क्रोधा ॥
चले पराइ भालु कपि नाना ❀ त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं ❀ यह खल खाइ काल की नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने ❀ दसहुँ चाप सायक संधाने ॥

छन्द–संधानि धनु सरनिकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं ॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपि दल भालु बोलहिं आतुरे ।
रघुबीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे ॥

दोहा--निजदल बिकल देखि कटि, कसि निषंग धनु हाथ ।
लछिमनु चले सक्रुद्ध होइ, नाइ रामपद माथ ॥८२॥

रे खल का मारसि कपि भालू ❀ मोहि बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती ❀ आजु निपाति जुड़ावउँ छाती ॥
अस कहि छाड़ेसि बान प्रचंडा ❀ लछिमन किये सकल सतखंडा ॥
कोटिन्ह आयुध रावन डारे ❀ तिल प्रवान करि काटि निवारे ॥
पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा ❀ स्यंदन भंजि सारथी मारा ॥
सत सत सर मारे दस भाला ❀ गिरि सिंगन्ह जनु प्रविसहिं ब्याला ॥
सत सर पुनि मारा उर माहीं ❀ परेउ अवनितल सुधि कछु नाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मुरछा जागी ❀ छाँड़ेसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छन्द--सो ब्रह्मदत्त प्रचंडसक्ति अनंतउर लागी सही।
परयौ बीर बिकल उठाव दसमुख अतुलबल महिमा रही॥
ब्रह्मांड भुवन बिराज जा के एक सिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रि-भुवन-धनी॥

दोहा--देखि पवनसुत धायहु, बोलत बचन कठोर।
आवत कपिहि हनेउ तेहि, मुष्टिप्रहार प्रघोर॥८३॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा ❀ उठा सँभारि बहुत रिसभरा॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा ❀ परेउ सैल जनु बज्रप्रहारा॥
मुरुछा गइ बहोरि सो जागा ❀ कपिबल बिपुल सराहन लागा॥
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही ❀ जौं तैं जियत उठेसि सुरद्रोही॥
अस कहि लछिमन कहुँ कपि ल्यायो ❀ देखि दसानन बिस्मय पायो॥
कह रघुबीर समुझु जिय भ्राता ❀ तुम्ह कृतांतभच्छक सुरत्राता॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला ❀ गई गगन सो सक्ति कराला॥
पुनि कोदंडबान गहि धाये ❀ रिपुसनमुख अतिआतुर आये॥

छंद--आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति ब्याकुल कियो।
गिरयौ धरनि दसकंधर बिकलतर बानसत बेध्यो हियो॥
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो।
रघु-बीर-बंधु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरनन्हि नयो॥

दोहा--उहाँ दसानन जागि करि, करै लाग कछु जग्य।
राम बिरोध बिजय चहत, सठ हठबस अतिअग्य॥८४॥

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई ❀ सपदि जाइ रघुपतिहिं सुनाई॥
नाथ करइ रावनु एक जागा ❀ सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा॥
पठवहु देव बेगि भट बंदर ❀ करहिं बिधंस आव दसकंधर॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❀ हनुमदादि अंगद सब धाये॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ❀ पैठे रावनभवन असंका॥
जग्य करत जबहीं सो देखा ❀ सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेखा॥
रन तें निलज भाजि गृह आवा ❀ इहाँ आइ बकध्यान लगावा॥
अस कहि अंगद मारेउ लाता ❀ चितव न सठ स्वारथ मन राता॥

छन्द—नहिं चितव जब कपि कोपि तब गहि दसन लातन्ह मारहीं ।
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांतसम गहि चरन बानर डारई ।
एहि बीच कपिन्ह बिधंसकृत मख देखि मन महुँ हारई ॥

दोहा—मख बिधंसि कपि कुसल सब, आये रघुपति पास ।
चलेउ लंकपति क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस ॥८५॥

चलत होहिं अति असुभ भयंकर ❀ बैठहिं गीध उड़ाहिं सिरन्ह पर ॥
भयउ कालबस काहु न माना ❀ कहेसि बजावहु जुद्धनिसाना ॥
चली तमी – चर–अनी अपारा ❀ बहु गज रथ पदाति असवारा ॥
प्रभु सनमुख धाये खल कैसें ❀ सलभसमूह अनल कहँ जैसें ॥
इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही ❀ दारुनबिपति हमहिं एहि दीन्ही ॥
अब जनि राम खेलावहु एही ❀ अतिसय दुखित होति बैदेही ॥
देवबचन सुनि प्रभु मुसुकाना ❀ उठि रघुबीर सुधारे बाना ॥
जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे ❀ सोहहिं सुमन बीच बिच गाँथे ॥
अरुननयन बारिद-तनु-स्यामा ❀ अखिल-लोक-लोचन–अभिरामा ॥
कटितट परिकर कसेउ निषंगा ❀ कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छन्द—सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरा-सुर-पद लस्यो ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सरचाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥

दोहा—हरषे देव बिलोकि छबि, बरषहिं सुमन अपार ।
जय जय प्रभु गुन-ग्यान-बल-धाम हरन महिभार ॥८६॥

एही बीच निसा–चर–अनी ❀ कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सनमुख कपि भट्टा ❀ प्रलय काल के जनु घनघट्टा ॥
बहुकृपान तरवारि चमंकहिं ❀ जनु दस दिसि दामिनी दमंकहिं ॥
गज रथ तुरग चिकार कठोरा ❀ गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर बिपुल नभ छाये ❀ मनहुँ इंद्रधनु उये सुहाये ॥
उठइ धूरि मानहुँ जलधारा ❀ बान बुंद भइ बृष्टि अपारा ॥

दुहुँ दिसि पर्वत करहिं प्रहारा ❀ बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बानझरि लाई ❀ घायल भे निसि-चर-समुदाई ॥
लागत बान बीर चिक्करहीं ❀ घुर्मि घुर्मि जहँ तहँ महि परहीं ॥
स्रवहिं सैल जनु निर्झरवारी ❀ सोनित सरि कादर भयकारी ॥
छंद-कादर भयंकर रुधिरसरिता चली परम अपावनी ।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने ।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दोहा-बीर परहिं जनु तीरतरु, मज्जा बहु बह फेन ।
कादर देखि डराहिं तेहि, सुभटन के मन चेन ॥८७॥

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला ❀ प्रथम महा झोटिंग कराला ॥
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं ❀ एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई ❀ सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥
कहँरत भट घायल तट गिरे ❀ जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥
खैंचहिं गीध आँत तट भये ❀ जनु बंसी खेलहिं चित दये ॥
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं ❀ जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं ❀ भूत-पिसाच-बधू नभ नंचहिं ॥
भट कपाल करताल बजावहिं ❀ चामुंडा नानाबिधि गावहिं ॥
जंबुकनिकर कटक्कट कट्टहिं ❀ खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं ❀ सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥
छन्द—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं ।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥
निसि-चर-बरूथ बिमर्दि गरजहिं भालु कपि दर्पित भये ।
संग्रामअंगन सुभट सोवहिं राम-सर-निकरन्हि हये ॥

दोहा-रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संहार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार ॥८८॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा ❀ उपजा उर अतिछोभ बिसेखा ॥
सुरपति निजरथ तुरत पठाया ❀ हरषसहित मातलि लै आवा ॥

तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ❀ हरषि चढे कोसल-पुर-भूपा ॥
चंचल तुरग मनोहर चारी ❀ अजर अमर मन-सम-गति-कारी ॥
रथारूढ रघुनाथहि देखी ❀ धाये कपि बल पाइ बिसेखी ॥
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी ❀ तब रावन माया बिस्तारी ॥
सो माया रघुबीरहिं बाँची ❀ सब काहू मानी करि साँची ॥
देखी कपिन्ह निसा-चर-अनी ❀ अनुजसहित बहु कोसलधनी ॥
छन्द—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
जनु चित्रलिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥
निजसेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसलधनी ।
माया हरी हरि निमिष महँ हरषी सकल मरकटअनी ॥

दोहा—बहुरि राम सब तन चितइ, बोले बचन गँभीर ।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल, स्त्रमित भये अति बीर ॥८९॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा ❀ बिप्र-चरन-पंकज सिरु नावा ॥
तब लंकेस क्रोध उर छावा ❀ गर्जत तर्जत सनमुख धावा ॥
जीतेहु जे भट संजुग माहीं ❀ सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥
रावन नाम जगत जस जाना ❀ लोकप जा कें बंदीखाना ॥
खर-दूषन-कबंध तुम्ह मारा ❀ बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा ॥
निसिचर-निकर सुभट संहारेहु ❀ कुंभकरन घननादहिं मारेहु ॥
आजु बैरु सब लेउँ निबाही ❀ जौं रन भूप भाजि नहिं जाही ॥
आजु करउँ खलु कालहवाले ❀ परेहु कठिन रावन के पाले ॥
सुनि दुर्बचन कालबस जाना ❀ बिहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई ❀ जलपसि जनि देखाउ मनुसाई ॥
छन्द—जनि जलपना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल-रसाल-पनस-समा ॥
एक सुमनप्रद एक सुमनफल एक फलइ केवल लागहीं ।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥

दोहा—रामबचन सुनि बिहँसिकह, मोहि सिखावत ग्यान ।
बयरु करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान ॥९०॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर ❀ कुलिससमान लाग छाड़ै सर ॥
नानाकार सिलीमुख धाये ❀ दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाये ॥
अनलबान छाड़ेउ रघुबीरा ❀ छन महुँ जरे निसा-चर-तीरा ॥
छाड़ेसि तीब्र सक्ति खिसिआई ❀ बानसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारइ ❀ बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारइ ॥
निफल होहिं रावन सर कैसें ❀ खल के सकल मनोरथ जैसें ॥
तब सतबान सारथी मारेसि ❀ परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परमक्रोध कहुँ पावा ॥

छन्द—भये क्रुद्ध जुद्धबिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे।
कोदंडधुनि अतिचंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दोहा—तानेउ चाँप स्रवन लगि, छाँड़े बिसिख कराल।
राम-मारगन-गन चले, लहलहात जनु ब्याल ॥९१॥

चले बान सपच्छ जनु उरगा ❀ प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥
रथ बिभंजि हति केतु पताका ❀ गर्जा अति अंतर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना ❀ अस्त्र सस्त्र छाँड़ेसि बिधि नाना ॥
बिफल होहिं सब उद्यम ता के ❀ जिमि परद्रोह-निरत-मनसा के ॥
तब रावन दस सूल चलावा ❀ बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक ❀ खैंचि सरासन छाड़े सायक ॥
रावन-सिर-सरोज-बन-चारी ❀ चलि रघुबीर सिलीमुख धारी ॥
दस दस बान भाल दस मारे ❀ निसरि गये चले रुधिरपनारे ॥
स्रवत रुधिर धायउ बलवाना ❀ प्रभु पुनि कृत धनु-सर-संधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पबारे ❀ भुजन्ह समेत सीस महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने ❀ राम बहोरि भुजासिर छीने ॥
कटत झटिति पुनि नूतन भये ❀ प्रभु बहु बार बाहु सिर हये ॥
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा ❀ अतिकौतुकी कोसलाधीसा ॥
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहु ❀ मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छन्द–जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्रवतसोनित धावहीं।
रघुबीर-तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥
एक एक सर सिरनिकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर-कर-निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं॥

दोहा--जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर, तिमि तिमि होहिं अपार।
सेवत बिषय बिवर्ध जिमि, नित नित नूतन मार॥९२॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी ❀ बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी॥
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी ❀ धायउ दसहु सरासन तानी॥
समरभूमि दसकंधर कोप्यो ❀ बरषि बान रघु-पति-रथ तोप्यो॥
दंड एक रथ देखि न परा ❀ जनु निहार महँ दिनमनि दुरा॥
हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा ❀ तब प्रभु कोपि कार्मुकहि लीन्हा॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे ❀ ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे॥
काटे सिर नभमारग धावहिं ❀ जय जय धुनि करि भय उपजावहिं॥
कहँ लछिमन हनुमान कपीसा ❀ कहँ रघुबीर कोसलाधीसा॥

छन्द–कहँ राम कहि सिरनिकर धाये देखि मर्कट भजि चले।
संधानि धनु रघु-बंस-मनि हँसि सरन्ह सिर बेधे भले॥
सिरमालिका गहि कालिका कर बृंद बृंदन्हि बहु मिलीं।
करि रुधिरसरि मज्जन मनहुँ संग्रामबट पूजन चलीं॥

दोहा--पुनि दसकंठ क्रुद्ध ह्वै, छाँड़ी सक्ति प्रचंड।
चली बिभीषन सनमुख, मनहुँ काल कर दंड॥९३॥

आवत देखि सक्ति खरधारा ❀ प्रनतारतिहर बिरद सँभारा॥
तुरत बिभीषन पाछे मेला ❀ सनमुख राम सहेउ सो सेला॥
लागि सक्ति मुरुछा कछु भई ❀ प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई॥
देखि बिभीषन प्रभु स्रम पायउ ❀ गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायउ॥
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे ❀ तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे॥
सादर सिव कहँ सीस चढ़ाये ❀ एक एक के कोटिन्ह पाये॥
तेहि कारन खल अब लगि बाँचा ❀ अब तव काल सीस पर नाँचा॥
रामबिमुख सठ चह संपदा ❀ अस कहि हनेसि माँझ उर गदा॥

छन्द—उर माँझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‌यो।
दसबदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायउ रिस भर्‌यो॥
दोउ भिरे अतिबल मल्ल जुद्ध बिरुद्ध एक एकहि हनै।
रघु-बीर-बल-गर्बित बिभीषन घालि नहिं ता कहँ गनै॥

दोहा—उमा बिभीषन रावनहिं, सनमुख चितव कि काउ।
भिरत सो कालसमान अब, श्री-रघु-बीर-प्रभाउ॥९४॥

देखा स्रमित बिभीषन भारी ❀ धायउ हनूमान गिरिधारी॥
रथ तुरंग सारथी निपाता ❀ हृदय माँझ तेहि मारेसि लाता॥
ठाढ़ रहा अतिकंपित गाता ❀ गयउ बिभीषनु जहँ जनत्राता॥
पुनि रावन तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चला गगन कपि पूँछ पसारी॥
गहेसि पूँछ कपिसहित उड़ाना ❀ पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना॥
लरत अकास जुगल सम जोधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा॥
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं ❀ कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं॥
बुधिबल निसिचर परइ न पारा ❀ तब मारुतसुत प्रभु संभारा॥

छन्द—संभारि श्री-रघु-बीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन जुगल कहँ जय जय भन्यो॥
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले।
रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलमले॥

दोहा—तब रघुबीर प्रचारे, धाये कीस प्रचंड।
कपिदल प्रबल देखि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड॥९५॥

अंतरधान भयउ छन एका ❀ पुनि प्रगटे खल रूप अनेका॥
रघु-पति-कटक भालु कपि जेते ❀ जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते॥
देखे कपिन्ह अमित दससीसा ❀ भाग भालु बिकल भट कीसा॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा ❀ त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा॥
दह दिसि कोटिन्ह धावहिं रावन ❀ गर्जहिं घोर कठोर भयावन॥
डरे सकल सुर चले पराई ❀ जय कै आस तजहु अब भाई॥
सब सुर जिते एक दसकंधर ❀ अब बहु भये तकहु गिरिकंदर॥
रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी ❀ जिन्ह जिन्ह प्रभुमहिमा कछु जानी॥

छन्द–जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे॥
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रनबाँकुरे।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपटभू भट अंकुरे॥

दोहा–सुर बानर देखे बिकल, हँसे कोसलाधीस।
सजि सारंग एक सर, हते सकल दससीस॥९६॥

प्रभु छन महुँ माया सब काटी ❀ जिमि रबि उयें जाहिं तम फाटी॥
रावनु एकु देखि सुर हरषे ❀ फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे॥
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे ❀ फिरे एक एकन्ह तब टेरे॥
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये ❀ तरल तमकि संजुगमहि आये॥
अस्तुति करत देव तेहि देखे ❀ भयउँ एक मैं इन्ह के लेखे॥
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल ❀ अस कहि कोपि गगनपथ धायल॥
हाहाकार करत सुर भागे ❀ खलहु जाहु कहँ मोरें आगे॥
बिकल देखि सुर अंगद धावा ❀ कूदि चरन गहि भूमि गिरावा॥

छन्द–गहि भूमि पार्‌यो लात मार्‌यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो॥
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधान सर बहु बरषई।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निजबल हरषई॥

दोहा–तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सर चाप।
काटे बहुत बढ़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप॥९७॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी ❀ भालुकपिन्ह रिस भई घनेरी॥
मरत न मूढ़ कटेहु भुज सीसा ❀ धाये कोपि भालु भट कीसा॥
बालितनय मारुति नल नीला ❀ बानरराज दुबिद बलसीला॥
बिटप महीधर करहिं प्रहारा ❀ सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा॥
एक नखन्ह रिपुबपुष बिदारी ❀ भागि चलहिं एक लातन्ह मारी॥
तब नल नील सिरन्ह चढ़ि गये ❀ नखन्ह लिलार बिदारत भये॥
रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी ❀ तिन्हहिं धरन कहँ भुजा पसारी॥
गहे न जाहिं करन्ह पर फिरहीं ❀ जनु जुग मधुप कमलबन चरहीं॥

कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❀ महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे ❀ सरन्ह मारि घायल कपि कीन्हे ॥
हनुमदादि मुरुछित करि बंदर ❀ पाइ प्रदोष हरष दसकंधर ॥
मुरुछित देखि सकल कपिबीरा ❀ जामवंत धायउ रनधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु धारी ❀ मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना ❀ गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥
देखि भालुपति निज-दल-घाता ❀ कोपि माँझ उर मारेसि लाता ॥
छन्द—उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ तें महि परा ।
गहि भालु बीसहु कर मनहुँ कमलन्ह बसे निसि मधुकरा ॥
मुरुछित बिलोकि बहोरि पदहति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।
निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत जतनु करत भयो ॥

दोहा--मुरुछा बिगत भालु कपि, सब आये प्रभु पास ।
निसिचर सकल रावनहिं, घेरि रहे अतित्रास ॥९८॥

तेही निसि सीता पहिं जाई ❀ त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी ❀ सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिंता ❀ त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥
होइहि काह कहसि किन माता ❀ केहि बिधि मरिहि बिस्व-दुख-दाता ॥
रघु-पति-सर सिर कटेहु न मरई ❀ बिधि बिपरीत चरित सब करई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही ❀ जेहिहौं हरि-पद-कमल बिछोही ॥
जेहि कृत कपट कनकमृग झूठा ❀ अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥
जेहि बिधि मोहि दुख दुसह सहाये ❀ लछिमन कहँ कटु बचन कहाये ॥
रघु-पति-बिरह सबिष सर भारी ❀ तकि तकि मार बार बहु मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❀ सोइ बिधि ताहि जिआव न आना ॥
बहु बिधि करति बिलाप जानकी ❀ करि करि सुरति कृपानिधान की ॥
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी ❀ उर सर लागत मरइ सुरारी ॥
प्रभु ता तें उर हतइ न तेही ❀ एहि के हृदय बसति बैदेही ॥
छन्द—एहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है ।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥

सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटा कहा ।
अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दोहा--काटत सिर होइहि बिकल, छुटि जाइहि तव ध्यान ।
तब रावन कहँ हृदय महँ, मरिहहिं राम सुजान ॥९९॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई ❀ पुनि त्रिजटा निजभवन सिधाई ॥
रामसुभाउ सुमिरि बैदेही ❀ उपजी बिरहब्यथा अति तेही ॥
निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती ❀ जुग सम भई न राति सिराती ॥
करति बिलाप मनहिं मन भारी ❀ रामबिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयउ बिरह उर दाहू ❀ फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥
सगुन बिचारि धरी मन धीरा ❀ अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा ॥
इहाँ अर्धनिसि रावन जागा ❀ निजसारथि सन खीझन लागा ॥
सठ रनभूमि छड़ायसि मोही ❀ धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥
तेहिं पद गहि बहु बिधि समुझावा ❀ भोर भये रथ चढ़ि पुनि धावा ॥
सुनि आगमन दसानन केरा ❀ कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी ❀ धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छंद—धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावन लियो ।
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि बिदारि तनु ब्याकुल कियो ॥

दोहा—देखि महा मर्कट प्रबल, रावन कीन्ह बिचार ।
अंतरहित होइ निमिष महुँ, कृतमाया बिस्तार ॥१००॥

तोमरछंद—जब कीन्ह तेहि पाखंड ❀ भये प्रगट जंतु प्रचंड ॥
बेताल भूत पिसाच ❀ कर धरे धनु नाराच ॥
जोगिनि गहे करवाल ❀ एक हाथ मनुजकपाल ॥
करि सद्य सोनित पान ❀ नाचहिं करहिं बहु गान ॥
धरु मारु बोलहिं घोर ❀ रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
मुख बाइ धावहिं खान ❀ तब लगे कीस परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि ❀ तहँ बरत देखहिं आगि ॥

भये बिकल बानर भालु ❀ पुनि लाग बरषै बालु ॥
जहँ तहँ थकित करि कीस ❀ गर्जेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीससमेत ❀ भये सकल बीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ ❀ कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
एहिबिधिसकलबल तोरि ❀ तेहि कीन्ह कपट बहोरि ॥
प्रगटेसि बिपुल हनुमान ❀ धाये गहे पाषान ॥
तिन्ह राम घेरे जाइ ❀ चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनि जाइ ❀ कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥
दस दिसि लँगूर बिराज ❀ तेहि मध्य कोसलराज ॥

छंद—तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्यामतन सोभा लही ।
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।
रघुबीर एकहि तीर कोपि निमेष महँ माया हरी ॥
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
सरनिकर छाड़े राम रावन-बाहु-सिर पुनि महि गिरे ॥
श्रीराम-रावन समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥

दोहा—ता के गुन गन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास ।
निज-पौरुष-अनुसार जिमि, मसक उड़ाहिं अकास ॥
काटे सिरभुज बार बहु, मरत न भट लंकेस ।
प्रभुक्रीड़तमुनि सिद्ध सुर, ब्याकुल देखि कलेस ॥ १०१ ॥

काटत बढ़हिं सीससमुदाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
मरइ न रिपु स्रम भयउ बिसेखा ❀ राम बिभीषनतन तब देखा ॥
उमा काल मरु जा की ईछा ❀ सोइ प्रभु जन कर प्रीतिपरीछा ॥
सुनु सर्बग्य चराचर नायक ❀ प्रनतपाल सुर-मुनि-सुख-दायक ॥
नाभीकुंड सुधा बस या कें ❀ नाथ जियत रावन बल ता कें ॥
सुनत बिभीषनबचन कृपाला ❀ हरषि गहे कर बान कराला ॥
असुभ होन लागे तब नाना ❀ रोवहिं बहु सृगाल खर स्वाना ॥

बोलहिं खग जग-आरति-हेतू ❀ प्रगट भये नभ जहँ तहँ केतू ॥
दस दिसि दाह होन अति लागा ❀ भयउ परब बिनु रबिउपरागा ॥
मंदोदरि उर कंपति भारी ❀ प्रतिमा स्रवहिं नयनमग बारी ॥
छन्द–प्रतिमा स्रवहिं पवि तात नभ अतिबात बहु डोलति मही ।
बरषहिं बलाहक रुधिरु कच रज असुभ अति सक को कही ॥
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जये ।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भये ॥

दोहा--खैंचि सरासन स्रवन लगि, छाड़े सर एकतीस ।
रघुनायक-सायक चले, मानहुँ काल फनीस ॥१०२॥

सायक एक नाभिसर सोखा ❀ अपर लगे सिर-भुज करि रोखा ॥
लै सिर बाहु चले नाराचा ❀ सिर-भुज-हीन रुंड महि नाचा ॥
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा ❀ तब प्रभु सर हति कृत जुग खंडा ॥
गर्जेउ मरत घोररव भारी ❀ कहाँ राम रन हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमि गिरत दसकंधर ❀ छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥
धरनि परेउ दोउ खंड बढ़ाई ❀ चापि भालु - मर्कट - समुदाई ॥
मंदोदरि आगे भुज सीसा ❀ धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥
प्रबिसे सब निषंग महुँ जाई ❀ देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभुआनन ❀ हरषे देखि संभु चतुरानन ॥
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा ❀ जय रघुबीर प्रबल-भुज-दंडा ॥
बरषहिं सुमन देव-मुनि-बृंदा ❀ जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥
छन्द--जय कृपाकंद मुकुंद द्वंदहरन सरन-सुख-प्रद प्रभो ।
खल-दल-बिदारन परमकारन कारुनीक सदा बिभो ॥
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही ।
संग्रामअंगन रामअंग अनंग बहु सोभा लही ।
सिर जटामुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरि पर तडित पटल समेत उडुगुन भ्राजहीं ॥
भुजदंड सरकोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने ।
जनु रायमुनी तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने ॥

दोहा--कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु, अभय किये सुरबृंद ।
भालु कीस सब हरषे, जय सुखधाम मुकुंद ॥१०३॥

पतिसिर देखत मंदोदरी ❀ मुरुछित बिकल धरनि खसि परी ॥
जुबतिबृंद रोवत उठि धाई ❀ तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥
पतिगति देखि ते करहिं पुकारा ❀ छूटे कच नहिं बपुष सँभारा ॥
उरताड़ना करहिं बिधि नाना ❀ रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरनी ❀ तेजहीन पावक ससि तरनी ॥
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा ❀ सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥
बरुन कुबेर सुरेस समीरा ❀ रन सनमुख धरि काहु न धीरा ॥
भुजबल जितेहु काल जम साईं ❀ आजु परेहु अनाथ की नाईं ॥
जगतबिदित तुम्हारि प्रभुताई ❀ सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥
रामबिमुख अस हाल तुम्हारा ❀ रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥
तव बस बिधिप्रपंच सब नाथा ❀ सभय दिसिप नित नावहिं माथा ॥
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं ❀ रामबिमुख यह अनुचित नाहीं ॥
कालबिवस पति कहा न माना ❀ अग-जग-नाथु मनुज करि जाना ॥

छन्द--जानेउ मनुज करि दनुज-कानन-दहन-पावक हरि स्वयं ।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
आजन्म तें पर-द्रोह-रत पापौघमय तव तनु अयं ।
तुम्हहूँ दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दोहा--अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपासिंधु नहिं आन ।
मुनिदुर्लभ जो परमगति, तोहि दीन्हि भगवान ॥१०४॥

मंदोदरीबचन सुनि काना ❀ सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥
अज महेस नारद सनकादी ❀ जे मुनिबर परमारथबादी ॥
भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी ❀ प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
रुदन करत देखीं सब नारी ❀ गयउ बिभीषन मन दुख भारी ॥
बंधुदसा बिलोकि दुख कीन्हा ❀ राम अनुज कहँ आयसु दीन्हा ॥
लछिमन तेहि बहुबिधि समुझायो ❀ बहुरि बिभीषन प्रभु पहिं आयो ॥

कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका ❀ करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
कीन्हि क्रिया प्रभुआयसु मानी ❀ विधिवत देस काल जिय जानी ॥

दोहा–मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि ।
भवन गईं रघुपति गुन, गन बरनत मन माहिं ॥१०५॥

आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो ❀ कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥
तुम्ह कपीस अंगद नल लीला ❀ जामवंत मारुति नयसीला ॥
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा ❀ सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
पिताबचन मैं नगर न आवौं ❀ आपु सरिस कपि अनुज पठावौं ॥
तुरत चले कपि सुनि प्रभुबचना ❀ कीन्ही जाइ तिलक कै रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी ❀ तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि पानि सबहीं सिर नाये ❀ सहित बिभीषन प्रभु पहिं आये ॥
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे ❀ कहि प्रियबचन सुखी सब कीन्हे ॥

छन्द–किये सुखी कहि बानी सुधासम बल तुम्हारे रिपु हयो ।
पायो बिभीषन राजु तिहुँ पुर जस तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जे गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

दोहा–प्रभु के बचन स्रवन सुनि, नहिं अघाहिं कपिपुंज ।
बार बार सिर नावहीं, गहहिं सकल पदकंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना ❀ लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु ❀ तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥
तब हनुमंत नगर महुँ आये ❀ सुनि निसिचरी निसाचर धाये ॥
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही ❀ जनकसुता दिखाइ पुनि दीन्ही ॥
दूरिहिं तें प्रनाम कपि कीन्हा ❀ रघुपति-दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❀ कुसल अनुज-कपि-सेन-समेता ॥
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा ❀ मातु समर जीतेउ दससीसा ॥
अबिचल राजु बिभीषन पावा ❀ सुनि कपिबचन हरष उर छावा ॥

छन्द–अतिहरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।
का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायउँ अखिल-जग-राजु आजु न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधुगत पस्यामि राममनामयं ॥

दोहा—सुनु सुत सदगुन सकल तव, हृदय बसहु हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता ❀ देखौं नयन स्याम मृदुगाता ॥
तब हनुमान राम पहिं जाई ❀ जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥
सुनि संदेस भानु-कुल-भूषन ❀ बोलि लिये जुबराज बिभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु ❀ सादर जनकसुतहिं लै आवहु ॥
तुरतहिं सकल गये जहँ सीता ❀ सेवहिं सब निसिचरी बिनीता ॥
बेगि बिभीषन तिन्हहिं सिखावा ❀ सादर तिन्ह सीतहिं अन्हवावा ॥
बहु प्रकार भूषन पहिराये ❀ सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये ॥
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही ❀ सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
बेतपानि रच्छक चहुँ पासा ❀ चले सकल मन परम हुलासा ॥
देखन भालु कीस सब आये ❀ रच्छक कोपि निवारन धाये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु ❀ सीतहिं सखा पयादें आनहु ॥
देखहिं कपि जननी की नाईं ❀ बिहँसि कहा रघुनाथ गुसाईं ॥
सुनि प्रभुबचन भालु कपि हरषे ❀ नभ तें सुरन्ह सुमन बहु बरषे ॥
सीता प्रथम अनल महुँ राखी ❀ प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी ॥

दोहा—तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत जातुधानी सब, लागीं करै बिषाद ॥१०८॥

प्रभु के बचन सीस धरि सीता ❀ बोली मन-क्रम-बचन-पुनीता ॥
लछिमन होहु धरम के नेगी ❀ पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥
सुनि लछिमन सीता कै बानी ❀ बिरह-बिबेक- धरम - जुति - सानी ॥
लोचन सजल जोरि कर दोऊ ❀ प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ ॥
देखि रामरुख लछिमन धाये ❀ पावक प्रगटि काठ बहु लाये ॥
पावक प्रबल देखि बैदेही ❀ हृदय हरष कछु भय नहिं तेही ॥
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं ❀ तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृसानु सब कै गति जाना ❀ मो कहँ होहु श्रीखंड समाना ॥

छन्द–श्री-खंड-सम पावक प्रबेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली।
जय कोसलेस महेस-बंदित-चरन रति अतिनिर्मली॥
प्रतिबिंब अरु लौकिककलंक प्रचंड पावक महुँ जरे।
प्रभुचरित काहु न लखे सुर नभ सिद्ध मुनि देखहिं खरे॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य स्तुति जग विदित जो।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहिं समर्पी आनि सो॥
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अतिसोभा भली।
नवनील-नीरज निकट मानहुँ कनक-पंकज की कली॥

दोहा--बरषहिं सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किन्नर सुरबधू, नाचहिं चढ़ीं बिमान॥
श्रीजानकी-समेत प्रभु, सोभा अमित अपार।
देखत हरषे भालु कपि, जय रघुपति सुखसार॥१०९॥

तब रघुपति-अनुसासन पाई ❀ मातलि चलेउ चरन सिरु नाई॥
आये देव सदा स्वारथी ❀ बचन कहहिं जनु परमारथी॥
दीनबंधु दयाल रघुराया ❀ देव कीन्ह देवन्ह पर दाया॥
बिस्व-द्रोह-रत यह खल कामी ❀ निज अघ गयउ कुमारगगामी॥
तुम्ह सम रूप ब्रह्म अबिनासी ❀ सदा एक रस सहज उदासी॥
अकल अगुन अघ अनघ अनामय ❀ अजित अमोघसक्ति करुनामय॥
मीन कमठ सूकर नरहरी ❀ बामन परसुराम बपु धरी॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा ❀ नानातनु धरि तुम्हहिं नसावा॥
रावन पापमूल सुरद्रोही ❀ काम-लोभ-मदरत अति कोही॥
सोउ कृपाल तव धाम सिधावा ❀ यह हमरे मन बिसमय आवा॥
हम देवता परम अधिकारी ❀ स्वारथरत तव भगति बिसारी॥
भवप्रवाह संतत हम परे ❀ अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे॥

दोहा--करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ कर जोरि।
अतिसम प्रेम सरोज-भव, अस्तुति करत बहोरि॥११०॥

छंद तोटक–जय राम सदा सुख धाम हरे ❀ रघुनायक सायक-चाप-धरे।
भव-बारन-दारन सिंह प्रभो ❀ गुनसागर नागर नाथ बिभो॥

तन काम अनेक अनूप छवी ❀ गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कवी ।
जसु पावन रावन नाग महा ❀ खगनाथ जथाकरि कोप गहा ॥
जनरंजन भंजन सोक भयं ❀ गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।
अवतार उदार अपारगुनं ❀ महि-भार-बिभंजन ग्यानघनं ॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा ❀ करुनाकर राम नमामि मुदा ॥
रघु-बंस-बिभूषन दूषनहा ❀ कृत भूप बिभीषन दीन रहा ॥
गुन-ग्यान-निधान अमान अजं ❀ नित राम नमामि बिभुं बिरजं ॥
भुज - दंड - प्रचंड - प्रताप - बलं ❀ खल - बृंद - निकंद - महा - कुसलं ॥
बिनु कारन दीनदयाल हितं ❀ छबि धाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारन कारन काजपरं ❀ मन - संभव - दारुन - दोष - हरं ॥
सर चाप मनोहर त्रोनधरं ❀ जल - जारुन - लोचन भूपबरं ॥
सुखमंदिर सुंदर श्रीरमनं ❀ मद मार मुधा -ममता-समनं ॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो ❀ सब रूप सदा सब होइ न सो ॥
इति बेद बदंति न दंतकथा ❀ रवि आतपभिन्न न भिन्न जथा ॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ए ❀ निरखंत तवानन सादर जे ॥
धिगजीवन देव सरीर हरे ❀ तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयाल दया करिये ❀ मति मोरि बिभेदकरी हरिये ॥
जेहि तें बिपरीत क्रिया करिये ❀ दुख सो सुख मानि सुखी चरिये ॥
खलखंडन मंडन रम्य छमा ❀ पद-पंक-ज सेवित संभु उमा ॥
नृपनायक दे बरदानमिदं ❀ चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥

दोहा—बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात ।
सोभा सिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात ॥१११॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आये ❀ तनय बिलोकि नयन जल छाये ॥
अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा ❀ आसिर्बाद पिता तब दीन्हा ॥
तात सकल तव पुन्यप्रभाउ ❀ जीतेउँ अजय निसा-चर-राउ ॥
सुनि सुतबचन प्रीति अति बाढ़ी ❀ नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितइ पितहिं दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥
तातें उमा मोच्छ नहिं पावा ❀ दसरथ भेदभगति मन लावा ॥

सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं ❀ तिन्ह कहँ रामु भगति निजदेहीं ॥
बार बार करि प्रभुहिं प्रनामा ❀ दसरथ हरषि गये सुरधामा ॥

दोहा–अनुज-जानकी-सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस ।
सोभा देखि हरषि मन, अस्तुति कर सुरईस ॥११२॥

छन्दतोमर–जय राम सोभाधाम ❀ दायक प्रनत बिस्राम ॥
धृत त्रोन वर सर चाप ❀ भुद दंड प्रवल प्रताप ॥
जय दूषनारि खरारि ❀ मर्दन-निसा-चर-धारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ ❀ भये देव सकल सनाथ ॥
जय हरन धरनीभार ❀ महिमा उदार अपार ॥
जय रावनारि कृपाल ❀ किये जातुधान बिहाल ॥
लंकेस अति बल गर्व ❀ किये वस्य सुर गंधर्व ॥
मुनि सिद्ध खग नर नाग ❀ हठि पंथ सब के लाग ॥
पर-द्रोह-रत अतिदुष्ट ❀ पायो सो फल पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीनदयाल ❀ राजीव-नयन-बिसाल ॥
मोहि रहा अति अभिमान ❀ नहिं कोउ मोहि समान ॥
अब देखि प्रभु-पद-कंज ❀ गत मानप्रद दुखपुंज ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव ❀ अव्यक्त जेहि स्रुति गाव ॥
मोहि भाव कोसलभूप ❀ श्रीराम सगुनसरूप ॥
बैदेहि – अनुज – समेत ❀ मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहि जानिये निजदास ❀ दे भगति रमानिवास ॥

छन्द–दे भक्ति रमानिवास त्रासहरन सरन-सुख-दायकं ।
सुखधाम राम नमामि काम अनेकछबि रघुनायकं ॥
सुर-बृंद-रंजन द्वन्दभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादि-संकर-सेव्य राम नमामि करुनाकोमलं ॥

दोहा–अब करि कृपा बिलोकि मोहि, आयस देहु कृपाल ।
काह करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीनदयाल ॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे ❀ परे भूमि निसिचरन्ह जे मारे ॥
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना ❀ सकल जियाउ सुरेस सुजाना ॥

सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी ❀ अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी ॥
प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई ❀ केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधा बरषि कपि भालु जियाये ❀ हरषि उठे सब प्रभु पहिं आये ॥
सुधा बृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर ❀ जिये भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
रामाकार भये तिन्ह के मन ❀ मुक्त भये छूटे भवबंधन ॥
सुरअंसक सबकपि अरु रीछा ❀ जिये सकल रघुपति की ईछा ॥
रामसरिस को दीन-हित-कारी ❀ कीन्हे मुक्त निसाचर-झारी ॥
खल मलधाम कामरत रावन ❀ गति पाई जो मुनिवर पाव न ॥

दोहा--सुमन बरषि सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।
देखि सुअवसर राम पहिं, आये संभु सुजान ॥
परमप्रीति कर जोरि जुग, नलिननयन भरि बारि ।
पुलकिततन गदगदगिरा, बिनय करत त्रिपुरारि ॥११४॥

छन्द--मामभिरक्षय रघुकुल नायक ❀ धृत-बर-चाप रुचिर-कर-सायक ॥
मोह महा घनपटल प्रभंजन ❀ संसय - बिपिन-अनल सुररंजन ॥
सगुन अगुन गुनमंदिर सुंदर ❀ भ्रम - तम-प्रबल - प्रताप - दिवाकर ॥
काम - क्रोध - मद - गज-पंचानन ❀ बसहु निरंतर जन-मन-कानन ॥
बिषय - मनोरथ - पुंज - कंज - बन ❀ प्रबलतुषार उदार पार मन ॥
भव - बारिधि - मंदर परमंदर ❀ बारय तारय संसृति दुस्तर ॥
स्यामगात राजीवबिलोचन ❀ दीनबंधु प्रनतारतिमोचन ॥
अनुज-जानकी-सहित निरंतर ❀ बसहु राम नृप मम उरअंतर ॥
मुनिरंजन महि - मंडल - मंडन ❀ तुलसि - दास-प्रभु त्रासबिखंडन ॥

दोहा--नाथ जबहिं कोसलपुरी, होइहि तिलक तुम्हार ।
कृपासिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार ॥११५॥

करि बिनती जब संभु सिधाये ❀ तब प्रभु निकट बिभीषन आये ॥
नाइ चरन सिर कह मृदु बानी ❀ बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी ॥
सकुल सदल प्रभु रावन मारा ❀ पावन जसु त्रिभुवन बिस्तारा ॥
दीन मलीन हीनमति जाती ❀ मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥
अब जनगृह पुनीत प्रभु कीजे ❀ मज्जन करिय समरस्रम छीजे ॥

देखि कोस मंदिर संपदा ❀ देहु कृपाल कपिन्ह कहँ मुदा ॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाइय ❀ पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइय ॥
सुनत बचन मृदु दीनयाला ❀ सजल भये दोउ नयन बिसाला ॥

दोहा--तोर कोस गृह मोर सब, सत्य बचन सुनु भ्रात ।
दसा भरत सुमिरत मोहि, निमिष कल्पसम जात ॥
तापस बेष गात कृस, जपत निरंतर मोहि ।
देखौं बेगि सो जतन करु, सखा निहोरउँ तोहि ॥
बीते अवधि जाउँ जौं, जियत न पावउँ बीर ॥
सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि पुनि पुलक सरीर ।
करेहु कल्प भरि राज तुम्ह, मोहि सुमिरेहु मन माहिं ॥
पुनि मम धाम पाइहहु, जहाँ संत सब जाहिं ॥११६॥

सुनत बिभीषन बचन राम के ❀ हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥
बानर भालु सकल हरषाने ❀ गहि प्रभुपद गुन बिमल बखाने ॥
बहुरि बिभीषन भवन सिधावा ❀ मनि-गन-बसन बिमान भरावा ॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा ❀ हँसि करि कृपासिंधु तब भाखा ॥
चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन ❀ गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥
नभ पर जाइ बिभीषन तबहीं ❀ बरषि दिये मनि अंबर सबहीं ॥
जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं ❀ मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
हँसे राम श्री - अनुज - समेता ❀ परमकौतुकी कृपानिकेता ॥

दोहा--मुनि जेहि ध्यान न पावहिं, नेति नेति कह बेद ।
कृपा-सिंधु सोइ कपिन्ह सन, करत अनेक बिनोद ॥
उमा जोग जप दान तप, नाना ब्रत मख नेम ।
रामकृपा नहिं करहिं तसि, जसि निस्केवल प्रेम ॥११७॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाये ❀ पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आये ॥
नाना जिनिस देखि प्रभु कीसा ❀ पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥

चितइ सबन्ह पर कीन्ही दाया ❀ बोले मृदुल बचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावन मारा ❀ तिलक बिभीषन कहुँ पुनि सारा ॥
निज-निज-गृह अब तुम्ह सब जाहू ❀ सुमिरेहु मोहि डरपेहु जनि काहू ॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर ❀ जोरी पानि बोले सब सादर ॥
प्रभु जोइ कहहु तुम्हहिं सब सोहा ❀ हमरे होत बचन सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा ❀ तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥
सुनि प्रभुबचन लाज हम मरहीं ❀ मसक कतहुँ खगपति-हित करहीं ॥
देखि रामरुख बानर रीछा ❀ प्रेममगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दोहा—प्रभुप्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उर राखि ।
हरष बिषाद सहित चले, बिनय बिबिध बिधि भाषि ॥
कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान ।
सहित बिभीषन अपर जे, जूथप कपि बलवान ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमबस, भरि भरि लोचन बारि ।
सनमुख चितवहिं रामतन, नयननिमेष निवारि ॥११८॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई ❀ लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥
मन महुँ बिप्रचरन सिरु नावा ❀ उत्तर दिसिहिं बिमान चलावा ॥
चलत बिमान कोलाहल होई ❀ जय रघुबीर कहहिं सब कोई ॥
सिंहासनु अतिउच्च मनोहर ❀ श्रीसमेत प्रभु बैठ ता पर ॥
राजत रामसहित भामिनी ❀ मेरुसृंग जनु घनु दामिनी ॥
रुचिर बिमान चलेउ अतिआतुर ❀ कीन्ही सुमनबृष्टि हरषे सुर ॥
परम-सुख-द चलि त्रिबिध बयारी ❀ सागर सर सरि निर्मल बारी ॥
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा ❀ मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥
कह रघुबीर देखु रन सीता ❀ लछिमन इहाँ हतेउ इंद्रजीता ॥
हनूमान अंगद के मारे ❀ रन महि परे निसाचर भारे ॥
कुंभकरन रावन दोउ भाई ❀ इहाँ हते सुर - मुनि - दुखदाई ॥

दोहा--इहाँ सेतु बाँधेउँ अरु, थापेउँ सिव सुखधाम ।
सीतासहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
जहँ जहँ करुनासिंधु बन, कीन्ह बास बिस्राम ।
सकल देखाये जानकिहिं, कहे सबन्हि के नाम ११९॥

सपदि बिमान तहाँ चलि आवा ❀ दंडकबन जहँ परम सुहावा ॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना ❀ गये राम सब के अस्थाना ॥
सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा ❀ चित्रकूट आयउ जगदीसा ॥
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोखा ❀ चला बिमान तहाँ ते चोखा ॥
बहुरि राम जानकिहि देखाई ❀ जमुना कलि-मल-हरनि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ❀ राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा ❀ देखत जनम-कोटि-अघ भागा ॥
देखु परमपावनि पुनि बेनी ❀ हरनि सोक हरि-लोक-निसेनी ॥
पुनि देखु अवधपुरी अतिपावनि ❀ त्रिबिध-ताप भवरोग नसावनि ॥

दोहा--सीतासहित अवध कहुँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषत राम ॥
बहुरि त्रिबेनी आइ प्रभु, हरषित मज्जनु कीन्ह ।
कपिन्ह सहित बिप्रन्ह कहँ, दान बिबिधबिधि दीन्ह ॥१२०॥

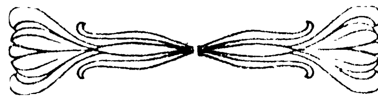
प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई ❀ धरि बटुरूप अवधपुर जाई ॥
भरतहिं कुसल हमारि सुनायहु ❀ समाचार लै तुम्ह चलि आयहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ ❀ तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही ❀ अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ॥
मुनिपद बंदि जुगल कर जोरी ❀ चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहाँ निषाद सुना हरि आये ❀ नाव नाव कहँ लोग बोलाये ॥
सुरसरि नाँघि जान जब आवा ❀ उतरेउ तट प्रभुआयसु पावा ॥
तब सीता पूजि सुरसरी ❀ बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा ❀ सुंदरि तब अहिवात अभंगा ॥

सुनत गुहा धायेउ प्रेमाकुल ❀ आयउ निकट परम-सुख-संकुल ॥
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही ❀ परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥
प्रीति परम बिलोकि रघुराई ❀ हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

छन्द--लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती ।
बैठारि परमसमीप बूझी कुसल सो कर बीनती ॥
अब कुसल पदपंकज बिलोकि बिरंचि-संकर-सेव्य जे ।
सुखधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबस बिसराइयो ॥
यह रावनारिचरित्र पावन राम-पद-रति-प्रद सदा ।
कामादिहर बिग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥

दोहा--समर बिजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिं सुजान ।
बिजय बिबेक बिभूति नित, तिन्हहिं देहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार ।
श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहिं न आन अधार ॥१२१॥

इति लङ्काकाण्ड समाप्त ।

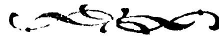


श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

उत्तरकाण्ड



श्लोकाः

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् । पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥ कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥ कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् । कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दोहा--रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुरलोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृसतन रामबियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभुआगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौशल्यादि मातु सब, मन अनंद अस होइ ।
आयउ प्रभु सिय-अनुज-युत, कहन चहत अब कोइ ॥
भरत-नयन-भुज दच्छिन, फरकत बारहिं बार ।
जानि सगुन मनहरष अति, लागे करन बिचार ॥१॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा ❀ समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
कारन कवन नाथ नहिं आये ❀ जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराये ॥
अहह धन्य लछिमन बड़ भागी ❀ राम - पदारविंदु - अनुरागी ॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा ❀ ता तें नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जौं करनी समुझहिं प्रभु मोरी ❀ नहिं निस्तार कलपसत कोरी ॥
जनअवगुन प्रभु मान न काऊ ❀ दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई ❀ मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥
बीते अवधि रहहिं जौं प्राना ❀ अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दोहा--राम-बिरह-सागर महँ, भरत मगन मन होत ।
बिप्ररूपधरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत ॥
बैठे देखि कुसासन, जटामुकुट कृसगात ।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात ॥१॥

देखत हनूमान अति हरषेउ ❀ पुलकगात लोचनजल बरषेउ ॥
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी ❀ बोलेउ स्रवन-सुधा-सम बानी ॥
जासु बिरह सोचहु दिन राती ❀ रटहु निरंतर गुन-गन-पाँती ॥
रघु-कुल-तिलक सु-जन-सुख-दाता ❀ आयउ कुसल देव-मुनि-त्राता ॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत ❀ सीता अनुज सहित पुर आवत ॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा ❀ तृषावंत जिमि पाव पियूखा ॥
को तुम्ह तात कहाँ तें आये ❀ मोहि परम प्रिय बचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना ❀ नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबंधु रघुपति कर किंकर ❀ सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता ❀ नयन स्रवत जल पुलकित गाता ॥
कपि तव दरस सकल दुख बीते ❀ मिले आजु मोहि राम पिरीते ॥
बार बार बूझी कुसलाता ❀ तो कहँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥
एहि संदेससरिस जग माहीं ❀ करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं ॥
नाहिं न तात उरिन मैं तोही ❀ अब प्रभुचरित सुनावहु मोही ॥
तब हनुमंत नाइ पद माथा ❀ कहे सकल रघु-पति-गुन-गाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपाल गुसाईं ❀ सुमिरहिं मोहि दास की नाईं ॥

छन्द—निज दास ज्यों रघु-बंस-भूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।
सुनि भरतबचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो ॥
रघुबीर निजमुख जासु गुनगन कहत अग-जग-नाथ जो ।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सद-गुन-सिंधु सो ॥

दोहा—राम-प्रान-प्रिय नाथ तुम्ह, सत्य बचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि, हरष न हृदय समात ॥

सोरठा—भरतबचन सिरु नाइ, तुरित गयउ कपि राम पहिं ।
कही कुसल सब जाइ, हरषि चले प्रभु जान चढ़ि ॥२॥

हरषि भरत कोसलपुर आये ❀ समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मंदिर महँ बात जनाई ❀ आवत नगर कुसल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाईं ❀ कहि प्रभुकुसल भरत समुझाई ॥
समाचार पुरबासिन्ह पाये ❀ नर अरु नारि हरषि सब धाये ॥
दधि दुर्बा रोचन फल फूला ❀ नव तुलसीदल मंगलमूला ॥
भरि भरि हेमथार भामिनी ❀ गावत चलीं सिंधुरगामिनी ॥
जो जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं ❀ बाल बृद्ध कहँ संग न लावहिं ॥
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई ❀ तुम्ह देखे दयाल रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी ❀ भई सकल सोभा कै खानी ॥
बहइ सरजू अति-निर्मल-नीरा ❀ बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा ॥

दोहा—हरषित गुरु परिजन अनुज भू-सुर-बृंद-समेत ।
चले भरत अतिप्रेम मन, सनमुख कृपानिकेत ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन बिमान ।
देखि मधुर सुर हरषित, करहिं सुमंगल गान ॥
राकाससि रघुपति पुर, सिंधु देखि हरषान ।
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु, नारि-तरंग-समान ॥३॥

इहाँ भानु-कुल-कमल-दिवा-कर ❀ कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥
सुनु कपीस अंगद लंकेसा ❀ पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना ❀ बेद-पुरान-बिदित जग जाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ ❀ यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जनमभूमि मम पुरी सुहावनि ❀ उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ॥
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा ❀ मम समीप नर पावहिं बासा ॥
अतिप्रिय मोहि इहाँ के बासी ❀ मम धामदा पुरी सुखरासी ॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभुबानी ❀ धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दोहा–आवत देखि लोग सब, कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ, उतरेउ भूमि बिमान ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो, हरष बिरहु अति ताहु ॥४॥

आये भरत संग सब लोगा ❀ कृतसन श्री-रघु-बीर-बियोगा ॥
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक ❀ देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
धाइ धरे गुरु-चरन-सरोरुह ❀ अनुजसहित अति-पुलक-तनोरुह ॥
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया ❀ हमरे कुसल तुम्हारिहि दाया ॥
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा ❀ धरम-धुरं-धर रघु-कुल-नाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभु-पद-पंकज ❀ नमत जिन्हहिं सुर मुनि संकर अज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये ❀ बर करि कृपासिंधु उर लाये ॥
स्यामलगात रोम भये ठाढ़े ❀ नव-राजीव-नयन जल बाढ़े ॥

छन्द–राजीवलोचन स्रवत जल तन ललिता पुलकावलि बनी।
अतिप्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रि-भुवन-धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुखमा लही ॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचनमन तें भिन्न जान जो पावई ॥
अब कुसल कोसलनाथ आरत जाति जन दरसन दियो।
बूड़त बिरहबारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥

दोहा–पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब, परम प्रेम दोउ भाइ ॥५॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे ❀ दुसह विरहसंभव दुख मेटे ॥
सीताचरन भरत सिरु नावा ❀ अनुजसमेत परमसुख पावा ॥
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी ❀ जनित बियोग बिपति सब नासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी ❀ कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला ❀ जथाजोग मिले सबहिं कृपाला ॥
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी ❀ किये सकल नर नारि बिसोकी ॥
छन महुँ सबहिं मिले भगवाना ❀ उमा मरमु यह काहु न जाना ॥
एहि बिधि सबहिं सुखी करि रामा ❀ आगे चले सील - गुन - धामा ॥
कौसल्यादि मातु सब धाईं ❀ निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं ॥

छन्द—जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं ।
दीनअंत पुरु रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटी बचन मृदु बहु बिधि कहे ।
गइ बिषम बिपति बियोगभव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे ॥

दोहा--भेंटेउ तनय सुमित्रा, राम - चरन-रति जानि ।
रामहिं मिलत कैकई, हृदय बहुत सकुचानि ॥
लछिमन सब मातन्ह मिलि, हरषे आसिष पाइ ।
कैकेई कहँ पुनि मिले, मन कर छोभ न जाइ ॥ ६ ॥

सासुन्ह सबन्ह मिली बैदेही ❀ चरनन्हि लागि हरष अति तेही ॥
देहिं असीस बूझि कुसलाता ❀ होहु अचल तुम्हार अहिवाता ॥
सब रघु-पति-मुख-कमल बिलोकहिं ❀ मंगल जानि नयनजल रोकहिं ॥
कनकथार आरती उतारहिं ❀ बार बार प्रभुगात निहारहिं ॥
नाना भाँति निछावरि करहीं ❀ परमानंद हरष उर भरहीं ॥
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं ❀ चितवति कृपासिंधु रनधीरहिं ॥
हृदय बिचारति बारहिं बारा ❀ कवन भाँति लंकापति मारा ॥
अतिसुकुमार जुगल मेरे बारे ❀ निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दोहा--लछिमन अरु सीतासहित, प्रभुहिं बिलोकति मात ।
परमानंद-मगन-मन, पुनि पुनि पुलकितगात ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला ❀ जामवंत अंगद सुभसीला ॥
हनुमदादि सब बानरबीरा ❀ धरे मनोहर मनुजसरीरा ॥
भरत - सनेह - सील - ब्रत - नेमा ❀ सादर सब बरनहिं अतिप्रेमा ॥
देखि नगरबासिन्ह कै रीती ❀ सकल सराहहिं प्रभु-पद-प्रीती ॥
पुनि रघुपति सब सखा बोलाये ❀ मुनिपद लागहु सकल सिखाये ॥
गुरु बसिष्ठ कुलपूज्य हमारे ❀ इन्ह की कृपा दनुज रन मारे ॥
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे ❀ भये समरसागर कहँ बेरे ॥
मम हित लागि जनम इन्ह हारे ❀ भरतहुँ तें मोहि अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ निमिष निमिष उपजत सुख नये ॥

दोहा—कौसल्या के चरनन्हि, पुनि तिन्ह नायेउ माथ ।
आसिष दीन्ही हरषि तुम्ह, प्रिय मम जिय रघुनाथ ॥
सुमनवृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि-बर-बृंद ॥८॥

कंचनकलस बिचित्र सँवारे ❀ सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥
बंदनवार पताका केतू ❀ सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
बीथी सकल सुगंध सिंचाई ❀ गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥
नाना भाँति सुमंगल साजे ❀ हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ❀ देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना ❀ जुवती सजे करहिं सुभ गाना ॥
करहिं आरती आरतिहर कें ❀ रघुकुल-कमल-बिपिन-दिन-कर कें ॥
पुरसोभा संपति कल्याना ❀ निगम सेष सारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं ❀ उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

दोहा--नारि कुमुदिनी अवध सर, रघु-पति-बिरह दिनेस ।
अस्त भये बिगसत भईं, निरखि राम राकेस ॥
होंहि सगुन सुभ बिबिध बिधि, बाजहिं गगन निसान ।
पुर-नर-नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥९॥

प्रभु जानी कैकई लजानी ❀ प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोध बहुत सुख दीन्हा ❀ पुनि निज भवन गवँन हरि कीन्हा ॥

कृपासिंधु जब मंदिर गये ❀ पुर - नर - नारि सुखी सब भये ॥
गुरु बसिष्ठ द्विज लिये बोलाई ❀ आज सुघरी सुदिन सुभदाई ॥
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन ❀ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि बसिष्ठ के बचन सुहाये ❀ सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाये ॥
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका ❀ जगअभिराम रामअभिषेका ॥
अब मुनिवर बिलंबु नहिं कीजै ❀ महाराज कहुँ तिलक करीजै ॥

दोहा-तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ हरषाइ ।
रथ अनेक बहु बाजि गज, तुरत सँवारेउ जाइ ॥
जहँ तहँ धावन पठइ पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ ।
हरष समेत बसिष्ठपद, पुनि सिरु नायेउ आइ ॥१०॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई ❀ देवन्ह सुमनबृष्टि झरि लाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बोलाई ❀ प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाये ❀ सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुनानिधि भरत हँकारे ❀ निज कर राम जटा निरुवारे ॥
अन्हवाये प्रभु तीनिउँ भाई ❀ भगतबछल कृपाल रघुराई ॥
भरतभाग्य प्रभु - कोमल - ताई ❀ सेष कोटि सत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिबराये ❀ गुरु अनुसासन माँगि नहाये ॥
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे ❀ अंग अनंग कोटि छबि लाजे ॥

दोहा--सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ।
दिव्य बसन बर भूषन, अँग अँग सजे बनाइ ॥
राम-बाम-दिसि सोभित, रमारूप गुनखानि ।
देखि मातु सब हरषीं, जनम सुफल निज जानि ॥
सुनु खगेस तेहि अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिबृंद ।
चढ़ि बिमान आये सब, सुर देखन सुखकंद ॥११॥

प्रभु बिलोक मुनि मन अनुरागा ❀ तुरत दिव्य सिंहासन माँगा ॥
रबिसम तेज सो बरनि न जाई ❀ बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई ॥
जनक - सुता - समेत रघुराई ❀ पेखि प्रहरषे मुनिसमुदाई ॥
बेदमंत्र तब द्विजन्ह उचारे ❀ नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥

प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा ❀ पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥
सुत बिलोकि हरषीं महतारी ❀ बार बार आरती उतारी ॥
बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे ❀ जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रि-भुवन-साईं ❀ देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं ॥

छंद—नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्ब किन्नर गावहीं।
नाचहिं अपछराबृंद परमानन्द सुर मुनि पावहीं ॥
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहे छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते ॥
श्रीसहित दिन-कर-बंस-भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव-अंबु-धर-बर-गात अंबर पीत मुनिमन मोहई ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोजनयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंत जे ॥

दोहा—वह सोभा समाज सुख, कहत न बनै खगेस।
बरनै सारद सेष स्रुति, सो रस जान महेस ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गये सुर निज निज धाम।
बंदिबेष धरि बेद तब, आये जहँ श्रीराम ॥
प्रभु सर्वग्य कीन्ह अति, आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहू मरमु कछु, लगे करन गुनगान ॥१२॥

छंद—जय सगुन निर्गुनरूप रूपअनूप भूप-सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने ॥
अवतार नर संसारभार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्तसक्ति नमामहे ॥
तव बिषम मायावस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भवपंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुनन्हि भरे ॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिध दुख ते निर्बहे।
भव-खेद-छेदन-दच्छ हम कहँ रच्छ राम नमामहे ॥
जे ग्यान-मान-बिमत्त तव भवहरनि भगति न आदरी।
ते पाइ सुर-दुर्लभ-पदादपि परत हम देखत हरी ॥

विस्राम करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु स्रम तरहिं भवनाथ सोइ स्मरामहे॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नखनिर्गता मुनिवंदिता त्रै-लोक्य-पावनि सुरसरी॥
ध्वज-कुलिस-अंकुस-कंज-जुत बन फिरत कंटकिन लहे।
पद-कंज-द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे॥
अव्यक्त-मूल-मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंचवीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल विधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आस्रित रहे।
पल्लवत फूलत नव ललित संसारबिटप नमामहे॥
जे ब्रह्म अजमद्वैत-मनु-भव-गम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर माँगहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥

दोहा—सब के देखत बेदन्ह, बिनती कीन्हि उदार।
अंतरधान भये पुनि, गये ब्रह्मआगार॥
बैनतेय सुनु संभु तब, आये जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा, पूरित पुलक सरीर॥१३॥

तोमरछन्द-जय रामरमा रमनं समनं ❀ भव-ताप-भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो ❀ सरनागत माँगत पाहि प्रभो॥
दस-सीस-बिनासन बीस भुजा ❀ कृत दूरि महा-महि-भूरि-रुजा॥
रजनी-चर-बृंद-पतंग रहे ❀ सर-पावक-तेज प्रचंड दहे॥
महि-मंडल-मंडल चारुतरं ❀ धृत-सायक-चाप-निषंग-बरं॥
मद मोह महा ममता रजनी ❀ तमपुंज दिवाकर-तेज-अनी॥
मन जात किरात निपात किये ❀ मृग लोग कुभोग सरेन हिये॥
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे ❀ बिषयावन पाँवर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये ❀ भवदंघ्रिनिरादर के फल ये॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते ❀ पद-पंकज-प्रेम न जे करते॥

अतिदीन मलीन दुखी नितहीं ❀ जिनके पदपंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह के ❀ प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा ❀ तिन्ह के सम वैभव वा विपदा ॥
एहि तें तव सेवक होत मुदा ❀ मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये ❀ पदपंकज सेवित सुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदरहीं ❀ सब संत सुखी विचरंति मही ॥
मुनि-मानस-पंकज-भृंग भजे ❀ रघुवीर महा-रन-धीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी ❀ भवरोग महा मद मान अरी ॥
गुनसील कृपापरमायतनं ❀ प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं ❀ महिपाल विलोकय दीनजनं ॥

दोहा–बार बार बर माँगउँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पद-सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति रामगुन, हरषि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाये, सब विधि सुखप्रद बास ॥१४॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी ❀ त्रिविध ताप भव-भय-दावनी ॥
महाराज कर सुभ अभिषेका ❀ सुनत लहहिं नर विरति विवेका ॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ❀ सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥
सुरदुर्लभ सुख करि जग माहीं ❀ अंतकाल रघु-पति-पुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त बिरत अरु बिषई ❀ लहहिं भगति गति संपति नई ॥
खगपति राम कथा मैं बरनी ❀ स्व-मति-विलास त्रास-दुख-हरनी ॥
विरति विवेक भगति दृढ़ करनी ❀ मोह नदी कहँ सुंदर तरनी ॥
नित नव मंगल कोसलपुरी ❀ हरषित रहहिं लोग सब पुरी ॥
नित नइ प्रीति राम-पद-पंकज ❀ सबकेजिन्हहिं नमत सिव मुनिअज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये ❀ द्विजन्ह दान नाना विधि पाये ॥

दोहा–ब्रह्मानंदमगन कपि, सब के प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह, गये मास षट बीति ॥१५॥

विसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं ❀ जिमि पर द्रोह संत मन माहीं ॥
तब रघुपति सब सखा बोलाये ❀ आइ सबन्हि सादर सिर नाये ॥

परम प्रीति समीप बैठारे ❀ भरत सुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई ❀ मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई ॥
ता तें मोहि तुम्ह अतिप्रिय लागे ❀ मम हित लागि भवन सुख त्यागे ॥
अनुज राज संपति बैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहिं समाना ❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सब के प्रिय सेवक ये नीती ❀ मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दोहा--अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम ॥१६॥

सुनि प्रभुबचन मगन सब भये ❀ को हम कहाँ बिसरि तन गये ॥
एकटक रहे जोरि कर आगे ❀ सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥
परमप्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा ❀ कहा बिबिधबिधि ग्यान बिसेखा ॥
प्रभु सनमुख कछु कहइ न पारहिं ❀ पुनि पुनि चरन-सरोज निहारहिं ॥
तब प्रभु भूषन बसन मँगाये ❀ नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहिं प्रथमहि पहिराये ❀ बसन भरत निज हाथ बनाये ॥
प्रभुप्रेरित लछिमन पहिराये ❀ लंकापति रघुपति मन भाये ॥
अंगद बैठि रहा नहिं डोला ❀ प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दोहा--जामवंत नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ।
हिय धरि रामरूप सब, चले नाइ पद माथ ॥
तब अंगद उठि नाइ सरु, सजल नयन कर जोरि ।
अतिबिनीत बोलेउ बचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥१७॥

सुनु सर्बग्य कृपा-सुख-सिंधो ❀ दीन-दया-कर आरतबंधो ॥
मरती बार नाथ मोहि बाली ❀ गयउ तुम्हारेहि कोछें घाली ॥
अ-सरन-सरन बिरद संभारी ❀ मोहि जनि तजहु भगत-हित-कारी ॥
मोरे तुम्ह प्रभु गुरु पितु माता ❀ जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥
तुम्हइँ बिचारि कहहु नरनाहा ❀ प्रभु तजि भवन काजु मम काहा ॥
बालक ग्यान-बुद्धि-बल-हीना ❀ राखहु सरन जानि जन दीना ॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहौं ❀ पद-पंकज बिलोकि भव तरिहौं ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही ❀ अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दोहा--अंगदबचन बिनीत सुनि, रघुपति करुनासींव।
प्रभु उठाइ उर लायेउ, सजल नयनराजीव॥
निज उरमाल बसन मनि, बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्ह भगवान तब, बहु प्रकार समुझाइ॥१८॥

भरत - अनुज - सौमित्रि - समेता ❀ पठवन चले भगत कृतचेता॥
अंगदहृदय प्रेम नहिं थोरा ❀ फिरि फिरि चितव राम की ओरा॥
बार बार कर दंडप्रनामा ❀ मन अस रहन कहहिं मोहि रामा॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी ❀ सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी॥
प्रभुरुख देखि बिनय बहु भाखी ❀ चलेउ हृदय पद-पंकज राखी॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये ❀ भाइन्ह सहित भरत पुनि आये॥
तब सुग्रीव चरन गहि नाना ❀ भाँति बिनय कीन्ही हनुमाना॥
दिन दस करि रघुपति-पद-सेवा ❀ पुनि तव चरन देखिहौं देवा॥
पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा ❀ सेवहु जाइ कृपाआगारा॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता ❀ अंगद कहइ सुनहु हनुमंता॥

दोहा--कहेहु दंडवत प्रभु सन, तुम्हहिं कहौं कर जोरि।
बार बार रघुनायकहिं, सुरति करायेहु मोरि॥
अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आयेउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही, मगन भये भगवंत॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि।
चित खगेस अस राम कर, समुझि परै कहु काहि॥१९॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा ❀ दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू ❀ मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू॥
तुम्ह मम सखा भरतसम भ्राता ❀ सदा रहेहु पुर आवत जाता॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी ❀ परेउ चरन भरि लोचन बारी॥
चरननलिन उर धरि गृह आवा ❀ प्रभुसुभाउ परिजनन्हि सुनावा॥
रघुपतिचरित देखि पुरबासी ❀ पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी॥

राम राज बैठे त्रैलोका ❀ हरषित भये गये सब सोका ॥
बयरु न कर काहू सन कोई ❀ रामप्रताप बिषमता खोई ॥

दोहा--बरनास्रम निज निज धरम, निरत बेदपथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुख, नहिं भय शोक न रोग ॥२०॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा ❀ रामराज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
सब नर करहिं परसपर प्रीती ❀ चलहिं स्वधर्म निरत स्रुतिरीती ॥
चारिहु चरन धरम जग माहीं ❀ पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
राम-भगति-रत सब नर नारी ❀ सकल परम गति के अधिकारी ॥
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा ❀ सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ❀ नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना ॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी ❀ नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी ❀ सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

दोहा--रामराज नभगेस सुनु, सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥२१॥

भूमि सप्त सागर मेखला ❀ एक भूप रघुपति कोसला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू ❀ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी ❀ यह बरनत हीनता घनेरी ॥
सो महिमा खगेस जिन्ह जानी ❀ फिरि येहि चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥
सोउ जाने कर फल यह लीला ❀ कहहिं महा मुनिबर दमसीला ॥
रामराज कर सुख संपदा ❀ बरनि न सकइ फनीस सारदा ॥
सब उदार सब परउपकारी ❀ बिप्र - चरन - सेवक नरनारी ॥
एक-नारि-ब्रत-रत सब झारी ❀ ते मन बच क्रम पति-हित-कारी ॥

दोहा--दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्तक नृत्यसमाज ।
जितहु मनहिं अस सुनिय जग, रामचंद्र के राज ॥२२॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन ❀ रहहिं एक सँग गज पंचानन ॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई ❀ सबन्हि परसपर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा ❀ अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥
सीतल सुरभि पवन बह मंदा ❀ गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥

लता बिटप माँगे मधु चवहीं ❀ मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥
ससमंपन्न सदा रह धरनी ❀ त्रेता भइ कृतजुग कै करनी ॥
प्रगटी गिरिन्ह बिबिध मनिखानी ❀ जगदातमा भूप जग जानी ॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी ❀ सीतल अमल स्वादु सुखकारी ॥
सागर निज मरजादा रहहीं ❀ डारहिं रतन तटन्हि नर लहहीं ॥
सरसिज-संकुल सकल तड़ागा ❀ अतिप्रसन्न दस-दिसा-बिभागा ॥

दोहा--बिधु महि पूर मयूखन्हि, रबि तप जेतनेहिं काज ।
माँगे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ॥२३॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ❀ दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ॥
स्रुति-पथ-पालक धरम-धुरंधर ❀ गुनातीत अरु भोगपुरंदर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता ❀ सोभाखानि सुसील बिनीता ॥
जानति कृपा-सिंधु-प्रभुताई ❀ सेवति चरनकमल मन लाई ॥
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❀ बिपुल सकल सेवाबिधि गुनी ॥
निज कर गृहपरिचरजा करई ❀ रामचंद्र-आयसु अनुसरई ॥
जेहि बिधि कृपा-सिंधु सुख मानइ ❀ सोइ कर श्री सेवाबिधि जानइ ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीं ❀ सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥
उमा–रमा–ब्रह्मादि–बंदिता ❀ जगदंबा संततमनिंदिता ॥

दोहा--जासु कृपाकटाच्छ सुर, चाहत चितवन सोइ ।
राम-पदारबिंद-रति, करति सुभावहिं खोइ ॥२४॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई ❀ राम-चरन-रति अति अधिकाई ॥
प्रभु-मुख-कमल बिलोकत रहहीं ❀ कबहुँ कृपाल हमहिं कछु कहहीं ॥
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती ❀ नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥
हरषित रहहिं नगर के लोगा ❀ करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा ॥
अहनिसि बिधिहिं मनावत रहहीं ❀ श्रीरघुबीर-चरन-रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुंदर सीता जाये ❀ लव कुस बेद पुरानन्हि गाये ॥

दोउ बिजई बिनई गुनमंदिर ❀ हरि-प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे ❀ भये रूप गुन सील घनेरे ॥

दोहा--ग्यान-गिरा-गोऽतीत अज, माया-मन-गुन-पार ।
सोइ सच्चिदानन्दघन, कर नरचरित उदार ॥२५॥

प्रातकाल सरजू करि मज्जन ❀ बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
बेद पुरान बसिष्ठ बखानहिं ❀ सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं ❀ देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
भरत सत्रुहन दूनौं भाई ❀ सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
बूझहिं बैठि राम-गुन-गाहा ❀ कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनत बिमल गुन अतिसुख पावहिं ❀ बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं ॥
सब के गृह गृह होहिं पुराना ❀ रामचरित पावन बिधि नाना ॥
नर अरु नारि राम-गुन-गानहिं ❀ करहिं दिवस निसि जात न जानहिं ॥

दोहा–अवध-पुरी-बासिन्ह कर, सुख संपदा समाज ।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम बिराज॥२६॥

नारदादि सनकादि मुनीसा ❀ दरसन लागि कोसलाधीसा ॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं ❀ देखि नगर बिराग बिसरावहिं ॥
जातरूप-मनि-रचित अटारी ❀ नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँ पास कोटि अतिसुंदर ❀ रचे कँगूरा रंग रंग बर ॥
नवग्रह निकर अनीक बनाई ❀ जनु घेरी अमरावति आई ॥
महि बहुरंग रचित गच काँचा ❀ जो बिलोकि मुनिबर मन राँचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत ❀ कलस मनहुँ रबि-ससि-दुति निंदत ॥
बहु मनिरचित झरोखा भ्राजहिं ❀ गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं ॥

छन्द–मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची ।
मनिखंभ भीति बिरंचि बिरची कनकमनि मरकत खची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।
प्रतिद्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दोहा--चारु चित्रसाला गृह, गृह प्रति लिखे बनाइ ।
रामचरित जे निरख मुनि, ते मन लेहिं चोराइ ॥२७॥

सुमनबाटिका सबहिं लगाई ❀ विविधभाँति करि जतन बनाई ॥
लता ललित बहु जाति सुहाई ❀ फूलहिं सदा बसंत कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर ❀ मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर ॥
नाना खग बालकन्हि जिआये ❀ बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत ❀ भवनन्हि पर सोभा अतिपावत ॥
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं ❀ बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक ❀ कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजदुआर सकल विधि चारू ❀ बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छन्द--बाजार चारु न बनइ बरनत बस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥

दोहा--उत्तर दिसि सरजू बह, निर्मलजल गंभीर ।
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ॥२८॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा ❀ जहँ जल पिअहिं बाजि-गज-ठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना ❀ तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
राजघाट सब विधि सुंदर वर ❀ मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥
तीर तीर देवन्ह के मंदिर ❀ चहुँ दिसि जिन्ह के उपबन सुंदर ॥
कहुँ कहुँ सरितातीर उदासी ❀ बसहिं ग्यानरत मुनि संन्यासी ॥
तीर तीर तुलसिका सुहाई ❀ बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
पुरसोभा कछु बरनि न जाई ❀ बाहिर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघ भागा ❀ बन उपवन बापिका तड़ागा ॥
छन्द--बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।
सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि-खग-रव जनु पथिक हंकारहीं ॥

दोहा--रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।
अनिमादिक-सुख-संपदा, रहीं अवध सब छाइ ॥२९॥

जहँ तहँ नर रघु-पति-गुन गावहिं ❀ बैठि परसपर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रनत-प्रति-पालक रामहि ❀ सोभा-सील - रूप-गुन - धामहि ॥
जलज-बिलोचन स्यामल गातहिं ❀ पलक नयन इव सेवकत्रातहिं ॥
धृत - सर - रुचिर - चाँप - तूनीरहिं ❀ संत-कंज-बन रबि-रन-धीरहिं ॥
काल कराल व्याल खगराजहिं ❀ नमत राम अकाम ममता जहिं ॥
लोभ - मोह-मृग - जूथ - किरातहिं ❀ मनसिज-करि-हरिजन-सुख-दातहिं ॥
संसय-सोक - निबिड़ - तम-भानुहिं ❀ दनुज-गहन - घन-दहन- कृसानुहिं ॥
जनक-सुता-समेत रघुबीरहिं ❀ कस न भजहु भंजन भवभीरहिं ॥
बसु - बासना-मसक - हिम-रासिहि ❀ सदा एकरस अज अबिनासिहि ॥
मुनिरंजन भंजन महिभारहि ❀ तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥

दोहा--एहि बिधि नगर-नारि-नर, करहिं राम-गुन-गान।
सानुकूल सब पर रहहिं, संतत कृपानिधान ॥३०॥

जब तें रामप्रताप खगेसा ❀ उदित भयेउ अतिप्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका ❀ बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह मन सोका ॥
जिन्हहिं सोक ते कहौं बखानी ❀ प्रथम अबिद्यानिसा नसानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ❀ काम - क्रोध - कैरव सकुचाने ॥
बिबिध - कर्म - गुन - काल - सुभाऊ ❀ ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा ❀ इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना ❀ ए पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
सुख संतोष बिराग बिबेका ❀ बिगत सोक ए कोक अनेका ॥

दोहा--यह प्रतापरबि जा के, उर जब करै प्रकास।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नास ॥३१॥

भ्रातन्ह सहित राम एक बारा ❀ संग परमप्रिय पवनकुमारा ॥
सुंदर उपबन देखन गये ❀ सब तरु कुसुमित पल्लव नये ॥
जानि समय सनकादिक आये ❀ तेजपुंज गुनसील सुहाये ॥
ब्रह्मानंद सदा लयलीना ❀ देखत बालक बहुकालीना ॥
रूप धरे जनु चारिउ बेदा ❀ समदरसी मुनि बिगतबिभेदा ॥
आसा बसन व्यसन यह तिन्हहीं ❀ रघुपति-चरित होइ तहँ सुनहीं ॥

तहाँ रहे सनकादि भवानी ❀ जहँ घटसंभव मुनिबर ग्यानी ॥
रामकथा मुनि बहु बिधि बरनी ❀ ग्यान-जोनि-पावक जिमि अरनी ॥

दोहा--देखि राम मुनि आवत, हरषि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥३२॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई ❀ सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥
मुनि रघुपति-छबि अतुल बिलोकी ❀ भये मगन मन सके न रोकी ॥
स्यामलगात सरोरुह - लोचन ❀ सुंदरतामंदिर भवमोचन ॥
एकटक रहे निमेष न लावहिं ❀ प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं ॥
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा ❀ स्रवत नयन जल पुलक सरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे ❀ परम मनोहर बचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा ❀ तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ॥
बड़े भाग पाइय सतसंगा ❀ बिनहिं प्रयास होइ भवभंगा ॥

दोहा--संतसंग अपबर्ग कर, कामी भव कर पंथ ।
कहहिं संत कबि कोबिद, स्रुति पुरान सदग्रंथ ॥३३॥

सुनि प्रभुबचन हरषि मुनि चारी ❀ पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय ❀ अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुनसागर ❀ सुखमंदिर सुंदर अति आगर ॥
जय इंदिरारमन जय भूधर ❀ अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ग्यान निधान अमान मानप्रद ❀ पावन सुजस पुरान बेद बद ॥
तग्य कृतग्य अग्यताभंजन ❀ नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्ब सर्बगत सर्बउरालय ❀ बससि सदा हम कहँ परिपालय ॥
द्वंद बिपति भवफंद बिभंजय ❀ हृदि बसि राम काममद गंजय ॥

दोहा--परमानन्द कृपायतन, मन-परि-पूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥३४॥

देहु भगति रघुपति अतिपावनि ❀ त्रि--बिध-ताप-भव-दाप--नसावनि ॥
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु ❀ होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥
भव-बारिधि-कुम्भज रघुनायक ❀ सेवकसुलभ सकल-सुख-दायक ॥
मन-संभव - दारुन - दुख दारय ❀ दीनबंधु समता बिस्तारय ॥

आस-त्रास-इरिषादि निवारक ❀ बिनय-बिवेक-बिरति - बिस्तारक ॥
भूप-मौलि-मनि मंडन धरनी ❀ देहि भगति संसृति-सरि-तरनी ॥
मुनि - मन - मानस- हंस निरंतर ❀ चरनकमल बंदित अज संकर ॥
रघुकुल - केतु सेतु स्रुतिरच्छक ❀ काल - कर्म - सुभाव - गुन - भच्छक ॥
तारन तरन हरन सब दूषन ❀ तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन-भूषन ॥

दोहा-बार बार अस्तुति करि, प्रेमसहित सिर-नाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट बर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक बिधिलोक सिधाये ❀ भ्रातन्ह रामचरन सिरु नाये ॥
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❀ चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुनी चहहिं प्रभुमुख कै बानी ❀ जो सुनि होइ सकल-भ्रम-हानी ॥
अंतरजामी प्रभु सब जाना ❀ बूझत कहहु काह हनुमाना ॥
जोरि पानि कह तब हनुमंता ❀ सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं ❀ प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ ❀ भरतहिं मोहि कछु अंतर काऊ ॥
सुनि प्रभुबचन भरत गहे चरना ❀ सुनहु नाथ प्रनतारतिहरना ॥

दोहा--नाथ न मोहि संदेह कछु, सपनेहुँ सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिही, कृपा-नंद-संदोह ॥ ३६ ॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई ❀ मैं सेवक तुम्ह जन-सुखदाई ॥
संतन कै महिमा रघुराई ❀ बहुबिधि बेद पुरानन्हि गाई ॥
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई ❀ तिन्ह पर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई ॥
सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लच्छन ❀ कृपासिंधु गुन-ग्यान-बिचच्छन ॥
संत असंत भेद बिलगाई ❀ प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ॥
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता ❀ अगनित स्रुति पुरान बिख्याता ॥
संत असंतन्ह कै असि करनी ❀ जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥
काटै परसु मलय सुनु भाई ❀ निजगुन देइ सुगंध बसाई ॥

दोहा-तातें सुरसीसन्ह चढ़त, जगबल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत घनहिं, परसुबदन यह दंड ॥३७॥

बिषय अलंपट सीलगुनाकर ❀ परदुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी ❀ लोभामरष हरष भय त्यागी ॥
कोमलचित दीनन्ह पर दाया ❀ मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी ❀ भरत प्रानसम मम ते प्रानी ॥
बिगतकाम मम नामपरायन ❀ सांति बिरति बिनती मुदितायन ॥
सीतलता सरलता मइत्री ❀ द्विज-पद-प्रीति धरमजनयित्री ॥
ये सब लच्छन बसहिं जासु उर ❀ जानहु तात संत संतत फुर ॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं ❀ परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं ॥

दोहा--निंदा अस्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज ।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय, गुनमंदिर सुखपुंज ॥३८॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ ❀ भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहि घालै हरहाई ॥
खलन्ह हृदय अतिताप बिसेखी ❀ जरहिं सदा परसंपति देखी ॥
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई ❀ हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
काम-क्रोध-मद-लोभ-परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
बयरु अकारन सब काहू सों ❀ जो कर हित अनहित ताहू सों ॥
झूठै लेना झूठै देना ❀ झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरबचन जिमि मोरा ❀ खाहिं महाअहि हृदय कठोरा ॥

दोहा--परद्रोही पर--दार--रत, परधन परअपबाद ।
ते नर पावँर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥३९॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ❀ सिस्नोदरपर जमपुर--त्रासन ॥
काहू कै जौं सुनहिं बड़ाई ❀ स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहू कै देखहिं बिपती ❀ सुखी भये मानहुँ जगनृपती ॥
स्वारथरत परिवारबिरोधी ❀ लंपट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं ❀ आपु गये अरु घालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहबस द्रोह परावा ❀ संत संग हरिकथा न भावा ॥
अव--गुन--सिंधु मंदमति कामी ❀ बेदबिदूषक पर-धन-स्वामी ॥
बिप्रद्रोह सुरद्रोह बिसेषा ❀ दंभ कपट जिय धरे सुबेषा ॥

दोहा--ऐसे अधम मनुज खल, कृतजुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृंद बहु, होइहहिं कलिजुग माहिं ॥४०॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ❀ परपीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
निरनय सकल पुरान बेद कर ❀ कहेउँ तात जानहिं कोविद नर ॥
नर सरीर धरि जे परपीरा ❀ करहिं ते सहहिं महा-भव-भीरा ॥
करहिं मोहबस नर अघ नाना ❀ स्वारथरत परलोक नसाना ॥
कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता ❀ सुभ अरु असुभ करम-फल दाता ॥
अस बिचारि जे परमसयाने ❀ भजहिं मोहि संसृति दुख जाने ॥
त्यागहिं कर्म सुभा--सुभ--दायक ❀ भजहिं मोहि सुर-नर-मुनि-नायक ॥
संत असंतन के गुन भाखे ❀ ते न परिहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥

दोहा--सुनहु तात मायाकृत, गुन अरु दोष अनेक ।
गुन यह उभय न देखियहिं, देखिय सो अबिबेक ॥४१॥

श्रीमुख-बचन सुनत सब भाई ❀ हरषे प्रेमु न हृदय समाई ॥
करहिं बिनय अति बारहिं बारा ❀ हनूमान हिय हरष अपारा ॥
पुनि रघुपति निज मंदिर गये ❀ एहि बिधि चरित करत नित नये ॥
बार बार नारदमुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत राम के गावहिं ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं ❀ पुनि पुनि तात करहु गुनगानहिं ॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ जद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं ॥
सुनि गुनगान समाधि बिसारी ❀ सादर सुनहिं परमअधिकारी ॥

दोहा--जीवनमुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
जे हरि कथा न करहिं रति, तिन्ह के हिय पापान ॥४२॥

एक बार रघुनाथ बोलाये ❀ गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठ सदसि अनुज मुनि सज्जन ❀ बोले बचन भगत-भय-भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❀ कहौं न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❀ सुनहु करहु जो तुम्हहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई ❀ मम अनुसासन मानै जोई ॥
जौं अनीति कछु भाषउँ भाई ❀ तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ॥

बड़े भाग मानुषतनु पावा ❀ सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
साधनधाम मोच्छ कर द्वारा ❀ पाइ न जेहि परलोक सँवारा ॥
दोहा--सो परत्र दुख पावइ, सिरु धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥
एहि तन कर फल बिषय न भाई ❀ स्वरगउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
नरतनु पाइ बिषय मन देहीं ❀ पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई ❀ गुंजा गहै परसमनि खोई ॥
आकर चारि लच्छ चौरासी ❀ जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी ॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा ❀ काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
कबहुँक करि करुना नरदेही ❀ देत ईस बिनु हेतु सनेही ॥
नरतनु भवबारिधि कहुँ बेरो ❀ सनमुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सदगुरु दृढ़ नावा ❀ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥
दोहा--जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृतनिंदक मंदमति, आतम-हन-गति जाइ ॥४४॥
जौं परलोक इहाँ सुख चहहू ❀ सुनि ममबचन हृदय दृढ़ गहहू ॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई ❀ भगति मोरि पुरान स्रुति गाई ॥
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका ❀ साधन कठिन न मन कहुँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावै कोऊ ❀ भगतिहीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ ॥
भगति सुतंत्र सकल-सुख-खानी ❀ बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुन्यपुंज बिनु मिलहिं न संता ❀ सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुन्य एक जग महँ नहिं दूजा ❀ मन क्रम बचन बिप्र-पद-पूजा ॥
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा ❀ जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥
दोहा--अउरउ एक गुपुत मत, सबहिं कहउँ कर जोरि।
संकरभजन बिना नर, भगति न पावै मोरि ॥४५॥
कहहु भगति पथ कवन प्रयासा ❀ जोग न मख जप तप उपवासा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई ❀ जथालाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा ❀ करै त कहहु कहा बिस्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बड़ाई ❀ एहि आचरन बस्य मैं भाई ॥

बयरु न बिग्रह आस न त्रासा ❀ सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारंभ अनिकेत अमानी ❀ अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❀ तृनसम बिषय स्वर्ग अपबर्गा ॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई ❀ दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ॥

दोहा-मम गुनग्राम नाम रत, गत-ममता-मद-मोह ।
ता कर सुख सोइ जानइ, परानंदसंदोह ॥ ४६ ॥

सुनत सुधासम बचन राम के ❀ गहे सबन्हि पद कृपाधाम के ॥
जननि जनक गुरु बंधु हमारे ❀ कृपानिधान प्रान तें प्यारे ॥
तनु धनु धाम राम हितकारी ❀ सब बिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी ॥
अस सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ ❀ मातु पिता स्वारथरत ओऊ ॥
हेतुरहित जग जुग उपकारी ❀ तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथमीत सकल जग माहीं ❀ सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ॥
सब के बचन प्रेमरससाने ❀ सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने ॥
निज गृह गये सुआयसु पाई ❀ बरनत प्रभु बतकही सुहाई ॥

दोहा--उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥

एक बार बसिष्ठ मुनि आये ❀ जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अतिआदर रघुनायक कीन्हा ❀ पद पखारि चरनोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी ❀ कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ॥
देखि देखि आचरन तुम्हारा ❀ होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित बेद नहिं जाना ❀ मैं केहि भाँति कहौं भगवाना ॥
उपरोहिती कर्म अतिमंदा ❀ बेद पुरान सुमृति कर निंदा ॥
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही ❀ कहा लाभ आगे सुत तोही ॥
परमातमा ब्रह्म नररूपा ❀ होइहि रघु कुल-भूषन भूपा ॥

दोहा--तब मैं हृदय बिचारा, जोग जग्य ब्रत दान ।
जा कहँ करिय सो पाइहौं, धर्म न एहि सम आन ॥४८॥

जप तप नियम जोग निज धर्मा ❀ स्रुतिसंभव नाना सुभ कर्मा ॥
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन ❀ जहँ लगि धरम कहत स्रुति सज्जन ॥

आगम निगम पुरान अनेका ❀ पढ़े सुने कर फलु प्रभु एका ॥
तव पद-पंकज प्रीति निरंतर ❀ सब साधन कर यह फलु सुंदर ॥
छूटै मल कि मलहि के धोये ❀ घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये ॥
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई ❀ अभि-अंतर-मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित ❀ सोइ गुनगृह बिग्यान अखंडित ॥
दच्छ सकल-लच्छन-जुत सोई ❀ जा के पद -- सरोज रति होई ॥

दोहा--नाथ एक बर मागउँ, राम कृपा करि देहु ।
जनम जनम प्रभु-पद-कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥४६॥

अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आये ❀ कृपासिंधु के मन अति भाये ॥
हनूमान भरतादिकभ्राता ❀ संग लिये सेवक - सुख - दाता ॥
पुनि कृपाल पुर बाहर गये ❀ गज रथ तुरग मँगावत भये ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे ❀ दिये उचित जिन्ह जिन्ह जेइ चाहे ॥
हरन सकलस्रम प्रभु स्रम पाई ❀ गये जहाँ सीतल अवँराई ॥
भरत दीन्ह निज बसन डसाई ❀ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत तब मारुत करई ❀ पुलक बपुष लोचन जल भरई ॥
हनूमान समान बड़ भागी ❀ नहिं कोउ राम-चरन-अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❀ बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दोहा--तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ।
गावन लागे राम-कल-कीरति सदा नवीन ॥५०॥

मामवलोकय पंकज-लोचन ❀ कृपा बिलोकनि सोचबिमोचन ॥
नील-तामरस-स्याम कामअरि ❀ हृदय-कंज-मकरंद-मधुप हरि ॥
जातुधान - बरूथ - बल - भंजन ❀ मुनि-सज्जन-रंजन अघगंजन ॥
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक ❀ अ-सरन-सरन दीन-जन-गाहक ॥
भुज बल बिपुल भार महि खंडित ❀ खर-दूषन-बिराध-बध पंडित ॥
रावनारि सुखरूप भूपबर ❀ जय दसरथ-कुल-कुमुद-सुधाकर ॥
सुजसु पुरानबिदित निगमागम ❀ गावत सुर-मुनि-संत-समागम ॥
कारुनीक ब्यलीक-मद-खंडन ❀ सब बिधि कुसल कोसलामंडन ॥
कलि-मल-मथन-नाम ममताहन ❀ तुलसि-दास-प्रभु पाहि प्रनतजन ॥

दोहा–प्रेमसहित मुनि नारद, बरनि राम-गुन-ग्राम ।
सोभासिंधु हृदय भरि, गये जहाँ बिधिधाम ॥५१॥

गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा ❀ मैं सब कही मोरि मति जथा ॥
रामचरित सत कोटि अपारा ❀ स्रुति सारदा न बरनइ पारा ॥
राम अनंत अनंतगुनानी ❀ जनम कर्म अनंत नामानी ॥
जलसीकर महिरज गनि जाहीं ❀ रघुपति-चरित न बरनि सिराहीं ॥
बिमल कथा हरि-पद-दायिनी ❀ भगति होइ सुनि अनपायिनी ॥
उमा कहेउँ सब कथा सुहाई ❀ जो भुसुंडि खगपतिहिं सुनाई ॥
कछुक रामगुन कहेउँ बखानी ❀ अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥
सुनि सुभकथा उमा हरषानी ❀ बोली अतिबिनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❀ सुनेउँ रामगुन भव-भय-हारी ॥

दोहा--तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ रामप्रताप प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥
नाथ तवानन ससि स्रवत, कथा सुधा रघुबीर ।
स्रवनपुटन्हि मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर॥५२॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं ❀ रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ ❀ हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥
भवसागर चह पार जो पावा ❀ रामकथा ता कहँ दृढ़ नावा ॥
बिषइन्ह कहँ पुनि हरि-गुन-ग्रामा ❀ स्रवनसुखद अरु मनअभिरामा ॥
स्रवनवंत अस को जग माहीं ❀ जाहि न रघुपति-चरित सुहाहीं ॥
ते जड़ जीव निजा-त्मक-घाती ❀ जिन्हहिं न रघुपति-कथा सुहाती ॥
हरि-चरित्र-मानस तुम्ह गावा ❀ सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई ❀ कागभुसुंडि गरुड प्रति गाई ॥

दोहा--बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़, रामचरित अतिनेह ।
बायसतन रघुपति-भगति, मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नरसहस्र महुँ सुनहु पुरारी ❀ कोउ एक होइ धर्म-व्रत-धारी ॥
धर्मसील कोटिक महुँ कोई ❀ बिषयबिमुख बिरागरत होई ॥

कोटि-बिरक्त-मध्य स्रुति कहई ❀ सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥
ग्यानवंत कोटिक महुँ कोऊ ❀ जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥
तिन्ह सहस्र महुँ सब सुखखानी ❀ दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी ॥
धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी ❀ जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी ॥
सब तें सो दुर्लभ सुरराया ❀ राम-भगति-रत गत-मद-माया ॥
सो हरिभगति काग किमि पाई ❀ बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दोहा-रामपरायन ग्यानरत, गुनागार मतिधीर ।
नाथ कहहु केहि कारन, पायेउ कागसरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा ❀ कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी ❀ कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥
गरुड़ महाग्यानी गुनरासी ❀ हरिसेवक अतिनिकट निवासी ॥
तेहि केहि हेतु काग सन जाई ❀ सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई ॥
कहहु कवन बिधि भा संबादा ❀ दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई ❀ बोले सिव सादर सुख पाई ॥
धन्य सती पावनि मति तोरी ❀ रघुपति-चरन प्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❀ जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥
उपजै रामचरन बिस्वासा ❀ भवनिधि तर नर बिनहिं प्रयासा ॥

दोहा--ऐसइ प्रस्न बिहंगपति, कीन्ह काग सन जाइ ।
सो सब सादर कहिहउँ, सुनहु उमा मन लाइ ॥५५॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि ❀ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥
प्रथम दच्छगृह तव अवतारा ❀ सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दच्छजग्य जब भा अपमाना ❀ तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राना ॥
मम अनुचरन्ह कीन्ह मखभंगा ❀ जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
तब अति सोच भयेउ मन मोरें ❀ दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरें ॥
सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा ❀ कौतुक देखत फिरेउँ बिरागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिसि दूरी ❀ नील सैल एक सुंदर भूरी ॥
तासु कनकमय सिखर सुहाये ❀ चारि चारु मोरे मन भाये ॥

तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला ❀ बट पीपर पाकरी रसाला
सैलोपरि सर सुंदर सोहा ❀ मनिसोपान देखि मन मोहा ॥

दोहा—सीतल अमल मधुर जल, जलज बिपुल बहुरंग ।
कूजत कलरव हंसगन, गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई ❀ तासु नास कलपांत न होई ॥
मायाकृत गुन दोष अनेका ❀ मोह मनोज आदि अबिबेका ॥
रहे व्यापि समस्त जग माहा ❀ तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं ॥
तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा ❀ सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान जो धरई ❀ जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
आमछाहँ कर मानस पूजा ❀ तजि हरिभजन काज नहिं दूजा ॥
बर तर कह हरि-कथा-प्रसंगा ❀ आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥
रामचरित बिचित्र बिधाना ❀ प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
सुनहिं सकल मति बिमल मराला ❀ बसहिं निरंतर जो तेहि ताला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❀ उर उपजा आनंद बिसेखा ॥

दोहा—तब कछु काल मरालतनु, धरि तहँ कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति-गुन, पुनि आयउँ कैलास ॥५७॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा ❀ मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू ❀ गयउ काग पहिं खग-कुल-केतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रनक्रीड़ा ❀ समुझत चरित होत मोहि व्रीड़ा ॥
इंद्रजीत कर आपु बँधायो ❀ तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
बंधन काटि गयउ उरगादा ❀ उपजा हृदय प्रचंड बिषादा ॥
प्रभुबंधन समुझत बहु भाँति ❀ करत बिचार उरगआराती ॥
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा ❀ माया - मोह - पार परमीसा ॥
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं ❀ देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दोहा—भवबंधन तें छूटहिं, नर जप जा कर नाम ।
खर्ब निसाचर बाँधेउ, नागपास सोइ राम ॥५८॥

नाना भाँति मनहिं समुझावा ❀ प्रगट न ग्यान हृदय भ्रम छावा ॥
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई ❀ भयउ मोहबस तुम्हरिहि नाई ॥

व्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं ❀ कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥
सुनि नारदहिं लागि अति दाया ❀ सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई ❀ बरिआईं बिमोह मन करई ॥
जेहि बहु बार नचावा मोही ❀ सोइ व्यापी बिहंगपति तोही ॥
महामोह उपजा उर तोरे ❀ मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे ॥
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा ❀ सोइ करेहु जो देहिं निदेसा ॥

दोहा--अस कहि चले देवरिषि, करत राम-गुन-गान ।
हरि-माया-बल बरनत, पुनि पुनि परम सुजान ॥५९॥

तब खगपति बिरंचि पहिं गयऊ ❀ निज संदेह सुनावत भयऊ ॥
सुनि बिरंचि रामहिं सिरु नावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मन महुँ करै बिचार बिधाता ❀ मायाबस कबि कोबिद ग्याता ॥
हरिमाया कर अमित प्रभावा ❀ बिपुल बार जेहि मोहि नचावा ॥
अग-जग-मय सब मम उपराजा ❀ नहिं आचरज मोह खगराजा ॥
तब बोले बिधि गिरा सुहाई ❀ जान महेस रामप्रभुताई ॥
बैनतेय संकर पहिं जाहू ❀ तात अनत पूछहु जनि काहू ॥
तहँ होइहि तव संसयहानी ❀ चलेउ बिहंग सुनत बिधिबानी ॥

दोहा--परमातुर बिहंगपति, आयउ तब मो पास ।
जात रहेउँ कुबेरगृह, रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

तेहि मम पद सादर सिरु नावा ❀ पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
सुनि ता करि बिनीत मृदुबानी ❀ प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेहु गरुड़ मारग महुँ मोही ❀ कवन भाँति समुझावौं तोही ॥
तबहिं होइ सब संसय भंगा ❀ जब बहु काल करिय सतसंगा ॥
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई ❀ नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना ❀ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरिकथा होतिजहँ भाई ❀ पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥
जाइहि सुनत सकल संदेहा ❀ रामचरन होइहि अतिनेहा ॥

दोहा--बिनु सतसंग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा ❀ किये जोग जप ग्यान बिरागा ॥
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला ❀ तहँ रह कागभुसुंडि सुसीला ॥
राम-भगति-पथ परमप्रबीना ❀ ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना ॥
रामकथा सो कहइ निरंतर ❀ सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी ❀ होइहि मोहजनित दुख दूरी ॥
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई ❀ चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥
ता तें उमा न मैं समुझावा ❀ रघुपति कृपा मरम मैं पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ❀ सो खोवइ चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहि तें पुनि मैं नहिं राखा ❀ समुझइ खग खग ही कै भाखा ॥
प्रभुमाया बलवंत भवानी ❀ जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥

दोहा--ग्यानी भगत सिरोमनि, त्रि-भुवन-पति कर जान ।
ताहि मोह माया नर, पावँर करहिं गुमान ॥
सिव बिरंचि कहँ मोहै, को है बपुरा आन ।
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ॥६२॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुसुंडी ❀ मति अकुंठ हरिभगति अखंडी ॥
देखि सयल प्रसन्न मन भयऊ ❀ माया मोह सोच सब गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना ❀ बट तर गयउ हृदय हरषाना ॥
बृद्ध बृद्ध बिहंग तहँ आये ❀ सुनै राम के चरित सुहाये ॥
कथाअरंभ करै सोइ चाहा ❀ तेही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा ❀ हरषेउ बायस सहित समाजा ॥
अतिआदर खगपति कर कीन्हा ❀ स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा ❀ मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥

दोहा--नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दरसन खगराज ।
आयसु देहु सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदुबचन खगेस ।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुख कीन्हि महेस ॥६३॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ ❀ सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आस्रम ❀ गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥
अब श्रीराम-कथा अतिपावनि ❀ सदा सुखद दुख-पुंज-नसावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोही ❀ बार बार बिनवौं प्रभु तोही ॥
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता ❀ सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा ❀ लाग कहै रघुपति-गुन-गाहा ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी ❀ राम-चरित-सर कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
प्रभु-अवतार-कथा पुनि गाई ❀ तब सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥

दोहा—बालचरित कहि बिबिधबिधि, मन महुँ परमउछाह ।
रिषिआगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर-बिबाह ॥ ६४ ॥

बहुरि राम-अभिषेक-प्रसंगा ❀ पुनि नृपबचन राज-रस-भंगा ॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा ❀ कहेसि राम-लछिमन-संबादा ॥
बिपिनगवन केवटअनुरागा ❀ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
बालमीकि-प्रभु-मिलन बखाना ❀ चित्रकूट जिमि बस भगवाना ॥
सचिवागवँन नगर नृपमरना ❀ भरतागवँन प्रेम बहु बरना ॥
करि नृपक्रिया संग पुरबासी ❀ भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये ❀ लेइ पादुका अवधपुर आये ॥
भरतरहनि सुर-पति-सुत-करनी ❀ प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

दोहा—कहि बिराध बध जेहि बिधि, देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥

कहि दंडक बन पावनताई ❀ गीधमइत्री पुनि तेहि गाई ॥
पुनि प्रभु पंचबटी कृत बासा ❀ भंजी सकल मुनिन्ह क त्रासा ॥
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा ❀ सूपनखा जिमि कीन्ह कुरूपा ॥
खर-दूषन-बध बहुरि बखाना ❀ जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥
दसकंधर - मारीच - बतकही ❀ जेहि बिधि भई सो सब तेहि कही ॥
पुनि माया सीता कर हरना ❀ श्रीरघुबीर-बिरह कछु बरना ॥

पुनि प्रभु गीधक्रिया जिमि कीन्ही ❀ बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही ॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा ❀ जेहि बिधि गये सरोबरतीरा ॥

दोहा—प्रभु-नारद-संबाद कहि, मारुत-मिलन-प्रसंग ।
पुनि सुग्रीवँमिताई, बालिप्रान कर भंग ॥
कपिहि तिलक करि प्रभुकृत, सैल प्रबरषन बास ।
बरनत बरषा सरद कर, रामरोष कपित्रास ॥ ६६ ॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये ❀ सीताखोजन सकल सिधाये ॥
बिबरप्रबेस कीन्ह जेहि भाँती ❀ कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा ❀ नाँघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा ❀ पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा ॥
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी ❀ पुर दहि नाँघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई ❀ बैदेही क कुसल सुनाई ॥
सेनसमेत [illegible] रघुबीरा ❀ उतरे जाइ बारि-निधि-तीरा ॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई ❀ सागरनिग्रह कथा सुनाई ॥

दोहा—सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरी सागरपार ।
गयउ बसीठी बीरबर, जेहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर-कीस-लराई, बरनेसि बिबिध प्रकार ।
कुंभकरन घननाद कर, बल - पौरुष - संहार ॥ ६७ ॥

निसिचर-निकर-मरन बिधि नाना ❀ रघुपति - रावन - समर बखाना ॥
रावनबध मंदोदरि सोका ❀ राज बिभीषन देब असोका ॥
सीता - रघुपति - मिलन बहोरी ❀ सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता ❀ अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि बिधि राम नगर निज आये ❀ बायस बिसद चरित सब गाये ॥
कहेसि बहोरि रामअभिषेका ❀ पुर बरनन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुसुंडि बखानी ❀ जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥
सुनि सब रामकथा खगनाहा ❀ कहत बचन मन परमउछाहा ॥

सोरठा—गयउ मोर संदेह, सुनेउँ सकल रघुपति-चरित।
भयउ राम-पद-नेह, तव प्रसाद बायसतिलक॥
मोहि भयउ अति मोह, प्रभुबंधन रन महुँ निरखि।
चिदानन्द संदोह, राम बिकल कारन कवन॥६८॥

देखि चरित अति नर अनुसारी ❀ भयउ हृदय मम संसय भारी॥
सोइ भ्रम अब हित करि मैं जाना ❀ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना॥
जो अतिआतप ब्याकुल होई ❀ तरुछाया सुख जानइ सोई॥
जौं नहिं होत मोह अति मोही ❀ मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही॥
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई ❀ अतिबिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाई॥
निगमागम पुरानमत एहा ❀ कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा॥
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही ❀ चितवहिं राम कृपा करि जेही॥
रामकृपा तव दरसन भयऊ ❀ तव प्रसाद सब संसय गयऊ॥

दोहा—सुनि बिहंगपति बानी, सहित बिनय अनुराग।
पुलक गात लोचन सजल, मन हरषेउ अति काग॥
स्रोता सुमति सुसील सुचि, कथा रसिक हरिदास।
पाइ उमा अतिगोप्य अति, सज्जन करहिं प्रकास॥६९॥

बोलेउ कागभुसुंडि बहोरी ❀ नभगनाथ पर प्रीति न थोरी॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे ❀ कृपापात्र रघुनायक केरे॥
तुम्हहि न संसय मोह न माया ❀ मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया॥
पठइ मोहमिस खगपति तोही ❀ रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही॥
तुम्ह निज मोह कहा खगसाईं ❀ सो नहिं कछु आचरज गोसाईं॥
नारद भव बिरंचि सनकादी ❀ जे मुनिनायक आतमबादी॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही ❀ को जग काम नचाव न जेही॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौरहा ❀ केहि कर हृदय क्रोध नहिं दहा॥

दोहा—ग्यानी तापस सूर कबि, कोबिद गुनआगार।
केहि कै लोभ बिडंबना, कीन्हि न एहि संसार॥

श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि।
मृग-लोचनि-लोचन सर, को अस लाग न जाहि ॥७०॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही ❀ कोउ न मान मद तजेउ निबेही ॥
जोबनज्वर केहि नहिं बलकावा ❀ ममता केहि कर जसु न नसावा ॥
मच्छर काहि कलंकु न लावा ❀ काहि न सोक समीर डोलावा ॥
चिंतासाँपिन को नहिं खाया ❀ को जग जाहि न ब्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु सरीरा ❀ जेहि न लागु घुन को अस धीरा ॥
सुत बित लोक ईषना तीनी ❀ केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
यह सब माया कर परिवारा ❀ प्रबल अमित को बरनै पारा ॥
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं ❀ अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दोहा—ब्यापि रहेउ संसार महुँ, मायाकटक प्रचंड।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाखंड ॥
सो दासी रघुबीर कै, समुझे मिथ्या सोपि।
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहौं पद रोपि ॥७१॥

जो माया सब जगहि नचावा ❀ जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रूबिलास खगराजा ❀ नाच नटी इव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानंदघन रामा ❀ अज बिग्यानरूप बलधामा ॥
ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता ❀ अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥
अगुन अदभ्र गिरागोतीता ❀ सबदरसी अनवद्य अजीता ॥
निर्मल निराकार निर्मोहा ❀ नित्य निरंजन सुखसंदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उर बासी ❀ ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥
इहाँ मोह कर कारन नाहीं ❀ रबिसनमुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

दोहा—भगत हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप।
किये चरित पावन परम, प्राकृत-नर-अनुरूप ॥
जथा अनेक वेष धरि, नृत्य करइ नट कोइ।
सोइ सोइ भाव देखावइ, आपुन होइ न सोइ ॥७२॥

असि रघु-पति-लीला उरगारी ❀ दनुजविमोहनि जन-सुख-कारी ॥
जे मतिमलिन बिषयबस कामी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जा कहँ जब होई ❀ पीतबरन ससि कहुँ कह सोई ॥
जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगेसा ❀ सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा ❀ अचल मोहबस आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❀ कहहिं परसपर मिथ्याबादी ॥
हरि बिषैक अस मोह बिहंगा ❀ सपनेहुँ नहिं अग्यान-प्रसंगा ॥
मायाबस मतिमंद अभागी ❀ हृदय जवनिका बहु बिधि लागी ॥
ते सठ हठबस संसय करहीं ❀ निज अग्यान राम पर धरहीं ॥

दोहा—काम-क्रोध-मद-लोभ-रत, गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे तमकूप ॥
निर्गुनरूप सुलभ अति, सगुन न जानहिं कोइ ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनिमन भ्रम होइ ॥७३॥

सुनु खगेस रघुपति-प्रभुताई ❀ कहौं जथामति कथा सुहाई ॥
जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही ❀ सो सब कथा सुनावौं तोही ॥
राम-कृपा-भाजन तुम्ह ताता ❀ हरि-गुन-प्रीति मोहि सुखदाता ॥
ता तें नहिं कछु तुम्हहिं दुरावौं ❀ परम रहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ ❀ जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥
संसृतमूल सूलप्रद नाना ❀ सकल-सोक-दायक अभिमाना ॥
ता तें करहिं कृपानिधि दूरी ❀ सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमि सिसुतन ब्रन होइ गोसाईं ❀ मातु चिराव कठिन की नाईं ॥

दोहा—जदपि प्रथम दुख पावइ, रोवइ बाल अधीर ।
ब्याधि-नास-हित जननी, गनत न सो सिसुपीर ॥
तिमि रघुपति निजदास कर, हरहिं मान हित लागि ।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजसि भ्रम त्यागि ॥७४॥

रामकृपा आपनि जड़ताई ❀ कहौं खगेस सुनहु मन लाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं ❀ भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥

तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ ❀ बालचरित बिलोकि हरषाऊँ ॥
जनममहोत्सव देखौं जाई ❀ बरष पाँच तहँ रहौं लोभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा ❀ सोभा वपुष कोटि-सत-कामा ॥
निज-प्रभु-बदन निहारि निहारी ❀ लोचन सुफल करौं उरगारी ॥
लघु बायसबपु धरि हरिसंगा ❀ देखौं बालचरित बहुरंगा ॥

दोहा—लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।
जूठनि परइ अजिर महुँ, सोइ उठाइ करि खाउँ ॥
एक बार अतिसय सब, चरित किये रघुबीर ।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ, पुलकित भयउ सरीर ॥७५॥

कहइ भुसुंडि सुनहु खगनायक ❀ रामचरित सेवक-सुख-दायक ॥
नृपमंदिर सुंदर सब भाँती ❀ खचित कनक मनि नाना जाती ॥
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई ❀ जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
बालबिनोद करत रघुराई ❀ बिचरत अजिर जननि-सुख-दाई ॥
मरकतमृदुल कलेवर स्यामा ❀ अंग अंग प्रति छबि बहु कामा ॥
नव-राजीव-अरुन मृदु चरना ❀ पदज रुचिर नख ससि-दुति-हरना ॥
ललित अंक कुलिसादिक चारी ❀ नूपुर चारु मधुर-रव कारी ॥
चारु पुरट -- मनि--रचित बनाई ❀ कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥

दोहा—रेखा त्रय सुंदर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ।
उर आयत भ्राजत बिबिध, बालबिभूषन बीर ॥७६॥

अरुन पानि नखकरज मनोहर ❀ बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥
कंध बालकेहरि दर ग्रीवाँ ❀ चारु चिबुक आनन छबिसीवाँ ॥
कलबल बचन अधर अरुनारे ❀ दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ सकल सुखद ससि-कर-सम हाँसा ॥
नील-कंज-लोचन भवमोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
बिकट भृकुटि सम स्रवन सुहाये ❀ कुंचित कच मेचक छबि छाये ॥
पीत झीनि झिगुली तन सोही ❀ किलकनि चितवनि भावति मोही ॥
रूपरासि नृप--अजिर -- बिहारी ❀ नाचहिं निजप्रतिबिंब निहारी ॥

मोहि सन करहिं विविध विधिक्रीड़ा ❁ बरनत मरित होत मोहि ब्रीड़ा ॥
किलकत मोहि धरन जब धावहिं ❁ चलउँ भागि तव पूप देखावहिं ॥

दोहा--आवत निकट हसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ।
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥
प्राकृत सिसु इव लीला, देखि भयउ मोहि मोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥ ७७ ॥

एतना मन आनत खगराया ❁ रघु-पति-प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहि काहीं ❁ आन जीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारन आना ❁ सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥
ग्यान अखंड एक सीतावर ❁ मायाबस्य जीव सचराचर ॥
जौं सब के रह ग्यान एक रस ❁ ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस ॥
मायाबस्य जीव अभिमानी ❁ ईसबस्य माया गुनखानी ॥
परबस जीव स्वबस भगवंता ❁ जीव अनेक एक श्रीकंता ॥
मुधा भेद जद्यपि कृत माया ❁ बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दोहा--रामचंद्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्बान ।
ग्यानवंत अपि सो नर, पसु बिनु पूछ बिखान ॥
राकापति षोडस उअहिं, तारा-गन-समुदाइ ।
सकल गिरिन्हि दव लाइय, बिनु रबि राति न जाइ ॥ ७८ ॥

ऐसेहि बिनु हरिभजन खगेसा ❁ मिटै न जीवन्ह केर कलेसा ॥
हरि सेवकहिं न व्याप अबिद्या ❁ प्रभुप्रेरित व्यापइ तेहि बिद्या ॥
ता तें नास न होइ दास कर ❁ भेद भगति बाढ़इ बिहंगबर ॥
भ्रम तें चकित राम मोहि देखा ❁ बिहँसे सो सुनु चरित बिसेखा ॥
तेहि कौतुक कर मरम न काहू ❁ जाना अनुज न मातुपिता हू ॥
जानुपानि धाये मोहि धरना ❁ स्यामलगात अरुन--कर--चरना ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❁ राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा ❁ तहँ हरिभुज देखउँ निजपासा ॥

दोहा--ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितयउँ पाछ उड़ात ।
जुग अंगुल कर बीच सब, रामभुजहिं मोहि तात ॥
सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि ।
गयउ तहाँ प्रभु भुज निरखि, ब्याकुल भयउँ बहोरि ॥७९॥

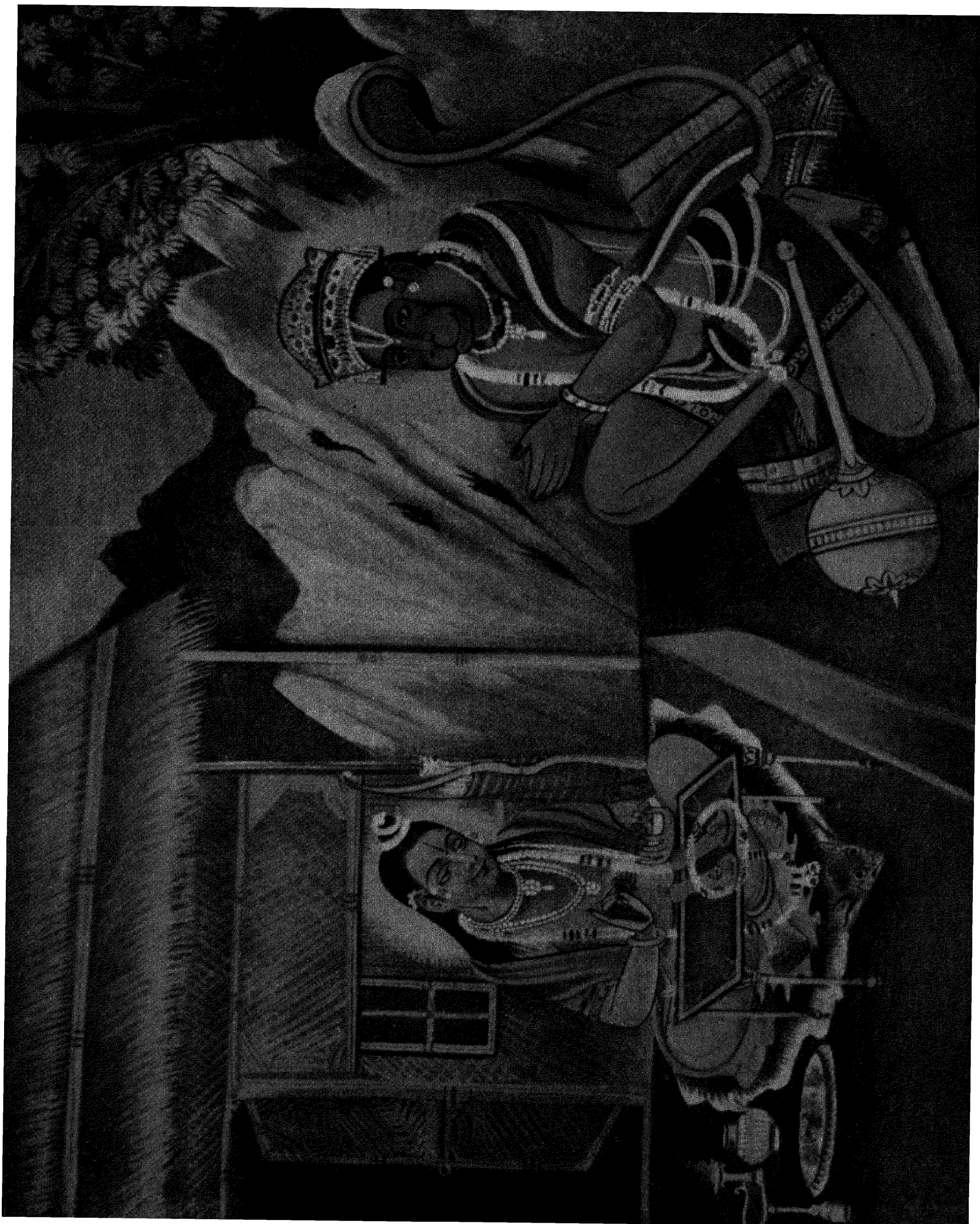
मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ ❀ पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ ॥
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं ❀ बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥
उदर माँझ सुनु अंडज-राया ❀ देखेउँ बहु ब्रह्मांडनिकाया ॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका ❀ रचना अधिक एक तें एका ॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा ❀ अगनित उडुगन रबि रजनीसा ॥
अगनित लोकपाल जम काला ❀ अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा ❀ नाना भाँति सृष्टिबिस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❀ चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दोहा--जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाइ ।
सो सब अद्भुत देखेउँ, बरनि कवनि बिधि जाइ ॥
एक एक ब्रह्मांड महुँ, रहेउँ बरष सत एक ।
एहि बिधि देखत फिरेउँ मैं, अंडकटाह अनेक ॥८०॥

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता ❀ भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसित्राता ॥
नर गंधर्ब भूत बेताला ❀ किन्नर निसिचर पसु खग ब्याला ॥
देव-दनुज-गन नाना जाती ❀ सकल जीव तहँ आनहिं भाँती ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना ❀ सब प्रपंच तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा ❀ देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी ❀ सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दसरथ कौसल्या सुनु ताता ❀ बिबिधरूप भरतादिकभ्राता ॥
प्रतिब्रह्मांड रामअवतारा ❀ देखेउँ बालबिनोद उदारा ॥

दोहा--भिन्न भिन्न मैं दीख सब, अतिबिचित्र हरिजान ।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु, राम न देखेउँ आन ॥

श्री भरतजीके यहाँ हनुमान आगमन



रामविरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ।
विप्ररूप धरि पवनसुत, आय गये जिमि पोत ॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा, सोइ कृपाल रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह सरीर ॥ ८१ ॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका ❀ बीते मनहुँ कलपसत एका ॥
फिरत फिरत निज आस्रम आयउँ ❀ तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ ॥
निज-प्रभु-जनम अवध सुनि पायउँ ❀ निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जनममहोत्सव जाई ❀ जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
रामउदर देखेउँ जग नाना ❀ देखत बनै न जाइ बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना ❀ मायापति कृपाल भगवाना ॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी ❀ मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥
उभय घरी महुँ मैं सब देखा ❀ भयउ भ्रमित मन मोह बिसेखा ॥

दोहा–देखि कृपाल बिकल मोहि, बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसतही मुख बाहेर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मो सन, करन लगे पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावउँ, मन न लहै बिस्राम ॥८२॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई ❀ समुझत देहदसा बिसराई ॥
धरनि परेउँ मुख आव न बाता ❀ त्राहि त्राहि आरत-जन-त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी ❀ निज-माया-प्रभुता तब रोकी
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ ❀ दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहि बिगत-बिमोहा ❀ सेवकसुखद कृपासंदोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी ❀ मन महुँ होइ हरष अति भारी ॥
भक्तबछलता प्रभु के देखी ❀ उपजी मम उर प्रीति बिसेखी ॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी ❀ कीन्हेउँ बहु बिधि बिनय बहोरी ॥

दोहा–सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निजदास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु, बोले रमानिवास ॥
काग भुसुंडी माँगु बर, अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिकसिधिअपररिधि, मोच्छसकलसुखखानि॥८३॥

ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना ❀ सुरदुर्लभ गुन जे जग जाना ॥
आजु देउँ तव संसय नाहीं ❀ माँगु जो तोहि भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभुबचन अधिक अनुरागेउँ ❀ मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥
प्रभु कह देन सकलसुख सही ❀ भगति आपनी देन न कही ॥
भगतिहीन गुन सब सुख ऐसे ❀ लवन बिना बहु ब्यंजन जैसे ॥
भजनहीन सुख कवने काजा ❀ अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जौं प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू ❀ मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत वर माँगउँ स्वामी ❀ तुम्ह उदार उर-अंतर-जामी ॥

दोहा--अबिरल भगति बिसुद्ध तव, स्रुति पुरान जो गाव।
जेहि खोजत जोगीस मुनि, प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥
भगत-कल्प-तरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निजभगति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम ॥८४॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक ❀ बोले बचन परम-सुख-दायक ॥
सुनु बायस तैं सहज सयाना ❀ काहे न माँगसि अस बरदाना ॥
सब सुखखानि भगति तैं माँगी ❀ नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी ॥
जो मुनि कोटिजतन नहिं लहहीं ❀ जे जप-जोग-अनल तन दहहीं ॥
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई ❀ माँगेहु भगति मोहि अति भाई ॥
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे ❀ सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरे ॥
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा ❀ जोग चरित्र रहस्य-बिभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा ❀ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दोहा--मायासंभव भ्रम सकल, अब न ब्यापिहहिं तोहि।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज, अनुज गुनाकर मोहि ॥
मोहि भगतप्रिय संतत, अस बिचारि सुनु काग।
काय बचन मन मम पद, करेसु अचल अनुराग ॥८५॥

अब सुनु परमबिमल मम बानी ❀ सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निजसिद्धान्त सुनावौं तोही ❀ सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही ॥
मम मायासंभव परिवारा ❀ जीव चराचर बिबिध प्रकारा ॥

सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❀ सब तें अधिक मनुज मोहि भाये ॥
तिन्ह महुँ द्विज द्विज महुँ स्रुतिधारी ❀ तिन्ह महँ निगम-धर्म-अनुसारी ॥
तिन्ह महुँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी ❀ ग्यानिहुँ तें अतिप्रिय बिग्यानी ॥
तिन्हतें पुनि मोहि प्रिय निज दासा ❀ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहि पाहीं ❀ मोहि सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं ॥
भगतिहीन बिरंचि कि न होई ❀ सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अतिनीचउ प्रानी ❀ मोहि प्रानप्रिय अस मम बानी ॥

दोहा--सुचि सुसील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहि न लाग ।
स्रुति पुरान कह नीति असि, सावधान सुनु काग ॥८६॥

एक पिता के बिपुल कुमारा ❀ होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता ❀ कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई ❀ सब पर प्रीति पितहि सम होई ॥
कोउ पितुभगत बचन मन कर्मा ❀ सपनेहु जान न दूसर धर्मा ॥
सो सुत प्रिय पितु प्रानसमाना ❀ जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
एहि बिधि जीव चराचर जेते ❀ त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल बिस्व यह मम उपजाया ❀ सब पर मोहि बराबरि दाया ॥
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया ❀ भजइ मोहि मन बच अरु काया ॥

दोहा--पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ।
भगति भाव भजि कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोइ ॥

सोरठा--सत्य कहउँ खग तोहि, सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि, परिहरि आस भरोस सब ॥८७॥

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही ❀ सुमिरि स्वरूप निरंतर मोही ॥
प्रभुबचनामृत सुनि न अघाऊँ ❀ तन पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥
सो सुख जानै मन अरु काना ❀ नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥
प्रभु-सोभा-सुख जानहिं नयना ❀ कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहिं बयना ॥
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई ❀ लगे करन सिसुकौतुक तेई ॥
सजल नयन कछु मुख करि रूखा ❀ चितइ मातु लागी अति भूखा ॥

देखि मातु आतुर उठि धाई ❀ कहि मृदु बचन लिये उर लाई ॥
गोद राखि कराव पयपाना ❀ रघुबर-चरित ललित कर गाना ॥

सोरठा–जेहि सुख लागि पुरारि, असुभ-बेष-कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नरनारि, तेहि सुख महुँ संतत मगन ॥
सोई सुख लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ ।
तेहि नहिं गनहिं खगेस, ब्रह्मसुखहि सज्जनसुमति ॥८८॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला ❀ देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥
रामप्रसाद भगति बर पायउँ ❀ प्रभुपद बंदि निजास्रम आयउँ ॥
तब तें मोहि न ब्यापी माया ❀ जब तें रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा ❀ हरिमाया जिमि मोहि नचावा ॥
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा ❀ बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा ॥
रामकृपा बिनु सुनु खगराई ❀ जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती ❀ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई ❀ जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥

सोरठा--बिनु गुरु होइ कि ग्यान, ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान, सुख कि लहहिं हरिभगति बिनु ॥
को बिस्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ।
चलइ कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिय ॥८९॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं ❀ काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहि कि कामा ❀ थलबिहीन तरु कबहुँ कि जामा ॥
बिनु बिग्यान कि समता आवइ ❀ को अवकास कि नभ बिनु पावइ ॥
स्रद्धा बिना धरम नहिं होई ❀ बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा ❀ जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
सील कि मिल बिनु बुधसेवकाई ❀ जिमि बिनु तेज न रूप गुसाईं ॥
निजसुख बिनु मन होइ कि थीरा ❀ परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा ❀ बिनु हरिभजन न भव-भय-नासा ॥

दोहा—बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीवन लह बिस्राम॥
सोरठा—अस बिचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर, करुनाकर सुंदर सुखद॥ ९०॥

निज-मति-सरिस नाथ मैं गाई ❁ प्रभु-प्रताप-महिमा खगराई॥
कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेखी ❁ यह सब मैं निज नयनन्हि देखी॥
महिमा नाम रूप गुनगाथा ❁ सकल अमित अनंत रघुनाथा॥
निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं ❁ निगम सेष सिव पार न पावहिं॥
तुम्हहिं आदि खग मसकप्रजंता ❁ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता॥
तिमि रघुपति-महिमा अवगाहा ❁ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा॥
राम काम-सत-कोटि-सुभग-तन ❁ दुर्गा-कोटि-अमित अरिमर्दन॥
सक्र-कोटि-सत-सरिस बिलासा ❁ नभ-सत-कोटि-अमित अवकासा॥

दोहा—मरुत-कोटि-सत-बिपुल बल, रबि-सत-कोटि प्रकास।
ससि-सत-कोटि सो सीतल, समन-सकल-भव-त्रास॥
काल-कोटि-सत-सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरंत।
धूमकेतु-सत-कोटि-सम, दुराधर्ष भगवंत॥ ९१॥

प्रभु अगाध सत-कोटि-पताला ❁ समन-कोटि-सत-सरिस कराला॥
तीरथ-अमित-कोटि-सम पावन ❁ नाम अखिल-अघ-पुंज-नसावन॥
हिम-गिरि-कोटि अचल रघुबीरा ❁ सिंधु-कोटि-सत-सम गंभीरा॥
काम-धेनु-सत-कोटि-समाना ❁ सकल-काम-दायक-भगवाना॥
सारद-कोटि-अमित चतुराई ❁ बिधि-सत-कोटि सृष्टिनिपुनाई॥
बिष्णु-कोटि-सम पालन करता ❁ रुद्र-कोटि-सत-सम संहरता॥
धनद-कोटि-सत-सम धनवाना ❁ माया कोटि प्रपंचनिधाना॥
भार धरन सत-कोटि-अहीसा ❁ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा॥

छन्द—निरुपम न उपमा आन रामसमान निगमागम कहै।
जिमि कोटि-सत-खद्योत-सम रबि कहत अतिलघुता लहै॥
एहि भाँति नित निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं।
प्रभु भावगाहक अतिकृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं॥

दोहा--राम अमित-गुन-सागर, थाह कि पावइ कोइ।
संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहिं सुनायउँ सोइ॥

सोरठा—भाववस्य भगवान, सुखनिधान करुनाभवन।
तजि ममता मद मान, भजिय सदा सीतापतिहिं॥९२॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाये ❀ हरषित खगपति पंख फुलाये॥
नयननीर मन अति हरषाना ❀ श्रीरघुबर-प्रताप उर आना॥
पाछिल मोह समुझि पछिताना ❀ ब्रह्म अनादि मनुज करि माना॥
पुनि पुनि कागचरन सिरु नावा ❀ जानि रामसम प्रेम बढ़ावा॥
गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई ❀ जौं बिरंचि-संकर-सम होई॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता ❀ दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता॥
तव सरूप गारुड़ि रघुनायक ❀ मोहि जिआयेउ जन-सुख-दायक॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना ❀ रामरहस्य अनूपम जाना॥

दोहा—ताहि प्रसंसि बिबिधबिधि, सीस नाइ कर जोरि।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु, बोलेउ गरुड़ बहोरि॥
प्रभु अपने अबिबेक तें, बूझउँ स्वामी तोहि।
कृपासिंधु सादर कहहु, जानि दास निज मोहि॥९३॥

तुम्ह सर्बग्य तग्य तमपारा ❀ सुमति सुसील सरलआचारा॥
ग्यान-बिरत-बिग्यान-निवासा ❀ रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा॥
कारन कवन देह यह पाई ❀ तात सकल मोहि कहउ बुझाई॥
राम-चरित-सर सुंदर स्वामी ❀ पायउ कहाँ कहहु नभगामी॥
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं ❀ महा प्रलयहु नास तव नाहीं॥
मुधा बचन नहिं ईश्वर कहई ❀ सो मोरे मन संसय अहई॥
अग जग जीव नाग नर देवा ❀ नाथ सकलजग कालकलेवा॥
अंडकटाह अमित लयकारी ❀ काल सदा दुरतिक्रम भारी॥

सोरठा--तुम्हहिं न ब्यापत काल, अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहु कृपाल, ग्यानप्रभाउ कि जोगबल॥

दोहा--प्रभु तव आस्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब, कहहु सहित अनुराग ॥९४॥

गरुड़गिरा सुनि हरषेउ कागा ❀ बोलेउ उमा सहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी ❀ प्रस्न तुम्हार मोहि अतिप्यारी ॥
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई ❀ बहुत जनम की सुधि मोहि आई ॥
अब निज कथा कहउँ मैं गाई ❀ तात सुनहु सादर मन लाई ॥
जप तप ब्रत मख सम दम दाना ❀ बिरति बिबेक जोग बिग्याना ॥
सब कर फल रघुपति-पद प्रेमा ❀ तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥
एहि तन रामभगति मैं पाई ❀ ता तें मोहि ममता अधिकाई ॥
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई ❀ तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सोरठा--पन्नगारि असि नीति, स्रुतिसंमत सज्जन कहहिं ।
अतिनीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज-परम-हित ॥
पाट कीट तें होइ, तेहि तें पाटंबर रुचिर ।
कृमि पालइ सब कोइ, परम अपावन प्रानसम ॥९५॥

स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा ❀ मन-क्रम-बचन रामपद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा ❀ जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा ॥
रामबिमुख लहि बिधिसम देही ❀ कबि कोबिद न प्रसंसहिं तेही ॥
रामभगति एहि तन उर जामी ❀ तातें मोहि परमप्रिय स्वामी ॥
तजउँ न तनु निज इच्छा मरना ❀ तनु बिनु बेद भजन नहिं बरना ॥
प्रथम मोह मोहि बहुत बिगोवा ❀ रामबिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
नाना जनम करम पुनि नाना ❀ कियें जोग जप मख तप दाना ॥
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं ❀ मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥
देखेउँ सब करि करम गुसाईं ❀ सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं ॥
सुधि मोहि नाथ जनम बहु केरी ❀ सिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥

दोहा--प्रथम जनम के चरित अब, कहउँ सुनहु बिहँगेस ।
सुनिप्रभु-पद-रति उपजै, जातें मिटहिं कलेस ॥

पूरब कल्प एक प्रभु, जुग कलिजुग मलमूल ।
नर अरु नारि अधर्म-रत, सकलनिगम प्रतिकूल ॥९६॥

तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई ❀ जनमत भयउँ सूद्रतनु पाई ॥
सिवसेवक मन क्रम अरु बानी ❀ आन देव निंदक अभिमानी ॥
धन - मदमत्त - परम बाचाला ❀ उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला ॥
जदपि रहेउँ रघुपति-रजधानी ❀ तदपि न कछु महिमा तब जानी ॥
अब जाना मैं अवधप्रभावा ❀ निगमागम पुरान अस गावा ॥
कवनेहु जनम अवध बस जोई ❀ रामपरायन सो पर होई ॥
अवधप्रभाव जानि तब प्रानी ❀ जब उर बसहिं राम धनुपानी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❀ पापपरायन सब नरनारी ॥

दोहा--कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रन्थ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि, प्रगट किये बहु पंथ ॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।
सुनु हरिजान ग्याननिधि, कहउँ कछुक कलि धर्म॥९७॥

बरनधरम नहिं आस्रम चारी ❀ स्रुति-बिरोध-रत सब नरनारी ॥
द्विज स्रुतिबेंचक भूप प्रजासन ❀ कोउ नहिं मान निगम-अनु-सासन ॥
मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा ❀ पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारंभ दंभरत जोई ❀ ता कहँ संत कहहिं सब कोई ॥
सोइ सयान जो पर-धन-हारी ❀ जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥
जो कह झूठ मसखरी जाना ❀ कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
निराचार जो स्रुतिपथ त्यागी ❀ कलिजुग सोइ ग्यानी बैरागी ॥
जाके नख अरु जटा बिसाला ❀ सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दोहा--असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥
सोरठा-जे अपकारी चार, तिन्ह कर गौरव मान्य बहु ।
मन क्रम बचन लबार, ते बकता कलिकाल महुँ ॥९८॥

नारि बिबस नर सकल गोसाईं ❀ नाचहिं नटमरकट की नाईं ॥
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना ❀ मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम-लोभ-रत क्रोधी ❀ बेद - बिप्र - गुरु - संत - बिरोधी ॥
गुनमंदिर सुंदर पति त्यागी ❀ भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी बिभूषनहीना ❀ बिधवन्ह के सृंगार नबीना ॥
गुरुसिष बधिर अंध कर लेखा ❀ एक न सुनहिं एक नहिं देखा ॥
हरइ सिष्यधन सोक न हरई ❀ सो गुरु घोर नरक महुँ परई ॥
मातु पिता बालकन्ह बोलावहिं ❀ उदर भरइ सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दोहा--ब्रह्मग्यान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात ।
कौड़ी लागि लोभबस, करहिं बिप्र-गुरु-घात ॥
बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हम तुम्ह तें कछु घाटि ।
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर, आँखि देखावहिं डाँटि ॥९९॥

परतिय लंपट कपट सयाने ❀ मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदबादी ग्यानी नर ❀ देखेउँ मैं चरित्र कलिजुग कर ॥
आपु गये अरु औरनि घालहिं ❀ जो कहुँ सतमारग प्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि एक एक नरका ❀ परहिं जे दूखहिं स्रुति करि तरका ॥
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा ❀ स्वपच किरात कोल कलवारा ॥
नारि मुई घर संपति नासी ❀ मूँड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ॥
ते बिप्रन्ह सन पाँव पुजावहिं ❀ उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी ❀ निराचार सठ बृषलीस्वामी ॥
सूद्र करहिं जप तप ब्रत दाना ❀ बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा ❀ जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दोहा--भये बरनसंकर सकल, भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुख, भय रुज सोक बियोग ॥
स्रुतिसंमत हरि-भक्ति-पथ, संजुत बिरति बिबेक ।
तेहि न चलहिं नर मोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक ॥१००॥

तोमरछंद-बहुदाम सवाँरहिं धामजती ❀ बिषया हरि लीन्हि गई बरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही ❀ कलिकौतुक तात न जात कही ॥
कुलवंत निकारहिं नारि सती ❀ गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं ❀ अबला नहिं डीठ परी जब लौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जब तें ❀ रिपुरूप कुटुंब भये तब तें ॥
नृप पापपरायन धर्म नहीं ❀ करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥
धनवंत कुलीन मलीन अपी ❀ द्विजचिह्न जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुरानन्ह बेदहिं जो ❀ हरिसेवक संत सही कलि सो ॥
कबिबृंद उदार दुनी न सुनी ❀ गुन-दूषन-ब्रात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै ❀ बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

दोहा--सुनु खगेस कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाखंड ।
मान मोह मारादि मद, ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥
तामस धर्म करहिं सब, जप तप मख ब्रत दान ।
देव न बरषहिं धरनि पर, बये न जामहिं धान ॥१०१॥

तोटक--अबला कच भूषन भूरि छुधा ❀ धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता ❀ मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं ❀ अभिमान बिरोध अकारनहीं ॥
लघु जीवन संबत पंचदसा ❀ कलपांत न नास गुमान असा ॥
कलिकाल बिहाल किये मनुजा ❀ नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा ॥
नहिं दोष बिचार न सीतलता ❀ सब जाति कुजाति भये मँगता ॥
इरषा परुखाच्छर लोलुपता ❀ भरि पूरि रही समता बिगता ॥
सब लोग बियोग बिसोक हये ❀ बरनास्रम धर्म बिचार गये ॥
दम दान दया नहिं जानपनी ❀ जड़ता पर-बंचनताति-घनी ॥
तनपोषक नारि नरा सगरे ❀ परनिंदक ते जग मों बगरे ॥

दोहा--सुनु ब्यालारि कराल कलि, मल अवगुन आगार ।
गुनउ बहुत कलिजुग कर, बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग ।
जो गति होइ सो कलि हरि, नाम तें पावहिं लोग ॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी ❀ करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी ॥
त्रेता बिबिध जग्य नर करहीं ❀ प्रभुहि समर्पि करम भव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपति-पद-पूजा ❀ नर भव तरहिं उपाउ न दूजा ॥
कलिजुग केवल हरि-गुन-गाहा ❀ गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना ❀ एक अधार राम - गुन-गाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं ❀ प्रेमसमेत गाव गुनग्रामहिं ॥
सोइ भव तर कछु संसय नाहीं ❀ नामप्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा ❀ मानस पुन्य होइ नहिं पापा ॥

दोहा--कलि-जुग-सम जुग आन नहिं, जो नर कर बिस्वास ।
गाइ राम-गुन-गन बिमल, भव तर बिनहिं प्रयास ॥
प्रगट चारि पद धर्म के, कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हे, दान करइ कल्यान ॥ १०३ ॥

नित जुग होहिं धर्म सब केरे ❀ हृदय राम माया के प्रेरे ॥
सिद्ध सत्व समता बिग्याना ❀ कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा ❀ सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
बहु रज सत्व स्वल्प कछु तामस ❀ द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुन थोरा ❀ कलिप्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ॥
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं ❀ तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
काल धर्म नहिं ब्यापहिं तेही ❀ रघुपति-चरन-प्रीति रति जेही ॥
नटकृत कपट बिकट खगराया ❀ नटसेवकहिं न ब्यापइ माया ॥

दोहा--हरि-माया-कृत दोष गुन, बिनु हरिभजन न जाहिं ।
भजिय राम सब काम तजि, अस बिचारि मन माहीं ॥
तेहि कलिकाल बरष बहु, बसेउ अवध बिहगेस ।
परेउ दुकाल बिपतिबस, तब मैं गयउँ बिदेस ॥१०४॥

गयेउँ उजेनी सुनु उरगारी ❀ दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु संपति पाई ❀ तहँ पुनि करौं संभुसेवकाई ॥
बिप्र एक बैदिक सिवपूजा ❀ करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथबिंदक ❀ संभुउपासक नहिं हरिनिंदक ॥

तेहि सेवउँ मैं कपटसमेता ❀ द्विज दयाल अति नीतिनिकेता ॥
बाहिज नम्र देखि मोहि साईं ❀ बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥
संभुमंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा ❀ सुभउपदेस बिबिधबिधि कीन्हा ॥
जपउँ मंत्र सिवमंदिर जाई ❀ हृदय दंभ अहमिति अधिकाई ॥

दोहा–म खल मलसंकुल मति, नीच जाति बस मोह ।
हरिजन द्विज देखे जरउँ, करउँ विष्णु कर द्रोह ॥

सोरठा–गुरु नित मोहि प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।
मोहि उपजै अतिक्रोध, दंभिहि नीति कि भावई ॥ १०५॥

एक बार गुरु लीन्ह बोलाई ❀ मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥
सिवसेवा के सुत फल सोई ❀ अविरल-भगति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात सिव धाता ❀ नर पावँर के केतिक बाता ॥
जासु चरन अज सिव अनुरागी ❀ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हर कहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ❀ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
अधम जाति मैं बिद्या पाये ❀ भयउँ जथा अहि दूध पिआये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❀ गुरु कर द्रोह करौं दिन राती ॥
अतिदयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥
जेहि तें नीच बड़ाई पावा ❀ सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥
धूम अनलसंभव सुनु भाई ❀ तेहि बुझाव घनपदवी पाई ॥
रज मग परी निरादर रहई ❀ सब कर पगप्रहार नित सहई ॥
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई ❀ नृपकिरीट पुनि नयनन्ह परई ॥
सुनु खग खगपति समुझि प्रसंगा ❀ बुध नहिं करहिं अधम कर संगा ॥
कबि कोबिद गावहिं असि नीती ❀ खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥
उदासीन नित रहिय गोसाईं ❀ खल परिहरिय स्वान की नाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई ❀ गुरु हित कहहिं न मोहि सुहाई ॥

दोहा–एक बार हरिमंदिर, जपत रहेउ सिवनाम ।
गुरु आयउ अभिमान तें, उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥

गुरु दयाल नहिं कछु कहेउ, उर न रोष लवलेस ।
अतिअघ गुरुअपमानता, सहि नहिं सके महेस ॥१०६॥

मंदिर माँझ भई नभबानी ❀ रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ॥
जद्यपि तव गुरु के नहिं क्रोधा ❀ अतिकृपाल चित सम्यक बोधा ॥
तदपि साप लठ देइहौं तोही ❀ नीतिबिरोध सुहाइ न मोही ॥
जौं नहिं दंड करौं खल तोरा ❀ भ्रष्ट होइ स्रुतिमारग मोरा ॥
जे सठ गुरु सन इरषा करहीं ❀ रौरव नरक कोटिजुग परहीं ॥
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा ❀ अयुत जनम भरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगर इव पापी ❀ सर्प होहि खल मल मति ब्यापी ॥
महा-बिटप-कोटर महुँ जाई ❀ रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दोहा--हाहाकार कीन्ह गुरु, दारुन सुनि सिवस्राप ।
कंपित मोहि बिलोकि अति, उर उपजा परिताप ॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज, सिव सनमुख कर जोरि ।
बिनय करत गदगद गिरा, समुझि घोरगति मोरि ॥१०७॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम् ❀ विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम् ❀ चिदाकाशमाकाशवासंभजेऽहम् ॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयम् ❀ गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ॥
करालं महाकालकालं कृपालम् ❀ गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥
तुषाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरम् ❀ मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा ❀ लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालम् ❀ प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ॥
मृगाधीशचर्म्माम्बरं मुण्डमालम् ❀ प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम् ❀ अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
त्रयः शूलिनिर्मूलनं शूलपाणिम् ❀ भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥
कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी ❀ सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्दसन्दोहमोहापकारी ❀ प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथपादारविन्दम् ❀ भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशम् ❀ प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजाम् ❀ नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् ❀ प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥
श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥
दोहा--सुनि बिनती सर्बज्ञ सिव, देखि बिप्रअनुरागु ।
मंदिर नभ बानी भइ, द्विजबर अब बर माँगु ॥
जौं प्रसन्न प्रभु मो पर, नाथ दीन पर नेहु ।
निज पद-पद्म-भगति दृढ, पुनि दूसर बर देहु ॥
तव मायाबस जीव जड, संतत फिरहिं भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिंधु भगवान ॥
संकर दीनदयाल अब, एहि पर होहु कृपाल ।
सापअनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥१०८॥
एहि कर होइ परमकल्याना ❀ सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
बिप्रगिरा सुनि पर-हित-सानी ❀ एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥
जदपि कीन्ह यह दारुन पापा ❀ मैं पुनि दीन्ह कोप करि सापा ॥
तदपि तुम्हार साधुता देखी ❀ करिहउँ एहि पर कृपा बिसेखी ॥
छमासील जे परउपकारी ❀ ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ॥
मोर साप द्विज व्यर्थ न जाइहि ❀ जनम सहस्र अवसि यह पाइहि ॥
जनमत मरत दुसह दुख होई ❀ एहि स्वल्पउ नहिं ब्यापिहि सोई ॥
कवनेहु जनम मिटिहि नहिं ग्याना ❀ सुनहि सूद्र मम बचन प्रमाना ॥
रघुपति-पुरी जनम तव भयऊ ❀ पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥
पुरीप्रभाव अनुग्रह मोरे ❀ रामभगति उपजिहि उर तोरे ॥
सुनु मम बचन सत्य अति भाई ❀ हरितोषक ब्रत द्विजसेवकाई ॥
अब जन करिहि बिप्रअपमाना ❀ जानेसु संत अनंतसमाना ॥
इंद्रकुलिस मम सूल बिसाला ❀ कालदंड हरिचक्र कराला ॥
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई ❀ बिप्र-द्रोह-पावक सो जरई ॥

अस विवेक राखेहु मन माहीं ❀ तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
अउरौ एक आसिषा मोरी ❀ अ-प्रति-हत गति होइहि तोरी ॥

दोहा--सुनि सिवबचन हरषि गुरु, एवमस्तु इति भाखि।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह, संभु चरन उर राखि॥
प्रेरित काल बिंधगिरि, जाइ भयउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गये कछु काल॥
जोइ तन धरउँ तजउँ पुनि, अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरै, नर परिहरै पुरान॥
सिव राखी स्रुतिनीति अरु, मैं नहिं पाव कलेस।
एहि बिधि धरेउँ बिबिधि तनु, ग्यान न गयउ खगेस॥१०९॥

त्रिजग देव नर जो तनु धरऊँ ❀ तहँ तहँ रामभजन अनुसरऊँ ॥
एक शूल मोहि बिसर न काऊ ❀ गुरु कर कोमल सील सुभाऊ ॥
धरमदेह मैं द्विज कै पाई ❀ सुरदुर्लभ पुरान स्रुति गाई ॥
खेलौं तहाँ बालकन्ह मीला ❀ करौं सकल रघुनायक लीला ॥
प्रौढ़ भये मोहि पिता पढ़ावा ❀ समुझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा ॥
मन तें सकल बासना भागी ❀ केवल रामचरन लय लागी ॥
कहु खगेस अस कवन अभागी ❀ खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ॥
प्रेममगन मोहि कछु न सुहाई ❀ हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥
भये कालबस जब पितु माता ❀ मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ ❀ आस्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥
बूझउँ तिन्हहिं राम-गुन-गाहा ❀ कहहिं सुनउँ हरषित खगनाहा ॥
सुनत फिरउँ हरिगुन अनुवादा ❀ अ-ब्याहत-गति संभुप्रसादा ॥
छूटी त्रिबिधि ईषना गाढ़ी ❀ एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
राम-चरन-बारिज जब देखौं ❀ तब निजजनम सुफल करि लेखौं ॥
जेहि पूछहुँ सोइ मुनि अस कहई ❀ ईस्वर सर्व-भूत-मय अहई ॥
निर्गुन मत नहिं मोहि सुहाई ❀ सगुन ब्रह्मरति उर अधिकाई ॥

दोहा--गुरु के बचन सुरति करि, रामचरन मन लाग ।
रघुपति-जस गावत फिरउँ, छन छन नव अनुराग ॥
मेरुसिखर बटछाया, मुनि लोमस आसीन ।
देखि चरन सिरु नायउँ, बचन कहेउँ अतिदीन ॥
सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपाल खगराज ।
मोहि सादर पूछत भये, द्विज आयउ केहि काज ॥
तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्बग्य सुजान ।
सगुन ब्रह्म आराधना, मोहि कहहु भगवान ॥११०॥

तब मुनीस रघुपति-गुन-गाथा ❀ कहे कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्म-ग्यान-रति मुनि बिग्यानी ❀ मोहि परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेसा ❀ अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा ❀ अनुभव-गम्य अखंड अनूपा ॥
मनगोतीत अमल अबिनासी ❀ निर्बिकार निरवधि सुखरासी ॥
सो तें ताहि तोहि नहिं भेदा ❀ बारि बीच इव गावहिं बेदा ॥
बिबिध भाँति मुनि मोहि समुझावा ❀ निर्गुनमत मम हृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा ❀ सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥
राम-भगति-जल मम मन मीना ❀ किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना ॥
सो उपदेश करहु करि दाया ❀ निज नयनन देखउँ रघुराया ॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा ❀ तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा ॥
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा ❀ खंडि सगुनमत निर्गुनरूपा ॥
तब मैं निर्गुनमति करि दूरी ❀ सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा ❀ मुनितन भये क्रोध के चीन्हा ॥
सुनु प्रभु बहुत अवग्या किये ❀ उपज क्रोध ग्यानिहु के हिये ॥
अति संघरषन जौं कर कोई ❀ अनल प्रगट चंदन तें होई ॥

दोहा--बारंबार सकोप मुनि, करै निरूपन ग्यान ।
मैं अपने मन बैठि तब, करउँ बिबिध अनुमान ॥

द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि, द्वैत कि बिनु अग्यान ।
मायाबस परिछिन्न जड़, जीव कि ईससमान ॥१११॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताके ❀ तेहि कि दरिद्र परसमनि जा के ॥
परद्रोही कि होइ निःसंका ❀ कामी पुनि कि रहै अकलंका ॥
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें ❀ कर्मकि होहिं स्वरूपहिं चीन्हें ॥
काहू सुमति कि खल सँग जामी ❀ सुभगति पाव कि पर-त्रियगामी ॥
भव कि परहिं परमातमबिंदक ❀ सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक ॥
राज कि रहइ नीति बिनु जाने ❀ अघ कि रहइ हरिचरित बखाने ॥
पावन जस कि पुन्य बिनु होई ❀ बिनु अघ अजस कि पावइ कोई ॥
लाभ कि कछु हरि-भगति-समाना ❀ जेहि गावहिं स्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग एहि सम कछु भाई ❀ भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि पिसुनतासम कछु आना ❀ धर्म कि दयासरिस हरिजाना ॥
एहि बिधि अमितजुगुतिमन गुनऊँ ❀ मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ ॥
पुनि पुनि स-गुन-पच्छ मैं रोपा ❀ तब मुनि बोले बचन सकोपा ॥
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि ❀ उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥
सत्यबचन बिस्वास न करही ❀ वायस इव सबही तें डरही ॥
सठ स्वपच्छ तव हृदय बिसाला ❀ सपदि होहु पच्छी चंडाला ॥
लीन्ह साप मैं सीस चढ़ाई ❀ नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दोहा—तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद सिरु नाइ ।
सुमिरि राम रघुबंस-मनि, हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जे रामचरन-रत, बिगत-काम-मद-क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहि सन करहिं बिरोध ॥११२॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषिदूषन ❀ उरप्रेरक रघुबंस-बिभूषन ॥
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी ❀ लीन्ही प्रेम परीछा मोरी ॥
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना ❀ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना ॥
रिषि मम सहनसीलता देखी ❀ रामचरन-बिस्वास बिसेखी ॥
अतिबिसमय पुनि पुनि पछिताई ❀ सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ॥
मम परितोष बिबिधबिधि कीन्हा ❀ हरषित राममंत्र तब दीन्हा ॥

बालकरूप राम कर ध्याना ❀ कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
सुंदर सुखद मोहि अति भावा ❀ सो प्रथमहिं मैं तुम्हहिं सुनावा ॥
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा ❀ रामचरित-मानस तब भाखा ॥
सादर मोहि यह कथा सुनाई ❀ पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा ❀ संभुप्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहि निजभगत राम कर जानी ❀ ता तें मैं सब कहेउँ बखानी ॥
रामभगति जिन्ह के उर नाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं ॥
मुनि मोहि बिबिधभाँति समुझावा ❀ मैं सप्रेम मुनिपद सिरु नावा ॥
निज-कर-कमल परसि मम सीसा ❀ हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा ॥
रामभगति अबिरल उर तोरे ❀ बसहु सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दोहा–सदा रामप्रिय होहु तुम्ह, सुभ-गुन-भवन अमान ।
कामरूप इच्छा मरन, ग्यान-बिराग-निधान ॥
जेहि आस्रम तुम्ह बसब पुनि, सुमिरत श्रीभगवंत ।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या, जोजन एक प्रजंत ॥११३॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ ❀ कछु दुख तुम्हहिं न ब्यापिहि काऊ ॥
रामरहस्य ललित बिधि नाना ❀ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु स्रम तुम्ह जानब सब सोऊ ❀ नित नवनेह रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहहु मन माहीं ❀ हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनिआसिष सुनु मति धीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी ❀ यह मम भगत करम मन बानी ॥
सुनि नभ गिरा हरष मोहि भयऊ ❀ प्रेम मगन सब संसय गयऊ ॥
करि बिनती मुनिआयसु पाई ❀ पदसरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥
हरषसहित एहि आस्रम आयउँ ❀ प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पायउँ ॥
इहाँ बसत मोहिं सुनु खगईसा ❀ बीते कलप सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपति-गुन-गाना ❀ सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा ❀ धरहिं भगतहित मनुजसरीरा ॥
तब तब जाइ रामपुर रहऊँ ❀ सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ ॥
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा ❀ निज आस्रम आवउँ खगभूपा ॥

कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई ❀ कागदेह जेहि कारन पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी ❀ राम-भगति-महिमा अतिभारी ॥

दोहा--तातें यह तन मोहि प्रिय, भयउ राम-पद-नेह ।
निज-प्रभु-दरसन पायऊँ, गयउ सकल संदेह ॥
भगति पच्छ हठ करि रहेउँ, दीन्हि महा-रिषि-साप ।
मुनिदुर्लभ बर पायऊँ, देखहु भजनप्रताप ॥११४॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं ❀ केवल ग्यानहेतु स्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी ❀ खोजत आक फिरहिं पय लागी ॥
सुनु खगेस हरिभगति बिहाई ❀ जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते सठ महा सिन्धु बिनु तरनी ❀ पैरि पार चाहहिं जड़करनी ॥
सुनि भुसुंडि के बचन भवानी ❀ बोलेउ गरुड़ हरषि मृदुबानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❀ संसय-सोक-मोह-भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत राम-गुन-ग्रामा ❀ तुम्हरी कृपा लहेउँ बिस्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछउँ तोही ❀ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
कहहिं संत मुनि बेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं ❀ नहिं आदरेहु भगति की नाईं ॥
ग्यानहिं भगतिहि अंतर केता ❀ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारिबचन सुख माना ❀ सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा ❀ उभय हरहिं भवसंभव खेदा ॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर ❀ सावधान सोउ सुनु बिहंगवर ॥
ग्यान बिराग जोग बिग्याना ❀ ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती ❀ अबला अबल सहज जड़ जाती ॥

दोहा--पुरुष त्यागि सक नारिहिं, जो बिरक्त मतिधीर ।
न तु कामी जो बिषयबस, बिमुख जो पद रघुबीर ॥

सोरठा--सोउ मुनि ग्याननिधान, मृगनयनी बिधुमुख निरखि ।
बिबस होइ हरिजान नारि बिस्व माया प्रगट ॥११५॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखौं ❀ बेद-पुरान-संत-मत भाखौं ॥
मोह न नारि नारि के रूपा ❀ पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ ❀ नारिवर्ग जानहिं सब कोऊ ॥
पुनि रघुबीरहिं भगति पियारी ❀ माया खलु नर्तकी बिचारी ॥
भगतिहिं सानुकूल रघुराया ❀ ता तें तेहि डरपति अति माया ॥
रामभगति निरुपम निरुपाधी ❀ बसइ जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई ❀ करि न सकै कछु निज प्रभुताई ॥
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी ❀ जाचहिं भगति सकल-सुख-खानी ॥

दोहा--यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ ।
जो जानै रघुपति-कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ ॥
अउरौ ग्यान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन ।
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अबिछीन ॥११६॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी ❀ समुझत बनै न जाइ बखानी ॥
ईस्वरअंस जीव अबिनासी ❀ चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो मायाबस भयउ गोसाईं ❀ बँधेउ कीर मरकट की नाईं ॥
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई ❀ जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तब तें जीव भयउ संसारी ❀ छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
स्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई ❀ छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥
जीवहृदय तम मोह बिसेखी ❀ ग्रंथि छूटि किमि परइ न देखी ॥
अस संजोग ईस जब करई ❀ तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
सात्विक स्रद्धा धेनु सुहाई ❀ जो हरिकृपा हृदय बसि आई ॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा ❀ जे स्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥
तेइ तृन हरित चरइ जब गाई ❀ भाव बच्छ सिसु धेनु पेन्हाई ॥
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा ❀ निर्मल मन अहीर निजदासा ॥
परम-धरम-मय पय दुहि भाई ❀ अवटइ अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब छमा जुडावइ ❀ धृतिसम जावन देइ जमावइ ॥
मुदिता मथइ बिचार मथानी ❀ दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ❀ बिमल बिराग सुपरम पुनीता ॥

दोहा--जोग अगिनि करि प्रगट तब, कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावइ ग्यान घृत, ममता मल जरि जाइ॥
तब बिग्यानरूपिनी, बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरइ दृढ़, समता दियटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करइ सुगाढ़ि॥
सोरठा--एहि बिधि लेसइ दीप, तेजरासि बिग्यानमय।
जातहिं जासु समीप, जरहिं मदादिक सलभ सब॥११७॥

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा ❀ दीपसिखा सोइ परमप्रचंडा॥
आतम-अनुभव-सुख सुप्रकासा ❀ तब भवमूल भेदभ्रम नासा॥
प्रबल अबिद्या कर परिवारा ❀ मोहआदि तम मिटइ अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा ❀ उरगृह बैठि ग्रंथि निरुवारा॥
छोरन ग्रंथि पाव जौं कोई ❀ तौ यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रंथि जानि खगराया ❀ बिघन अनेक करै तब माया॥
रिद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई ❀ बुद्धिहि लोभ देखावहिं आई॥
कल बल छल करि जाइ समीपा ❀ अंचल बात बुझावहिं दीपा॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी ❀ तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥
जौं तेहि बिघन बुद्धि नहिं बाधी ❀ तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥
इंद्री द्वार झरोखा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषय बयारी ❀ ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
जब सो प्रभंजन उरगृह जाई ❀ तबहिं दीप बिग्यान बुझाई॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा ❀ बुद्धि बिकल भइ बिषयबतासा॥
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सुहाई ❀ बिषयभोग पर प्रीति सदाई॥
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी ❀ तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥

दोहा--तब फिरि जीव बिबिध बिधि, पावइ संसृति क्लेस।
हरिमाया अति दुस्तर, तरि न जाइ बिहँगेस॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८॥

ग्यानपंथ कृपान कै धारा ❀ परत खगेस होइ नहिं बारा ॥
जौं निरबिघन पंथ निरबहई ❀ सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद ❀ संत पुरान निगम आगम बद ॥
राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं ❀ अनइच्छित आवइ बरिआईं ॥
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई ❀ कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोच्छसुख सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरिभगति बिहाई ॥
अस बिचारि हरिभगत सयाने ❀ मुकुति निरादर भगति लोभाने ॥
भगति करत बिनु जतन प्रयासा ❀ संसृतिमूल अबिद्या नासा ॥
भोजन करिय तृपिति हित लागी ❀ जिमि सो असन पचवइ जठरागी ॥
असि हरिभगति सुगम सुखदाई ❀ को अस मूढ़ न जाहि सुहाई ॥

दोहा—सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।
भजहु राम-पद पंकज, अस सिद्धांत बिचारि ॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य।
अस समरथ रघुनायकहिं, भजहिं जीव ते धन्य॥११९॥

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई ❀ सुनहु भगतिमनि कै प्रभुताई ॥
रामभगति चिंतामनि सुंदर ❀ बसइ गरुड़ जा के उर अंतर ॥
परमप्रकास रूप दिन राती ❀ नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा ❀ लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥
अचल अबिद्या तम मिटि जाई ❀ हारहिं सकल सलभसमुदाई ॥
खल कामादि निकट नहिं जाहीं ❀ बसइ भगति जाके उर माहीं ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई ❀ तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई ॥
ब्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
राम-भगति-मनि उर बस जाके ❀ दुख-लव-लेस न सपनेहुँ ता के ॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं ❀ जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई ❀ रामकृपा बिनु नहिं कोउ लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे ❀ नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥

पावन पर्बत बेद पुराना ❀ रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ❀ ग्यान बिराग नयन उरगारी ॥
भावसहित खोजइ जो प्रानी ❀ पाव भगतिमनि सब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा ❀ राम तें अधिक राम कर दासा ॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा ❀ चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
सब कर फल हरिभगति सुहाई ❀ सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥
अस बिचारि जो कर सतसंगा ❀ रामभगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

दोहा—ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ग्यान सन्त सुर आहि ।
कथा सुधा मथि काढइ, भगति मधुरता जाहि ॥
बिरति चर्म असि ग्यानमद, लोभ मोह रिपुमारि ।
जय पाइय सो हरिभगति, देखु खगेस बिचारि ॥१२०॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ ❀ जो कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहि निज सेवक जानी ❀ सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❀ सब तें दुर्लभ कवन सरीरा ॥
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी ❀ सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी ॥
संत असंत मरमु तुम्ह जानहु ❀ तिन्ह कर सहज सुभाउ बखानहु ॥
कवन पुन्य स्रुतिबिदित बिसाला ❀ कहहु कवन अघ परम कृपाला ॥
मानसरोग कहहु समुझाई ❀ तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अतिप्रीती ❀ मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥
नर-तन-सम नहिं कवनिउ देही ❀ जीव चराचर जाचत जेही ॥
नरक – सर्ग – अपबर्ग – निसेनी ❀ ग्यान–बिराग–भगति–सुख-देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर ❀ होहिं बिषयरत मंद मंदतर ॥
काँच किरिच बदले जिमि लेहीं ❀ कर तें डारि परसमनि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं ❀ संत-मिलन-सम सुख कहुँ नाहीं ॥
परउपकार बचन मन काया ❀ संत सहज सुभाव खगराया ॥
संत सहहिं दुख परहित लागी ❀ पर - दुख - हेतु असंत अभागी ॥
भूरज - तरु - सम संत कृपाला ❀ परहित नित सह बिपति बिसाला ॥
सन इव खल परबंधन करई ❀ खाल कढाइ बिपति सहि मरई ॥

खल बिनु स्वारथ परअपकारी ❀ अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसंपदा बिनासि नसाहीं ❀ जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं॥
दुष्टहृदय जग आरत हेतू ❀ जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
संतउदय संतत सुखकारी ❀ बिस्वसुखद जिमि इंदु तमारी ॥
परमधरम स्रुतिबिदित अहींसा ❀ पर-निंदा-सम अघ न गिरीसा ॥
हरि–गुरु–निंदक दादुर होई ❀ जनम सहस्र पाव तन सोई ॥
द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि ❀ जग जनमइ बायससरीर धरि ॥
सुर-स्रुति-निंदक जे अभिमानी ❀ रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक संत - निंदा-रत ❀ मोहनिसा प्रिय ग्यान भानु मत ॥
सब कै निंदा जे जड करहीं ❀ ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानसरोगा ❀ जेहि तें दुख पावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल ब्याधिन कर मूला ❀ तेहि तें पुनि उपजै बहु सूला ॥
काम बात कफ लोभ अपारा ❀ क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई ❀ उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❀ ते सब सूल नाम को जाना ॥
ममता दादु कंडु इरषाई ❀ हरष बिषाद गरह बहुताई ॥
परसुख देखि जरनि सोइ छई ❀ कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥
अहंकार अतिदुखद डवँरुआ ❀ दंभ कपट मद मान नहरुआ ॥
तृस्ना उदरबुद्धि अतिभारी ❀ त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी ॥
जुगबिधि ज्वर मत्सर अबिबेका ❀ कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दोहा–एक ब्याधिबस नर मरहिं, ए असाध्य बहु ब्याधि ।
पीड़हिं संतत जाव कहँ, सो किमि लहै समाधि ॥
नेम धर्म आचार तप, ग्यान जग्य जप दान ।
भेषज पुनि कोटिक नहीं, रोग जाहिं हरिजान ॥१२१॥

एहि बिधि सकल जीव जड़ रोगी ❀ सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥
मानसरोग कछुक मैं गाये ❀ होहिं सबके लखि बिरलइ पाये ॥
जाने तें छीजहिं कछु पापी ❀ नाम न पावहिं जनपरितापी ॥
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे ❀ मुनिहु हृदय का नर बापुरे ॥

रामकृपा नासहिं सब रोगा ❀ जो एहि भाँति बनइ संजोगा ॥
सदगुरु बेदबचन बिस्वासा ❀ संजम यह न बिषय कै आसा ॥
रघुपति - भगति सजीवनमूरी ❀ अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥
एहि बिधि भलेहि सो रोग नसाहीं ❀ नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं ॥
जानिय तब मन बिरुज गोसाईं ❀ जब उर बल बिराग अधिकाई ॥
सुमति छुधा बाढ़इ नित नई ❀ बिषय आस दुबलता गई ॥
बिमल ग्यानजल जब सो नहाई ❀ तब रह रामभगति उर छाई ॥
सिव अज सुक सनकादिक नारद ❀ जे मुनि ब्रह्म–बिचार–बिसारद ॥
सब कर मत खगनायक एहा ❀ करिय राम–पद–पंकज नेहा ॥
स्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं ❀ रघुपति–भगति बिना सुख नाहीं ॥
कमठपीठि जामहिं बरु बारा ❀ बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहिं नभ बरु बहुबिधि फूला ❀ जीव न लह सुख हरि-प्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग-जल-पाना ❀ बरु जामहिं सससीस बिखाना ॥
अंधकार बरु रबिहि नसावइ ❀ रामबिमुख न जीव सुख पावइ ॥

दोहा–बारि मथे घृत होइ बरु, सिकता तें बरु तेल ।
बिनु हरिभजन न भव तरहिं, यह सिद्धान्त अपेल ॥
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु, अजहि मसक तें हीन ।
अस बिचारि तजि संसय, रामहिं भजहिं प्रबीन ॥१२२॥

नगस्वरूपिणी–विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा ❀ ब्यास समास स्वमति-अनुरूपा ॥
स्रुतिसिद्धांत इहै उरगारी ❀ राम भजिय सब काम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही ❀ मो से सठ पर ममता जाही ॥
तुम्ह बिग्यानरूप नहिं मोहा ❀ नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ॥
पूछेहु रामकथा अतिपावनि ❀ सुक-सनकादिक-संभु-मन-भावनि ॥
सतसंगति दुर्लभ संसारा ❀ निमिष दंड भरि एकउ बारा ॥
देखु गरुड़ निजहृदय बिचारी ❀ मैं रघुबीर - भजन - अधिकारी ॥
सकुनाधम सब भाँति अपावन ❀ प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जगपावन ॥

दोहा—आजु धन्य मैं धन्य अति, जद्यपि सबबिधि हीन ।
निजजन जानि राम मोहि, संतसमागम दीन्ह ॥
नाथ जथामति भाषेउँ, राखेउँ नहिं कछु गोइ ।
चरितसिंधु रघुबीर के, थाह कि पावइ कोइ ॥१२३॥

सुमिरि राम के गुनगन नाना ❀ पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना ॥
महिमा निगम नेति करि गाई ❀ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
सिव-अज-पूज्य-चरन रघुराई ❀ मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुँ सुनउँ न देखउँ ❀ केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ ॥
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी ❀ कबि कोबिद कृतग्य संन्यासी ॥
जोगी सूर सुतापस ग्यानी ❀ धर्मनिरत पंडित बिग्यानी ॥
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी ❀ राम नमामि नमामि नमामी ॥
सरन गये मो से अघरासी ❀ होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी ॥

दोहा—जासु नाम भवभेषज, हरन ताप त्रयसूल ।
सो कृपालु मोहि तोहि पर, सदा रहहु अनुकूल ॥
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ, देखि रामपद नेह ।
बोलेउ प्रेमसहित गिरा, गरुड़ बिगत-संदेह ॥१२४॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी ❀ सुनि रघु-बीर-भगति-रस-सानी ॥
रामचरन नूतन रति भई ❀ मायाजनित बिपति सब गई ॥
मोहजलधि बोहित तुम्ह भयऊ ❀ मो कहँ नाथ बिबिध सुख दयऊ ॥
मो पर होइ न प्रतिउपकारा ❀ बंदउँ तव पद बारहिं बारा ॥
पूरनकाम रामअनुरागी ❀ तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥
संत बिटप सरिता गिरि धरनी ❀ परहित हेतु सबन्हि कै करनी ॥
संतहृदय नव-नीत-समाना ❀ कहा कबिन्ह पै कहइ न जाना ॥
निजपरिताप द्रवै नवनीता ❀ परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता ॥
जीवन जनम सुफल मम भयऊ ❀ तव प्रसाद संसय सब गयऊ ॥
जानेहु सदा मोहि निज किंकर ❀ पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर ॥

दोहा--तासु चरन सिरु नाइ करि, प्रेमसहित मतिधीर ।
गयउ गरुड़ बैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुबीर ।।
गिरिजा संत-समागम-सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं बेद पुरान ।।१२५।।

कहेउँ परमपुनीत इतिहासा ❀ सुनत स्रवन छूटहिं भवपासा ।।
प्रनत-कलप-तरु करुनापुंजा ❀ उपजइ प्रीति राम-पद-कंजा ।।
मन वच कर्म जनित अघ जाई ❀ सुनहिं जे कथा स्रवन मन लाई ।।
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ जोग बिराग ग्याननिपुनाई ।।
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना ❀ संजम दम जप तप मख नाना ।।
भूतदया द्विज-गुरु-सेवकाई ❀ बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई ।।
जहँ लगि साधन बेद बखानी ❀ सब कर फल हरिभगति भवानी ।।
सो रघुनाथ-भगति स्रुति गाई ❀ रामकृपा काहू एक पाई ।।

दोहा--मुनिदुर्लभ हरिभगति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिस्वास ।।१२६।।

सोइ सर्बग्य सोइ गुनग्याता ❀ सोइ महिमंडित पंडित दाता ।।
धर्मपरायन सोइ कुलत्राता ❀ रामचरन जा कर मन राता ।।
नीतिनिपुन सोइ परमसयाना ❀ स्रुतिसिद्धांत नीक तेहि जाना ।।
सो कवि कोबिद सो रनधीरा ❀ जो छल छाँड़ि भजै रघुबीरा ।।
धन्य सुदेस जहाँ सुरसरी ❀ धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी ।।
धन्य सो भूप नीति जो करई ❀ धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई ।।
सो धन धन्य प्रथम गति जा की ❀ धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी ।।
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❀ धन्य जनम द्विज भगति अभंगा ।।

दोहा--सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर-परायन जेहि नर उपज बिनीत ।।१२७।।

मति-अनुरूप कथा मैं भाखी ❀ जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ।।
तव मन प्रीति देखि अधिकाई ❀ तब मैं रघुपति-कथा सुनाई ।।

यह न कहिय सठहीं हठ सीलहिं ❀ जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं ॥
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि❀ जो न भजै सचराचर-स्वामिहि ॥
द्विजद्रोहिहि न सुनाइय कबहूँ ❀ सुर-पति-सरिस होइ नृप तबहूँ ॥
रामकथा के ते अधिकारी ❀ जिन्ह के सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरु-पद-प्रीति नीतिरत जेई ❀ द्विजसेवक अधिकारी तेई ॥
ता कहँ यह बिसेष सुखदाई ❀ जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दोहा—रामचरन-रति जो चहै, अथवा पद निर्बान ।
भावसहित सो यह कथा, करउ स्रवनपुट पान॥१२८॥

रामकथा गिरिजा मैं बरनी ❀ कलि-मल-हरन मनो-मल-हरनी ॥
संसृतिरोग सजीवन मूरी ❀ रामकथा गावहिं स्रुति भूरी ॥
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ❀ रघुपति-भगति केर पंथाना ॥
अति हरि कृपा जासु पर होई ❀ पाउँ देहि एहि मारग सोई ॥
मन-कामना-सिद्धि नर पावा ❀ जो यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❀ ते भवनिधि गोपद इव तरहीं ॥
सुनि सुभ कथा हृदय अति भाई ❀ गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथकृपा मम गत संदेहा ❀ रामचरन उपजेउ नव नेहा ॥

दोहा—मैं कृतकृत्य भइउँ अब, तव प्रसाद बिस्वेस ।
राम भगति दृढ़ ऊपजी, बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु-उमा-संवादा ❀ सुखसंपादन समन बिषादा ॥
भवभंजन गंजन संदेहा ❀ जनरंजन सज्जनप्रिय एहा ॥
रामउपासक जे जग माहीं ❀ एहि सम प्रिय तिनके कछु नाहीं ॥
रघुपति-कृपा जथामति गावा ❀ मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
एहि कलिकाल न साधन दूजा ❀ जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❀ संतत सुनिय राम-गुन-ग्रामहिं ॥
जासु पतितपावन बड़ बाना ❀ गावहिं कबि स्रुति संत पुराना ॥
ताहि भजहिं मन तजि कुटिलाई ❀ राम भजे गति के नहिं पाई ॥

छन्द—पाई न केहि गति पतितपावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
आभीर जवन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेऽपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥
रघुबंस-भूषन-चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु स्रम रामधाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
दारुन अविद्या पंच जनित बिकार श्रीरघुबर हरे ॥
सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम-हित निर्बानप्रद सम आन को ॥
जा की कृपा-लव-लेस तें मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायउ परमबिस्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥

दोहा—मो सम दीन न दीनहित, तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस-मनि, हरहु बिषम-भव-भीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुबंस निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०॥

श्लोक—यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम् । मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥१॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् । श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति उत्तरकाण्ड समाप्त ।



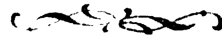


श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

लवकुशकाण्ड



दोहा–श्रीभुशुण्डि के वचन सुनि, देखि राम पद प्रीति।
ह्वै प्रसन्न बोले गरुड़, बाणी परम पुनीत ॥ १ ॥
सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर।
जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

सुने अखिल गुणगण प्रभु केरे ❀ पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद वायस कुल नाथा ❀ हृदय बसहिं अब प्रभु गुण गाथा ॥
मन सन्तोष न चित्त अघाहीं ❀ यथा उदधि सरिता सर जाहीं ॥
पक्षी पशु जंगम जड़जाती ❀ चर अरु अचर बने केहि भाँती ॥
जे जन अवध बसहिं सुख धामा ❀ लिये संग सादर श्रीरामा ॥
तजि तनु अवध गये सहदेवा ❀ यह सुनि नाथ परम सन्देहा ॥
अब प्रभु मोहिं सब कहो बुझाई ❀ पिता जानि मैं कीन्ह ढिठाई ॥
यह इतिहास पुनीत कृपाला ❀ जिमि मख कीन्ह राम महिपाला ॥

दोहा–असकहि गद्गद वचन मृदु, पुलकावली शरीर।
सुनि सप्रेम हर्षे विहंग, वायस मति अति धीर ॥ ३ ॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया ❀ कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया ॥
रामकृपा तुम्हरे मन माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
अति प्रिय वचन रसज्ञ तुम्हारे ❀ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे ॥
अब प्रभु कथा विशद विस्तारी ❀ सकल सुनावहु मम हितकारी ॥

तव मन प्रीति देखि खगराया ❀ मिटे अमंगल कोटिहु माया ॥
सुनु अब रामरहस्य अनूपा ❀ चरित पुनीत अवध सुरभूपा ॥
अज अद्वैत अमल अविनाशी ❀ चरित सकल कलिमल करफाँसी ॥
नव सहस्र नवशत कमवासी ❀ कृत चरित्र रह पुरजग दासी ॥

दोहा--विधि वर बचन सँभारि उर, राजत करुणागार ।
युगलजोरि शोभा निरखि, लजित कोटि शतमार॥ ४ ॥

अनुज सचिव प्रभु प्रजा बुलाये ❀ गुरुगृह सादर सुनि सब आये ॥
मकर मास रवि पर्व सुहावा ❀ बिदा माँगि गुरुपद शिरनावा ॥
काशी क्षेत्र धर्म जग जाना ❀ चले सकल सजि बाहन नाना ॥
चतुरंगिनी अनी सब साजा ❀ यहि विधि चले राम रघुराजा ॥
बीच वास करि शिवपुर आये ❀ सादर पुरहिं शीश सब नाये ॥
आय सुरसरिहि कीन्ह प्रणामा ❀ अभय अनन्त पाय विश्रामा ॥
महिसुर दंडि यती सन्यासी ❀ पूजेउ कृपासिंधु सुखरासी ॥
दान दिये बरणैं किमि जाई ❀ धनद कुबेर सुरेश लजाई ॥

दोहा--प्रभु रहेउ इमि अमित दिन, सुखी किये मुनिवृन्द ।
आये पुनि निज नगर महँ, रविकुल कैरवचन्द ॥ ५ ॥

प्रतिदिन अवध अनंद उछाहू ❀ दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
झूठ प्रपंच न दुखद न काहू ❀ व्यापन कबहुँ सुना खगनाहू ॥
सुनहिं जहाँ तहँ वेद पुराना ❀ दूसर धर्म न काहू जाना ॥
दिन २ प्रीति देखि भगवाना ❀ अमित अनंद सकल पुरजाना ॥
शत संवत परिमाण हमारा ❀ रहेउ शोच वश राम उदारा ॥
अश्वमेध मख करौं सुहावन ❀ गाइ तरहिं भवदुःख नशावन ॥
पुनि निज धामहिं तुरत सिधावौं ❀ विधिके बचन बिलंब न लावौं ॥
प्रात जाय गुरु भवन सप्रीती ❀ कहे करौं सब सुन्दर रीती ॥

दोहा--अस बिचारि उर राखिकर, कृपासिंधु मतिधीर ।
करत चरित नाना अमित, हरण शोक भवपीर ॥ ६ ॥

कहहुँ सुनहु रघुपति प्रभुताई ❀ जो पुराण श्रुति नारद गाई ॥
रामचन्द्र महिमा अति भूरी ❀ सो वर्णत मन कवि कदरूरी ॥

मैं मतिमन्द कहौं केहि भाँती ❀ सोहत हंसकि बगुला पाँती ॥
सुनिय न पुहुमि कतहुँ अघकाना ❀ पढ़हिं चतुर नर वेद पुराना ॥
गावहिं प्रभु गुणगण भयहारी ❀ निन्दहिं अमर लोक नरनारी ॥
आज्ञा मात पिता गुरु करहीं ❀ तप मख दान हर्ष हरि भजहीं ॥
प्रजा अनन्द राज प्रभु केरे ❀ मानहुँ शक्र कुबेर घनेरे ॥
राजत सब रनिवास अनन्दा ❀ सुखी चकोर लखत जिमिचन्दा ॥

छन्द–जिमि शरद चन्द चकोर देखत मातु प्रभु मुख जोहहीं।
तिमि भरत लछ्मण शत्रुसूदन वेष लखि मन मोहहीं ॥
नित जात प्रभु चौगान खेलन साथ लै चतुरंगिनी।
जब गये भूतल भार टारन संग बहु मरकट अनी ॥
चढ़ि बाजि रथ गज नगर देखहिं अमित पुनि गृह आवहीं।
सारंग हेम बिलोकि बिनु पद त्राणहीं प्रभु धावहीं ॥
यदि कुसुम कंटक अंग लागत मोरि मुख मुसकावनी।
सो शत्रु सन्मुख सही तीक्षण शक्ति अस रिपु दाहनी ॥
निशि नींद नाशक भूख बासर वेष चौदह हो सहे।
निज भक्त हेतु समेत लछ्मण प्रौढ रिपु मारे सहे ॥

दोहा--रघुवर राजबिराज अति, सकल अवनि अघ भाग।
विचरहि कानन मुनि विपुल, प्रीतिसहित अनुराग ॥७॥

मही सुहावनि कानन चारू ❀ खग मृग इक सँग करहिं बिहारू ॥
बैर न सुनिय राम के राजा ❀ मिलि बिचरहिं वन सकल समाजा ॥
नाना ग्रन्थ शास्त्र समुदाई ❀ गाय न सकहिं राम प्रभुताई ॥
सादर कोटि कोटि अहि ईशा ❀ अगणित चतुरानन गौरीशा ॥
जहँ लगि जग कोविद कविराई ❀ रामराज गुण नहिं सक गाई ॥
असित आदि कज्जल गिरि भूरी ❀ पात्र समुद्र मसी भरि पूरी ॥
करजु लेखनी सुरतरु डारी ❀ सप्त द्वीप महिपत्र बिचारी ॥
सुरसति हरिहर बिधि अरु शेषा ❀ सहस कल्प शत लिखहिं विशेषा ॥

सोरठा--तदपि न पावहिं पार, राम काज कौतुक अमित।
सुनु सब चरित अपार, जस खगपति आगे भयउ ॥ १ ॥

राजत राम सभा महँ भाई ❀ तहँ आये एक द्विज बिलखाई ॥
परुष वचन मुख कहत पुकारा ❀ हंस वंश बूड़ेउ संसारा ॥
रघु दिलीप अरु सगर नरेशा ❀ अतुल प्रभाव भये अवधेशा ॥
पितु जीवत सुत त्यागेउ प्राना ❀ अन्तर्यामी प्रभु सब जाना ॥
नर लीला कर राम कृपाला ❀ लगे बिचार करन तेहिकाला ॥
कारण कवन मृतक सुत भयऊ ❀ द्विज दुख देखि विकल प्रभु भयऊ ॥
प्रभु चित देखि गगन भइ बानी ❀ शूद्र तपै सुनु सारंगपानी ॥
बिन्ध्याचल गह्वर बन जाहाँ ❀ द्विज सुत मरण हेतु नरनाहा ॥

छन्द—इहि भाँति द्विजसुत मृतक सुनि रथ साजि प्रभु आतुर चले ।
सोइ परम शैल बिलोकि पावन मुदित चित सन्मुख भले ॥
शुचि रुचिर आश्रम बेदिका तहँ देखि मुनिमन भावनी ।
बहुबाग सुमन तड़ाग गुञ्जत मंजु मधुकर सावनी ॥
पिक मोर हंस चकोर चातक कीर शोभा पावनी ।
बन बिबिध कोल किरात सादर खोह कीन्हीं तहँ घनी ॥
पुनि कोह संयुत बिशिख छाँड़े माथलै तब शरगयो ।
बर भक्ति आरत जान तेहि दै आप तीरथ ब्रत कियो ॥

दोहा--द्विजवर बालक मृतक सो, उठि बैठेउ हरषाय ।
आये पुर रघुपति भगत, दुख भंजन सुखदाय ॥ ८ ॥

ताहि समय तहँ श्वान पुकारी ❀ पाहि पाहि भक्तन भयहारी ॥
बिनु अघ नाथ कृपाल खरारी ❀ हत्यो मोहि द्विज अति बलभारी ॥
सुनिके श्वान वचन तब काना ❀ द्विज पहँ दूत भेजि भगवाना ॥
आनेउ विप्र बोलि तेहिकाला ❀ कहे वचन तब दीनदयाला ॥
हन्यो श्वान सो केहि अपराधा ❀ सुनु सर्वज्ञ न कछु कृत बाधा ॥
क्रोध बिबस प्रभु बिन परिचारा ❀ नाथ प्रबल मैं इहिको मारा ॥
करौ दण्ड द्विज सकल समाजा ❀ विप्र अदंड देव रघुराजा ॥
उचित दंड तुम देहु बताई ❀ कहहु श्वान जस तुम्हें सुहाई ॥

दोहा--प्रभु याको मठपति करहु, मम भावन सुख ऐन ।
तुरत मँगायो पीतपट, गज कुंडल प्रभुदैन ॥ ९ ॥

पूजि चरण तब विप्र पठायो ❀ दुन्दुभि बाजत मठमो आयो ॥
कहैं परस्पर सब नर नारी ❀ देख्यो श्वान दंड अति भारी ॥
प्रभुसे रंक कीन्ह अति दीनी ❀ जो कछु श्वान कहा सो कीनी ॥
तासु अनन्द देख नरनारी ❀ कहो दंड फल कवन खरारी ॥
पूछेहु श्वान कही सो बाता ❀ पूरब भव प्रसंग सुखदाता ॥
काशी विप्र वंश में भयऊ ❀ शिव सेवा सादर चित दयऊ ॥
हिम ऋतु कीन्ही होम सप्रीती ❀ घृत नग्व रह्यो नाथ जिमि मीती ॥

दोहा--तातोदन भोजन करत, खाय गयो सो भाग ।
विविध योनि घूमत फिर्यो, मिट्यो न सो अनुराग ॥१०॥

राजसभहिं सिर नाय बहोरी ❀ चला श्वान मन त्रास न थोरी ॥
उठि मध्यान्ह कीन्ह रघुनन्दन ❀ पूजे शंभु भक्त उर चन्दन ॥
भोजन शयन जगतपति कीन्हा ❀ आयसु पुनि सबहीं कहँ दीन्हा ॥
रह्यो दिवस जब घटिका चारी ❀ सभा जुरी तब आय खरारी ॥
सुनि पुराण प्रभु अनुज समेता ❀ सन्ध्या भई दान शुभ देता ॥
भवन चले प्रभु आयसु पाई ❀ सबही सन्ध्या कीन्ह सुहाई ॥
दूत अवध निशिवासर धावहिं ❀ आय साँझ सब खबर सुनावहिं ॥
पृथक पृथक सुनि चरचर बानी ❀ बोला एक सो सुनहु भवानी ॥

छन्द–कछु कह्यो नहिं तेहि पूछि सादर वचन वेगि न आवहीं ।
इक रजक पत्निहिं कहत डाँटत व्यंग वचन सुनावहीं ॥
सुनि वचन कृपानिधान चर के मध्य उर राखत भये ।
निशि स्वप्न देखत जगत पति उठि जागि दारुण दुख छये ॥

दोहा--बीती अवधि प्रमाण युग, कीन्ह विचार कृपाल ।
एक सहस पितु राज्यसुचि, करहु सत्य यहिकाल ॥११॥

त्यागहुँ जनकसुता बन माँही ❀ राखहुँ श्रुतिपथ धर्म न जाहीं ॥
देवन तुरत सीय पहँ आये ❀ सादर बोले बचन सुहाये ॥
निज छाया धरि यहाँ विनीता ❀ रहहु जाय निजधाम पुनीता ॥
प्रभु पद बन्दि गई नभ सोई ❀ जीव चराचर लखा न कोई ॥
तेहिसन प्रभु अस कहा बुझाई ❀ आयसु तुम गृहमन सकुचाई ॥

मुनि तिय भूषण बसन सुहाये ❀ पहिराये प्रभु जो मन भाये ॥
हसि कह कृपा निकेत मकारे ❀ पूजे मन अभिलाष तुम्हारे ॥

दोहा–होत प्रात जब जगतपति, जागे रमा निवास ।
याचक जन गावत मुदित, लखिमुख कंज प्रकास ॥१२॥

भरत लषण रिपुदमन समेता ❀ आये जहँ प्रभु कृपानिकेता ॥
कीन्ह प्रणाम माथ महिलाई ❀ बोले नहिं कछु श्री रघुराई ॥
बदन बिलोकि सशंकित अंगा ❀ श्रीहत देख वपुषकर रंगा ॥
थरथर काँपहिं तीनों भाई ❀ जानि न जाय चरित रघुराई ॥
ऐचि स्वास तकि कछु मन जानी ❀ बोले गूढ़ मनोहर बानी ॥
सुनि लघु भाइ कहेउ रघुनाथा ❀ लै बन जाहु जानकिहि साथा ॥
सूखि सहमि सुनि वचन कराला ❀ जरेउ गात उपजी उर ज्वाला ॥
हँसत कि साँच कहत रघुराई ❀ असमंजस मन दुख अधिकाई ॥

दोहा–भरतादिक भ्राता विकल, मख आवत नहिं बैन ।
जोरि युगल कर शत्रुहन, कहत नीर भरि नैन ॥१३॥

सुनि प्रभु बचन हृदय बिलखाना ❀ जगतननि सिय सब जगजाना ॥
जगत पिता प्रभु सब उर बासी ❀ जड़ चेतन घन आनँदरासी ॥
कारण कवन जानकी त्यागी ❀ मनक्रम वचन चरण अनुरागी ॥
सुनि सर्वज्ञ सगर्व सुज्ञानी ❀ रिस परिहास कि सत्य सुबानी ॥
पंकज नैन नीर भरि आये ❀ कहिप्रिय बचन अनुज समुझाये ॥
आयसु मम टारहिं जो ताता ❀ रहे न प्राण तात मम गाता ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ तुम कहँ तात सर्व कल्याना ॥
मम यह बचन पालु लघु भाई ❀ प्रात जानकिहि जाहु लिवाई ॥

सोरठा–सुनि प्रभुबचन कठोर, भरत कहेउ युग जोरिकर ।
नाथ हमहिं मति थोर, सुनु बिनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २ ॥

हंस बंस जग में विख्याता ❀ दशरथ पिता कौशिला माता ॥
त्रिभुवन पति प्रभु सब जग जाना ❀ गावहिं यश सब वेद पुराना ॥
सत्य भक्ति तव प्रगट सुहाई ❀ बरणि न सकहिं वेद अहिराई ॥
शोभा खानि जगत की माता ❀ रहित अमंगल मंगल दाता ॥

छाया जेहि प्रिय पतिव्रत धरहीं ❀ तुमहि बिहाय क्षणहु किमि भरहीं ॥
बिनु जल मीन कि जिये कृपाला ❀ कृपी कि रह बिनु बारिद माला ॥
जीवहि क्षण तुम बिनु किमि सीता ❀ ज्ञानवंति अति चतुर विनीता ॥
सुनि करुणामय वचन सप्रीती ❀ कही भरत तुम सुन्दर नीती ॥

दोहा--तदपि नृपहिं चाहिय सदा, राजनीति धन धर्म ।
बसुधा पालहि सोच तजि, बचन प्रीति सुचिकर्म ॥ १४॥

दूतन कहा सो अपयश कहेऊ ❀ कुल कलंक यह दारुण भयऊ ॥
तरणिबंश नृप भये अनेका ❀ एक एकते निपुण बिवेका ॥
स्वायंभुव मनु रघु नृप जानों ❀ सगर भगीरथ बिरद बखानों ॥
दशरथ दीख सदा तुम नीके ❀ वचन न टारेउ लालच जीके ॥
तेहि कुल रंचक सुनत कलंकू ❀ रहे जीव तो अधम अशंकू ॥
सुनु सर्वज्ञ सकल अवहारी ❀ बिनु कलंक अह जनककुमारी ॥
बिधि हरिहर दिबि देखि सुहाई ❀ पावक अवटि अनट सब भाई ॥
जो सुर नर मुनि स्वप्नेहु माहीं ❀ यह चरित्र जग लखि हरषाहीं ॥

दोहा-ते शठ रौरव नरक महँ, कोटि कल्प करि बास ।
रहहिं कल्पशत रोग बस, भोगहिं नरक निवास ॥१५॥

रिस रुख देखि नयन करि तीखे ❀ आयहु भरत लषण कर पीखे ॥
सुनु सौमित्र छाँड़ि हठ सोचू ❀ जगमल कहे कहौं किन पोचू ॥
तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहौ ❀ मोहिबिन सोच जन्म भर भरिहौ ॥
जनकसुता रथ तुरत चढ़ाई ❀ गंग समीप फिरहु पहुँचाई ॥
अति गहबर बन जहाँ न कोई ❀ छाँड़हु तात यतन कर सोई ॥
फेरहु तुम मति बचन उदासा ❀ मरण ठानकर चलेउ निरासा ॥
सुभग बिमान सीय बैठारी ❀ भूषण पट बहु धरे सँवारी ॥
सुधा सरस पकवान बनावा ❀ जो कछु वांछित सो फल पावा ॥
अति आनंद मन चली जानकी ❀ अतिशय प्रिय करुणानिधानकी ॥

दोहा-विवरण लषण निहारिकर, शोचविकल भइ बाल ।
हृदय बिचार न कहि सकति, मणिबिनुव्याकुलव्याल॥ १६॥

उतरि देवसरि यान सुहावा ❀ देखति घनवन मन भय पावा ॥

कारण अपर जान भयभीता ❀ बोली वचन मनोहर सीता ॥
दीखत नहीं मुनिनकर धामा ❀ जात कहाँ प्रिय अनुज सकामा ॥
खग मृग केहरि विषधर व्याला ❀ करि बराह बृक बाघ कराला ॥
कोउ मुनि मिलतन आवत जाता ❀ निकसत प्राण तात मम गाता ॥
सीय विकल लखि मनहिं अहीशा ❀ कीन्ह कहा हरि विधि गौरीशा ॥
मूर्छित रथमें हुइ विकराला ❀ गिरत भूमि तब आप सँभाला ॥
सिय विलोकि मन धीरज आना ❀ तृषा विना जल जैयत प्राना ॥

दोहा–धरणिसुता व्याकुल निरखि, प्राण कंठगत जान ।
तजन चहत तनुशेष तव, धृक धृक जीवन प्राण ॥१७॥

प्राण विना लक्ष्मण कहँ देखा ❀ गगन गिरा तब भई विशेषा ॥
सुनु सौमित्र जाहु सिय त्यागी ❀ जनकपुत्रिका जियहिं सुभागी ॥
ब्रह्म गिरा सुनि धीरज कीन्हा ❀ हाथ जोरि परिदक्षिण दीन्हा ॥
लै रथ चरण वन्दि सिय केरे ❀ चले अवधपुर त्राम घनेरे ॥
जागी सिया सकल दिशि देखा ❀ नहिं रथ अश्व नहीं कहिं शेषा ॥
रहे प्रथम दुख सहिहैं प्राना ❀ पुनि सोइ चाहत करन पयाना ॥
करुणा करत विपिन अति भारी ❀ वालमीकि आये बन चारी ॥
पुत्री वालमीक कह ज्ञानी ❀ बन आवन निज चरित बखानी ॥

दोहा–मुनि पुत्री मैं जनककी, रामप्रिया जगजान ।
त्यागन हेतु न जानु कछु, विधिगति अति बलवान ॥१८॥

देवर लषण गये पहुँचाई ❀ तब सब हेतु लख्यों मुनिराई ॥
सुनु सीता मिथिलापति मोरा ❀ परम शिष्य मम अरु पितु तोरा ॥
चिन्ता अब जनि करसि कुमारी ❀ मिलिहहिं तोहिं शेष हितकारी ॥
सादर पर्णकुटी सिय आनी ❀ करि मज्जन पुनि सब गति जानी ॥
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा ❀ सिय तब सुरसरि मज्जन कीन्हा ॥
सुमिरि राम मूरति उर राखी ❀ दीने फल सुन्दर शुभ भाखी ॥
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा ❀ कहे सुने सिय संग विहंगा ॥
ज्ञान अनेक प्रकार दृढ़ावा ❀ लक्ष्मण अवध सुनो जब आवा ॥

छन्द–आये जु लक्ष्मण त्यागि सीतहिं विकल निज आश्रम गये ।
बहुभाँति रोवत मातु सन सिय त्याग दारुण दुख दये ॥

सुनि महमि मूर्छित मातु बाणी विकल फणिजिमि मणि गये ।
इहि भाँति व्याकुल विकल पति कौशलहिं अतिही दुख भये ॥
रोदति वदति बहु भाँति को कहँ बिपति यह दारुन अये ।
सुनि शोर रावर सहित लच्मण राम निज मंदिर गये ॥
निज ज्ञान दे समझाय तेहि मब खुले पट अन्तर नये ।
हम जानि तोहि सुत मान प्रभु जग भूल भ्रम फंदन भये ॥
अब कृपा करि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ।
जेहि खोज मुनि योगीश तापस परम अविचल पावनी ॥
बर चह्यो सोइ सोइ दियो मातुहिं कारुणिक रघुपति तबै ।
मन शोध कर निज योग पावक तजी तनु मादर सबै ॥

दोहा--योग अग्नि तनु भस्म करि, सकल गई पति धाम ।
भरत शत्रुसूदन लषन, शोक भवन श्रीराम ॥ १९॥

विधिवत किये कर्म श्रुति गाये ❀ प्रभुते गुरु सादर करवाये ॥
दान दीन्ह पुनि कोटि प्रकारा ❀ को अस कवि जग वरणै पारा ॥
धेनु बसन हाटक मणि हीरा ❀ हय गज गोमुक्ता बर चीरा ॥
पुनि परलोक हेतु धन धामा ❀ दिये किये द्विज पूरण कामा ॥
रहो न चाह याचकन केरी ❀ रंक धनद पदवी जनु हेरी ॥
वेद पढ़हिं द्विज देहिं अशीशा ❀ चिरजीवहु कोशलपुर ईशा ॥
राम दान दे सब विधि तोपे ❀ भये निवृत्त काज करि चोखे ॥
गृह द्विज याचक सकल सिधाये ❀ अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
बिप्र दंड तापस वध कीन्हा ❀ सुरपुर वास मातु कहँ दीन्हा ॥

दोहा-करहु अजय मख यज्ञ पुनि, अश्वमेध जगजान ।
कलुपसकल संताप हर, अंगदादि हनुमान ॥२०॥

एक बार गुरु गृह अवधेशा ❀ गये अनुज सँग सचिव खगेशा ॥
कीन्ह दण्डवत पद शिरनाई ❀ सादर हर्पि मिले मुनिराई ॥
पूछा कुशल देखि मृदु गाता ❀ कुशल देखि तव पद जल जाता ॥
गुरु पद बंदि द्विजन सिरनाई ❀ बैठ अमित अशीपहिं पाई ॥
कहत पुराण नवल इतिहासा ❀ सुनत कृपानिधि परम हुलासा ॥

भाइन सहित अमित सुख दीन्हा ❀ मुनिते लखेउ प्रेम कर चीन्हा ॥
दोउ कर जोरि सच्चिदानन्दा ❀ बोले बचन भानुकुलचन्दा ॥
नाथ चरण तव मकल प्रसादा ❀ भे जग बिदित मोर मर्यादा ॥

दोहा--समय समुझि करुणा यतन, सादर बयन बहोरि ।
प्रभु अन्तर्यामी करहु, सफल कामना मोरि ॥२१॥

तव प्रमाद जग यज्ञ अनेका ❀ कीन्हे अधिक एक ते एका ॥
नाथ सकल पुरजन मन कहहीं ❀ देखन अश्वमेध अब चहहीं ॥
जस कछु आयसु दीजिय नाथा ❀ सो मैं करब नाय पद माथा ॥
तनु पुलके मुनि बचन सप्रीती ❀ कस न कहो तुम सुन्दर नीती ॥
पूजहिं मन अभिलाष तुम्हारी ❀ उठव भरत अब करब तयारी ॥
सुनि मुनि बचन भरत रिपुदमनू ❀ हर्षि सचिव लक्ष्मण गृह गमनू ॥
बिबिध प्रकार चरण करि सेवा ❀ चले भरत सँग सब महिदेवा ॥

दोहा--सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बोलाय ।
हाटबाट पुरद्वार गृह, रचहु बितान बनाय ॥२२॥

चले सकल किंकर सुनि बानी ❀ सुनत बचन हर्षीं सब रानी ॥
रचे बितान अनेकन भारी ❀ देखि अवध विधि बिलपत भारी ॥
लगे सँवारन गज रथ बाजी ❀ सुनि सुर गगन दुंदुभी बाजी ॥
तुरत सचिव चर बिपुल बुलाये ❀ कहि जयजीव शीश तिननाये ॥
जाहु मुनिन्हके आश्रम ताहीं ❀ सादर निवत देहु सब पाहीं ॥
वहाँ राम पूछेउ गुरु देवा ❀ आज्ञा देउ करौं सोइ सेवा ॥
प्रभु मनकी गति मुनिवर जानी ❀ बोले अति सनेह बर बानी ॥
पठवहु दूत जनकपुर आजू ❀ आवहिं जनक समेत समाजू ॥

दोहा-सुनहु राम रघुवंशमणि, न्योति सकल पुर जाति ।
बरुण कुबेर इन्द्रयम, पुनि मुनिवर सब ज्ञाति॥ २३ ॥

गुरु समेत प्रभु अवधहिं आये ❀ देखि बनाव अमित सुख पाये ॥
जनक नगर चर तुरत पठाये ❀ देश देश के नृपति बुलाये ॥
जामवन्त सुग्रीव बिभीषण ❀ अरु नलनील द्विविद कुलभूषण ॥
आये सब जहँ रामकृपाला ❀ बरुण कुबेर इन्द्र यम काला ॥

चढ़ि विमान सुरनारि सिहाहीं ❀ करहिं गान कलकंठ लजाहीं ॥
आये मुनिवर यूथ घनेरे ❀ देहिं कृपानिधि सुन्दर डेरे ॥
शशि हरिहर विधि रवि सनकादी ❀ आये सुर जे परम अनादी ॥
विश्वामित्र संग मुनि झारी ❀ सहस सात रिषि इच्छा चारी ॥

दोह–आये ऋषि भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ।
नाना यूथप मुनि सकल, देवल सहित पुलस्त्य ॥२४॥

मख थल बर अति देखि सुहाये ❀ नाना भाँति देखि सुख पाये ॥
मिथिलापुर जे दूत पठाये ❀ देखि नगर बासिन मन भाये ॥
द्वारपाल सब खबरि जनाई ❀ अवध नगर सन पाती आई ॥
सुनि विदेह सहसा उठि धाये ❀ तनमन पुलकि नयन जल छाये ॥
शिथिल आपु उठि द्वारे आये ❀ देखि दूत अतिशय सुख पाये ॥
कहहु कुशल रघुपति कर भाई ❀ गद्गद कंठ न कछु कहि जाई ॥

दोहा–भूपप्रेम तिहि समयजस, तस न कहहिं मति धीर ।
तुलसी भयउ उछाहबस, जय जय शब्द गँभीर॥२५॥

बाँचत प्रीति न हृदय समानी ❀ चरचर बोलि कही हँसि बानी ॥
नगर ग्राम पुर मंगल साजे ❀ अमित प्रकार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि नृप पाती दीन्ही ❀ उठि करजोरि विनय कर लीन्ही ॥
पढ़ी सचिव अति प्रेमानन्दा ❀ सुमिरि राम कोशलपुरचन्दा ॥
घरघर खबरि व्यापि क्षण माहीं ❀ मंगल कलश साजि सब पाहीं ॥
भयो अनंद न जाय बखाना ❀ कीन्हें बिबिध भाँति नृप दाना ॥
धरि तन देव अमित नभबासी ❀ आये भूप नगर सुखरासी ॥
कहहिं बचन नृप के हितकारी ❀ चलो अवध सब काज बिसारी ॥

दोहा–कहि कहि सुर सादर चले, बाहन रचे बनाय ।
जोरि युगल कर मुकुटमणि, अस्तुति करहिं सुभाय ॥२६॥

छन्द–पद सुमिरि करुणाकन्द रघुकुल चन्द दशरथनायकं ।
श्री सहित अनुज समेत सुस्थिर बसहु मम उरलायकं ॥
अंभोज नयन बिशाल भाल कृपालु दशरथनंदनं ।
शत कोटि मार उदार शोभा अतुल बल महिमंडनं ॥

तूण कटि शुभ कर शरासन कपट मृग मदगंजनं।
वैदेहि अनुज समेत कृपानिकेत जन मनरंजनं॥
मम हृदय वसहु निवास करि करुणायतन करुणामयं।
महिमा न कोउ जन जान सुनु हरियान ज्ञान विशालयं॥
सोइ हेतु करि वृषकेतु प्रभु खरदूषणादि निकंदनं।
नर अंध पामर कामवश मन भजहिं नहिं रघुनंदनं॥
नव ललित लीला सबहिं जेहि उर तासु उर धरणीधरं।
कहि सक न शारद शेष नारद जान किमि जन बापुरं॥
सोइ आन तुलसी दास निज उर शरण अब काकी गहै।
सुख पाय मन वच काय नहिं गति दूसरी सपनेहु लहै॥
सब कुशल पूछि महीप सादर बिहँसि आनँद उर छयो।
मन भाय रुचिर बनाय विधिवत दान बहु बिप्रन दयो॥
गज बाजि भूषण भूमि वस्तु अनेक विधि अवको गनै।
इकबार लै नृपद्वार दीन्हीं कहहु कवि कैसे भनै॥

दोहा–पूजे विविध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि।
गुरुगृह गवनेउ मुकुटमणि, पाय पदारथ चारि॥२७॥

सकल कथा महिपाल सुनाई ❀ शतानन्द आनन्द अघाई॥
चलहु नृपति मख देखहिं जाई ❀ साजहु जाय सकल कटकाई॥
करि बिनती नृप मन्दिर आई ❀ बाँचि पत्रिका सकल सुनाई॥
आनँद युत सब करो बधाई ❀ दिए दान महिदेव बुलाई॥
याचक सकल अयाचक कीन्हें ❀ सादर बोलि युगल चर लीन्हें॥
बिलग बिलग सब पूछहिं बामा ❀ सुने राम के पूरण कामा॥

छन्द–सब काम पूरण रामके सुनि विपुल बाजन बाजहीं।
पुर द्वार घर रखवार राखे सैन्य भट सब साजहीं॥
दश सहस सिंधुर षष्ठि शत रथ बाजि बर्णत नाह बनै।
जगमगत जीन जड़ाव रवि मणि देखि कवि कैसे भनै॥
चढ़ि शूर प्रबल प्रवीन जे असि चलत सब सादर भये।
सुखपाल परम विशाल युग चढ़ि गुरुहिं लै आदर नये॥

महि डोल धसकत कमठ अहि दल देखि अमित विदेहको ।
रथ यूथ पदचर अमित वर्णहिं जगत अस कवि मूढ़को ।

दोहा--चलेउ राव मुनिगण सहित, विपुल निसान बजाय ।
प्रात तीसरे पहर सोइ, अवध नगर नियराय ॥२८॥

पुर बाहिर सरयू शुचि तीरा ❀ वास दीन्ह हर्षित रघुवीरा ॥
सौंपि अनुज कहँ राम समाजू ❀ आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥
मिलि पुनि नृपति निकट बैठारे ❀ गद्गद गिरा सुवचन उचारे ॥
बदन मयंक निरखि सब गाता ❀ आनंद मगन न हृदय समाता ॥
प्रभु विनीत सबही सेवकाई ❀ सचिव भरत पुनि लिये बुलाई ॥
नृप शय्या सब भरत सँभारी ❀ सुनि खगपति जस कीन्ह खरारी ॥
आय गुरुहिं सादर शिरनाई ❀ मन भावत आशिष तिन पाई ॥
पुनि प्रभु सकल देव गुरु बंदे ❀ अभिमत आशिष पाइ अनंदे ॥

दोहा--दश सहस्र मुनिवर सहित, आयउ प्रभु मम धाम ।
बोले बचन बिनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम ॥२९॥

धर्म सकल जेहि वेद बखाने ❀ संत पुराण लोक सब जाने ॥
विन तिय नहिं फल होय खरारी ❀ अब चहिये मिथिलेशकुमारी ॥
सुनि मुनि वचन मौन गहि रहेऊ ❀ सत्य असत्य न एको कहेऊ ॥
मम प्रण विरद जान मुनिराया ❀ रहे सुकृत जेहि करहु सो दाया ॥
द्वैगुरु मिल नारद सनकादी ❀ वचन कहेउ सुन परम अनादी ॥
कनक जड़ित मणि सुंदर बाला ❀ रचि सियरूप सुशील विशाला ॥
अंग अंग सब भूषण साजे ❀ तासु रूप लखि रतिपति लाजे ॥
सहसा लखि न सकहिं नर नारी ❀ सिय देखेउँ सब अचरज भारी ॥

दोहा--तेहि अवसर शोभा अमित, को कवि वरणै पार ।
जगदाधार कृपाल प्रभु, कीन्ह चरित्र अपार ॥३०॥

जटित कनक सुन्दर मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
सिया सहित लखि सुर मुसुकाहीं ❀ कीन्ह प्रणाम सवन हरषाहीं ॥
भीर अपार देखि गुरु ज्ञानी ❀ ऋधिसिधिबोलि सकल सनमानी ॥
कहा जाय जो उचित सो करहू ❀ जो जेहि चाहिय सकल अनुसरहू ॥

सुनि रजाय रघुपति रुख पाई ❀ रचे कोटि गृह बिधिहि सिहाई ॥
सुर सुरभी सुरतरु सुख खानी ❀ शारद शेष न सकहिं बखानी ॥
पुर गृह बाहर गली अटारी ❀ भरि सुगंध सब रची सँवारी ॥
रहे तहाँ दिशिपाल अनेका ❀ जे परमारथ निपुण विवेका ॥

छन्द--जे निपुण परम विवेक पावक भरत लै राखे तेही ।
निज भाग्य प्रबल सराह निदरहिं धनदकी पदवी सही ॥
आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे विधि ने रचे ।
सन्मानि सकल सनेह सादर राम सन को नहिं बचे ॥

दोहा--युग सहस्र जो विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन ।
जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहिमख संग अधीन ॥३१॥

मकर मास ऋतु शिशिर सुहाई ❀ मख मंडप बैठे रघुराई ॥
तब बोले गुरु बचन सुहाये ❀ आनहु बाजि जो वेद बताये ॥
लक्ष्मण सुनि गुरु बचन अनंदे ❀ बार बार पद पंकज बंदे ॥
हयशाला सादर चलि आये ❀ विविध विभूषण तेहि पहिराये ॥
श्वेत बर्ण सुन्दर श्रुति कारे ❀ रवि हय निदरि मनोज सँवारे ॥
जीन जराव न जाय बखाना ❀ चढ़ि रवि रथ आवत जग जाना ॥
माथे मोर पक्ष मणि लागे ❀ सोइ नभ नखत देव अनुरागे ॥
सेवक चारु पाटमय डोरी ❀ दामिनि दमकि निपट अति थोरी ॥

दोहा--पट सहस्र दश बीरवर, रामानुज रणधीर ।
मध्य ताहि आनहु तहाँ, जहाँ राम रघुबीर ॥३२॥

पूजेहु हय प्रभु जय जग हेतू ❀ जस कछु कहा गाधिकुलकेतू ॥
दीन्ह विविध बिधि दान अनेका ❀ लिख्यो मंत्र सोइ कर अभिषेका ॥
एक बार कोशलपुर माहीं ❀ अरिदल दलन सुरेश सकाहा ॥
जिहिंबल होइ गयो सोइ बाजी ❀ देहु दंड बन जाहु कि भाजी ॥
लखि बाँधो हय शीश सँभारी ❀ यह सुन वचन चले मुनि चारी ॥
भार्गव आदि सकल मुनि संगा ❀ रहे जहँ रघुकुल कमल पतंगा ॥
कथा सकल लवणासुर केरी ❀ मुनिन त्रास जिन दीन्ह घनेरी ॥
सुनि ऋषि बचन नयन जल छाये ❀ बिहँसि राम निज त्रोण मँगाये ॥

दोहा–रिपुसूदनहिं दीन्ह सोइ, बाण अमोघ कराल।
मंत्र मोर पढ़ ताहि हति, जीतहु सकल भुवाल ॥३३॥

बहुरि बिभीषण राम बुलाये ❀ सादर आय माथ तिन नाये ॥
लवणासुर के चरित अपारा ❀ पूछेउ दिनमणि बंश उदारा ॥
करयुग जोरि निशाचर नाहा ❀ सत्य कहौं अब सुनु अवगाहा ॥
भगनि बिमात्र नाथ सोइ मोरी ❀ कुंभ निशा तेहि नाग बहोरी ॥
मधु दानव कहँ रावण दीन्ही ❀ बहु विनती कर तेहि तब लीन्ही ॥
तनय तासु लवणासुर भयऊ ❀ शिव सेवा सादर मन दयऊ ॥
अगम तासु तप शंकर जाना ❀ दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना ॥
जेहिकर रहे अस्त्र यह भारी ❀ चौदह भुवन जीति सब झारी ॥

दोहा–तेहिबल प्रभुसो नहिं गनहिं, अपर दनुज नरनाग।
जाति सकल बश कीन्ह सोइ, हठि पथ सबके लाग ॥३४॥

तासु चरित सुनि मन मुसकाने ❀ रिपुहि हतहु बल दै मनमाने ॥
सैन्य संग चतुरंग बनाई ❀ रहे साथ दोउ तनय सुहाई ॥
सुनि प्रभु बचन निशान अपारा ❀ तीन सहस्र हने इक बारा ॥
दलक वसुधा कुंजर गाजै ❀ दश सहस्र रथ रवि रथ लाजै ॥
पुर बाहिर सब कीन्ह सँभारी ❀ तनय युगल लखि परमसुखारी ॥
द्वादश निशि बीते मग माहीं ❀ पहुँचे जाय यमुनतट पाहीं ॥
दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती ❀ प्रभुपद पूजे दिन औ राती ॥

दोहा–रवितनया पद वंदिके, सादर पूजि पुरारि।
चलेउ शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहि राम खरारि ॥३५॥

चमूचपल अति सुभट जुझारा ❀ घेरयो नगर वीर बरियारा ॥
बिपुल निशान हने तेहि काला ❀ सुनि निशिचर पति गर्व बिशाला ॥
षट सहस्र दस शूर जुझारा ❀ लवणासुर सँग अनी अपारा ॥
सुभट प्रचारत गज रथ आवा ❀ देखि कटक निज अतिसुख पावा ॥
मारहु खावहु नृप धरि बाँधहु ❀ जेहि जयहोय जतन सोइ साधहु ॥
अस कहि सन्मुख सैन्य चलाई ❀ कज्जलगिरि जनु आँधी आई ॥

मारू शब्द सुनत भट गार्जाहिं ❀ विपुल बाजने चहुँदिशि बाजहिं ॥
निज प्रभु कहि जय जोरी जानी ❀ हरषि भिरे भट मन हठ ठानी ॥
छन्द–हठ ठानि प्रबल प्रवीण जे असि भिरे अति रिपु प्रबल से ।
इक मल्ल युद्ध मचाहि रोकहिं एक एक न कर खसे ॥
शर शक्ति तोमर शूल परशु कृपाण शूर चलावहीं ।
कर चरण शिर हत तीर धारहिं भूमि जान न पावहीं ॥
भट गिरहिं पुनि उठि लरहिं धरके करहिं माया अतिघनी ।
प्रभु तनय सुन्दर बीर बाँके हनहिं रिपु निश्चर अनी ॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुभट एकहिं इक हनै ।
सजि कोटि रथ सुर आय नभ पथ सुमन बरषा करि भनै ॥
दोहा–बिचलत अनी बिलोकि निज, लवणासुर बरबंड ।
संग तनय मातंगभट, दूसर केतु अखंड ॥३६॥
प्रभु सुतज्येष्ठ सुबाहु बिशाला ❀ भिरा मतंग हृदय जनु काला ॥
यूपकेतु अरु केतु प्रचारी ❀ लड़हिं सुखेन न मानहिं हारी ॥
लवणासुर रिपु अति बल भारी ❀ कौतुक करहिं प्रचारि प्रचारी ॥
अनी समूह जानि निज जोरी ❀ अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी ॥
विषम युद्ध लखि देव सकाने ❀ पूछेउ सुरगुरु कहि मुसुकाने ॥
जनि हिय सोच अपरमित करहु ❀ राम प्रताप सुमिरि उर धरहू ॥
यूपकेतु करि कोप अपारा ❀ हति रिपुकेतु खंड महि डारा ॥
इहाँ सुबाहु मत्त गहि मारा ❀ कर पद काटि अवनि पर डारा ॥
छंद–महि डारि कर पद शीश आतुर तूण शर प्रविशत भये ।
रविवंश के अवतंस दोनों समर महि राजत भये ॥
सुनि मरण सुगसुत विकल निशिचर भूमि पर घुमित गिरयो ।
पुनि जागि शूल सँभार प्रभु के समर सन्मुख सो भिरयो ॥
दोउ प्रबल बीर प्रताप निशिचर सैन्य दुहु दिशि मुरि चली ।
शिर बाहु चरण उड़ात नभ पथ योगिनी आनँद भली ॥
वहु रुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नर शिर मालिका ।
आनंद ह्वै मन मुदित गावहिं गीत खेचर बालिका ॥

धुनि पड़हिं शंख मृदंग की सुनि शूर हर्ष बढ़ावहीं।
गति लेत निर्तत प्रेत तिय शिर माल हर्ष चढ़ावहीं॥
कहुँ करत वान प्रमाण नय कहुँ भरी शोणित शाकिनी।
सब मद माँस अहार कर मन मुदित बोलहि डाकिनी॥

दोहा—मारे रघुबर बार बहु, गिरे समर रणधीर।
त्तण इक निशिचर बध निरखि, अन्तर हुइ बलवीर॥३७॥

करि छल प्रगट सो बिबिध बरूथा ❀ अस्त्र शस्त्र लै सब सुरयूथा॥
धाए अज अरु शिव सनकादी ❀ जे मुनि अपर कहे श्रुतिबादी॥
शक्ति शूल असि चर्म सुहाई ❀ गदा परशु धनु बाण बनाई॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं ❀ लरत न भट बिस्मित होइ रहहीं॥
निश्चर प्रबल भए रघुनाथा ❀ कौतुक धीर मले निज हाथा॥
सैन्य बिकल लखि नारद आए ❀ समाचार सब कह समुझाये॥
रिपुसूदन प्रभु बिशिख सँभारी ❀ जोरि समर सुमिरे त्रिपुरारी॥
जिमि तम अँचै तरणि गो सोई ❀ समर अमर नहिं दीसै कोई॥

दोहा—मंत्र प्रेरि चल कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभ छाय।
मनहुँ बलाहक प्रबल बसु, मारुत देखि बिलाय॥३८॥

सुर समाज कतहूँ नहिं देखा ❀ चलेहु सुबाहु केतु जनु वेषा॥
खल सम्हारु गहु शूल सुरारी ❀ असकहि गदा कोप उर मारी॥
सहि न सका सोइ तेज अपारा ❀ मूर्छित अवनि परा बिकरारा॥
निज पति बिकल देखि भटभारी ❀ धाये बहुकर शस्त्र सँभारी॥
कैटभ नाम बीर बलवाना ❀ मूर्छित लवणासुर मन जाना॥
तीन सहस्र लिये रण गाढ़े ❀ आइ सुबाहु सामुहे ठाढ़े॥
कटुक बचन कहि छाड़ेसि बाना ❀ ताहि काटि प्रभु तीव्र कृपाना॥

सोरठा—मारेसि हृदय सँभारि, गिरे जपत करुणायतन।
मूर्छित बेर पुकारि, रामचन्द्र दिनमणि तिलक॥३॥

तब खिसियान शूल लै धावा ❀ यूपकेतु के सन्मुख आवा॥
मूर्छित बंधु सुबाहु बिलोकी ❀ भे रिस अमित रहे नहिं रोकी॥

कठिन बाण कर क्रोध अपारा ❀ छाँड़सि तीनि सहस इकबारा ॥
ताहि विकल करि अनुज समीपा ❀ आतुर आये निज कुल दीपा ॥
लाग्यो शूल देख मन माहीं ❀ परयो अवनितल सुधि कछु नाहीं ॥
खैंच शूल तनु बाहिर कीन्हा ❀ राम नाम वर औषधि दीन्हा ॥
उठि शुचि अंग अनुज के संगा ❀ लीन्ह बिहँसि धनुबाण निषंगा ॥
आय समर महि सुभट प्रचारे ❀ बाणते विपुल देव अरि मारे ॥
मूर्छागत कैटभ बलवाना ❀ रथ चढ़ाय तेहि तुरत सिधाना ॥

दोहा--कर उपाय रथ राखि तेहि, पठय भवन रणधीर ।
आय समर गर्जत भयो, संग महाबल वीर ॥ ३९ ॥

जागा निशिचर देखि लड़ाई ❀ पठयसि कुमक संग निज भाई ॥
शूरबीर जेहि काल सकाई ❀ हारेउ समर सुनहु खगराई ॥
जाना कैटभ जाम्यक आवा ❀ समर धीर नहिं चलहिं चलावा ॥
नायउ माथ आनि कर जोरी ❀ तात समर रुचि पूजेउ मोरी ॥
रावण रिपु लघु भ्राता जानू ❀ तनय तासु बल रूप निधानू ॥
कोटिन शूर समर हम मारे ❀ बालक नृपति निरखि हिय हारे ॥
रिपु गुण सुनि कर हृदय कलापू ❀ पावहिं मोह जानि जिय आपू ॥
रवि तनया महि सैन्यहि डारूँ ❀ तनय समेत अनुज रिपु मारूँ ॥
लेकर गदा अनी विचलाई ❀ घेर रहे निशिचर समुदाई ॥
भागा रथ आनहु बलवाना ❀ ताहि चढ़ाय उपाय विधाना ॥

छन्द—रिपु अनुज मारू सैन्य यमुनहिं डारि नृप शिर नायऊ ।
तज सोच सैन सँभार चले भट वेगि जो अरि पायऊ ॥
दोउ मत्त गर्व बिशाल निशिचर आय रण गर्जत भये ।
इत जूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथ लै आतुर गये ॥
भट भिरे निज निज जयति कह निज जान जोरी समर की ।
शिर कटत खंडत चरण योगिनि खात बालक बालिकी ॥
हठि गीध जम्बुक काक शोणित पिवहिं अति सुख पावहीं ।
बहु दान देहिं अनेक मनुमहँ बिहँसि मंगल गावहीं ॥

दोहा--भिरे समर सहरोष अति, फिरे आकरे कूर ।
लागे लोहे रूठ रह, समर धीर वरशूर ॥ ४० ॥

कहहिं शूर किमि होत न ठाढ़े ❀ फिरे लजाय क्रोध कर गाढ़े ॥
भिरे प्रचार सुभट समुदाई ❀ भयो युद्ध तेहि वरणि न जाई ॥
वरषहिं समर शूर शर कैसे ❀ प्रावट समय जलद जल जैसे ॥
हय पग उठे धूर नभ छाई ❀ भयो प्रदोष सुनहु खगराई ॥
समर देखि रिपु प्रबल प्रभाये ❀ प्रभु समीप सादर सुत आये ॥
देख तनय बल विपुल विशाला ❀ रिपुहन हर्ष मनुज सुर व्याला ॥
यातुधान बल बुद्धि गँवाई ❀ निजपुर गये राज यश पाई ॥
निशि निशिचर सब बात विचारी ❀ होत प्रात पुनि लरी गुहारी ॥

दोहा--साजि बाजि गज बाहनहिं, गहगह हने निशान ।
आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥४१॥

शिवहिं सुमिरि लै शूल विशाला ❀ रिपु बल परयो मनहुँ यम काला ॥
छिनक माहिं मारे बहु योधा ❀ चला सकोप मनुज करि क्रोधा ॥
आवत शूल हन्यो प्रभु छाती ❀ घुमित गिरयो धरणिपर घाती ॥
मूर्छित देखि खड्ग लै धावा ❀ निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा ॥
प्रवल गदा रथ सारथि भंजा ❀ विहँसि महाबल रिपु दलगंजा ॥
रथ विहीन व्याकुल मन माहा ❀ मूर्छित परयो अवनि सुधि नाहीं ॥
पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी ❀ अस्त्र सँभारि कोप करि भारी ॥
उठ शत्रुहन मन अनुमाने ❀ सादर सब हियते सनमाने ॥
विस्मित विकल देख सब जाने ❀ रामवाण अति सादर आने ॥

दोहा--सुमिरि अवधपति चरण युग, छाड़े युग नाराच ।
पर्यो अवनि तनु भिन्न ह्वै, व्याकुल विकट पिशाच॥४२॥

तासु मरण सुनि सब सुर यूथा ❀ चढ़ि विमान नभ सकल बरूथा ॥
बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला ❀ आज नाथ बीते सब शूला ॥
देहिं अशीष देव धुनि करहीं ❀ जयति मंत्र कहि आशिष वरहीं ॥
यातुधान पति हीन विलोकी ❀ कैटभ जाम्ब नहीं रिपु रोकी ॥
करि किलकारि गर्जि अति घोरा ❀ शिला एक धारी बहु जोरा ॥

शर शत शैल सुबाहु प्रचारी ❀ काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
वदन पसारि ताहि तक धावा ❀ देव सुबाहु प्रबल पहँ आवा ॥
खेंचि धनुप तब श्रवण प्रयंता ❀ अति कराल शर छाँड़ि तुरंता ॥
काटि शीश तेहि भूमि गिरावा ❀ सुनासीर आतुर चलि आवा ॥
जोरि युगल कर अति अनुरागे ❀ बोले वचन प्रेम रस पागे ॥
हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा ❀ अस्तुति योग नहीं हम ताता ॥
सुरपति सुर लखि प्रभु लघुभाई ❀ कीन्ह प्रणाम माथ महि नाई ॥
अस्तुति विनय शक्र तव कीन्ही ❀ वार वार बहु आशिप दीन्ही ॥

दोहा--देवन सहित सुदेव गुरु, आये जहँ मखधाम ।
समाचार सादर सकल, कहे सबन को नाम ॥४३॥

तहँ युग नगर रचे अति रूरे ❀ राखे तनय युगल बल पूरे ॥
मथुरा नाम जगत यश जाना ❀ दूसरि विश्व जो वेद बखाना ॥
ज्येष्ठ तनय बल बुद्धि विशाला ❀ नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
राखेउ यमुनातट बल भूरी ❀ विदित नगर पश्चिम दिशि दूरी ॥
यूपकेतु पुनि साथ रखावा ❀ राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
सौंपि नगर बहु आशिप दीना ❀ नृपमणि गवन विजयकहँ कीना ॥
चिरंजीव करि हन्यो निशाना ❀ दक्षिण अश्व चला जग जाना ॥
सचिव समेत राखि सुत संगा ❀ उतरे सब जल यमुन तरंगा ॥

दोहा--रवितनया पद बन्दिकै, चली अनी हय संग ।
हर्पित शूर समूह अति, चली सैन्य चतुरंग ॥४४॥

बाल्मीकि थल सैन्य समेता ❀ कानन सघन मुनीश निकेता ॥
सियसुत युगल वीर बरवंडा ❀ भुजबल अमित दिनेश प्रचंडा ॥
वीर बली हय देख्यो आई ❀ पत्र बँध्यो शिर बाँध्यो ताई ॥
कटि कसि तूण हाथ धनु तीरा ❀ समर हेतु बैठे बल वीरा ॥
शूर सहस्र साठि हय साथा ❀ आय गये तहँ रघुकुलनाथा ॥
तहँ तरु बाँध्यो बाजि विलोकी ❀ बालक जानि सकल रिसि रोकी ॥
देहु तुरंग घर जाहु सुहाये ❀ धन्य मातु पितु जिन्ह तुम जाये ॥
माँगहु भीख समर चढ़ि भाई ❀ क्षत्रिय कुलहिं कलंक लगाई ॥

छंद--जनि क्षत्रिय कुलहि कलंक लावहु समर शूर सुहावने ।
बल हीन तुरंग प्रवीन छाड्यो धरा बिनु भट जानने ॥
सुनि वचन कटुक कठोर बालक जानि भट धावत भये ।
शर तानि एकहिं बार हँसि हने तनु जर जर भये ॥
महि पेर पुनि कछु भिरे योधा जाय रिपुहन सों कहा ।
पुनि बाल हत संग्राम सैन्यिहि बाजि लै रणमह रहा ॥
सुनि कोप करि अति शत्रुहन तब सैन्य लै धावत भयो ।
रण माहि गाजत बीर बाँके कोप लखि लज्जित भयो ॥२१॥

सोरठा--सुनि मुनि बालमराल, देहु अश्वतजिकोप निज ।
पूज तुमहि तेहि काल, करिहहिं जन्म सफल प्रभु ॥४॥

कौन नाम नृप किहि पुर बाशी ❀ फिरहु बिपिन सँग सैन्य प्रकाशी ॥
छाँड़ेउ बाजि हेतु किहि लागी ❀ लिख्यो पत्र बाँध्यो भय त्यागी ॥
नहिं तव तनु बल पौरुष भाई ❀ छाँड़हु पत्र बाजि गृह जाई ॥
सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने ❀ गहहु अस्त्र अस कहि मुसकाने ॥
हमहिं प्रचारत नृप बल भारी ❀ डरपहिं सिंह बाजते तारी ॥
असकहि धनुष बाण कर लीना ❀ मुनिवर विनय चरण शिर दीना ॥
मारेसि रथ सारथी तुरंगा ❀ कोटिन बाण हने सब अंगा ॥
करि मूर्छित नृप कटक सँहारा ❀ खाहिं माँस अति गीध करारा ॥

दो०--एकहिं एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर ।
आये तव रघुबीर पहँ, कायर करनी धूर ॥४५॥

पूछेउ सकल भानुकुलनाथा ❀ रिपुके भवन कहे गुण गाथा ॥
मुनि बालक दोउ कटक सँहारी ❀ रिपुहन आदि समर महँ डारी ॥
रिपु बालक सुनि बिकल खरारी ❀ बिकल होय पुनि कहेउ पुकारी ॥
लक्ष्मण संग जाउ दोउ भाई ❀ मुनि बालक बाँध्यो बरियाई ॥
मारहु जनि आनहु पुरमाहीं ❀ ऋषि सुत बंधन उचित न काहीं ॥
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा ❀ आयउ तुरत समर जेहि मारा ॥
लै घर जीव जाहु मुनि बालक ❀ दिनकर वंश देव द्विज पालक ॥
आँखिन ओट होहु अब ताता ❀ लखि अति कोप चढ़त ममगाता ॥

दोहा--सुनि लक्ष्मण के वचन तब, विहंसे बालक बीर।
अनुज बिलोकहु जाय अब, प्रबल महा रणधीर ॥४६॥

अनुज बिलोकि बचन सुनि काना ❀ धनुष चढ़ाय गहे कर बाना ॥
वेष बिलोकि बाल मुनि जाना ❀ निजकुल ससुझि करौं मन काना ॥
निज सहाय शठ आन बुलाई ❀ केवल तोहि हते न भलाई ॥
सुनि कुश कठिन बाण संधाने ❀ काँपी पुहुमि शेष अकुलाने ॥
छूटे विशिष रहे नभ छाई ❀ बाण भानु प्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहिं प्रबल लखि चला सकोपी ❀ डरा न मनहिं रहा रथ रोपी ॥
काटे विशिष विशिष सन भाई ❀ कौतुक करहिं विविध खगराई ॥
झपटि गदा लक्ष्मण तब झारी ❀ गिरेउ भूमि कुश मूर्छित भारी ॥

दोहा--मूर्छित कुशहिं निहारि करि, धाये लव करि शोर।
आवतही शर उर हने, गिऱ्यो धरनि बलजोर ॥४७॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी ❀ लरहिं सुखेन न मानत हारी ॥
भिरहिं उपाय बिपुल बल करहीं ❀ गिरतहि धरणि बहुरि उठि लरहीं ॥
बिकल सैन्य सब भानु सँहारी ❀ सुमिरि कोशलाधीश खरारी ॥
मारेउ बाण लवहिं क्षिति डारा ❀ मूर्छित होय गिरेउ बिकरारा ॥
बिकल बिलोकि बन्धु लघुजानी ❀ चल्यो बीर मन बहुत गलानी ॥
लक्ष्मण देखि बीरबर धाये ❀ धनुष बाणि धरि आगे आये ॥
शक्रजीत अरि जे सर मारेउ ❀ ते सब बालक काटि निवारेउ ॥

दोहा--रामानुज विस्मित बिकल, देखि सकल आराति।
सीय त्यागि उरशोच बड़, प्राण देहुँ किमि भाँति ॥४८॥

कुशकरि क्रोध विशिखसो लीने ❀ मंत्र प्रेरि मुनिवर जे दीने ॥
नाक रसातल भूतल माहीं ❀ यह शर छूटै बचै कोउ नाहीं ॥
मोहत अस्त्र नाम तेहि जाना ❀ विष्णु महेश ब्रह्म जेहि माना ॥
मारेसि शेष ताकि उर माहीं ❀ परा धरणितल सुधि कछु नाहीं ॥
चली सैन्य सब भागि अपारा ❀ कोशलपुर महँ जाय पुकारा ॥
करनी सकल युद्ध के बरणी ❀ लक्ष्मण बीर परे जिमि धरणी ॥
जेहि बिधि कटक सकल संहारा ❀ निज लोचन हम नाथ निहारा ॥

वय किशोर दोउ बाल अनूपा ❀ तव प्रतिबिंब मनहुँ सुर भूपा ॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई ❀ बालक बीर बरणि नहिं जाई ॥

दोहा--भरत जोरि करके कहेउ, बचन अमिय बिलखाय ।
सीयत्याग फलदीन बिधि, प्रभुकहि देखेउ जाय ॥४९॥

अनुज समर महँ तुम हिय हारे ❀ साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
रही यज्ञ रिपु देखहु जाई ❀ बालक रावण के दुखदाई ॥
तीव्र बचन सुनि भरत लजाने ❀ बहुत भाँति रघुपति मनमाने ॥
प्रथम सखा सब लिये बुलाई ❀ हनुमदादि अंगद समुदाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण ❀ द्विविद मयंद नील नल भूषण ॥
रिपुहि मारिके समर भगाई ❀ तात अनुज दोउ आनहु जाई ॥
माथ नाय सँग कटक विशाला ❀ चले भरत उर उपजी ज्वाला ॥
शोणित सरिता समर बिलोकी ❀ डरपेउ बीर आश रण रोकी ॥

दोहा--समर सीय दोउ बोरबर, आयगये बलवान ।
देख डरे कपि भालु सब, तव बोलेउ हनुमान ॥५०॥

धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये ❀ पुरुष युगल घर जाहु सुहाये ॥
समर विमुख सुन भट बिलखाना ❀ कीन्ह क्रोध कह सुनु हनुमाना ॥
नहिं बल होउ जाहु घर भाई ❀ हतों न ठौर जान कदराई ॥
भाषे वचन भरत सुनि काना ❀ लेहु सँभार वाल धनु वाना ॥
कटकटाय कपि भालु समूहा ❀ लीन्ह उपार प्रबल तरु जूहा ॥
एकहि बार सकल तिन मारा ❀ लव काटहिं तिलसम करि डारा ॥
रिपुशर काटि निमिष यकमाहीं ❀ यथा मनोरथ खल मिटि जाहीं ॥
कर लव क्रोध वाण फटकारे ❀ मारे बीर भूमि गज डारे ॥
छंद–गजबाजि घने रण भूमि परे ❀ तहँ शोणित बीर अरूथ भरे ॥
लव तानि शरासन बान भले ❀ रिपुसागर बीर प्रचार दले ॥
लगते शर ह्वै रण घायल ते ❀ धरणी परि जाहिं विषाकुल ते ॥
कहुँ भूमहिं कुंजर पुंज परे ❀ महि लोटहिं शोणित धार भरे ॥
शर लागत घायल बीर गिरे ❀ तहँ हाँक उठे रणधीर धरे ॥

तब शोणित की सरिता उमगी ❀ अतितीक्षण धार अपार पगी ॥
तहँ योगिन भूत पिचाश घने ❀ सुख पालक कंक कराल बने ॥
पु—छंद—पल भषहि कंक कराल जहँ तहँ गीध मन प्रमुदित भये ।
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत व्याह प्रति मंगल ठये ॥
तहँ डाकिनी मन मुदित डोलहिं शाकिनी शोणित भरी ।
दोउ करन खेंचहिं कालिका शिव प्रेत प्रति कीरति करी ॥
अन्तावरी गहि गर लपेटहिं पिवत शोणित आतुरे ।
गज खाल खेंचहिं भूत शंकर प्रेत शंकर चातुरे ॥
बैताल बीर कराल कर बर करी कर इक कर धरे ।
ह्वै भार रुधिर प्रभाव पूरण पान करत हरे हरे ॥
रघुबंश समर सराहि दुहुँ दिशि करहिं निज मन भावने ।
गज बाजि नर कपि भालु जहँ तहँ गिरे महि शुभ पावने ॥
दोउ राम तनय प्रचारि बहु बिधि निकट कोउ न आवहीं ।
जे त्रसित व्याकुल त्राहि त्राहि सुबीर निज गुहरावहीं ॥

दोहा--विषम युद्ध दोउ बन्धु करि, जीति सुभट संग्राम ।
आयउ पुनि जहँ नृपभरत, सुमिरि बिधाता बाम ॥५१॥

कपि भालुहि घायल सब आवहिं ❀ बाणत्रास मनअति दुख पावहिं ॥
जाम्बवन्त कपिराज बुलाये ❀ अंगद हनूमान सुनि आये ॥
सब मिलि सहित निशाचर राजा ❀ धरि आनहु दोउ बाल समाजा ॥
आय जुटे कपिभालु भवानी ❀ तिनकछु प्रभुमहिमा नहिं जानी ॥
बोले कुश सुन बालि कुमारा ❀ तुम बल बिदित जान संसारा ॥
पितहिं मराय मातु पर हेली ❀ सकल लाज आये तुम पेली ॥
सो फल लेहु समर महँ आजू ❀ त्यागहु सकल कलंक समाजू ॥
सुनत क्रोध अंगद उर छावा ❀ गहि गिरि एक ताहि पर धावा ॥

दोहा--आवत शैल विशाल लखि, तिलसम शरहति कोन ।
अंगद गर्व अपार अति, तस प्रभु उत्तर दीन्ह ॥५२॥

तमकि तमकि कुश बाण चलावा ❀ अंगद नील अकाश उड़ावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपि भारी ❀ मारा बाण प्रचारि प्रचारी ॥

इतउत जानि कतहुँ नहिं पावै ❀ पवन बहै जिमि महि नहिं आवै ॥
छिन अकाश छिन भूतल माहीं ❀ बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं ॥
रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना ❀ जग जगनाथ न मैं पहिचाना ॥
पाँच बाण बेधेउ कपि दोऊ ❀ दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ ॥
परे भरत के सन्मुख जाई ❀ दशा देखि कपि दशा भुलाई ॥
जाम्बवन्त हनुमान कपीशा ❀ धाये तरु गिरि लै बहु कीशा ॥

दोहा--हँसे कुमर कुश देखि कपि, अनुजहिं कहेउ बुझाइ ।
आज समर जीते भरत, भालु कपिन्ह बिलगाइ ॥५३॥

प्रभु सुत समर कीन्ह जस करणी ❀ निगम शेष शारद नहिं बरणी ॥
चरित तासु सुनु शैलकुमारी ❀ मारेउ समर शूर कपि भारी ॥
समर धीर दोउ बाल बिराजै ❀ निरखि भालु कपिमन अतिलाजै ॥
खैंचि धनुष गुण छाँड़ेउ सायक ❀ कपिपति आदि हने कपिनायक ॥
मूर्छित सैन परी महि माहीं ❀ बचो न कपि घायल जो नाहीं ॥
देखि भरत सब सैन निपाती ❀ कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
मुर्छित बिकल परेउ महिमाहीं ❀ अतिहिबिकल तनुकी सुधि नाहीं ॥
दुखित देखि कुश असित रिसाना ❀ चाँप चढ़ाय बाण संधाना ॥
श्रवण प्रयंत खैंचि धनु बीरा ❀ भरत हृदय मारेउ शत तीरा ॥
भयो युद्ध तहँ बिबिध प्रकारा ❀ बीर बाँकुरे सुभट अपारा ॥

दोहा--समर भूमि सोये भरत, लवहिं लीन उर लाय ।
सुमिर मातु गुरु चरण युग, रहे समर जय पाय ॥५४॥

आये खबर लेन चर चारी ❀ भरत सैन्य तिन सकल निहारी ॥
शोणित सरिता देखि डराने ❀ हय गज बहे जाय रथ जाने ॥
देखी सरित भयंकर भारी ❀ कठिन कराल सुनहु उरगारी ॥
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाई ❀ चर्म मनहु कच्छप की नाई ॥
ग्राह नक्र झप जन्तु घनेरे ❀ देखे दूर ते तिन मन फेरे ॥
लहर तरंग बीर बहि जाहीं ❀ घायल परे तीर उतराहीं ॥
फिरे दूत कौशल पुर आये ❀ समाचार सब राम सुनाये ॥
चरवर वचन सुनत दुख पावा ❀ त्यागेउ सखनिज कटक बनावा ॥

चले सकोप कृपालु उदारा ❀ आये जहँ प्रभु कटक सँहारा ॥
मुनिवर बालक देखि सुहाये ❀ शिरनवाय प्रभु निकट बुलाये ॥

दोहा–पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ।
देश ग्राम निज कहहु सब, बड़ जीतहु संग्राम ॥५५॥

गहहु अस्त्र जिन कहहु कहानी ❀ पूछहुँ सुजन लोग अस जानी ॥
समर बात बहु अति कदराई ❀ छाँड़ि सोच अब करहु लराई ॥
वंश नाम बिनु पूछेउ ताता ❀ हतौं न बाण मनोहर गाता ॥
माता सीय जनक की जाता ❀ बालमीकि बोल्यो मुनि ताता ॥
पिता वंश नहिं जानहिं आजू ❀ लवकुश नाम सुनहु रघुराजू ॥
सुनि सब कथा राखि मनमाहीं ❀ बाल बिलोकि बधब भल नाहीं ॥
आवत सुभट समूह हमारे ❀ लरिहहिं तुमसन समर सुखारे ॥
असकहि अंगद नील उठावा ❀ जाम्बवन्त कपिपतिहिं बुलावा ॥

छन्द–कपिराज अंगद जाम्बवन्तहिं बोलि निशिचर नायकं ।
हनुमान द्विविद मयंद नील सुभट जे अति लायकं ॥
तव हरण शूलहिं पाप नाशक कह्यो हँसि रघुनन्दनं ।
भरतादि रिपुहनं सहित लक्ष्मण परे खल मद गंजनं ॥
लंकेश आदिक सुभट मारे बीर जे महि मंडनं ।
ते आज बालक विप्रसों रण परे रिपुमद गंजनं ॥
कुलकान अब निज जान सुभटन शैल तरु बहु लै चले ।
दै हूह बानर यूह पर्वत डारि पुनि रण मुरि चले ॥

दोहा–सावधान धनु बाण लै, धायउ लव बलवान ।
सन्मुख आनि बिभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान ॥५६॥

सुनि शठ बन्धुहिं समर जुझाई ❀ शत्रुहि मिलेउ निपट कदराई ॥
पिता समान बंधु बड़ तोरा ❀ त्रिया तासु लै घर बर जोरा ॥
पापी मातु कहा इक बारा ❀ सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा ॥
बूड़ मरहु सागर महँ जाई ❀ मर गर काटि अधम अन्याई ॥
समर भूमि मम सन्मुख आवा ❀ लाज होत नहिं गाल बजावा ॥
आँखिन आगे ते हटि जाई ❀ नहितो मृत्यु निकट चलि आई ॥

मनि खिसियान गदा तेहि लीनो ❀ शरहति खंड खंड लव कीनो ॥
सात बाण मारेउ करि क्रोधा ❀ डगमगात शर लागत योधा ॥
गिरत कोपकर सूल चलाया ❀ लवतनु तडित समान समाया ॥

दोहा—दूरिशूलकरिबंधु दोउ, लखि मारेउ करि दाप ।
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगद करहिं बिलाप ॥ ५७ ॥

जो गिरि तरु कपि डारहिं आई ❀ रज समान तेहि देहिं उड़ाई ॥
निज बाणन कपि घायल कीन्हें ❀ दो जेहि उचितसु तमफल दीन्हें ॥
रघुकुल तिलक प्रचारित पाछे ❀ बीर धुरीन बने सब आछे ॥
अंगद हनूमान भट भारी ❀ ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई ❀ खड्गन हने बीर बरिआई ॥
कपिन कोप करि उरहत तेही ❀ जिमि खग मशक चाटि गजदेही ॥
इत दोनों कपि भूमि गिराये ❀ जामवन्त कपिपतिपहँ आये ॥
इहि तनु कोटिन समर लड़ाई ❀ जीते लड़े बहुत हम भाई ॥

दोहा—ये बालक त्रिभुवन बली, जीत सकै नहिं कोय ।
चलहु प्राण दीजै समर, अजय जगत नहिं होय ॥ ५८ ॥

आवत भालु बली भट नाना ❀ तानि शरासन शर संधाना ॥
हृदय तानि लव मारेउ सायक ❀ योजन सात गयो कपिनायक ॥
घायल भालु लपटे जाहीं ❀ मल्लयुद्ध कुश कीन्ह बनाहीं ॥
निज बल ऋक्षहिं अवनि पछारा ❀ दुइ कर चरण बाँधि विकरारा ॥
हनुमंतहिं बाँध्यो लव धाई ❀ राखेउ निकट अश्व-थल आई ॥
रखवारी छाँड़ेउ लव बीरा ❀ आप गयो रघुनायक तीरा ॥
देखेउ रथ पर श्रीपति सोये ❀ फिरेउ बीर निज लाज बिगोये ॥
सुभग अस्त्र पट भूषण नाना ❀ लव धरि अश्व ऋच्छ हनुमाना ॥

छन्द—सुभ अस्त्र पट भूषण सुमर्कट ऋच्छ संग हय धर चले ।
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेंटि भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपि दोउ निरखि भूषण महमि सिय धरणी परी ।
इहि बीच मुनिवर सदन आये सियहिं अति विनती करी ॥
हनुमान भालुहिं छाड़ि बेगहि त्याग बहु समुझायऊ ।

रिपुदमन लछिमन सहित भरतहिं राम समर सुवायऊ ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुल महँ मोहिं बिधि बिधवा करी ।
तजि सोच चंदन अगर आनहु जाउँ पिय सँग अब जरी ॥
सुनि धीर जानकि देइ लव कुश संग लै साद चले ।
रथ देखि बालक चकित चितवहिं बिहँसि मन संशय भले ॥
रण देखि कर पहिचान प्रभु कहँ जाय मुनि चरनन पड़े ।
उठि बैठि कोशलनाथ आतुर तनय तब आगे खड़े ॥

सोरठा--सुनि मुनिवर के बैन, जागे रघुपति भयहरण ।
बिहँसि उघारेउ नैन, लीन्हें हृदय लगाय मुनि ॥५॥

प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने ❀ बार बार निज भाग्या बखाने ॥
जेहि विधि शेष सीय बन आनी ❀ मुनि सो सबही कह्यो बखानी ॥
लव कुश कथा सकल मुनि भाखी ❀ शिव बिरंचि सूरज कर साखी ॥
मिले तनय दोउ हृदय लगाई ❀ सुधा बर्षि सुर सैन जिवाई ॥
भरत आदि जागे सब भ्राता ❀ लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता ॥
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई ❀ सुनहु तात अस बचन सुनाई ॥
ऐसे बचन मानि मम भाई ❀ सिय मन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा ❀ कुशल कही बहु विधि समुझावा ॥
हरि इच्छा तिन मन अस आवा ❀ शेष सहसफणि आन दिखावा ॥

दोहा–जटितमणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढ़ाय ।
भये अलोप पतालमहँ, महिमा किमि कहि जाय ॥५९॥

लक्ष्मण चरित देखि सब ठाढ़े ❀ नयन प्रवाह चले अति गाढ़े ॥
सकल चरित सुनि कृपानिधाना ❀ चलन हमार सीय मन जाना ॥
तनय सहित पुनि निजपुर आये ❀ दीन दान शुभ यज्ञ कराये ॥
जेहि जेहि विधि गुर आयसु दीने ❀ कोटि कोटि विधि सोइ प्रभु कीने ॥
कोटिन धेनु धाम धन धरणी ❀ दीन कृपानिधि को सक बरणी ॥
भोजन बिबिध भाँति करवाये ❀ बिदा कीन्ह मुनिवृंद बुलाये ॥
जनकहिं पूजि बिदा प्रभु कीन्हा ❀ दोउ पद पूजि पयोदक लीन्हा ॥
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई ❀ बैठे प्रभु महिदेव बुलाई ॥

दोहा--लक्षलक्ष बर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पायँ।
एक एक बिप्रन दई, हर्षित कोशलराय ॥६०॥

गे सब मुनि सज्जन निज धामा ❀ पायो अमित अमित सुखरामा ॥
पुरवासी आये सब झारी ❀ सुनहिं पुराण अनंद सुखारी ॥
जे जड़ चेतन जीव घनेरे ❀ सचराचर कोशलपुर केरे ॥
तिन सुख बढ़त सुनत सुरराया ❀ करहिं विनोद विहाय अमाया ॥
यहिविधि विपुलकाल चलि गयऊ ❀ निजपुर गमन सो अवसर भयऊ ॥
बीती अवधि ब्रह्म तब जानी ❀ नारद मुनि सन कहा बखानी ॥
निजपुर आवन चहहिं खरारी ❀ धर्मराज कहँ करहु हँकारी ॥
बिनती बहु बिरंचि तब भाखी ❀ चले धर्म रघुपति उर राखी ॥
द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी ❀ बोलेउ तापस अति मृदुबानी ॥
तुरत शेष तब खबर जनाई ❀ सुनत बचन आये रघुराई ॥
मुनिहिं निरखि प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ सादर उचित कहेउ श्रीरामा ॥
अर्घ्य दीन्ह आगे बैठारी ❀ मुनिवर सुन्दर गिरा उचारी ॥
सुनु सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा ❀ आयसु मुनिवर तापस बेषा ॥
हम तुम रहैं अवर ना कोई ❀ तिसरे सुनत नाश तेहि होई ॥
सुनै शब्द तेहि देउँ शरापू ❀ विधि हरिहर आवै जो आपू ॥
सुनहु लषण चलि बैठहु द्वारे ❀ ना कोउ आव न गिरा उचारे ॥
मम कर बध आवै पुनि कोई ❀ मरहिं सत्य यह वृथा न होई ॥

दोहा--बोलेउ तापस बचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ।
कहा सकल इतिहास मुनि, कपि मुनि नायो माथ ॥६१॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना ❀ दुर्वासा मुनि आय तुलाना ॥
मुनिहिं देखि लक्ष्मण चलि आगे ❀ गये निकट बिनती अनुरागे ॥
पूँछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा ❀ जाउँ तहाँ मैं सुनहु अहीशा ॥
जो प्रति उत्तर करिहौ आजू ❀ भस्म करौं तव घर पुर राजू ॥
कम्पेउ लषण सुनत मुनि बानी ❀ निजबध जाना चलेउ भवानी ॥
दोउ कर जोर कह्यो प्रभु पाहीं ❀ दुर्वासा मुनि आवन चहहीं ॥

तात कीन्ह अति अवगुण भारी ❀ काल कर्मगति टरै न टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुल केतू ❀ सुनहु खगेश कथा कर हेतू ॥

दोहा--तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ।
चलहु वेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान ॥६२॥

छन्द—अति तेज पुञ्ज बिलोकि आरति उचित उठि आसन दियो ।
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदक लियो ॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेगि मो सादर करौं ।
बहुकाल क्षुधित कृपायतन बिन अशन दिन भर में परौं ॥
मनभाव भोजन दीन रघुपति बहुत विधि बिनती करी ।
संतोष पाय मुनीश अस्तुति करि बिनय आशिष भरी ॥
करि बिदा मुनिवर देखि लक्ष्मण हृदय दारुण दुख भये ।
भरतादि अनुज समेत पुरजन ताहि छिन देखत भये ॥
पदवंदि ठाढ़े जोरि दोउ कर बदन लखि अति कंपहीं ।
भरि नयन पंकज नीर आरत भरत सन प्रभु सब कही ॥
अब गुरुहिं आनहु वेगि सादर दुखित अति आतुर गये ।
सब कथा गुरुहिं सुनाय आतुर यान चढ़ि आवत भये ॥
आये बशिष्ठ बिलोकि रघुपति बिकल उठि चरनन परे ।
संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागिहैं हमको हरे ॥
मुनि वचन शेष विचार निज उर राम बिन धिक जीवना ।
गहि चरण सरयूतीर आये देखि जल शुभ पावना ॥

दोहा--करि प्रणाम जल मध्य में, कीनी ध्यान अखण्ड ।
योगयत्न करि राम कहि, फोर्‍यो निज ब्रह्मण्ड ॥६३॥
राम धाम पहुँचे तुरत, लषण चतुर्थम भाग ।
सुनि ब्याकुल रघुपति भरत, मिटेउ सकल अनुराग॥६४॥

मैं नहिं तज्यों तज्यों मोहिं ताता ❀ अब करु यत्न सो देखहु भ्राता ॥
करहु भरत पुर जन्म सुखारी ❀ सुनत गिरेउ महि ब्याकुल भारी ॥
चलन चहत अब प्राण गुसाईं ❀ प्रभु लक्ष्मण बिनु रह न सकाईं ॥
तात चलहु कहि तनय बुलाई ❀ कीन्ह तिलक बहु भाँति सिखाई ॥

भरत सुतनय शील वैनामा ❀ दक्षिण नगर दियो तिहि रामा ॥
दुसरे पुष्कल जेहि जग जाना ❀ पुहकर नगर दीन भगवाना ॥
प्रथम दैत्य हति तहाँ बसाये ❀ दीन कृपानिधि तिन मन भाये ॥
चित्रकेतु अङ्गद रणधीरा ❀ लक्ष्मण तनय सुभट गंभीरा ॥

दोहा--पश्चिम दिशा पिशाच बहु, जीति हते संग्राम ।
तहँ राखे सुत सरिस दोउ, बिलग बिलग कहि नाम ॥ ६५ ॥

अवध नृपति कुश कीन्ह निहोरी ❀ सिखै नीति पुनि कह्यो बहोरी ॥
भ्रातन पर सुत दया करेहू ❀ राजनीति उर माहिं धरेहू ॥
उत्तर नगर सु उत्तर दूरी ❀ सुख संपदा जहाँ अति रूरी ॥
लव कहँ दीन कृपानिधि सोई ❀ पटतरि अवध नगर नहिं कोई ॥
आठ सहस रथ तुरँग पचासा ❀ दस सहस्र गज मत्त बिलासा ॥
लजहिं इंद्रगज तिनहिं बिलोकी ❀ दिगपालन निज प्रभुता रोकी ॥
शक्र कुबेर देखि सकुचाने ❀ तिनकी महिमा कौन बखाने ॥
इकइक सुतन दीन रघुराया ❀ बरणि को सके सुनहु खगराया ॥
धनद कोटि सम भरे भंडारा ❀ यथा योग करि भाग उदारा ॥

दोहा--सकल तनय परितोषकरि, बिदा कीन्ह रघुबीर ।
बिप्रवृन्द याचक सकल, लिये बोलि मति धीर ॥ ६६ ॥

धेनु बसन धरणी धन धामा ❀ दिये द्विजन किये पूरणकामा ॥
याचक सबै अवध के बासी ❀ बोले प्रभु सन अज अविनासी ॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी ❀ अन्तकाल अब होत अभागी ॥
जो जन जान लेहु प्रभु साथा ❀ करहु कृपानिधि सकल सनाथा ॥
सुनि सनेहमय बचन सुहाये ❀ चलहु कहेउ प्रभु अति सुख पाये ॥
समय जानि कपिपति तहँ आवा ❀ अंगद राज दीन सुख पावा ॥
जाम्बवन्त लंकापति बीरा ❀ नल अरु नील द्विविद रणधीरा ॥

सोरठा--कह प्रभु सुन लंकेश, राज कल्पशत करहु तम ।
बचन अचल मम शेष, अंत अमरपुर गवन करु ॥ ६७ ॥

कोटिन कीश जु सुर अवतारी ❀ आये जहाँ कृपालु खरारी ॥
जाम्बवन्त मन कह मृदु बानी ❀ रहु द्वापर भर अस जियजानी ॥
कृष्ण रूप धरि मिलिहौं तोहीं ❀ समर भूमि तब जानेसि मोहीं ॥
सब कहँ सबबिधि धीरज दीना ❀ आप गमन सरयू तट कीना ॥
दच्छिण भरत वाम रिपुदमनू ❀ पुरवासी सब निजकुल तरनू ॥
अग्नि वेद गायत्री छन्दा ❀ धरि निजरूप चले सुरबृन्दा ॥
पीताम्बर पट सुन्दर धारी ❀ जड़ चेतन चर अचर सुखारी ॥
प्रथम रूप धरि सुन्दर आई ❀ जस कछु कीन्ह सो सुनु खगराई ॥
समय जानि तब पवनकुमारा ❀ बोले वचन कृपा आगारा ॥

दोहा–चिरंजीव सुत रहहु तम जब लगि रवि शशि शेष ।
तुहि सेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश । ६८॥

चतुरानन पहँ धर्म सिधाये ❀ सरयू तीर जगत पति आये ॥
चले देव अज भव सनकादी ❀ जो मुनि परम अलौकि अनादी ॥
कोटिन रथ बाहन बिधि नाना ❀ अरुण अकाश न जाइ बखाना ॥
नभपर जय जय जय धुनि होई ❀ पावहिं बर सुर याचहिं जोई ॥
देखि नाक रथ मग परिछाहीं ❀ जिमिगिरि कृमिनभपंथ उड़ाहीं ॥
करि पुर सगज देव तनु धारी ❀ पाइ चतुरभुज रूप सुखारी ॥
चढ़ि बिमान प्रभु धाम सिधाये ❀ सकल अपरमित कहँ सकुचाये ॥
सुमन बृष्टि नभ होत अपारा ❀ होइ नाद बिधि बेद उचारा ॥

छन्द–उच्चरित वेद प्रसन्न भरत कृपालु हँसि सादर लयो ।
जल परसि कर रिपुदमन सादर पद्म बन राजा भयो ॥
कपि आदि यूथप राखि उर प्रभु सकल निज २ घर गये ।
सुग्रीव प्रभु पद बंदि बारहिं बार रविमंडल छये ॥
सुर सहित दिनकर वंश भूषण आय जल आश्रित रहे ।
तेहिसमय बोलि अनादि प्रभुजू वचन पावनमय कहे ॥
इक मास रहु तुम नीर तहँ ममपुरी आवजु आवहीं ।
तेहि सुभग देहु बिमान पद निर्बान जो मम पावहीं ॥
अति प्रीति रुचिर सनेह मज्जहिं मन चरण रति है सदा ।

तरि जाय सुरपुर सकल सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
जे जन्म भरि मम संगवासी रहे निशि वासर सदा ।
तिन तुरत आनो सहित सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
कहि वचन अन्तर्ध्यान प्रभु जिमि दामिनी घनमें धमें ।
नभ जयति जय जय कार जय जय जयति करलै सुर लमें ॥
इहि भाँति रघुपति सह चराचर लै गये निज धामको ।
सो कह्यो उमहिं कृपायतन उर राखि सादर रामको ॥१६॥

दोहा--गिरिजा सन्त समागमहिं, सम न लाभ कछु आन ।
विनु हरिकृपा न होय सो, गावहिं वेद पुरान ॥ ६८ ॥
इहि विधि सब सम्वाद सुनि, प्रफुलित गरुड़ शरीर ।
बार बार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर ॥६९॥

मैं कृतकृत्य भयों तव बानी ❀ सुनि प्रभुकथा भक्ति रससानी ॥
राम चरण नूतन रति भयऊ ❀ बहुविधि नाथ मोहिं सुख दयऊ ॥
मोपर होय न प्रति उपकारा ❀ वन्दों तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी ❀ तुमसम तात न कोउ बड़भागी ॥
मोहिं जलधि बोहित तुम भयऊ ❀ तव प्रताप संशय सब गयऊ ॥
संत विटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेत सबन की करणी ॥
संत हृदय नवनीति समाना ❀ कहा कबिन पर कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता ❀ पर दुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता ॥
जीवन जन्म सफल मम भयऊ ❀ पर पुनीत विबुध सुख दयऊ ॥
जानहु सदा मोहिं निज किंकर ❀ पुनि पुनि उमा कहेउ बिहंगबर ॥

दोहा--तासु चरण शिरनाय करि, हृदय राखि रघुवीर ।
गयउ गरुड़ वैकुण्ठ तब, प्रेमसहित मतिधीर ॥७०॥

इति लवकुशकाण्ड समाप्त ।



मुद्रक—पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस ।

